

पूजा-विधानम्

Colophon

This document was typeset using Xe_gLa_TE_X, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several L^AT_EX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (<http://www.aupasana.com/>).

Acknowledgements

Very grateful to <https://archive.org> for hosting and providing numerous ancient texts.

See also <http://stotrasamhita.github.io/about/>

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका

| | |
|--------------------------------------|----|
| १ व्रतपूजा: | 1 |
| लघु-पञ्चायतन-पूजा | 2 |
| प्रधान-पूजा — पञ्चायतनपूजा | 2 |
| षोडशोपचार-पूजा | 5 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 15 |
| ब्रह्मपारस्तोत्रम् | 20 |
| एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा | 22 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 22 |
| प्रधान-पूजा — एकादशीपूजा | 24 |
| षोडशोपचार-पूजा | 27 |
| विष्णुसहस्रनामावलि: | 31 |
| कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि: | 44 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 47 |
| श्री-रामनवमी-पूजा | 53 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 53 |
| प्रधान-पूजा — श्रीराम-पूजा | 55 |
| षोडशोपचार-पूजा | 58 |
| रामाष्टोत्तरशतनामावलि: | 63 |
| सीताष्टोत्तरशतनामावलि: | 66 |
| हनुमदष्टोत्तरशतनामावलि: | 68 |
| रामाष्टोत्तरशतनामावलि: | 70 |
| सीताष्टोत्तरशतनामावलि: | 73 |
| हनुमदष्टोत्तरशतनामावलि: | 76 |
| प्रार्थना | 81 |

| | |
|--|----|
| हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम् | 81 |
| कथा | 85 |

| | |
|---|-----------|
| श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा | 95 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 95 |
| प्रधान-पूजा — श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा | 97 |
| षोडशोपचार-पूजा | 101 |
| श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्ग-पूजा | 105 |
| आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामावलिः | 106 |
| आचार्यपरम्परानामावलिः | 108 |
| स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् | 115 |
| तोटकाष्टकम् | 116 |
| श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः | 117 |
| देव-वन्दनम् | 117 |
| गुरुपरम्परावन्दनम् | 117 |
| गुरु-पादुका-पञ्चकम् | 118 |
| भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम् | 119 |
| वेदान्ताचार्यवन्दना | 121 |
| मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा | 121 |
| तोटकाष्टकम् | 122 |
| भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः | 123 |
| सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितायां जगद्गुरुरत्नमालायां भगवत्पाद-चरितम् | 124 |
| कामकोटि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः | 126 |
| शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु | 127 |
| अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः | 129 |
| शङ्कर-वाङ्महिमा | 136 |
| जय-घोषः | 136 |
| श्रीमच्चिद्विलासीय-शङ्करविजयविलासे श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद-अवतार-घट्टः | 141 |
| काञ्च्यां सर्वज्ञपीठारोहण-घट्टः | 143 |

| | |
|--|----------------|
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा | 146 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 146 |
| प्रधान-पूजा — श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा | 148 |
| षोडशोपचार-पूजा | 151 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलि: | 154 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 157 |
| लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं | 159 |
| श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम् | 162 |
| श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे अष्टमोऽध्यायः | 163 |
| श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः | 170 |
| नृसिंह-जयन्ती-व्रत-कथा | 180 |
| श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा | 190 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 190 |
| प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 192 |
| षोडशोपचार-पूजा | 195 |
| लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 199 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 201 |
| दोरग्रन्थि-पूजा | 203 |
| प्रार्थना | 205 |
| कनकधारास्तवम् | 205 |
| महालक्ष्म्यष्टकम् | 209 |
| अपराध-क्षमापनम् | 210 |
| कथा | 210 |
| श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-सिद्धिविनायक-पूजा | 216 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 216 |
| प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा | 219 |
| षोडशोपचार-पूजा | 223 |
| गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 228 |

| | |
|---|------------|
| अपराध-क्षमापनम् | 237 |
| सङ्कष्ट-चतुर्थी-व्रत-कथा | 238 |
| श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पूजा | 244 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 245 |
| प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा | 247 |
| श्रीकृष्णजन्माष्टमी-षोडशोपचार-पूजा | 250 |
| कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलि: | 255 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 258 |
| जन्माष्टमी-व्रत-कथा | 265 |
| शिष्टाचारप्राप्ता जन्माष्टमीव्रतकथा | 273 |
| व्रतोद्यापनम् | 280 |
| श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्धे तृतीयोऽध्यायः | 287 |
| श्री-सिद्धिविनायक-पूजा | 295 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 295 |
| प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा | 297 |
| षोडशोपचार-पूजा | 301 |
| गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 309 |
| प्रार्थना | 318 |
| महागणेशपञ्चरत्नम् | 318 |
| गणेशभुजङ्गम् | 319 |
| वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम् | 321 |
| अपराध-क्षमापनम् | 342 |
| सिद्धिविनायक-चतुर्थी-व्रत-कथा | 343 |
| स्यमन्तकोपाख्यानम् | 347 |
| श्री-सरस्वती-पूजा | 363 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 363 |
| प्रधान-पूजा — श्री-सरस्वती-पूजा | 365 |

| | |
|--------------------------------------|-----|
| षोडशोपचार-पूजा | 368 |
| दुर्गाष्टोत्तरशतनामावलि: | 372 |
| लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 374 |
| सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 376 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 379 |
| प्रार्थना | 381 |
| उपायनदानम् | 381 |
| अपराध-क्षमापनम् | 382 |
| सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् | 383 |

| | |
|--|------------|
| श्री-धन्वन्तरि-पूजा | 398 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 398 |
| प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा | 400 |
| षोडशोपचार-पूजा | 403 |
| धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 407 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 410 |
| धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) | 413 |

| | |
|---|------------|
| श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा | 416 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 416 |
| प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा | 418 |
| मातृगण-पूजा | 421 |
| नवग्रहपूजा | 422 |
| लोकपाल-पूजा | 427 |
| षोडशोपचार-पूजा | 429 |
| लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलि: | 433 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 435 |
| ईशानादि पूजा | 437 |
| कुबेर पूजा | 438 |
| कुबेराष्टोत्तरशतनामावलि: | 439 |

| | |
|---|------------|
| प्रार्थना | 441 |
| अपराध-क्षमापनम् | 442 |
| कार्तिकसोमवारार्घ्यम् | 443 |
| अर्घ्यम् | 443 |
| कथा | 444 |
| श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा | 471 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 471 |
| प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा | 473 |
| षोडशोपचार-पूजा | 475 |
| सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः | 480 |
| वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलिः | 482 |
| देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः | 484 |
| वृन्दावनपूजा (श्री-तुलसी-विष्णु-पूजा) | 491 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 491 |
| प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा | 493 |
| षोडशोपचार-पूजा | 496 |
| अङ्ग-पूजा | 499 |
| तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः | 500 |
| तुलसीविवाहविधिः | 505 |
| श्रीसूर्य-नमस्कारः | 507 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 507 |
| प्रधान-पूजा — श्री-सूर्यनारायण-पूजा | 509 |
| कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा | 512 |
| सूर्याष्टोत्तरशतनामावलिः | 513 |
| अरुणप्रश्नः | 522 |
| नवग्रहसूक्तम् | 550 |

| | |
|-----------------------------------|-----|
| आदित्यहृदयम् | 553 |
| द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः | 556 |

शिवरात्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा 558

| | |
|--|-----|
| व्रत-सङ्कल्पः | 558 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 559 |
| प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) | 561 |
| षोडशोपचार-पूजा | 564 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 566 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 569 |
| प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) | 572 |
| षोडशोपचार-पूजा | 573 |
| महान्यासः | 574 |
| पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 574 |
| पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 576 |
| केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 577 |
| मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 583 |
| पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 583 |
| हंसगायत्री | 584 |
| दिक् सम्पुटन्यासः | 585 |
| षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 588 |
| गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः | 591 |
| आत्मरक्षा | 592 |
| शिवसङ्कल्पः | 593 |
| पुरुषसूक्तम् | 597 |
| उत्तरनारायणम् | 599 |
| अप्रतिरथम् | 599 |
| प्रतिपूरुषम् (सं०) | 601 |
| प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) | 602 |
| शतरुद्रीयम् (सं०) | 603 |

| | |
|--|-----|
| शतरुद्रीयम् (ब्रा०) | 605 |
| पञ्चाङ्गम् | 606 |
| अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 606 |
| लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम् | 607 |
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 608 |
| आत्मपूजा | 610 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 610 |
| प्रदक्षिणम् | 612 |
| नमस्काराः | 613 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना | 614 |
| प्रार्थना | 618 |
| श्रीरुद्रजपः | 618 |
| ध्यानम् | 619 |
| रुद्रप्रश्नः | 621 |
| रुद्रप्रश्नः | 622 |
| रुद्रप्रश्नः | 623 |
| रुद्रप्रश्नः | 624 |
| रुद्रप्रश्नः | 625 |
| रुद्रप्रश्नः | 626 |
| रुद्रप्रश्नः | 627 |
| रुद्रप्रश्नः | 628 |
| रुद्रप्रश्नः | 629 |
| रुद्रप्रश्नः | 630 |
| रुद्रप्रश्नः | 631 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती | 634 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 640 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 642 |
| प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) | 645 |
| षोडशोपचार-पूजा | 646 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 648 |

| | |
|---|------------|
| उत्तराङ्ग-पूजा | 651 |
| प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) | 654 |
| षोडशोपचार-पूजा | 655 |
| शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः | 657 |
| उत्तराङ्ग-पूजा | 660 |
| कथा | 663 |
| श्री-सावित्री-व्रतम् — कामाक्षी-पूजा | 688 |
| पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा | 688 |
| प्रधान-पूजा — श्रीकामाक्षी-पूजा | 690 |
| अङ्ग-पूजा | 695 |
| श्री कामाक्ष्यष्टोत्तरशतनामावलिः | 696 |
| श्री-कामाक्षी-चूर्णिका | 700 |
| पतिव्रतामाहात्म्यपर्व | 701 |
| सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः | 736 |
| कार्तिकमासमाहात्म्यम् | 739 |
| अथ प्रथमोऽध्यायः | 739 |
| अथ द्वितीयोऽध्यायः | 744 |
| अथ तृतीयोऽध्यायः | 750 |
| अथ चतुर्थोऽध्यायः | 755 |
| अथ पञ्चमोऽध्यायः | 763 |
| अथ षष्ठोऽध्यायः | 766 |
| अथ सप्तमोऽध्यायः | 772 |
| अथ नामाष्टमोऽध्यायः | 784 |
| अथ नवमोऽध्यायः | 790 |
| अथ दशमोऽध्यायः | 800 |
| अथ नामैकादशोऽध्यायः | 806 |
| अथ द्वादशोऽध्यायः | 814 |

| | |
|---|-----|
| अथ त्रयोदशोऽध्यायः | 827 |
| अथ चतुर्दशोऽध्यायः | 833 |
| अथ पञ्चदशोऽध्यायः | 836 |
| अथ षोडशोऽध्यायः | 839 |
| अथ सप्तदशोऽध्यायः | 843 |
| अथ रुद्रसेनापराभवोनामाऽष्टादशोऽध्यायः | 846 |
| अथ वीरभद्रपतननामैकोनविंशोऽध्यायः | 850 |
| अथ विंशोऽध्यायः | 853 |
| अथ नामैकविंशोऽध्यायः | 856 |
| अथ द्वाविंशोऽध्यायः | 860 |
| अथ त्रयोविंशोऽध्यायः | 864 |
| अथ चतुर्विंशोऽध्यायः | 867 |
| अथ पञ्चविंशोऽध्यायः | 870 |
| अथ षड्विंशोऽध्यायः | 873 |
| अथ सप्तविंशोऽध्यायः | 876 |
| अथ नामाऽष्टाविंशोऽध्यायः | 880 |
| अथ नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः | 883 |
| अथ त्रिंशोऽध्यायः | 887 |
| अथ नामैकत्रिंशोऽध्यायः | 894 |
| अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः | 898 |
| अथ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः | 903 |
| अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः | 910 |
| अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः | 913 |
| अथ षड्त्रिंशोऽध्यायः | 918 |

२ उपाङ्गाः 924

संवत्सर-नामानि 925

नक्षत्र-नामानि 927

योग-नामानि

928

करण-नामानि

929

विभाग: १

व्रतपूजा:

॥ लघु-पञ्चायतन-पूजा ॥

॥ प्रधान-पूजा — पञ्चायतनपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवस्सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()^१
नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् / हेमन्त
/ शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह /
कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल /
कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु
/ भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^२ नक्षत्र ()^३ नाम योग
() करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् ()
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां

^१पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^२पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^३पृष्ठं १२८ पश्यताम्

प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल पापक्षयार्थं श्री-
 महागणपति-प्रीत्यर्थं श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-प्रीत्यर्थं
 श्री-लक्ष्मीनारायण-प्रीत्यर्थं श्री-महालक्ष्मीसमेतं श्री-सन्तानगोपाल-प्रीत्यर्थं
 श्री-गौरीदेवी-प्रीत्यर्थं श्री-साम्बपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं श्री-नन्दिकेश्वर-प्रीत्यर्थं
 श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-
 हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीत्यर्थं यावच्छक्तिः ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-
 पूजां पञ्चायतनपूजां क्षीराभिषेकं च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
 श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
 (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
 त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
 घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
 नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
 नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥ ॐ
महागणपतये नमः॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-महागणपतिं ध्यायामि। आवाहयामि॥

आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता
रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि।
आवाहयामि॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवह॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मीनारायणं ध्यायामि। अस्मिन् बिम्बे
श्री-महालक्ष्मीसमेतं श्री-सन्तानगोपालं ध्यायामि।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी।

अष्टापदी नवपदी बभ्रुवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अस्मिन् बिम्बे श्री-सपरिवार-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-गौरीदेवीं ध्यायामि। आवाहयामि॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दिः प्रचोदयात्। अस्मिन्

बिम्बे श्री-नन्दिकेश्वरं ध्यायामि। आवाहयामि॥

तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिनं ध्यायामि।

कल्पद्रुमं प्रणमतां कमलारुणभम्
 स्कन्दं भुजद्वयमनामयमेकवक्त्रम्।
 कात्यायनी-प्रियसुतं कटिबद्धवामम्
 कौपीन-दण्डधर-दक्षिणहस्तमीडे ॥

आवाहयामि॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
 मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
 अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
 व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
 ध्यायामि।

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
 शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
 सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
 मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

आवाहयामि॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः।

आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

॥ अभिषेकः ॥

ॐ गुणानां॑ त्वा गुणपति॑ः हवामहे क॒विं क॒वीनामु॒पमश्र॑वस्तमम्।
ज्येष्ठ॒राजं॑ ब्रह्म॑णां ब्रह्म॑णस्पत॒ आ नः॑ शृ॒ण्वन्नूतिभिः॑ सीद॒ सादन॑म्॥ ॐ
महागणपतये॒ नमः॥

ॐ आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो निवेशय॑न्नमृतं॒ मर्त्यं॑ च। हिर॒ण्यये॑न सवि॒ता
रथे॑नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना वि॒पश्य॑न्।

ॐ स॒हस्र॑शीर्षा॒ पुरु॑षः। स॒हस्रा॒क्षः स॒हस्र॑पात्।
स भूमि॑ वि॒श्वतो॑ वृ॒त्वा। अत्य॑तिष्ठ॒दशाङ्गु॑लम्॥

ॐ हिर॑ण्यवर्णा॒ हरि॑णीं सुव॑र्णर॒जत॑स्रजाम्।
च॒न्द्रां हिर॑ण्म॒यीं ल॒क्ष्मीं॑ जात॑वेदो म॒ आव॑ह॥

गौरी॑ मि॒माय॑ सलिलानि॒ तक्ष॑ती। एक॑पदी द्वि॒पदी॑ सा चतु॑ष्पदी।
अ॒ष्टाप॑दी नव॑पदी बभू॒वुषी॑। स॒हस्रा॑क्षरा पर॒मे व्यो॑मन्।

तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ चक्रतु॒ण्डाय॑ धीमहि। तन्नो॑ नन्दिः प्रचो॒दया॑त्।
तत्पुरु॑षाय वि॒द्महे॑ महासे॒नाय॑ धीमहि। तन्नः॑ षण्मुखः प्रचो॒दया॑त्॥

ॐ नमो भगवते॑ रुद्राय॥

रुद्रप्रश्न-चमकप्रश्न-पुरुषषुक्तेः अभिषेकम् कृत्वा।

अभिषेकानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।
यज्ञोपवीताभरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।
अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ महागणपति-अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १७. ॐ सिद्धिविनायकाय नमः |
| ९. ॐ धूमकेतवे नमः | १८. ॐ विघ्नेश्वराय नमः |

ॐ श्री-महागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ आदित्य-अर्चना ॥

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १. ॐ मित्राय नमः | ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः |
| २. ॐ रवये नमः | ८. ॐ मरीचये नमः |
| ३. ॐ सूर्याय नमः | ९. ॐ आदित्याय नमः |
| ४. ॐ भानवे नमः | १०. ॐ सवित्रे नमः |
| ५. ॐ खगाय नमः | ११. ॐ अर्काय नमः |
| ६. ॐ पूष्णे नमः | १२. ॐ भास्कराय नमः |

ॐ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-परब्रह्मणे नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्मीनारायण-अर्चना ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री-लक्ष्मीनारायणाय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-अर्चना ॥

- | | |
|--------------------------|--------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |
| १. ॐ आदिलक्ष्म्यै नमः | ६. ॐ विजयलक्ष्म्यै नमः |
| २. ॐ धान्यलक्ष्म्यै नमः | ७. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ३. ॐ धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ८. ॐ धनलक्ष्म्यै नमः |
| ४. ॐ गजलक्ष्म्यै नमः | ९. ॐ वरलक्ष्म्यै नमः |
| ५. ॐ सन्तानलक्ष्म्यै नमः | १०. ॐ महालक्ष्म्यै नमः |

ॐ श्री-महालक्ष्मीसमेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-साम्बपरमेश्वर-अर्चना ॥

- | | |
|------------------------|------------------------|
| १. ॐ भवाय देवाय नमः | ५. ॐ रुद्राय देवाय नमः |
| २. ॐ शर्वाय देवाय नमः | ६. ॐ उग्राय देवाय नमः |
| ३. ॐ ईशानाय देवाय नमः | ७. ॐ भीमाय देवाय नमः |
| ४. ॐ पशुपतये देवाय नमः | ८. ॐ महते देवाय नमः |
- ॐ श्री-साम्बपरमेश्वराय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।
ॐ नन्दिकेश्वराय नमः।

॥ गौरी-अर्चना ॥

- | |
|----------------------------------|
| १. ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| २. ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ३. ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ४. ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः |
| ५. ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ६. ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ७. ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः |
| ८. ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः |
- ॐ श्री-गौरी-देव्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-सुब्रह्मण्यस्वामी-अर्चना ॥

- | | |
|----------------------------|-------------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ६. ॐ शरवणोद्भवाय नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः |
| ३. ॐ अग्निभुवे नमः | ८. ॐ कुमाराय नमः |
| ४. ॐ बाहुलेयाय नमः | ९. ॐ षण्मुखाय नमः |
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः |

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| ११. ॐ शक्तिधराय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |
| १२. ॐ गुहाय नमः | १५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः |
| १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः | १६. ॐ शिखिवाहनाय नमः |

ॐ श्री-वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ श्री-राम-अर्चना ॥

- | | |
|-----------------------|---------------------------|
| १. ॐ श्रीरामाय नमः | १३. ॐ परमात्मने नमः |
| २. ॐ रामभद्राय नमः | १४. ॐ परस्मै ब्रह्मणे नमः |
| ३. ॐ रामचन्द्राय नमः | १५. ॐ सच्चिदानन्दविग्रहाय |
| ४. ॐ शाश्वताय नमः | १६. ॐ परस्मै ज्योतिषे नमः |
| ५. ॐ राजीवलोचनाय नमः | १७. ॐ परस्मै धाम्ने नमः |
| ६. ॐ श्रीमते नमः | १८. ॐ पराकाशाय नमः |
| ७. ॐ राजेन्द्राय नमः | १९. ॐ परात्पराय नमः |
| ८. ॐ रघुपुङ्गवाय नमः | २०. ॐ परेशाय नमः |
| ९. ॐ जानकीवल्लभाय नमः | २१. ॐ पारगाय नमः |
| १०. ॐ जैत्राय नमः | २२. ॐ पाराय नमः |
| ११. ॐ जितामित्राय नमः | २३. ॐ सर्वदेवात्मकाय नमः |
| १२. ॐ जनार्दनाय नमः | २४. ॐ पराय नमः |

॥ श्री-सीता-अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|-------------------|
| १. ॐ श्रीसीतायै नमः | ३. ॐ देव्यै नमः |
| २. ॐ जानक्यै नमः | ४. ॐ वैदेह्यै नमः |

- | | |
|-----------------------|----------------------------|
| ५. ॐ राघवप्रियायै नमः | ९. ॐ राक्षसान्तप्रकारिण्यै |
| ६. ॐ रमायै नमः | १०. ॐ रत्नगुप्तायै नमः |
| ७. ॐ अवनिसुतायै नमः | ११. ॐ मातुलुङ्ग्यै नमः |
| ८. ॐ रामायै नमः | १२. ॐ मैथिल्यै नमः |

॥ श्री-हनूमद्-अर्चना ॥

१. ॐ हनुमते नमः
२. ॐ अञ्जनासूनवे नमः
३. ॐ वायुपुत्राय नमः
४. ॐ महाबलाय नमः
५. ॐ कपीन्द्राय नमः
६. ॐ पिङ्गलाक्षाय नमः
७. ॐ लङ्काद्वीपभयङ्कराय नमः
८. ॐ प्रभञ्जनसुताय नमः
९. ॐ वीराय नमः
१०. ॐ सीताशोकविनाशकाय नमः
११. ॐ अक्षहन्त्रे नमः
१२. ॐ रामसखाय नमः
१३. ॐ रामकार्यधुरन्धराय नमः
१४. ॐ महौषधगिरेर्धारिणे नमः
१५. ॐ वानरप्राणदायकाय नमः
१६. ॐ वारीशतारकाय नमः
१७. ॐ मैनाकगिरिभञ्जनाय नमः
१८. ॐ निरञ्जनाय नमः
१९. ॐ जितक्रोधाय नमः

२०. ॐ कदलीवनसंवृताय नमः
 २१. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः
 २२. ॐ महासत्त्वाय नमः
 २३. ॐ सर्वमन्त्रप्रवर्तकाय नमः
 २४. ॐ महालिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः
 २५. ॐ बाष्पकृत् जपतान्तराय नमः
 २६. ॐ नित्यं शिवध्यानपराय नमः
 २७. ॐ शिवपूजापरायणाय नमः
 ॐ श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
 नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि।

पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तमः।
 पञ्चहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥
 पञ्चहारतीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
 गायत्रीदीपं दर्शयामि। दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
 पशूँश्च मह्यमावह जीर्वनं च दिशो दिश॥
 मा नो हि सीञ्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्।
 अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
 एकहारतीदीपं दर्शयामि।

दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नैवेद्यं कृत्वा।

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः
श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

() महानैवेद्यं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सोमो वा ए॒तस्य॑ रा॒ज्यमा॑द॒त्ते। यो राजा॑ स॒त्राज्यो॑ वा सोमे॒न॒ यज॑ते।
दे॒व॒सु॒वा॒मे॒ता॒नि ह॒वी॒र्षि॑ भवन्ति। ए॒ताव॑न्तो॒ वै दे॒वाना॑ः स॒वाः। त ए॒वास्मै॑
स॒वान्प्रय॑च्छन्ति। त ए॒नं पुनः॑ सुवन्ते रा॒ज्याय॑। दे॒व॒सू राजा॑ भवति॥
न तत्र सूर्यो॑ भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव
भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

श्री महागणपतये नमः श्री छाया-सुवर्चलाम्बा-समेतश्री सूर्यनारायण-
परब्रह्मणे नमः लक्ष्मी-नारायणाय नमः

श्री-महालक्ष्मी-समेत-श्री-सन्तानगोपाल-स्वामिने नमः श्री-साम्बपरमेश्वराय
नमः नन्दिकेश्वराय नमः श्री वल्लीदेवसेनासमेत-श्री-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः

श्री सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनूमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र परब्रह्मणे नमः
समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिं लीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

आवाहिताभ्यः सर्वाभ्यो-देवताभ्यो नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमः शिवाय साम्बाय सगणाय ससूनवे।
सनन्दिने सगङ्गाय सवृषाय नमो नमः॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्
 परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
 नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥

॥ नमस्कारमन्त्राः ॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय
 उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्।
 ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमः॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु।
 पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमः।
 विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं जायमानं च यत्।
 सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय तव्यसे।
 वो चेम् शन्तम् हृदे। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। नमस्कारान् कृत्वा।

छत्र-चामर-नृत्त-गीत-वाद्य-समस्त-राजोपचारान् समर्पयामि।

बाण-रावण-चण्डेश-नन्दि-भृङ्गि-रिटादयः।
 महादेवप्रसादोऽयं सर्वे गृह्णन्तु शाम्भवाः॥

नन्दिकेश्वराय नमः बलिं निवेदयामि। ॐ हर। ॐ हर। ॐ हर।

शङ्खमध्ये स्थितं तोयं भ्रामितं शङ्करोपरि।
 अङ्गलग्नं मनुष्याणां ब्रह्महत्यायुतं दहेत्॥

शङ्खजलेन प्रोक्ष्य।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं शिवपादोदकं शुभम्॥

इति अभिषेकतीर्थं प्राश्य।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाऽऽराधनं मम॥

हृद्वन्नकर्णिका-मध्यमुमया सह शङ्कर।
प्रविश त्वं महादेव सर्वैरावरणैः सह॥

सम्पूजकानां परिपालकानां
यतेन्द्रियानां च तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञाम्
करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः॥

अनया पूजया सपरिवार-साम्ब-परमेश्वरः प्रीयताम्।

॥ उद्धासनम् ॥

निर्याणमुद्रया पुष्पाण्यादाय आघ्राय हृदये स्थापयित्वा उद्धासयेत्। निर्माल्यं
शिरसि धारयेत्।

॥ ब्रह्मपारस्तोत्रम् ॥

प्रचेतस ऊचुः

ब्रह्मपारं मुने श्रोतुमिच्छामः परमं स्तवम्।
जपता कण्डुना देवो येनाऽऽराध्यत केशवः॥५४॥

सोम उवाच

पारं परं विष्णुरपारपारः
परः परेभ्यः परमार्थरूपी।
स ब्रह्मपारः परपारभूतः
परः पराणामपि पारपारः॥५५॥

स कारणं कारणतस्ततोऽपि
तस्यापि हेतुः परहेतुहेतुः।
कार्येषु चैवं सह कर्मकर्तृ-
रूपैरशेषैरवतीह सर्वम्॥५६॥

ब्रह्म प्रभुर्ब्रह्म स सर्वभूतो
ब्रह्म प्रजानां पतिरच्युतोऽसौ।
ब्रह्माव्ययं नित्यमजं स विष्णुः
अपक्षयाद्यैरखिलैरसङ्गिः ॥५७॥

ब्रह्माक्षरमजं नित्यं यथाऽसौ पुरुषोत्तमः।
तथा रागादयो दोषाः प्रयान्तु प्रशमं मम॥५८॥
एतद्ब्रह्मपराख्यं वै संस्तवं परमं जपन्।
अवाप परमां सिद्धिं समाराध्य स केशवम्॥५९॥

इमं स्तवं यः पठति शृणुयाद्वाऽपि नित्यशः।
स कामदोषैरखिलैर्मुक्तः प्राप्नोति वाञ्छितम्॥

॥इति श्रीविष्णुपुराणे प्रथमंऽशे पञ्चदशोऽध्याये ब्रह्मपारस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

आचामेत्।



॥ एकादशीव्रतम् — श्री-महाविष्णुपूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — एकादशीपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^४ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् /
हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक
/ सिंह / कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन)
मासे (शुक्ल / कृष्ण) पक्षे (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ (इन्दु / भौम
/ बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^५ नक्षत्र
()^६ नाम योग () करण युक्तायां च एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम्
अस्याम् (एकादश्यां / द्वादश्यां) शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां

^४पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^५पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^६पृष्ठं १२८ पश्यताम्

सद्य अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णु-
प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-पूजां करिष्ये तदङ्गं
कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशवः

आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽष्ट्यापो यजूऽष्ट्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेत् चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्।
लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-भूमि-नीला-समेतं महाविष्णुं ध्यायामि।

सुहस्रं शीर्षा पुरुषः। सुहस्राक्षः सुहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-भूमि-नीला-समेतं महाविष्णुम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नैनातिरोहति॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि।

ए॒तावा॑नस्य॒ महि॑मा। अतो॒ ज्याया॑श्च॒ पूरु॑षः।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्यामृतं॒ दि॒वि॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रि॒पाद॑र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॒ विश्व॑ङ्म॒क्राम॑त्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्मा॑द्विराड॑जायत। विराजो॒ अधि॑ पूरु॑षः।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरु॑षेण॒ ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॑रद्ध॒विः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स॒प्तास्या॑ऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॑मिधः॒ कृताः॑।
दे॒वा यद्य॑ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं॑ प॒शुम्॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि॑ प्रौक्षन्। पु॒रुषं॑ जा॒तम॑ग्रतः।
तेन॑ दे॒वा अये॑जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः
पूजयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि

११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि
 १२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
 १३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
 १४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि
 १५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १६. चम्पकनासिकाय नमः — नासिकां पूजयामि
 १७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
 १८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि
 १९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि
 २०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ विष्णुसहस्रनामावलि: ॥

विश्वस्मै नमः
 विष्णवे नमः
 वषट्काराय नमः
 भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
 भूतकृते नमः
 भूतभृते नमः
 भावाय नमः
 भूतात्मने नमः
 भूतभावनाय नमः
 पूतात्मने नमः १०
 परमात्मने नमः
 मुक्तानां परमायै
 गतये नमः
 अव्ययाय नमः
 पुरुषाय नमः
 साक्षिणे नमः
 क्षेत्रज्ञाय नमः
 अक्षराय नमः
 योगाय नमः
 योगविदां नेत्रे नमः
 प्रधानपुरुषेश्वराय नमः
 २०
 नारसिंहवपुषे नमः

श्रीमते नमः
 केशवाय नमः
 पुरुषोत्तमाय नमः
 सर्वस्मै नमः
 शर्वाय नमः
 शिवाय नमः
 स्थाणवे नमः
 भूतादये नमः
 निधयेऽव्ययाय नमः
 ३०
 सम्भवाय नमः
 भावनाय नमः
 भर्त्रे नमः
 प्रभवाय नमः
 प्रभवे नमः
 ईश्वराय नमः
 स्वयम्भुवे नमः
 शम्भवे नमः
 आदित्याय नमः
 पुष्कराक्षाय नमः ४०
 महास्वनाय नमः
 अनादिनिधनाय नमः
 धात्रे नमः

विधात्रे नमः
 धातव उत्तमाय नमः
 अप्रमेयाय नमः
 हृषीकेशाय नमः
 पद्मनाभाय नमः
 अमरप्रभवे नमः
 विश्वकर्मणे नमः ५०
 मनवे नमः
 त्वष्ट्रे नमः
 स्थविष्ठाय नमः
 स्थविराय ध्रुवाय नमः
 अग्राह्याय नमः
 शाश्वताय नमः
 कृष्णाय नमः
 लोहिताक्षाय नमः
 प्रतर्दनाय नमः
 प्रभूताय नमः ६०
 त्रिककुब्धाम्ने नमः
 पवित्राय नमः
 मङ्गलाय परस्मै नमः
 ईशानाय नमः
 प्राणदाय नमः
 प्राणाय नमः

| | | |
|---------------------|------------------------|---------------------|
| ज्येष्ठाय नमः | व्यालाय नमः | विश्वयोनये नमः |
| श्रेष्ठाय नमः | प्रत्ययाय नमः | शुचिश्रवसे नमः |
| प्रजापतये नमः | सर्वदर्शनाय नमः | अमृताय नमः |
| हिरण्यगर्भाय नमः ७० | अजाय नमः | शाश्वतस्स्थाणवे नमः |
| भूगर्भाय नमः | सर्वेश्वराय नमः | १२० |
| माधवाय नमः | सिद्धाय नमः | वरारोहाय नमः |
| मधुसूदनाय नमः | सिद्धये नमः | महातपसे नमः |
| ईश्वराय नमः | सर्वादये नमः | सर्वगाय नमः |
| विक्रमिणे नमः | अच्युताय नमः १०० | सर्वविद्वानवे नमः |
| धन्विने नमः | वृषाकपये नमः | विष्वक्सेनाय नमः |
| मेधाविने नमः | अमेयात्मने नमः | जनार्दनाय नमः |
| विक्रमाय नमः | सर्वयोगविनिस्सृताय नमः | वेदाय नमः |
| क्रमाय नमः | वसवे नमः | वेदविदे नमः |
| अनुत्तमाय नमः ८० | वसुमनसे नमः | अव्यङ्गाय नमः |
| दुराधर्षाय नमः | सत्याय नमः | वेदाङ्गाय नमः १३० |
| कृतज्ञाय नमः | समात्मने नमः | वेदविदे नमः |
| कृतये नमः | असम्मिताय नमः | कवये नमः |
| आत्मवते नमः | समाय नमः | लोकाध्यक्षाय नमः |
| सुरेशाय नमः | अमोघाय नमः ११० | सुराध्यक्षाय नमः |
| शरणाय नमः | पुण्डरीकाक्षाय नमः | धर्माध्यक्षाय नमः |
| शर्मणे नमः | वृषकर्मणे नमः | कृताकृताय नमः |
| विश्वरेतसे नमः | वृषाकृतये नमः | चतुरात्मने नमः |
| प्रजाभवाय नमः | रुद्राय नमः | चतुर्व्यूहाय नमः |
| अहे नमः ९० | बहुशिरसे नमः | चतुर्दंष्ट्राय नमः |
| संवत्सराय नमः | बभ्रवे नमः | चतुर्भुजाय नमः १४० |

| | | |
|-------------------|---------------------|-------------------|
| भ्राजिष्णवे नमः | वीरघ्ने नमः | हंसाय नमः |
| भोजनाय नमः | माधवाय नमः | सुपर्णाय नमः |
| भोक्त्रे नमः | मधवे नमः | भुजगोत्तमाय नमः |
| सहिष्णवे नमः | अतीन्द्रियाय नमः | हिरण्यनाभाय नमः |
| जगदादिजाय नमः | महामायाय नमः १७० | सुतपसे नमः |
| अनघाय नमः | महोत्साहाय नमः | पद्मनाभाय नमः |
| विजयाय नमः | महाबलाय नमः | प्रजापतये नमः |
| जेत्रे नमः | महाबुद्धये नमः | अमृत्यवे नमः |
| विश्वयोनये नमः | महावीर्याय नमः | सर्वदृशे नमः |
| पुनर्वसवे नमः १५० | महाशक्तये नमः | सिंहाय नमः २०० |
| उपेन्द्राय नमः | महाद्युतये नमः | सन्धात्रे नमः |
| वामनाय नमः | अनिर्देश्यवपुषे नमः | सन्धिमते नमः |
| प्रांशवे नमः | श्रीमते नमः | स्थिराय नमः |
| अमोघाय नमः | अमेयात्मने नमः | अजाय नमः |
| शुचये नमः | महाद्रिधृषे नमः १८० | दुर्मर्षणाय नमः |
| ऊर्जिताय नमः | महेष्वासाय नमः | शास्त्रे नमः |
| अतीन्द्राय नमः | महीभर्त्रे नमः | विश्रुतात्मने नमः |
| सङ्ग्रहाय नमः | श्रीनिवासाय नमः | सुरारिघ्ने नमः |
| सर्गाय नमः | सतां गतये नमः | गुरवे नमः |
| धृतात्मने नमः १६० | अनिरुद्धाय नमः | गुरुतमाय नमः २१० |
| नियमाय नमः | सुरानन्दाय नमः | धाम्ने नमः |
| यमाय नमः | गोविन्दाय नमः | सत्याय नमः |
| वेद्याय नमः | गोविदां पतये नमः | सत्यपराक्रमाय नमः |
| वैद्याय नमः | मरीचये नमः | निमिषाय नमः |
| सदायोगिने नमः | दमनाय नमः १९० | अनिमिषाय नमः |

स्रग्विणे नमः
 वाचस्पतये
 उदारधिये नमः
 अग्रण्ये नमः
 ग्रामण्ये नमः
 श्रीमते नमः २२०
 न्यायाय नमः
 नेत्रे नमः
 समीरणाय नमः
 सहस्रमूर्ध्ने नमः
 विश्वात्मने नमः
 सहस्राक्षाय नमः
 सहस्रपदे नमः
 आवर्तनाय नमः
 निवृत्तात्मने नमः
 संवृताय नमः २३०
 सम्प्रमर्दनाय नमः
 अहःसंवर्तकाय नमः
 वह्नये नमः
 अनिलाय नमः
 धरणीधराय नमः
 सुप्रसादाय नमः
 प्रसन्नात्मने नमः
 विश्वधृषे नमः
 विश्वभुजे नमः

विभवे नमः २४०
 सत्कर्त्रे नमः
 सत्कृताय नमः
 साधवे नमः
 जह्वे नमः
 नारायणाय नमः
 नराय नमः
 असङ्क्षोयाय नमः
 अप्रमेयात्मने नमः
 विशिष्टाय नमः
 शिष्टकृते नमः २५०
 शुचये नमः
 सिद्धार्थाय नमः
 सिद्धसङ्कल्पाय नमः
 सिद्धिदाय नमः
 सिद्धिसाधनाय नमः
 वृषाहिणे नमः
 वृषभाय नमः
 विष्णवे नमः
 वृषपर्वणे नमः
 वृषोदराय नमः २६०
 वर्धनाय नमः
 वर्धमानाय नमः
 विविक्ताय नमः
 श्रुतिसागराय नमः

सुभुजाय नमः
 दुर्धराय नमः
 वाग्मिने नमः
 महेन्द्राय नमः
 वसुदाय नमः
 वसवे नमः २७०
 नैकरूपाय नमः
 बृहद्रूपाय नमः
 शिपिविष्टाय नमः
 प्रकाशनाय नमः
 ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः
 प्रकाशात्मने नमः
 प्रतापनाय नमः
 ऋद्धाय नमः
 स्पष्टाक्षराय नमः
 मन्त्राय नमः २८०
 चन्द्रांशवे नमः
 भास्करद्युतये नमः
 अमृतांशूद्भवाय नमः
 भानवे नमः
 शशबिन्दवे नमः
 सुरेश्वराय नमः
 औषधाय नमः
 जगतस्सेतवे नमः
 सत्यधर्मपराक्रमाय नमः

भूतभव्यभवन्नाथाय नमः
 २९०
 पवनाय नमः
 पावनाय नमः
 अनलाय नमः
 कामघ्ने नमः
 कामकृते नमः
 कान्ताय नमः
 कामाय नमः
 कामप्रदाय नमः
 प्रभवे नमः
 युगादिकृते नमः ३००
 युगावर्ताय नमः
 नैकमायाय नमः
 महाशनाय नमः
 अदृश्याय नमः
 व्यक्तरूपाय नमः
 सहस्रजिते नमः
 अनन्तजिते नमः
 इष्टाय नमः
 अविशिष्टाय नमः
 शिष्टेष्टाय नमः ३१०
 शिखण्डिने नमः
 नहुषाय नमः
 वृषाय नमः

क्रोधघ्ने नमः
 क्रोधकृत्कर्त्रे नमः
 विश्वबाहवे नमः
 महीधराय नमः
 अच्युताय नमः
 प्रथिताय नमः
 प्राणाय नमः ३२०
 प्राणदाय नमः
 वासवानुजाय नमः
 अपान्निधये नमः
 अधिष्ठानाय नमः
 अप्रमत्ताय नमः
 प्रतिष्ठिताय नमः
 स्कन्दाय नमः
 स्कन्दधराय नमः
 धुर्याय नमः
 वरदाय नमः ३३०
 वायुवाहनाय नमः
 वासुदेवाय नमः
 बृहद्भानवे नमः
 आदिदेवाय नमः
 पुरन्दराय नमः
 अशोकाय नमः
 तारणाय नमः
 ताराय नमः

शूराय नमः
 शौरये नमः ३४०
 जनेश्वराय नमः
 अनुकूलाय नमः
 शतावर्ताय नमः
 पद्मिने नमः
 पद्मनिभेक्षणाय नमः
 पद्मनाभाय नमः
 अरविन्दाक्षाय नमः
 पद्मगर्भाय नमः
 शरीरभृते नमः
 महर्द्धये नमः ३५०
 ऋद्धाय नमः
 वृद्धात्मने नमः
 महाक्षाय नमः
 गरुडध्वजाय नमः
 अतुलाय नमः
 शरभाय नमः
 भीमाय नमः
 समयज्ञाय नमः
 हविर्हरये नमः
 सर्वलक्षणलक्षण्याय नमः
 ३६०
 लक्ष्मीवते नमः
 समितिञ्जयाय नमः

| | | |
|------------------|-------------------------|-------------------|
| विक्षराय नमः | ध्रुवाय नमः | व्याप्ताय नमः |
| रोहिताय नमः | परर्द्धये नमः | वायवे नमः |
| मार्गाय नमः | परमस्पष्टाय नमः ३९० | अधोक्षजाय नमः |
| हेतवे नमः | तुष्टाय नमः | ऋतवे नमः |
| दामोदराय नमः | पुष्टाय नमः | सुदर्शनाय नमः |
| सहाय नमः | शुभेक्षणाय नमः | कालाय नमः |
| महीधराय नमः | रामाय नमः | परमेष्ठिने नमः |
| महाभागाय नमः ३७० | विरामाय नमः | परिग्रहाय नमः ४२० |
| वेगवते नमः | विरताय नमः | उग्राय नमः |
| अमिताशनाय नमः | मार्गाय नमः | संवत्सराय नमः |
| उद्धवाय नमः | नेयाय नमः | दक्षाय नमः |
| क्षोभणाय नमः | नयाय नमः | विश्रामाय नमः |
| देवाय नमः | अनयाय नमः ४०० | विश्वदक्षिणाय नमः |
| श्रीगर्भाय नमः | वीराय नमः | विस्ताराय नमः |
| परमेश्वराय नमः | शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः | स्थावरस्थाणवे नमः |
| करणाय नमः | धर्माय नमः | प्रमाणाय नमः |
| कारणाय नमः | धर्मविदुत्तमाय नमः | बीजायाव्ययाय नमः |
| कर्त्रे नमः ३८० | वैकुण्ठाय नमः | अर्थाय नमः ४३० |
| विकर्त्रे नमः | पुरुषाय नमः | अनर्थाय नमः |
| गहनाय नमः | प्राणाय नमः | महाकोशाय नमः |
| गुहाय नमः | प्राणदाय नमः | महाभोगाय नमः |
| व्यवसायाय नमः | प्रणवाय नमः | महाधनाय नमः |
| व्यवस्थानाय नमः | पृथवे नमः ४१० | अनिर्विण्णाय नमः |
| संस्थानाय नमः | हिरण्यगर्भाय नमः | स्थविष्ठाय नमः |
| स्थानदाय नमः | शत्रुघ्नाय नमः | अभुवे नमः |

धर्मयूपाय नमः
 महामखाय नमः
 नक्षत्रनेमये नमः ४४०
 नक्षत्रिणे नमः
 क्षमाय नमः
 क्षामाय नमः
 समीहनाय नमः
 यज्ञाय नमः
 इज्याय नमः
 महेज्याय नमः
 क्रतवे नमः
 सत्राय नमः
 सताङ्गतये नमः ४५०
 सर्वदर्शिने नमः
 विमुक्तात्मने नमः
 सर्वज्ञाय नमः
 ज्ञानाय उत्तमाय नमः
 सुव्रताय नमः
 सुमुखाय नमः
 सूक्ष्माय नमः
 सुघोषाय नमः
 सुखदाय नमः
 सुहृदे नमः ४६०
 मनोहराय नमः
 जितक्रोधाय नमः

वीरबाह्वे नमः
 विदारणाय नमः
 स्वापनाय नमः
 स्ववशाय नमः
 व्यापिने नमः
 नैकात्मने नमः
 नैककर्मकृते नमः
 वत्सराय नमः ४७०
 वत्सलाय नमः
 वत्सिने नमः
 रत्नगर्भाय नमः
 धनेश्वराय नमः
 धर्मगुपे नमः
 धर्मकृते नमः
 धर्मिणे नमः
 सते नमः
 असते नमः
 क्षराय नमः ४८०
 अक्षराय नमः
 अविज्ञात्रे नमः
 सहस्रांशवे नमः
 विधात्रे नमः
 कृतलक्षणाय नमः
 गभस्तिनेमये नमः
 सत्त्वस्थाय नमः

सिंहाय नमः
 भूतमहेश्वराय नमः
 आदिदेवाय नमः ४९०
 महादेवाय नमः
 देवेशाय नमः
 देवभृद्गुरवे नमः
 उत्तराय नमः
 गोपतये नमः
 गोप्त्रे नमः
 ज्ञानगम्याय नमः
 पुरातनाय नमः
 शरीरभूतभृते नमः
 भोक्त्रे नमः ५००
 कपीन्द्राय नमः
 भूरिदक्षिणाय नमः
 सोमपाय नमः
 अमृतपाय नमः
 सोमाय नमः
 पुरुजिते नमः
 पुरुसत्तमाय नमः
 विनयाय नमः
 जयाय नमः
 सत्यसन्धाय नमः ५१०
 दाशार्हाय नमः
 सात्त्वतां पतये नमः

जीवाय नमः
 विनयितासाक्षिणे नमः
 मुकुन्दाय नमः
 अमितविक्रमाय नमः
 अम्भोनिधये नमः
 अनन्तात्मने नमः
 महोदधिशयाय नमः
 अन्तकाय नमः ५२०
 अजाय नमः
 महार्हाय नमः
 स्वाभाव्याय नमः
 जितामित्राय नमः
 प्रमोदनाय नमः
 आनन्दाय नमः
 नन्दनाय नमः
 नन्दाय नमः
 सत्यधर्मणे नमः
 त्रिविक्रमाय नमः ५३०
 महर्षये
 कपिलाचार्याय नमः
 कृतज्ञाय नमः
 मेदिनीपतये नमः
 त्रिपदाय नमः
 त्रिदशाध्यक्षाय नमः
 महाशृङ्गाय नमः

कृतान्तकृते नमः
 महावराहाय नमः
 गोविन्दाय नमः
 सुषेणाय नमः ५४०
 कनकाङ्गदिने नमः
 गुह्याय नमः
 गभीराय नमः
 गहनाय नमः
 गुप्ताय नमः
 चक्रगदाधराय नमः
 वेधसे नमः
 स्वाङ्गाय नमः
 अजिताय नमः
 कृष्णाय नमः ५५०
 दृढाय नमः
 सङ्कर्षणायाच्युताय नमः
 वरुणाय नमः
 वारुणाय नमः
 वृक्षाय नमः
 पुष्कराक्षाय नमः
 महामनसे नमः
 भगवते नमः
 भगध्रे नमः
 आनन्दिने नमः ५६०
 वनमालिने नमः

हलायुधाय नमः
 आदित्याय नमः
 ज्योतिरादित्याय नमः
 सहिष्णवे नमः
 गतिसत्तमाय नमः
 सुधन्वने नमः
 खण्डपरशवे नमः
 दारुणाय नमः
 द्रविणप्रदाय नमः ५७०
 दिवस्पृशे नमः
 सर्वदृग्व्यासाय नमः
 वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः
 त्रिसाम्ने नमः
 सामगाय नमः
 साम्ने नमः
 निर्वाणाय नमः
 भेषजाय नमः
 भिषजे नमः
 सत्र्यासकृते नमः ५८०
 शमाय नमः
 शान्ताय नमः
 निष्ठायै नमः
 शान्त्यै नमः
 परायणाय नमः
 शुभाङ्गाय नमः

शान्तिदाय नमः
 स्रष्ट्रे नमः
 कुमुदाय नमः
 कुवलेशयाय नमः ५९०
 गोहिताय नमः
 गोपतये नमः
 गोत्रे नमः
 वृषभाक्षाय नमः
 वृषप्रियाय नमः
 अनिवर्तिने नमः
 निवृत्तात्मने नमः
 सङ्क्षेत्रे नमः
 क्षेमकृते नमः
 शिवाय नमः ६००
 श्रीवत्सवक्षसे नमः
 श्रीवासाय नमः
 श्रीपतये नमः
 श्रीमतां वराय नमः
 श्रीदाय नमः
 श्रीशाय नमः
 श्रीनिवासाय नमः
 श्रीनिधये नमः
 श्रीविभावनाय नमः
 श्रीधराय नमः ६१०
 श्रीकराय नमः

श्रेयसे नमः
 श्रीमते नमः
 लोकत्रयाश्रयाय नमः
 स्वक्षाय नमः
 स्वङ्गाय नमः
 शतानन्दाय नमः
 नन्दये नमः
 ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
 विजितात्मने नमः ६२०
 अविधेयात्मने नमः
 सत्कीर्तये नमः
 छिन्नसंशयाय नमः
 उदीर्णाय नमः
 सर्वतश्चक्षुषे नमः
 अनीशाय नमः
 शाश्वतस्स्थिराय नमः
 भूशयाय नमः
 भूषणाय नमः
 भूतये नमः ६३०
 विशोकाय नमः
 शोकनाशनाय नमः
 अर्चिष्मते नमः
 अर्चिताय नमः
 कुम्भाय नमः
 विशुद्धात्मने नमः

विशोधनाय नमः
 अनिरुद्धाय नमः
 अप्रतिरथाय नमः
 प्रद्युम्नाय नमः ६४०
 अमितविक्रमाय नमः
 कालनेमिनिघ्ने नमः
 वीराय नमः
 शौरये नमः
 शूरजनेश्वराय नमः
 त्रिलोकात्मने नमः
 त्रिलोकेशाय नमः
 केशवाय नमः
 केशिघ्ने नमः
 हरये नमः ६५०
 कामदेवाय नमः
 कामपालाय नमः
 कामिने नमः
 कान्ताय नमः
 कृतागमाय नमः
 अनिर्देश्यवपुषे नमः
 विष्णवे नमः
 वीराय नमः
 अनन्ताय नमः
 धनञ्जयाय नमः ६६०
 ब्रह्मण्याय नमः

| | | |
|---------------------|-------------------|--------------------|
| ब्रह्मकृते नमः | पूरयित्रे नमः | ७१० |
| ब्रह्मणे नमः | पुण्याय नमः | अनलाय नमः |
| ब्रह्मणे नमः | पुण्यकीर्तये नमः | दर्पघ्ने नमः |
| ब्रह्मविवर्धनाय नमः | अनामयाय नमः | दर्पदाय नमः |
| ब्रह्मविदे नमः | मनोजवाय नमः ६९० | दृप्ताय नमः |
| ब्राह्मणाय नमः | तीर्थकराय नमः | दुर्धराय नमः |
| ब्रह्मिणे नमः | वसुरेतसे नमः | अपराजिताय नमः |
| ब्रह्मज्ञाय नमः | वसुप्रदाय नमः | विश्वमूर्तये नमः |
| ब्राह्मणप्रियाय नमः | वसुप्रदाय नमः | महामूर्तये नमः |
| ६७० | वासुदेवाय नमः | दीप्तमूर्तये नमः |
| महाक्रमाय नमः | वसुवे नमः | अमूर्तिमते नमः ७२० |
| महाकर्मणे नमः | वसुमनसे नमः | अनेकमूर्तये नमः |
| महातेजसे नमः | हविषे नमः | अव्यक्ताय नमः |
| महोरगाय नमः | सद्गतये नमः | शतमूर्तये नमः |
| महाक्रतवे नमः | सत्कृतये नमः ७०० | शताननाय नमः |
| महायज्वने नमः | सत्तायै नमः | एकस्मै नमः |
| महायज्ञाय नमः | सद्भूतये नमः | नैकस्मै नमः |
| महाहविषे नमः | सत्परायणाय नमः | सवाय नमः |
| स्तव्याय नमः | शूरसेनाय नमः | काय नमः |
| स्तवप्रियाय नमः ६८० | यदुश्रेष्ठाय नमः | कस्मै नमः |
| स्तोत्राय नमः | सन्निवासाय नमः | यस्मै नमः ७३० |
| स्तुतये नमः | सुयामुनाय नमः | तस्मै नमः |
| स्तोत्रे नमः | भूतावासाय नमः | पदायानुत्तमाय नमः |
| रणप्रियाय नमः | वासुदेवाय नमः | लोकबन्धवे नमः |
| पूर्णाय नमः | सर्वासुनिलयाय नमः | लोकनाथाय नमः |

माधवाय नमः
 भक्तवत्सलाय नमः
 सुवर्णवर्णाय नमः
 हेमाङ्गाय नमः
 वराङ्गाय नमः
 चन्दनाङ्गदिने नमः
 ७४०
 वीरघ्ने नमः
 विषमाय नमः
 शून्याय नमः
 घृताशिषे नमः
 अचलाय नमः
 चलाय नमः
 अमानिने नमः
 मानदाय नमः
 मान्याय नमः
 लोकस्वामिने नमः
 ७५०
 त्रिलोकधृषे नमः
 सुमेधसे नमः
 मेधजाय नमः
 धन्याय नमः
 सत्यमेधसे नमः
 धराधराय नमः
 तेजोवृषाय नमः

द्युतिधराय नमः
 सर्वशस्त्रभृतां
 वराय नमः
 प्रग्रहाय नमः ७६०
 निग्रहाय नमः
 व्यग्राय नमः
 नैकशृङ्गाय नमः
 गदाग्रजाय नमः
 चतुर्मूर्तये नमः
 चतुर्बाहवे नमः
 चतुर्व्यूहाय नमः
 चतुर्गतये नमः
 चतुरात्मने नमः
 चतुर्भावाय नमः ७७०
 चतुर्वेदविदे नमः
 एकपदे नमः
 समावर्ताय नमः
 अनिवृत्तात्मने नमः
 दुर्जयाय नमः
 दुरतिक्रमाय नमः
 दुर्लभाय नमः
 दुर्गमाय नमः
 दुर्गाय नमः
 दुरावासाय नमः ७८०
 दुरारिघ्ने नमः

शुभाङ्गाय नमः
 लोकसारङ्गाय नमः
 सुतन्त्रवे नमः
 तन्तुवर्धनाय नमः
 इन्द्रकर्मणे नमः
 महाकर्मणे नमः
 कृतकर्मणे नमः
 कृतागमाय नमः
 उद्धवाय नमः ७९०
 सुन्दराय नमः
 सुन्दाय नमः
 रत्ननाभाय नमः
 सुलोचनाय नमः
 अर्काय नमः
 वाजसनाय नमः
 शृङ्गिणे नमः
 जयन्ताय नमः
 सर्वविज्जयिने नमः
 सुवर्णबिन्दवे नमः ८००
 अक्षोभ्याय नमः
 सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
 महाहृदाय नमः
 महागर्ताय नमः
 महाभूताय नमः
 महानिधये नमः

| | | |
|-------------------------|-------------------|---------------------|
| कुमुदाय नमः | अचिन्त्याय नमः | धनुर्धराय नमः |
| कुन्दराय नमः | भयकृते नमः | धनुर्वेदाय नमः |
| कुन्दाय नमः | भयनाशनाय नमः | दण्डाय नमः |
| पर्जन्याय नमः ८१० | अणवे नमः | दमयित्रे नमः ८६० |
| पावनाय नमः | बृहते नमः | दमाय नमः |
| अनिलाय नमः | कृशाय नमः | अपराजिताय नमः |
| अमृताशाय नमः | स्थूलाय नमः | सर्वसहाय नमः |
| अमृतवपुषे नमः | गुणभृते नमः | नियन्त्रे नमः |
| सर्वज्ञाय नमः | निर्गुणाय नमः ८४० | अनियमाय नमः |
| सर्वतोमुखाय नमः | महते नमः | अयमाय नमः |
| सुलभाय नमः | अधृताय नमः | सत्त्ववते नमः |
| सुव्रताय नमः | स्वधृताय नमः | सात्त्विकाय नमः |
| सिद्धाय नमः | स्वास्याय नमः | सत्याय नमः |
| शत्रुजिते नमः ८२० | प्राग्वंशाय नमः | सत्यधर्मपरायणाय नमः |
| शत्रुतापनाय नमः | वंशवर्धनाय नमः | ८७० |
| न्यग्रोधाय नमः | भारभृते नमः | अभिप्रायाय नमः |
| उदुम्बराय नमः | कथिताय नमः | प्रियार्हाय नमः |
| अश्वत्थाय नमः | योगिने नमः | अर्हाय नमः |
| चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः | योगीशाय नमः ८५० | प्रियकृते नमः |
| सहस्रार्चिषे नमः | सर्वकामदाय नमः | प्रीतिवर्धनाय नमः |
| सप्तजिह्वाय नमः | आश्रमाय नमः | विहायसगतये नमः |
| सप्तैधसे नमः | श्रमणाय नमः | ज्योतिषे नमः |
| सप्तवाहनाय नमः | क्षामाय नमः | सुरुचये नमः |
| अमूर्तये नमः ८३० | सुपर्णाय नमः | हुतभुजे नमः |
| अनघाय नमः | वायुवाहनाय नमः | विभवे नमः ८८० |

रवये नमः
 विरोचनाय नमः
 सूर्याय नमः
 सवित्रे नमः
 रविलोचनाय नमः
 अनन्ताय नमः
 हुतभुजे नमः
 भोक्त्रे नमः
 सुखदाय नमः
 नैकजाय नमः ८९०
 अग्रजाय नमः
 अनिर्विण्णाय नमः
 सदामर्षिणे नमः
 लोकाधिष्ठानाय नमः
 अद्भुताय नमः
 सनाते नमः
 सनातनतमाय नमः
 कपिलाय नमः
 कपये नमः
 अव्ययाय नमः ९००
 स्वस्तिदाय नमः
 स्वस्तिकृते नमः
 स्वस्तये नमः
 स्वस्तिभुजे नमः
 स्वस्तिदक्षिणाय नमः

अरौद्राय नमः
 कुण्डलिने नमः
 चक्रिणे नमः
 विक्रमिणे नमः
 ऊर्जितशासनाय नमः
 ९१०
 शब्दातिगाय नमः
 शब्दसहाय नमः
 शिशिराय नमः
 शर्वरीकराय नमः
 अक्रूराय नमः
 पेशलाय नमः
 दक्षाय नमः
 दक्षिणाय नमः
 क्षमिणां वराय नमः
 विद्वत्तमाय नमः ९२०
 वीतभयाय नमः
 पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
 उत्तारणाय नमः
 दुष्कृतिघ्ने नमः
 पुण्याय नमः
 दुस्स्वप्ननाशनाय नमः
 वीरघ्ने नमः
 रक्षणाय नमः
 सद्भ्यो नमः

जीवनाय नमः ९३०
 पर्यवस्थिताय नमः
 अनन्तरूपाय नमः
 अनन्तश्रिये नमः
 जितमन्यवे नमः
 भयापहाय नमः
 चतुरश्राय नमः
 गभीरात्मने नमः
 विदिशाय नमः
 व्यादिशाय नमः
 दिशाय नमः ९४०
 अनादये नमः
 भुवो भुवे नमः
 लक्ष्म्यै नमः
 सुवीराय नमः
 रुचिराङ्गदाय नमः
 जननाय नमः
 जनजन्मादये नमः
 भीमाय नमः
 भीमपराक्रमाय नमः
 आधारनिलयाय नमः
 ९५०
 अधात्रे नमः
 पुष्पहासाय नमः
 प्रजागराय नमः

| | | |
|------------------------|--------------------|----------------------|
| ऊर्ध्वगाय नमः | प्रपितामहाय नमः | स्वयञ्जाताय नमः |
| सत्पथाचाराय नमः | १७० | वैखानाय नमः |
| प्राणदाय नमः | यज्ञाय नमः | सामगायनाय नमः |
| प्रणवाय नमः | यज्ञपतये नमः | देवकीनन्दनाय नमः |
| पणाय नमः | यज्वने नमः | स्रष्ट्रे नमः ११० |
| प्रमाणाय नमः | यज्ञाङ्गाय नमः | क्षितीशाय नमः |
| प्राणनिलयाय नमः | यज्ञवाहनाय नमः | पापनाशनाय नमः |
| १६० | यज्ञभृते नमः | शङ्खभृते नमः |
| प्राणभृते नमः | यज्ञकृते नमः | नन्दकिने नमः |
| प्राणजीवनाय नमः | यज्ञिने नमः | चक्रिणे नमः |
| तत्त्वाय नमः | यज्ञभुजे नमः | शार्ङ्गधन्वने नमः |
| तत्त्वविदे नमः | यज्ञसाधनाय नमः १८० | गदाधराय नमः |
| एकात्मने नमः | यज्ञान्तकृते नमः | रथाङ्गपाणये नमः |
| जन्ममृत्युजरातिगाय नमः | यज्ञगुह्याय नमः | अक्षोभ्याय नमः |
| भूर्भुवस्स्वस्तरवे नमः | अन्नाय नमः | सर्वप्रहरणायुधाय नमः |
| ताराय नमः | अन्नादाय नमः | १००० |
| सवित्रे नमः | आत्मयोनये नमः | |

॥ इति श्रीविष्णुसहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | |
|-----------------|-------------------|
| श्रीकृष्णाय नमः | सनातनाय नमः |
| कमलानाथाय नमः | वसुदेवात्मजाय नमः |
| वासुदेवाय नमः | पुण्याय नमः |

लीलामानुषविग्रहाय नमः
 श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः
 यशोदावत्सलाय नमः
 हरये नमः
 चतुर्भुजात्तचक्रासि-
 गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः
 देवकीनन्दनाय नमः
 श्रीशाय नमः
 नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः
 यमुनावेगसंहारिणे नमः
 बलभद्रप्रियानुजाय नमः
 पूतनाजीवितहराय नमः
 शकटासुरभञ्जनाय नमः
 नन्दब्रजजनानन्दिने नमः
 सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
 नवनीतविलिताङ्गाय नमः
 नवनीतनटाय नमः
 अनघाय नमः
 नवनीतनवाहाराय नमः
 मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः
 षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 गोविन्दाय नमः
 योगिनां पतये नमः

१०

२०

३०

वत्सवाटचराय नमः
 अनन्ताय नमः
 धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 उत्तालतालभेत्रे नमः
 तमालश्यामलाकृतये नमः
 गोपगोपीश्वराय नमः
 योगिने नमः
 कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः
 इलापतये नमः
 परस्मै ज्योतिषे नमः
 यादवेन्द्राय नमः
 यदूद्वहाय नमः
 वनमालिने नमः
 पीतवाससे नमः
 पारिजातापहारकाय नमः
 गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 गोपालाय नमः
 सर्वपालकाय नमः
 अजाय नमः
 निरञ्जनाय नमः
 कामजनकाय नमः
 कञ्जलोचनाय नमः
 मधुघ्ने नमः

४०

५०

| | | | |
|----------------------------|----|----------------------------|-----|
| मथुरानाथाय नमः | | जयिने नमः | ८० |
| द्वारकानायकाय नमः | | सुभद्रापूर्वजाय नमः | |
| बलिने नमः | | विष्णवे नमः | |
| बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः | | भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः | |
| तुलसीदामभूषणाय नमः | ६० | जगद्गुरवे नमः | |
| स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः | | जगन्नाथाय नमः | |
| नरनारायणात्मकाय नमः | | वेणुनादविशारदाय नमः | |
| कुञ्जाकृष्णाम्बरधराय नमः | | वृषभासुरविध्वंसिने नमः | |
| मायिने नमः | | बाणासुरकरान्तकाय नमः | |
| परमपूरुषाय नमः | | युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः | |
| मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध- | | बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः | ९० |
| विशारदाय नमः | | पार्थसारथये नमः | |
| संसारवैरिणे नमः | | अव्यक्ताय नमः | |
| कंसारये नमः | | गीतामृतमहोदधये नमः | |
| मुरारये नमः | | कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री- | |
| नरकान्तकाय नमः | ७० | पदाम्बुजाय नमः | |
| अनादिब्रह्मचारिणे नमः | | दामोदराय नमः | |
| कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः | | यज्ञभोक्त्रे नमः | |
| शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः | | दानवेन्द्रविनाशकाय नमः | |
| दुर्योधनकुलान्तकाय नमः | | नारायणाय नमः | |
| विदुराक्रूरवरदाय नमः | | परब्रह्मणे नमः | |
| विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः | | पन्नगाशनवाहनाय नमः | १०० |
| सत्यवाचे नमः | | जलक्रीडासमासक्तगोपी- | |
| सत्यसङ्कल्पाय नमः | | वस्त्रापहारकाय नमः | |
| सत्यभामारताय नमः | | पुण्यश्लोकाय नमः | |

तीर्थपादाय नमः
वेदवेद्याय नमः
दयानिधये नमः

सर्वतीर्थात्मकाय नमः
सर्वग्रहरूपिणे नमः
परात्पराय नमः

॥इति श्री-ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते
श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥



॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्धीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूँश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥
मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, () निवेदयामि।
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समंवर्तत।
पृथ्वा भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तर्था लोकाः अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं
कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९

रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान्
समर्पयामि।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

श्री-भूमि-नीला-समेत-महा-विष्णवे नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान्
समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् एकादशीपुण्यकाले
महाविष्णुपूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

एकादश्यामुपोष्यैव पारणात् पूर्वकालतः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण सुरवन्दित॥

महाविष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

नमोऽस्तु केशवादिभ्यः सर्वलोकेकवन्दिताः।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो भव सर्वदा॥

केशवादिभ्यः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

कूर्मरूपाय देवाय मत्स्यरूप नमोऽस्तुते।
नीलमेघस्वरूपाय अर्घ्यं दत्तं मया प्रभो॥

विष्णवे नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

क्षीरोद्भवे महालक्ष्मि सुप्रसन्ने सुरेश्वरि।
सर्वप्रदे जगद्वन्द्ये गृहीदार्घ्यमिदं रमे॥॥

महालक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

एकादशीपुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं

श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णु-प्रीतिं कामयमानः
 मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
 अनया पूजया श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु।
 न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
 न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-भूमि-नीला-समेत-श्री-महाविष्णुं यथास्थानं
 प्रतिष्ठापयामि (अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)
 अनया पूजया श्री-भूमि-नीला-समेतः श्री-महाविष्णुः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
 आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
 सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
 इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य व्रतेनानेन केशव।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥



॥ श्री-रामनवमी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीराम-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये () नाम संवत्सरे उत्तरायणे वसन्त-ऋतौ (मेष/मीन) मासे शुक्लपक्षे
नवम्यां शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु /स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम्
(आर्द्रा/पुनर्वसू/पुष्य) नक्षत्रयुक्तायां ()-योग ()-करण-युक्तायां च एवं गुण-
विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीसीतालक्ष्मणभरतशत्रुघ्नहनुमत्समेत
श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थं श्रीरामनवमीपुण्यकाले कल्पोक्तप्रकारेण यथाशक्ति
श्रीरामचन्द्रपूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा
गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै
नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।
ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इ॒दं सर्वं विश्वा॑ भू॒तान्यापः॑ प्रा॒णा वा आपः॑ प॒शव॑
आपोऽन्न॑मापोऽमृत॑मापः स॒म्राडापो॑ वि॒राडापः॑ स्व॒राडाप॑श्छन्दा॒ऽस्यापो॑
ज्योती॑ऽप्यापो यजू॑ऽप्यापः स॒त्यमापः॑ सर्वा॑ दे॒वता॑ आपो॒ भूर्भुवः॑ सुव॒राप॑
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

वैदेही-सहितं सुर-द्रुम-तले हैमे महामण्डपे
मध्येपुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जन-सुते तत्त्वं मुनिभ्यः परं
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम्॥

वामे भूमि-सुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रा-सुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्व-दलयोर्-वाय्वादि-कोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारा-सुतो जाम्बवान्
मध्ये नील-सरोज-कोमल-रुचिं रामं भजे श्यामलम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं ध्यायामि।

(अथ प्राणप्रतिष्ठा)

आवाहयामि विश्वेशं वैदेही-वल्लभं विभुम्।
कौसल्या-तनयं विष्णुं श्री-रामं प्रकृतेः परम्॥

श्रीरामाय नमः – आवाहयामि।

वामे सीताम् आवाहयामि। पुरस्तात् हनुमन्तम् आवाहयामि । पश्चात्
लक्ष्मणम् आवाहयामि। उत्तरस्यां शत्रुघ्नमवाहयामि । दक्षिणस्यां दिशि
भरतम् आवाहयामि । वायव्यायां सुग्रीवम् आवाहयामि । ऐशान्यां

विभीषणम् आवाहयामि । आग्नेय्याम् अङ्गदम् आवाहयामि । नैऋत्यां
जाम्बवन्तम् आवाहयामि ॥

रत्न-सिंहासनारूढ सर्व-भूपाल-वन्दित।
आसनं ते मया दत्तं प्रीतिं जनयतु प्रभो॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आसनं समर्पयामि।

पादाङ्गुष्ठ-समुद्भूत-गङ्गा-पावित-विष्टप ।
पादार्थमुदकं राम ददामि परिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।
वालखिल्यादिभिर्-विप्रैस्-त्रिसन्ध्यं प्रयतात्मभिः।
अर्घ्यैः आराधित विभो ममार्घ्यं राम गृह्यताम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।
आचान्ताम्भोधिना राम मुनिना परिसेवित।
मया दत्तेन तोयेन कुर्वाचमनमीश्वर॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।
नमः श्री-वासुदेवाय तत्त्व-ज्ञान-स्वरूपिणे ।
मधुपर्कं गृहाणेमं जानकीपतये नमः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।
कामधेनु-समुद्भूत-क्षीरेणेन्द्रेण राघव।
अभिषिक्त अखिलार्थास्त्यै स्नाहि मद्-दत्त-दुग्धतः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, क्षीराभिषेकं समर्पयामि।
हनूमता मधुवनोद्भूतेन मधुना प्रभो।
प्रीत्याऽभिषेचित-तनो मधुना स्नाहि मेऽद्य भोः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मध्वभिषेकं समर्पयामि।

त्रैलोक्य-ताप-हरण-नाम-कीर्तन राघव।
मधूत-ताप-शान्त्यर्थं स्नाहि क्षीरेण वै पुनः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, मध्वभिषेकान्ते पुनः क्षीराभिषेकं समर्पयामि।

नदी-नद-समुद्रादि-तोयैर्-मन्त्राभिसंस्कृतैः ।
पट्टाभिषिक्त राजेन्द्र स्नाहि शुद्ध-जलेन मे॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि।

स्नानोत्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

हित्वा पीताम्बरं चीर-कृष्णाजिन-धराच्युत।
परिधत्स्वाद्य मे वस्त्रं स्वर्ण-सूत्र-विनिर्मितम्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

राजर्षि-वंश-तिलक रामचन्द्र नमोऽस्तु ते।
यज्ञोपवीतं विधिना निर्मितं धत्स्व मे प्रभो॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, उपवीतं समर्पयामि।

किरीटादीनि राजेन्द्र हंसकान्तानि राघव।
विभूषणानि धृत्वाऽद्य शोभस्व सह सीतया॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, आभरणम् समर्पयामि।

सन्ध्या-समान-रुचिना नीलाभ्र-सम-विग्रह।
लिम्पामि तेऽङ्गकं राम चन्दनेन मुदा हृदि॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, गन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् कुङ्कुमोन्मिश्रान् अक्षय्य-फल-दायक।
अर्पये तव पादाब्जे शालि-तण्डुल-सम्भवान्॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

चम्पकाशोक-पुत्रागैर्-जलजैस्-तुलसी-दलैः।

पूजयामि रघूत्तंस पूज्यं त्वां सनकादिभिः॥

सपरिवाराय श्रीरामाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्ग-गुण-पूजा ॥

अहल्या-उद्धारकाय नमः

शरणागत-रक्षकाय नमः

गङ्गा-नदी-प्रवर्तन-पराय नमः

सीता-संवाहित-पदाय नमः

दुन्दुभि-काय-विक्षेपकाय नमः

विनत-कल्प-द्रुमाय नमः

दण्डकारण्य-गमन-जङ्घालाय नमः

जानु-न्यस्त-कराम्बुजाय नमः

वीरासन-अध्यासिने नमः

पीताम्बर-अलङ्कृताय नमः

आकाश-मध्यगाय नमः

अरि-निग्रह-पराय नमः

अब्धि-मेखला-पतये नमः

उदर-स्थित-ब्रह्माण्डाय नमः

जगत्-त्रय-गुरवे नमः

सीतानुलेपित-काश्मीर-चन्दनाय नमः

अभय-प्रदान-शौण्डाय नमः

वितरण-जित-कल्पद्रुमाय नमः

पाद-रजः पूजयामि

पाद-कान्तिं पूजयामि

पाद-नखान् पूजयामि

पाद-तलं पूजयामि

पादाङ्गुष्ठं पूजयामि

गुल्फौ पूजयामि

जङ्घे पूजयामि

जानुनी पूजयामि

ऊरू पूजयामि

कटिं पूजयामि

मध्यं पूजयामि

कटि-लम्बितम् असिं पूजयामि

मध्य-लम्बित-मेखला-दाम

पूजयामि

उदरं पूजयामि

वलि-त्रयं पूजयामि

वक्षः पूजयामि

दक्षिण-बाहु-दण्डं पूजयामि

दक्षिण-कर-तलं पूजयामि

आशर-निरसन-पराय नमः
 ज्ञान-विज्ञान-भासकाय नमः
 मुनि-सङ्घार्पित-दिव्य-पदाय नमः
 दशानन-काल-रूपिणे नमः

 शत-मख-दत्त-शत-पुष्कर-स्रजे नमः
 कृत्त-दशानन-किरीट-कूटाय नमः
 सीता-बाहु-लतालिङ्गिताय नमः
 स्मित-भाषिणे नमः
 नित्य-प्रसन्नाय नमः
 सत्य-वाचे नमः
 कपालि-पूजिताय नमः
 चक्षुःश्रवः-प्रभु-पूजिताय नमः
 अनासादित-पाप-गन्धाय नमः
 पुण्डरीकाक्षाय नमः
 अपाङ्ग-स्यन्दि-करुणाय नमः
 विना-कृत-रुषे नमः
 कस्तूरी-तिलकाङ्किताय नमः
 राजाधिराज-वेषाय नमः
 मुनि-मण्डल-पूजिताय नमः
 मोहित-मुनि-जनाय नमः
 जानकी-व्यजन-वीजिताय नमः

दक्षिण-कर-स्थित-शरं पूजयामि
 चिन्मुद्रां पूजयामि
 वाम-भुज-दण्डं पूजयामि
 वाम-हस्त-स्थित-कोदण्डं
 पूजयामि
 अंसौ पूजयामि
 अंस-लम्बित-निषङ्ग-द्वयं पूजयामि
 कण्ठं पूजयामि
 स्मितं पूजयामि
 मुख-प्रसादं पूजयामि
 वाचं पूजयामि
 कपोलौ पूजयामि
 श्रोत्रे पूजयामि
 घ्राणं पूजयामि
 अक्षिणी पूजयामि
 अरुणापाङ्ग-द्वयं पूजयामि
 अनाथ-रक्षक-कटाक्षं पूजयामि
 फालं पूजयामि
 किरीटं पूजयामि
 जटा-मण्डलं पूजयामि
 पुंसां मोहनं रूपं पूजयामि
 विद्युद्-विद्योतित-कालाभ्र-सदृश-
 कान्तिं पूजयामि

हनुमदर्पित-चूडामणये नमः

सुमन्त्रानुग्रह-पराय नमः

कम्पिताम्भोधये नमः

तिरस्कृत-लङ्केश्वराय नमः

वन्दित-जनकाय नमः

सम्मानित-त्रिजटाय नमः

गन्धर्व-राज-प्रतिमाय नमः

असहाय-हत-खर-दूषणादि-चतुर्दश-

सहस्र-राक्षसाय नमः

आलिङ्गित-आञ्जनेयाय नमः

लब्ध-राज्य-परित्यक्ते नमः

दर्भ-शायिने नमः

सर्वेश्वराय नमः

करुणारस-उद्वेलित-कटाक्ष-धारां
पूजयामि

तेजोमयरूपं पूजयामि

आहार्य-कोपं पूजयामि

धैर्यं पूजयामि

विनयं पूजयामि

अतिमानुष-सौलभ्यं पूजयामि

लोकोत्तर-सौन्दर्यं पूजयामि

पराक्रमं पूजयामि

भक्त-वात्सल्यं पूजयामि

धर्मं पूजयामि

लोकानुवर्तनं पूजयामि

सर्वाण्यङ्गानि सर्वांश्च गुणान्
पूजयामि

॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

श्रीरामाय नमः

रामभद्राय नमः

रामचन्द्राय नमः

शाश्वताय नमः

राजीवलोचनाय नमः

श्रीमते नमः

राजेन्द्राय नमः

रघुपुङ्गवाय नमः

जानकीवल्लभाय नमः

जैत्राय नमः

जितामित्राय नमः

जनार्दनाय नमः

विश्वामित्रप्रियाय नमः

दान्ताय नमः

शरणत्राणतत्पराय नमः

वालिप्रमथनाय नमः

वाग्मिने नमः

सत्यवाचे नमः

सत्यविक्रमाय नमः

सत्यव्रताय नमः

व्रतधराय नमः

सदा हनुमदाश्रिताय नमः

कौसलेयाय नमः

खरध्वंसिने नमः

विराधवधपण्डिताय नमः

विभीषणपरित्रात्रे नमः

हरकोदण्डखण्डनाय नमः

सप्ततालप्रभेत्रे नमः

दशग्रीवशिरोहराय नमः

जामदग्न्यमहादर्पदलनाय नमः ३०

ताटकान्तकाय नमः

वेदान्तसाराय नमः

वेदात्मने नमः

भवरोगस्य भेषजाय नमः

दूषणत्रिशिरोहत्रे नमः

त्रिमूर्तये नमः

त्रिगुणात्मकाय नमः

त्रिविक्रमाय नमः

त्रिलोकात्मने नमः

पुण्यचारित्रकीर्तनाय नमः ४०

त्रिलोकरक्षकाय नमः

धन्विने नमः

दण्डकारण्यकर्तनाय नमः

अहल्याशापशमनाय नमः

पितृभक्ताय नमः

वरप्रदाय नमः

जितेन्द्रियाय नमः

जितक्रोधाय नमः

जितामित्राय नमः

जगद्गुरवे नमः ५०

ऋक्षवानरसङ्घातिने नमः

चित्रकूटसमाश्रयाय नमः

जयन्तत्राणवरदाय नमः

सुमित्रापुत्रसेविताय नमः

सर्वदेवादिदेवाय नमः

मृतवानरजीवनाय नमः

मायामारीचहत्रे नमः

महादेवाय नमः

महाभुजाय नमः

सर्वदेवस्तुताय नमः ६०

सौम्याय नमः

ब्रह्मण्याय नमः

मुनिसंस्तुताय नमः

महायोगाय नमः

महोदाराय नमः

सुग्रीवेप्सितराज्यदाय नमः

सर्वपुण्याधिकफलाय नमः

स्मृतसर्वाघनाशनाय नमः

अनादये नमः

आदिपुरुषाय नमः

७०

महापूरुषाय नमः

पुण्योदयाय नमः

दयासाराय नमः

पुराणपुरुषोत्तमाय नमः

स्मितवक्त्राय नमः

मितभाषिणे नमः

पूर्वभाषिणे नमः

राघवाय नमः

अनन्तगुणगम्भीराय नमः

धीरोदात्तगुणोत्तमाय नमः

८०

मायामानुषचारित्राय नमः

महादेवादिपूजिताय नमः

सेतुकृते नमः

जितवारीशाय नमः

सर्वतीर्थमयाय नमः

हरये नमः

श्यामाङ्गाय नमः

सुन्दराय नमः

शूराय नमः

पीतवाससे नमः

९०

धनुर्धराय नमः

सर्वयज्ञाधिपाय नमः

यज्विने नमः

जरामरणवर्जिताय नमः

शिवलिङ्गप्रतिष्ठात्रे नमः

सर्वापगुणवर्जिताय नमः

परमात्मने नमः

परस्मै ब्रह्मणे नमः

सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः

परस्मै ज्योतिषे नमः

१००

परस्मै धाम्ने नमः

पराकाशाय नमः

परात्पराय नमः

परेशाय नमः

पारगाय नमः

पाराय नमः

सर्वदेवात्मकाय नमः

पराय नमः

॥ इति श्री-पद्मपुराणे उत्तरखण्डे श्री-रामाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ सीताष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

श्रीसीतायै नमः

जानक्यै नमः

देव्यै नमः

वैदेह्यै नमः

राघवप्रियायै नमः

रमायै नमः

अवनिमुतायै नमः

रामायै नमः

राक्षसान्तप्रकारिण्यै नमः

रत्नगुप्तायै नमः

मातुलुङ्ग्यै नमः

मैथिल्यै नमः

भक्ततोषदायै नमः

पद्माक्षजायै नमः

कञ्जनेत्रायै नमः

स्मितास्यायै नमः

नूपुरस्वनायै नमः

वैकुण्ठनिलयायै नमः

मायै नमः

श्रियै नमः

मुक्तिदायै नमः

कामपूरण्यै नमः

नृपात्मजायै नमः

हेमवर्णायै नमः

मृदुलाङ्ग्यै नमः

सुभाषिण्यै नमः

कुशाम्बिकायै नमः

दिव्यदायै नमः

लवमात्रे नमः

मनोहरायै नमः

हनुमद्वन्दितपदायै नमः

मुग्धायै नमः

केयूरधारिण्यै नमः

अशोकवनमध्यस्थायै नमः

रावणादिकमोहिन्यै नमः

विमानसंस्थितायै नमः

सुभ्रुवे नमः

सुकेश्यै नमः

रशनान्वितायै नमः

रजोरूपायै नमः

सत्त्वरूपायै नमः

तामस्यै नमः

वह्निवासिन्यै नमः

हेममृगासक्तचित्तायै नमः

वाल्मीक्याश्रमवासिन्यै नमः

पतिव्रतायै नमः

१०

२०

३०

४०

महामायायै नमः
 पीतकौशेयवासिन्यै नमः
 मृगनेत्रायै नमः
 बिम्बोष्ठ्यै नमः ५०
 धनुर्विद्याविशारदायै नमः
 सौम्यरूपायै नमः
 दशरथस्नुषायै नमः
 चामरवीजितायै नमः
 सुमेधादुहित्रे नमः
 दिव्यरूपायै नमः
 त्रैलोक्यपालिन्यै नमः
 अन्नपूर्णायै नमः
 महालक्ष्म्यै नमः
 धियै नमः ६०
 लज्जायै नमः
 सरस्वत्यै नमः
 शान्त्यै नमः
 पुष्ट्यै नमः
 क्षमायै नमः
 गौर्यै नमः
 प्रभायै नमः
 अयोध्यानिवासिन्यै नमः
 वसन्तशीतलायै नमः
 गौर्यै नमः ७०
 स्नानसन्तुष्टमानसायै नमः

रमानामभद्रसंस्थायै नमः
 हेमकुम्भपयोधरायै नमः
 सुरार्चितायै नमः
 धृत्यै नमः
 कान्त्यै नमः
 स्मृत्यै नमः
 मेधायै नमः
 विभावर्यै नमः
 लघूदरायै नमः ८०
 वरारोहायै नमः
 हेमकङ्कणमण्डितायै नमः
 द्विजपत्न्यर्पितनिजभूषायै नमः
 राघवतोषिण्यै नमः
 श्रीरामसेवानिरतायै नमः
 रत्नताटङ्कधारिण्यै नमः
 रामवामाङ्गसंस्थायै नमः
 रामचन्द्रैकरञ्जन्यै नमः
 सरयूजलसङ्कीडाकारिण्यै नमः
 राममोहिन्यै नमः ९०
 सुवर्णतुलितायै नमः
 पुण्यायै नमः
 पुण्यकीर्त्यै नमः
 कलावत्यै नमः
 कलकण्ठायै नमः
 कम्बुकण्ठायै नमः

रम्भोरुवे नमः
 गजगामिन्यै नमः
 रामार्पितमनायै नमः
 रामवन्दितायै नमः १००
 रामवल्लभायै नमः
 श्रीरामपदचिहाङ्कायै नमः
 रामरामेतिभाषिण्यै नमः
 रामपर्यङ्कशयनायै नमः

रामाङ्घ्रिक्षालिन्यै नमः
 वरायै नमः
 कामधेन्वन्नसन्तुष्टायै नमः
 मातुलुङ्गकरे धृतायै नमः
 दिव्यचन्दनसंस्थायै नमः
 श्रियै नमः ११०
 मूलकासुरमर्दिन्यै नमः

॥ इति श्री-आनन्दरामायणे श्री-सीताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

आञ्जनेयाय नमः
 महावीराय नमः
 हनूमते नमः
 मारुतात्मजाय नमः
 तत्त्वज्ञानप्रदाय नमः
 सीतादेवीमुद्राप्रदायकाय नमः
 अशोकवनिकाच्छेत्रे नमः
 सर्वमायाविभञ्जनाय नमः
 सर्वबन्धविमोक्त्रे नमः
 रक्षोविध्वंसकारकाय नमः १०
 परविद्यापरीहर्त्रे नमः
 परशौर्यविनाशनाय नमः

परमन्ननिराकर्त्रे नमः
 परयन्त्रप्रभेदकाय नमः
 सर्वग्रहविनाशिने नमः
 भीमसेनसहायकृते नमः
 सर्वदुःखहराय नमः
 सर्वलोकचारिणे नमः
 मनोजवाय नमः
 पारिजातद्रुमूलस्थाय नमः २०
 सर्वमन्त्रस्वरूपवते नमः
 सर्वतन्त्रस्वरूपिणे नमः
 सर्वयन्त्रात्मकाय नमः
 कपीश्वराय नमः

महाकायाय नमः
 सर्वरोगहराय नमः
 प्रभवे नमः
 बलसिद्धिकराय नमः
 सर्वविद्यासम्पत्प्रदायकाय नमः
 कपिसेनानायकाय नमः ३०
 भविष्यच्चतुराननाय नमः
 कुमारब्रह्मचारिणे नमः
 रत्नकुण्डलदीप्तिमते नमः
 चञ्चलद्वालसन्नद्ध-
 लम्बमानशिखोज्ज्वलाय नमः
 गन्धर्वविद्यातत्त्वज्ञाय नमः
 महाबलपराक्रमाय नमः
 कारागृहविमोक्ते नमः
 शृङ्खलाबन्धमोचकाय नमः
 सागरोत्तारकाय नमः
 प्राज्ञाय नमः ४०
 रामदूताय नमः
 प्रतापवते नमः
 वानराय नमः
 केसरीसुताय नमः
 सीताशोकनिवारणाय नमः
 अञ्जनागर्भसम्भूताय नमः
 बालार्कसदृशाननाय नमः
 विभीषणप्रियकराय नमः

दशग्रीवकुलान्तकाय नमः
 लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः ५०
 वज्रकायाय नमः
 महाद्युतये नमः
 चिरञ्जीविने नमः
 रामभक्ताय नमः
 दैत्यकार्यविघातकाय नमः
 अक्षहन्त्रे नमः
 काञ्चनाभाय नमः
 पञ्चवक्त्राय नमः
 महातपसे नमः
 लङ्किणीभञ्जनाय नमः ६०
 श्रीमते नमः
 सिंहिकाप्राणभञ्जनाय नमः
 गन्धमादनशैलस्थाय नमः
 लङ्कापुरविदाहकाय नमः
 सुग्रीवसचिवाय नमः
 धीराय नमः
 शूराय नमः
 दैत्यकुलान्तकाय नमः
 सुरार्चिताय नमः
 महातेजसे नमः ७०
 रामचूडामणिप्रदाय नमः
 कामरूपिणे नमः
 पिङ्गलाक्षाय नमः

वर्धिमैनाकपूजिताय नमः
 कबलीकृतमार्तण्डमण्डलाय नमः
 विजितेन्द्रियाय नमः
 रामसुग्रीवसन्धात्रे नमः
 महिरावणमर्दनाय नमः
 स्फटिकाभाय नमः
 वागधीशाय नमः
 नवव्याकृतिपण्डिताय नमः
 चतुर्बाहवे नमः
 दीनबन्धवे नमः
 महात्मने नमः
 भक्तवत्सलाय नमः
 सञ्जीवननगाहर्त्रे नमः
 शुचये नमः
 वाग्मिने नमः
 दृढव्रताय नमः
 कालनेमिप्रमथनाय नमः
 हरिमर्कटमर्कटाय नमः

८०

९०

दान्ताय नमः
 शान्ताय नमः
 प्रसन्नात्मने नमः
 शतकण्ठमदापहृते नमः
 योगिने नमः
 रामकथालोलाय नमः
 सीतान्वेषणपण्डिताय नमः
 वज्रदंष्ट्राय नमः
 वज्रनखाय नमः
 रुद्रवीर्यसमुद्भवाय नमः
 इन्द्रजित्प्रहितामोघ-
 ब्रह्मास्त्रविनिवारकाय नमः
 पार्थध्वजाग्रसंवासिने नमः
 शरपञ्जरहेलकाय नमः
 दशबाहवे नमः
 लोकपूज्याय नमः
 जाम्बवत्प्रीतिवर्धनाय नमः
 सीतासमेतश्रीराम-
 पादसेवाधुरन्धराय नमः

१००

॥ इति श्री-हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ रामाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

रामाय नमः
 रावण-संहार-कृत-मानुष-

विग्रहाय नमः
 कौसल्या-सुकृत-व्रात-फलाय नमः

दशरथात्मजाय नमः
 लक्ष्मणार्चित-पादाब्जाय नमः
 सर्व-लोक-प्रियङ्कराय नमः
 साकेत-वासि-नेत्राब्ज-सम्प्रीणन-
 दिवाकराय नमः
 विश्वामित्र-प्रियाय नमः
 शान्ताय नमः
 ताटका-ध्वान्त-भास्कराय नमः १०
 सुबाहु-राक्षस-रिपवे नमः
 कौशिकाध्वर-पालकाय नमः
 अहल्या-पाप-संहर्त्रे नमः
 जनकेन्द्र-प्रियातिथये नमः
 पुरारि-चाप-दलनाय नमः
 वीर-लक्ष्मी-समाश्रयाय नमः
 सीता-वरण-माल्याढ्याय नमः
 जामदग्न्य-मदापहाय नमः
 वैदेही-कृत-शृङ्गाराय नमः
 पितृ-प्रीति-विवर्धनाय नमः २०
 ताताज्ञोत्सृष्ट-हस्त-स्थ-राज्याय नमः
 सत्य-प्रतिश्रवाय नमः
 तमसा-तीर-संवासिने नमः
 गुहानुग्रह-तत्पराय नमः
 सुमन्त्र-सेवित-पदाय नमः
 भरद्वाज-प्रियातिथये नमः
 चित्रकूट-प्रिय-स्थानाय नमः

पादुका-न्यस्त-भू-भराय नमः
 अनसूया-अङ्गरागाङ्क-सीता-
 साहित्य-शोभिताय नमः
 दण्डकारण्य-सञ्चारिणे नमः ३०
 विराध-स्वर्ग-दायकाय नमः
 रक्षः-कालान्तकाय नमः
 सर्व-मुनि-सङ्घ-मुदावहाय नमः
 प्रतिज्ञात-आशर-वधाय नमः
 शरभङ्ग-गति-प्रदाय नमः
 अगस्त्यार्पित-बाणास-खङ्ग-तूणीर-
 मण्डिताय नमः
 प्राप्त-पञ्चवटी-वासाय नमः
 गृध्रराज-सहायवते नमः
 कामि-शूर्पणखा-कर्ण-नास-च्छेद-
 नियामकाय नमः
 खरादि-राक्षस-
 त्रातखण्डनावितसञ्जनाय नमः ४०
 सीता-संश्लिष्ट-कायाभा-जित-विद्युद्-
 युताम्बुदाय नमः
 मारीच-हन्त्रे नमः
 मायाढ्याय नमः
 जटायुर्-मोक्ष-दायकाय नमः
 कबन्ध-बाहु-लवनाय नमः
 शबरी-प्रार्थितातिथये नमः
 हनुमद्-वन्दित-पदाय नमः

सुग्रीव-सुहृदेऽव्ययाय नमः
 दैत्य-कङ्काल-विक्षेपिणे नमः
 सप्त-साल-प्रभेदकाय नमः ५०
 एकेषु-हत-वाल्लिने नमः
 तारा-संस्तुत-सद्गुणाय नमः
 कपीन्द्री-कृत-सुग्रीवाय नमः
 सर्व-वानर-पूजिताय नमः
 वायु-सूनु-समानीत-सीता-सन्देश-
 नन्दिताय नमः
 जैत्र-यात्रोद्यताय नमः
 जिष्णवे नमः
 विष्णु-रूपाय नमः
 निराकृतये नमः
 कम्पिताम्भोनिधये नमः ६०
 सम्पत्-प्रदाय नमः
 सेतु-निबन्धनाय नमः
 लङ्का-विभेदन-पटवे नमः
 निशाचर-विनाशकाय नमः
 कुम्भकर्णारख्य-कुम्भीन्द्र-मृगराज-
 पराक्रमाय नमः
 मेघनाद-वधोद्युक्त-लक्ष्मणास्त्र-
 बलप्रदाय नमः
 दशग्रीवान्धतामिस्र-प्रमापण-
 प्रभाकराय नमः
 इन्द्रादि-देवता-स्तुत्याय नमः

चन्द्राभ-मुख-मण्डलाय नमः
 विभीषणार्पित-निशाचर-
 राज्याय नमः ७०
 वृष-प्रियाय नमः
 वैश्वानर-स्तुत-गुणावनिपुत्री-
 समागताय नमः
 पुष्पक-स्थान-सुभगाय नमः
 पुण्यवत्-प्राप्य-दर्शनाय नमः
 राज्याभिषिक्ताय नमः
 राजेन्द्राय नमः
 राजीव-सदृशेक्षणाय नमः
 लोक-तापापहर्त्रे नमः
 धर्म-संस्थापनोद्यताय नमः
 शरण्याय नमः ८०
 कीर्तिमते नमः
 नित्याय वदान्याय नमः
 करुणार्णवाय नमः
 संसार-सिन्धु-सम्मग्न-तारकाख्या-
 महोज्ज्वलाय नमः
 मधुराय नमः
 मधुरोक्तये नमः
 मधुरा-नायकाग्रजाय नमः
 शम्बूक-दत्त-स्वर्लोकाय नमः
 शम्बराराति-सुन्दराय नमः
 अश्वमेध-महायाजिने नमः ९०

वाल्मीकि-प्रीतिमते नमः
 वशिने नमः
 स्वयं रामायण-श्रोत्रे नमः
 पुत्र-प्राप्ति-प्रमोदिताय नमः
 ब्रह्मादि-स्तुत-माहात्म्याय नमः
 ब्रह्मर्षि-गण-पूजिताय नमः
 वर्णाश्रम-रताय नमः
 वर्णाश्रम-धर्म-नियामकाय नमः
 रक्षा-पराय नमः
 राज-वंश-प्रतिष्ठापन-तत्पराय नमः

१००
 गन्धर्व-हिंसा-संहारिणे नमः
 धृतिमते नमः
 दीन-वत्सलाय नमः
 ज्ञानोपदेष्ट्रे नमः
 वेदान्त-वेद्याय नमः
 भक्त-प्रियङ्कराय नमः
 वैकुण्ठ-वासिने नमः
 चराचर-विमुक्ति-दाय नमः १०८

॥ इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-राम-अष्टोत्तरशत-नामावलिः
 सम्पूर्णा ॥

॥ सीताष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

सीतायै नमः
 सीर-ध्वज-सुतायै नमः
 सीमातीत-गुणोज्ज्वलायै नमः
 सौन्दर्य-सार-सर्वस्व-भूतायै नमः
 सौभाग्य-दायिन्यै नमः
 देव्यै नमः
 देवार्चित-पदायै नमः
 दिव्यायै नमः
 दशरथ-स्रुषायै नमः

रामायै नमः १०
 राम-प्रियायै नमः
 रम्यायै नमः
 राकेन्दु-वदनोज्ज्वलायै नमः
 वीर्य-शुल्कायै नमः
 वीर-पत्न्यै नमः
 वियन्मध्यायै नमः
 वर-प्रदायै नमः
 पति-व्रतायै नमः

पङ्क्ति-कण्ठ-नाशिन्यै नमः
 पावन-स्मृतये नमः
 वन्दारु-वत्सलायै नमः
 वीर-मात्रे नमः
 वृत-रघूत्तमायै नमः
 सम्पत्-कर्यै नमः
 सदा-तुष्टायै नमः
 साक्षिण्यै नमः
 साधु-सम्मतायै नमः
 नित्यायै नमः
 नियत-संस्थानायै नमः
 नित्यानन्दायै नमः
 नुति-प्रियायै नमः
 पृथ्व्यै नमः
 पृथ्वी-सुतायै नमः
 पुत्र-दायिन्यै नमः
 प्रकृत्यै परस्यै नमः
 हनूमत्-स्वामिन्यै नमः
 हृद्यायै नमः
 हृदय-स्थायै नमः
 हताशुभायै नमः
 हंस-युक्तायै नमः
 हंस-गतये नमः
 हर्ष-युक्तायै नमः
 हताशरायै नमः

२०

३०

४०

सार-रूपायै नमः
 सार-वचसे नमः
 साध्व्यै नमः
 सरमा-प्रियायै नमः
 त्रिलोक-वन्द्यायै नमः
 त्रिजटा-सेव्यायै नमः
 त्रिपथ-गार्चिन्यै नमः
 त्राण-प्रदायै नमः
 त्रात-काकायै नमः
 तृणी-कृत-दशाननायै नमः
 अनसूया-अङ्गरागाङ्गायै नमः
 अनसूयायै नमः
 सूरि-वन्दितायै नमः
 अशोक-वनिका-स्थानायै नमः
 अशोकायै नमः
 शोक-विनाशिन्यै नमः
 सूर्य-वंश-सुषायै नमः
 सूर्य-मण्डलान्तस्थ-वल्लभायै नमः
 श्रुत-मात्राघ-हरणायै नमः
 श्रुति-सन्निहितेक्षणायै नमः
 पुष्प-प्रियायै नमः
 पुष्पक-स्थायै नमः
 पुण्य-लभ्यायै नमः
 पुरातन्यै नमः
 पुरुषार्थ-प्रदायै नमः

५०

६०

| | | | |
|--------------------------------|----|---------------------------|-----|
| पूज्यायै नमः | | वह्नि-शैत्य-कृते नमः | ९० |
| पूत-नाम्ने नमः | ७० | वृद्धि-दायिन्यै नमः | |
| परन्तपायै नमः | | वाल्मीकि-गीत-विभवायै नमः | |
| पद्म-प्रियायै नमः | | वचोतीतायै नमः | |
| पद्म-हस्तायै नमः | | वराङ्गनायै नमः | |
| पद्मायै नमः | | भक्ति-गम्यायै नमः | |
| पद्म-मुख्यै नमः | | भव्य-गुणायै नमः | |
| शुभायै नमः | | भात्र्यै नमः | |
| जन-शोक-हरायै नमः | | भरत-वन्दितायै नमः | |
| जन्म-मृत्यु-शोक-विनाशिन्यै नमः | | सुवर्णाङ्ग्यै नमः | |
| जगद्-रूपायै नमः | | सुखकर्यै नमः | १०० |
| जगद्-वन्द्यायै नमः | ८० | सुग्रीवाङ्गद-सेवितायै नमः | |
| जय-दायै नमः | | वैदेह्यै नमः | |
| जनकात्मजायै नमः | | विनताघौघ-नाशिन्यै नमः | |
| नाथनीय-कटाक्षायै नमः | | विधि-वन्दितायै नमः | |
| नाथायै नमः | | लोक-मात्रे नमः | |
| नाथैक-तत्परायै नमः | | लोचनान्त-स्थित-कारुण्य- | |
| नक्षत्र-नाथ-वदनायै नमः | | सागरायै नमः | |
| नष्ट-दोषायै नमः | | कृताकृत-जगद्धेतवे नमः | |
| नयावहायै नमः | | कृत-राज्याभिषेककायै नमः | १०८ |
| वह्नि-पाप-हरायै नमः | | | |

इदम् अष्टोत्तर-शतं सीता-नाम्नां तु या वधूः।
भक्ति-युक्ता पठेत् सा तु पुत्र-पौत्रादि-नन्दिता॥

धन-धान्य-समृद्धा च दीर्घ-सौभाग्य-दर्शिनी।
पुंसाम् अपि स्तोत्रम् इदं पठनात् सर्व-सिद्धि-दम्॥

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-सीता-अष्टोत्तरशत-नामावलिः
सम्पूर्णा॥

॥ हनुमदष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

हनुमते नमः

अञ्जना-सूनवे नमः

धीमते नमः

केसरि-नन्दनाय नमः

वातात्मजाय नमः

वर-गुणाय नमः

वानरेन्द्राय नमः

विरोचनाय नमः

सुग्रीव-सचिवाय नमः

श्रीमते नमः

सूर्य-शिष्याय नमः

सुख-प्रदाय नमः

ब्रह्म-दत्त-वराय नमः

ब्रह्म-भूताय नमः

ब्रह्मर्षि-सन्नुताय नमः

जितेन्द्रियाय नमः

जितारातये नमः

राम-दूताय नमः

रणोत्कटाय नमः

सञ्जीवनी-समाहर्त्रे नमः

२०

सर्व-सैन्य-प्रहर्षकाय नमः

रावणाकम्प्य-सौमित्रि-नयन-स्फुट-

भक्तिमते नमः

अशोक-वनिका-च्छेदिने नमः

सीता-वात्सल्य-भाजनाय नमः

विषीदद्-भूमि-तनयार्पित-

रामाङ्गुलीयकाय नमः

चूडामणि-समानेत्रे नमः

राम-दुःखापहारकाय नमः

अक्ष-हन्त्रे नमः

विक्षतारये नमः

तृणीकृत-दशाननाय नमः

३०

कुल्या-कल्प-महाम्मोधये नमः

सिंहिका-प्राण-नाशनाय नमः

सुरसा-विजयोपाय-वेत्रे नमः

सुर-वरार्चिताय नमः

१०

जाम्बवन्नुत-माहात्म्याय नमः
जीविताहत-लक्ष्मणाय नमः
जम्बुमालि-रिपवे नमः
जम्भ-वैरि-साध्वस-नाशनाय नमः
अस्त्रावध्याय नमः
राक्षसारये नमः ४०
सेनापति-विनाशनाय नमः
लङ्कापुर-प्रदग्धे नमः
वालानल-सुशीतलाय नमः
वानर-प्राण-सन्दात्रे नमः
वालि-सूनु-प्रियङ्कराय नमः
महारूप-धराय नमः
मान्याय नमः
भीमाय नमः
भीम-पराक्रमाय नमः
भीम-दर्प-हराय नमः ५०
भक्त-वत्सलाय नमः
भर्त्सिताशराय नमः
रघु-वंश-प्रिय-कराय नमः
रण-धीराय नमः
रयाकराय नमः
भरतार्पित-सन्देशाय नमः
भगवच्छिष्ट-विग्रहाय नमः
अर्जुन-ध्वज-वासिने नमः
तर्जिताशर-नायकाय नमः

महते नमः ६०
महा-मधुर-वाचे नमः
महात्मने नमः
मातरिश्च-जाय नमः
मरुन्नुताय नमः
महोदार-गुणाय नमः
मधु-वन-प्रियाय नमः
महा-धैर्याय नमः
महा-वीर्याय नमः
मिहिराधिक-कान्तिमते नमः
अन्नदाय नमः ७०
वसुदाय नमः
वाग्मिने नमः
ज्ञान-दाय नमः
वत्सलाय नमः
वशिने नमः
वशीकृताखिल-जगते नमः
वरदाय नमः
वानराकृतये नमः
भिक्षु-रूप-प्रतिच्छन्नाय नमः
अभीति-दाय नमः ८०
भीति-वर्जिताय नमः
भूमी-धर-हराय नमः
भूति-दायकाय नमः
भूत-सन्नुताय नमः

भुक्ति-मुक्ति-प्रदाय नमः
 भूम्ने नमः
 भुज-निर्जित-राक्षसाय नमः
 वाल्मीकि-स्तुत-माहात्म्याय नमः
 विभीषण-सुहृदे नमः
 विभवे नमः १०
 अनुकम्पा-निधये नमः
 पम्पा-तीर-चारिणे नमः
 प्रतापवते नमः
 ब्रह्मास्त्र-हत-रामादि-जीवनाय नमः
 ब्रह्म-वत्सलाय नमः
 जय-वार्ताहराय नमः

जेत्रे नमः
 जानकी-शोक-नाशनाय नमः
 जानकी-राम-साहित्य-कारिणे नमः
 जन-सुख-प्रदाय नमः १००
 बहु-योजन-गन्त्रे नमः
 बल-वीर्य-गुणाधिकाय नमः
 रावणालय-मर्दिने नमः
 राम-पादाब्ज-वाहकाय नमः
 राम-नाम-लसद्-वक्त्राय नमः
 रामायण-कथादृताय नमः
 राम-स्वरूप-विलसन्मानसाय नमः
 राम-वल्लभाय नमः १०८

इत्थम् अष्टोत्तर-शतं नाम्नां वातात्मजस्य यः।
 अनुसन्ध्यं पठेत् तस्य मारुतिः सम्प्रसीदति।
 प्रसन्ने मारुतौ रामो भुक्ति-मुक्ती प्रयच्छति॥

॥इति ब्रह्मयामले रामरहस्ये प्रोक्ता श्री-हनुमद्-अष्टोत्तरशत-नामावलिः
 सम्पूर्णा॥

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

वनस्पति-रसोद्भूतो गन्धाढ्यो धूप उत्तमः।
 रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
 धूपम् आघ्रापयामि।

ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे।
 गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्य-तिमिरापहम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ओं भूर्भुवस्सुवः + ब्रह्मणे स्वाहा।

इदं दिव्यान्नम् अमृतं रसैः षड्भिः समन्वितम्।
रामचन्द्रेण नैवेद्यं सीतेश प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नैवेद्यं निवेदयामि। मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। निवेदनोत्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

नागवल्ली-दलैर्-युक्तं पूगी-फल-समन्वितम्।
ताम्बूलं गृह्यतां राम कर्पूरादि-समन्वितम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे।
सङ्गृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
समस्त-अपराध-क्षमापणार्थं समस्त-दुरित-उपशान्त्यर्थं
समस्त-सन्मङ्गल-अवाप्त्यर्थं कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि। रक्षां धारयामि।

कल्पवृक्ष-समुद्भूतैः पुरुहूतादिभिः सुमैः।
पुष्पाञ्जलिं ददाम्यद्य पूजिताय आशर-द्विषे॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।

ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोन॑मः॥

अन्तश्चरति॑ भू॒तेषु॑ गुहायां वि॒श्वमूर्ति॑षु।

त्वं यज्ञ॑स्त्वं वष॒ट्कार॑स्त्वमिन्द्र॒स्त्व॑

रुद्र॑स्त्वं विष्णु॒स्त्वं ब्र॒ह्म त्वं॑ प्रजा॒पतिः॑।

त्वं तदा॑प॒ आपो॑ ज्योती॒ रसो॑ऽमृतं॒ ब्रह्म॑ भूर्भुवः॒ सुव॒रोम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

मन्दाकिनी-समुद्भूत-काञ्चनाब्ज-स्रजा विभो।

सम्मानिताय शक्रेण स्वर्ण-पुष्पं ददामि ते॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
स्वर्ण-पुष्पम् समर्पयामि।

चराचरं व्याप्नुवन्तम् अपि त्वां रघु-नन्दन।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य मदग्रे मूर्ति-संयुतम्॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
प्रदक्षिणं करोमि।

ध्येयं सदा परिभव-घ्नम् अभीष्ट-दोहं

तीर्थास्पदं शिव-विरिञ्चि-नुतं शरण्यम्।

भृत्यार्ति-हं प्रणत-पाल-भवाब्धि-पोतं

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्सित-राज्य-लक्ष्मीं

धर्मिष्ठ आर्य-वचसा यदगाद् अरण्यम्।

माया-मृगं दयितयेप्सितम् अन्वधावत्

वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्॥

साङ्गोपाङ्गाय साराय जगतां सनकादिभिः।
वन्दिताय वरेण्याय राघवाय नमो नमः ॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
नमस्कारान् समर्पयामि।

॥ प्रार्थना ॥

त्वमक्षरोऽसि भगवन् व्यक्ताव्यक्त-स्वरूप-धृत्।
यथा त्वं रावणं हत्वा यज्ञ-विघ्न-करं खलम्।
लोकान् रक्षितवान् राम तथा मन्मानसाश्रयम्॥१॥

रजस्तमश्च निर्हृत्य त्वत्पूजालस्य-कारकम्।
सत्त्वम् उद्रेचय विभो त्वत्पूजादर-सिद्धये॥२॥

विभूतिं वर्षय गृहे पुत्रपौत्राभिवृद्धिकृत्।
कल्याणं कुरु मे नित्यं कैवल्यं दिश चान्ततः॥३॥

विधितोऽविधितो वाऽपि या पूजा क्रियते मया।
तां त्वं सन्तुष्टहृदयो यथावद् विहितामिव॥४॥

स्वीकृत्य परमेशान मात्रा मे सह सीतया।
लक्ष्मणादिभिरप्यत्र प्रसादं कुरु मे सदा॥५॥

प्रार्थनाः समर्पयामि॥

हनुमत्कृतं श्री-सीता-राम-स्तोत्रम्

अयोध्या-पुर-नेतारं मिथिला-पुर-नायिकाम्।
इक्ष्वाकूणाम् अलङ्कारं वैदेहानाम् अलङ्कियाम्॥१॥

रघूणां कुल-दीपं च निमीनां कुल-दीपिकाम्।
सूर्य-वंश-समुद्भूतं सोम-वंश-समुद्भवाम्॥२॥

पुत्रं दशरथस्यापि पुत्रीं जनक-भूपतेः।
वसिष्ठ-अनुमताचारं शतानन्द-मतानुगाम्॥३॥

कौसल्या-गर्भ-सम्भूतं वेदि-गर्भोदितां स्वयम्।
पुण्डरीक-विशालाक्षं स्फुरद्-इन्दीवरेक्षणाम्॥४॥

चन्द्र-कान्त-आननाम्भोजं चन्द्रबिम्ब-उपमाननाम्।
मत्त-मातङ्ग-गमनं मत्त-सारस-गामिनीम्॥५॥

चन्दनार्द्र-भुजा-मध्यं कुङ्कुमाक्त-कुच-स्थलीम्।
चापालङ्कृत-हस्ताब्जं पद्मालङ्कृत-पाणिकाम्॥६॥

शरणागतगोप्तारं प्रणिपातप्रसादिकाम्।
ताली-दल-श्यामलाङ्गं तप्त-चामीकर-प्रभाम्॥७॥

दिव्य-सिंहासनारूढं दिव्य-स्रग्-वस्त्र-भूषणाम्।
अनुक्षणं कटाक्षाभ्याम् अन्योन्य-ईक्षण-काङ्क्षिणौ॥८॥

अन्योन्य-सदृशाकारौ त्रैलोक्य-गृह-दम्पती।
इमौ युवां प्रणम्याहं भजाम्यद्य कृतार्थताम्॥९॥

अनया स्तोति यः स्तुत्या रामं सीतां च भक्तितः।
तस्य तौ तनुतां प्रीतौ सम्पदः सकला अपि॥१०॥

इतीदं रामचन्द्रस्य जानक्याश्च विशेषतः।
कृतं हनुमता पुण्यं स्तोत्रं सद्यो विमुक्ति-दम्।
यः पठेत्प्रातरुत्थाय सर्वान् कामानवाप्नुयात्॥११॥
॥इति श्री-हनूमत्कृतं श्री-सीतारामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

एकातपत्रच्छायायां शासिताशेषभूमिक।
मम छत्रमिदं रत्नजालकं राम गृह्यताम्॥

छत्रम् समर्पयामि।

रक्षोराजानुजाभ्यां ते कृतं चामरसेवया।
वीजयेऽहं कराभ्यां ते चामरद्वयमादरात्॥

चामरम् वीजयामि।

रामायणं साधु गीतं सुताभ्यां श्रुतवानसि।
मयाऽपि गीयमानं ते स्तोत्रं चित्ताय रोचताम्॥

गीतम् गायामि।

वीणावेणुमृदङ्गादिवाद्यैस्त्वां प्रीणयाम्यहम्।
मददम्भाहङ्कृतीनां नाशको भव राघव॥

वाद्यम् घोषयामि।

आरुह्य सीतया सार्धं दत्तामान्दोलिकां मया।
विभाहि भूषितो राम मत्कृते पूजनोत्सवे॥

आन्दोलिकां समर्पयामि।

मया कल्पितपल्याणं महान्तं मम घोटकम्।
मदंसे चरणं न्यस्य मुदाऽऽरोह रघूत्तम॥

अश्वान् आरोहयामि।

गजेन महताऽऽयान्तमाकाङ्क्षन्ति स्म नागराः।
द्रष्टुं त्वां मगजे भाहि दृष्ट्वा नन्देयमप्यहम्॥

गजान् आरोहयामि।

समस्तराजोपचारदेवोपचारपूजाः समर्पयामि।

मनसा वचसा कायेनागसां शतमन्वहम्।
धियाऽधिया च रचये क्षमस्व सहजक्षम॥

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

॥ अर्घ्य-प्रदानम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।
ममोपात्त + प्रीत्यर्थम् अद्य पूर्वोक्त + शुभतिथौ श्रीरामचन्द्रपूजान्ते
अर्घ्यप्रदानं करिष्ये (इति सङ्कल्प्य)।

राम रात्रिश्चराराते क्षीरमध्वाज्यकल्पितम्।
पूजान्तेऽर्घ्यं मया दत्तं स्वीकृत्य वरदो भव॥

श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-परब्रह्मणे नमः
इदमर्घ्यं इदमर्घ्यं इदमर्घ्यम्॥

अनेनार्घ्यप्रदानेन श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-रामनवमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण श्रीरामपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं
श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्र-प्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रं
यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनया पूजया श्री-सीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत-श्री-रामचन्द्रः
प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ कथा ॥

अगस्त्य उवाच

रहस्यं कथयिष्यामि सुतीक्ष्ण मुनिसत्तम।
चैत्रे नवम्यां प्राक्पक्षे दिवापुण्ये पुनर्वसौ॥१॥

उदये गुरुगौरांशे स्वोच्चस्थे ग्रहपञ्चके।
मेष पूषणि सम्प्राप्ते लग्ने कर्कटकाह्वये॥२॥

आविरासीत्स कलया कौसल्यायां परः पुमान्।
तस्मिन्दिने तु कर्तव्यमुपवासव्रतं सदा॥३॥

तत्र जागरणं कुर्याद्रघुनाथपुरो भुवि।
प्रतिमायां यथाशक्ति पूजा कार्या यथाविधि॥४॥

प्रातर्दशम्यांस्नातृवै कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः।
सम्पूज्य विधिवद् रामं भक्त्या वित्तानुसारतः॥५॥

ब्राह्मणान् भोजयेत् सम्यक् दक्षिणाभिश्च तोषयेत्।
गोभूतिलहिरण्याद्यैर्वस्त्रालङ्कारणैस्तथा ॥६॥

रामभक्तान्प्रयत्नेन प्रीणयेत्परया मुदा।
एवं यः कुरुते भक्त्या श्रीरामनवमीव्रतम्॥७॥

अनेकजन्मासिद्धानि पापानि सुबहूनि च।
भस्मीकृत्य व्रजत्येव तद्विष्णोः परमं पदम्॥८॥

सर्वेषामप्ययं धर्मो भुक्तिमुत्तयेकसाधनः।
अशुचिर्वाऽपि पापिष्ठः कृत्वेदं व्रतमुत्तमम्।
पूज्यः स्यात्सर्वभूतानां यथा रामस्तथैव सः॥९॥

यस्तु रामनवम्यां वै भुङ्क्ते स तु नराधमः।
कुम्भीपाकेषु घोरेषु गच्छत्येव न संशयः॥१०॥

अकृत्वा रामनवमीव्रतं सर्वव्रतोत्तमम्।
व्रतान्यन्यानि कुरुते न तेषां फलभागभवेत्॥११॥

रहस्यकृतपापानि प्रख्यातानि बहून्यपि।
महान्ति च प्रणश्यन्ति श्रीरामनवमीव्रतात्॥१२॥

एकामपि नरो भक्त्या श्रीरामनवमीं मुने।
उपोष्य कृतकृत्यः स्यात्सर्वपापैः प्रमुच्यते॥१३॥

नरो रामनवम्यां तु श्रीरामप्रतिमाप्रदः।
विधानेन मुनिश्रेष्ठ स मुक्तो नात्र संशयः॥१४॥

सुतीक्ष्ण उवाच

श्रीरामप्रतिमादानविधानं वा कथं मुने।
कथय त्वं हि रामेऽपि भक्तस्य मम विस्तरात्॥१५॥

अगस्त्य उवाच

कथायिष्यामि तद्विद्वन् प्रतिमादानमुत्तमम्॥१६॥
विधानं चापि यत्नेन यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः।
अष्टम्यां चैत्रमासे तु शुक्लपक्षे जितेन्द्रियः॥१७॥
दन्तधावनपूर्वं तु प्रातः स्नायाद्यथाविधि।
नद्यां तडागे कूपे वा हृदे प्रस्रवणेऽपि वा॥१८॥
ततः सन्ध्यादिका कार्याः संस्मरन् राघवं हृदि।
गृहमासाद्य विप्रेन्द्र कुर्यादौपासनादिकम्॥१९॥
दान्तं कुटुम्बिनं विप्रं वेदशास्त्रपरं सदा।
श्रीरामपूजानिरतं सुशीलं दम्भवर्जितम्॥२०॥
विधिज्ञं राममन्त्राणां राममन्त्रैकसाधनम्।
आहूय भक्त्या सम्पूज्य वृणुयात्प्रार्थयन्निती॥२१॥
श्रीरामप्रतिमादानं करिष्येऽहं द्विजोत्तम।
तत्राचार्यो भव प्रीतः श्रीरामोऽसि त्वमेव च॥२२॥
इत्युक्त्वा पूज्य विप्रं तं स्नापयित्वा ततः परम्।
तैलेनाभ्यज्य पयसा चिन्तयन्नाघवं हृदि॥२३॥
श्वेताम्बरधरः श्वेतगन्धमाल्यानि धारयेत्।
अर्चितो भूषितश्चैव कृतमाध्याह्निकक्रियः॥२४॥

आचार्यं भोजयेद् भक्त्या सात्त्विकात्रैः सुविस्तरम्।
भुञ्जीत स्वयमप्येवं हृदि राममनुस्मरन्॥२५॥

एकभक्तव्रती तत्र सहाचार्यो जितेन्द्रियः।
शृण्वन्नामकथां दिव्यामहःशेषं नयेन्मुने॥२६॥

सायं सन्ध्यादिकाः कुर्यात्क्रिया राममनुस्मरन्।
आचार्यसहितो रात्रावधःशायी जितेन्द्रियः॥२७॥

वसेत्स्वयं न चैकान्ते श्रीरामार्पितमानसः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नात्वा सन्ध्यां यथाविधि॥२८॥

प्रातः सर्वाणि कर्माणि शीघ्रमेव समापयेत्।
ततः स्वस्थमना भूत्वा विद्वद्भिः सहितोऽनघ॥२९॥

स्वगृहे चोत्तरे देशे दानस्योज्ज्वलमण्डपम्।
चतुर्द्वारं पताकाढ्यं सवितानं सतोरणम्॥३०॥

मनोहरं महोत्सेधं पुष्पाद्यैः समलङ्कृतम्।
शङ्खचक्रहनूमद्भिः प्रारद्वारे समलङ्कृतम्॥३१॥

गरुत्मच्छार्ङ्गबाणैश्च दक्षिणे समलङ्कृतम्।
गदाखङ्गाङ्गदैश्चैव पश्चिमे च विभूषितम्॥३२॥

पद्मस्वस्तिकनीलैश्च कौबेर्यां समलङ्कृतम्।
मध्यहस्तचतुष्काढ्यवेदिकायुक्तमायतम् ॥३३॥

प्रविश्य गीतनृत्यैश्च वाद्यैश्चापि समन्वितम्।
पुण्याहं वाचयित्वा च विद्वद्भिः प्रीतमानसः॥३४॥

ततः सङ्कल्पयेद्देवं राममेव स्मरन्मुने।
अस्यां रामनवम्यां तु रामाराधनतत्परः॥३५॥

उपोष्याष्टसु यामेषु पूजयित्वा यथाविधि।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां तु प्रयत्नतः॥३६॥

श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते।
प्रीतो रामो हरत्वाशु पापानि सुबहूनि मे॥३७॥

अनेकजन्मसंसिद्धान्यभ्यस्तानि महान्ति च।
विलिखेत्सर्वतोभद्रं वेदिकोपरि सुन्दरम्॥३८॥

मध्ये तीर्थोदकैर्युक्तं पात्रं संस्थाप्य चार्चितम्।
सौवर्णे राजते ताम्रे पात्रे षट्कोणमालिखेत्॥३९॥

ततः स्वर्णमयीं रामप्रतिमां पलमात्रतः।
निर्मितां द्विभुजां रम्यां वामाङ्गस्थितजानकीम्॥४०॥

बिभ्रतीं दक्षिणे हस्ते ज्ञानमुद्रां महामुने।
वामेनाधःकरेणारादेवीमालिङ्ग्य संस्थिताम्॥४१॥

सिंहासने राजते च पलद्वयविनिर्मिते।
पञ्चामृतस्नानपूर्वं सम्पूज्य विधिवत्ततः॥४२॥

मूलमन्त्रेण नियतो न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
दिवैवं विधिवत् कृत्वा रात्रौ जागरणं ततः॥४३॥

दिव्यां रामकथां श्रुत्वा रामभक्तिसमन्वितः।
गीतनृत्यादिभिश्चैव रामस्तोत्रैरनेकधा॥४४॥

रामाष्टकैश्च संस्तुत्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
कर्पूरागुरुकस्तूरीकह्वाराद्यैरनेकधा ॥४५॥

सम्पूज्य विधिवद् भक्त्या दिवारात्रं नयेद्बुधः।
ततः प्रातः समुत्थाय स्नानसन्ध्यादिकाः क्रियाः॥४६॥

समाप्य विधिवद्रामं पूजयेद्विधिवन्मुने।
ततो होमं प्रकुर्वीत मूलमन्त्रेण मन्त्रवित्॥४७॥

पूर्वोक्तपद्मकुण्डे वा स्थण्डिले वा समाहितः।
लौकिकाग्नौ विधानेन शतमष्टोत्तरं मुने॥४८॥

साज्येन पायसेनैव स्मरन्नाममनन्यधीः।
ततो भक्त्या सुसन्तोष्य आचार्यं पूजयेन्मुने॥४९॥

कुण्डलाभ्यां सरत्नाभ्यामङ्गुलीयैरनेकधा।
गन्धपुष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैस्तु मनोहरैः॥५०॥

ततो रामं स्मरन्दद्यादिमं मन्त्रमुदीरयेत्।
इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलङ्कृताम्॥५१॥

चित्रवस्त्रयुगच्छन्नरामोऽहं राघवाय ते।
श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतु राघवः॥५२॥

इति दत्त्वा विधानेन दद्याद्वै दक्षिणां ध्रुवम्।
अन्नेभ्यश्च यथाशक्त्या गोहिरण्यादि भक्तितः॥५३॥

दद्याद्वासोयुगं धान्यं तथाऽलङ्करणानि च।
एवं यः कुरुते रामप्रतिमादानमुत्तमम्॥५४॥

ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।
तुलापुरुषदानादिफलमाप्नोति सुव्रत॥५५॥

अनेकजन्मसंसिद्धपापेभ्यो मुच्यते ध्रुवम्।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन मुक्तिस्तस्य करे स्थिता॥५६॥

कुरुक्षेत्रे महापुण्ये सूर्यपर्वण्यशेषतः।
तुलापुरुषदानाद्यैः कृतैर्यल्लभते फलम्।
तत्फलं लभते मर्त्यो दानेनानेन सुव्रत॥५७॥

सुतीक्ष्ण उवाच

प्रायेण हि नराः सर्वे दरिद्राः कृपणा मुने।
कैः कर्तव्यं कथमिदं व्रतं ब्रूहि महामुने॥५८॥

अगस्त्य उवाच

दरिद्रश्च महाभाग स्वस्य वित्तानुसारतः॥५९॥
पलार्धेन तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः।
वित्तशाठ्यमकृत्वैव कुर्यादिवं व्रतं मुने॥६०॥
यदि घोरतरं दुष्टं पातकं नेहते क्वचित्।
अकिञ्चनोऽपि यत्नेन उपोष्य नवमीदिने॥६१॥
एकचित्तोऽपि विधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते।
प्रातःस्नानं च विधिवत्कृत्वा सन्ध्यादिकाः क्रियाः॥६२॥
गोभूतिलहिरण्यादि दद्याद्वित्तानुसारतः।
श्रीरामचन्द्रभक्तेभ्यो विद्वद्भ्यः श्रद्धयान्वितः॥६३॥
पारणं त्वथ कुर्वीत ब्राह्मणैश्च स्वबन्धुभिः।
एवं यः कुरुते भक्त्या सर्वपापैः प्रमुच्यते॥६४॥
प्राप्ते श्रीरामनवमीदिने मर्त्यो विमूढधीः।
उपोषणं न कुरुते कुम्भीपाकेषु पच्यते॥६५॥
यत्किञ्चिद्राममुद्दिश्य क्रियते न स्वशक्तितः।
रौरवे स तु मूढात्मा पच्यते नात्र संशयः॥६६॥

सुतीक्ष्ण उवाच

यामाष्टके तु पूजा वै तत्र चोक्ता महामुने।
मूलमन्त्रेण संयुक्ता तां कथां वद सुव्रत॥६७॥

अगस्त्य उवाच

सर्वेषां राममन्त्राणां मन्त्रराज षडक्षरम्।
मुमूर्षोर्मणिकर्णान्ते अर्धोदकनिवासिनः॥६८॥

अहं दिशामि ते मन्त्रं तारकस्योपदेशतः।
श्रीराम राम रामेति एतत्तारकमुच्यते॥६९॥

अतस्त्वं जानकीनाथपरं ब्रह्माभिधीयसे।
तारकं ब्रह्म चेत्युक्तं तेन पूजा प्रशस्यते॥७०॥

पीठाङ्गदेवतानां तु आवृत्तीनां तथैव च।
आदावेव प्रकुर्वीत देवस्य प्रीतमानसः॥७१॥

उपचारैः षोडशभिः पूजा कार्या यथाविधि।
आवाहनं स्थापनं च सम्मुखीकरणं तथा॥७२॥

एवं मुद्रां प्रार्थनां च पूजामुद्रां प्रयत्नतः।
शङ्खपूजां प्रकुर्वीत पूर्वोक्तविधिना ततः॥७३॥

कलशं वामभागे च पूजाद्रव्याणि चादरात्।
पीठे सम्पूज्य यत्नेन आत्मानं मन्त्रमुच्चरेत्॥७४॥

पात्रासादनमप्येवं कुर्याद्यामेष्वतन्द्रितः।
पीताम्बराणि देवाय प्रार्पयन्नर्चयेत्सुधीः॥७५॥

स्वर्णयज्ञोपवीतानि दद्याद्देवाय भक्तितः।
नानारत्नविचित्राणि दद्यादाभरणानि च॥७६॥

हिमाम्बुघृष्टं रुचिरं घनसारमनोहरम्।
क्रमात्तु मूलमन्त्रेण उपचारान्प्रकल्पयेत्॥७७॥

कह्लारैः केतकैर्जात्यैः पुन्नागाद्यैः प्रपूजयेत्।
चम्पकैः शतपत्रैश्च सुगन्धैः सुमनोहरैः॥७८॥

पाद्यचन्दनधूपैश्च तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत्।
भक्ष्यभोज्यादिकं भक्त्या देवाय विधिनाऽर्पयेत्॥७९॥

येन सोपस्करं देवं दत्त्वा पापैः प्रमुच्यते।
जन्मकोटिकृतैर्घोरैर्नानारूपैश्च दारुणः॥८०॥

विमुक्तः स्यात्क्षणादेव राम एव भवेन्मुने।
श्रद्धाधानस्य दातव्यं श्रीरामनवमीव्रतम्॥८१॥

सर्वलोकहितायेदं पवित्रं पापनाशनम्।
लोहेन निर्मितं वाऽपि शिलया दारुणाऽपि वा॥८२॥

एकेनैव प्रकारेण यस्मै कस्मै च वा मुने।
कृतं सर्वं प्रयत्नेन यत्किञ्चिदपि भक्तितः॥८३॥

जपेदेकान्तमासीनो यावत्स दशमीदिनम्।
अनेन स्यात्पुनः पूजा दशम्यां भोजयेद् द्विजान्॥८४॥

भक्त्या भोज्यैर्बहुविधैर्दद्याद् भक्त्या च दक्षिणाम्।
कृतकृत्यो भवेत्तेन सद्यो रामः प्रसीदति॥८५॥

तूष्णीं तिष्ठन्नरो वाऽपि पुनरावृत्तिवर्जितः।
द्वादशाब्दे कृतेनापि यत्पापं चापि मुच्यते॥८६॥

विलयं याति तत्सर्वं श्रीरामनवमीव्रतम्।
जपं च रामनन्त्राणां यो न जानाति तस्य वै॥८७॥

उपोष्य संस्मरेद्रामं न्यासपूर्वमतन्द्रितः।
गुरोर्लब्धमिमं मन्त्रं न्यसेन्न्यासपुरःसरम्॥८८॥

यामे यामे च विधिना कुर्यात्पूजां समाहितः।
मुमुक्षुश्च सदा कुर्याच्छ्रीरामनवमीव्रतम्।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो याति ब्रह्म सनातनम्॥८९॥

॥इति श्रीस्कान्दपुराणे अगस्त्यसंहितायामगस्तिसुतीक्ष्णसंवादे रामनवमीव्रत-
विधिः सम्पूर्णः॥



॥ श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^७ नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेष/वृषभ-वैशाख-मासे शुक्लपक्षे पञ्चम्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (आर्द्रा/?)^८-नक्षत्र ()^९ योग () करण-युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां पञ्चम्यां शुभतिथौ श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्

- उत्तराषाढा-नक्षत्रे धनूराशौ आविर्भूतानां श्रीमत्-शङ्कर-विजयेन्द्र-सरस्वती-संयमीन्द्राणाम् अस्माकं जगद्गुरुणां दीर्घ-आयुः-आरोग्य-सिद्ध्यर्थं,
- तैः सङ्कल्पितानां सर्वेषां लोक-क्षेमार्थ-कार्याणां वेद-शास्त्रादि-सम्प्रदाय-पोषण-कार्याणां विविध-क्षेत्र-यात्रायाश्च अविघ्नतया सम्पूर्यर्थं
- कामकोटि-गुरु-परम्परायां कामकोटि-भक्त-जनानाम् अचञ्चल-भावशुद्ध-दृढतर-भक्ति-सिद्ध्यर्थं, परस्पर-ऐकमत्य-सिद्ध्यर्थं

^७पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^८पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^९पृष्ठं १२८ पश्यताम्

- भारतीयानां महाजनानां विघ्न-निवृत्ति-पूर्वक-सत्कार्य-प्रवृत्ति-द्वारा ऐहिक-आमुष्मिक-अभ्युदय-प्राप्त्यर्थम्, असत्कार्येभ्यः निवृत्त्यर्थं
- भारतीयानां सन्ततेः सनातन-सम्प्रदाये श्रद्धा-भक्त्योः अभिवृद्ध्यर्थं
- सर्वेषां द्विपदां चतुष्पदाम् अन्येषां च प्राणि-वर्गाणाम् आरोग्य-युक्त-सुख-जीवन-अवाप्त्यर्थम्
- अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थं विवेक-वैराग्य-सिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं

श्रीमत्-शङ्करभगवत्पाद-प्रीत्यर्थं श्री-शङ्कर-जयन्ती-महोत्सवे यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्य-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽष्यापो यजूऽष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याः पूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

॥ प्रधान-पूजा ॥

श्रुति-स्मृति-पुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पाद-शङ्करं लोक-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् ध्यायामि।

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः
त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्।

मुक्त्वा मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती
शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि।

यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्।
तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्यान् आवाहयामि।

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो
रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः।

श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्।
शिवं शिव-करं शुद्धम् अप्रमेयं नमाम्यहम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आसनं समर्पयामि।

नित्यं शुद्धं निराकारं निराभासं निरञ्जनम्।
नित्य-बोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्वागतं व्याहरामि। पूर्ण-कुम्भं
समर्पयामि।

या तै रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्।

सर्व-तत्र-स्व-तत्राय सदात्माद्वैत-रूपिणे।
श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पाद्यं समर्पयामि।
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥

वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्।
यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं
सुमना असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः।

संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोद्धिधीर्षया।
कृत-संहननं वन्दे भगवत्पाद-शङ्करम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, आचमनीयं समर्पयामि।
श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः।

यत्-पाद-पङ्कज-ध्यानात् तोटकाद्या यतीश्वराः।
बभूवुस्तादृशं वन्दे शङ्करं षण्मतेश्वरम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्नपयामि।

(श्रीरुद्र-चमक-पुरुषसूक्त-उपनिषद्भिः स्नापयित्वा) स्नानानन्तरम् आचमनीयं

समर्पयामि।

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः।

नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने।
शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उत्तैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उत्तैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः।

हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे।
कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सञ्चार्यं हृदयाम्बुजे।
विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, भस्मोद्धूलनं रुद्राक्ष-मालिकां च
समर्पयामि।

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः।

याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिः आदित्येशान-विग्रहा।
शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दिव्य-परिमल-गन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।
आनन्द-घनमद्वन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्।
भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दण्डं समर्पयामि।

प्र मुञ्च धन्वंतस्त्वमुभयोरार्त्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः।

तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्।
सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम् ॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अवतत्य धनुस्त्व९ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो नः
सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः।

नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्।
यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्व-ज्ञो भवति स्वयम्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, पुष्प-मालां समर्पयामि। पुष्पैः
पूजयामि।

श्री-शङ्कर-चतुर्विंशति-नामावल्या अङ्ग-पूजा

- | | | |
|-----|-------------------------------|------------------------|
| १. | अष्ट-वर्ष-चतुर्वेदिने नमः | पादौ पूजयामि |
| २. | द्वादशाखिल-शास्त्र-विदे नमः | गुल्फौ पूजयामि |
| ३. | सर्व-लोक-ख्यात-शीलाय नमः | जङ्घे पूजयामि |
| ४. | प्रस्थान-त्रय-भाष्य-कृते नमः | जानुनी पूजयामि |
| ५. | पद्मपादादि-सच्छिष्याय नमः | ऊरू पूजयामि |
| ६. | पाषण्ड-ध्वान्त-भास्कराय नमः | कटिं पूजयामि |
| ७. | अद्वैत-स्थापनाचार्याय नमः | गुह्यं पूजयामि |
| ८. | द्वैतादि-द्विप-केसरिणे नमः | नाभिं पूजयामि |
| ९. | व्यास-नन्दित-सिद्धान्ताय नमः | उदरं पूजयामि |
| १०. | वाद-निर्जित-मण्डनाय नमः | वक्षःस्थलं पूजयामि |
| ११. | षण्मत-स्थापनाचार्याय नमः | हृदयं पूजयामि |
| १२. | षड्-गुणैश्वर्य-मण्डिताय नमः | कण्ठं पूजयामि |
| १३. | सर्व-लोकानुग्रह-कृते नमः | स्कन्धौ पूजयामि |
| १४. | सर्व-ज्ञ-त्वादि-भूषणाय नमः | हस्तौ पूजयामि |
| १५. | श्रुति-स्मृति-पुराणार्थाय नमः | वक्त्रं पूजयामि |
| १६. | श्रुत्येक-शरण-प्रियाय नमः | चिबुकं पूजयामि |
| १७. | सकृत्-स्मरण-सन्तुष्टाय नमः | ओष्ठौ पूजयामि |
| १८. | शरणागत-वत्सलाय नमः | कपोलौ पूजयामि |
| १९. | निर्व्याज-करुणा-मूर्तये नमः | नासिकां पूजयामि |
| २०. | निरहम्भाव-गोचराय नमः | नेत्रे पूजयामि |
| २१. | संशान्त-भक्त-हृत्-तापाय नमः | कर्णौ पूजयामि |
| २२. | सर्व-ज्ञान-फल-प्रदाय नमः | ललाटं पूजयामि |
| २३. | सदसद्-वस्तु-विमुखाय नमः | शिरः पूजयामि |
| २४. | सत्ता-सामान्य-विग्रहाय नमः | सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि |

॥ आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

श्रीशङ्कराचार्यवर्याय नमः
 ब्रह्मज्ञानप्रदायकाय नमः
 अज्ञानतिमिरादित्याय नमः
 सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमसे नमः
 वर्णाश्रमप्रतिष्ठात्रे नमः
 श्रीमते नमः
 मुक्तिप्रदायकाय नमः
 शिष्योपदेशनिरताय नमः
 भक्ताभीष्टप्रदायकाय नमः
 सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञाय नमः १०
 कार्याकार्यप्रबोधकाय नमः
 ज्ञानमुद्राञ्चितकराय नमः
 शिष्य-हृत्ताप-हारकाय नमः
 परिव्राज्याश्रमोद्धर्त्रे नमः
 सर्वतन्त्रस्वतन्त्रधिये नमः
 अद्वैतस्थापनाचार्याय नमः
 साक्षाच्छङ्कररूपभृते नमः
 षण्मतस्थापनाचार्याय नमः
 त्रयीमार्गप्रकाशकाय नमः
 वेदवेदान्ततत्त्वज्ञाय नमः २०
 दुर्वादिमतखण्डनाय नमः
 वैराग्यनिरताय नमः
 शान्ताय नमः

संसारार्णवतारकाय नमः
 प्रसन्नवदनाम्भोजाय नमः
 परमार्थप्रकाशकाय नमः
 पुराणस्मृतिसारज्ञाय नमः
 नित्यतृप्ताय नमः
 महते नमः
 शुचये नमः ३०
 नित्यानन्दाय नमः
 निरातङ्काय नमः
 निःसङ्गाय नमः
 निर्मलात्मकाय नमः
 निर्ममाय नमः
 निरहङ्काराय नमः
 विश्ववन्द्यपदाम्बुजाय नमः
 सत्त्वप्रधानाय नमः
 सद्भावाय नमः
 सङ्ख्यातीतगुणोज्ज्वलाय नमः ४०
 अनघाय नमः
 सारहृदयाय नमः
 सुधिये नमः
 सारस्वतप्रदाय नमः
 सत्यात्मने नमः
 पुण्यशीलाय नमः

साङ्ख्ययोगविचक्षणाय नमः
 तपोराशये नमः
 महातेजसे नमः
 गुणत्रयविभागविदे नमः ५०
 कलिघ्नाय नमः
 कालधर्मज्ञाय नमः
 तमोगुणनिवारकाय नमः
 भगवते नमः
 भारतीजेतरे नमः
 शारदाह्वानपण्डिताय नमः
 धर्माधर्मविभागज्ञाय नमः
 लक्ष्यभेदप्रदर्शकाय नमः
 नादबिन्दुकलाभिज्ञाय नमः
 योगिहृत्पद्मभास्कराय नमः ६०
 अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधये नमः
 नित्यानित्यविवेकवते नमः
 चिदानन्दाय नमः
 चिन्मयात्मने नमः
 परकायप्रवेशकृते नमः
 अमानुष-चरित्राढ्याय नमः
 क्षेमदायिने नमः
 क्षमाकराय नमः
 भवाय नमः
 भद्रप्रदाय नमः ७०
 भूरिमहिम्ने नमः

विश्वरञ्जकाय नमः
 स्वप्रकाशाय नमः
 सदाधाराय नमः
 विश्वबन्धवे नमः
 शुभोदयाय नमः
 विशालकीर्तये नमः
 वागीशाय नमः
 सर्वलोकहितोत्सुकाय नमः
 कैलासयात्रा-सम्प्राप्तचन्द्रमौलि-
 प्रपूजकाय नमः ८०
 काश्यां श्रीचक्रराजाख्य-यन्त्रस्थापन-
 दीक्षिताय नमः
 श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-
 मनोरथाय नमः
 श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थ-
 कल्पकाय नमः
 चतुर्दिक्कतुराम्नायप्रतिष्ठात्रे नमः
 महामतये नमः
 द्विसप्ततिमतोच्छेत्रे नमः
 सर्वदिग्विजयप्रभवे नमः
 काषायवसनोपेताय नमः
 भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः
 ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्याय नमः ९०
 कमण्डलुलसत्कराय नमः
 व्याससन्दर्शनप्रीताय नमः

भगवत्पादसंज्ञकाय नमः
चतुःषष्टिकलाभिज्ञाय नमः
ब्रह्मराक्षस-मोक्षदाय नमः
सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधाय-
काय नमः
श्रीमन्मण्डनमिश्राख्यस्वयम्भूजय-
सन्नुताय नमः
तोटकाचार्यसम्पूज्याय नमः
पद्मपादार्चिताङ्घ्रिकाय नमः
हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञान-
प्रदायकाय नमः

१००

सुरेश्वरादि-सच्छिष्य-सत्र्यासाश्रम-
दायकाय नमः
निर्व्याजकरुणामूर्तये नमः
जगत्पूज्याय नमः
जगद्गुरवे नमः
भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षण-
लक्षिताय नमः
सकृत्स्मरणसन्तुष्टाय नमः
सर्वज्ञाय नमः
ज्ञानदायकाय नमः
श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्येभ्यो नमः

१०८

॥ इति श्री-आदिशङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

आचार्यपरम्परानामावलिः

॥ पूर्वाचार्याः ॥

१. श्रीमते दक्षिणामूर्तये नमः
२. श्रीमते विष्णवे नमः
३. श्रीमते ब्रह्मणे नमः
४. श्रीमते वसिष्ठाय नमः
५. श्रीमते शक्तये नमः
६. श्रीमते पराशराय नमः
७. श्रीमते व्यासाय नमः
८. श्रीमते शुकाय नमः
९. श्रीमते गौडपादाय नमः

१०. श्रीमते गोविन्द-भगवत्पादाय नमः

११. श्रीमते शङ्कर-भगवत्पादाय नमः

॥ भगवत्पादशिष्याः ॥

१. श्रीमते पद्मपादाचार्याय नमः

२. श्रीमते सुरेश्वराचार्याय नमः

३. श्रीमते हस्तामलकाचार्याय नमः

४. श्रीमते तोटकाचार्याय नमः

५. श्रीमते पृथिवीधवाचार्याय नमः

६. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

७. अन्येभ्यः भगवत्पाद-शिष्येभ्यो नमः

॥ कामकोटि-आचार्याः ॥

१. श्रीमते शङ्कर-भगवत्पादाय नमः

२. श्रीमते सुरेश्वराचार्याय नमः

३. श्रीमते सर्वज्ञात्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

४. श्रीमते सत्यबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

५. श्रीमते ज्ञानानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

६. श्रीमते शुद्धानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

७. श्रीमते आनन्दज्ञान-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

८. श्रीमते कैवल्यानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

९. श्रीमते कृपाशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

१०. श्रीमते विश्वरूप-सुरेश्वर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

११. श्रीमते शिवानन्द-चिद्धन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

१२. श्रीमते सार्वभौम-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

१३. श्रीमते काष्ठमौन-सच्चिद्धन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

१४. श्रीमते भैरवजिद्-विद्याधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
१५. श्रीमते गीष्पति-गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
१६. श्रीमते उज्ज्वलशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
१७. श्रीमते गौड-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
१८. श्रीमते सुर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
१९. श्रीमते मार्तण्ड-विद्याधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२०. श्रीमते मूकशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२१. श्रीमते जाह्नवी-चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२२. श्रीमते परिपूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२३. श्रीमते सच्चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२४. श्रीमते कोङ्कण-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२५. श्रीमते सच्चिदानन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२६. श्रीमते प्रज्ञाधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२७. श्रीमते चिद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२८. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
२९. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३०. श्रीमते भक्तियोग-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३१. श्रीमते शीलनिधि-ब्रह्मानन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३२. श्रीमते चिदानन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३३. श्रीमते भाषापरमेष्ठि-सच्चिदानन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३५. श्रीमते बहुरूप-चित्सुख-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३६. श्रीमते चित्सुखानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३७. श्रीमते विद्याधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
३८. श्रीमते धीरशङ्कर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

३९. श्रीमते सच्चिद्विलास-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४०. श्रीमते शोभन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४१. श्रीमते गङ्गाधर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४२. श्रीमते ब्रह्मानन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४३. श्रीमते आनन्दधन-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४४. श्रीमते पूर्णबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४५. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४६. श्रीमते सान्द्रानन्द-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४७. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४८. श्रीमते अद्वैतानन्दबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
४९. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५०. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५१. श्रीमते विद्यातीर्थ-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५२. श्रीमते शङ्करानन्द-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 - श्रीमते अद्वैतब्रह्मानन्दाय नमः
 - श्रीमते विद्यारण्याय नमः
 - अन्येभ्यः विद्यातीर्थ-शङ्करानन्द-शिष्येभ्यो नमः
५३. श्रीमते पूर्णानन्द-सदाशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५४. श्रीमते व्यासाचल-महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५५. श्रीमते चन्द्रचूड-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५६. श्रीमते सदाशिवबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५७. श्रीमते परमशिव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 - श्रीमते सदाशिवब्रह्म-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५८. श्रीमते विश्वाधिक-आत्मबोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
५९. श्रीमते भगवन्नाम-बोध-इन्द्रसरस्वत्यै नमः

६०. श्रीमते अद्वैतात्मप्रकाश-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६१. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६२. श्रीमते शिवगीतिमाला-चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६३. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६४. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६५. श्रीमते सुदर्शन-महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६६. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६७. श्रीमते महादेव-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६८. श्रीमते चन्द्रशेखर-इन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ६९. श्रीमते जयेन्द्रसरस्वत्यै नमः
 ७०. श्रीमते शङ्करविजयेन्द्रसरस्वत्यै नमः

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि
 समर्पयामि।

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशाल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषंव आभुरस्य
 निषङ्गर्थिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः।

संसार-सागरं घोरम् अनन्त-क्लेश-भाजनम्।
 त्वामेव शरणं प्राप्य निस्तरन्ति मनीषिणः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, धूपम् आघ्रापयामि।
 या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
 परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः।

नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे।
 येन वेदान्त-विद्येयम् उद्धृता वेद-सागरात्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः।

भगवत्पाद-पादाब्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्।
अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सेतवः ॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, अमृतं महानैवेद्यं पानीयं च
निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। अमृतापिधानमसि।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।
नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥

अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नीराजनं दर्शयामि।
नीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर-कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, प्रदक्षिणं करोमि।

आचार्यान् भगवत्पादान् षण्मत-स्थापकान् हितान्।
परहंसान् नुमोऽद्वैत-स्थापकान् जगतो गुरून्॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्-पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

अनेक-जन्म-सम्प्राप्त-कर्म-बन्ध-विदाहिने।
आत्म-ज्ञान-प्रदानेन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

विशुद्ध-विज्ञान-घनं शुचिं हार्द-तमोनुदम्।
दया-सिन्धुं लोक-बन्धुं शङ्करं नौमि सद्-गुरुम्॥

देह-बुद्ध्या तु दासोऽस्मि जीव-बुद्ध्या त्वदंशकः।
आत्म-बुद्ध्या त्वमेवाहमिति मे निश्चिता मतिः॥

एकः शाखी शङ्कराख्यश्चतुर्धा
स्थानं भेजे ताप-शान्त्यै जनानाम्।
शिष्य-स्कन्धैः शिष्य-शाखैर्महद्भिः
ज्ञानं पुष्पं यत्र मोक्षः प्रसूतिः॥

गामाक्रम्य पदेऽधिकाञ्चि निविडं स्कन्धैश्चतुर्भिस्तथा
व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्।
यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलति तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलम्
तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्त्रि-सन्ध्यं नमः॥

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्येभ्यो नमः, स्तोत्रं समर्पयामि।
प्रार्थनाः समर्पयामि।

गुरु-पादोदक-प्राशनम्—

अविद्या-मूल-नाशाय जन्म-कर्म-निवृत्तये।
ज्ञान-वैराग्य-सिद्ध्यर्थं गुरु-पादोदकं शुभम्॥



॥ स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् ॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः ॥

॥ श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-
श्री-शङ्कराचार्य श्री-चरणयोः प्रणामाः ॥

स्वस्ति

श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-सेवित-श्री-कामाक्षी-
देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-
साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यव्रत-नामाङ्कित-काञ्ची-दिव्य-क्षेत्रे,
शारदामठ-सुस्थितानाम्, अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-
धम्मिल्ल-सम्फुल्ल-मल्लिका-मालिका-निःष्यन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-
वाङ्मिगुम्फ-विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्,
अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां
निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूमां,
सकल-भुवन-चक्र-प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विख्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्,
निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन
विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्,
परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्करभगवत्पादाचार्याणाम्,
अधिष्ठाने सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमत्-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्

अन्तेवासिवर्य-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्
 अन्तेवासिवर्य-श्रीमत्-शङ्करविजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां चरण-नलिनयोः
 सप्रश्रयं साञ्जलिबन्धं च नमस्कुर्मः॥

॥ तोटकाष्टकम् ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्।
 सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
 व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम्।
 श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
 तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे।
 हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून्-हृदम्।
 रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते।
 कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतसि कौतुकिता।
 मम वारय मोह-महा-जलधिं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता।
 अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः।
 अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः।
 शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥
 विदिता न मया विशदैक-कला न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो।
 द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥
 ॥इति श्री-तोटकाचार्यविरचितं श्री-तोटकाष्टकं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-शङ्कर-भगवत्पाद-प्रशस्ति-सङ्ग्रहः ॥

देव-वन्दनम्

सदा बाल-रूपाऽपि विघ्नाद्रि-हन्त्री महा-दन्ति-वक्त्राऽपि पञ्चास्य-मान्या।
 विधीन्द्रादि-मृग्या गणेशाभिधा मे विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याण-मूर्तिः॥१॥

—गणेशस्तुतिः - सुब्रह्मण्यभुजङ्गं शङ्करभगवत्पादकृतम् - १

पुस्तक-जप-वट-हस्ते वरदाभय-चिह्न-चारु-बाहु-लते।
 कर्पूरामल-देहे वागीश्वरि शोधयाशु मम चेतः॥२॥

—प्रपञ्चसारः शङ्करभगवत्पादकृतः ८/७०

गुरुपरम्परावन्दनम्

नारायणः पद्म-भवो वसिष्ठः शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरश्च।
 व्यासः शुको गौड-पदो यतीन्द्रो गोविन्द-योगीति गुरु-क्रमोऽयम्॥१॥

आद्यः श्री-शङ्कराचार्यो भगवत्पाद-संज्ञकः।
 अवतीर्णः शम्भुरिति प्रथितः कालटी-पदे॥२॥

सुरेश्वरः पद्मपदो हस्तामलक-तोटकौ।
 सर्वज्ञश्चेति तच्छिष्याः प्रथिता गुरु-सन्निभाः॥३॥

शङ्करः कामकोट्याख्यं पीठं काञ्च्यां व्यराजयत्।
प्रत्यस्थापयदद्वैतं पीठे सर्वज्ञके स्थितः॥४॥

आत्मानमनु सर्वज्ञं सुरेश्वर-मते स्थितम्।
गोसारं कामकोट्याख्य-पीठस्य व्यदधाद् गुरुः॥५॥

तदाद्येन्द्र-सरस्वत्याख्याऽविच्छिन्ना परम्परा।
पाति नो गुरु-वर्याणां शारदा-मठ-सुस्थिता॥६॥

श्री-शङ्करार्यमपरं श्री-शिवा-शिव-रूपिणम्।
पूज्य-श्री-कामकोट्याख्य-पीठ-गं तं दया-निधिम्॥७॥

अपार-करुणा-सिन्धुं ज्ञान-दं शान्त-रूपिणम्।
श्री-चन्द्रशेखर-गुरुं प्रणमामि मुदाऽन्वहम्॥८॥

देवे देहे च देशे च भक्त्यारोग्य-सुख-प्रदम्।
बुध-पामर-सेव्यं तं श्री-जयेन्द्रं नमाम्यहम्॥९॥

नमामः शङ्करान्वाख्य-विजयेन्द्र-सरस्वतीम्।
श्री-गुरुं शिष्ट-मार्गानुनेतारं सन्मति-प्रदम्॥१०॥

गुरु-पादुका-पञ्चकम्

—गोविन्द-भगवत्-पूज्यपाद-सन्निधौ शङ्कर-भगवत्पाद-कृतम्

जगज्जनि-स्थेम-लयालयाभ्याम् अगण्य-पुण्योदय-भाविताभ्याम्।
त्रयी-शिरोजात-निवेदिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥१॥

विपत्-तमः-स्तोम-विकर्तनाभ्यां विशिष्ट-सम्पत्ति-विवर्धनाभ्याम्।
नमज्जनाशेष-विशेष-दाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥२॥

समस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्कापनोदन-प्रौढ-जलाशयाभ्याम् ।
निराश्रयाभ्यां निखिलाश्रयाभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥३॥

ताप-त्रयादित्य-करार्दितानां छाया-मयीभ्यामति-शीतलाभ्याम्।

आपन्न-संरक्षण-दीक्षिताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥४॥

यतो गिरोऽप्राप्य धिया समस्ता हिया निवृत्ताः सममेव नित्याः।

ताभ्यामजेशाच्युत-भाविताभ्यां नमो नमः श्री-गुरु-पादुकाभ्याम्॥५॥

ये पादुका-पञ्चकमादरेण पठन्ति नित्यं प्रयताः प्रभाते।

तेषां गृहे नित्य-निवास-शीला श्री-देशिकेन्द्रस्य कटाक्ष-लक्ष्मीः॥६॥

भगवत्पादकृतं गुरु-वन्दनम्

प्रज्ञा-वैशाख-वेध-क्षुभित-जल-निधेर्वेद-नाम्नोऽन्तर-स्थं

भूतान्यालोक्य मग्नान्यविरत-जनन-ग्राह-घोरे समुद्रे।

कारुण्यादुद्धारामृतमिदममरैर्दुर्लभं

भूत-हेतोः

यस्तं पूज्याभिपूज्यं परम-गुरुममुं पाद-पातैर्नतोऽस्मि॥१॥

यत्-प्रज्ञालोक-भासा प्रतिहतिमगमत् स्वान्त-मोहान्धकारो

मञ्जोन्मज्जं च घोरे ह्यसकृदुपजनोदन्वति त्रासने मे।

यत्-पादावाश्रितानां श्रुति-शम-विनय-प्राप्तिरग्न्या ह्यमोघा

तत्-पादौ पावनीयौ भव-भय-विनुदौ सर्व-भावैर्नमस्ये॥२॥

—माण्डूक्य-कारिका-भाष्यम्

यैरिमे गुरुभिः पूर्वं पद-वाक्य-प्रमाणतः।

व्याख्याताः सर्व-वेदान्ताः तान् नित्यं प्रणतोऽस्म्यहम्॥३॥

—तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्

विमथ्य वेदोदधितः समुद्धृतं सुरैर्महाब्धेस्तु महात्मभिर्यथा।

तथाऽमृतं ज्ञानमिदं हि यैः पुरा नमो गुरुभ्यः परमीक्षितं च यैः॥४॥

—उपदेशसाहस्र्याम्

सर्व-वेदान्त-सिद्धान्त-गोचरं तमगोचरम्।
गोविन्दं परमानन्दं सद्गुरुं प्रणतोऽस्म्यहम्॥५॥

अखण्डानन्द-सम्बोधो वन्दनाद् यस्य जायते।
गोविन्दं तमहं वन्दे चिदानन्द-तनुं गुरुम्॥६॥

नमो नमस्ते गुरवे महात्मने
विमुक्त-सङ्गाय सदुत्तमाय।
नित्याद्वयानन्द-रस-स्वरूपिणे
भूम्ने सदाऽपार-दयाम्बु-धाम्ने॥७॥

स्वाराज्य-साम्राज्य-विभूतिरेषा
भवत्-कृपा-श्री-महिम-प्रसादात्।
प्राप्ता मया श्री-गुरवे महात्मने
नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु॥८॥

स्वामिन् नमस्ते नत-लोक-बन्धो
कारुण्य-सिन्धो पतितं भवाब्धौ।
मामुद्धरात्मीय-कटाक्ष-दृष्ट्या
ऋज्व्याऽतिकारुण्य-सुधाभिवृष्ट्या॥९॥

—विवेकचूडामणिः

वन्दे गुरुणां चरणारविन्दे
सन्दर्शित-स्वात्म-सुखावबोधे।
जनस्य ये जाङ्गलिकायमाने
संसार-हालाहल-मोह-शान्त्यै॥१०॥

—योगतारावलिः १

श्री-गुरु-चरण-द्वन्द्वं वन्देऽहं मथित-दुस्सह-द्वन्द्वम्।
भ्रान्ति-ग्रहोपशान्तिं पांसु-मयं यस्य भसितमातनुते॥११॥

—स्वात्मनिरूपणम् १/१

वेदान्ताचार्यवन्दना

आदौ शिवस्ततो विष्णुः ततो ब्रह्मा ततः परम्।
वसिष्ठश्च ततः शक्तिः ततः षष्ठः पराशरः॥१॥

ततो व्यासः शुकः पश्चाद् गौडपादाभिधस्ततः।
गोविन्दार्य-गुरुस्तस्माच्छङ्कराचार्य-संज्ञकः ॥२॥

पद्मपादः सुरेशश्च हस्तामलक-तोटकौ।
वेदान्त-शिक्षा-गुरव आचार्याः पान्तु मां सदा॥३॥

—हुल्ख-कोशतः

सदाशिव-समारम्भां शङ्कराचार्य-मध्यमाम्।
अस्मदाचार्य-पर्यन्तां वन्दे गुरु-परम्पराम्॥४॥

नारायणं पद्म-भुवं वसिष्ठं
शक्तिश्च तत्-पुत्र-पराशरं च।
व्यासं शुकं गौड-पदं महान्तं
गोविन्द-योगीन्द्रमथास्य शिष्यम्॥५॥

श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्म-
पादं च हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिक-कारमन्यान्
अस्मद्-गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि॥६॥

—साम्प्रदायिकश्लोकाः

मार्कण्डेय-संहितायां भगवत्पाद-प्रशंसा

श्री-शङ्कर-गुरु-चरण-स्मरणम् अभीष्टार्थ-करणमखिलानाम्।
सम्भवतु सर्वदा मम सम-रस-सुख-भाग्य-दान-निपुणतरम्॥१॥

श्री-शङ्कराचार्य-पदारविन्द-सेवा हि सर्वेप्सित-कल्प-वल्ली।
लभ्येत जन्मान्तर-पुण्य-योगात् सुजन्मभिः शुद्ध-मनोभिषङ्गैः॥२॥

शङ्कर-गुरु-चरणाम्बुजम् अखिल-जगन्मङ्गलं मनस्यनिशम्।
कलयामि कलि-मलापहम् अमित-सुखाधायकं बुधेन्द्राणाम्॥३॥

लोकानुग्रह-तत्परः पर-शिवः सम्प्रार्थितो ब्रह्मणा
चार्वाकादि-मत-प्रभेद-निपुणां बुद्धिं सदा धारयन्।
कालट्याख्य-पुरोत्तमे शिव-गुरुर्विद्याधिनाथश्च यः
तत्-पत्न्यां शिव-तारके समुदितः श्री-शङ्कराख्यां वहन्॥४॥

महात्रिपुरसुन्दरी-रमण-चन्द्रमौलीश्वर-
प्रसाद-परिलब्ध-वाङ्मय-विभूषिताशान्तरम्।
निरन्तरमुपास्महे निरुपमात्म-विद्या-नदी-
नदी-नद-पति-प्रभं मनसि शङ्करार्यं गुरुम्॥५॥

तोटकाष्टकम्

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे।
हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥१॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्।
रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥२॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते।
कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥३॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतसि कौतुकिता।
मम वारय मोह-महा-जलधिं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥४॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता।
अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥५॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महामहसश्छलतः।
अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो* भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥६॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः।
शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥७॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो।
द्रुतमेव विधेहि कृपां सह-जां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥८॥

[* गुरो इति पाठान्तरम्]

भगवत्पाद-शिष्यैः कृताः गुरु-स्तुतयः

येषां धी-सूर्य-दीप्त्या प्रतिहतिमगमन्नाशमेकान्ततो मे
ध्वान्तं स्वान्तस्य हेतुर्जनन-मरण-सन्तान-दोलाधिरूढेः।
येषां पादौ प्रपन्नाः श्रुति-शम-विनयैर्भूषिताः शिष्य-सङ्घाः
सद्यो मुक्तौ स्थितास्तान् यति-वर-महितान् यावदायुर्नमामि॥१॥

—श्रुतिसारसमुद्धरणं तोटकाचार्यकृतम् १८८

वेदान्तोदर-वर्ति भास्वदमलं ध्वान्त-च्छिदस्मद्-धियः
दिव्यं ज्ञानमतीन्द्रियेऽपि विषये व्याहन्यते न क्वचित्।
यो नो न्याय-शलाकयैव निखिलं संसार-बीजं तमः
प्रोत्सार्याविरकार्षीद् गुरु-गुरुः पूज्याय तस्मै नमः॥२॥

—नैष्कर्म्यसिद्धिः - श्रीसुरेश्वराचार्यकृता ४.७६-७७

आ शैलादुदयात् तथाऽस्त-गिरितो भास्वद्-यशोराशिभिः
व्याप्तं विश्वमनन्धकारमभवद् यस्य स्म शिष्यैरिदम्।
आराद् ज्ञान-गभस्तिभिः प्रतिहतश्चन्द्रायते भास्करः
तस्मै शङ्कर-भानवे तनु-मनोवाग्भिर्नमः स्यात् सदा॥३॥

यत्-प्रज्ञोदधि-युक्ति-शब्दन-खज-श्रद्धैक-सन्नेत्रक-
 स्थैर्य-स्तम्भ-मुमुक्षु-दुःखित-कृपा-यत्नोत्थ-बोधामृतम्।
 पीत्वा जन्म-मृति-प्रवाह-विधुरा मोक्षं ययुर्मोक्षिणः
 तं वन्देऽत्रि-कुल-प्रसूतममलं वेधोभिधं मद्-गुरुम्॥४॥

—बृहदारण्यकभाष्यवार्तिकम् - सुरेश्वराचार्यकृतम्

नमाम्यभोगि-परिवार-सम्पदं निरस्त-भूतिमनुमार्ध-विग्रहम्।
 अनुग्रमुन्मृदित-काल-लाञ्छनं विना-विनायकमपूर्व-शङ्करम्॥५॥

यद्-वक्र-मानस-सरः-प्रतिलब्ध-जन्म-
 भाष्यारविन्द-मकरन्द-रसं पिबन्ति।
 प्रत्याशमुन्मुख-विनीत-विनेय-भृङ्गाः
 तान् भाष्य-वित्तक-गुरून् प्रणमामि मूर्ध्ना॥६॥

—पञ्चपादिका पद्मपादाचार्यकृता

वक्तारमासाद्य यमेव नित्या सरस्वती स्वार्थ-समन्विताऽऽसीत्।
 निरस्त-दुस्तर्क-कलङ्क-पङ्का नमामि तं शङ्करमर्चिताङ्घ्रिम्॥७॥

—सङ्क्षेपशारीरकं श्रीसर्वज्ञात्मेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतम्

सदाशिवब्रह्मेन्द्रविरचितायां जगद्गुरुरत्नमालायां भगवत्पाद-चरितम्

यदबोध-वशादहं ममेदं तदिहेत्यादिरुदेति भूरि-भेदः।
 तदखण्डमनन्तमद्वितीयं परमानन्द-मयं पदं श्रेयेयम्॥१॥

कलिना बलिनाऽखिले खिलेऽपि स्खलिते श्रौत-पथेऽपथे प्रवृद्धे।
 जप-होम-तपस्सु नाम-शेषेष्वपि यातेषु सुभाषितेषु शोषम्॥२॥

जगदीक्षण-विह्वलामृतान्धो-निगद-व्यक्त-कृपा-रसानुबन्धम् ।
 प्रणिदिश्य गुहं पुरैव गन्तुं प्रणिबन्धुं च मखान् द्विषश्च यन्तुम्॥३॥

अवतार्य सुरान् परांश्च पूर्वं विधि-विष्ण्वन्द्र-मुखान् विनोद-पूर्वम्।
स्वयमप्यवतीर्य सुत्युरार्या-कमितुः श्री-शिव-शर्मणो विचार्य॥४॥

उदभूत् सदने निटाल-दृग् यो मद-भाजां सुधियां प्रमाथ-योग्ये।
शिशुरर्पयतान्मुमुक्षु-भाग्यं स शुभं शङ्कर-देशिकः सुभोग्यम्॥५॥

प्रति-चन्द्र-भवं निवृत्ति-धर्मा श्रित-गोविन्द-मुनेरवाप्त-धर्मा।
जयतात् कृत-सूत्र-भाष्य-कर्मा स्वयमन्ते-वसतां वितीर्ण-शर्मा॥६॥

कुहनान्त्यज-विश्वनाथ-सृष्टो द्रुहिण-व्यास-वरोदितानुशिष्टः।
ममतां मम तावदेष भिन्द्यान्नमतश्चोपरतिं ददात्वनिन्द्याम्॥७॥

प्रविशन् बदरीमवाप्य सद्यः परमाचार्य-पदार्चनं क्रमाद् यः।
धवलाचलमाप्य योऽप्यमाद्यच्छिव-लावण्यमुदीक्ष्य तं प्रपद्ये॥८॥

प्रतिपादित-लिङ्ग-पञ्चकेऽमुं प्रणिवर्त्याशु तिरोहिते गिरीशे।
विनिवृत्य स दिग्-जय-प्रवृत्तो विविधैः शिष्य-वरैर्विभातु चित्ते॥९॥

अथ कान्यकुमार-सन्धि-सेतु-स्थलिनी-वैङ्कट-कालहस्ति-यातुः।
यमि-नेतुरमुष्य काञ्चि-यात्रा शमिदानीं शम-दं क्रियाद् विचित्रा॥१०॥

श्रित-निर्मल-राजसेन-चोल-क्षिति-पालोद्धृत-विप्र-देव-शालः ।
वरदस्य तथाऽऽम्र-नायकस्याप्युरु-वेश्म-द्वय-कृञ्जयाय मे स्यात्॥११॥

प्रकृतिं च गुहाश्रयां महोग्रां स्व-कृते चक्र-वरे प्रवेश्य योऽग्रे।
अकृताश्रित-सौम्य-मूर्तिमार्या सुकृतं नः स चिनोतु शङ्करार्यः॥१२॥

उपयात्सु बुधेषु सर्व-दिग्भ्यः प्रदिशन्नाशु पराभवं य एभ्यः।
विधृताखिल-वित्-पदश्च काञ्च्यामधृतार्तिः स दिशेच्छ्रियं च काञ्चित्॥१३॥

समतिष्ठिपदा-हिमाद्रि-सेव्यं क्रमशो धर्म-विचारणाय दिव्यम्।
अधि-काञ्चि च शारदा-मठं योऽभ्यधिकं नः सुखमातनोतु सोऽयम्॥१४॥

परमन्तिक-सत्-सुरेश्वराद्यैः परमाद्वैत-मतं स्फुटं प्रवेद्य।
परि-काञ्चिपुरं परे विलीनः परमायास्तु शिवाय सद्गुरुर्नः॥१५॥

कामकोटि-परम्परागतैः आचार्यैः कृताः स्तुतयः

नमस्तस्मै भगवते शङ्कराचार्य-रूपिणे।
येन वेदान्त-विद्येयमुद्धृता वेद-सागरात्॥१॥

—विद्यारण्यमुनिविरचितायाम् अपरोक्षानुभूतिदीपिकायाम्

स्तुवन्मोह-तमः-स्तोम-भानु-भावमुपेयुषः ।
स्तुमस्तान् भगवत्पादान् भव-रोग-भिषग्-वरान्॥२॥

—सदाशिवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृता ब्रह्मसूत्रवृत्तिः

वेदान्तार्थाभिधानेन सर्वानुग्रह-कारिणम्।
यति-रूप-धरं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥३॥

—नवपञ्चाशत्तमैः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः कृतं हरिहराद्वैतभूषणम्
यमाश्रिता गिरां देवी नन्दयत्यात्म-संश्रितान्।
तमाश्रये श्रिया जुष्टं शङ्करं करुणा-निधिम्॥४॥

—नवपञ्चाशत्तमैः आचार्यैः श्रीभगवन्नामबोधेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम् विवरणप्रमेयसङ्ग्रहात्मकम्
अद्वैतभूषणम्

सर्व-तन्न-स्वतन्त्राय सदाऽऽत्माद्वैत-वेदिने।
श्रीमते शङ्करार्याय वेदान्त-गुरवे नमः॥५॥

अविप्लुत-ब्रह्मचर्यान् अन्वितेन्द्र-सरस्वतीन्।
आत्त-मिथ्यावार-पथान् अद्वैताचार्य-सङ्कथान्॥६॥

आ-सेतु-हिमवच्छैलं सदाचार-प्रवर्तकान्।
जगद्-गुरून् स्तुमः काञ्ची-शारदा-मठ-संश्रयान्॥७॥

—पञ्चषष्टितमैः पीठाधिपतिभिः श्रीमत्सुदर्शनमहादेवेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतः जगद्गुरु-परम्परा-स्तवः

गुरुर्नाम्ना महिम्ना च शङ्करो यो विराजते।
तदीयाङ्घ्रि-गलद्-रेणु-गणायस्तु नमो मम॥८॥

—अष्टषष्ठितमाचार्यैः श्रीचन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

कामाक्षी-करुणा-रूपं कामकोटि-जगद्गुरुम्।
चिन्मूर्तिं कलये चित्ते शङ्कराचार्यमव्ययम्॥९॥

—नवषष्ठितमाचार्यैः श्रीजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

भजेऽहं भगवत्पादं भारतीय-शिखामणिम्।
अद्वैत-मैत्री-सद्भाव-चेतनायाः प्रबोधकम्॥१०॥

—सप्ततितमाचार्यैः श्रीशङ्करविजयेन्द्रसरस्वतीश्रीचरणैः प्रणीतम्

शङ्कर-चरित्र-ग्रन्थेषु

मेधावी निगम-पटुर्बहु-श्रुतो वा येनर्ते न कलयिता किलात्म-तत्त्वम्।
तन्नेत्रं तमसि च दिव्य-दृष्टि-दायि श्रेयो नः प्रदिशतु धाम देशिकाख्यम्॥१॥

—पुण्यश्लोकमञ्जरी

नमामि शङ्कराचार्य-गुरु-पाद-सरोरुहम्।
यस्य प्रसादान्मूढोऽपि सर्वज्ञोऽहं सदाऽस्म्यहम्॥२॥

वेदे ब्रह्म-समस्तदङ्ग-निचये गर्गोपमस्तत्-कथा-
तात्पर्यार्थ-विवेचने गुरु-समस्तत्-कर्म-संवर्णने।
आसीञ्जैमिनिरेव तद्-वचन-ज-प्रोद्बोध-कन्दे समो
व्यासेनैव विभाति सद्गुरुरसौ श्री-शङ्कराख्यः क्षितौ॥३॥

अद्वैतार्णव-पूर्ण-चन्द्रमभिदा-पद्माटवी-भास्करं
 विद्वत्-कोटि-समर्चिताङ्घ्रि-युगलं प्रद्वेष-कक्षानलम्।
 हृद्याभेद्य-समस्त-वेद-जनित-प्रोद्यद्-विवेकाङ्कुरं
 स्विद्यद्-वागमृतं परात्-पर-गुरुं श्री-शङ्करं तं भजे॥४॥

—आनन्दगिरीयशङ्करविजयः

गामाक्रम्य पदेऽधिकाञ्चि निबिडं स्कन्धैश्चतुर्भिस्तथा
 व्यावृण्वन् भुवनान्तरं परिहरंस्तापं स-मोह-ज्वरम्।
 यः शाखी द्विज-संस्तुतः फलति तत् स्वाद्यं रसाख्यं फलं
 तस्मै शङ्कर-पादपाय महते तन्मस्त्रि-सन्ध्यं नमः॥५॥

—व्यासाचलीयशङ्करविजयः

देशे कालडि-नाम्नि केरल-धरा-शोभा-करे सद्-द्विजे
 जातः श्रीपति-मन्दिरस्य सविधे सर्वज्ञतां प्राप्तवान्।
 भूत्वा षोडश-वत्सरे यति-वरो गत्वा बदर्याश्रमं
 कर्ता भाष्य-निबन्धनस्य सु-कविः श्री-शङ्करः पावनः॥६॥

—गोविन्दानन्दरचिते शङ्कराचार्यचरिते

अज्ञानान्तर्गहन-पतितान् आत्म-विद्योपदेशैः
 त्रातुं लोकान् भव-दव-शिखा-ताप-पापच्यमानान्।
 मुक्त्वा मौनं वट-विटपिनो मूलतो निष्पतन्ती
 शम्भोर्मूर्तिश्चरति भुवने शङ्कराचार्य-रूपा॥७॥

—नवकालिदासमाधवकविकृतः शङ्करदिग्विजयः

क्वमे शङ्कर-सद्गुरोर्गुण-गणा दिग्-जाल-कूलङ्कषाः
 कालोन्मीलित-मालती-परिमलावष्टम्भ-मुष्टिन्धयाः ।
 क्वाहं हन्त तथापि सद्गुरु-कृपा-पीयूष-पारम्परी-
 मग्धोन्मग्ध-कटाक्ष-वीक्षण-बलादस्मि प्रशस्तोऽर्हताम्॥८॥

—सङ्केपशङ्करविजये

श्रीमच्छङ्कर-सद्गुरोर्भगवतोऽगाधामसाधारणीं
 वाणीं नः प्रतनीयसीं मुहुरिमां गाढुं समुत्कण्ठते।
 तन्मूर्तिः प्रभुरेव भक्त-जनता-वात्सल्य-वैपुल्य-भूः
 अस्मै साधु ददातु शस्त-दयया हस्तावलम्बं हरः॥९॥

—वल्लीसहायकविकृतौ आचार्यदिग्विजये

अन्यैः वेदान्ताचार्यैः कृताः स्तुतयः

प्रचार्यं सर्व-लोकेषु सञ्चार्यं हृदयाम्बुजे।
 विचार्यं सर्व-वेदान्तैः आचार्यं शङ्करं भजे॥१॥

—नारायणीयोपनिषद्भाष्ये

भगवत्पाद-पादाब्ज-पांसवः सन्तु सन्ततम्।
 अपारासार-संसार-सागरोत्तार-सेतवः ॥२॥

—चित्सुखाचार्याणां भाष्यभावप्रकाशिकायाम्

उद्धृत्य वेद-पयसः कमलामिवाब्धेः
 आलिङ्गिताखिल-जगत्-प्रभवैक-मूर्तिम्।
 विद्यामशेष-जगतां सुख-दामदाद् यः
 तं शङ्करं विमल-भाष्य-कृतं नमामि॥३॥

—विवरणाचार्याणां पञ्चपादिकाविवरणे

यद्-भाष्याम्बुज-जात-जात-मधुर-प्रेयोमधु-प्रार्थना-
 सार्थ-व्यग्र-धियः समग्र-मरुतः स्वर्गेऽपि निर्वेदिनः।
 यस्मिन् मुक्ति-पथः पथीन-मुनिभिः सम्प्रार्थितः सम्बभौ
 तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु भगवत्पादाभिधां बिभ्रते॥४॥

—आनन्दगिर्याचार्याणां सूत्रभाष्यव्याख्यायां - ६

श्री-गुरुं भगवत्पादं शरण्यं भक्त-वत्सलम्।
शिवं शिव-करं शुद्धमप्रमेयं नमाम्यहम्॥५॥

—अद्वैतसभायाः ब्रह्मविद्यापत्रिकायां प्रकाशिते अज्ञातकर्तृके गुर्वष्टके

तं वन्दे शङ्कराचार्यं लोक-त्रितय-शङ्करम्।
सत्-तर्क-नखरोद्गीर्ण-वावदूक-मतङ्गजम् ॥६॥

—तत्त्वबोधभगवत्प्रणीते तत्त्वबोधे

आनन्द-घनमद्वन्द्वं निर्विकारं निरञ्जनम्।
भजेऽहं भगवत्पादं भजतामभय-प्रदम्॥७॥

—मनीषा-पञ्चक-व्याख्याने

यद्-भाष्योक्तेर्लव-परिजुषश्छात्र-वर्गा महान्तः
निर्भिन्दन्ति प्रबल-मतयो वादि-शैलं समस्तम्।
यैर्वेदाब्धेरमृतमिव सद्-भाष्यमापत् प्रकाशं
तत्-पादाब्जं स्फुरतु हृदये ह्युद्धृतं सर्वदा मे॥८॥

—मनीषापञ्चरत्नलघुविवरणे

महा-मोह-पङ्के विरिश्वाचरान्तं
प्रजा-हस्तिनं मग्नमालोक्य भाष्यैः।
जलैः क्षालयित्वाऽऽत्म-विद्या-दिवं यो
नयत्येकलं शङ्करं तं नमामि॥९॥

—ज्ञानामृतयतेः कृतौ विद्यासुरभिसंज्ञके नैष्कर्म्यसिद्धिविवरणे

संसार-सर्प-परिदष्ट-विनष्ट-जन्तु-
सञ्जीवनाय परया कृपयोपपन्नः।
ब्रह्मावबोध-परमौषधमुद्वहन् यः
तं शङ्करं परतरं भिषजां भजामि॥१०॥

—अद्वैतबोधामृतम्

वेदान्ताम्भोगभीरा नय-मकर-कुला ब्रह्म-विद्याञ्ज-षण्डा
 पाषण्डोत्तुङ्ग-वृक्ष-प्रमथन-निपुणा मान-वीची-तरङ्गा।
 यस्यास्योत्था सरस्वत्यखिल-भव-भय-ध्वंसिनी शङ्करस्य
 गङ्गा शम्भोः कपर्दादिव निखिल-गुरोर्नोमि तत्-पाद-पद्मम्॥११॥

—ज्ञानघनपादानां तत्त्वशुद्धौ

सूत्र-प्रग्रह-वेद-वाजिनि महन्मीमांसक-स्यन्दने
 तिष्ठन् भाष्य-पिनाकमुज्ज्वल-गुणं कृत्वाऽऽत्म-धी-सायकम्।
 आकृष्य प्रदहन्नशेष-विपदां मूलं पुराणां त्रयं
 भूयान्नोऽभिनवः पुरारिरशुभस्योच्छित्तये शङ्करः॥१२॥

—रामानन्दस्य ऋजु-विवरण-व्याख्यायाम्

यद्-भाष्य-सागर-ज-युक्ति-मणीन् प्रकीर्णान्
 प्राप्याधुना कतिपयान् कवयो भवन्ति।
 तस्मै नमो जन-मनोज-दिवाकराय
 कृत्स्नागमार्थ-निलयाय यतीश्वराय॥१३॥

—बोधनिधि-कृते उपदेश-प्रकरण-विवरणे

वेदान्तार्थं गभीरं ह्यति-सुगमतया बोधयामीति विष्णुः
 व्यासात्माऽसूत्रयत् तद् दुरधिगममभूद् वादि-दुर्बुद्धि-भेदात्।
 भिन्दन् दुर्बुद्धि-भेदं य इह करुणयाऽभाष्ययद् भाष्यमेतत्
 तं वन्दे सर्व-वन्द्यं त्रि-जगति भगवत्पाद-संज्ञं महेशम्॥१४॥

—रामानन्दसरस्वतीकृतविवरणोपन्यासे

त्रि-वर्गेणाक्रान्ते जनन-मरणादि-व्रण-भुवा
 जनेऽस्मिन् सर्वस्मिंस्तिमिर-परिणाहैक-शरणे।
 निषेक्तुं निध्यातोऽमृतमग-पतिः शङ्कर इति
 स्व-नाम व्याख्यातुं जयति कुहना-भिक्षुरनिशम्॥१५॥

—अभिनवद्राविडाचार्य-श्रीबालकृष्णानन्दसरस्वतीनां शारीरकमीमांसाभाष्यवार्तिके

श्री-सम्बन्धमुदीक्ष्य वाचक-पदे यान् शार्ङ्गिणं वैष्णवाः
 चन्द्रोत्तंस-पदास्पदत्व-कलनाच्छम्भुं च शैवा विदुः।
 आनन्दाद्वय-शोभमान-परम-प्रेमास्पदं योगिनः
 तान् पादाम्बुज-रेणु-धूत-तमसो वन्दे सदा श्री-गुरुन्॥१६॥

—गङ्गाधरसरस्वत्याख्यभिक्षुणा रचितायाम् आत्मसाम्राज्यसिद्धिव्याख्यायाम्

नमः श्री-शङ्कराचार्य-गुरवे शङ्करात्मने।
 शरीरिणां शङ्कराय शङ्कर-ज्ञान-हेतवे॥१७॥

—नृसिंहाश्रमविरचितायां तत्त्वबोधिख्यायां सङ्क्षेपशारीरकटीकायाम्

याऽनुभूतिः स्वयं-ज्योतिरादित्येशान-विग्रहा।
 शङ्कराख्या च तं नौमि सुरेश्वर-गुरुं परम्॥१८॥

—नृसिंहप्रज्ञमुनिकृते बृहदारण्यकभाष्यवार्तिकन्यायतत्त्वविवरणे

संसाराब्धि-निषण्णाज्ञ-निकर-प्रोज्झिहीर्षया।
 कृत-संहननं वन्दे शङ्करं लोक-शङ्करम्॥१९॥

—विज्ञानवासयतिरचितायां पञ्चपादिकाव्याख्यायाम्

वेदान्तार्थ-तदाभास-क्षीर-नीर-विवेकिनम्।
 नमामि भगवत्पादं पर-हंस-धुरन्धरम्॥२०॥

—अमलानन्दसरस्वतीनां वेदान्तकल्पतरौ

नाना-भाष्यादृता सा सगुण-फल-गतिर्वैध-विद्या-विशेषैः
 तत्-तद्-देशाप्ति-रम्या सरिदिव सकला यत्र यात्यंश-भूयम्।
 तस्मिन्नानन्द-सिन्धावतिमहति फले भाव-विश्रान्ति-मुद्रा
 शास्त्रस्योद्धाटिता यैः प्रणमत हृदि तान् नित्यमाचार्य-पादान्॥२१॥

—अप्पयदीक्षितानां न्यायरक्षामणौ

प्रचण्ड-पाखण्ड-विखण्डनोद्यतं त्रयी-शिरोरथ-प्रतिपादने रतम्।
बुधैर्नुतं योग-कलाभिरावृतं नमामि तं शङ्कर-देशिकं ततम्॥२२॥

—सच्चिदानन्दसरस्वतीकृतायाम् आर्याव्याख्यायाम्

दृष्ट्वा यो दिव्य-दृष्टिः कलि-युग-समये “मन्द-भाग्या मनुष्याः
तस्मात् तन्न-प्रपञ्चः सुर-यजन-विधिर्मत्-कृतो निष्फलः स्यात्”।
इत्याविर्भूय पृथ्व्यां पुनरपि कृतवांस्तन्न-सारं गिरीशः
तं वन्दे शङ्कराख्यं महिततम-मनः-प्रार्थनीयार्थ-रूपम्॥२३॥

—प्रपञ्चसारसम्बन्धदीपिकायाम्

येनाद्वन्द्वमखण्डमक्षय-पदं प्रादर्शि तापापहं
भाष्य-ग्रन्थि-निबन्धनैः श्रुति-शिरोवाक्यार्थ-विद्योतिभिः।
नित्यो यत्र समस्त-सद्-गुण-गणस्तं शङ्कराचार्य-गीर्
विख्यातं मुनि-मौलि-लालित-पद-द्वन्द्वं सदा संश्रये॥२४॥

—रामतीर्थस्वामिरचितायाम् अन्वयार्थप्रकाशिकाख्यायां सङ्क्षेपशारीरकव्याख्यायाम्

वेदान्त-व्रात-नीरं शत-पथ-कथित-न्याय-रत्न-प्रपूरं
पारावारं सुतारं निगम-मुख-षडङ्गात्म-सद्-ग्राह-घोरम्।
कारं-कारं सुगाहं श्रुत-मत-मथितैर्ब्रह्म-विद्यामृतं यः
प्रादादादाय तस्मादशरण-शरणं शङ्करं तं नमामः॥२५॥

—आनन्दपूर्णरचितायां न्यायकल्पलतिकानाम्नायां सुरेश्वरवार्तिकटीकायाम्

वेदान्तार्थ-विभासकाय गुरवे शान्ताय सन्न्यासिने
नाना-वादि-नगेन्द्र-सङ्घ-पवये योगीन्द्र-वन्द्याय च।
मोह-ध्वान्त-दिवाकराय भगवत्पादाभिधां बिभ्रते
तस्मै भाष्य-कृते नमोऽस्तु सततं पूर्णाय बोधात्मने॥२६॥

—तैत्तिरीयभाष्यटीकायाम्

ये वेदान्त-सुधोदधिं सुमनसां निःश्रेयसाय स्वयं
 निर्मथ्योदहरन्निरूपण-गुणावृत्तेन चेतोमथा।
 अद्वैतामृतमासुरानुशयिनामास्वादनीयेतरत्
 तानाऽऽस्माक-गुरोरुपैमि भगवत्पादादिमान् देशिकान्॥ २७ ॥

—कृष्णानन्दयतिकृतौ सिद्धान्तसिद्धाञ्जने

काले शिवः क्रम-वशात् कलि-दोष-दुष्टे
 यः सम्प्रदाय-रहितं तदपेक्ष्य भूयः।
 क्षोण्यामवातरदशेष-जगद्धितार्थी
 श्री-शङ्कराख्यममलं गुरुमाश्रये तम्॥ २८ ॥

—नारायणकृतौ प्रपञ्चसारार्थदीपे

वेदाद्यागम-दुग्ध-सिन्धु-मथनात् तन्मेय-मन्थाद्रिणा
 दिव्याभोग-विचार-वासुकि-वशादाश्रित्य धैर्यं परम्।
 ब्रह्मोद्धोध-सुधां विधाय दयया मर्त्यान्मर्त्यान्मी
 कुर्वन्तो गुरवो जयन्ति जगतां लक्ष्मीश-वद् रक्षकाः॥ २९ ॥

—वरदराजपण्डितकृतौ खण्डनमण्डने

यदीय-वाक्-सूर्य-रुचि-प्रणाशितः
 हृदन्ध-कारो नमतामशेषतः।
 महात्मनः शिष्य-हिते सदा रतान्
 नमामि तान् शङ्कर-पूज्य-देशिकान्॥ ३० ॥

—शङ्कुकविरचिते कैवल्यनवनीते

यद्-वक्राम्बुज-निस्सृतं परमकं श्री-सूत्र-भाष्यामृतं
 पीत्वा मादृश-जीव-भङ्ग-निचया नन्दन्ति मोक्षाङ्गणे।
 नाना-वादि-मदेभ-भञ्जन-महा-व्यग्रोग्र-कण्ठीरवान्
 वन्दे व्यास-मुनीन्द्र-शङ्कर-मुखान् सद्-देशिकांस्तानहम्॥ ३१ ॥

—अमरेश्वरशास्त्रिरचिते अज्ञानध्वान्तचण्डभास्करे

यो लोकोपकृति-प्रविष्ट-हृदयो जित्वाऽतिबाह्यं मतं
 श्रीमच्छङ्कर-शब्द-पूर्व-भगवत्पादाभिधानं गतम्।
 सद्-वेदान्त-रहस्य-वत् स्फुटितवान् गोप्यं रहो-मानवं
 तं वन्दे भगवन्तमन्तक-रिपुं सर्वान्तराय-च्छिदम्॥ ३२॥

—कामेश्वरसूरिकृतायाम् अरुणामोदिनीनाम्न्यां सौन्दर्यलहरीव्याख्यायाम्

अखिल-पर-हंस-देशिकमागम-गूढार्थ-दर्शकं प्राज्ञम्।
 स्वानन्द-पूर्ण-सागरमनिशमहं नौमि शङ्कराचार्यम्॥ ३३॥

—नागनाथरचिते आत्मबोधप्रकरणे

विष्णवे व्यास-रूपाय ब्रह्म-सूत्र-कृते नमः।
 महेशाय च तद्-भाष्य-कृते शङ्कर-रूपिणे॥ ३४॥

—अल्लालसूरिरचिते भामतीतिलके

हर-लीलावताराय शङ्कराय वरौजसे।
 कैवल्य-कलना-कल्प-तरवे गुरवे नमः॥ ३५॥

—उमामहेश्वररचितायां तत्त्वचन्द्रिकायाम्

यत्-पादाब्ज-प्रभव-विमल-श्री-परागालि-भास्वान्
 मत्-स्वान्त-स्थं प्रणुदति तमः-पुञ्जमत्यन्त-चण्डम्।
 यत्-कारुण्य-प्लव-परिजुषा तारितोऽनेन तूर्णं
 संसाराब्धिः प्रणतिरनिशं स्याद् गुरूणां पदाब्जे॥ ३६॥

—सीतारामसूरिरचिते वेदान्तकौस्तुभे

पाराशर्य-वचोविलास-मसृणैः सूत्रैः क्रमेणाततैः
 अत्यस्तैः प्रकटीचकार भगवान् यो भाष्य-संज्ञं पटम्।
 अज्ञानोद्भव-जाड्य-नाश-करणं स्वानन्द-दं सेविनां
 तं वन्देऽखिल-योगि-वन्द्य-चरणं श्री-शङ्करं शं-करम्॥ ३७॥

—कमलाकरदेवकृतौ आनन्दविलासे

योऽयं दैवत-सार्वभौम-विभवो विश्वाधिको रुद्र इ
 त्याद्यैराद्य-वचोभिरद्वयपरैरद्यापि संस्तूयते।
 अद्वैतात्म-विबोधनाय विदुषामिच्छा-समङ्गीकृत-
 श्रीमच्छङ्कर-देशिकेन्द्र-वपुषं श्री-शङ्करं भावये॥३८॥

—शङ्कराचार्याष्टके

शङ्कर-वाङ्महिमा

अधिगत-भिदा पूर्वाचार्यानुपेत्य सहस्र-धा
 सरिदिव मही-भागान् सम्प्राप्य शौरि-पदोद्धता।
 जयति भगवत्पाद-श्रीमन्मुखाम्बुज-निर्गता
 जनन-हरणी सूक्तिर्ब्रह्माद्वयैक-परायणा॥१॥

—अप्यय्यदीक्षितानां सिद्धान्तलेशसङ्ग्रहे

संसाराध्वनि ताप-भानु-किरण-प्रोद्धत-दाह-व्यथा-
 खिन्नानां जल-काङ्क्षया मरु-भुवि श्रान्त्या परिभ्राम्यताम्।
 अत्यासन्न-सुखाम्बुधिं सुख-करं ब्रह्माद्वयं दर्शय-
 न्त्येषा शङ्कर-भारती विजयते निर्वाण-सन्दायिनी॥२॥

—विवेकचूडामणौ

जय-घोषः

श्री-शङ्कराचार्य-वर्य ब्रह्म-ज्ञान-प्रदायक।
 अज्ञान-तिमिरादित्य सुज्ञानाब्धि-सुधाकर॥१॥

ज्ञान-मुद्राश्रित-कर शिष्य-हृत्-ताप-हारक।
 कर्म-मुक्ति-गृह-द्वार-कवाट-घ्न-पदाम्बुज ॥२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

षण्मत-स्थापनाचार्य त्रयी-मार्ग-प्रकाशक।
प्रसन्न-वदनाम्भोज परमार्थ-प्रकाशक ॥ ३ ॥

ज्ञानात्मकैक-दण्डाढ्य कमण्डलु-लसत्-कर।
काषाय-वसनोपेत भस्मोद्धूलित-विग्रह ॥ ४ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीमत्-कैलास-निलय-सच्छिवांशावतारक।
कालटी-क्षेत्र-निवसदार्याम्बा-गर्भ-संश्रित ॥ ५ ॥

शिवादि-गुरु-वंशाम्बुनिधि-राकेश-सन्निभ।
पितृ-दत्तान्वर्थ-भूत-शङ्कराख्या-समुज्ज्वल ॥ ६ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

अभ्यस्त-वेद-वेदाङ्ग निखिलागम-पारग।
दरिद्र-ब्राह्मणी-दत्त-भिक्षामलक-तोषित ॥ ७ ॥

स्वर्णामलक-सदृष्टि-प्रसादानन्दित-द्विज ।
अष्ट-वर्ष-चतुर्-वेदिन् द्वादशाखिल-शास्त्र-ग ॥ ८ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

सरिद्-वर्त्मातप-श्रान्त-मातृ-दुःखापनोदक।
नक्र-ग्रह-व्याज-मातृ-मत-पारमहंस्यक ॥ ९ ॥

चिन्तना-मात्र-सान्निध्य-करणाश्वासिताम्बक।
सोमोद्भवा-तटी-क्लृप्त-सौम्य-गोविन्द-सेवन ॥ १० ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

गोविन्दार्य-मुखावाप्त-महावाक्य-चतुष्टय।
योग-सिद्धि-गृहीतेन्दुभवा-पूर-कमण्डलो ॥ ११ ॥

गुर्वनुज्ञात-विश्वेश-दिदृक्षा-गमनोत्सुक ।
चण्डालाकार-विश्वेश-प्रश्नानुप्रश्न-हर्षित ॥ १२ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

विश्वेशानुग्रहावाप्त-भाष्य-ग्रन्थन-नैपुण ।
भाष्य-स्फुट-श्रुतिशिरो-मत-तत्त्वाभिलापक ॥ १३ ॥

यदूद्वह-प्रोक्त-गीता-याथातथ्य-विवेचक ।
ब्रह्मसूत्रार्थ-संवाद-हृष्यत्-सत्यवती-सुत ॥ १४ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

मन्दाकिनी-झरी-रम्य-भाष्य-पावित-भूतल ।
भाष्य-सार-प्रकरण-कृत-जिज्ञासु-तोषण ॥ १५ ॥

सौन्दर्य-लहरी-मुख्य-बहु-स्तोत्र-विधायक ।
योगजाग्नि-कृत-स्वाम्बा-यज्ञ-स्थापित-सत्पथ ॥ १६ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

त्रिरधीतात्मीय-भाष्य-सनन्दन-समाश्रय ।
कुकूलानल-कूट-स्थ-कुमारिल-कृतानते ॥ १७ ॥

कर्मैक-पथिकोद्वण्ड-मण्डनान्त्याश्रम-प्रद ।
कञ्ज-योन्यवतार-श्री-सुरेश्वर-सुदेशिक ॥ १८ ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

यथावत्-तत्त्व-विज्ञातृ-हस्तामलक-सद्गुरो ।
तोटकामिव्यक्त-भक्ति-तत्त्व-ज्ञानाढ्य-शिष्यक ॥ १९ ॥

पृथ्वीधवादि-शिष्यौघ-शिरोधृत-पद-द्वय ।
शारदा-स्थापना-पूत-ऋश्यशृङ्ग-गिरि-स्थल ॥ २० ॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

ककुब्जय-महायात्रा-पवित्रित-महीतल।
रामेश्वरादि-मेर्वन्त-प्रतिष्ठापित-सन्मत॥ २१॥

अद्वैत-स्थापनाचार्य भगवत्पाद-संज्ञक।
वेद-वेदान्त-सम्प्रोक्त-रक्षार्थ-मठ-कल्पन॥ २२॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

कैलास-यात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजक।
नेपाल-केदार-वर-सिद्धि-लिङ्ग-निधायक ॥ २३॥

चिदम्बर-सभा-न्यस्त-मोक्ष-लिङ्ग यतीश्वर।
तुङ्गा-भद्रा-सङ्ग-भूमि-भोग-लिङ्ग-समर्चन ॥ २४॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथ ।
काश्यां श्रीचक्र-राजाख्य-यन्त्र-स्थापन-दीक्षित॥ २५॥

भेरी-पटह-वाद्यादि-राज-लक्षण-लक्षित।
सर्वज्ञ-पीठाध्यारोह-लुप्त-सार्वज्ञ्य-संशय॥ २६॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

वादार्थागत-सर्वज्ञ-बाल-सन्न्यास-दायक।
शारदा-मठ-मेरु-श्री-योगलिङ्गाभिषेचन ॥ २७॥

सोपान-पञ्चकोद्धोष-कृत-शिष्यानुशासन।
सत्यव्रत-समाख्यात-काश्यन्तरित-विग्रह॥ २८॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)

काशीपुराभरण-कामद-कामकोटि-पीठाभिषिक्त वर-देशिक-सार्वभौम।
सार्वज्ञ्य-शक्त्यधिगताखिल-मन्त्र-तन्त्र-चक्र-प्रतिष्ठिति-विजृम्भित-चातुरीक॥ २९॥

(स्वामिन् ! जय ! विजयी भव !)



अयं पद्यसङ्ग्रहः

- * श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वतीश्रीपादानां षष्ठ्यब्दपूर्त्यवसरे प्रकाशिते ब्रह्मसूत्रभाष्यपुस्तके
- * श्रीशङ्करभक्तजनसभया प्रकाशिते अद्वैताक्षरमालिकायाः द्वितीयसंस्करणपुस्तके
- * शिमिलि-वेङ्कट-राधाकृष्णशास्त्रिभिः सङ्कलितायां श्रीशङ्करभगवत्पादप्रशस्तिमञ्जर्यां च सङ्गृहीतानि आचार्यप्रशस्तिरूपाणि पद्यानि आधृत्य सङ्कलितः

जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर
जय जय शङ्कर हर हर शङ्कर।
काञ्ची-शङ्कर कामकोटि-शङ्कर
हर हर शङ्कर जय जय शङ्कर॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पादाचार्याः प्रीयन्ताम्।
ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ श्रीमच्चिद्विलासीय-शङ्करविजयविलासे श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद-अवतार-घट्टः ॥

॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥

व्यराजत तदार्याम्बा शिवैकायत्तचेतना।
 दृष्ट्वा शिवगुरुर्यज्वा भार्यामार्या च गर्भिणीम्॥३४॥
 वृषाचलेशं सततं स्मरन्नेकाग्रचेतसा।
 दयालुतां स्तुवन् शम्भोर्दीनेष्वपि महत्स्वपि॥३५॥
 ववृधे स पयोराशिः पूर्णेन्दोरिव दर्शनात्।
 ततः सा दशमे मासि सम्पूर्णशुभलक्षणे॥३६॥
 दिवसे माधवर्तौ च स्वोच्चस्थे ग्रहपञ्चके।
 मध्याह्ने चाभिजिन्नाममुहूर्ते चार्द्रया युते॥३७॥
 उदयाचलवेलेव भानुमन्तं महौजसम्।
 प्रासूत तनयं साध्वी गिरिजेव षडाननम्॥३८॥
 जयन्तमिव पौलोमी व्यासं सत्यवती यथा।
 तदैवाग्रे निरीक्ष्येयमनुभूयेव वेदनाम्॥३९॥
 चतुर्भुजमुदाराङ्गं त्रिणेत्रं चन्द्रशेखरम्।
 दुर्निरीक्ष्यैः स्वतेजोभिर्भासयन्तं दिशो दश॥४०॥
 दिवाकरकराकारैर्गौरैरीषद्विलोहितैः ।
 एवमाकारमालोक्य विस्मिता विह्वला भिया॥४१॥
 किं किं किमिदमाश्चर्यमन्यदेव मदीप्सितम्।
 परं त्वन्यत् समुद्भूतमिति चिन्ताभृति स्वयम्॥४२॥
 उद्वीक्षन्त्यां प्रणामितुं तस्यां कुतुकतायुजि।
 ससृजुः पुष्पवर्षाणि देवा भुव्यन्तरिक्षगाः॥४३॥

कह्लारकलिकागन्धबन्धुरो मरुदाववौ।
दिशः प्रकाशिताकाशाः सा धरा सादरा बभौ॥४४॥

प्रायः प्रदक्षिणज्वाला जज्वलुर्यज्ञपावकाः।
प्रसन्नमभवच्चित्तं सतां प्रतपतामपि॥४५॥

इत्थमन्यद्विलोक्यापि प्रश्रिता विनयान्विता।
वृषाचलेशं निश्चित्य प्रादुर्भूतमतन्द्रिता॥४६॥

स्वामिन् दर्शय मे लीला बालभावक्रमोचिताः।
इत्थं सा प्रार्थयामास साध्वी भूयो महेश्वरम्॥४७॥

ततः किशोरवत्सोऽपि किञ्चिद्विचलिताधरः।
ताडयन् चरणौ हस्तौ रुरोदैव क्षणादसौ॥४८॥

आर्या साऽपि तदैवासीन्मायामोहितमानसा।
जगन्मोहकरी माया महेशितुरनीदृशी॥४९॥

तत्रत्यास्तु जना नार्यो नाविन्दन् वृत्तमीदृशम्।
बालकं मेनिरे प्रोद्यदिन्दुबिम्बमिवोज्ज्वलम्॥५०॥

तत्रत्या वृद्धनार्योऽपि यथोचितमथाचरन्।
ततः श्रुत्वा पिता सोऽपि निधिं प्राप्येव निर्धनः॥५१॥

मुमुदे नितरां चित्ते वित्तेषां नाभ्यलक्षत।
आविर्भावं तु जानाति शम्भोर्नाबोधयच्च सा॥५२॥

स्नात्वा शिवगुरुर्यज्वा यज्वनामग्रणीस्ततः।
विप्रानाकारयामास पुरन्ध्रीरपि सर्वतः॥५३॥

तदोत्सवो महानासीत् पुरे सद्भानि सन्ततम्।
धान्यराशिं मखिभ्योऽसौ विद्ध्यो भूयः प्रदत्तवान्॥५४॥

धनानि भूरि विप्रेभ्यो वेदविद्ध्यो दिदेश सः।
वासांसि भूयो दिव्यानि सफलानि प्रदत्तवान्॥५५॥

पुरन्ध्रीणां च नीरन्ध्रं वस्तुजातान्यदादसौ।
घटोघ्नीर्बहुशो गाश्च सालङ्काराः सदक्षिणाः॥५६॥

वृषाचलेशः सततं प्रीयतामित्यसौ ददौ।
ततः शिवगुरुर्यज्वा ब्राह्मणान् पूर्वतोऽधिकम्॥५७॥

सन्तर्प्य बन्धुभिः सार्धं मुदितो न्यवसत् सुधीः।
बालभावे विशालाक्षमतिविस्तृतवक्षसम्॥५८॥

आजानुलम्बितभुजं सुविशालनिटालकम्।
आरक्तोपान्तनयनविनिन्दितसरोरुहम् ॥५९॥

मुखकान्तिपराभूतराकाहिमकराकृतिम् ।
भासा गौर्या प्रसृतया प्रोद्यन्तमिव भास्करम्॥६०॥

शङ्खचक्रध्वजाकाररेखाचिह्नपदाम्बुजम्।
द्वात्रिंशलक्षणोपेतं विद्युदाभकलेवरम्॥६१॥

प्रमोदं दृष्टमात्रेण दिशन्तं तं स्तनन्धयम्।
पायम्पायं दृशा प्रेम्णा श्रीकृष्णमिव गोपिका॥६२॥

प्रपेदे न क्षणं तृप्तिं चकोरीव सुधाकरम्।
तादृशं बालकं दृष्ट्वा त्वार्याम्बा शुभलक्षणम्।
तिष्ठति स्म सुखेनैव लालयन्ती तनूभवम्॥६३॥

॥इति श्रीचिद्विलासीयश्रीशङ्करविजयविलासे श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्याणाम्
अवतारघट्टः सम्पूर्णः॥

॥ काञ्च्यां सर्वज्ञपीठारोहण-घट्टः ॥

॥ पञ्चविंशोऽध्यायः ॥

श्रीचक्रपञ्चाङ्गागे तु कामाक्षीं ज्ञानरूपिणीम् ॥ ४४ ॥

प्रतिष्ठाप्य च पूजायै ब्राह्मणान् विनियुज्य च।
एकाम्रेश्वरपूजार्थं विप्रानादिश्य भूयसः ॥ ४५ ॥

श्रीमद्वरदराजस्य नमस्यायै नियुज्य च।
सर्वज्ञपीठमारोढुमुत्सेहे देशिकोत्तमः ॥ ४६ ॥

ततोऽशरीरिणी वाणी नभोमार्गाद् व्यजृम्भत।
भो यतिन् भवता सर्वविद्यास्वपि विशेषतः ॥ ४७ ॥

कृत्वा प्रसङ्गं विद्वद्भिः जित्वा तान् अखिलानपि।
सर्वज्ञपीठमारोढुम् उचितं ननु भूतले ॥ ४८ ॥

इति वाचं समाकर्ण्य किमेतदिति विस्मितः।
किञ्चिदालोचयन्नास्त किं करोमीति मानसे ॥ ४९ ॥

ताम्रपर्णीसरित्तीरवासिनो विबुधास्तदा।
षड्दर्शिनीसुधावार्धिपारदृश्वगुणोन्नताः ॥ ५० ॥

आगत्य तं देशिकेन्द्रं प्रणिपत्येदमूचिरे।
भिदा सत्यमिवाभाति त्वया त्वैक्यं निगद्यते ॥ ५१ ॥

देवभेदो मूर्तिभेदः प्रत्यक्षेणात्र लक्ष्यते।
स्वर्गादिफलभेदश्च सर्वशास्त्रविनिश्चितः ॥ ५२ ॥

तत्प्रत्यक्षं च मिथ्येति कथयस्यधुना यते।
इति ब्रुवत्सु विद्वत्सु शङ्कराचार्यदेशिकः ॥ ५३ ॥

शृणुतात्रोत्तरं विप्राः ब्रह्मैकं तु सनातनम्।
इन्द्रोपेन्द्रधनेन्द्राद्यास्तद्विभूतय एव हि ॥ ५४ ॥

मृदि कुम्भो यथा भाति कनके कङ्कणं यथा।
जले वीचिर्यथा भाति तथेदं च विभाव्यते॥५५॥

यां देवतां भजन्ते ये तत्सारूप्यं प्रयान्ति ते।
ये वा पुण्यं चरन्तीह ते स्वर्गे फलभोगिनः॥५६॥

एको देव इति श्रुत्या जगत् सर्वं तदाकृतिः।
तद्विन्नमन्यन्नास्त्येव वेदान्तैकविनिश्चितम्॥५७॥

तस्मादखण्डमात्मानमद्वयानन्दलक्षणम् ।
ज्ञात्वा गुरुप्रसादेन मुक्ता भवत नान्यथा॥५८॥

श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तैः वचनैरिति देशिकः।
भेदवादरतान् विप्रान् आधायद्वैतपारगान्॥५९॥

ततस्ततो विपश्चिद्धिः प्रणतश्चातिभक्तितः।
गीतवादित्रनिर्घोषैः जयवादसमुज्ज्वलैः॥६०॥

आरुरोहाथ सर्वज्ञपीठं देशिकपुङ्गवः।
पुष्पवृष्टिः पपाताथ ववुर्वाताः सुगन्धयः॥६१॥

॥इति श्रीचिद्विलासीयश्रीशङ्करविजयविलासे श्रीशङ्करभगवत्पादाचार्याणां
काश्यां सर्वज्ञपीठारोहणघट्टः सम्पूर्णः॥



॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-लक्ष्मी-नृसिंहपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{१०} नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने वसन्तऋतौ मेषमासे
शुक्लपक्षे चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु /
स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् (स्वाती/?)^{११} नक्षत्र ()^{१२} नाम योग
() करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां चतुर्दश्यां
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्धयर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
श्री नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले यथाशक्ति-ध्यान-आवाहनादि-षोडशोपचारैः
श्री-नृसिंह-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

^{१०}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{११}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{१२}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायामि देवदेवं तं शङ्खचक्रगदाधरम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥
अस्मिन् बिम्बे श्री-लक्ष्मी-नृसिंहम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥
पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मक्रामत्। साशनानशने अभि॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

मधुपर्कं समर्पयामि।

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥
शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयोजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥

वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायुव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्सि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. ॐ अनघाय नमः — पादौ पूजयामि
२. वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि
४. वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि
५. पुरुषोत्तमाय नमः — मेढ्रं पूजयामि
६. वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि
७. हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि
८. माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि
९. मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि
१०. वराहाय नमः — बाहून् पूजयामि
११. नृसिंहाय नमः — हस्तान् पूजयामि
१२. दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि
१३. दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि
१४. पुण्डरीकाक्षाय नमः — नेत्रे पूजयामि
१५. गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि
१६. गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि
१७. अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि
१८. श्री-नृसिंहाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

श्रीनृसिंहाय नमः
 महासिंहाय नमः
 दिव्यसिंहाय नमः
 महाबलाय नमः
 उग्रसिंहाय नमः
 महादेवाय नमः
 उपेन्द्राय नमः
 अग्निलोचनाय नमः

रौद्राय नमः
 शौरये नमः
 महावीराय नमः
 सुविक्रमपराक्रमाय नमः
 हरिकोलाहलाय नमः
 चक्रिणे नमः
 विजयाय नमः
 अजयाय नमः

अव्ययाय नमः

दैत्यान्तकाय नमः

परब्रह्मणे नमः

अघोराय नमः

२०

घोरविक्रमाय नमः

ज्वालामुखाय नमः

ज्वालामालिने नमः

महाज्वालाय नमः

महाप्रभवे नमः

निटिलाक्षाय नमः

सहस्राक्षाय नमः

दुर्निरीक्ष्याय नमः

प्रतापनाय नमः

महादंष्ट्राय नमः

३०

प्राज्ञाय नमः

हिरण्यक-निषूदनाय नमः

चण्डकोपिने नमः

सुरारिघ्नाय नमः

सदार्तिघ्नाय नमः

सदाशिवाय नमः

गुणभद्राय नमः

महाभद्राय नमः

बलभद्राय नमः

सुभद्रकाय नमः

४०

करालाय नमः

विकरालाय नमः

गतायुषे नमः

सर्वकर्तृकाय नमः

भैरवाडम्बराय नमः

दिव्याय नमः

अगम्याय नमः

सर्वशत्रुजिते नमः

अमोघास्त्राय नमः

शस्त्रधराय नमः

५०

सव्यजूटाय नमः

सुरेश्वराय नमः

सहस्रबाहवे नमः

वज्रनखाय नमः

सर्वसिद्धये नमः

जनार्दनाय नमः

अनन्ताय नमः

भगवते नमः

स्थूलाय नमः

अगम्याय नमः

६०

परावराय नमः

सर्वमन्त्रैकरूपाय नमः

सर्वयन्त्रविदारणाय नमः

अव्ययाय नमः

परमानन्दाय नमः

कालजिते नमः

| | | | |
|--------------------|----|---------------------|-----|
| खगवाहनाय नमः | | विभवे नमः | |
| भक्तातिवत्सलाय नमः | | सङ्कर्षणाय नमः | |
| अव्यक्ताय नमः | | प्रभवे नमः | १० |
| सुव्यक्ताय नमः | ७० | त्रिविक्रमाय नमः | |
| सुलभाय नमः | | त्रिलोकात्मने नमः | |
| शुचये नमः | | कालाय नमः | |
| लोकैकनायकाय नमः | | सर्वेश्वराय नमः | |
| सर्वाय नमः | | विश्वम्भराय नमः | |
| शरणागतवत्सलाय नमः | | स्थिराभाय नमः | |
| धीराय नमः | | अच्युताय नमः | |
| धराय नमः | | पुरुषोत्तमाय नमः | |
| सर्वज्ञाय नमः | | अधोक्षजाय नमः | |
| भीमाय नमः | | अक्षयाय नमः | १०० |
| भीमपराक्रमाय नमः | ८० | सेव्याय नमः | |
| देवप्रियाय नमः | | वनमालिने नमः | |
| नुताय नमः | | प्रकम्पनाय नमः | |
| पूज्याय नमः | | गुरवे नमः | |
| भवहृते नमः | | लोकगुरवे नमः | |
| परमेश्वराय नमः | | स्रष्ट्रे नमः | |
| श्रीवत्सवक्षसे नमः | | परस्मै ज्योतिषे नमः | |
| श्रीवासाय नमः | | परायणाय नमः | १०८ |

॥इति श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः धूपमाघ्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।

पृथुश्च मह्यमावह जीवन् च दिशो दिश॥

मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।

अभिभ्रदग्ना आगहि श्रिया मा परिपातय॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः () पानकं च निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

वेदा॒हमे॒तं पु॒रुषं॑ म॒हान्त॑म्। आ॒दि॒त्यव॑र्णं॒ तम॑स॒स्तु पा॒रो।
 सर्वा॑णि रू॒पाणि॑ वि॒चित्य॒ धीरः॑। नामा॑नि कृ॒त्वाऽभि॑वदन्॒ यदास्ते॑॥
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
 दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॑दाज॒हारः। श॒क्रः प्र॑वि॒द्वान् प्र॑दि॒शश्च॑त॒स्रः।
 तमे॒वं वि॒द्वान॑मृ॒तं इ॒ह भ॑वति। नान्यः पन्था॒ अर्य॑नाय विद्यते॥
 यो॑ऽपां पु॒ष्पं वेद॑। पु॒ष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
 च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पु॒ष्पम्। पु॒ष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
 य ए॒वं वेद॑। यो॑ऽपामा॒यत॑नं॒ वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति।

ओं तद्ब्र॒ह्म। ओं तद्वा॒युः। ओं तदा॒त्मा।
 ओं तथ्स॒त्यम्। ओं तथ्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्नमः॑॥

अन्तश्चरति॑ भू॒तेषु॒ गुहा॑यां वि॒श्वमूर्ति॑षु।
 त्वं यज्ञ॑स्त्वं वष॑ट्कारस्त्वमिन्द्र॑स्त्व॒॥
 रुद्र॑स्त्वं विष्णु॑स्त्वं ब्रह्म त्वं प्र॒जाप॑तिः।
 त्वं तदा॑प॒ आपो॒ ज्योती॒ रसो॑ऽमृ॒तं ब्रह्म॒ भूर्भुवः॑ सुव॒रोम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।
 स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥
 स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधवा।
 मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥
 यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
 तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥
 प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
 नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥
 नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
 साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोऽस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
 ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥
 - छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं ॥

श्रीमत्-पयोनिधि-निकेतन चक्रपाणे
 भोगीन्द्र-भोग-मणि-राजित-पुण्य-मूर्ते ।
 योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि-पोत
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१॥
 ब्रह्मेन्द्र-रुद्र-मरुदर्क-किरीट-कोटि-
 सङ्घट्टिताङ्घ्रि-कमलामल-कान्ति-कान्त।
 लक्ष्मी-लसत्-कुच-सरोरुह-राजहंस
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥२॥

संसार-दाव-दहनाकर-भी-करोरु-
 ज्वालावलीभिरतिदग्ध-तनूरुहस्य ।
 त्वत्-पाद-पद्म-सरसी-शरणागतस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥३॥

संसार-जाल-पतितस्य जगन्निवास
 सर्वेन्द्रियार्थ-बडिशग्र-झषोपमस्य ।
 प्रोत्कम्पित-प्रचुर-तालुक-मस्तकस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥४॥

संसार-कूपमतिघोरमगाध-मूलं
 सम्प्राप्य दुःख-शत-सर्प-समाकुलस्य।
 दीनस्य देव कृपया पदमागतस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥५॥

संसार-भीकर-करीन्द्र-कराभिघात-
 निष्पीड्यमान-वपुषः सकलार्ति-नाश।
 प्राण-प्रयाण-भव-भीति-समाकुलस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥६॥

संसार-सर्प-विष-दिग्ध-महोग्र-तीव्र-
 दंष्ट्राग्र-कोटि-परिदष्ट-विनष्ट-मूर्तेः ।
 नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरे
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥७॥

संसार-वृक्षमघ-बीजमनन्त-कर्म-
 शाखा-युतं करण-पत्रमनङ्ग-पुष्पम्।
 आरुह्य दुःख-फलितं पततं दयालो
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥८॥

संसार-सागर-विशाल-कराल-काल-
 नक्र-ग्रह-ग्रसित-निग्रह-विग्रहस्य ।
 व्यग्रस्य राग-निचयोर्मि-निपीडितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥९॥

संसार-सागर-निमज्जनमुह्यमानम्
 दीनं विलोकय विभो करुणा-निधे माम्।
 प्रह्लाद-खेद-परिहार-परावतार
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१०॥

संसार-घोर-गहने चरतो मुरारे
 मारोग्र-भीकर-मृग-प्रचुरार्दितस्य ।
 आर्तस्य मत्सर-निदाघ-सुदुःखितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥११॥

बद्ध्वा गले यम-भटा बहु तर्जयन्तः
 कर्षन्ति यत्र भव-पाश-शतैर्युतं माम्।
 एकाकिनं परवशं चकितं दयालो
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१२॥

लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
 यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप।
 ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१३॥

एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्खम्
 अन्येन सिन्धु-तनयाम् अवलम्ब्य तिष्ठन्।
 वामेतरेण वरदाभय-पद्म-चिह्नं
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१४॥

अन्धस्य मे हृत-विवेक-महाधनस्य
 चौरैर्-महाबलिभिरिन्द्रिय-नामधेयैः ।
 मोहान्धकार-कुहरे विनिपातितस्य
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१५॥

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक-
 व्यासादि-भागवत-पुङ्गव-हृन्निवास ।
 भक्तानुरक्त-परिपालन-पारिजात
 लक्ष्मी-नृसिंह मम देहि करावलम्बम्॥१६॥

लक्ष्मी-नृसिंह-चरणाब्ज-मधुव्रतेन
 स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण।
 ये तत् पठन्ति मनुजा हरि-भक्ति-युक्ताः
 ते यान्ति तत्-पद-सरोजमखण्ड-रूपम्॥१७॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-करुणारस-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रम् ॥

त्वत्-प्रभु-जीव-प्रियमिच्छसि चेन्नरहरि-पूजां कुरु सततं
 प्रतिबिम्बालङ्कृति-धृति-कुशलो बिम्बालङ्कृतिमातनुते ।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥१॥

शुक्तौ रजत-प्रतिभा जाता कटकाद्यर्थ-समर्था चेद्
 दुःखमयी ते संसृतिरेषा निर्वृति-दाने निपुणा स्यात् ।
 चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां
 भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥२॥

आकृति-साम्याच्छाल्मलि-कुसुमे स्थल-नलिनत्व-भ्रममकरोः

गन्ध-रसाविह किमु विद्येते विफलं भ्राम्यसि भृश-विरसेऽस्मिन् ।

चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां

भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥३॥

स्रक्-चन्दन-वनितादीन् विषयान् सुखदान् मत्वा तत्र विहरसे

गन्ध-फली-सदृशा ननु तेऽमी भोगानन्तर-दुःख-कृतः स्युः ।

चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां

भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥४॥

तव हितमेकं वचनं वक्ष्ये शृणु सुख-कामो यदि सततं

स्वप्ने दृष्टं सकलं हि मृषा जाग्रति च स्मर तद्वदिति।

चेतो-भृङ्ग भ्रमसि वृथा भव-मरु-भूमौ विरसायां

भज भज लक्ष्मी-नरसिंहानघ-पद-सरसिज-मकरन्दम्॥५॥

॥इति श्रीमद्-गोविन्दभगवत्पाद-शिष्य-श्रीमच्छङ्कर-भगवत्पाद-विरचितं

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पञ्चरत्न-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे अष्टमोऽध्यायः ॥

श्रीनारद उवाच

अथ दैत्यसुताः सर्वे श्रुत्वा तदनुवर्णितम्।

जगृहुर्निरवद्यत्वात्रैव गुर्वनुशिक्षितम्॥१॥

अथाचार्यसुतस्तेषां बुद्धिमेकान्तसंस्थिताम्।

आलक्ष्य भीतस्त्वरितो राज्ञ आवेदयद्यथा॥२॥

श्रुत्वा तदप्रियं दैत्यो दुःसहं तनयानयम्।

कोपावेशचलद्वात्रः पुत्रं हन्तुं मनो दधे॥३॥

क्षिप्त्वा परुषया वाचा प्रह्लादमतदर्हणम्।

आहेक्षमाणः पापेन तिरश्चीनेन चक्षुषा॥४॥

प्रश्रयावनतं दान्तं बद्धाञ्जलिमवस्थितम्।
सर्पः पदाहत इव श्वसन्प्रकृतिदारुणः॥५॥

श्रीहिरण्यकशिपुरुवाच

हे दुर्विनीत मन्दात्मन्कुलभेदकराधम।
स्तब्धं मच्छासनोद्धृतं नेष्ट्ये त्वाद्य यमक्षयम्॥६॥
क्रुद्धस्य यस्य कम्पन्ते त्रयो लोकाः सहेश्वराः।
तस्य मेऽभीतवन्मूढ शासनं किं बलोऽत्यगाः॥७॥

श्रीप्रह्लाद उवाच

न केवलं मे भवतश्च राजन्स वै बलं बलिनां चापरेषाम्।
परेऽवरेऽमी स्थिरजङ्गमा ये ब्रह्मादयो येन वशं प्रणीताः॥८॥
स ईश्वरः काल उरुक्रमोऽसावोजः सहः सत्त्वबलेन्द्रियात्मा।
स एव विश्वं परमः स्वशक्तिभिः सृजत्यवत्यत्ति गुणत्रयेशः॥९॥
जह्यासुरं भावमिमं त्वमात्मनः समं मनो धत्स्व न सन्ति विद्विषः।
ऋतेऽजितादात्मन उत्पथे स्थितात्तद्धि ह्यनन्तस्य महत्समर्हणम्॥१०॥
दस्यून्पुरा षण्ण विजित्य लुम्पतो मन्यन्त एके स्वजिता दिशो दश।
जितात्मनो ज्ञस्य समस्य देहिनां साधोः स्वमोहप्रभवाः कुतः परे॥११॥

श्रीहिरण्यकशिपुरुवाच

व्यक्तं त्वं मर्तुकामोऽसि योऽतिमात्रं विकत्थसे।
मुमूर्षूणां हि मन्दात्मन्ननु स्युर्विकृवा गिरः॥१२॥
यस्त्वया मन्दभाग्योक्तो मदन्यो जगदीश्वरः।
क्वासौ यदि स सर्वत्र कस्मात्स्तम्भे न दृश्यते॥१३॥
सोऽहं विकत्थमानस्य शिरः कायाद्धरामि ते।
गोपायेत हरिस्त्वाद्य यस्ते शरणमीप्सितम्॥१४॥

एवं दुरुक्तैर्मुहुरर्दयन्नुषा सुतं महाभागवतं महासुरः।
खड्गं प्रगृह्योत्पतितो वरासनात्स्तम्भं तताडातिबलः स्वमुष्टिना॥१५॥

तदैव तस्मिन्निनदोऽतिभीषणो बभूव येनाण्डकटाहमस्फुटत्।
यं वै स्वधिष्ण्योपगतं त्वजादयः श्रुत्वा स्वधामात्ययमङ्ग मेनिरे॥१६॥

स विक्रमन्पुत्रवधेप्सुरोजसा निशम्य निर्हादमपूर्वमद्भुतम्।
अन्तःसभायां न ददर्श तत्पदं वितत्रसुर्येन सुरारियूथपाः॥१७॥

सत्यं विधातुं निजभृत्यभाषितं व्याप्तिं च भूतेष्वखिलेषु चात्मनः।
अदृश्यतात्यद्भुतरूपमुद्वहन्स्तम्भे सभायां न मृगं न मानुषम्॥१८॥

स सत्त्वमेनं परितो विपश्यन्स्तम्भस्य मध्यादनुनिर्जिहानम्।
नायं मृगो नापि नरो विचित्रमहो किमेतन्नृमृगेन्द्ररूपम्॥१९॥

मीमांसमानस्य समुत्थितोऽग्रतो नृसिंहरूपस्तदलं भयानकम्।
प्रतप्तचामीकरचण्डलोचनं स्फुरत्सटाकेशरजृम्भिताननम्॥२०॥

करालदंष्ट्रं करवालचञ्चल क्षुरान्तजिह्वं भ्रुकुटीमुखोल्बणम्।
स्तब्धोर्ध्वकर्णं गिरिकन्दराद्भुत व्यात्तास्यनासं हनुभेदभीषणम्॥२१॥

दिविस्पृशत्कायमदीर्घपीवर ग्रीवोरुवक्षःस्थलमल्पमध्यमम्।
चन्द्रांशुगौरैश्छुरितं तनूरुहैर्विष्वग्भुजानीकशतं नखायुधम्॥२२॥

दुरासदं सर्वनिजेतरायुध प्रवेकविद्रावितदैत्यदानवम्।
प्रायेण मेऽयं हरिणोरुमायिना वधः स्मृतोऽनेन समुद्यतेन किम्॥२३॥

एवं ब्रुवंस्त्वभ्यपतद्गदायुधो नदन्नृसिंहं प्रति दैत्यकुञ्जरः।
अलक्षितोऽग्नौ पतितः पतङ्गमो यथा नृसिंहौजसि सोऽसुरस्तदा॥२४॥

न तद्विचित्रं खलु सत्त्वधामनि स्वतेजसा यो नु पुरापिबत्तमः।
ततोऽभिपद्याभ्यहनन्महासुरो रुषा नृसिंहं गदयोरुवेगया॥२५॥

तं विक्रमन्तं सगदं गदाधरो महोरगं ताक्ष्यसुतो यथाग्रहीत्।
स तस्य हस्तोत्कलितस्तदासुरो विक्रीडतो यद्वदहिर्गरुत्मतः॥२६॥

असाध्वमन्यन्त हृतौकसोऽमरा घनच्छदा भारत सर्वधिष्यपाः।
तं मन्यमानो निजवीर्यशङ्कितं यद्धस्तमुक्तो नृहरिं महासुरः।
पुनस्तमासञ्जत खड्गचर्मणी प्रगृह्य वेगेन गतश्रमो मृधे॥२७॥

तं श्येनवेगं शतचन्द्रवर्त्मभिश्चरन्तमच्छिद्रमुपर्यधो हरिः।
कृत्वादृहासं खरमुत्स्वनोल्बणं निमीलिताक्षं जगृहे महाजवः॥२८॥

विष्वक्स्फुरन्तं ग्रहणातुरं हरिर्व्यालो यथाखुं कुलिशाक्षतत्वचम्।
द्वार्यरूमापत्य ददार लीलया नखैर्यथाहिं गरुडो महाविषम्॥२९॥

संरम्भदुष्प्रेक्ष्यकराललोचनो व्यात्ताननान्तं विलिहन्स्वजिह्वया।
असृग्लवाक्त्तारुणकेशराननो यथान्नमाली द्विपहत्यया हरिः॥३०॥

नखाङ्कुरोत्पाटितहृत्सरोरुहं विसृज्य तस्यानुचरानुदायुधान्।
अहन्समस्तान्नखशस्त्रपाणिभिर्दोर्दण्डयूथोऽनुपथान्सहस्रशः॥३१॥

सटावधूता जलदाः परापतन्ग्रहाश्च तद्दृष्टिविमुष्टरोचिषः।
अम्भोधयः श्वासहता विचुक्षुर्भुर्निर्हादभीता दिगिभा विचुकुशुः॥३२॥

द्यौस्तत्सटोत्क्षिप्तविमानसङ्कुला प्रोत्सर्पत क्ष्मा च पदाभिपीडिता।
शैलाः समुत्पेतुरमुष्य रंहसा तत्तेजसा खं ककुभो न रेजिरे॥३३॥

ततः सभायामुपविष्टमुत्तमे नृपासने सम्भृततेजसं विभुम्।
अलक्षितद्वैरथमत्यमर्षणं प्रचण्डवक्त्रं न बभाज कश्चन॥३४॥

निशाम्य लोकत्रयमस्तकज्वरं तमादिदैत्यं हरिणा हतं मृधे।
प्रहर्षवेगोत्कलितानना मुहुः प्रसूनवर्षैर्ववृषुः सुरस्त्रियः॥३५॥

तदा विमानावलिभिर्नभस्तलं दिदृक्षतां सङ्कुलमास नाकिनाम्।
सुरानका दुन्दुभयोऽथ जघ्निरे गन्धर्वमुख्या ननृतुर्जगुः स्त्रियः॥३६॥

तत्रोपब्रज्य विबुधा ब्रह्मेन्द्रगिरिशदयः।
ऋषयः पितरः सिद्धा विद्याधरमहोरगाः॥३७॥

मनवः प्रजानां पतयो गन्धर्वाप्सरचारणाः।
यक्षाः किम्पुरुषास्तात वेतालाः सहकिन्नराः॥३८॥

ते विष्णुपार्षदाः सर्वे सुनन्दकुमुदादयः।
मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिपुटा आसीनं तीव्रतेजसम्।
ईडिरे नरशार्दूलं नातिदूरचराः पृथक्॥३९॥

श्रीब्रह्मोवाच

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये विचित्रवीर्याय पवित्रकर्मणे।
विश्वस्य सर्गस्थितिसंयमान्गुणैः स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने॥४०॥

श्रीरुद्र उवाच

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः।
तत्सुतं पाह्युपसृतं भक्तं ते भक्तवत्सल॥४१॥

श्रीइन्द्र उवाच

प्रत्यानीताः परम भवता त्रायता नः स्वभागा
दैत्याक्रान्तं हृदयकमलं तद्गृहं प्रत्यबोधि।
कालग्रस्तं कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां ते
मुक्तिस्तेषां न हि बहुमता नारसिंहापरैः किम्॥४२॥

श्रीऋषय ऊचुः

त्वं नस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो
येनेदमादिपुरुषात्मगतं ससर्क्य।
तद्विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल
रक्षागृहीतवपुषा पुनरन्वमंस्थाः॥४३॥

श्रीपितर ऊचुः

श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसभं तनूजैर्
 दत्तानि तीर्थसमयेऽप्यपिबत्तिलाम्बु।
 तस्योदरान्नखविदीर्णवपाद्य आर्च्छत्
 तस्मै नमो नृहरयेऽखिलधर्मगोत्रे॥४४॥

श्रीसिद्धा ऊचुः

यो नो गतिं योगसिद्धामसाधुरहार्षीद्योगतपोबलेन।
 नाना दर्पं तं नखैर्विददार तस्मै तुभ्यं प्रणताः स्मो नृसिंह॥४५॥

श्रीविद्याधरा ऊचुः

विद्यां पृथग्धारणयानुराद्धां न्यषेधदज्ञो बलवीर्यदृप्तः।
 स येन सङ्क्षो पशुवद्धतस्तं मायानृसिंहं प्रणताः स्म नित्यम्॥४६॥

श्रीनागा ऊचुः

येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि हृतानि नः।
 तद्वक्षःपाटनेनासां दत्तानन्द नमोऽस्तु ते॥४७॥

श्रीमनव ऊचुः

मनवो वयं तव निदेशकारिणो दितिजेन देव परिभूतसेतवः।
 भवता खलः स उपसंहृतः प्रभो करवाम ते किमनुशाधि किङ्करान्॥४८॥

श्रीप्रजापतय ऊचुः

प्रजेशा वयं ते परेशाभिसृष्टा न येन प्रजा वै सृजामो निषिद्धाः।
 स एष त्वया भिन्नवक्षा नु शेते जगन्मङ्गलं सत्त्वमूर्तेऽवतारः॥४९॥

श्रीगन्धर्वा ऊचुः

वयं विभो ते नटनाट्यगायका येनात्मसाद्वीर्यबलौजसा कृताः।
 स एष नीतो भवता दशामिमां किमुत्पथस्थः कुशलाय कल्पते॥५०॥

श्रीचारणा ऊचुः

हरे तवाङ्घ्रिपङ्कजं भवापवर्गमाश्रिताः।
यदेष साधुहृच्छयस्त्वयासुरः समापितः॥५१॥

श्रीयक्षा ऊचुः

वयमनुचरमुख्याः कर्मभिस्ते मनोज्ञैस्
त इह दितिसुतेन प्रापिता वाहकत्वम्।
स तु जनपरितापं तत्कृतं जानता ते
नरहर उपनीतः पञ्चतां पञ्चविंश॥५२॥

श्रीकिम्पुरुषा ऊचुः

वयं किम्पुरुषास्त्वं तु महापुरुष ईश्वरः।
अयं कुपुरुषो नष्टो धिक्कृतः साधुभिर्यदा॥५३॥

श्रीवैतालिका ऊचुः

सभासु सत्रेषु तवामलं यशो गीत्वा सपर्यां महतीं लभामहे।
यस्तामनैषीद्वशमेष दुर्जनो द्विष्ट्या हतस्ते भगवन्यथामयः॥५४॥

श्रीकिन्नरा ऊचुः

वयमीश किन्नरगणास्तवानुगा दितिजेन विष्टिममुनानुकारिताः।
भवता हरे स वृजिनोऽवसादितो नरसिंह नाथ विभवाय नो भव॥५५॥

श्रीविष्णुपार्षदा ऊचुः

अद्यैतद्धरिनररूपमद्भुतं ते दृष्टं नः शरणद सर्वलोकशर्म।
सोऽयं ते विधिकर ईश विप्रशप्तस्तस्येदं निधनमनुग्रहाय विद्मः॥५६॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे
अष्टमोऽध्यायः॥

॥ श्रीमद्भागवते महापुराणे सप्तमस्कन्धे नवमोऽध्यायः ॥

श्रीनारद उवाच

एवं सुरादयः सर्वे ब्रह्मरुद्रपुरः सराः।
नोपैतुमशकन्मन्यु संरम्भं सुदुरासदम्॥१॥

साक्षात्श्रीः प्रेषिता देवैर्दृष्ट्वा तं महद्भुतम्।
अदृष्टाश्रुतपूर्वत्वात्सा नोपेयाय शङ्किता॥२॥

प्रह्लादं प्रेषयामास ब्रह्मावस्थितमन्तिके।
तात प्रशमयोपेहि स्वपित्रे कुपितं प्रभुम्॥३॥

तथेति शनकै राजन्महाभागवतोऽर्भकः।
उपेत्य भुवि कायेन ननाम विधृताञ्जलिः॥४॥

स्वपादमूले पतितं तमर्भकं विलोक्य देवः कृपया परिप्लुतः।
उत्थाप्य तच्छीर्ष्यदधात्कराम्बुजं कालाहिवित्रस्तधियां कृताभयम्॥५॥

स तत्करस्पर्शधुताखिलाशुभः सपद्यभिव्यक्तपरात्मदर्शनः।
तत्पादपद्मं हृदि निर्वृतो दधौ हृष्यत्तनुः क्लिन्नहृदश्रुलोचनः॥६॥

अस्तौषीद्धरिमेकाग्र मनसा सुसमाहितः।
प्रेमगद्गदया वाचा तन्व्यस्तहृदयेक्षणः॥७॥

श्रीप्रह्लाद उवाच

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः
सत्त्वैकतानगतयो वचसां प्रवाहैः।
नाराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः
किं तोष्टुमर्हति स मे हरिरुग्रजातेः॥८॥

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौजस्
 तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः ।
 नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो
 भक्त्या तुतोष भगवान्नाजयूथपाय॥९॥

विप्राद्विषङ्गुणयुतादरविन्दनाभ
 पादारविन्दविमुखात्श्वपचं वरिष्ठम्।
 मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थ
 प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः॥१०॥

नैवात्मनः प्रभुरयं निजलाभपूर्णो
 मानं जनादविदुषः करुणो वृणीते।
 यद्यञ्जनो भगवते विदधीत मानं
 तच्चात्मने प्रतिमुखस्य यथा मुखश्रीः॥११॥

तस्मादहं विगतविक्लव ईश्वरस्य
 सर्वात्मना महि गृणामि यथा मनीषम्।
 नीचोऽजया गुणविसर्गमनुप्रविष्टः
 पूयेत येन हि पुमाननुवर्णितेन॥१२॥

सर्वे ह्यमी विधिकरास्तव सत्त्वधाम्नो
 ब्रह्मादयो वयमिवेश न चोद्विजन्तः।
 क्षेमाय भूतय उतात्मसुखाय चास्य
 विक्रीडितं भगवतो रुचिरावतारैः॥१३॥

तद्यच्छ मन्युमसुरश्च हतस्त्वयाद्य
 मोदेत साधुरपि वृश्चिकसर्पहत्या।
 लोकाश्च निर्वृतिमिताः प्रतियन्ति सर्वे
 रूपं नृसिंह विभयाय जनाः स्मरन्ति॥१४॥

नाहं बिभेम्यजित तेऽतिभयानकास्य
जिह्वार्कनेत्रभ्रुकुटीरभसोग्रदंष्ट्रात् ।
आत्रस्रजःक्षतजकेशरशङ्कुकर्णान्
निर्हादभीतदिगिभादरिभिन्नखाग्रात्॥१५॥

त्रस्तोऽस्म्यहं कृपणवत्सल दुःसहोग्र
संसारचक्रकदनाद्भ्रसतां प्रणीतः।
बद्धः स्वकर्मभिरुशत्तम तेऽङ्घ्रिमूलं
प्रीतोऽपवर्गशरणं ह्वयसे कदा नु॥१६॥

यस्मात्प्रियाप्रियवियोगसंयोगजन्म
शोकाग्निना सकलयोनिषु दह्यमानः।
दुःखौषधं तदपि दुःखमतद्वियाहं
भूमन्भ्रमामि वद मे तव दास्ययोगम्॥१७॥

सोऽहं प्रियस्य सुहृदः परदेवताया
लीलाकथास्तव नृसिंह विरिञ्चगीताः।
अञ्जस्तितर्म्यनुगृणन्गुणविप्रमुक्तो
दुर्गाणि ते पदयुगालयहंससङ्गः॥१८॥

बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह
नार्तस्य चागदमुदन्वति मञ्जतो नौः।
तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्टस्
तावद्विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्॥१९॥

यस्मिन्यतो यर्हि येन च यस्य यस्माद्
यस्मै यथा यदुत यस्त्वपरः परो वा।
भावः करोति विकरोति पृथक्स्वभावः
सञ्चोदितस्तदखिलं भवतः स्वरूपम्॥२०॥

माया मनः सृजति कर्ममयं बलीयः
 कालेन चोदितगुणानुमतेन पुंसः।
 छन्दोमयं यदजयार्पितषोडशारं
 संसारचक्रमज कोऽतितरेत्त्वदन्यः॥२१॥

स त्वं हि नित्यविजितात्मगुणः स्वधाम्ना
 कालो वशीकृतविसृज्यविसर्गशक्तिः।
 चक्रे विसृष्टमजयेश्वर षोडशारे
 निष्पीड्यमानमुपकर्ष विभो प्रपन्नम्॥२२॥

दृष्टा मया दिवि विभोऽखिलधिष्यपानाम्
 आयुः श्रियो विभव इच्छति याञ्जनोऽयम्।
 येऽस्मत्पितुः कुपितहासविजृम्भितभू
 विस्फूर्जितेन लुलिताः स तु ते निरस्तः॥२३॥

तस्मादमूस्तनुभृतामहमाशिषोऽङ्ग
 आयुः श्रियं विभवमैन्द्रियमाविरिञ्चात्।
 नेच्छामि ते विलुलितानुरुविक्रमेण
 कालात्मनोपनय मां निजभृत्यपार्श्वम्॥२४॥

कुत्राशिषः श्रुतिसुखा मृगतृष्णिरूपाः
 क्केदं कलेवरमशेषरुजां विरोहः।
 निर्विद्यते न तु जनो यदपीति विद्वान्
 कामानलं मधुलवैः शमयन्दुरापैः॥२५॥

क्वाहं रजःप्रभव ईश तमोऽधिकेऽस्मिन्
 जातः सुरेतरकुले क्व तवानुकम्पा।
 न ब्रह्मणो न तु भवस्य न वै रमाया
 यन्मेऽर्पितः शिरसि पद्मकरः प्रसादः॥२६॥

नैषा परावरमतिर्भवतो ननु स्याज्
जन्तोर्यथात्मसुहृदो जगतस्तथापि।
संसेवया सुरतरोरिव ते प्रसादः
सेवानुरूपमुदयो न परावरत्वम्॥२७॥

एवं जनं निपतितं प्रभवाहिकूपे
कामाभिकाममनु यः प्रपतन्प्रसङ्गात्।
कृत्वात्मसात्सुरर्षिणा भगवन्गृहीतः
सोऽहं कथं नु विसृजे तव भृत्यसेवाम्॥२८॥

मत्प्राणरक्षणमनन्त पितुर्वधश्च
मन्ये स्वभृत्यऋषिवाक्यमृतं विधातुम्।
खड्गं प्रगृह्य यदवोचदसद्विधित्सुस्
त्वामीश्वरो मदपरोऽवतु कं हरामि॥२९॥

एकस्त्वमेव जगदेतममुष्य यत्त्वम्
आद्यन्तयोः पृथगवस्यसि मध्यतश्च।
सृष्ट्वा गुणव्यतिकरं निजमाययेदं
नानेव तैरवसितस्तदनुप्रविष्टः॥३०॥

त्वम्वा इदं सदसदीश भवांस्ततोऽन्यो
माया यदात्मपरबुद्धिरियं ह्यपार्था।
यद्यस्य जन्म निधनं स्थितिरीक्षणं च
तद्वैतदेव वसुकालवदष्टितर्वोः॥३१॥

न्यस्येदमात्मनि जगद्विलयाम्बुमध्ये
शेषेत्मना निजसुखानुभवो निरीहः।
योगेन मीलितदृगात्मनिपीतनिद्रस्
तुर्ये स्थितो न तु तमो न गुणांश्च युङ्क्ते॥३२॥

तस्यैव ते वपुरिदं निजकालशक्त्या
 सञ्चोदितप्रकृतिधर्मण आत्मगूढम्।
 अम्भस्यनन्तशयनाद्विरमत्समाधेर्
 नाभेरभूत्स्वकणिकावटवन्महाजम्॥३३॥

तत्सम्भवः कविरतोऽन्यदपश्यमानस्
 त्वां बीजमात्मनि ततं स बहिर्विचिन्त्य।
 नाविन्ददब्दशतमप्सु निमज्जमानो
 जातेऽङ्कुरे कथमुहोपलभेत बीजम्॥३४॥

स त्वात्मयोनिरतिविस्मित आश्रितोऽञ्जं
 कालेन तीव्रतपसा परिशुद्धभावः।
 त्वामात्मनीश भुवि गन्धमिवासूक्ष्मं
 भूतेन्द्रियाशयमये विततं ददर्श॥३५॥

एवं सहस्रवदनाङ्घ्रिशिरःकरोरु
 नासाद्यकर्णनयनाभरणायुधाढ्यम्।
 मायामयं सदुपलक्षितसन्निवेशं
 दृष्ट्वा महापुरुषमाप मुदं विरिञ्चः॥३६॥

तस्मै भवान्हयशिरस्तनुवं हि बिभ्रद्
 वेदद्रुहावतिबलौ मधुकैटभाख्यौ।
 हत्वानयच्छ्रुतिगणांश्च रजस्तमश्च
 सत्त्वं तव प्रियतमां तनुमामनन्ति॥३७॥

इत्थं नृतिर्यगृषिदेवझषावतारैर्
 लोकान्विभावयसि हंसि जगत्प्रतीपान्।
 धर्मं महापुरुष पासि युगानुवृत्तं
 छन्नः कलौ यदभवस्त्रियुगोऽथ स त्वम्॥३८॥

नैतन्मनस्तव कथासु विकुण्ठनाथ
सम्प्रीयते दुरितदुष्टमसाधु तीव्रम्।
कामातुरं हर्षशोकभयैषणार्तं
तस्मिन्कथं तव गतिं विमृशामि दीनः॥३९॥

जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृसा
शिश्रोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित्।
घ्राणोऽन्यतश्चपलदृक्क च कर्मशक्तिर्
बह्व्यः सपत्न्य इव गेहपतिं लुनन्ति॥४०॥

एवं स्वकर्मपतितं भववैतरण्याम्
अन्योन्यजन्ममरणाशनभीतभीतम्।
पश्यञ्जनं स्वपरविग्रहवैरमैत्रं
हन्तेति पारचर पीपृहि मूढमद्य॥४१॥

को न्वत्र तेऽखिलगुरो भगवन्प्रयास
उत्तारणेऽस्य भवसम्भवलोपहेतोः।
मूढेषु वै महदनुग्रह आर्तबन्धो
किं तेन ते प्रियजनाननुसेवतां नः॥४२॥

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्यास्
त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः ।
शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ
मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान्॥४३॥

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः।
नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको
नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये॥४४॥

यन्मैथुनादिगृहमेधिसुखं हि तुच्छं
 कण्डूयनेन करयोरिव दुःखदुःखम्।
 तृप्यन्ति नेह कृपणा बहुदुःखभाजः
 कण्डूतिवन्मनसिजं विषहेत धीरः॥४५॥

मौनव्रतश्रुततपोऽध्ययनस्वधर्म
 व्याख्यारहोजपसमाधय आपवर्ग्याः।
 प्रायः परं पुरुष ते त्वजितेन्द्रियाणां
 वार्ता भवन्त्युत न वात्र तु दाम्भिकानाम्॥४६॥

रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे
 बीजाङ्कुराविव न चान्यदरूपकस्य।
 युक्ताः समक्षमुभयत्र विचक्षन्ते त्वां
 योगेन वह्निमिव दारुषु नान्यतः स्यात्॥४७॥

त्वं वायुरग्निरवनिर्वियदम्बु मात्राः
 प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदनुग्रहश्च।
 सर्वं त्वमेव सगुणो विगुणश्च भूमन्
 नान्यत्त्वदस्त्यपि मनोवचसा निरुक्तम्॥४८॥

नैते गुणा न गुणिनो महदादयो ये
 सर्वे मनः प्रभृतयः सहदेवमर्त्याः।
 आद्यन्तवन्त उरुगाय विदन्ति हि त्वाम्
 एवं विमृश्य सुधियो विरमन्ति शब्दात्॥४९॥

तत्तेऽर्हत्तम नमः स्तुतिकर्मपूजाः
 कर्म स्मृतिश्चरणयोः श्रवणं कथायाम्।
 संसेवया त्वयि विनेति षडङ्गया किं
 भक्तिं जनः परमहंसगतौ लभेत॥५०॥

श्रीनारद उवाच

एतावद्वर्णितगुणो भक्त्या भक्तेन निर्गुणः।
प्रह्लादं प्रणतं प्रीतो यतमन्युरभाषत॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रह्लाद भद्र भद्रं ते प्रीतोऽहं तेऽसुरोत्तम।
वरं वृणीष्वभिमतं कामपूरोऽस्म्यहं नृणाम्॥५२॥

मामप्रीणत आयुष्मन्दर्शनं दुर्लभं हि मे।
दृष्ट्वा मां न पुनर्जन्तुरात्मानं तप्तुमर्हति॥५३॥

प्रीणन्ति ह्यथ मां धीराः सर्वभावेन साधवः।
श्रेयस्कामा महाभाग सर्वासामाशिषां पतिम्॥५४॥

श्रीनारद उवाच

एवं प्रलोभ्यमानोऽपि वरैर्लोकप्रलोभनैः।
एकान्तित्वाद्भगवति नैच्छत्तानसुरोत्तमः॥५५॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां सप्तमस्कन्धे
नवमोऽध्यायः॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्
नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

हिरण्याक्षवधार्थाय भूभारोत्तरणाय च।
परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मी-नृहरे स्वयम्॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहाय नमः इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः

श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-जयन्ती-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
महाविष्णुपूजायां यद्वेयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं

श्री-लक्ष्मी-नृसिंह-प्रीतिं कामयमानः

मनसोद्विष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।

न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

मद्वंशे ये नरा जाता ये जनिष्यन्ति चापरे।

तांस्त्वमुद्धर देवेश दुःसहाद्भवसागरात्॥

पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवारिभिः।

तीव्रैश्च परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे॥

करावलम्बनं देहि शेषशायिन् जगत्पते।

श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन॥

क्षीराब्धिनिवासिन् त्वं चक्रपाणे जनार्दन।

व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-लक्ष्मी-नृसिंहं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

अनया पूजया श्री-लक्ष्मी-नृसिंहः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

सालग्रामशिलावारि पापहारि शरीरिणाम्।
आजन्मकृतपापानां प्रायश्चित्तं दिने दिने॥

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिनिवारणम्।
सर्वपापक्षयकरं विष्णुपादोदकं शुभम्॥
इति तीर्थं पीत्वा शिरसि प्रसादं धारयेत्।



॥ नृसिंह-जयन्ती-व्रत-कथा ॥

सूत उवाच

हिरण्यकशिपुं हत्वा देवदेवं जगद्गुरुम्।
सुखासीनं च नृहरिं शान्तकोपं रमापतिम्॥१॥

प्रह्लादो ज्ञानिनां श्रेष्ठः पालयन् राज्यमुत्तमम्।
एकाकी च तदुत्सङ्गे प्रियं वचनमब्रवीत्॥२॥

प्रह्लाद उवाच

नमस्ते भगवन्विष्णो नृसिंहरूपिणे नमः।
 त्वद्भक्तोऽहं सुरेशैकं त्वां पृच्छामि तु तत्त्वतः॥३॥
 स्वामिस्त्वार्य ममाभिन्ना भक्तिर्जाता त्वनेकधा।
 कथं च ते प्रियो जातः कारणं मे वद प्रभो॥४॥

नृसिंह उवाच

कथयामि महाप्राज्ञ शृणुष्वैकाग्रमानसः।
 भर्तेर्यत्कारणं वत्स प्रियत्वस्य च कारणम्॥५॥
 पुरा काले ह्यभूद् विप्रः किञ्चित्त्वं नाप्यधीतवान्।
 नाना त्वं वासुदेवो हि वेश्यासंसक्तमानसः॥६॥
 तस्मिञ्जातु न चैव त्वं चकर्त्त सुकृतं कियत्।
 कृतवान्मद्व्रतं चैकं वेश्यासङ्गतिलालसः॥७॥

मद्व्रतस्य प्रभावेण भक्तिर्जाता तवानघ।

प्रह्लाद उवाच

श्रीनृसिंहोच्यतां तावत्कस्य पुत्रश्च किं व्रतम्॥८॥
 वेश्यायां वर्तमानेन कथं तच्च कृतं मया।
 येन त्वत्प्रीतिमापन्नो वक्तुमर्हसि साम्प्रतम्॥९॥

नृसिंह उवाच

पुराऽवन्तीपुरे ह्यासीद्राह्मणो वेदपारगः।
 तस्य नाम सुशर्मेति बहुलोकेषु विश्रुतः॥१०॥
 नित्यहोमक्रियां चैव विदधाति द्विजोत्तमः।
 ब्राह्मक्रियासु नियतं सर्वासु किल तत्परः॥११॥

अग्निष्टोमादिभिर्यज्ञैरिष्टाः सर्वे सुरोत्तमाः।
 तस्य भार्या सुशीलाभूद्विख्याता भुवनत्रये॥१२॥
 पतिव्रता सदाचारा पतिभक्तिपरायणा।
 जज्ञिरेस्या सुताः पञ्च तस्माद्विजवरात्तथा॥१३॥
 सदाचारेषु विद्वांसः पितृभक्तिपरायणाः।
 तेषां मध्ये कनिष्ठस्त्वं वेश्यासङ्गतितत्परः॥१४॥
 तया निषेध्यमानेन सुरापानं त्वया कृतम्।
 सुवर्णं चाप्यपहृतं चौरैः सार्धं त्वया बहु॥१५॥
 विलासिन्या समं चैव त्वया चीर्णमघं बहु।
 एकदा सद्गृहे चाऽऽसीन्म मन्कलिस्त्वया सह॥१६॥
 तेन कलहभावेन व्रतमेतत्त्वया कृतम्।
 अज्ञानान्मद्वतं जातं व्रतानामुत्तमं हि तत्॥१७॥
 तस्यां विहारयोगेन रात्रौ जागरणं कृतम्।
 वेश्याया वल्लभं किञ्चित्प्रजातं न त्वया सह॥१८॥
 रात्रौ जागरणं चीर्णं त्यक्तं भोग्यमनेकधा।
 व्रतेनानेन चीर्णेन मोदन्ति दिवि देवताः॥१९॥
 सृष्ट्यर्थं च पुरा ब्रह्मा चक्रे ह्येतदनुत्तमम्।
 मद्रतस्य प्रभावेण निर्मितं सचराचरम्॥२०॥
 ईश्वरेण पुरा चीर्णं वधार्थं त्रिपुरस्य च।
 माहात्म्येन व्रतस्याऽऽशु त्रिपुरस्तु निपातितः॥२१॥
 अन्यश्च बहुभिर्देवैर्ऋषिभिश्च पुराऽनघ।
 राजभिश्च महाप्राज्ञैर्विदितं व्रतमुत्तमम्॥२२॥

एतद्व्रतप्रभावेण सर्वे सिद्धिमुपागताः।
वेश्याऽपि मत्प्रिया जाता त्रैलोक्ये सुखचारिणी॥२३॥

ईदृशं मद्व्रतं वत्स त्रैलोक्ये तु सुविश्रुतम्।
कलहेन विलासिन्या व्रतमेतदुपस्थितम्॥२४॥

प्रह्लाद तेन ते भक्तिर्मयि जाता ह्यनुत्तमा।
धूर्तया च विलासिन्या ज्ञात्वा व्रतदिनं मम॥२५॥

कलहश्च कृतो येन मद्व्रतं च कृतं भवेत्।
सा वेश्या त्वप्सरा जाता भुक्त्वा भोगाननेकशः॥२६॥

मुक्ता कर्मविलीना तु त्वं प्रसाद विशस्व माम्।
कार्यार्थं च भवानास्ते मच्छरीरपृथक्तया॥२७॥

विधाय सर्वकार्याणि शीघ्रं चैव गमिष्यसि।
इदं व्रतमवश्यं ये प्रकरिष्यन्ति मानवाः॥२८॥

न तेषां पुनरावृत्तिर्मत्तः कल्पशतैरपि।
अपुत्रो लभते पुत्रान्मद्व्रतश्च सुवर्चसः॥२९॥

दरिद्रो लभते लक्ष्मीं धनदस्य च यादृशी।
तेजःकामो लभतेजो राज्येच्छू राज्यमुत्तमम्॥३०॥

आयुःकामो लभेदायुर्यादृशं च शिवस्य हि।
स्त्रीणां व्रतमिदं साधुपुत्रदं भाग्यदं तथा॥३१॥

अवैधव्यकरं तासां पुत्रशोकविनाशनम्।
धनधान्यकरं चैव जातिश्रेष्ठ्यकरं शुभम्॥३२॥

सार्वभौमसुखं तासां दिव्यं सौख्यं भवेत्ततः।
स्त्रियो वा पुरुषाश्चापि कुर्वन्ति व्रतमुत्तमम्॥३३॥

तेभ्योऽहं प्रददे सौख्यं भुक्तिमुक्ति-समन्वितम्।
बहुनोक्तेन किं वत्स व्रतस्यास्य फलं महत्॥३४॥

मद्व्रतस्य फलं वक्तुं नाहं शक्तो न शङ्करः।
ब्रह्मा चतुर्भिर्वक्त्रैश्च न लभेन्महिमावधिम्॥३५॥

प्रह्लाद उवाच

भगवंस्त्वत्प्रसादेन श्रुतं व्रतमनुत्तमम्।
व्रतस्यास्य फलं साधु त्वयि मे भक्तिकारणम्॥३६॥

स्वामिञ्जातं विशेषण त्वत्तः पापनिकृन्तनम्।
अधुना श्रोतुमिच्छामि व्रतस्यास्य विधिं परम्॥३७॥

कस्मिन्मासे भवेदेतत्कस्मिन्वा तिथिवासरे।
एतद्विस्तरतो देव वक्तुमर्हसि साम्प्रतम्॥३८॥

विधिना येन वै स्वामिन् समग्रफलभुग्भवेत्।
ममोपरि कृपां कृत्वा ब्रूहि त्वं सकलं प्रभो॥३९॥

नृसिंह उवाच

साधु साधु महाभाग व्रतस्यास्य विधिं परम्।
सर्वं कथयतो मेऽद्य त्वमेकाग्रमनाः शृणु॥४०॥

वैशाखशुक्लपक्षे तु चतुर्दश्यां समाचरेत्।
मञ्जन्मसम्भवं पुण्यं व्रतं पापप्रणाशनम्॥४१॥

वर्षे वर्षे तु कर्तव्यं मम सन्तुष्टिकारकम्।
महापुण्यमिदं श्रेष्ठं मानुषैर्भवभीरुभिः॥४२॥

तेनैव क्रियमाणेन सहस्रद्वादशीफलम्।
जायते तद्व्रते वच्मि मानुषाणां महात्मनाम्॥४३॥

स्वाती नक्षत्रयोगेन शनिवारेण संयुते।
सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा॥४४॥

पुण्यसौभाग्ययोगेन लभ्यते दैवयोगतः।
सर्वैरैतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशनम्॥४५॥

एतदन्यतरे योगे तद्दिनं पापनाशनम्।
केवलेऽपि च कर्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम्॥४६॥

अन्यथा नरकं याति यावच्चन्द्रदिवाकरौ।
यथा यथा प्रवृत्तिः स्यात्पातकस्य कलौ युगे॥४७॥

तथा तथा प्रणश्यन्ति सर्वे धर्मा न संशयः।
एतद्व्रतप्रभावेण मद्भक्तिः स्यादुरात्मनाम्॥४८॥

विचार्येत्थं प्रकर्तव्यं माधवे मासि तद्व्रतम्।
नियमश्च प्रकर्तव्यो दन्तधावनपूर्वकम्॥४९॥

श्रीनृसिंह महोग्रस्त्वं दयां कृत्वा ममोपरि।
अद्याहं ते विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नय॥५०॥

इति नियममन्त्रः।

व्रतस्थेन न कर्तव्या सङ्गतिः पापिभिः सह।
मिथ्यालापो न कर्तव्यः समग्रफलकाङ्क्षिणा॥५१॥

स्त्रीभिर्दुष्टैश्च आलापान् व्रतस्थो नैव कारयेत्।
स्मर्तव्यं च महारूपं मद्दिने सकलं शुभे॥५२॥

ततो मध्याह्नवेलायां नद्यादौ विमले जले।
गृहे वा देवखाते वा तडागे विमले शुभे॥५३॥

वैदिकेन च मन्त्रेण स्नानं कृत्वा विचक्षणः।
मृत्तिकागोमयेनैव तथा धात्रीफलेन च॥५४॥

तिलैश्च सर्वपापघ्नः स्नानं कृत्वा महात्मभिः।
परिधाय शुचिर्वासो नित्यकर्म समाचरेत्॥५५॥

ततो गृहं समागत्य स्मरन् मां भक्तियोगतः।
गोमयेन प्रलिप्याथ कुर्यादष्टदलं शुभम्॥५६॥

कलशं तत्र संस्थाप्य ताम्रं रत्नसमन्वितम्।
तस्योपरि न्यसेत् पात्रं वंशजं व्रीहिपूरितम्॥५७॥

हैमी तत्र च मन्मूर्तिः स्थाप्या लक्ष्म्यास्तथैव च।
पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥५८॥

यथाशक्त्याऽथवा कार्या वित्तशाठ्यविवर्जितैः।
पञ्चामृतेन संस्नाप्य पूजनं तु समाचरेत्॥५९॥

ततो ब्राह्मणमाहूय तमाचार्यमलोलुपम्।
सदाचारसमायुक्तं शान्तं दान्तं जितेन्द्रियम्॥६०॥

आचार्यवचनाद्धीमान् पूजां कुर्याद्यथाविधि।
मण्डपं कारयेत्तत्र पुष्पस्तवकशोभितम्॥६१॥

ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैः पूजयेत्स्वस्थमानसः।
उपचारः षोडशभिर्मन्त्रैर्वेदोद्भवैस्तथा।
शुभैः पौराणिकैर्मन्त्रैः पूजनीयो यथाविधि॥६२॥

चन्दनं शीतलं दिव्यं चन्द्रकुङ्कुममिश्रितम्।
ददामि तव तुष्ट्यर्थं नृसिंह परमेश्वर॥६३॥

इति चन्दनम्।

कालोद्भवानि पुष्पाणि तुलस्यादीनि वै प्रभो।
सम्यक् गृहाण देवेश लक्ष्म्या सह नमोऽस्तु ते॥६४॥

इति पुष्पाणि।

कृष्णागुरुमयं धूपं श्रीनृसिंह जगत्पते।
तव तुष्ट्यै प्रदास्यामि सर्वदेव नमोऽस्तु ते॥६५॥

इति धूपम्।

सर्वतेजोद्धवं तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते।
श्रीनृसिंह महाबाहो तिमिरं मे विनाशय॥६६॥

इति दीपम्।

नैवेद्यं सौख्यदं चारु भक्ष्यभोज्यसमन्वितम्।
ददामि ते रमाकान्त सर्वपापक्षयं कुरु॥६७॥

इति नैवेद्यम्।

नृसिंहाच्युत देवेश लक्ष्मीकान्त जगत्पते।
अनेनार्घ्यप्रदानेन सफलाः स्युर्मनोरथाः॥६८॥

इति अर्घ्यम्।

पीताम्बर महाबाहो प्रह्लादभयनाशन।
यथाभूतेनार्चनेन यथोक्तफलदो भव॥६९॥

इति प्रार्थना॥

रात्रौ जागरणं कार्यं गीतवादित्रनिःस्वनैः।
पुराणश्रवणाद्यैश्च श्रोतव्याश्च कथाः शुभाः॥७०॥

ततः प्रभातसमये स्नानं कृत्वा जितेन्द्रियः।
पूर्वोक्तेन विधानेन पूजयेन्मां प्रयत्नतः॥७१॥

वैष्णवान्प्रजपेन्मन्त्रान् मदग्रे स्वस्थमानसः।
ततो दानानि देयानि वक्ष्यमाणानि चानघ॥७२॥

पात्रेभ्यस्तु द्विजेभ्यो हि लोकद्वयजिगीषया।
सिंहः स्वर्णमयो देयो मम सन्तोषकारकः॥७३॥

गोभूतिलहिरण्यानि दयानि च फलेप्सुभिः।
शय्या सतूलिका देया सप्तधान्यसमन्विता॥७४॥

अन्यानि च यथाशक्त्या देयानि मम तुष्टये।
वित्तशाठ्यं न कुर्वीत यथोक्तफलकाङ्क्षया॥७५॥

ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्।
निर्धनेनापि कर्तव्यं देयं शक्त्यनुसारतः॥७६॥

सर्वेषामेव वर्णानामधिकारोऽस्ति मद्भूते।
मद्भक्तैस्तु विशेषेण कर्तव्यं मत्परायणैः॥७७॥

तद्वंशे न भवेद्दुःखं न दोषो मत्प्रसादतः।
मद्वंशे ये नरा जाता ये निष्पत्तिपरायणाः॥७८॥

तान् समुद्धर देवेश दुस्तराद्भवसागरात्।
पातकार्णवमग्नस्य व्याधिदुःखाम्बुवासिभिः॥७९॥

जीवैस्तु परिभूतस्य मोहदुःखगतस्य मे।
करावलम्बनं देहि शेषशायिञ्जगत्पते॥८०॥

श्रीनृसिंह रमाकान्त भक्तानां भयनाशन।
क्षीराम्बुनिधिवासिंस्त्वं चक्रपाणे जनार्दन॥८१॥

व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव।
एवं प्रार्थ्य ततो देवं विसृज्य च यथाविधि॥८२॥

उपहारादिकं सर्वमाचार्याय निवेदयेत्।
दक्षिणाभिस्तु सन्तोष्य ब्राह्मणांस्तु विसर्जयेत्।
मध्याह्ने तु सुसंयतो भुञ्जीत सह बन्धुभिः॥८३॥

य इदं शृणुयाद्भक्त्या व्रतं पापप्रणाशनम्।
तस्य श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्या व्यपोहति॥८४॥

पवित्रं परमं गुह्यं कीर्तयेद्यस्तु मानवः।
सर्वान् कामानवाप्नोति व्रतस्यास्य फलं लभेत्॥८५॥

इति हेमाद्रौ नृसिंहपुराणे नृसिंहचतुर्दशीव्रतकथा समाप्ता॥



॥ श्री-वरमहालक्ष्मी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{१३} नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कटक/सिंह)-
श्रावण-मासे शुक्लपक्षे () शुभतिथौ भृगुवासरयुक्तायाम् ()^{१४}
नक्षत्र ()^{१५} नाम योग ()^{१६} करण युक्तायां च एवं गुण
विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं आयुष्मत्सत्सन्तानसमृद्ध्यर्थं
दीर्घसौमङ्गल्यावाप्त्यर्थं श्रीवरमहालक्ष्मी-प्रसादसिद्ध्यर्थं यथाशक्ति-ध्यानावाहनादि
श्रीवरमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
च।

^{१३}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{१४}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{१५}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

^{१६}पृष्ठं १२९ पश्यताम्

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

पद्मासनां पद्मकरां पद्ममालाविभूषिताम्।
क्षीरसागरसम्भूतां हेमवर्णसमप्रभाम्॥
क्षीरवर्गसमं वस्त्रं दधानां हरिवल्लभाम्।
भावये भक्तियोगेन कलशेऽस्मिन् मनोहरे॥

अस्मिन् कुम्भे (प्रतिमायां) श्री-वरलक्ष्मीं ध्यायामि।

बालभानुप्रतीकाशे पूर्णचन्द्रनिभानने।
सूत्रेऽस्मिन् सुस्थिरा भूत्वा प्रयच्छ बहुलान् वरान्॥

इति दोरस्थापनम्।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये विष्णुवक्षस्थलालये।
आवाहयामि देवि त्वामभीष्टफलदा भव॥

श्री-वरलक्ष्मीमावाहयामि।

अनेकरत्नखचितं क्षीरसागरसम्भवे।
स्वर्णसिंहासनं देवि स्वीकुरुष्व हरिप्रिये॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आसनं समर्पयामि।

गङ्गादिसरिदानीतं गन्धपुष्पसमन्वितम्।
पाद्यं ददामि ते देवि प्रसीद परमेश्वरि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

गङ्गानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं पुत्रपौत्रफलप्रदे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

प्रसन्नं शीतलं तोयं प्रसन्नमुखपङ्कजे।
गृहाणाचमनार्थाय गरुडध्वजवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आचमनं समर्पयामि।

महालक्ष्मि महादेवि मध्वाज्यदधिसंयुतम्।
मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदधिघृतैर्युक्तं शर्करामधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पञ्चामृतं समर्पयामि।

हेमकुम्भस्थितं स्वच्छं गङ्गादिसरिदाहृतम्।
स्नानार्थं सलिलं देवि गृह्यतां सागरात्मजे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः स्नानं समर्पयामि।

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
वरलक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि।

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ता-विद्रुमसंयुतम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नताटङ्ककेयूरहारकङ्कणभूषिते ।
भूषणानि महार्हाणि गृहाण करुणानिधे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः आभरणानि समर्पयामि।

कर्पूरचन्दनोपेतं कस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्।
सर्वगन्धं गृहाणाद्य सर्वमङ्गलदायिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः गन्धान् धारयामि।

शालिजातान् चन्द्रवर्णान् स्निग्धमौक्तिकसन्निभान्।
अक्षतान् देवि गृह्णीष्व पङ्कजाक्षस्य वल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दारपारिजाताञ्जैः केतक्युत्पलपाटलैः।
मल्लिकाजातिवकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पुष्पमालां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. वरलक्ष्म्यै नमः — पादौ पूजयामि
२. महालक्ष्म्यै नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. इन्दिरायै नमः — जङ्घे पूजयामि
४. चण्डिकायै नमः — जानुनी पूजयामि
५. क्षीराब्धितनयायै नमः — ऊरू पूजयामि
६. पीताम्बरधारिण्यै नमः — कटिं पूजयामि

७. सागरसम्भवायै नमः — गुह्यं पूजयामि
 ८. नारायणप्रियायै नमः — नाभिं पूजयामि
 ९. जगत्कुक्ष्यै नमः — कुक्षिं पूजयामि
 १०. विश्वजनन्यै नमः — वक्षः पूजयामि
 ११. सुस्तन्यै नमः — स्तनौ पूजयामि
 १२. कम्बुकण्ठ्यै नमः — कण्ठं पूजयामि
 १३. सुन्दर्यै नमः — स्कन्धौ पूजयामि
 १४. पद्महस्तायै नमः — हस्तान् पूजयामि
 १५. बहुप्रदायै नमः — बाहून् पूजयामि
 १६. चन्द्रवदनायै नमः — वक्त्रं पूजयामि
 १७. चञ्चलायै नमः — चुबुकं पूजयामि
 १८. बिम्बोष्ठ्यै नमः — ओष्ठं पूजयामि
 १९. अनघायै नमः — अधरं पूजयामि
 २०. सुकपोलायै नमः — कपोलौ पूजयामि
 २१. फलप्रदायै नमः — फालम् पूजयामि
 २२. नीलालकायै नमः — अलकान् पूजयामि
 २३. शिवायै नमः — शिरः पूजयामि
 २४. सर्वमङ्गलायै नमः — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि

॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. आदिलक्ष्म्यै नमः | ५. सन्तानलक्ष्म्यै नमः |
| २. धान्यलक्ष्म्यै नमः | ६. विजयलक्ष्म्यै नमः |
| ३. धैर्यलक्ष्म्यै नमः | ७. विद्यालक्ष्म्यै नमः |
| ४. गजलक्ष्म्यै नमः | ८. धनलक्ष्म्यै नमः |

१. वरलक्ष्म्यै नमः

१०. महालक्ष्म्यै नमः

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

प्रकृत्यै नमः

विकृत्यै नमः

विद्यायै नमः

सर्वभूतहितप्रदायै नमः

श्रद्धायै नमः

विभूत्यै नमः

सुरभ्यै नमः

परमात्मिकायै नमः

वाचे नमः

पद्मालयायै नमः

पद्मायै नमः

शुचये नमः

स्वाहायै नमः

स्वधायै नमः

सुधायै नमः

धन्यायै नमः

हिरण्मय्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

नित्यपुष्टायै नमः

विभावयै नमः

अदित्यै नमः

दित्यै नमः

दीप्तायै नमः

वसुधायै नमः

वसुधारिण्यै नमः

कमलायै नमः

कान्तायै नमः

क्षमायै नमः

क्षीरोदसम्भवायै नमः

अनुग्रहप्रदायै नमः

बुद्धये नमः

अनघायै नमः

हरिवल्लभायै नमः

अशोकायै नमः

अमृतायै नमः

दीप्तायै नमः

लोकशोकविनाशिन्यै नमः

धर्मनिलयायै नमः

करुणायै नमः

लोकमात्रे नमः

पद्मप्रियायै नमः

पद्महस्तायै नमः

१०

३०

२०

४०

| | | |
|---------------------|------------------------|----|
| पद्माक्ष्यै नमः | सत्यै नमः | |
| पद्मसुन्दर्यै नमः | विमलायै नमः | |
| पद्मोद्भवायै नमः | विश्वजनन्यै नमः | ७० |
| पद्ममुख्यै नमः | तुष्ट्यै नमः | |
| पद्मनाभप्रियायै नमः | दारिद्र्यनाशिन्यै नमः | |
| रमायै नमः | प्रीतिपुष्करिण्यै नमः | |
| पद्ममालाधरायै नमः | शान्तायै नमः | |
| देव्यै नमः | शुक्लमाल्याम्बरायै नमः | |
| पद्मिन्यै नमः | श्रियै नमः | |
| पद्मगन्धिन्यै नमः | भास्कर्यै नमः | |
| पुण्यगन्धायै नमः | बिल्वनिलयायै नमः | |
| सुप्रसन्नायै नमः | वरारोहायै नमः | |
| प्रसादाभिमुख्यै नमः | यशस्विन्यै नमः | ८० |
| प्रभायै नमः | वसुन्धरायै नमः | |
| चन्द्रवदनायै नमः | उदाराङ्गायै नमः | |
| चन्द्रायै नमः | हरिण्यै नमः | |
| चन्द्रसहोदर्यै नमः | हेममालिन्यै नमः | |
| चतुर्भुजायै नमः | धनधान्यकर्यै नमः | |
| चन्द्ररूपायै नमः | सिद्ध्यै नमः | |
| इन्दिरायै नमः | स्त्रैणसौम्यायै नमः | |
| इन्दुशीतलायै नमः | शुभप्रदायै नमः | |
| आह्लादजनन्यै नमः | नृपवेश्मगतानन्दायै नमः | |
| पुष्ट्यै नमः | वरलक्ष्म्यै नमः | ९० |
| शिवायै नमः | वसुप्रदायै नमः | |
| शिवकर्यै नमः | शुभायै नमः | |

हिरण्यप्राकारायै नमः

समुद्रतनयायै नमः

जयायै नमः

मङ्गलायै देव्यै नमः

विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः

विष्णुपत्न्यै नमः

प्रसन्नाक्ष्यै नमः

नारायणसमाश्रितायै नमः १००

दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः

देव्यै नमः

सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः

नवदुर्गायै नमः

महाकाल्यै नमः

ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः

त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः

भुवनेश्वर्यै नमः १०८

॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

धूपं ददामि ते रम्यं गुग्गुल्वगरुसंयुतम्।

गृहाण त्वं महालक्ष्मि भक्तानामिष्टदायिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः धूपमाग्रापयामि।

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं सर्वाभीष्टप्रदायिनि।

दीपं गृहाण कमले देहि मे सर्वमीप्सितम्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः अलङ्कार-दीपं सन्दर्शयामि।

नानाभक्ष्यसमायुक्तं नानाफलसमन्वितम्।

नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायणकुटुम्बिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि।

उशीरवासितं तोयं शीतलं शशिसोदरि।
पानाय गृह्यतां देवि पारावारतनूभवे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः पानीयं समर्पयामि।

पूगीफलं सकर्पूरं नागवल्लीदलानि च।
चूर्णं च चन्द्रसहजे गृह्यन्तां हरिवल्लभे॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं नीरजाक्षि नारायणविलासिनि ।
गृह्यतामर्पितं भक्त्या गरुडध्वजभामिनि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः कर्पूरनीराजनं सन्दर्शयामि कर्पूरनीराजनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेमं पुरुषोत्तमवल्लभे।
वरलक्ष्मि नमस्तुभ्यं वरान्देहि ममाखिलान्॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सर्वमङ्गललाभाय सर्वपापनिवृत्तये।
प्रदक्षिणं करोम्यद्य प्रसीद परमेश्वरि॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ।
नमोऽस्तु रत्नाकरसम्भवायै
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै जगतां जनन्यै॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः नमस्कारान् समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं पुत्रपौत्रान् पशून् धनम्।
 शत्रुक्षयं महालक्ष्मि प्रयच्छ करुणानिधे॥
 श्री-वरलक्ष्म्यै नमः प्रार्थनाः समर्पयामि।

॥ दोरग्रन्थि-पूजा ॥

कमलायै नमः — प्रथमग्रन्थिं पूजयामि।
 रमायै नमः — द्वितीयग्रन्थिं पूजयामि।
 लोकमात्रे नमः — तृतीयग्रन्थिं पूजयामि।
 विश्वजनन्यै नमः — चतुर्थग्रन्थिं पूजयामि।
 महालक्ष्म्यै नमः — पञ्चमग्रन्थिं पूजयामि।
 क्षीराब्धितनयायै नमः — षष्ठग्रन्थिं पूजयामि।
 विश्वसाक्षिण्यै नमः — सप्तमग्रन्थिं पूजयामि।
 हरिवल्लभायै नमः — अष्टमग्रन्थिं पूजयामि।
 चन्द्रसहोदर्यै नमः — नवमग्रन्थिं पूजयामि।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये सर्वपापप्रणाशिनि।
 दोरकं प्रतिगृह्णामि सुप्रीता भव सर्वदा॥

इति दोरकं हस्तेन गृहीत्वा।

करिष्यामि व्रतं देवि त्वद्भक्ता त्वत्परायणा।
 श्रियं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे शुभे॥

नवतन्तुसमायुक्तं नवग्रन्थिसमन्वितम्।
 बघ्नीयां दक्षिणे हस्ते दोरकं हरिवल्लभे॥

इति दोरकं बघ्नीयात्।

॥ अर्घ्यम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-वरलक्ष्मी-प्रीत्यर्थं वरलक्ष्मीपूजान्ते
क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

गोक्षीरेण युतं देवि गन्धपुष्पसमन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण वरदे वरलक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥

श्री-वरलक्ष्म्यै नमः इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

॥ उपायन-दानम् ॥

इन्दिरा प्रतिगृह्णाति इन्दिरा वै ददाति च।
इन्दिरा तारयेद् द्वाभ्यां इन्दिरायै नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्रीवरमहालक्ष्मीपूजाकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
श्रीवरमहालक्ष्मीपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं
श्रीवरमहालक्ष्मीप्रीतिं कामयमानः

मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्रीवरमहालक्ष्मीः प्रीयताम्।

इति उपायनं दत्त्वा सुवासिनीश्च सम्पूजयेत्॥

इति वरलक्ष्मीपूजाविधिः॥

॥ प्रार्थना ॥

दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके।
 नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥
 सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये।
 धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥
 यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
 न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

॥ कनकधारास्तवम् ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
 भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
 अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
 माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः॥१॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
 प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
 माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
 सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः॥२॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
 आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतत्रम् ।
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रम्
 भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः॥३॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
 हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
 कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः॥४॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
 धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
 मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
 भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः॥५॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
 माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
 मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धम्
 मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः॥६॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम्
 आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
 ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम्
 इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥७॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
 दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
 दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम्
 पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः॥८॥

दद्यादयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
 अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
 दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरम्
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥९॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
 शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
 सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै॥१०॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै॥११॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
 नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
 नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै॥१२॥

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
 नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
 नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
 नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै॥१३॥

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
 नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
 नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै॥१४॥

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
 नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै।
 नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
 नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै॥१५॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
 साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
 त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
 मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये॥१६॥

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः

सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।

सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः

त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे॥१७॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते

धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।

भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे

त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम्॥१८॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-

स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम्।

प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-

लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम्॥१९॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं

करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।

अवलोकय मामकिञ्चनानां

प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः॥२०॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहम्

त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।

गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो

भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः॥२१॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः

कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे।

दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं माम्

आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-
शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-कनकधारास्तवं सम्पूर्णम्॥

॥ महालक्ष्म्यष्टकम् ॥

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥३॥

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि।
मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥६॥

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥७॥

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम्।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम्।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा॥

॥ इति श्रीमद्भद्रपुराणे श्री-महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥
लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया।
स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥
कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
सर्वं तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ कथा ॥

सूत उवाच

कैलासशिखरे रम्ये सर्वदेवनिषेविते।
गौर्या सह महादेवो दीव्यन्नक्षैवनोदतः॥१॥
जितोऽसि त्वं मया चाऽऽह पार्वती परमेश्वरम्।
सोऽपि त्वं च जितेत्याह सुविवादस्तयोरभूत्॥२॥
चित्रनेमिस्तदा पृष्टो मृषावादमभाषत।
तदा कोपसमाविष्टा गौरी शापं ददौ ततः॥३॥

कुष्ठी भव मृषावादिन् चित्रनेमिर्हतप्रभः।
नानृतेन समं पापं क्वाऽपि दृष्टं श्रुतं मया॥४॥

चित्रनेमिर्महाप्राज्ञः सत्यं वदति नो मृषा।
प्रसादः क्रियतां देवि देवीमाह वृषध्वजः॥५॥

प्रसादसुमुखी तस्मै विशापं च जगाद सा।
यदा सरोवरे रम्ये करिष्यन्ति शुचिव्रतम्॥६॥

ततः स्वर्गणिकाः सर्वं यक्ष्यन्ति त्वां समाहिताः।
तदा तव विशापः स्यादित्युक्तः स पपात ह॥७॥

ततः कतिपयाहोभिश्चित्रनेमिः सरोवरे।
कुष्ठी भूत्वा वसंस्तत्र ददर्श स्वर्विलासिनीः॥८॥

देवतापूजनासक्ताः पप्रच्छ प्रणिपत्यताः।
किमेतद्भो महाभागाः किं पूजा किं च वाञ्छितम्॥९॥

किं मया च ह्यनुष्ठेयमिहामुत्र फलप्रदम्।
इति व्रतं चित्रनेमिः पप्रच्छ स्वर्विलासिनीः॥१०॥

येनाहे गिरिजाशापान्मोक्ष्यामि चिरदुःखतः।
ता ऊचुः क्रियतामद्य त्वया चैतदनुत्तमम्॥११॥

वरलक्ष्मीव्रतं दिव्यं सर्वकामसमृद्धिदम्।
यदा रवौ कुलीरस्थे मासे च श्रावणे तथा॥१२॥

गङ्गायमुनयोर्योगे तुङ्गभद्रासरित्तटे।
तस्मिन्वै श्रावणे मासि शुक्लपक्षे भृगोर्दिने॥१३॥

प्रारब्धव्यं व्रतं तत्र महालक्ष्म्या यतात्मभिः।
सुवर्णप्रतिमां कुर्याच्चतुर्भुजसमन्विताम्॥१४॥

पूर्व गृहमलङ्कृत्य तोरणै रङ्गवल्लिभिः।
 गृहस्य पूर्वदिग्भागे ईशान्यां च विशेषतः॥१५॥
 प्रस्थमितांस्तण्डुलांश्च भूमौ निक्षिप्य पद्मके।
 संस्थाप्य कलशं तत्र तीर्थतोयैः प्रपूरयेत्॥१६॥
 फलानि च विनिक्षिप्य सुवर्णं प्रक्षिपेत्ततः।
 पल्लवांश्च विनिक्षिप्य वस्त्रेणाच्छाद्य यत्नतः॥१७॥
 प्रतिमां स्थापयेत्तत्र पूजयेच्च यथाविधि।
 अग्न्युत्तारणपूर्वं तु शुद्धस्नानं यथाक्रमम्॥१८॥
 पश्चामृतेन स्नपनं कारयेन्मन्त्रतः सुधीः।
 अभिषेकं ततः कृत्वा देवीसूक्तेन वै ततः॥१९॥
 अष्टगन्धैः समभ्यर्च्य पल्लवैश्च समर्चयेत्।
 अश्वत्थवटबिल्वाम्रमालतीदाडिमास्तथा॥२०॥
 एतेषां पत्राण्यादाय एकविंशतिसङ्ख्यया।
 नामाविधैस्तथा पुष्पैर्मालत्यादिसमुद्भवैः॥२१॥
 धूपदीपैर्महालक्ष्मीं पूजयेत् सर्वकामदाम्।
 पायसैर्भक्ष्यभोज्यैश्च नानाव्यञ्जनसंयुतैः॥२२॥
 एकविंशतिसङ्ख्याकैरूपैः पूजयेच्छिवाम्।
 निवेद्य सर्वदेव्यै तु वरं स वृणुयात्ततः॥२३॥
 नृत्यगीतादिसहितो देवीं सम्प्रार्थयेच्छ्रियम्।
 रमां सरस्वतीं ध्यायेच्छचीं च प्रियवादिनीम्॥२४॥
 एवं व्रतविधिं तस्मै कथयित्वा विधानतः।
 पञ्चवायनकान् दत्त्वा कथां शृण्वीत यत्नतः॥२५॥
 तथा मौनं गृहीत्वा तु पश्चार्तिक्येन पूजयेत्।
 व्रतं च कुर्वता गृह्य एकं पूगफलं तथा॥२६॥

पर्णेकं चूर्णरहितं चर्वणीयं प्रयत्नतः।
चैलखण्डे दृढं बद्धा प्रातः पश्येद्विचक्षणः॥२७॥

आरक्तं यदि जायेत कुर्याद्व्रतमनुत्तमम्।
नोचेन्न तद्व्रतं कार्यं सर्वथा भूतिमिच्छता॥२८॥

अनेनैव विधानेन व्रतं गृहीत यत्नतः।
अप्सरोभिः कृतं सम्यग्व्रतं सर्वसमृद्धिदम्॥२९॥

पूजावसानपर्यन्तं चित्रनेमिरलोकयत्।
धूपधूमं समाघ्राय घृतदीपप्रभावतः॥३०॥

गतकुष्ठः स्वर्णतेजाः शुचिस्तद्गतमानसः।
अहं यत्नात् करिष्यामि व्रतं सर्वसमृद्धिदम्॥३१॥

इत्युक्त्वा सर्वदेवीस्तु कारयामास तत्क्षणात्।
सुवर्णनिर्मितां देवीं वस्त्रालङ्कारसंयुताम्॥३२॥

पूर्वोक्तेन विधानेन पूजां कृत्वा प्रयत्नतः।
ततो वैणवपात्राणि फलान्नैश्च सदक्षिणैः॥३३॥

एकविंशतिपक्वान्नैः पूरितानि विधाय च।
पञ्चवायनकान्येवं कृत्वादात्तु यथाक्रमम्॥३४॥

विप्राय चाथ यतये देव्यै तु ब्रह्मचारिणे।
सुवासिन्यै ततस्त्वेकमर्पितं चित्रनेमिना॥३५॥

एवं सम्यक् क्रमेणैतद्वत्त्वा वायनपञ्चकम्।
ततो गृहं गतः सोऽथ देवीं नत्वा यथाक्रमम्॥३६॥

नागवल्लीदलं त्वेकं क्रमुकं चूर्णवजितम्।
भक्षययित्वा तु चैलान्ते बद्धा प्रातर्निरैक्षत॥३७॥

आरक्ते च ततो जाते व्रतं चक्रे स भक्तितः।
अद्याहं गतपापोऽस्मि देवीदर्शनयोगतः॥३८॥

एतत्सम्यग्रतं चीर्णं भक्तिभावेन यन्मया।
चित्रनेमिव्रतं कृत्वा कैलासं शङ्करालयम्॥३९॥

गत्वा प्रणम्य देवेशं देवीमादरपूर्वकम्।
पार्वती च तदा प्राह चित्रनेमे स्वपुत्रवत्॥४०॥

पालनीयो मया त्वं च सत्यमित्यवधार्यताम्।
चित्रनेमिस्तदा प्राह पार्वतीं हरवल्लभे॥४१॥

तव पादाम्बुजं दृष्टं वरलक्ष्मीप्रसादतः।
महादेवस्ततः प्राह चित्रनेमिं शुचिव्रतम्॥४२॥

अद्यप्रभृति कैलासे भुङ्क्ष्व भोगान् यथेप्सितान्।
पश्चाद्गन्तासि वैकुण्ठं वरस्यास्य प्रसादतः॥४३॥

पार्वत्यापि कृतं पूर्वं पुत्रलाभार्थमेव च।
लब्धश्च षण्मुखो देव्या व्रतराजप्रसादतः॥४४॥

नन्दश्च विक्रमादित्यो राज्यं प्राप्तौ महाव्रतौ।
नन्दश्च कान्तया हीनः कान्तां लेभे सुलक्षणाम्॥४५॥

तया च तद् व्रतं कृत्स्नं कृतं वै पुत्रहेतवे।
पुत्रं प्रसुषुवे सा च त्रैलोक्यभरणक्षमम्॥४६॥

इह भुक्त्वा तु विपुलान्भोगान्वै सुमनोहरान्।
तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन् वरलक्ष्मीव्रतं शुभम्॥४७॥

व्रतं करोति या नारी नरो वाऽपि शुचिव्रतः।
भुक्त्वा भोगांश्च विपुलानन्ते शिवपुरं व्रजेत्॥४८॥

इत्याख्यातं मया विप्रा वरलक्ष्मीव्रतं शुभम्।
य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः॥४९॥

धनं धान्यमवाप्नोति वरलक्ष्मीप्रसादतः॥५०॥

॥इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे श्रावणशुक्रवारे वरलक्ष्मीव्रतं सम्पूर्णम्॥



॥ श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

श्रावणकृष्णचतुर्थ्यां सङ्कष्ट चतुर्थीव्रतम्। तच्च चन्द्रोदयव्यापिन्यां कार्यम्। श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्यां तु विधूदये। गणेशं पूजयित्वा तु चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत् इति कथायां तत्र व्रतपूजाविधानात्।

द्विनद्वये तद्ध्याप्तौ पूर्वव। “मातृविद्धा गणेश्वर” इति वचनात्। दिनद्वयेऽव्याप्तौ परैव। हेमाद्रौ चन्द्रोदयाभावे चतुर्थीं निशि षट्पटिकाव्याप्ता परं व्रते। इति।

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^{१७} नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ ()-मासे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां
शुभतिथौ () वासरयुक्तायाम् ()^{१८} नक्षत्र ()^{१९} नाम योग
()^{२०}-करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् चतुर्थ्यां
शुभतिथौ विद्याधनपुत्रपौत्रप्राप्त्यर्थं समस्तरोगमुक्तिकामः श् अस्माकं
सकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम्
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध-
मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्ध्यर्थं
यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्री-सिद्धिविनायक-पूजां सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-
करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^{१७}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{१८}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{१९}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

^{२०}पृष्ठं १२९ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

सौवर्णरौप्यताम्रमृन्मयाद्यन्यतमां गणपतिमूर्तिं कृत्वा जलपूर्णं पूर्णपात्रं
वस्त्रयुतकुम्भोपरि स्थापयित्वा षोडशोपचारैः पूजयेत्॥

लम्बोदरं चतुर्बाहुं त्रिनेत्रं रक्तवर्णकम्।
नानारत्नैः सुवेषाढ्यं प्रसन्नास्यं विचिन्तयेत्॥

ध्यायेद्भजाननं देवं तप्तकाञ्चनसुप्रभम्।
चतुर्बाहुं महाकायं सूर्यकोटिसमप्रभम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आगच्छ त्वं जगन्नाथ सुरासुरनमस्कृत।
अनाथनाथ सर्वज्ञ विघ्नराज कृपां कुरु॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

गजास्याय नमः, अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे गजास्यमावाहयामि।

गोप्ता त्वं सर्वलोकानामिन्द्रादीनां विशेषतः।
भक्तदारिद्र्यविच्छेत्ता एकदन्त नमोऽस्तु ते॥

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

विघ्नराजाय नमः, आसनं समर्पयामि।

मोदकान्धारयन्हस्ते भक्तानां वरदायक।
देवदेव नमस्तेऽस्तु भक्तानां फलदो भव॥

ए॒तावा॑नस्य॒ महि॑मा। अतो॒ ज्या॒याऽश्च॒ पू॒रुषः॑।
पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। त्रि॒पाद॑स्यामृतं॒ दि॒वि॥
ल॒म्बोद॑राय॒ नमः॑, पाद्यं॒ सम॑र्पयामि।

महा॑काय॒ महारू॑प॒ अनन्त॑फलदो भव।
दे॒वदे॒व नम॑स्तेऽस्तु॒ सर्व॑ेषां पापनाशन॥
त्रि॒पाद॑र्ध्व उदै॒त्पुरु॑षः। पादो॑ऽस्ये॒हाऽऽभ॑वा॒त्पुनः॑।
ततो॒ विश्व॑ङ्घ्रि॒क्राम॑त्। सा॒श॒ना॒न॒श॒ने अ॒भि॥
शङ्कर॑सूनवे॒ नमः॑, अर्घ्यं॒ सम॑र्पयामि।

कुरु॑ष्वाचमनं॒ दे॒व सु॒रव॑न्ध॒ सुवा॑हन।
सर्वा॑घदलनस्वामि॒न्नील॑कण्ठ॒ नमो॑ऽस्तु ते॥
तस्मा॑द्विराड॑जायत। वि॒राजो॒ अधि॑ पू॒रुषः॑।
स जा॒तो अत्य॑रिच्यत। प॒श्चाद्भूमि॑मथो॒ पुरः॑॥
उमा॑सुताय॒ नमः॑, आचमनीयं॒ सम॑र्पयामि।
स्नानं॒ पश्चा॑मृतेनैव गृहाण॒ गण॑नायक।
अना॑थनाथ॒ सर्वज्ञ॑ नमो॒ मूष॑कवाहन॥
पयो॑-दधि-घृतं॒ चैव॑ शर्करामधुसंयुतम्।
पश्चा॑मृतेन स्नपनं॒ प्रीत्य॑र्थं॒ प्रति॑गृह्यताम्॥
यत्पु॑रुषेण॒ ह॒विषा॑। दे॒वा य॒ज्ञम॑तन्वत।
व॒स॒न्तो अ॑स्याऽऽसी॒दाज्य॑म्। ग्री॒ष्म इ॒ध्मः श॒रद्ध॑विः॥
व॒क्रतु॑ण्डाय॒ नमः॑, पश्चा॑मृतस्नानम्॒ सम॑र्पयामि।

गङ्गा॑ च॒ यमु॑ना॒ चैव॑ गोदावरिसरस्वती।
नर्म॑दा सिन्धुकावेरी जलं स्नानाय कल्पितम्॥

स॒प्तास्याऽऽसन् परि॒धयः॑। त्रिः स॒प्त स॒मिधः॑ कृ॒ताः।
दे॒वा यद्य॒ज्ञं त॑न्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पु॒रुषं प॒शुम्॥

हेरम्बाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं
समर्पयामि।

रक्तवस्त्रसुयुग्मं च देवानामपि दुर्लभम्।
गृहाण मङ्गलं देव लम्बोदर हरात्मज॥
तं य॒ज्ञं ब॒र्हिषि प्रौक्षन्। पु॒रुषं जा॒तम॑ग्र॒तः।
तेन॑ दे॒वा अये॑जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥
शूर्पकर्णाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण गणनायक।
आरक्तं ब्रह्मसूत्रं च कनकस्योतरीयकम्॥
तस्मा॑द्य॒ज्ञात्सर्व॑हुतः। सम्भृ॑तं पृषदा॒ज्यम्।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्यान्। आ॒र॒ण्यान्प्रा॒म्याश्च॒ ये॥
कुञ्जाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो।
वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।^{२१}

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोज्ज्वलानि च।
भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।^{२२}

गृहाणेश्वर सर्वज्ञ दिव्यचन्दनमुत्तमम्।
करुणाकर गुञ्जाक्ष गौरीसुत नमोऽस्तु ते॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

गणेश्वराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमावतीः सुशोभितः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण गणनायक॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

सुगन्धिदिव्यमालां च गृहाण गणनायक।
विनायक नमस्तुभ्यं शिवसूनो नमोऽस्तु ते^{२१}॥
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः।
शतपत्रैश्च कह्लारैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

विघ्ननाशिने नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

विघ्ननाशिने नमः, दूर्वाकुङ्कुमादि समर्पयामि। [अनेनैव नाम्ना दूर्वाकुङ्कुमादि
दद्यात्।]

^{२१}अयं श्लोकः/उपचारः श्रीव्रतराजान्तर्गत-सिद्धिविनायक-पूजाया उद्धृतः

॥ अङ्ग-पूजा ॥

| | | | |
|-----|---------------|----------------------|---------|
| १. | गणेश्वराय | नमः — पादौ | पूजयामि |
| २. | विघ्नराजाय | नमः — जानुनी | पूजयामि |
| ३. | आखुवाहनाय | नमः — ऊरू | पूजयामि |
| ४. | हेरम्बाय | नमः — कटिं | पूजयामि |
| ५. | कामारिसूनवे | नमः — नाभिं | पूजयामि |
| ६. | लम्बोदराय | नमः — उदरं | पूजयामि |
| ७. | गौरीसुताय | नमः — स्तनौ | पूजयामि |
| ८. | गणनायकाय | नमः — हृदयं | पूजयामि |
| ९. | स्थूलकण्ठाय | नमः — कण्ठं | पूजयामि |
| १०. | स्कन्दाग्रजाय | नमः — स्कन्धौ | पूजयामि |
| ११. | पाशहस्ताय | नमः — हस्तौ | पूजयामि |
| १२. | गजवक्त्राय | नमः — वक्त्रं | पूजयामि |
| १३. | विघ्नहर्त्रे | नमः — ललाटं | पूजयामि |
| १४. | सर्वेश्वराय | नमः — शिरः | पूजयामि |
| १५. | श्रीगणाधिपाय | नमः — सर्वाण्यङ्गानि | पूजयामि |

॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा^{२२} ॥

| | | | |
|----|---------------|--------------------|------------|
| १. | गणाधिपाय | नमः — दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| २. | पाशाङ्कुशधराय | नमः — दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ३. | आखुवाहनाय | नमः — दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ४. | विनायकाय | नमः — दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |

^{२२} इयं पूजा सिद्धिविनायकपूजाया उद्धृतः

| | | | |
|-----|-------------------|-------|-------------------------|
| ५. | ईशपुत्राय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ६. | सर्वसिद्धि-प्रदाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ७. | एकदन्ताय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ८. | इभवक्राय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ९. | मूषिकवाहनाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १०. | कुमारगुरवे | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| ११. | कपिलवर्णाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १२. | ब्रह्मचारिणे | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १३. | मोदकहस्ताय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १४. | सुरश्रेष्ठाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १५. | गजनासिकाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १६. | कपित्थफल-प्रियाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १७. | गजमुखाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १८. | सुप्रसन्नाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| १९. | सुराग्रजाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २०. | उमापुत्राय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २१. | स्कन्दप्रियाय | नमः — | दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |

॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

गणेश्वराय नमः

गणक्रीडाय नमः

महागणपतये नमः

विश्वकर्त्रे नमः

विश्वमुखाय नमः

दुर्जयाय नमः

धूर्जयाय नमः

जयाय नमः

| | | | |
|-----------------------|----|--------------------------|----|
| सुरूपाय नमः | | लम्बनासिकाय नमः | |
| सर्वनेत्राधिवासाय नमः | १० | सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः | |
| वीरासनाश्रयाय नमः | | सर्वलक्षणलक्षिताय नमः | |
| योगाधिपाय नमः | | इक्षुचापधराय नमः | |
| तारकस्थाय नमः | | शूलिने नमः | |
| पुरुषाय नमः | | कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः | |
| गजकर्णकाय नमः | | अक्षमालाधराय नमः | ४० |
| चित्राङ्गाय नमः | | ज्ञानमुद्रावते नमः | |
| श्यामदशनाय नमः | | विजयावहाय नमः | |
| भालचन्द्राय नमः | | कामिनी-कामना-काम-मालिनी- | |
| चतुर्भुजाय नमः | | केलि-लालिताय नमः | |
| शम्भुतेजसे नमः | २० | अमोघसिद्धये नमः | |
| यज्ञकायाय नमः | | आधाराय नमः | |
| सर्वात्मने नमः | | आधाराधेयवर्जिताय नमः | |
| सामबृंहिताय नमः | | इन्दीवरदलश्यामाय नमः | |
| कुलाचलांसाय नमः | | इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः | |
| व्योमनाभये नमः | | कर्मसाक्षिणे नमः | |
| कल्पद्रुमवनालयाय नमः | | कर्मकर्त्रे नमः | ५० |
| निम्ननाभये नमः | | कर्माकर्मफलप्रदाय नमः | |
| स्थूलकुक्षये नमः | | कमण्डलुधराय नमः | |
| पीनवक्षसे नमः | | कल्पाय नमः | |
| बृहद्भुजाय नमः | ३० | कपर्दिने नमः | |
| पीनस्कन्धाय नमः | | कटिसूत्रभृते नमः | |
| कम्बुकण्ठाय नमः | | कारुण्यदेहाय नमः | |
| लम्बोष्ठाय नमः | | कपिलाय नमः | |

गुह्यागमनिरूपिताय नमः

गुहाशयाय नमः

गुहाब्धिस्थाय नमः

घटकुम्भाय नमः

घटोदराय नमः

पूर्णानन्दाय नमः

परानन्दाय नमः

धनदाय नमः

धरणीधराय नमः

बृहत्तमाय नमः

ब्रह्मपराय नमः

ब्रह्मण्याय नमः

ब्रह्मविप्रियाय नमः

भव्याय नमः

भूतालयाय नमः

भोगदात्रे नमः

महामनसे नमः

वरेण्याय नमः

वामदेवाय नमः

वन्द्याय नमः

वज्रनिवारणाय नमः

विश्वकर्त्रे नमः

विश्वचक्षुषे नमः

हवनाय नमः

हव्यकव्यभुजे नमः

६०

७०

८०

स्वतन्त्राय नमः

सत्यसङ्कल्पाय नमः

सौभाग्यवर्धनाय नमः

कीर्तिदाय नमः

शोकहारिणे नमः

त्रिवर्गफलदायकाय नमः

चतुर्बाहवे नमः

चतुर्दन्ताय नमः

चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः

सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः

कामरूपाय नमः

कामगतये नमः

द्विरदाय नमः

द्वीपरक्षकाय नमः

क्षेत्राधिपाय नमः

क्षमाभर्त्रे नमः

लयस्थाय नमः

लङ्कप्रियाय नमः

प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः

दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः

भगवते नमः

भक्तिसुलभाय नमः

याज्ञिकाय नमः

९०

१००

याजकप्रियाय नमः

|

॥इति श्री-गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री-गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः
सम्पूर्णा॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपमुत्तमं गणनायक।
गृहाण देव देवेश उमासुत नमोऽस्तु ते॥
यत्पुरुषं व्यदधुः। कृतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादाबुच्येते॥
विकटाय नमः, धूपमाग्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वरत्नाढ्य सर्वेश विबुधप्रिय।
गृहाण मङ्गलं दीपं घृतवर्तिसमन्वितम्॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥
वामनाय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥
नैवेद्यं गृह्यतां देव नानामोदकसंयुतम्।
पक्वान्नफलसंयुक्तं षड्रसैश्च समन्वितम्॥
चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुराजायत॥
सर्वदेवाय नमः, () निवेदयामि,
अमृतापिधानमसि।

कृष्णावेण्यागौतमीनां पयोष्णीनर्मदाजलैः।
आचम्यतां विघ्नराज प्रसन्नो भव सर्वदा॥
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

फलान्यमृतकल्पानि सुगन्धीन्यघनाशन।
आनीतानि यथाशक्त्या गृहाण गणनायक॥
सर्वार्तिनाशिने नमः, फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्।
नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मोदकान् समर्पयामि।^{२३}

ताम्बूलं गृह्यतां देव नागवल्ल्या दलैर्युतम्।
कर्पूरेण समायुक्तं सुगन्धं मुखभूषणम्॥
नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पृथ्वां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥
विघ्नहर्त्रे नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

सर्वदेवाधिदेव त्वं सर्वसिद्धिप्रदायक।
भक्त्या दत्तां मया देव गृहाण दक्षिणां विभो॥
सर्वेश्वराय नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

पञ्चवर्तिसमायुक्तं वह्निना योजितं मया।
गृहाण मङ्गलं दीपं विघ्नराज नमोऽस्तु ते॥
चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

^{२३} अयं श्लोकः/उपचारः श्रीव्रतराजान्तर्गत-सिद्धिविनायक-पूजाया उद्धृतः

वेदा॒हमे॒तं पु॒रुषं॑ म॒हान्त॑म्। आ॒दि॒त्यव॑र्णं तम॑स॒स्तु पा॒रे।
 सर्वा॑णि रू॒पाणि॑ वि॒चित्य॑ धी॒रः। नामा॑नि कृ॒त्वाऽभि॒वद॑न् यदास्ते॑॥
 श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
 दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
 रक्षां धारयामि। पुष्पैः पूजयामि।

धा॒ता पु॒रस्ता॒द्यमु॑दाज॒हारं। श॒क्रः प्र॒वि॒द्वान् प्र॒दि॒शश्च॑त॒स्रः।
 तमे॒वं वि॒द्वान॑मृ॒तं इ॒ह भ॑वति। नान्यः पन्था॒ अय॑नाय विद्यते॥
 यो॑ऽपां पुष्पं वेद॑। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
 च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां पुष्प॑म्। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति।
 य ए॒वं वेद॑। यो॑ऽपामा॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति।

ओं तद्ब्र॒ह्म। ओं तद्वा॒युः। ओं तदा॒त्मा।
 ओं तत्स॒त्यम्। ओं तत्सर्व॑म्। ओं तत्पु॒रोर्नमः॑॥

अन्तश्चरति॑ भू॒तेषु॑ गुहा॒यां वि॑श्वमूर्तिषु।
 त्वं यज्ञ॑स्त्वं वष॑ट्कारस्त्वमिन्द्र॑स्त्व॒
 रुद्र॑स्त्वं विष्णु॑स्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजा॑पतिः।
 त्वं तदा॑प॒ आपो॒ ज्योती॒ रसो॑ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुव॒रोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
 तस्य॑ प्र॒कृति॑लीनस्य॒ यः परः॑ स म॒हेश्वरः॑॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
 तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम।

देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक॥

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः॥

सप्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।

देवा यद्यज्ञं तन्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पुरु॒षं प॒शुम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॑ धर्मा॒णि प्रथ॑मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानं॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वं सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, छत्रचामर-नृत-गीत-वाद्यादि
समस्तराजोपचारान् समर्पयामि।

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्।

गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत।

पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥

नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे।

निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।

अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

एवं पूजा प्रकर्तव्या षोडशैरुपचारकैः।
मोदकान्कारयेन्मातस्तिलजान्दश पार्वति॥
देवाग्रे स्थापयेत्पञ्च पञ्च विप्राय कल्पयेत्।
पूजयित्वा तु तं विप्रं भक्तिभावेन देववत्॥
दक्षिणां च यथाशक्त्या दत्त्वा वै पञ्चमोदकान्।
पूजयेन्निशि चन्द्रं च अर्घ्यं दत्त्वा यथाविधि॥

॥ अर्घ्यम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं
श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

क्षीरसागरसम्भूत सुधारूप निशाकर।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गणेशप्रीतिवर्धनम्॥१॥

रोहिणीसहितचन्द्रमसे नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

क्षीरोदारणवसम्भूत सुधारूप निशाकर।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहितः शशिन्॥२॥

रोहिणीसहितचन्द्रमसे नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

गणेशाय नमस्तुभ्यं सर्वसिद्धिप्रदायक।
सङ्कष्टं हर मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

सङ्कष्टहरगणेशाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु पूजितोऽसि विधूदये।
क्षिप्रं प्रसादितो देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥४॥

सङ्कष्टहरगणेशाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

तिथीनामुत्तमे देवि गणेशप्रियवल्लभे।
सर्वसङ्कष्टनाशाय चतुर्थ्यर्घ्यं नमोऽस्तु ते॥५॥

चतुर्थ्यै नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

॥ उपायन-दानम् ॥

आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभतिथौ
श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्ध्यर्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च
करिष्ये॥ श्री-महागणपति-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्।
गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

[अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्।
स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मनि।
एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्॥

वायनमन्त्रः

विप्रवर्यं नमस्तुभ्यं मोदकान्वै ददाम्यहम्।
मोदकान्सफलान्यश्च दक्षिणाभिः समन्वितान्॥

आपदुद्धरणार्थाय गृहाण द्विजसत्तम।
प्रार्थनाअबुद्धमतिरिक्तं वा द्रव्यहीनं मया कृतम्॥

सत्सर्वं पूर्णतां यातु विप्ररूप गणेश्वर।
ब्राह्मणान् भोजयेद्देवि यथानेन यथासुखम्॥

स्वयं भुञ्जीत पञ्चैव मोदकान्फलसंयुतान्।
अशक्तश्चैकमन्नं वा भुञ्जीत दधिसंयुतम्॥

अथवा भोजनं कार्यमेकवारं हिमागजे।
प्रतिमां गुरवे दद्यादाचार्याय सदक्षिणाम्॥

वस्त्रकुम्भसमायुक्तामादौ मन्त्रमिमं जपेत्—
ॐ नमो हेरम्ब मदमोहित सङ्कष्टान्निवारय निवारय।
इतिमूलमन्त्रमेकविंशतिवारं जपेत्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-सङ्कष्टचतुर्थीव्रत-पूजा-पुण्यकाले अस्मिन् मया
क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं
हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम।

विसर्जनमन्त्रः

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने त्वं गणेश्वर।
व्रतेनानेन देवेश यथोक्तफलदो भव॥

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ सङ्कष्ट-चतुर्थी-व्रत-कथा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

ऋषय ऊचुः

दारिद्र्यशोककष्टाद्यैः पीडितानां च वैरिभिः।
 राज्यभ्रष्टैर्नृपैः सर्वैः क्रियते किं शुभार्थिभिः॥१॥

धनहीनैर्नरैः स्कन्द सर्वोपद्रवपीडितैः।
 विद्यापुत्रगृहभ्रष्टै रोगयुक्तैः शुभार्थिभिः॥२॥

कर्तव्यं किं वदोपायं पुनः क्षेमार्थसिद्धये।

स्कन्द उवाच

शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥३॥

सङ्कष्टतरणं नामामुत्रेह सुखदायकम्।
 येनोपायेन सङ्कष्टं तरन्ति भुवि देहिनः॥४॥

यद्व्रतं देवकीपुत्रः कृष्णो धर्माय दत्तवान्।
 अरण्ये क्लिश्यमानाय पुनः क्षेमार्थसिद्धये॥५॥

यथा कथितवान् पूर्वं गणेशो मातरं प्रति।
 तथा कथितवाञ्छीशो द्वापरे पाण्डवान्प्रति॥६॥

ऋषय ऊचुः

कथं कथितवानम्बां पार्वतीं श्रीगणेश्वरः।
यथा पृच्छन्ति मुनयो लोकानुग्रहकाङ्क्षिणः॥७॥

स्कन्द उवाच

पुरा कृतयुगे पुण्ये हिमाचलसुता सती।
तपस्तप्तवती भूरि तेनालब्धः शिवः पतिः^{२४}॥८॥
तदाऽस्मरत्सा हेरम्बं गणेशं पूर्वजं सुतम्।
तत्क्षणादागतं दृष्ट्वा गणेशं परिपृच्छति॥९॥

पार्वत्युवाच

तपस्तप्तं मया घोरं दुश्चरं लोमहर्षणम्।
न प्राप्तः स मया कान्तो गिरीशो मम वल्लभः॥१०॥
सङ्कष्टतरणं दिव्यं व्रतं नारद उक्तवान्।
त्वदीयं यद्व्रतं तावत् कथयस्व पुरातनम्॥११॥
तच्छ्रुत्वा पार्वतीवाक्यं सङ्कष्टतरणं व्रतम्।
प्रीत्या कथितवान् देवो गणेशो ज्ञानसिद्धिदः॥१२॥

गणेश उवाच

श्रावणे बहुले पक्षे चतुर्थ्या तु विधूदये।
गणेशं पूजयित्वा तु चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत्॥१३॥

पार्वत्युवाच

क्रियते केन विधिना किं कार्यं किं च पूजनम्।
उद्यापनं कदा कार्यं मन्त्राः के स्युस्तु पूजने॥१४॥

किं ध्यानं श्रीगणेशस्य गणेश वद विस्तरात्।

गणेश उवाच

चतुर्थ्यां प्रातरुत्थाय दन्तधावनपूर्वकम्॥१५॥

ग्राह्यं व्रतमिदं पुण्यं सङ्कष्टतरणं शुभम्।
कर्तव्यमिति सङ्कल्प्य व्रतेऽस्मिन् गणपं स्मरेत्॥१६॥

स्वीकारमन्त्रः—

निराहारोऽस्मि देवेश यावच्चन्द्रोदये भवेत्।
भोक्ष्यामि पूजयित्वाऽहं सङ्कष्टात्तारयस्व माम्॥१७॥

एवं सङ्कल्प्य राजेन्द्र स्नात्वा कृष्णातिलैः शुभैः।
आह्निकं तु विधायैव पश्चात्पूज्यो गणाधिपः॥१८॥

त्रिभिर्मण्डैस्तदर्धेन तृतीयांशेन वा पुनः।
यथाशक्त्या तु वा हैमी प्रतिमा क्रियते मम॥१९॥

हेमाभावे तु रौप्यस्य ताम्रस्यापि यथासुखम्।
सर्वथैव दरिद्रेण क्रियते मृन्मयी शुभा॥२०॥

वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं कृते कार्यं विनश्यति।
जलपूर्णं वस्त्रयुतं कुम्भं तदुपरि न्यसेत्॥२१॥

पूर्णपात्रं तत्र पद्मं लिखेदष्टदलं शुभम्।
देवतां तत्र संस्थाप्य गन्धपुष्पैः प्रपूजयेत्॥२२॥

एवं व्रतं प्रकर्तव्यं प्रतिमासं त्वयाऽद्रिजे।
यावज्जीवं तु वा वर्षाण्येकविंशतिमेव वा॥२३॥

अशक्तोऽप्येकवर्षं वा प्रतिवर्षमथापि वा।
उद्यापनं तु कर्तव्यं चतुर्थ्यां श्रावणेऽसिते॥२४॥

स्वीकारश्च तथा कार्यः सङ्कष्टहरणे तिथौ।
गाणपत्यं तथाचार्यं सर्वशास्त्रविशारदम्॥२५॥

श्रद्धया प्रार्थयेदादौ तेनोक्तं विधिमाचरेत्।
एकविंशतिविप्रांश्च वस्त्रालङ्कारभूषणैः॥२६॥

पूजयेद्गोहिरण्याद्यैर्हुत्वाऽग्नौ विधिपूर्वकम्।
होमद्रव्यं मोदकाश्च तिलयुक्ता घृतप्लुताः॥२७॥

अष्टोत्तरसहस्रं वा नोचेदष्टोत्तरं शतम्।
अष्टाविंशतिसङ्ख्याकान्मोदकान्वा सशर्करान्॥२८॥

अशक्तोऽष्टौ शुभान् स्थूलाञ्जुहयाज्जातवेदसि।
वैदिकेन च मन्त्रेण आगमोक्तेन वा तथा॥२९॥

अथवा नाममन्त्रेण होमं कुर्याद्यथाविधि।
पुष्पमण्डपिका कार्या गणेशाह्लादकारिणी॥३०॥

पूजयेत्तत्र गणपं भक्तसङ्कष्टनाशनम्।
गीतवादित्रनिनदैर्भक्तिभावपुरस्कृतैः॥३१॥

पुराणवेदनिर्घोषैस्तोषयेच्च गणेश्वरम्।
एवं जागरणं कार्यं शक्त्या दानादिकं तथा॥३२॥

सपत्नीकमथाचार्यं तोषयेद्वस्त्रभूषणैः।
उपानच्छनगोदानकमण्डलुफलादिभिः॥३३॥

शय्यावाहनभूदानं धनधान्यगृहादिभिः।
यथाशक्त्या प्रकर्तव्यं दारिद्र्याभावमिच्छता॥३४॥

एकविंशतिविप्रांश्च भोजयेनामभिर्मम।
गजास्यो विघ्नराजश्च लम्बोदर शिवात्मजौ॥३५॥

वक्रतुण्डः शूर्पकर्णः कुञ्जश्चैव विनायकः।
विघ्ननाशो हि विकटो वामनः सर्वदेवतः॥३६॥

सर्वातिनाशी भगवान् विघ्नहर्ता च धूम्रकः।
सर्वदेवाधिदेवश्च सर्वे षोडश वै स्मृताः॥३७॥

एकदन्तः कृष्णपिङ्गो भालचन्द्रो गणेश्वरः।
गणपश्चैकविंशश्च सर्व एते गणेश्वराः॥३८॥

दुर्गापेन्द्रश्च रुद्रश्च कुलदेव्याधिकं भवेत्।
विशेषेणाष्टसङ्ख्याकैर्मोदकैर्हवनं स्मृतम्॥३९॥

एवं कृते विधानेन प्रसन्नोऽहं न संशयः।
ददामि वाञ्छितान् कामांस्तद्व्रतं मत्प्रियं कुरु॥४०॥

श्रीकृष्ण उवाच

एवं तु कथितं सर्वं गणेशेन स्वयं नृप।
पार्वत्या तत्कृतं राजन् व्रतं सङ्कष्टनाशनम्॥४१॥

व्रतेनानेन सा प्राप महादेवं पतिं स्वकम्।
तत्कुरुष्व महाराज व्रतं सङ्कष्टनाशनम्॥४२॥

चतुर्थी सङ्कटा नाम स्कन्देन कथिता ऋषीन्।
ऋषिभिर्लोककामैस्तैर्लोके ततमिदं व्रतम्॥४३॥

सूत उवाच

कृतं युधिष्ठिरेणैतद्राज्यकामेन वै द्विज।
तेन शत्रून्निहत्याऽऽजौ स्वराज्यं प्राप्तवान् स्वयम्॥४४॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन व्रतं कार्यं विचक्षणैः।
येन धर्मार्थकामाश्च मोक्षश्चापि भवेत्किल॥४५॥

यः करोति व्रतं विप्राः सर्वकामार्थसिद्धिदम्।
स वाञ्छितफलं प्राप्य पश्चाद्गणपतां व्रजेत्॥४६॥

यदा यदा परं विप्रा नरः प्राप्नोति सङ्कटम्।
तदा तदा प्रकर्तव्यं व्रतं सङ्कष्टनाशनम्॥४७॥

त्रिपुरं हन्तुकामेन कृतं देवेन शूलिना।
त्रैलोक्यभूतिकामेन महेन्द्रेण तथा कृतम्॥४८॥

रावणेन कृतं पूर्वं वालिबन्धनसङ्कटे।
स्वकीयं प्राप्तवान्राज्यं गणेशस्य प्रसादतः॥४९॥

सीतान्वेषणकामेन कृतं वायुसुतेन च।
सङ्कल्प्य दृष्टवान्सोऽयं सीतां रामप्रियां पुरा॥५०॥

दमयन्त्या कृतं पूर्वं नलान्वेषणकारणात्।
सा पतिं नैषधं लेभे पुण्यश्लोकं द्विजोत्तमाः।
अहल्याऽपि पतिं लेभे गौतमं प्राणवल्लभम्॥५१॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी धनमाप्नुयात्।
पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति रोगी रोगात्प्रमुच्यते॥५२॥
॥इति श्रीस्कन्दपुराणोक्तं सङ्कष्टचतुर्थीव्रतम्॥

॥ श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

व्रतपूर्वदिने दन्तधावनपूर्वकं कृतैकभक्तो व्रतदिने कृतनित्यक्रियो देवताः
प्रार्थयेत्—

सूर्यः सोमो यमः कालसन्ध्या भूतान्यहःक्षपा।
पवनो दिक्पतिर्भूमिराकाशं खेचरा नराः।
ब्रह्मशासनमास्थाय कल्पन्तामिह सन्निधिम्॥

इत्युक्त्वा सफलं पुष्पाक्षतजलपूर्णं ताम्रपात्रमादाय मासपक्षाद्युल्लिख्य
अमुकफलकामं पापक्षयकामो वा कृष्णप्रीतये कृष्णजन्माष्टमीव्रतं करिष्ये
इति सङ्कल्प्य।

वासुदेवं समुद्दिश्य सर्वपापप्रशान्तये।
उपवासं करिष्यामि कृष्णाष्टम्यां नभस्यहम्॥

अद्य कृष्णाष्टमी देवी नभश्चन्द्रं सरोहिणीम्।
अर्चयित्वोपवासेन भोक्ष्येऽहमपरेऽहनि॥

एनसो मोक्षकामोऽस्मि यगोविन्दवियोनिजम्।
तन्मे मुञ्चतु मां त्राहि पतितं शोकसागरे॥

आजन्ममरणं यावद् यन्मया दुष्कृतं कृतम्।
तत्प्रणाशय गोविन्द प्रसीद पुरुषोत्तम॥

इत्युक्त्वा पात्रस्थं जलं निक्षिपेत्।

ततः कदली-स्तम्भ-वासोभि-राम्र-पल्लव-युत-सजल-पूर्ण-कलशेर्दीपैः पुष्प-
मालाभिर्युतमगुरु-धूपित-मग्नि-खड्ग-कृष्णच्छाग-रक्षामणि-द्वार-न्यस्त-
मुसलादि-युतं मङ्गलोपेतं षष्ठया देव्याधिष्ठितं देवक्याः सूतिकागृहं विधाय

तस्य समन्ताद्वित्तिषु कुसुमाञ्जलीन् देवगन्धर्वादीन् खड्ग-चर्मधर-वसुदेव-
देवकी-नन्द-यशोदा-गर्ग-गोपी-गोपान्-कंस-नियुक्तान् गो-धेनु-कुञ्जरान्-यमुनां
तन्मध्ये कालियमन्यच्च तत्कालीनं गोकुलचरितं यथासम्भवं लिखित्वा
सूतिकागृहमध्ये प्रछदपटावृतं मञ्चकं स्थापयित्वा मध्याह्ने नद्यादौ तिलैः
स्नात्वा अर्धरात्रे श्रीकृष्णं सपरिवारं सुपूजयेत्॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्र्वस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पादं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीकृष्ण-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये () नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कर्कटक/सिंह)-श्रावण-मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु/स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम् (कृत्तिका/रोहिणी/मृगशीर्ष) नक्षत्रयुक्तायां (-योग) (-करण-युक्तायां च एवं गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् नवम्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धार्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्धार्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रावण-कृष्ण-जन्माष्मी-पुण्यकाले देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रीत्यर्थं देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं कल्पोक्त-प्रकारेण देवकी-सहित-श्रीकृष्ण-पूजां करिष्ये।

तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ श्रीकृष्णजन्माष्टमी-षोडशोपचार-पूजा ॥

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः
भृङ्गारादर्श-कुन्तप्रवर-कृतकरैः किङ्करैः सेव्यमाना।
पर्यङ्के स्वास्तृते या मुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते
सा देवी देवमाता जयति सुवदना देवकी दिव्यरूपा॥

इति देवकीं ध्यात्वा।

ध्यायामि बालकं सुप्तं मात्रङ्के स्तनपायिनम्।
श्रीवत्स-वक्षसं शान्तं नीलोत्पल-दलच्छविम्॥

एवं देवक्या सहितं श्रीकृष्णं ध्यात्वा।

ॐ नमो देव्यै श्रियै नमः इति श्रियं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो वसुदेवाय नमः इति देवकीसहितं वसुदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो नन्दाय नमः इति यशोदासहितं नन्दं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमो बलदेवाय नमः इति श्रीकृष्णसहितं बलदेवं ध्यात्वा, आवाह्य।

ॐ नमश्चण्डिकायै नमः इति चण्डिकां ध्यात्वा आवाह्य।

ततः श्रीकृष्णपूजां कुर्यात्। ध्यानम्—

कृष्णं चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्॥

लसत्कौस्तुभ-शोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्।
ध्यायामि पुण्डरीकाक्षं जगदानन्दकारकम्॥

श्रीकृष्णं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

आगच्छ देवदेवेश जगद्योने रमापते।
बिम्बे चास्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु॥

श्रीकृष्णमावाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित।
गृहाणासनकं दिव्यं जगद्धातर्नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

नानातीर्थाहतं शुद्धं निर्मलं पुष्पमिश्रितम्।
पाद्यं गृहाण दैत्यारे विश्वरूप नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽर्भवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मकामत्। साशनानशने अभि॥

गन्धपुष्पाक्षतोपेतं फलेन च समन्वितम्।
अर्घ्यं गृहाण देवेश मया दत्तं हि भक्तितः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाऽऽनीतं सुशीतलम्।
गृहाणाचमनं देव विश्वकाय नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

दधि क्षौद्रं घृतं शुद्धं कपिलायाः सुगन्धि यत्।
सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण भोः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पञ्चामृतेन स्नपनं करिष्यामि सुरोत्तम।
क्षीरोदधिनिवासाय लक्ष्मीकान्ताय ते नमः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

मन्दाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती।
ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, स्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरमाचमनीयं
समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयेजन्त। साध्या ऋषेयश्च ये॥

शुद्ध-जाम्बूनद-प्रख्ये तटिद्वासुर-रोचिषी।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी च गृहाण भोः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायुव्यान्। आरण्यान्त्राम्याश्च ये॥

दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भवसागरात्।
ब्रह्मसूत्रं मया दत्तं गृहाण पुरुषोत्तम॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

किरीटकण्डलादीनि काश्चीवलययुग्मकम्।
कौस्तुभं वनमालां च भूषणानि भजस्व भोः॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दाँसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

मलयाचलसम्भृतं गन्धसारं मनोहरम्।
हृदयानन्दनं चारु प्रीत्यर्थे प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, चन्दनं समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः।
गार्वा ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

मालतीचम्पकादीनि यूथिकावकुलानि च।
तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. गोविन्दाय नमः —पादौ पूजयामि
२. माधवाय नमः —जङ्घे पूजयामि
३. मधुसूदनाय नमः —कटिं पूजयामि
४. पद्मनाभाय नमः —नाभिं पूजयामि
५. हृषीकेशाय नमः —हृदयं पूजयामि
६. सङ्कर्षणाय नमः —स्तनौ पूजयामि
७. वामनाय नमः —बाहू पूजयामि
८. दैत्यसूदनाय नमः —हस्तौ पूजयामि
९. हरिकेशाय नमः —कण्ठं पूजयामि
१०. चारुमुखाय नमः —मुखं पूजयामि
११. त्रिविक्रमाय नमः —नासिकां पूजयामि
१२. पुण्डरीकाक्षाय नमः—नेत्रे पूजयामि
१३. नृसिंहाय नमः —श्रोत्रे पूजयामि
१४. उपेन्द्राय नमः —ललाटं पूजयामि
१५. हरये नमः —शिरः पूजयामि
१६. श्रीकृष्णाय नमः —सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-------------------|--------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | ४. ॐ गोविन्दाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | ५. ॐ विष्णवे नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | ६. ॐ मधुसूदनाय नमः |

| | |
|------------------------|------------------------|
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| १४. ॐ वासुदेवाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | |
|-------------------------|-------------------------|
| श्रीकृष्णाय नमः | श्रीशाय नमः |
| कमलानाथाय नमः | नन्दगोपप्रियात्मजाय नमः |
| वासुदेवाय नमः | यमुनावेगसंहारिणे नमः |
| सनातनाय नमः | बलभद्रप्रियानुजाय नमः |
| वसुदेवात्मजाय नमः | पूतनाजीवितहराय नमः |
| पुण्याय नमः | शकटासुरभञ्जनाय नमः |
| लीलामानुषविग्रहाय नमः | नन्दव्रजजनानन्दिने नमः |
| श्रीवत्सकौस्तुभधराय नमः | सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः |
| यशोदावत्सलाय नमः | नवनीतविलिताङ्गाय नमः |
| हरये नमः | नवनीतनटाय नमः |
| चतुर्भुजात्तचक्रासि- | अनघाय नमः |
| गदाशङ्खाम्बुजायुधाय नमः | नवनीतनवाहाराय नमः |
| देवकीनन्दनाय नमः | मुचुकुन्दप्रसादकाय नमः |

१०

२०

षोडशस्त्रीसहस्रेशाय नमः
 त्रिभङ्गीमधुराकृतये नमः
 शुकवागमृताब्धीन्दवे नमः
 गोविन्दाय नमः
 योगिनां पतये नमः
 वत्सवाटचराय नमः
 अनन्ताय नमः
 धेनुकासुरमर्दनाय नमः
 तृणीकृततृणावर्ताय नमः
 यमलार्जुनभञ्जनाय नमः
 उत्तालतालभेत्रे नमः
 तमालश्यामलाकृतये नमः
 गोपगोपीश्वराय नमः
 योगिने नमः
 कोटिसूर्यसमप्रभाय नमः
 इलापतये नमः
 परस्मै ज्योतिषे नमः
 यादवेन्द्राय नमः
 यदूद्वहाय नमः
 वनमालिने नमः
 पीतवाससे नमः
 पारिजातापहारकाय नमः
 गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे नमः
 गोपालाय नमः
 सर्वपालकाय नमः

३०

४०

५०

अजाय नमः
 निरञ्जनाय नमः
 कामजनकाय नमः
 कञ्जलोचनाय नमः
 मधुघ्ने नमः
 मथुरानाथाय नमः
 द्वारकानायकाय नमः
 बलिने नमः
 बृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः
 तुलसीदामभूषणाय नमः
 स्यमन्तकमणेर्हर्त्रे नमः
 नरनारायणात्मकाय नमः
 कुञ्जाकृष्णाम्बरधराय नमः
 मायिने नमः
 परमपूरुषाय नमः
 मुष्टिकासुरचाणूरमल्लयुद्ध-
 विशारदाय नमः
 संसारवैरिणे नमः
 कंसारये नमः
 मुरारये नमः
 नरकान्तकाय नमः
 अनादिब्रह्मचारिणे नमः
 कृष्णाव्यसनकर्षकाय नमः
 शिशुपालशिरश्छेत्रे नमः
 दुर्योधनकुलान्तकाय नमः

६०

७०

विदुराक्रूरवरदाय नमः
 विश्वरूपप्रदर्शकाय नमः
 सत्यवाचे नमः
 सत्यसङ्कल्पाय नमः
 सत्यभामारताय नमः
 जयिने नमः
 सुभद्रापूर्वजाय नमः
 विष्णवे नमः
 भीष्ममुक्तिप्रदायकाय नमः
 जगद्गुरवे नमः
 जगन्नाथाय नमः
 वेणुनादविशारदाय नमः
 वृषभासुरविध्वंसिने नमः
 बाणासुरकरान्तकाय नमः
 युधिष्ठिरप्रतिष्ठात्रे नमः
 बर्हिर्बर्हावतंसकाय नमः
 पार्थसारथये नमः
 अव्यक्ताय नमः

८०

९०

गीतामृतमहोदधये नमः
 कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्री-
 पदाम्बुजाय नमः
 दामोदराय नमः
 यज्ञभोक्त्रे नमः
 दानवेन्द्रविनाशकाय नमः
 नारायणाय नमः
 परब्रह्मणे नमः
 पन्नगाशनवाहनाय नमः
 जलक्रीडासमासक्तगोपी-
 वस्त्रापहारकाय नमः
 पुण्यश्लोकाय नमः
 तीर्थपादाय नमः
 वेदवेद्याय नमः
 दयानिधये नमः
 सर्वतीर्थात्मकाय नमः
 सर्वग्रहरूपिणे नमः
 परात्पराय नमः

१००

॥इति श्री-ब्रह्माण्डमहापुराणे वायुप्रोक्ते
 श्री-कृष्णाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादाबुच्येते॥

वनस्पतिरसोद्भूतं कालागरुसमन्वितम्।
धूपं गृहाण गोविन्द गुणसागर गोपते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, धूपमाग्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च।
यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, दीपं दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुराजायत॥

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च।
विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः॥

शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम्।
नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, सूपसहितं शाल्योदनं शाकोपदंसं निवेदयामि।

मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि । उत्तरापोशनं समर्पयामि ।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । पादप्रक्षालनं समर्पयामि । गण्डूषं समर्पयामि ।
हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि ।

सपरिवाराय कृष्णाय नमः,
शष्कुली-लवनचिपिट-गुडचिपिट-गुड-शुण्ठी-नवनीतादीनि,
जम्बूफल-तिन्त्रिणीफल-प्रभृतीनि नानाफलानि च निवेदयामि ।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम् । शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पृथ्वा भूमिर्दिशः श्रोत्रात् । तर्था लोकाः अकल्पयन् ॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्ली-दलैर्युतम् ।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरताम्बूलं निवेदयामि ।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् । आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे ।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः । नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते ॥

नीराजयेत्ततो भक्त्या मङ्गलं समुदीरयन् ।
जय-मङ्गल-निर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत् ॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार । शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः ।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति । नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते ॥

योऽपां पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम् । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।
य एव वेद । योऽपामायतनं वेद । आयतनवान् भवति ।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोन्मः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।
त्वं तंदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥
सपरिवाराय कृष्णाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चैव प्रदक्षिणपुरस्सरम्।
प्रणमेद्वण्डवद्भूमौ भक्तिप्रह्वः पुनः पुनः॥

स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयेत जगत्पतिम्।
नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो॥

वसुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन।
गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ततो जातकर्मनालच्छेदषष्ठीपूजानामकरणकर्माणि सङ्क्षेपेण कार्याणि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ततस्तु दापयेदर्घ्यम् इन्दोरुदयतः शुचिः।
कृष्णाय प्रथमं दद्याद्देवकीसहिताय च॥

नालिकेरेण शुद्धेन दद्यादर्घ्यं विचक्षणः।
कृष्णाय परया भक्त्या शङ्के कृत्वा विधानतः॥

जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च।
पाण्डवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च॥

कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीजनित प्रभो॥

सपरिवाराय कृष्णाय नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

पूजिताभ्यः सर्वाभ्यो देवताभ्यः तत्तन्नाममन्त्रेण अर्घ्यं दद्यात्

- | | | |
|-----|---------------------------------------|-------------|
| १. | ॐ देवक्यै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| २. | ॐ वसुदेवाय नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ३. | ॐ रोहिण्यै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ४. | ॐ सबलायै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ५. | ॐ सात्यक्यै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ६. | ॐ उद्धवाय नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ७. | ॐ अक्रूराय नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ८. | ॐ उग्रसेनादि-यादवेभ्यो नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ९. | ॐ नन्दाय नमः | —इदमर्घ्यम् |
| १०. | ॐ यशोदायै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| ११. | ॐ तत्कालप्रसूताभ्यः गोपगोपिकाभ्यो नमः | —इदमर्घ्यम् |
| १३. | ॐ कालिन्द्यै नमः | —इदमर्घ्यम् |
| १४. | ॐ काल्यै नमः | —इदमर्घ्यम् |

इति पृथक्पृथगर्घ्यं दत्वा॥

ततश्चन्द्रोदये रोहिणीयुतं चन्द्रं स्थण्डिले प्रतिमायां वा नाममन्त्रेण सम्पूज्य।

ततस्तु रोहिणीयुक्तं चन्द्रं सम्पूज्य भक्तितः।

स्तुत्वा तु स्तोत्रमन्त्रेण चन्द्रायार्घ्यं प्रदापयेत्॥

आप्यायस्वेति मन्त्रेण देवसमीपे चन्दनबिम्बे रोहिणीसहितं
चन्द्रमावाह्य षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्॥

चन्द्रप्रार्थना—

ज्योत्स्नायाः पतये तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः।
नमस्ते रोहिणीकान्त सुधावास नमोऽस्तु ते॥

नमो मण्डलदीपाय शिरोरत्नाय धूर्जटे।
कलाभिर्वर्धमानाय नमश्चन्द्राय चारवे॥

इति प्रणमेत्।

ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते।
नमस्ते रोहिणीकान्त नमस्ते युवमोहन॥

इति स्तुत्वा।

शङ्खे कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचन्दनम्।
जानुभ्यामवर्णीं गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्॥

चन्द्रार्घ्यमन्त्रः—

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिनेत्रसमुद्भवा।
रोहिणीश गृहाणार्घ्यं रमाभ्रातर्मनःपते॥

रोहिणीसहिताय चन्द्राय नमः इदमर्घ्यम् (त्रिः)
इत्यर्घ्यं दत्वा देवकीसहिताय कृष्णाय छत्रचामराद्युपचारं कृत्वा
पूजां समाप्य कृष्णावतारघट्टं पठेत्॥

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॑ ध॒र्माणि॑ प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानं॑ सचन्ते। यत्र॑ पूर्वे सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥
सपरिवाराय कृष्णाय नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।
वासुदेवं हृषीकेशं माधवं मधुसूदनम्॥१॥

वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्।
दामोदरं पद्मनाभं केशवं गरुडध्वजम्॥२॥

गोविन्दमच्युतं कृष्णमनन्तमपराजितम्।
अधोक्षजं जगद्धीजं सर्गस्थित्यन्तकारणम्॥३॥

अनादिनिधनं विष्णुं त्रिलोकेशं त्रिविक्रमम्।
नारायणं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रगदाधरम्॥४॥

पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्।
श्रीवत्साङ्गं जगत्सेतुं श्रीकृष्णं श्रीधरं हरिम्॥५॥

शरणं त्वां प्रपद्येऽहं सर्वकामार्थसिद्धये।
प्रणममामि सदा देवं वासुदेवं जगत्पतिम्॥६॥

इति मन्त्रैः प्रणम्य॥

त्राहि मां सर्वलोकेश हरे संसारसागरात्।
त्राहि मां सर्वपापघ्न दुःखशोकार्णवात्प्रभो।
सर्वलोकेश्वर त्राहि पतितं मां भवार्णवे॥१॥

देवकीनन्दन श्रीश हरे संसारसागरात्।
त्राहि मां सर्वदुःखघ्न रोगशोकार्णवाद्धरे॥२॥

दुर्वृत्तान्नायसे विष्णो ये स्मरन्ति सकृत्सकृत्।
सोऽहं देवातिदुर्वृत्तस्त्राहि मां शोकसागरात्॥३॥

पुष्कराक्ष निमग्नोऽहं मायाव्यज्ञानसागरे।
त्राहि मां देवदेवेश त्वत्तो नान्योऽस्ति रक्षिता॥४॥

यद्वाल्ये यच्च कौमारे यौवने यच्च वार्धके।
तत्पुण्यं वृद्धिमायातु पापं हर हलायुध॥५॥

इति मन्त्रैः प्रार्थयेत्॥

ततः स्तोत्रं पठन् पुराणश्रवणादिना जागरं कुर्यात्॥
द्वितीयेऽहि प्रातःकाले स्नानादिनित्यकर्म कृत्वा पूर्ववद्देवं पूजयित्वा
ब्राह्मणान् भोजयेत्॥

तेभ्यः सुवर्णधेनुवस्त्रादि दत्त्वा कृष्णो मे प्रीयतामिति वदेत्॥

यं देवं देवकी देवी वसुदेवादजीजनत्।
भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यै तस्मै ब्रह्मात्मने नमः॥

नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च।
शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्त्वा मां विसर्जयेत्॥

इति प्रतिमामुद्वास्य तां ब्राह्मणाय दत्त्वा पारणं कृत्वा व्रतं समापयेत्॥
सर्वस्मै सर्वेश्वराय सर्वेषां पतये सर्वसम्भवाय गोविन्दाय नमो नम इति
पारणे॥

भूताय भूतपतये नम इति समापने मन्त्रः॥

इति पूजाविधिः॥



हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-कृष्णजन्माष्टमी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
सपरिवार-कृष्णपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं
सपरिवार-श्री-कृष्ण-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे
नमः न मम।

अनया पूजया सपरिवार-श्रीकृष्णः प्रीयताम्।
 कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ जन्माष्टमी-व्रत-कथा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

युधिष्ठिर उवाच

जन्माष्टमीव्रतं ब्रूहि विस्तरेण ममाच्युत।
 कस्मिन्काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिः स्मृतः॥१॥

श्रीकृष्ण उवाच

मल्लयुद्धे परावृत्ते शमिते कुरुरान्धके।
 स्वजनैर्बन्धुभिः स्त्रीभिः समः स्निग्धैः समावृते॥२॥

हते कंसासुरे दुष्टे मथुरायां युधिष्ठिर।
 देवकी मां परिष्वज्य कृत्वोत्सङ्गे रुरोद ह॥३॥

वसुदेवोऽपि तत्रैव वात्सल्यात्प्ररुरोद ह।
 समालिङ्ग्याश्रुवदनः पुत्र पुत्रेत्युवाच ह॥४॥

सगद्गदस्वरो दीनो बाष्पपर्याकुलेक्षणः।
 बलभद्रं च मां चैव परिष्वज्य मुदा पुनः॥५॥

अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम्।
उभाभ्यामद्य पुत्राभ्यां समुद्भूतः समागमः॥६॥

एवं हर्षेण दाम्पत्यं हृष्टं पुष्टं तदा ह्यभूत्।
प्रणिपत्य जनाः सर्वे बभूवुस्ते प्रहर्षिताः॥७॥

एवं महोत्सवं दृष्ट्वा मामूचुर्मधुसूदनम्।

जना ऊचुः

प्रसादः क्रियतामस्य लोकस्याऽऽर्तस्य दुःखहन्॥८॥

यस्मिन्दिने च प्रासूत देवकी त्वां जनार्दन।
तद्धिनं देहि वैकुण्ठ कुर्मस्तत्र महोत्सवम्॥९॥

एवं स्तुतो जनौघेन वासुदेवो मयेक्षितः।
विलोक्य बलभद्रं च मां च हृष्टतनूरुहः॥१०॥

उवाच स ममादेशाल्लोकाञ्जन्माष्टमीव्रतम्।
मथुरायां ततः पश्चात् पार्थ सम्यक् प्रकाशितम्॥११॥

कुर्वन्तु ब्राह्मणाः सर्वे व्रतं जन्माष्टमीदिने।
क्षत्रिया वैश्यजातीयाः शूद्रा येऽन्येऽपि धर्मिणः॥१२॥

युधिष्ठिर उवाच

कीदृशं तद्व्रतं देवदेव सर्वैरनुष्ठितम्।
जन्माष्टमीति संज्ञं च पवित्रं पापनाशनम्॥१३॥

येन त्वं तुष्टिमायासि कात्स्न्येन प्रभवाम्ययम्।
एतन्मे तत्त्वतो ब्रूहि सविधानं सविस्तरम्॥१४॥

श्रीकृष्ण उवाच

मासि भाद्रपदेष्टम्यां निशीथे कृष्णपक्षके।
शशाङ्के वृषराशिस्थे ऋक्षे रोहिणीसंज्ञके॥१५॥

योगेऽस्मिन्वसुदेवाद्धि देवकी मामजीजनत्।
भगवत्याश्च तत्रैव क्रियते सुमहोत्सवः॥१६॥

योगेऽस्मिन्कथितेऽष्टम्यां सिंहराशिगते रवौ।
सप्तम्यां लघुभुक् कुर्याद्वन्तधावनपूर्वकम्॥१७॥

उपवासस्य नियमं रात्रौ स्वप्याञ्जितेन्द्रियः।
केवलेनोपवासेन तस्मिञ्जन्मदिने मम॥१८॥

सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः।
उपावृत्तस्य पापेभ्यो यस्तु वासोगुणैः सह॥१९॥

उपवासः स विज्ञेयः सर्वभोगविवर्जितः।
ततोऽष्टम्यां तिलैः स्नात्वा नद्यादौ विमले जले॥२०॥

सुदेशे शोभनं कुर्याद्विवक्याः सूतिकागृहम्।
सितपीतैस्तथा रक्तैः कर्बुरैरितरैरपि॥२१॥

वासोभिः शोभितं कृत्वा समन्तात्कलशैर्नवैः।
पुष्पैः फलैरनेकैश्च दीपालिभिरितस्ततः॥२२॥

पुष्पमालाविचित्रं च चन्दनागुरुधूपितम्।
अतिरम्यमनौपम्यं रक्षामणिविभूषितम्॥२३॥

हरिवंशस्य चरितं गोकुलं च विलेखयेत्।
ततो वादिबनिनदेर्वीणावेणुरवाकुलम्॥२४॥

नृत्यगीतक्रमोपेतं मङ्गलैश्च समन्ततः।
वेष्टकारीं लोहखड्गं कृष्णछागं च यत्नतः॥२५॥

द्वारे विन्यस्य मुसलं रक्षितं रक्षपालकैः।
षष्ठया देव्याधिष्ठितं च तद्गृहं चोत्सवैस्तथा॥२६॥

एवंविभवसारेण कृत्वा तत्सूतिकागृहम्।
तन्मध्ये प्रतिमा स्थाप्या सा चाप्यष्टविधा स्मृता॥२७॥

काञ्चनी राजती ताम्री पैतली मृन्मयी तथा।
वार्क्षी मणिमयी चैव वर्णकैर्लिखिता तथा॥२८॥

सर्वलक्षणसम्पूर्णा पर्यङ्के चाष्टशल्यके।
प्रतप्तकाञ्चनाभासां महार्हा सुतपस्विनीम्॥२९॥

प्रसूतां च प्रसुतां च स्थापयन्मञ्चकोपरि।
मां तत्र बालकं सुप्तं पर्यङ्के स्तनपायिनम्॥३०॥

श्रीवत्सवक्षसं शान्तं नीलोत्पलदलच्छविम्।
यशोदा तत्र चैकस्मिन् प्रदेशे सूतिकागृहे॥३१॥

तद्वच्च कल्पयेत् पार्थ प्रसूतां वरकन्यकाम्।
तथैव मम पार्श्वस्थाः कृताञ्जलिपुटा नृप॥३२॥

देवा ग्रहास्तथा नागा यक्षविद्याधराभराः।
प्रणताः पुष्पमालाग्रचारुहस्ताः सुरासुराः॥३३॥

सञ्चरन्त इवाऽऽकाशे प्रहारैरुदितोदितैः।
वसुदेवोऽपि तत्रैव खङ्गचर्मधरः स्थितः॥३४॥

कश्यपो वसुदेवोऽयमदितिश्चैव देवकी।
शेगे वै बलदेवोऽयं यशोदादितिरन्वभूत्॥३५॥

नन्दः प्रजापतिर्दक्षो गर्गश्चापि चतुर्मुखः।
गोप्यश्चाप्सरसश्चैव गोपाश्चापि दिवौकसः॥३६॥
एषोऽवतारो राजेन्द्र कंसोऽयं कालनेमिजः।
तत्र कंसनियुक्ताश्च मोहिता योगनिद्रया॥३७॥

गोधेनुकुञ्जराश्चैव दानवाः शस्त्रपाणयः।
नृत्यतश्चाप्सररोभिस्ते गन्धर्वा गीततत्पराः॥३८॥

लेखनीयश्च तत्रैव कालियो यमुनाहृदे।
इत्येवमादि यत्किञ्चिद्विद्यते चरितं मम॥३९॥

लेखयित्वा प्रयत्नेन पूजयेद्भक्तितत्परः।
रम्यमेवं बीजपूरैः पुष्पमालादिशोभितम्॥४०॥

कालदेशोद्भवैः पुष्पैः फलैश्चापि युधिष्ठिर।
पाद्यार्घ्यैः पूजयेद्भक्त्या गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
मन्त्रेणानेन कौन्तेय देवकीं पूजयेन्नरः॥४१॥

गायद्भिः किन्नराद्यैः सततपरिवृता वेणुवीणानिनादैः
भृङ्गारादर्शकुम्भप्रवरवृतकरैः किङ्करैः सेव्यमाना।
पर्यङ्के स्वास्तृते यामुदिततरमुखी पुत्रिणी सम्यगास्ते
सा देवी देवमाता जयतु च ससुता देवकी कान्तरूपा॥४२॥

पादावभ्यञ्जयन्ती श्रीदेवक्याश्चरणान्तिके।
निषण्णा पङ्कजे पूज्या दिव्यगन्धातुलेपनैः॥४३॥

पङ्कजैः पूजयेद्देवीं नमो देव्यै श्रिया इति।
देववत्से नमस्तेऽस्तु कृष्णोत्पादनतत्परा॥४४॥

पापक्षयकरा देवी तुष्टिं यातु मयाऽर्चिता।
प्रणवादिनमोऽन्तं च पृथङ्गामानुकीर्तनम्॥४५॥

कुर्यात्पूजा विधिज्ञश्च सर्वपापापनुत्तये।
देवक्यै वसुदेवाय वासुदेवाय चैव हि॥४६॥

बलदेवाय नन्दाय यशोदायै पृथक् पृथक्।
क्षीरादिस्नपनं कृत्वा चन्दनेनानुलेपयेत्॥४७॥

विध्यन्तरमपीच्छन्ति केचिदत्रैव सूरयः।
चन्द्रोदये शशाङ्काय अर्घ्यं दत्त्वा हरिं स्मरन्॥४८॥

अनघं वामनं शौरिं वैकुण्ठं पुरुषोत्तमम्।
वासुदेवं हृषीकेशं माधवं मधुसूदनम्॥४९॥

वराहं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं ब्रह्मणः प्रियम्।
समस्तस्यापि जगतः सृष्टिस्थित्यन्तकारकम्॥५०॥

अनादिनिधनं विष्णुं त्रैलोक्येशं त्रिविक्रमम्।
नारायणं चतुर्बाहुं शङ्खचक्रगदाधरम्॥५१॥

पीताम्बरधरं नित्यं वनमालाविभूषितम्।
श्रीवत्साक्षं जगत्सेतुं श्रीपतिं श्रीधरं हरिम्॥५२॥

योगेश्वराय देवाय योगिनां पतये नमः।
योगोद्भवाय नित्याय गोविन्दाय नमो नमः॥५३॥

यज्ञेश्वराय देवाय तथा यज्ञोद्भवाय च।
यज्ञानां पतये नाथ गोविन्दाय नमो नमः॥५४॥

विश्वेश्वराय विश्वाय तथा विश्वोद्भवाय च।
विश्वस्य पतये तुभ्यं गोविन्दाय नमो नमः॥५५॥

जगन्नाथ नमस्तुभ्यं संसारभयनाशन।
जगदीशाय देवाय भूतानां पतये नमः॥५६॥

धर्मेश्वराय धर्माय सम्भवाय जगत्पते।
धर्मज्ञाय च देवाय गोविन्दाय नमो नमः॥५७॥

एताभ्यां चैव मन्त्राभ्यां नैवेद्यं शयनं तथा।
चन्द्रायार्घ्यं च मन्त्रेण अनेनैवाथ दापयेत्॥५८॥

क्षीरोदार्षवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव।
गृहाणार्घ्यं शशाङ्केश रोहिण्या सहितो मम॥५९॥

ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं ज्योतिषां पतये नमः।
नमस्ते रोहिणीकान्त अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम्॥६०॥

स्थण्डिले स्थापयेद्देवं शशाङ्कं रोहिणीयुतम्।
देवक्या वसुदेवं च नन्दं चैव यशोदया॥६१॥

बलदेवं मया सार्धं भक्त्या परमया नृप।
सम्पूज्य विधिवद्देहि किं नाऽऽप्तोत्यतिदुर्लभम्॥६२॥

एकादशीनां विंशत्यः कोटयो याः प्रकीर्तिताः।
ताभिः कृष्णाष्टमी तुल्या ततोऽनन्तचतुर्दशी॥६३॥

अर्धरात्रे वसोर्धारां पातयेद् द्रव्यसर्पिषा।
ततो वर्धापयेन्नालं षष्ठीनामादिकं मम॥६४॥
कर्तव्यं तत्क्षणाद्रात्रौ प्रभाते नवमीदिने।
यथा मम तथा कार्यो भगवत्या महोत्सवः॥६५॥

ब्राह्मणान् भोजयेद्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्।
हिरण्यं मेदिनीं गावो वासांसि कुसुमानि च॥६६॥

यद्यदिष्टतमं तत्तत्कृष्णो मे प्रीयतामिति।
यं देवं देवकी देवीं वसुदेवादजीजनत्॥६७॥

भौमस्य ब्रह्मणो गुप्त्यै तस्मै ब्रह्मात्मने नमः।
नमस्ते वासुदेवाय गोब्राह्मणहिताय च॥६८॥

शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्त्वा मां विसर्जयेत्।
ततो बन्धुजनौघं च दीनानाथांश्च भोजयेत्॥६९॥

भोजयित्वा सुशान्तांस्तान् स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः।
एवं यः कुरुते देव्या देवक्याः सुमहोत्सवम्॥७०॥

प्रतिवर्षं विधानेन मद्भक्तो धर्मनन्दन।
नरो वा यदि वा नारी यथोक्तं लभते फलम्॥७१॥

पुत्रसन्तानमारोग्यं सौभाग्यमतुलं लभेत्।
इह धर्मरतिर्भूत्वा मृतो वैकुण्ठमाप्नुयात्॥७२॥

तत्र देवविमानेन वर्षलक्षं युधिष्ठिर।
भोगान्नानाविधान् भुक्त्वा पुण्यशेषादिहागतः॥७३॥

सर्वकामसमृद्धे च सर्वाशुभविवर्जिते।
कुले नृपतिशीलानां जायते हृच्छयोपमः॥७४॥

यस्मिन् सदैव देशे तु लिखितं तु पटार्पितम्।
मम जन्मदिनं भक्त्या सर्वालङ्कारभूषितम्॥७५॥

पूज्यते पाण्डवश्रेष्ठ जनैरुत्सवसंयुतैः।
परचक्रभयं तत्र न कदाऽपि भवेत्पुनः॥७६॥

पर्जन्यः कामवर्षी स्यादीतिभ्यो न भयं भवेत्।
गृहे वा पूज्यते यत्र देवक्याश्चरितं मम॥७७॥

तत्र सर्वं समृद्धं स्यान्नोपसर्गादिकं भवेत्।
पशुभ्यो नकुलाद्यालात्पापरोगाच्च पातकात्॥७८॥

राजतश्चोरतो वाऽपि न कदाचिद्भयं भवेत्।
संसर्गेणापि यो भक्त्या व्रतं पश्येदनाकुलम्।
सोऽपि पापविनिर्मुक्तः प्रयाति हरिमन्दिरम्॥७९॥

जन्माष्टमीं जनमनोनयनाभिरामा
पापापहां सपदि नन्दितनन्दगोपाम्।
यो देवकी सुतयुतां च भजेद्धि भक्त्या
पुत्रानवाप्य समुपैति पदं स विष्णोः॥८०॥
॥इति भविष्योत्तरे जन्माष्टमीव्रतकथा॥

॥ शिष्टाचारप्राप्ता जन्माष्टमीव्रतकथा ॥

व्यास उवाच

निवृत्ते भारते युद्धे कृतशौचो युधिष्ठिरः।
उवाच वाक्यं धर्मात्मा कृष्णं देवकिनन्दनम्॥१॥

युधिष्ठिर उवाच

त्वत्प्रसादात्तु गोविन्द निहताः शत्रवो रणे।
कर्णश्च निहतः सैन्ये त्वत्प्रसादात्किरीटिना॥२॥
जेता को युधि भीष्मस्य यस्य मृत्युर्न विद्यते।
अजेयोऽपि जितः सोऽपि त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥३॥
प्राप्तं निष्कण्टकं राज्यं कृत्वा कर्म सुदुष्करम्।
आचारो दण्डनीतिश्च राजधर्माः क्रियान्विताः॥४॥
अधुना श्रोतुमिच्छामि शुभं जन्माष्टमीव्रतम्।
जन्माष्टमी व्रतं ब्रूहि विस्तरेण ममाच्युत॥५॥
कुतः काले समुत्पन्नं किं पुण्यं को विधिः स्मृतः।

श्रीकृष्ण उवाच

शृणु राजन्प्रवक्ष्यामि व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥६॥
यतः प्रभृति विख्यातं फलेन विधिनान्वितम्।
राजवंशसमुत्पन्नैर्दैत्यानीकैः सुपीडिता॥७॥
धरा भारसमाक्रान्ता ब्रह्माणं शरणं ययौ।
ज्ञात्वा तदा प्रभुर्ब्रह्मा भूमेर्भारं समाहितः॥८॥
श्वेतदीपं समागत्य सर्वदेवसमन्वितः।
समाहितमतिर्ब्रह्मा मां तुष्टाव विशां पते॥९॥

स्तुत्या तयाऽहं सम्प्रीतस्तेषां दृग्गोचरोऽभवम्।
दृष्ट्वा मां प्रणिपत्याऽऽशु भक्तिभावसमन्विताः॥१०॥

ब्रह्माणमग्रतः कृत्वा तुष्टाः सर्वे दिवौकसः।
विजिज्ञपुर्महराज भूमिभारापनुत्तये॥११॥

उपधार्य तदा तेषां वचनं चान्वचिन्तयम्।
केनोपायन हन्तव्या दानवाः क्षत्रियोद्भवाः॥१२॥

स्वधर्मनिरताः सर्वे महाबलपराक्रमाः।
ततो निश्चित्य मनसा ब्रह्माणमहमब्रुवम्॥१३॥

वसुदेवो देवकी च प्रजाकामौ पुरा नृप।
भक्त्या मां भजमानौ तौ तप्तवन्तौ महत्तपः॥१४॥

तयोः प्रसन्नः सुप्रीतो याचतं वरमुत्तमम्।
अब्रुवं तावपि ततो वरयामासतुः किल॥१५॥

यदि देव प्रसन्नोऽसि त्वादृशौ नौ भवेत्सुतः।
तथेति च मया ताभ्यामुक्तं प्रीतेन चेतसा॥१६॥

तत्कामपूरणार्थाय सम्भविष्याम्यहं तयोः।
दिवौकसोऽपि स्वांशेन सम्भवन्तु सुरस्त्रियः॥१७॥

योगमाया च नन्दस्य यशोदायां भविष्यति।
देवक्या जठरे गर्भमनन्तं धाम मामकम्॥१८॥

सन्निकृष्य च सा तूर्णं रोहिण्या जठरं नयेत्।
इति सन्दिश्य तान् सर्वानहमन्तर्हितोऽभवम्॥१९॥

ततो देवैः समं ब्रह्मा तां दिशं प्रणिपत्य च।
आश्वास्य च महीं देवीं वरधाम्नि जगाम ह॥२०॥

ततोऽहं देवकीगर्भमाविशं स्वेन तेजसा।
 हतेषु षट् बालेषु देवक्या औग्रसेनिना।
 कारागृहस्थितायाश्च वसुदेवेन वै सह॥२१॥

गतेऽर्धरात्रसमये सुप्ते सर्वजने निशि।
 भाद्रे मास्यसिते पक्षेऽष्टम्यां ब्रह्मर्क्षसंयुजि॥२२॥

सर्वग्रहशुभे काले प्रसन्नहृदयाशये।
 आविरासं निजेनैव रूपेण ह्यवनीपते॥२३॥

वसुदेवोऽपि मां दृष्ट्वा हर्षशोकसमन्वितः।
 भीतः कंसादतितरां तुष्टाव च कृताञ्जलिः॥२४॥

पुनः पुनः प्रणम्याथ प्रार्थयामास सादरम्।

वसुदेव उवाच

अलौकिकमिदं रूपं दुर्दर्शं योगिनामपि॥२५॥

यत्तेजसाऽरिष्टगृहमभवत्सम्प्रकाशितम् ।
 उद्धिजे भगवत्कंसाद्यो मे बालानघातयत्॥२६॥

उपसंहर तस्माच्च एतद्रूपमलौकिकम्।
 शङ्खचक्रगदापद्मलसत्कौस्तुभमालिनम्॥२७॥

किरीटहारमुकुटकेयूरवलयार्ङ्कितम् ।
 तडिद्वसनसंवीतकणत्काश्चनमेखलम्॥२८॥

स्फुरद्राजीवताम्राक्षं स्निग्धाञ्जनसमप्रभम्।
 महामरकतस्वच्छं कोटिसूर्यसमप्रभम्॥२९॥

कृष्ण उवाच

एवं सम्प्रार्थितो राजन्वसुदेवेन वै तदा।
 तेनैव निजरूपेण भूत्वाऽहं प्राकृतः शिशुः॥३०॥

नय मां गोकुलमिति वसुदेवमचोदयम्।
समादायागमत्सोऽपि नन्दगोकुलमञ्जसा॥३१॥

द्वाराण्यपाकृतान्यासन्मत्प्रभावात्स्वयं प्रभो।
ददौ मार्गं च कालिन्दीजलकल्लोलमालिनी॥३२॥
ततो यशोदाशयने न्यस्य माऽऽनकदुन्दुभिः।
तत्पर्यङ्के स्थितां गृह्य दारिकामगमत्पुनः॥३३॥

द्वाराणि पिहितान्यासन् पूर्ववन्निगडं ततः।
विन्यस्य पादयोरास्ते शयने न्यस्य दारिकाम्॥३४॥

ततो रुरोद महता स्वरेणाऽऽपूर्य सा दिशः।
तस्या रुदितशब्देन उत्थिता रक्षका गृहात्॥३५॥

कंसायाऽऽगत्य चाचख्युः प्रसूता देवकीति च।
सोऽपि तल्पात्समुत्थाय भयेनातीव विह्वलः॥३६॥

जगाम सूतिकागेहं देवक्याः प्रस्खलन्पथि।
दारिकां शयनाद्गृह्य रुदत्याश्चैव स्वस्वसुः॥३७॥

अपोथयच्छिलापृष्ठे साऽपि तस्य कराच्च्युता।
उवाच कंसमाभाष्य देवी ह्याकाशगा सती॥३८॥

किं मया हतया मन्द जातः कुत्रापि ते रिपुः।
इत्युक्तः सोऽप्यभूत्कंसः परमोद्विग्नमानसः॥३९॥

आज्ञापयामास ततो बालानां कदनाय वै।
दानवा अपि बालानां कदनं चक्रुरुद्यताः॥४०॥

वनेषूपवने चैव पुरग्रामव्रजेष्वपि।
अहं च गोकुले स्थित्वा पूतनां बालघातिनीम्॥४१॥

स्तनं दातुं प्रवृत्तां च प्राणैः सममशोषयम्।
तृणावर्तबकारिष्ठान् धेनुकं केशिनं तथा॥४२॥

अन्यानपि खलान् हत्वा स्वप्रभावमदर्शयम्।
ततश्च मथुरां गत्वा हत्वा कंसादिदानवान्॥४३॥

ज्ञातीनां परमं हर्षं कृतवानस्मि सादरम्।
देवकीवसुदेवौ च परिष्वज्य मुदा मम॥४४॥

आनन्दजैर्जलैर्मूर्ध्नि सेचयामासतुर्नृप।
तस्मिन् रङ्गवरे मल्लान् हत्वा चाणूरमुख्यकान्॥४५॥

गजं कुवल्यापीडं कंसभ्रातृननेकशः।
एवं हतेऽसुरे कंसे सर्वलोकैककण्टके॥४६॥

अन्येषु दुष्टदैत्येषु सर्वलोकभयङ्करम्।
लोकाः समुत्सुकाः सर्वे मांसमेत्योचुरादृताः॥४७॥

कृष्ण कृष्ण महायोगिन् भक्तानामभयप्रद।
प्रलयात्पाहि नो देव शरणागतवत्सलः॥४८॥

अनाथनाथ सर्वज्ञ सर्वभूतहिते रत।
किञ्चिद् विज्ञाप्यतेऽस्माभिस्तन्नो वक्तुं त्वमर्हसि॥४९॥

तव जन्मदिनं लोके न ज्ञातं केनचित्कचित्।
ज्ञात्वा च तत्त्वतः सर्वे कुर्मो वर्धापनोत्सवम्॥५०॥

तेषां दृष्ट्वा तु तां भक्तिं श्रद्धामपि च सौहृदम्।
मया जन्मदिनं तेभ्यः ख्यातं निर्मलचेतसा॥५१॥

श्रुत्वा तेऽपि तथा चक्रुर्विधिना येन तच्छृणु।
पार्थ तद्विवसे प्राप्ते दन्तधावनपूर्वकम्॥५२॥

स्नात्वा पुण्यजले शुद्धे वाससी परिधाय च।
निर्वर्त्यावश्यकं कर्म व्रतसङ्कल्पमाचरेत्॥५३॥

अद्य स्थित्वा निराहारः श्वभूते तु परेऽहनि।
भोक्ष्यामि पुण्डरीकाक्ष शरणं मे भवाव्यय॥५४॥

गृहीत्वा नियमं चैव सम्पाद्यार्चनसाधनम्।
मण्डपं शोभनं कृत्वा फलपुष्पादिभिर्युतम्॥५५॥

तस्मिन्मां पूजयेद्भक्त्या गन्धपुष्पादिभिः क्रमात्।
उपचारैः षोडशभिर्द्वादशाक्षरविद्यया॥५६॥

सद्यःप्रसूतां जननीं वसुदेवं च मारिषः।
बलदेवसमायुक्तां रोहिणीं गुणशोभिनीम्॥५७॥

नन्दं यशोदां गोपीश्च गोपान् गाश्चैव सर्वशः।
गोकुलं यमुनां चैव योगमायां च दारिकाम्॥५८॥

यशोदाशयने सुप्तां सद्योजातां वरप्रभाम्।
एवं सम्पूजयेत्सम्यङ्गाममत्रैः पृथक्पृथक्॥५९॥

सुवर्णरौप्यताम्रारमृदादिभिरलङ्कृताः ।
काष्ठपाषाणरचिताश्चित्रमय्योऽथ लेखिताः॥६०॥

प्रतिमा विविधाः प्रोक्तास्तासु चान्यतमां यजेत्।
रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतनृत्यादिभिः सह॥६१॥

पुराणैः स्तोत्रपाठैश्च जातनामादिसूत्सवैः।
श्वभूते पारणं कुर्याद् द्विजान् सम्भोज्य यत्नतः॥६२॥

एवं कृते महाराज व्रतानामुत्तमे व्रते।
सर्वान्कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते॥६३॥

मोहान्न कुरुते यस्तु याति संसारगह्वरे।
तस्मात्कुर्वन्प्रयत्नेन निष्पापो जायते नरः॥६४॥

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।
अङ्गदेशोद्भवो राजा मित्रजिन्नाम नामतः॥६५॥

तस्य पुत्रो महातेजः सत्यजित्सत्पथे स्थितः।
पालयामास धर्मज्ञो विधिवद्रञ्जयन्प्रजाः॥६६॥

तस्यैवं वर्तमानस्य कदाचिदैवयोगतः।
पापण्डैः सह संवासो बभूव बहुवासरम्॥६७॥

तत्संसर्गात्स नृपतिरधर्मनिरतोऽभवत्।
वेदशास्त्रपुराणानि विनिन्द्य बहुशो नृप॥६८॥

ब्राह्मणेषु तथा धर्मे विद्वेषं परमं गतः।
एवं बहुतिथे काले गते भरतसत्तम॥६९॥

कालेन निधनप्राप्तो यमदूतवशं गतः।
बद्धा पाशैर्नीयमानो यमदूतैर्यमान्तिकम्॥७०॥

पीडितस्ताड्यमानोऽसौ दुष्टसङ्गवशं गतः।
नरके पतितः पापो यातनां बहुवत्सरम्॥७१॥

भुक्त्वा पापस्य शेषेण पैशाची योनिमास्थितः।
तृषाक्षुधासमाक्रान्तो भ्रमन्स मरुधन्वसु॥७२॥

कस्यचित्त्वथ वैश्यस्य देहमाविश्य संस्थितः।
सह तेनैव सम्प्राप्तो मथुरा पुण्यदां पुरीम्॥७३॥

तत्रत्यैरक्षकैः सोऽथ तद्देहात्तु बहिष्कृतः।
बभ्राम विपिने सोऽपि ऋषीणामाश्रमेष्वपि॥७४॥

कदाचिद् दैवयोगेन मम जन्माष्टमीदिने।
क्रियमाणां महापूजां व्रतिभिर्मुनिभिर्द्विजैः॥७५॥

रात्रौ जागरणं चैव नामसङ्कीर्तनादिभिः।
ददर्श सर्वं विधिवच्छुश्राव च हरेः कथाः॥७६॥

निष्पापस्तत्क्षणादेव शुद्धनिर्मलमानसः।
 प्रेतदेहं समुत्सृज्य विष्णुलोकं विमानतः॥७७॥
 मम दूतैः समानीतो दिव्यभोगसमन्वितः।
 मम सान्निध्यमापन्नो व्रतस्यास्य प्रभावतः॥७८॥
 नित्यमेव व्रतं चैतत् पुराणे सार्वकालिकम्।
 गीयते विधिवत्सम्यङ्मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥७९॥
 सार्वकालिकमेवैतत्कृत्वा कामानवाप्नुयात्।
 एतत्ते सर्वमाख्यातं व्रतानामुत्तमं व्रतम्।
 मम सान्निध्यकृद्राजन्किं भूयः श्रोतुमिच्छसि॥८०॥
 ॥इति भविष्ये जन्माष्टमीव्रतकथा

॥ व्रतोद्यापनम् ॥

युधिष्ठिर उवाच

उद्यापनविधिं ब्रूहि सर्वदेव दयानिधे।
 येन सम्पूर्णतां याति व्रतमेतदनुत्तमम्॥१॥

श्रीकृष्ण उवाच

पूर्णां तिथिमनुप्राप्य वित्तचित्तादिसंयुतः।
 पूर्वद्युरेकभक्ताशी स्वपेन्मां संस्मरन्हृदि॥२॥
 प्रातरुत्थाय संस्मृत्य पुण्यश्लोकान् समाहितः।
 निर्वर्त्यावश्यकं कर्म ब्राह्मणान्स्वस्ति वाचयेत्॥३॥
 गुरुमानीय धर्मज्ञं वेदवेदाङ्गपारगम्।
 वृणुयादृत्विजश्चैव वस्त्रालङ्कारणादिभिः॥४॥
 पलेन वा तदर्धेन तदर्धार्धेन वा पुनः।
 शक्त्या वाऽपि नृपश्रेष्ठ वित्तशाठ्यविवर्जितः॥५॥

सौवर्णीं प्रतिमां कुर्यात्पाद्यार्घ्याचमनीयकम्।
पात्रं सम्पाद्य विधिवत्पूजोपकरणं तथा॥६॥

गोचर्ममात्रं संलिप्य मध्ये मण्डलमाचरेत्।
ब्रह्माद्या देवतास्तत्र स्थापयित्वा प्रपूजयेत्॥७॥

मण्डपं रचयेत्तत्र कदलीस्तम्भमण्डितम्।
चतुर्द्वारसमोपेतं फलपुष्पादिशोभितम्॥८॥

वितानं तत्र बध्नीयाद्विचित्रं चैव शोभनम्।
मण्डले स्थापयेत्कुम्भं ताम्रं वा मृन्मयं शुचिम्॥९॥

तस्योपरि न्यसेत्पात्रं राजतं वैष्णवं तु वा।
वाससाऽऽच्छाद्य कौन्तेय पूजयेत्तत्र मां बुधः॥१०॥

उपचारैः षोडशभिर्मन्त्रैरेतैः समाहितः।
ध्यात्वाऽऽवाह्यामृतीकृत्य स्वागतादिभिरादरात्॥११॥

ध्यायेच्चतुर्भुजं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्।
पीताम्बरयुगोपेतं लक्ष्मीयुक्तं विभूषितम्।
लसत्कौस्तुभशोभाढ्यं मेघश्यामं सुलोचनम्॥१२॥

ध्यानम्॥

आगच्छ देवदेवेश जगद्योने रमापते।
शुद्धे ह्यस्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहि कृपां कुरु॥१३॥

आवाहनम्॥

देवदेव जगन्नाथ गरुडासनसंस्थित।
गृहाण चासनं दिव्यं जगद्धातर्नमोऽस्तु ते॥१४॥

आसनम्॥

नानातीर्थाहृतं तोयं निर्मलं पुष्पमिश्रितम्।
पाद्यं गृहाण देवेश विश्वरूप नमोऽस्तु ते॥१५॥

पाद्यम्॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो भक्त्याऽऽनीतं सुशीतलम्।
गन्धपुष्पाक्षतोपेतं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥१६॥

अर्घ्यम्॥

कृष्णावेणीसमुद्भूतं कालिन्दीजलसंयुतम्।
गृहाणाऽऽचमनं देव विश्वकाय नमोऽस्तु ते॥१७॥

आचमनम्॥

दधि क्षौद्रं घृतं शुद्धं कपिलायाः सुगन्धि यत्।
सुस्वादु मधुरं शौरे मधुपर्कं गृहाण मे॥१८॥

मधुपर्कम्॥ पुनराचमनम्॥

पञ्चामृतेन स्नपनं करिष्यामि सुरोत्तम।
क्षीरोदधिनिवासाय लक्ष्मीकान्ताय ते नमः॥१९॥

पञ्चामृतस्नानम्॥

मन्दाकिनी गौतमी च यमुना च सरस्वती।
ताभ्यः स्नानार्थमानीतं गृहाण शिशिरं जलम्॥२०॥

स्नानम्॥ पुनराचमनम्॥

शुद्धजाम्बूनदप्रख्ये तडिद्वासुररोचिषी।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥२१॥

वस्त्रयुग्मम्॥

यज्ञोपवीतमिति यज्ञोपवीतम्॥

किरीटकुण्डलादीनि काञ्चीवलययुग्मकम्।
कौस्तुभं वनमालां च भूषणानि भजस्व मे॥२२॥

भूषणानि॥

मलयाचलसम्भूतं घनसारं मनोहरम्।
हृदयानन्दनं चारु चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥२३॥

चन्दनम्॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठेति कुङ्कुमाक्षतान्।

मालतीचम्पकादीनि यूथिकाबकुलानि च।
तुलसीपत्रमिश्राणि गृहाण सुरसत्तम॥२४॥

पुष्पाणि॥

अथाङ्गपूजा-

अघनाशनाय नमः — पादौ पूजयामि।

वामनाय नमः — गुल्फौ पूजयामि।

शौरये नमः — जङ्घे पूजयामि।

वैकुण्ठवासिने नमः — ऊरू पूजयामि।

पुरुषोत्तमाय नमः — मेढ्रं पूजयामि।

वासुदेवाय नमः — कटिं पूजयामि।

हृषीकेशाय नमः — नाभिं पूजयामि।

माधवाय नमः — हृदयं पूजयामि।

मधुसूदनाय नमः — कण्ठं पूजयामि।

वराहाय नमः — बाहून् पूजयामि।

नृसिंहाय नमः — हस्तौ पूजयामि।

दैत्यसूदनाय नमः — मुखं पूजयामि।

दामोदराय नमः — नासिकां पूजयामि।
 पुण्डरीकाक्षाय नमः — नेत्रे पूजयामि।
 गरुडध्वजाय नमः — श्रोत्रे पूजयामि।
 गोविन्दाय नमः — ललाटं पूजयामि।
 अच्युताय नमः — शिरः पूजयामि।
 कृष्णाय नमः — सर्वाङ्गं पूजयामि॥
 अथ परिवारदेवतापूजा—

देवकीं वसुदेवं च रोहिणीं सबलां तथा।
 सात्यकिं चोद्धवाक्रूरावुग्रसेनादियादवान्॥२५॥

नन्दं यशोदां तत्कालप्रसूतां गोपगोपिकाः।
 कालिन्दीं कालियं चैव पूजयेन्नाममन्त्रतः॥२६॥

वनस्पतिरसोद्भूतं कालागुरुसमन्वितम्।
 धूपं गृहाण गोविन्द गुणसागर गोपते॥२७॥

धूपम्॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तम्॥

दीपम्॥

शाल्योदनं पायसं च सिताघृतविमिश्रितम्।
 नानापक्वान्नसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥२८॥

नैवेद्यम्। उत्तरापोशनम्॥

इदं फलमिति फलम्॥

पूगीफलमिति ताम्बूलम्॥

हिरण्यगर्भेति दक्षिणाम्॥

नीराजयेत्ततो भक्त्या मङ्गलं समुदीरयन्।
जयमङ्गलनिर्घोषैर्देवदेवं समर्चयेत्॥ २९॥

नीराजनम्॥

दत्त्वा पुष्पाञ्जलिं चैव प्रदक्षिणपुरःसरम्।
प्रणमेद्वण्डवद् भूभौ भक्तिप्रह्वः पुनः पुनः॥ ३०॥

स्तुत्वा नानाविधैः स्तोत्रैः प्रार्थयेत जगत्पतिम्॥

नमस्तुभ्यं जगन्नाथ देवकीतनय प्रभो।
वसुदेवात्मजानन्त यशोदानन्दवर्धन॥ ३१॥

गोविन्द गोकुलाधार गोपीकान्त नमोऽस्तु ते।
ततस्तु दापयेदर्घ्यमिन्दोरुदयतः शुचिः॥ ३२॥

कृष्णाय प्रथमं दद्याद् देवकीसहिताय च।
नालिकेरेण शुद्धेन मुक्तमर्घ्यं विचक्षण॥ ३३॥

कृष्णाय परया भक्त्या शङ्खे कृत्वा विधानतः॥

जातः कंसवधार्थाय भूभारोत्तारणाय च।
कौरवाणां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥ ३४॥

पाण्डवानां हितार्थाय धर्मसंस्थापनाय च।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं देवकीसहितो हरे॥ ३५॥

कृष्णार्घ्यमन्त्रः॥

शङ्खे कृत्वा ततस्तोयं सपुष्पफलचन्दनम्।
जानुभ्यामवनिं गत्वा चन्द्रायार्घ्यं निवेदयेत्॥ ३६॥

क्षीरोदार्णवसम्भूत अत्रिगोत्रसमुद्भव।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं रोहिण्या सहित प्रभो॥ ३७॥

ज्योत्स्नापते नमस्तुभ्यं नमस्ते ज्योतिषां पते।
नमस्ते रोहिणीकान्त गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३८॥

चन्द्रार्घ्यमन्त्रः॥

इत्थं सम्पूज्य देवेशं रात्रौ जागरणं चरेत्।
गीतनृत्यादिना चैव पुराणश्रवणादिभिः॥३९॥

प्रत्यूषे विमले स्नात्वा पूजयित्वा जगद्गुरुम्।
पायसेन तिलाज्यैश्च मूलमन्त्रेण भक्तितः॥४०॥

अष्टोत्तरशतं हुत्वा ततः पुरुषसूक्ततः।
इदं विष्णुरिति प्रोक्त्वा जुहुयाद्वै घृताहुतीः॥४१॥

होमशेषं समाप्याथ पूर्णाहुतिपुरःसरम्।
आचार्यं पूजयेद्भक्त्या भूषणाच्छादनादिभिः॥४२॥

गामेकां कपिलां दद्याद् व्रतसम्पूर्तिहेतवे।
पयस्विनीं सुशीलां च सवत्सां सगुणां तथा॥४३॥

स्वर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां कांस्यदोहनिकायुताम्।
रत्नपुच्छां ताम्रपृष्ठीं स्वर्णघण्टासमन्विताम्॥४४॥

वस्त्रच्छन्नां दक्षिणाढ्यामेवं सम्पूर्णतां व्रजेत्।
कपिलाया अभावे तु गौरन्याऽपि प्रदीयते॥४५॥

ततो दद्याच्च ऋत्विग्भ्योऽन्येभ्यश्चैव यथाविधि।
शय्यां सोपस्करां दद्याद् व्रतसम्पूर्तिहेतवे॥४६॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादष्टौ तेभ्यश्च दक्षिणाम्।
कलशान्नसम्पूर्णान्दद्याच्चैव समाहितः॥४७॥

दीनान्धकृपणांश्चैव यथार्हं प्रतिपूजयेत्।
प्राप्यानुज्ञां तथा तेभ्यो भुञ्जीत सह बन्धुभिः॥४८॥

एवं कृते महाराज व्रतोद्यापनकर्मणि।
निष्पापस्तत्क्षणादेव जायते विबुधोपमः॥४९॥

पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमन्वितः।
भुक्त्वा भोगांश्चिरं कालमन्ते मम पुरं व्रजेत्॥५०॥

॥इति श्रीभविष्यपुराणे कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे जन्माष्टमीव्रतोद्यापनं सम्पूर्णम्॥

॥ श्रीमद्भागवते महापुराणे दशमस्कन्धे पूर्वार्धे तृतीयोऽध्यायः ॥

श्रीशुक उवाच

अथ सर्वगुणोपेतः कालः परमशोभनः।
यर्ह्येवाजनजन्मर्क्षं शान्तर्क्षग्रहतारकम्॥१॥

दिशः प्रसेदुर्गगनं निर्मलोद्गुणोदयम्।
मही मङ्गलभूयिष्ठ पुरग्रामव्रजाकरा॥२॥

नद्यः प्रसन्नसलिला हृदा जलरुहश्रियः।
द्विजालिकुलसन्नाद स्तवका वनराजयः॥३॥

ववौ वायुः सुखस्पर्शः पुण्यगन्धवहः शुचिः।
अग्नयश्च द्विजातीनां शान्तास्तत्र समिन्धत॥४॥

मनांस्यासन्प्रसन्नानि साधूनामसुरद्रुहाम्।
जायमानेऽजने तस्मिन्नेदुर्दुन्दुभयः समम्॥५॥

जगुः किन्नरगन्धर्वास्तुष्टुवुः सिद्धचारणाः।
विद्याधर्यश्च ननृतुरप्सरोभिः समं मुदा॥६॥

मुमुचुर्मुनयो देवाः सुमनांसि मुदान्विताः।
मन्दं मन्दं जलधरा जगर्जुरनुसागरम्॥७॥

निशीथे तम उद्धूते जायमाने जनार्दने।
देवक्यां देवरूपिण्यां विष्णुः सर्वगुहाशयः।
आविरासीद्यथा प्राच्यां दिशीन्दुरिव पुष्कलः॥८॥

तमद्भुतं बालकमम्बुजेक्षणं
चतुर्भुजं शङ्खगदाद्युदायुधम्।
श्रीवत्सलक्ष्मं गलशोभिकौस्तुभं
पीताम्बरं सान्द्रपयोदसौभगम्॥९॥

महार्हवैदूर्यकिरीटकुण्डल-
त्विषा परिष्वक्तसहस्रकुन्तलम्।
उद्दामकाश्र्यङ्गदकङ्कणादिभिर्-
विरोचमानं वसुदेव ऐक्षत॥१०॥

स विस्मयोत्फुल्लविलोचनो हरिं
सुतं विलोक्यानकदुन्दुभिस्तदा।
कृष्णावतारोत्सवसम्भ्रमोऽस्पृशन्
मुदा द्विजेभ्योऽयुतमाप्लुतो गवाम्॥११॥

अथैनमस्तौदवधार्य पूरुषं
परं नताङ्गः कृतधीः कृताञ्जलिः।
स्वरोचिषा भारत सूतिकागृहं
विरोचयन्तं गतभीः प्रभाववित्॥१२॥

श्रीवसुदेव उवाच

विदितोऽसि भवान्साक्षात्पुरुषः प्रकृतेः परः।
केवलानुभवानन्द स्वरूपः सर्वबुद्धिदृक्॥१३॥

स एव स्वप्रकृत्येदं सृष्ट्वाग्रे त्रिगुणात्मकम्।
तदनु त्वं ह्यप्रविष्टः प्रविष्ट इव भाव्यसे॥१४॥

यथेमेऽविकृता भावास्तथा ते विकृतैः सह।
नानावीर्याः पृथग्भूता विराजं जनयन्ति हि॥१५॥

सन्निपत्य समुत्पाद्य दृश्यन्तेऽनुगता इव।
प्रागेव विद्यमानत्वान्न तेषामिह सम्भवः॥१६॥

एवं भवान्बुद्ध्यनुमेयलक्षणैर्-
ग्राह्यैर्गुणैः सन्नपि तद्गुणाग्रहः।
अनावृतत्वाद्बहिरन्तरं न ते
सर्वस्य सर्वात्मन आत्मवस्तुनः॥१७॥

य आत्मनो दृश्यगुणेषु सन्निति
व्यवस्यते स्वव्यतिरेकतोऽबुधः।
विनानुवादं न च तन्मनीषितं
सम्यग्यतस्त्यक्तमुपाददत्पुमान्॥१८॥

त्वत्तोऽस्य जन्मस्थितिसंयमान्विभो
वदन्त्यनीहादगुणादविक्रियात्।
त्वयीश्वरे ब्रह्मणि नो विरुध्यते
त्वदाश्रयत्वादुपचर्यते गुणैः॥१९॥

स त्वं त्रिलोकस्थितये स्वमायया
बिभर्षि शुक्लं खलु वर्णमात्मनः।
सर्गाय रक्तं रजसोपबृंहितं
कृष्णं च वर्णं तमसा जनात्यये॥२०॥

त्वमस्य लोकस्य विभो रिरक्षिषुर्-
गृहेऽवतीर्णोऽसि ममाखिलेश्वर।
राजन्यसंज्ञासुरकोटियूथपैर्-
निर्व्यूह्यमाना निहनिष्यसे चमूः॥२१॥

अयं त्वसभ्यस्तव जन्म नौ गृहे
 श्रुत्वाग्रजांस्ते न्यवधीत्सुरेश्वर।
 स तेऽवतारं पुरुषैः समर्पितं
 श्रुत्वाधुनैवाभिसरत्युदायुधः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच

अथैनमात्मजं वीक्ष्य महापुरुषलक्षणम्।
 देवकी तमुपाधावत्कंसाद्धीता सुविस्मिता ॥ २३ ॥

श्रीदेवक्युवाच

रूपं यत्तत्प्राहुरव्यक्तमाद्यं
 ब्रह्म ज्योतिर्निर्गुणं निर्विकारम्।
 सत्तामात्रं निर्विशेषं निरीहं
 स त्वं साक्षाद्विष्णुरध्यात्मदीपः ॥ २४ ॥

नष्टे लोके द्विपरार्धावसाने
 महाभूतेष्वादिभूतं गतेषु।
 व्यक्तेऽव्यक्तं कालवेगेन याते
 भवानेकः शिष्यतेऽशेषसंज्ञः ॥ २५ ॥

योऽयं कालस्तस्य तेऽव्यक्तबन्धो
 चेष्टामाहुश्चेष्टते येन विश्वम्।
 निमेषादिर्वत्सरान्तो महीयांस्
 तं त्वेशानं क्षेमधाम प्रपद्ये ॥ २६ ॥

मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायन्
 लोकान्सर्वान्निर्भयं नाध्यगच्छत्।
 त्वत्पादाब्जं प्राप्य यदृच्छयाद्य
 सुस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ २७ ॥

स त्वं घोरादुग्रसेनात्मजात्रस्-
 त्राहि त्रस्तान्भृत्यवित्रासहासि।
 रूपं चेदं पौरुषं ध्यानधिष्यं
 मा प्रत्यक्षं मांसदृशां कृषीष्ठाः॥२८॥

जन्म ते मय्यसौ पापो मा विद्यान्मधुसूदन।
 समुद्विजे भवद्धेतोः कंसादहमधीरधीः॥२९॥

उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकम्।
 शङ्खचक्रगदापद्म श्रिया जुष्टं चतुर्भुजम्॥३०॥

विश्वं यदेतत्स्वतनौ निशान्ते
 यथावकाशं पुरुषः परो भवान्।
 बिभर्ति सोऽयं मम गर्भगोऽभू-
 दहो नृलोकस्य विडम्बनं हि तत्॥३१॥

श्रीभगवानुवाच

त्वमेव पूर्वसर्गेऽभूः पृश्निः स्वायम्भुवे सति।
 तदायं सुतपा नाम प्रजापतिरकल्मषः॥३२॥

युवां वै ब्रह्मणादिष्टौ प्रजासर्गे यदा ततः।
 सन्नियम्येन्द्रियग्रामं तेपाथे परमं तपः॥३३॥

वर्षवातातपहिम घर्मकालगुणाननु।
 सहमानौ श्वासरोध विनिर्धूतमनोमलौ॥३४॥

शीर्णपर्णानिलाहारावुपशान्तेन चेतसा।
 मत्तः कामानभीप्सन्तौ मदाराधनमीहतुः॥३५॥

एवं वां तप्यतोस्तीव्रं तपः परमदुष्करम्।
 दिव्यवर्षसहस्राणि द्वादशेयुर्मदात्मनोः॥३६॥

तदा वां परितुष्टोऽहममुना वपुषानघे।
तपसा श्रद्धया नित्यं भक्त्या च हृदि भावितः॥३७॥

प्रादुरासं वरदराड्युवयोः कामदित्सया।
त्रियतां वर इत्युक्ते मादृशो वां वृतः सुतः॥३८॥

अजुष्टग्राम्यविषयावनपत्यौ च दम्पती।
न वव्राथेऽपवर्गं मे मोहितौ देवमायया॥३९॥

गते मयि युवां लब्ध्वा वरं मत्सदृशं सुतम्।
ग्राम्यान्भोगानभुञ्जाथां युवां प्राप्तमनोरथौ॥४०॥

अदृष्ट्वान्यतमं लोके शीलौदार्यगुणैः समम्।
अहं सुतो वामभवं पृश्निगर्भ इति श्रुतः॥४१॥

तयोर्वा पुनरेवाहमदित्यामास कश्यपात्।
उपेन्द्र इति विख्यातो वामनत्वाच्च वामनः॥४२॥

तृतीयेऽस्मिन्भवेऽहं वै तेनैव वपुषाथ वाम्।
जातो भूयस्तयोरेव सत्यं मे व्याहृतं सति॥४३॥

एतद्वां दर्शितं रूपं प्राग्जन्मस्मरणाय मे।
नान्यथा मद्भवं ज्ञानं मर्त्यलिङ्गेन जायते॥४४॥

युवां मां पुत्रभावेन ब्रह्मभावेन चासकृत्।
चिन्तयन्तौ कृतस्नेहौ यास्येथे मद्भतिं पराम्॥४५॥

श्रीशुक उवाच

इत्युक्त्वासीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया।
पित्रोः सम्पश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः॥४६॥

ततश्च शौरिर्भगवत्प्रचोदितः
 सुतं समादाय स सूतिकागृहात्।
 यदा बहिर्गन्तुमियेष तर्ह्यजा
 या योगमायाजनि नन्दजायया॥४७॥

तया हृतप्रत्ययसर्ववृत्तिषु
 द्वाःस्थेषु पौरेष्वपि शायितेष्वथ।
 द्वारश्च सर्वाः पिहिता दुरत्यया
 बृहत्कपाटायसकीलशृङ्खलैः ॥४८॥

ताः कृष्णवाहे वसुदेव आगते
 स्वयं व्यवर्यन्त यथा तमो रवेः।
 ववर्ष पर्जन्य उपांशुगर्जितः
 शेषोऽन्वगाद्वारि निवारयन्फणैः॥४९॥

मघोनि वर्षत्यसकृद्यमानुजा
 गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला ।
 भयानकावर्तशताकुला नदी
 मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः॥५०॥

नन्दव्रजं शौरिरुपेत्य तत्र तान्
 गोपान्प्रसुप्तानुपलभ्य निद्रया।
 सुतं यशोदाशयने निधाय तत्
 सुतामुपादाय पुनर्गृहानगात्॥५१॥

देवक्याः शयने न्यस्य वसुदेवोऽथ दारिकाम्।
 प्रतिमुच्य पदोर्लोहमास्ते पूर्ववदावृतः॥५२॥

यशोदा नन्दपत्नी च जातं परमबुध्यता।
 न तल्लिङ्गं परिश्रान्ता निद्रयापगतस्मृतिः॥५३॥

॥इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहंस्यां संहितायां दशमस्कन्धे
पूर्वार्धे तृतीयोऽध्यायः॥



॥ श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्वं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-सिद्धिविनायक-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये
()^{२५} नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (सिंह/कन्या)-भाद्रपद-
मासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्या शुभतिथौ () वासरयुक्तायाम् ()^{२६} नक्षत्र
()^{२७} नाम योग (वणिजा/भद्रा)^{२८}-करण युक्तायां च एवं गुण
विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् चतुर्थ्या शुभतिथौ अस्माकं सकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थं मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-सिद्धिविनायक-प्रसादसिद्ध्यर्थं
यथाशक्ति-ध्यानावाहनादिषोडशोपचारैः श्री-सिद्धिविनायक-पूजां करिष्ये।
तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^{२५}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{२६}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{२७}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

^{२८}पृष्ठं १२९ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽष्यापो यजूऽष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ प्राण-प्रतिष्ठा ॥

असुनीते पुनरिति ऋचं पठित्वा गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कार सिद्धयर्थं पञ्चदशप्रणवावृत्तीः करिष्ये इति सङ्कल्प्य पञ्चदशवारं प्रणवमावर्त्य तच्चक्षुर्देवहितम् इति मन्त्रेण देवस्याज्येन नेत्रोन्मीलनं कृत्वा पञ्चोपचारैः पूजनं कुर्यात्। आसनविधिं कृत्वा पुरुषसूक्त-न्यासान् विधाय पूजनमारभेत्॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

करिष्ये गणनाथस्य व्रतं सम्पत्करं शुभम्।
भक्तानामिष्टवरदं सर्वमङ्गल-कारणम्॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥

ध्यायेद् देवं महाकायं तप्तकाञ्चनसन्निभम्।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम्॥

दन्ताक्षमाला-परशु-पूर्णमोदक-हस्तकम् ।
मोदकासक्त-शुण्डाग्रम् एकदन्तं विनायकम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकं ध्यायामि।

आवाहयामि विघ्नेश सुरराजार्चितेश्वर।
अनाथनाथ सर्वज्ञ पूजार्थं गणनायक॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे/प्रतिमायां/चित्रपटे श्री-सिद्धिविनायकम् आवाहयामि।

विचित्ररत्नरचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृहाण सुरपूजित॥

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आसनं समर्पयामि।

सर्वतीर्थसमानीतं पाद्यं गन्धादिसंयुतम्।
विघ्नराज गृहाणेनदं भगवन् भक्तवत्सल॥

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तु गृहाण करुणानिधे॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मूकामत्। साशानानशने अभि॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।
गङ्गाहतेन तोयेन शीघ्रमाचमनं कुरु॥

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिर्माथो पुरः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
गृहाण सर्वलोकेश गणनाथ नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुषेण हविषा॥ देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पयो दधि घृतं चैव शर्करामधुसंयुतम्।
पञ्चामृतं गृहाणेदं स्नानाय गणनायक॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पञ्चामृतस्नानम् समर्पयामि।

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
भक्त्या समर्पितं तुभ्यं स्नानायाभीष्टदायक॥

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वा॒नाः। अब॑ध्नन् पुरु॒षं प॒शुम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

रक्तवस्त्रयुगं देव दिव्यं काञ्चनसम्भवम्।
सर्वप्रदं गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज॥

तं यज्ञं ब॒र्हिषि प्रौक्षन्। पुरु॑षं जा॒तम॑ग्र॒तः।
तेन॑ दे॒वा अये॑जन्त। सा॒ध्या ऋषे॑यश्च॒ ये॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

राजतं ब्रह्मसूत्रं च काञ्चनं चोत्तरीयकम्।
गृहाण चारु सर्वज्ञ भक्तानां वरदो भव॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
प॒शूँस्ताँश्च॑क्रे वाय॒व्यान्। आ॒र॒ण्यान्प्रा॒म्याश्च॒ ये॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

उद्यद्भास्करसङ्काशं सन्ध्यावदरुणं प्रभो।
वीरालङ्करणं दिव्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

नानाविधानि दिव्यानि नानारत्नोज्ज्वलानि च।
भूषणानि गृहाणेश पार्वतीप्रियनन्दन॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, आभरणानि समर्पयामि।

कस्तूरीरोचनाचन्द्रकुङ्कुमैश्च समन्वितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि
हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

रक्ताक्षतांश्च देवेश गृहाण द्विरदानन।
ललाटपटले चन्द्रस्तस्योपरि विधार्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि मे प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

करवीरैर्जातिकुसुमैश्चम्पकैर्बकुलैः शुभैः।
शतपत्रैश्च कल्लैरैरर्चयेद् गणनायकम्॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादंतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

| | | | |
|-----|----------------|---------------|---------|
| १. | पार्वतीनन्दनाय | नमः — पादौ | पूजयामि |
| २. | गणेशाय | नमः — गुल्फौ | पूजयामि |
| ३. | जगद्धात्रे | नमः — जङ्घे | पूजयामि |
| ४. | जगद्वल्लभाय | नमः — जानुनी | पूजयामि |
| ५. | उमापुत्राय | नमः — ऊरू | पूजयामि |
| ६. | विकटाय | नमः — कटिं | पूजयामि |
| ७. | गुहाग्रजाय | नमः — गुह्यं | पूजयामि |
| ८. | महत्तमाय | नमः — मेढ्रं | पूजयामि |
| ९. | नाथाय | नमः — नाभिं | पूजयामि |
| १०. | उत्तमाय | नमः — उदरं | पूजयामि |
| ११. | विनायकाय | नमः — वक्षः | पूजयामि |
| १२. | पाशच्छिदे | नमः — पाश्वौ | पूजयामि |
| १३. | हेरम्बाय | नमः — हृदयं | पूजयामि |
| १४. | कपिलाय | नमः — कण्ठं | पूजयामि |
| १५. | स्कन्दाग्रजाय | नमः — स्कन्धौ | पूजयामि |
| १६. | हरसुताय | नमः — हस्तान् | पूजयामि |
| १७. | ब्रह्मचारिणे | नमः — बाहून् | पूजयामि |
| १८. | सुमुखाय | नमः — मुखं | पूजयामि |
| १९. | एकदन्ताय | नमः — दन्तौ | पूजयामि |
| २०. | विघ्नेत्रे | नमः — नेत्रे | पूजयामि |
| २१. | शूर्पकर्णाय | नमः — कर्णौ | पूजयामि |
| २२. | फालचन्द्राय | नमः — फालं | पूजयामि |
| २३. | नागाभरणाय | नमः — नासिकां | पूजयामि |

| | | | |
|-----|-----------------|----------------------|---------|
| २४. | चिरन्तनाय | नमः — चुबुकं | पूजयामि |
| २५. | स्थूलौष्ठाय | नमः — ओष्ठौ | पूजयामि |
| २६. | गलन्मदाय | नमः — गण्डौ | पूजयामि |
| २७. | कपिलाय | नमः — कचान् | पूजयामि |
| २८. | शिवप्रियाय | नमः — शिरः | पूजयामि |
| २९. | सर्वमङ्गलासुताय | नमः — सर्वाण्यङ्गानि | पूजयामि |

॥ एकविंशति-पत्र-पूजा ॥

| | | | |
|-----|---------------|---------------------|------------------|
| १. | सुमुखाय | नमः — मालती | -पत्रं समर्पयामि |
| २. | उमापुत्राय | नमः — माची | -पत्रं समर्पयामि |
| ३. | हेरम्बाय | नमः — बृहती | -पत्रं समर्पयामि |
| ४. | लम्बोदराय | नमः — बिल्व | -पत्रं समर्पयामि |
| ५. | द्विरदाननाय | नमः — दूर्वा | -पत्रं समर्पयामि |
| ६. | धूमकेतवे | नमः — दुर्धूर | -पत्रं समर्पयामि |
| ७. | बृहते | नमः — बदरी | -पत्रं समर्पयामि |
| ८. | अपवर्गदाय | नमः — अपामार्ग | -पत्रं समर्पयामि |
| ९. | द्वैमातुराय | नमः — तुलसी | -पत्रं समर्पयामि |
| १०. | चिरन्तनाय | नमः — चूत | -पत्रं समर्पयामि |
| ११. | कपिलाय | नमः — करवीर | -पत्रं समर्पयामि |
| १२. | विष्णुस्तुताय | नमः — विष्णुक्रान्त | -पत्रं समर्पयामि |
| १३. | अमलाय | नमः — आमलकी | -पत्रं समर्पयामि |
| १४. | महते | नमः — मरुवक | -पत्रं समर्पयामि |
| १५. | सिन्धूराय | नमः — सिन्धूर | -पत्रं समर्पयामि |
| १६. | गजाननाय | नमः — जाती | -पत्रं समर्पयामि |

१७. गण्डगलन्मदाय नमः — गण्डली -पत्रं समर्पयामि
 १८. शङ्करीप्रियाय नमः — शमी -पत्रं समर्पयामि
 १९. भृङ्गराजत्कटाय नमः — भृङ्गराज -पत्रं समर्पयामि
 २०. अर्जुनदन्ताय नमः — अर्जुन -पत्रं समर्पयामि
 २१. अर्कप्रभाय नमः — अर्क -पत्रं समर्पयामि

॥ एकविंशति-पुष्प-पूजा ॥

१. पञ्चास्य -गणपतये नमः — पुन्नाग -पुष्पं समर्पयामि
 २. महा -गणपतये नमः — मन्दार -पुष्पं समर्पयामि
 ३. धीर -गणपतये नमः — दाडिमी -पुष्पं समर्पयामि
 ४. विष्वक्सेन-गणपतये नमः — वकुल -पुष्पं समर्पयामि
 ५. आमोद -गणपतये नमः — अमृणाल -पुष्पं समर्पयामि
 ६. प्रमथ -गणपतये नमः — पाटली -पुष्पं समर्पयामि
 ७. रुद्र -गणपतये नमः — द्रोण -पुष्पं समर्पयामि
 ८. विद्या -गणपतये नमः — दुर्धूर -पुष्पं समर्पयामि
 ९. विघ्न -गणपतये नमः — चम्पक -पुष्पं समर्पयामि
 १०. दुरित -गणपतये नमः — रसाल -पुष्पं समर्पयामि
 ११. कामितार्थ -गणपतये नमः — केतकी -पुष्पं समर्पयामि
 १२. सम्मोह -गणपतये नमः — माधवी -पुष्पं समर्पयामि
 १३. विष्णु -गणपतये नमः — श्यामक -पुष्पं समर्पयामि
 १४. ईश -गणपतये नमः — अर्क -पुष्पं समर्पयामि
 १५. गजास्य -गणपतये नमः — कह्लार -पुष्पं समर्पयामि
 १६. सर्वसिद्धि -गणपतये नमः — सेवन्तिका -पुष्पं समर्पयामि
 १७. वीर -गणपतये नमः — बिल्व -पुष्पं समर्पयामि

| | | | | |
|-----|----------|---------------|---------|-------------------|
| १८. | कन्दर्प | -गणपतये नमः — | करवीर | -पुष्पं समर्पयामि |
| १९. | उच्छिष्ट | -गणपतये नमः — | कुन्द | -पुष्पं समर्पयामि |
| २०. | ब्रह्म | -गणपतये नमः — | पारिजात | -पुष्पं समर्पयामि |
| २१. | ज्ञान | -गणपतये नमः — | जाती | -पुष्पं समर्पयामि |

॥ एकविंशति-दूर्वायुग्म-पूजा ॥

| | | | | |
|-----|-------------------|-------|--------------|------------|
| १. | गणाधिपाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| २. | पाशाङ्कुशधराय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ३. | आखुवाहनाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ४. | विनायकाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ५. | ईशपुत्राय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ६. | सर्वसिद्धि-प्रदाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ७. | एकदन्ताय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ८. | इभवक्राय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ९. | मूषिकवाहनाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १०. | कुमारगुरवे | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| ११. | कपिलवर्णाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १२. | ब्रह्मचारिणे | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १३. | मोदकहस्ताय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १४. | सुरश्रेष्ठाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १५. | गजनासिकाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १६. | कपित्थफल-प्रियाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १७. | गजमुखाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |
| १८. | सुप्रसन्नाय | नमः — | दूर्वायुग्मं | समर्पयामि। |

| | |
|-------------------|-------------------------------|
| १९. सुराग्रजाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २०. उमापुत्राय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |
| २१. स्कन्दप्रियाय | नमः — दूर्वायुग्मं समर्पयामि। |

॥ गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | |
|-----------------------|------------------------|----|
| गणेश्वराय नमः | चतुर्भुजाय नमः | |
| गणक्रीडाय नमः | शम्भुतेजसे नमः | २० |
| महागणपतये नमः | यज्ञकायाय नमः | |
| विश्वकर्त्रे नमः | सर्वात्मने नमः | |
| विश्वमुखाय नमः | सामबृंहिताय नमः | |
| दुर्जयाय नमः | कुलाचलांसाय नमः | |
| धूर्जयाय नमः | व्योमनाभये नमः | |
| जयाय नमः | कल्पद्रुमवनालयाय नमः | |
| सुरूपाय नमः | निम्ननाभये नमः | |
| सर्वनेत्राधिवासाय नमः | स्थूलकुक्षये नमः | १० |
| वीरासनाश्रयाय नमः | पीनवक्षसे नमः | |
| योगाधिपाय नमः | बृहद्भुजाय नमः | ३० |
| तारकस्थाय नमः | पीनस्कन्धाय नमः | |
| पुरुषाय नमः | कम्बुकण्ठाय नमः | |
| गजकर्णकाय नमः | लम्बोष्ठाय नमः | |
| चित्राङ्गाय नमः | लम्बनासिकाय नमः | |
| श्यामदशनाय नमः | सर्वावयवसम्पूर्णाय नमः | |
| भालचन्द्राय नमः | सर्वलक्षणलक्षिताय नमः | |

इक्षुचापधराय नमः
 शूलिने नमः
 कान्तिकन्दलिताश्रयाय नमः
 अक्षमालाधराय नमः ४०
 ज्ञानमुद्रावते नमः
 विजयावहाय नमः
 कामिनी-कामना-काम-मालिनी-
 केलि-लालिताय नमः
 अमोघसिद्धये नमः
 आधाराय नमः
 आधाराधेयवर्जिताय नमः
 इन्दीवरदलश्यामाय नमः
 इन्दुमण्डलनिर्मलाय नमः
 कर्मसाक्षिणे नमः
 कर्मकर्त्रे नमः ५०
 कर्माकर्मफलप्रदाय नमः
 कमण्डलुधराय नमः
 कल्पाय नमः
 कपर्दिने नमः
 कटिसूत्रभृते नमः
 कारुण्यदेहाय नमः
 कपिलाय नमः
 गुह्यागमनिरूपिताय नमः
 गुहाशयाय नमः
 गुहाब्धिस्थाय नमः ६०

घटकुम्भाय नमः
 घटोदराय नमः
 पूर्णानन्दाय नमः
 परानन्दाय नमः
 धनदाय नमः
 धरणीधराय नमः
 बृहत्तमाय नमः
 ब्रह्मपराय नमः
 ब्रह्मण्याय नमः
 ब्रह्मविम्प्रियाय नमः ७०
 भव्याय नमः
 भूतालयाय नमः
 भोगदात्रे नमः
 महामनसे नमः
 वरेण्याय नमः
 वामदेवाय नमः
 वन्द्याय नमः
 वज्रनिवारणाय नमः
 विश्वकर्त्रे नमः
 विश्वचक्षुषे नमः ८०
 हवनाय नमः
 हव्यकव्यभुजे नमः
 स्वतन्त्राय नमः
 सत्यसङ्कल्पाय नमः
 सौभाग्यवर्धनाय नमः

कीर्तिदाय नमः

शोकहारिणे नमः

त्रिवर्गफलदायकाय नमः

चतुर्बाहवे नमः

चतुर्दन्ताय नमः

चतुर्थी-तिथि-सम्भवाय नमः

सहस्रशीर्ष्णे पुरुषाय नमः

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः

कामरूपाय नमः

कामगतये नमः

द्विरदाय नमः

द्वीपरक्षकाय नमः

क्षेत्राधिपाय नमः

क्षमाभर्त्रे नमः

लयस्थाय नमः

लङ्घुकप्रियाय नमः

प्रतिवादिमुखस्तम्भाय नमः

दुष्टचित्तप्रसादनाय नमः

भगवते नमः

भक्तिसुलभाय नमः

याज्ञिकाय नमः

याजकप्रियाय नमः

१००

९०

॥इति श्री-गणेशपुराणे उपासनाखण्डे श्री-गणपत्यष्टोत्तरशतनामावलिः
सम्पूर्णा॥

दशाङ्गं गुग्गुलुं धूपं सुगन्धं च मनोहरम्।

गृहाण सर्वदेवेश उमापुत्र नमोऽस्तु ते॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, धूपमाग्रापयामि।

सर्वज्ञ सर्वलोकेश त्रैलोक्यतिमिरापह।

गृहाण मङ्गलं दीपं रुद्रप्रिय नमोऽस्तु ते॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
 प॒शूँश्च॒ म॒ह्य॒माव॑ह जी॒र्वनं॑ च॒ दि॒शो दि॒श॥
 मा नो॑ हि॒ःसी॒ज्जात॑वेदो गामश्च॑ पुरु॑षं जगत्।
 अबि॑भ्रदग्र॒ आग॑हि श्रि॒या मा॒ परि॑पातय॥
 श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।
 दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥
 नानाखाद्यमयं दिव्यं नैवेद्यं ते निवेदितम्।
 मया भक्त्या शिवापुत्र गृहाण गणनायक॥
 चन्द्र॒मा मन॑सो जातः। चक्षोः॒ सूर्यो॑ अजायत।
 मु॒खादिन्द्र॑श्चाग्निश्च। प्रा॒णाद्वा॒युर॑जायत॥
 श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, () निवेदयामि,
 अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

एलोशीरलवङ्गादिकर्पूरपरिवासितम् ।
 प्राशनार्थं कृतं तोयं गृहाण गणनायक॥
 मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि।

मलयाचलसम्भूतं कर्पूरेण समन्वितम्।
 करोद्वर्तनकं चारु गृह्यतां जगतः पते॥
 करोद्वर्तनम् समर्पयामि।

बीजपूराम्रपनसखजूरीकदलीफलम् ।
 नारिकेलफलं दिव्यं गृहाण गणनायक॥

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, फलं समर्पयामि।

एकविंशतिसङ्ख्याकान् मोदकान् घृतपाचितान्।
नैवेद्यं सफलं दद्यान्नमस्ते विघ्ननाशिने॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, मोदकान् समर्पयामि।

पूगीफलं महद्विव्यं नागवल्ल्या दलैर्युतम्।
कर्पूरैलासमायुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पृथ्वां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाः अकल्पयन्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, भूषणानि समर्पयामि।

दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्।
पूजयेत्सिद्धिविघ्नेशं प्रत्येकं पूर्वनामभिः॥

गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन।
एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक।
कुमारगुरवे नित्यं पूजनीयः प्रयत्नतः॥

इति दूर्वार्पणम्॥

नमो ब्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु
लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तर्यै नमो नमः॥

विघ्नेश्वर विशालाक्ष सर्वाभीष्टफलप्रद।
प्रदक्षिणं करोमि त्वां सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे॥

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वतेजांसि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। अदित्यवर्णं तमसस्तु पुरो।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥
श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं
दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।
रक्षां धारयामि। पुष्पैः पूजयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥
योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा।
ओं तत्सत्यम्। ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोऽनमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९
रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप॒ आपो॒ ज्योती॒ रसोऽमृतं॒ ब्रह्म॒ भूर्भुवः॒ सुव॒रोम्॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्तै च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

नमस्ते विघ्नसंहत्रे नमस्ते ईप्सितप्रद।
नमस्ते देवदेवेश नमस्ते गणनायक॥

विनायकेशपुत्रस्त्वं गजराज सुरोत्तम।
देहि मे सकलान् कामान् वन्दे सिद्धिविनायक॥

सप्तास्यांऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवाः॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, छत्रचामर-नृत-गीत-वाद्यादि
समस्तराजोपचारान् समर्पयामि।

यन्मयाऽऽचरितं देव व्रतमेतत् सुदुर्लभम्।
गणेश त्वं प्रसन्नः सन् सफलं कुरु सर्वदा॥

विनायक गणेशान सर्वदेवनमस्कृत।
पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नान्निवारय॥

नमो नमो गणेशाय नमस्ते विश्वरूपिणे।
निर्विघ्नं कुरु मे कामं नमामि त्वां गजानन॥

अगजाननपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदं तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे॥

विनायक वरं देहि महात्मन् मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

॥ अर्घ्यम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-सिद्धिविनायक-प्रीत्यर्थं
श्री-सिद्धिविनायक-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

(हस्ते साक्षतपुष्पं क्षीरं गृहीत्वा)

अर्घ्यं गृहाण हेरम्ब वरप्रद विनायक।
गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं भक्त्या दत्तं मया प्रभो॥१॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्ते भिन्नदन्ताय नमस्ते हरसूनवे।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥२॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

नमस्तुभ्यं गणेशाय नमस्ते विघ्ननायक।
पुनरर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गणनायक॥३॥

श्री-सिद्धिविनायकाय नमः, इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम् इदमर्घ्यम्।

॥ उपायन-दानम् ॥

आचार्य पूजा

अद्यपूर्वोक्त-एवङ्गुण-विशेषण-विशिष्टायामस्यां चतुर्थ्यां शुभतिथौ
श्री-सिद्धिविनायक-पूजा-फलसिद्ध्यर्थं ब्राह्मणपूजाम् उपायन-दानं च
करिष्ये॥ श्री-महागणपति-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम्।
गन्धादि-सकलाराधनैः स्वर्चितम्॥

[अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्।
स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन॥

दश विप्राय दातव्याः स्थापयेद् दश आत्मनि।
एकं गणाधिपे दद्यात् सघृतं मोदकं शुभम्॥

वायनमन्त्रः

दशानां मोदकानां च फलदक्षिण्या युतम्।
विप्राय फलसिद्ध्यर्थं वायनं प्रददाम्यहम्॥

प्रतिमा-दान-मन्त्रः

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्।
तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च।
गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-विनायक-चतुर्थी-पुण्यकाले अस्मिन् मया
क्रियमाण-श्री-सिद्धिविनायक-पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं
हिरण्यं श्री-सिद्धिविनायक-प्रीतिं कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय
सम्प्रददे नमः न मम।

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्।

॥ प्रार्थना ॥

॥ महागणेशपञ्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम्
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥१॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम्
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम्
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥२॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम्
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्रमक्षरम्।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम्
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥३॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम्
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम्
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥४॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम् ।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम्
तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम्॥५॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम्
 प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
 अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम्
 समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-
 शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ गणेशभुजङ्गम् ॥

रणत् क्षुद्रघण्टानिनादाभिरामम्
 चलत् ताण्डवोद्वण्डवत्पद्मतालम्।
 लसत् तुन्दिलाङ्गोपरिव्यालहारम्
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥१॥

ध्वनिध्वंसवीणालयोल्लासिवक्रम्
 स्फुरच्छुण्डदण्डोल्लसद्बीजपूरम्।
 गलद्वर्पसौगन्ध्यलोलालिमालम्
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥२॥

प्रकाशञ्जपारक्तरन्तप्रसून-
 प्रवालप्रभातारुणज्योतिरेकम्।
 प्रलम्बोदरं वक्रतुण्डैकदन्तम्
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥३॥

विचित्रस्फुरद्रत्नमालाकिरीटम्
 किरीटोल्लसच्चन्द्ररेखाविभूषम्।
 विभूषैकभूषं भवध्वंसहेतुम्
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥४॥

उदञ्चद्भुजावल्लरीदृश्यमूलोच्-
 चलद्-भ्रूलता-विभ्रमभ्राजदक्षम्।
 मरुत् सुन्दरीचामरैः सेव्यमानम्
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥५॥

स्फुरन्निष्ठुरालोलपिङ्गाक्षितारम्
 कृपाकोमलोदारलीलावतारम्।
 कलाबिन्दुगं गीयते योगिवर्यैर्-
 गणाधीशमीशानसूनुं तमीडे॥६॥

यमेकाक्षरं निर्मलं निर्विकल्पम्
 गुणातीतमानन्दमाकारशून्यम्।
 परं पारमोङ्कारमाम्नायगर्भम्
 वदन्ति प्रगल्भं पुराणं तमीडे॥७॥

चिदानन्दसान्द्राय शान्ताय तुभ्यम्
 नमो विश्वकर्त्रे च हर्त्रे च तुभ्यम्।
 नमोऽनन्तलीलाय कैवल्यभासे
 नमो विश्वबीज प्रसीदेशसूनो॥८॥

इमं सुस्तवं प्रातरुत्थाय भक्त्या
 पठेद्यस्तु मर्त्यो लभेत्सर्वकामान्।
 गणेशप्रसादेन सिद्ध्यन्ति वाचो
 गणेशे विभौ दुर्लभं किं प्रसन्ने॥९॥

॥इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-
 शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ श्री-गणेशभुजङ्गं सम्पूर्णम्॥

॥ वक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

मुनिरुवाच

कथं नाम्नां सहस्रं तं गणेश उपदिष्टवान्।
शिवदं तन्ममाचक्ष्व लोकानुग्रहतत्पर॥१॥

ब्रह्मोवाच

देवः पूर्वं पुरारातिः पुरत्रयजयोद्यमे।
अनर्चनाद्गणेशस्य जातो विघ्नाकुलः किल॥२॥

मनसा स विनिर्धार्य ददृशे विघ्नकारणम्।
महागणपतिं भक्त्या समभ्यर्च्य यथाविधि॥३॥

विघ्नप्रशमनोपायमपृच्छदपरिश्रमम् ।
सन्तुष्टः पूजया शम्भोर्महागणपतिः स्वयम्॥४॥

सर्वविघ्नप्रशमनं सर्वकामफलप्रदम्।
ततस्तस्मै स्वयं नाम्नां सहस्रमिदमब्रवीत्॥५॥

अस्य श्रीवक्रतुण्डमहागणपतिसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य
महागणपतिर्ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। महागणपतिर्देवता।
गं बीजम्। हुं शक्तिः। स्वाहा कीलकम्।
चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ करन्यासः ॥

गणेश्वरो गणक्रीड इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
 कुमारगुरुरीशान इति तर्जनीभ्यां नमः।
 ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्योमेति मध्यमाभ्यां नमः।
 रक्तो रक्ताम्बरधर इत्यनामिकाभ्यां नमः।
 सर्वसद्गुरुसंसेव्य इति कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
 लुप्तविघ्नः स्वभक्तानामिति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ हृदयादिन्यासः ॥

छन्दश्छन्दोद्भव इति हृदयाय नमः।
 निष्कलो निर्मल इति शिरसे स्वाहा।
 सृष्टिस्थितिलयक्रीड इति शिखायै वषट्।
 ज्ञानं विज्ञानमानन्द इति कवचाय हुम्।
 अष्टाङ्गयोगफलभृदिति नेत्रत्रयाय वौषट्।
 अनन्तशक्तिसहित इत्यस्त्राय फट्।
 भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

गजवदनमचिन्त्यं तीक्ष्णदंष्ट्रं त्रिनेत्रम्
 बृहदुदरमशेषं भूतिराजं पुराणम्।
 अमरवरसुपूज्यं रक्तवर्णं सुरेशम्
 पशुपतिसुतमीशं विघ्नराजं नमामि॥

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरम्
 प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम्।
 दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरम्
 वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

सकलविघ्नविनाशनद्वारा श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीगणपतिरुवाच

ॐ गणेश्वरो गणक्रीडो गणनाथो गणाधिपः।
एकदन्तो वक्रतुण्डो गजवक्रो महोदरः॥१॥

लम्बोदरो धूम्रवर्णो विकटो विघ्ननाशनः।
सुमुखो दुर्मुखो बुद्धो विघ्नराजो गजाननः॥२॥

भीमः प्रमोद आमोदः सुरानन्दो मदोत्कटः।
हेरम्बः शम्बरः शम्भुर्लम्बकर्णो महाबलः॥३॥

नन्दनो लम्पटो भीमो मेघनादो गणञ्जयः।
विनायको विरूपाक्षो वीरः शूरवरप्रदः॥४॥

महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः।
रुद्रप्रियो गणाध्यक्ष उमापुत्रोऽघनाशनः॥५॥

कुमारगुरुरीशानपुत्रो मूषकवाहनः।
सिद्धिप्रियः सिद्धिपतिः सिद्धः सिद्धिविनायकः॥६॥

अविघ्नस्तुम्बुरुः सिंहवाहनो मोहिनीप्रियः।
कटङ्कटो राजपुत्रः शाकलः सम्मितोऽमितः॥७॥

कूष्माण्डसामसम्भूतिर्दुर्जयो धूर्जयो जयः।
भूपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिरव्ययः॥८॥

विश्वकर्ता विश्वमुखो विश्वरूपो निधिर्गुणः।
कविः कवीनामृषभो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः॥९॥

ज्येष्ठराजो निधिपतिर्निधिप्रियपतिप्रियः।
हिरण्मयपुरान्तःस्थः सूर्यमण्डलमध्यगः॥१०॥

कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलः पूषदन्तभिः।
उमाङ्गकेलिकुतुकी मुक्तिदः कुलपावनः॥११॥

किरीटी कुण्डली हारी वनमाली मनोमयः।
वैमुख्यहतदैत्यश्रीः पादाहतिजितक्षितिः॥१२॥

सद्योजातः स्वर्णमुञ्जमेखली दुर्निमित्तहृत्।
दुःस्वप्नहृत्प्रसहनो गुणी नादप्रतिष्ठितः॥१३॥

सुरूपः सर्वनेत्राधिवासो वीरासनाश्रयः।
पीताम्बरः खण्डरदः खण्डवैशाखसंस्थितः॥१४॥

चित्राङ्गः श्यामदशनो भालचन्द्रो हविर्भुजः।
योगाधिपस्तारकस्थः पुरुषो गजकर्णकः॥१५॥

गणाधिराजो विजयः स्थिरो गजपतिर्ध्वजी।
देवदेवः स्मरः प्राणदीपको वायुकीलकः॥१६॥

विपश्चिद्वरदो नादो नादभिन्नमहाचलः।
वराहरदनो मृत्युञ्जयो व्याघ्राजिनाम्बरः॥१७॥

इच्छाशक्तिभवो देवत्राता दैत्यविमर्दनः।
शम्भुवक्रोद्भवः शम्भुकोपहा शम्भुहास्यभूः॥१८॥

शम्भुतेजाः शिवाशोकहारी गौरीसुखावहः।
उमाङ्गमलजो गौरीतेजोभूः स्वर्धुनीभवः॥१९॥

यज्ञकायो महानादो गिरिवर्ष्मा शुभाननः।
सर्वात्मा सर्वदेवात्मा ब्रह्ममूर्धा ककुप्श्रुतिः॥२०॥

ब्रह्माण्डकुम्भश्चिद्व्योमभालः सत्यशिरोरुहः।
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषोऽग्न्यर्कसोमदृक्॥२१॥

गिरीन्द्रैकरदो धर्माधर्मोष्ठः सामबृंहितः।
ग्रहर्क्षदशनो वाणीजिह्वो वासवनासिकः॥ २२॥

भ्रूमध्यसंस्थितकरो ब्रह्मविद्यामदोदकः।
कुलाचलांसः सोमार्कघण्टो रुद्रशिरोधरः॥ २३॥

नदीनदभुजः सर्पाङ्गुलीकस्तारकानखः।
व्योमनाभिः श्रीहृदयो मेरुपृष्ठोऽर्णवोदरः॥ २४॥

कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्षःकिन्नरमानुषः ।
पृथ्वीकटिः सृष्टिलिङ्गः शैलोरुर्दस्रजानुकः॥ २५॥

पातालजङ्घो मुनिपात्कालाङ्गुष्ठस्त्रयीतनुः।
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलो हृदयालाननिश्चलः॥ २६॥

हृत्पद्मकर्णिकाशाली वियत्केलिसरोवरः।
सद्भक्तध्याननिगडः पूजावारिनिवारितः॥ २७॥

प्रतापी काश्यपो मन्ता गणको विष्टपी बली।
यशस्वी धार्मिको जेता प्रथमः प्रमथेश्वरः॥ २८॥

चिन्तामणिर्द्वीपपतिः कल्पद्रुमवनालयः।
रत्नमण्डपमध्यस्थो रत्नसिंहासनाश्रयः॥ २९॥

तीव्राशिरोद्धृतपदो ज्वालिनीमौलिलालितः।
नन्दानन्दितपीठश्रीर्भोगदो भूषितासनः॥ ३०॥

सकामदायिनीपीठः स्फुरदुग्रासनाश्रयः।
तेजोवतीशिरोरत्नं सत्यानित्यावतंसितः॥ ३१॥

सविघ्ननाशिनीपीठः सर्वशक्त्यम्बुजालयः।
लिपिपद्मासनाधारो वह्निधामत्रयालयः॥ ३२॥

उन्नतप्रपदो गूढगुल्फः संवृतपार्ष्णिः।
 पीनजङ्घः श्लिष्टजानुः स्थूलोरुः प्रोन्नमत्कटिः॥ ३३ ॥
 निम्ननाभिः स्थूलकुक्षिः पीनवक्षा बृहद्भुजः।
 पीनस्कन्धः कम्बुकण्ठो लम्बोष्ठो लम्बनासिकः॥ ३४ ॥
 भग्नवामरदस्तुङ्गसव्यदन्तो महाहनुः।
 ह्रस्वनेत्रत्रयः शूर्पकर्णो निबिडमस्तकः॥ ३५ ॥
 स्तबकाकारकुम्भाग्रो रत्नमौलिर्निरङ्कुशः।
 सर्पहारकटीसूत्रः सर्पयज्ञोपवीतवान्॥ ३६ ॥
 सर्पकोटीरकटकः सर्पग्रेवेयकाङ्गदः।
 सर्पकक्षोदराबन्धः सर्पराजोत्तरच्छदः॥ ३७ ॥
 रक्तो रक्ताम्बरधरो रक्तमालाविभूषणः।
 रक्तेक्षणो रक्तकरो रक्तताल्वोष्ठपल्लवः॥ ३८ ॥
 श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेतमालाविभूषणः।
 श्वेतातपत्ररुचिरः श्वेतचामरवीजितः॥ ३९ ॥
 सर्वावयवसम्पूर्णः सर्वलक्षणलक्षितः।
 सर्वाभरणशोभाढ्यः सर्वशोभासमन्वितः॥ ४० ॥
 सर्वमङ्गलमाङ्गल्यः सर्वकारणकारणम्।
 सर्वदेववरः शार्ङ्गी बीजपूरी गदाधरः॥ ४१ ॥
 इक्षुचापधरः शूली चक्रपाणिः सरोजभृत्।
 पाशी धृतोत्पलः शालिमञ्जरीभृत्स्वदन्तभृत्॥ ४२ ॥
 कल्पवल्लीधरो विश्वाभयदैककरो वशी।
 अक्षमालाधरो ज्ञानमुद्रावान् मुद्रायुधः॥ ४३ ॥
 पूर्णपात्री कम्बुधरो विधृताङ्कुशमूलकः।
 करस्थाम्रफलश्चूतकलिकाभृत्कुठारवान्॥ ४४ ॥

पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकः ।
भारतीसुन्दरीनाथो विनायकरतिप्रियः ॥ ४५ ॥

महालक्ष्मीप्रियतमः सिद्धलक्ष्मीमनोरमः ।
रमारमेशपूर्वाङ्गो दक्षिणोमामहेश्वरः ॥ ४६ ॥

महीवराहवामाङ्गो रतिकन्दर्पपश्चिमः ।
आमोदमोदजननः सम्प्रमोदप्रमोदनः ॥ ४७ ॥

संवर्धितमहावृद्धिर्ऋद्धिसिद्धिप्रवर्धनः ।
दन्तसौमुख्यसुमुखः कान्तिकन्दलिताश्रयः ॥ ४८ ॥

मदनावत्याश्रिताङ्घ्रिः कृतवैमुख्यदुर्मुखः ।
विघ्नसम्पल्लवः पद्मः सर्वोन्नतमदद्रवः ॥ ४९ ॥

विघ्नकृन्निघ्नचरणो द्राविणीशक्तिसत्कृतः ।
तीव्राप्रसन्ननयनो ज्वालिनीपालितैकदृक् ॥ ५० ॥

मोहिनीमोहनो भोगदायिनीकान्तिमण्डनः ।
कामिनीकान्तवक्त्रश्रीरधिष्ठितवसुन्धरः ॥ ५१ ॥

वसुधारामदोन्नादो महाशङ्खनिधिप्रियः ।
नमद्वसुमतीमाली महापद्मनिधिः प्रभुः ॥ ५२ ॥

सर्वसद्गुरुसंसेव्यः शोचिष्केशहृदाश्रयः ।
ईशानमूर्धा देवेन्द्रशिखः पवननन्दनः ॥ ५३ ॥

प्रत्युग्रनयनो दिव्यो दिव्यास्त्रशतपर्वधृक् ।
ऐरावतादिसर्वाशावारणो वारणप्रियः ॥ ५४ ॥

वज्राद्यस्त्रपरीवारो गणचण्डसमाश्रयः ।
जयाजयपरिकरो विजयाविजयावहः ॥ ५५ ॥

अजयार्चितपादाब्जो नित्यानन्दवनस्थितः ।
विलासिनीकृतोल्लासः शौण्डी सौन्दर्यमण्डितः ॥ ५६ ॥

अनन्तानन्तसुखदः सुमङ्गलसुमङ्गलः।
 ज्ञानाश्रयः क्रियाधार इच्छाशक्तिनिषेवितः॥५७॥
 सुभगासंश्रितपदो ललिताललिताश्रयः।
 कामिनीपालनः कामकामिनीकेलिलालितः॥५८॥
 सरस्वत्याश्रयो गौरीनन्दनः श्रीनिकेतनः।
 गुरुगुप्तपदो वाचासिद्धो वागीश्वरीपतिः॥५९॥
 नलिनीकामुको वामारामो ज्येष्ठामनोरमः।
 रौद्रीमुद्रितपादाब्जो हुम्बीजस्तुङ्गशक्तिकः॥६०॥
 विश्वादिजननत्राणः स्वाहाशक्तिः सकीलकः।
 अमृताब्धिकृतावासो मदघूर्णितलोचनः॥६१॥
 उच्छिष्टोच्छिष्टगणको गणेशो गणनायकः।
 सार्वकालिकसंसिद्धिर्नित्यसेव्यो दिगम्बरः॥६२॥
 अनपायोऽनन्तदृष्टिरप्रमेयोऽजरामरः ।
 अनाविलोऽप्रतिहतिरच्युतोऽमृतमक्षरः॥६३॥
 अप्रतर्क्योऽक्षयोऽजय्योऽनाधारोऽनामयोऽमलः।
 अमेयसिद्धिरद्वैतमघोरोऽग्निसमाननः ॥६४॥
 अनाकारोऽब्धिभूम्यग्निबलघ्नोऽव्यक्तलक्षणः।
 आधारपीठमाधार आधारार्धेयवर्जितः॥६५॥
 आखुकेतन आशापूरक आखुमहारथः।
 इक्षुसागरमध्यस्थ इक्षुभक्षणलालसः॥६६॥
 इक्षुचापातिरेकश्रीरिक्षुचापनिषेवितः ।
 इन्द्रगोपसमानश्रीरिन्द्रनीलसमद्युतिः॥६७॥
 इन्दीवरदलश्याम इन्दुमण्डलमण्डितः।
 इध्मप्रिय इडाभाग इडावानिन्दिराप्रियः॥६८॥

इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसी इतिकर्तव्यतेप्सितः।
ईशानमौलिरीशान ईशानप्रिय ईतिहा॥६९॥

ईषणात्रयकल्पान्त ईहामात्रविवर्जितः।
उपेन्द्र उडुभृन्मौलिरुडुनाथकरप्रियः॥७०॥

उन्नतानन उत्तुङ्ग उदारस्त्रिदशाग्रणीः।
ऊर्जस्वानूष्मलमद ऊहापोहदुरासदः॥७१॥

ऋग्यजुःसामनयन ऋद्धिसिद्धिसमर्पकः।
ऋजुचितैकसुलभो ऋणत्रयविमोचनः॥७२॥

लुप्तविघ्नः स्वभक्तानां लुप्तशक्तिः सुरद्विषाम्।
लुप्तश्रीर्विमुखार्चानां लूताविस्फोटनाशनः॥७३॥

एकारपीठमध्यस्थ एकपादकृतासनः।
एजिताखिलदैत्यश्रीरेधिताखिलसंश्रयः॥७४॥

ऐश्वर्यनिधिरैश्वर्यमैहिकामुष्मिकप्रदः।
ऐरम्मदसमोन्मेष ऐरावतसमाननः॥७५॥

ओङ्कारवाच्य ओङ्कार ओजस्वानोषधीपतिः।
औदार्यनिधिरौद्धत्यधैर्य औन्नत्यनिःसमः॥७६॥

अङ्कुशः सुरनागानामङ्कुशाकारसंस्थितः।
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु परिकीर्तितः॥७७॥

कमण्डलुधरः कल्पः कपर्दी कलभाननः।
कर्मसाक्षी कर्मकर्ता कर्माकर्मफलप्रदः॥७८॥

कदम्बगोलकाकारः कूष्माण्डगणनायकः।
कारुण्यदेहः कपिलः कथकः कटिसूत्रभृत्॥७९॥

खर्वः खङ्गप्रियः खङ्गः खान्तान्तःस्थः खनिर्मलः।
खल्वाटशृङ्गनिलयः खट्वाङ्गी खन्दुरासदः॥८०॥

गुणाढ्यो गहनो गद्यो गद्यपद्यसुधारणवः।
गद्यगानप्रियो गर्जो गीतगीर्वाणपूर्वजः॥८१॥

गुह्याचाररतो गुह्यो गुह्यागमनिरूपितः।
गुहाशयो गुडाब्धिस्थो गुरुगम्यो गुरुर्गुरुः॥८२॥

घण्टाघर्घरिकामाली घटकुम्भो घटोदरः।
ङकारवाच्यो ङाकारो ङकाराकारशुण्डभृत्॥८३॥

चण्डश्चण्डेश्वरश्चण्डी चण्डेशश्चण्डविक्रमः।
चराचरपिता चिन्तामणिश्चर्वणलालसः॥८४॥

छन्दश्छन्दोद्भवश्छन्दो दुर्लक्ष्यश्छन्दविग्रहः।
जगद्योनिर्जगत्साक्षी जगदीशो जगन्मयः॥८५॥

जप्यो जपपरो जाप्यो जिह्वासिंहासनप्रभुः।
स्रवद्रण्डोल्लसद्धानझङ्कारिभ्रमराकुलः ॥८६॥

टङ्कारस्फारसंरावष्टङ्कारमणिनूपुरः ।
ठढयीपल्लवान्तस्थसर्वमन्त्रेषु सिद्धिदः॥८७॥

डिण्डिमुण्डो डाकिनीशो डामरो डिण्डिमप्रियः।
ढक्कानिनादमुदितो ढौङ्को ढुण्डिविनायकः॥८८॥

तत्त्वानां प्रकृतिस्तत्त्वं तत्त्वम्पदनिरूपितः।
तारकान्तरसंस्थानस्तारकस्तारकान्तकः ॥८९॥

स्थाणुः स्थाणुप्रियः स्थाता स्थावरं जङ्गमं जगत्।
दक्षयज्ञप्रमथनो दाता दानं दमो दया॥९०॥

दयावान्दिव्यविभवो दण्डभृद्दण्डनायकः।
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालो दैत्यवारणदारणः॥९१॥

दंष्ट्रालग्नद्वीपघटो देवार्थनृगजाकृतिः।
धनं धनपतेर्बन्धुर्धनदो धरणीधरः॥९२॥

ध्यानैकप्रकटो ध्येयो ध्यानं ध्यानपरायणः।
ध्वनिप्रकृतिचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥१३॥

नन्द्यो नन्दिप्रियो नादो नादमध्यप्रतिष्ठितः।
निष्कलो निर्मलो नित्यो नित्यानित्यो निरामयः॥१४॥

परं व्योम परं धाम परमात्मा परं पदम्।
परात्परः पशुपतिः पशुपाशविमोचनः।
पूर्णानन्दः परानन्दः पुराणपुरुषोत्तमः॥१५॥

पद्मप्रसन्नवदनः प्रणताज्ञाननाशनः।
प्रमाणप्रत्ययातीतः प्रणतार्तिनिवारणः॥१६॥

फणिहस्तः फणिपतिः फूत्कारः फणितप्रियः।
बाणार्चिताङ्घ्रियुगलो बालकेलिकुतूहली।
ब्रह्म ब्रह्मार्चितपदो ब्रह्मचारी बृहस्पतिः॥१७॥

बृहत्तमो ब्रह्मपरो ब्रह्मण्यो ब्रह्मवित्प्रियः।
बृहन्नादाग्र्यचीत्कारो ब्रह्माण्डावलिमेखलः॥१८॥

भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीको भर्गो भद्रो भयापहः।
भगवान् भक्तिसुलभो भूतिदो भूतिभूषणः॥१९॥

भव्यो भूतालयो भोगदाता भ्रूमध्यगोचरः।
मन्त्रो मन्त्रपतिर्मन्त्री मदमत्तो मनोरमः॥२०॥

मेखलाहीश्वरो मन्दगतिर्मन्दनिभेक्षणः।
महाबलो महावीर्यो महाप्राणो महामनाः॥२१॥

यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञगोप्ता यज्ञफलप्रदः।
यशस्करो योगगम्यो याज्ञिको याजकप्रियः॥२२॥

रसो रसप्रियो रस्यो रञ्जको रावणार्चितः।
राज्यरक्षाकरो रत्नगर्भो राज्यसुखप्रदः॥२३॥

लक्षो लक्षपतिर्लक्ष्यो लयस्थो लङ्घुकप्रियः।
लासप्रियो लास्यपरो लाभकृल्लोकविश्रुतः॥१०४॥

वरेण्यो वह्निवदनो वन्द्यो वेदान्तगोचरः।
विकर्ता विश्वतश्चक्षुर्विधाता विश्वतोमुखः॥१०५॥

वामदेवो विश्वनेता वज्रिवज्रनिवारणः।
विवस्वद्वन्धनो विश्वाधारो विश्वेश्वरो विभुः॥१०६॥

शब्दब्रह्म शमप्राप्यः शम्भुशक्तिगणेश्वरः।
शास्ता शिखाग्रनिलयः शरण्यः शम्बरेश्वरः॥१०७॥

षट्पुङ्गवसुमस्रग्वी षडाधारः षडक्षरः।
संसारवेद्यः सर्वज्ञः सर्वभेषजभेषजम्॥१०८॥

सृष्टिस्थितिलयक्रीडः सुरकुञ्जरभेदकः।
सिन्दूरितमहाकुम्भः सदसद्भक्तिदायकः॥१०९॥

साक्षी समुद्रमथनः स्वयंवेद्यः स्वदक्षिणः।
स्वतन्त्रः सत्यसङ्कल्पः सामगानरतः सुखी॥११०॥

हंसो हस्तिपिशाचीशो हवनं हव्यकव्यभुक्।
हव्यं हुतप्रियो हृष्टो हृल्लेखामन्त्रमध्यगः॥१११॥

क्षेत्राधिपः क्षमाभर्ता क्षमाक्षमपरायणः।
क्षिप्रक्षेमकरः क्षेमानन्दः क्षोणीसुरद्रुमः॥११२॥

धर्मप्रदोऽर्थदः कामदाता सौभाग्यवर्धनः।
विद्याप्रदो विभवदो भुक्तिमुक्तिफलप्रदः॥११३॥

आभिरूप्यकरो वीरश्रीप्रदो विजयप्रदः।
सर्ववश्यकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः॥११४॥

मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः॥११५॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः।
लवस्तुटिः कला काष्ठा निमेषस्तत्परक्षणः॥११६॥

घटी मुहूर्तः प्रहरो दिवा नक्तमहर्निशम्।
पक्षो मासर्त्यनाब्दयुगं कल्पो महालयः॥११७॥

राशिस्तारा तिथिर्योगो वारः करणमंशकम्।
लग्नं होरा कालचक्रं मेरुः सप्तर्षयो ध्रुवः॥११८॥

राहुर्मन्दः कविर्जीवो बुधो भौमः शशी रविः।
कालः सृष्टिः स्थितिर्विश्वं स्थावरं जङ्गमं जगत्॥११९॥

भूरापोऽग्निर्मरुद्व्योमाहङ्कृतिः प्रकृतिः पुमान्।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो रुद्र ईशः शक्तिः सदाशिवः॥१२०॥

त्रिदशाः पितरः सिद्धा यक्षा रक्षांसि किन्नराः।
सिद्धविद्याधरा भूता मनुष्याः पशवः खगाः॥१२१॥

समुद्राः सरितः शैला भूतं भव्यं भवोद्भवः।
साङ्ख्यं पातञ्जलं योगं पुराणानि श्रुतिः स्मृतिः॥१२२॥

वेदाङ्गानि सदाचारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्व काव्यनाटकम्॥१२३॥

वैखानसं भागवतं मानुषं पाञ्चरात्रकम्।
शैवं पाशुपतं कालामुखं भैरवशासनम्॥१२४॥

शाक्तं वैनायकं सौरं जैनमार्हतसंहिता।
सदसद्व्यक्तमव्यक्तं सचेतनमचेतनम्॥१२५॥

बन्धो मोक्षः सुखं भोगो योगः सत्यमणुर्महान्।
स्वस्ति हुम्फट् स्वधा स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषण्णमः॥१२६॥

ज्ञानं विज्ञानमानन्दो बोधः संवित्समोऽसमः।
एक एकाक्षराधार एकाक्षरपरायणः॥१२७॥

एकाग्रधीरेकवीर एकोऽनेकस्वरूपधृक्।
द्विरूपो द्विभुजो द्व्यक्षो द्विरदो द्वीपरक्षकः॥१२८॥

द्वैमातुरो द्विवदनो द्वन्द्वहीनो द्वयातिगः।
त्रिधामा त्रिकरस्त्रेता त्रिवर्गफलदायकः॥१२९॥

त्रिगुणात्मा त्रिलोकादिस्त्रिशक्तीशस्त्रिलोचनः।
चतुर्विधवचोवृत्तिपरिवृत्तिप्रवर्तकः॥१३०॥

चतुर्बाहुश्चतुर्दन्तश्चतुरात्मा चतुर्भुजः।
चतुर्विधोपायमयश्चतुर्वर्णाश्रमाश्रयः॥१३१॥

चतुर्थीपूजनप्रीतश्चतुर्थीतिथिसम्भवः।
पञ्चाक्षरात्मा पञ्चात्मा पञ्चास्यः पञ्चकृत्तमः॥१३२॥

पञ्चाधारः पञ्चवर्णः पञ्चाक्षरपरायणः।
पञ्चतालः पञ्चकरः पञ्चप्रणवमातृकः॥१३३॥

पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तिः पञ्चावरणवारितः।
पञ्चभक्षप्रियः पञ्चबाणः पञ्चशिवात्मकः॥१३४॥

षट्कोणपीठः षट्क्रधामा षड्गन्धिभेदकः।
षडङ्गध्वान्तविध्वंसी षडङ्गुलमहाहृदः॥१३५॥

षण्मुखः षण्मुखभ्राता षट्शक्तिपरिवारितः।
षड्वैरिवर्गविध्वंसी षडूर्मिभयभञ्जनः॥१३६॥

षट्कर्कदूरः षट्कर्मा षड्गुणः षट्साश्रयः।
सप्तपातालचरणः सप्तद्वीपोरुमण्डलः॥१३७॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तसप्तिवरप्रदः।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तर्षिगणवन्दितः॥१३८॥

सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तहोत्रः सप्तस्वराश्रयः।
सप्ताब्धिकेलिकासारः सप्तमातृनिषेवितः॥१३९॥

सप्तच्छन्दो मोदमदः सप्तच्छन्दो मखप्रभुः।
अष्टमूर्तिर्ध्येयमूर्तिरष्टप्रकृतिकारणम् ॥१४०॥

अष्टाङ्गयोगफलभृदष्टपत्राम्बुजासनः।
अष्टशक्तिसमानश्रीरष्टैश्वर्यप्रवर्धनः ॥१४१॥

अष्टपीठोपपीठश्रीरष्टमातृसमावृतः ।
अष्टभैरवसेव्योऽष्टवसुवन्द्योऽष्टमूर्तिभृत्॥१४२॥

अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तिरष्टद्रव्यहविःप्रियः ।
अष्टश्रीरष्टसामश्रीरष्टैश्वर्यप्रदायकः ।
नवनागासनाध्यासी नवनिध्यनुशासितः॥१४३॥

नवद्वारपुरावृत्तो नवद्वारनिकेतनः।
नवनाथमहानाथो नवनागविभूषितः॥१४४॥

नवनारायणस्तुल्यो नवदुर्गानिषेवितः।
नवरत्नविचित्राङ्गो नवशक्तिशिरोद्धृतः॥१४५॥

दशात्मको दशभुजो दशदिक्पतिवन्दितः।
दशाध्यायो दशप्राणो दशेन्द्रियनियामकः॥१४६॥

दशाक्षरमहामन्त्रो दशाशाव्यापिविग्रहः।
एकादशमहारुद्रैःस्तुतश्चैकादशाक्षरः ॥१४७॥

द्वादशद्विदशाष्टादिदोर्दण्डास्त्रनिकेतनः ।
त्रयोदशभिदाभिन्नो विश्वेदेवाधिदैवतम्॥१४८॥

चतुर्दशेन्द्रवरदश्चतुर्दशमनुप्रभुः ।
चतुर्दशाद्यविद्याढ्यश्चतुर्दशजगत्पतिः ॥ १४९ ॥

सामपञ्चदशः पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलः ।
तिथिपञ्चदशाकारस्तिथ्या पञ्चदशार्चितः ॥ १५० ॥
षोडशाधारनिलयः षोडशस्वरमातृकः ।
षोडशान्तपदावासः षोडशेन्दुकलात्मकः ॥ १५१ ॥

कलासप्तदशी सप्तदशसप्तदशाक्षरः ।
अष्टादशद्वीपपतिरष्टादशपुराणकृत् ॥ १५२ ॥

अष्टादशौषधीसृष्टिरष्टादशविधिः स्मृतः ।
अष्टादशलपिव्यष्टिसमष्टिज्ञानकोविदः ॥ १५३ ॥
अष्टादशान्नसम्पत्तिरष्टादशविजातिकृत् ।
एकविंशः पुमानेकविंशत्यङ्गुलिपल्लवः ॥ १५४ ॥

चतुर्विंशतितत्त्वात्मा पञ्चविंशाख्यपूरुषः ।
सप्तविंशतितारेशः सप्तविंशतियोगकृत् ॥ १५५ ॥
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशश्चतुस्त्रिंशन्महाहृदः ।
षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतिरष्टत्रिंशत्कलात्मकः ॥ १५६ ॥

पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशः पञ्चाशन्मातृकालयः ।
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेणी त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयः ।
पञ्चाशदक्षरश्रेणीपञ्चाशद्रुद्रविग्रहः ॥ १५७ ॥

चतुःषष्टिमहासिद्धियोगिनीवृन्दवन्दितः ।
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्गनिरर्गलः ॥ १५८ ॥

चतुःषष्ट्यर्थनिर्णेता चतुःषष्टिकलानिधिः ।
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरववन्दितः ॥ १५९ ॥

चतुर्नवतिमन्त्रात्मा षण्णवत्यधिकप्रभुः।
शतानन्दः शतधृतिः शतपत्रायतेक्षणः॥१६०॥

शतानीकः शतमखः शतधारावरायुधः।
सहस्रपत्रनिलयः सहस्रफणिभूषणः॥१६१॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
सहस्रनामसंस्तुत्यः सहस्राक्षबलापहः॥१६२॥

दशसाहस्रफणिभृत्फणिराजकृतासनः ।
अष्टाशीतिसहस्राद्यमहर्षिस्तोत्रपाठितः॥१६३॥

लक्षाधारः प्रियाधारो लक्षाधारमनोमयः।
चतुर्लक्षजपप्रीतश्चतुर्लक्षप्रकाशकः ॥१६४॥

चतुरशीतिलक्षाणां जीवानां देहसंस्थितः।
कोटिसूर्यप्रतीकाशः कोटिचन्द्रांशुनिर्मलः॥१६५॥

शिवोद्भवाद्यष्टकोटिवैनायकधुरन्धरः।
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवद्युतिः॥१६६॥

त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणीप्रणतपादुकः ।
अनन्तदेवतासेव्यो ह्यनन्तशुभदायकः॥१६७॥

अनन्तनामानन्तश्रीरनन्तोऽनन्तसौख्यदः।
अनन्तशक्तिसहितो ह्यनन्तमुनिसंस्तुतः॥१६८॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति वैनायकं नाम्नां सहस्रमिदमीरितम्।
 इदं ब्राह्मे मुहूर्ते यः पठति प्रत्यहं नरः॥१६९॥
 करस्थं तस्य सकलमैहिकामुष्मिकं सुखम्।
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं धैर्यं शौर्यं बलं यशः॥१७०॥
 मेधा प्रज्ञा धृतिः कान्तिः सौभाग्यमभिरूपता।
 सत्यं दया क्षमा शान्तिर्दाक्षिण्यं धर्मशीलता॥१७१॥
 जगत्संवननं विश्वसंवादो वेदपाटवम्।
 सभापाण्डित्यमौदार्यं गाम्भीर्यं ब्रह्मवर्चसम्॥१७२॥
 ओजस्तेजः कुलं शीलं प्रतापो वीर्यमार्यता।
 ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं स्थैर्यं विश्वासता तथा॥१७३॥
 धनधान्यादिवृद्धिश्च सकृदस्य जपाद्भवेत्।
 वश्यं चतुर्विधं विश्वं जपादस्य प्रजायते॥१७४॥
 राज्ञो राजकलत्रस्य राजपुत्रस्य मन्त्रिणः।
 जप्यते यस्य वश्यार्थे स दासस्तस्य जायते॥१७५॥
 धर्मार्थकाममोक्षाणामनायासेन साधनम्।
 शाकिनीडाकिनीरक्षोयक्षग्रहभयापहम् ॥१७६॥
 साम्राज्यसुखदं सर्वसपत्नमदमर्दनम्।
 समस्तकलहध्वंसि दग्धबीजप्ररोहणम्॥१७७॥
 दुःस्वप्नप्रशमनं क्रुद्धस्वामिचित्तप्रसादनम्।
 षड्वर्गाष्टमहासिद्धित्रिकालज्ञानकारणम् ॥१७८॥
 परकृत्यप्रशमनं परचक्रप्रमर्दनम्।
 सङ्ग्राममार्गे सर्वेषामिदमेकं जयावहम्॥१७९॥

सर्वबन्ध्यत्वदोषघ्नं गर्भरक्षैककारणम्।
पठ्यते प्रत्यहं यत्र स्तोत्रं गणपतेरिदम्॥१८०॥

देशे तत्र न दुर्भिक्षमीतयो दुरितानि च।
न तद्देहं जहाति श्रीर्यत्रायं जप्यते स्तवः॥१८१॥

क्षयकुष्ठप्रमेहार्शभगन्दरविषूचिकाः ।
गुल्मं प्लीहानमाध्मानमतिसारं महोदरम्॥१८२॥

कासं श्वासमुदावर्तं शूलं शोफामयोदरम्।
शिरोरोगं वमिं हिक्कां गण्डमालामरोचकम्॥१८३॥

वातपित्तकफद्वन्द्वत्रिदोषजनितज्वरम् ।
आगन्तुविषमं शीतमुष्णं चैकाहिकादिकम्॥१८४॥

इत्याद्युक्तमनुक्तं वा रोगदोषादिसम्भवम्।
सर्वं प्रशमयत्याशु स्तोत्रस्यास्य सकृज्जपः॥१८५॥

प्राप्यतेऽस्य जपात्सिद्धिः स्त्रीशूद्रैः पतितैरपि।
सहस्रनाममन्त्रोऽयं जपितव्यः शुभाप्तये॥१८६॥

महागणपतेः स्तोत्रं सकामः प्रजपन्निदम्।
इच्छया सकलान् भोगानुपभुज्येह पार्थिवान्॥१८७॥

मनोरथफलैर्दिव्यैर्व्योमयानैर्मनोरमैः ।
चन्द्रेन्द्रभास्करोपेन्द्रब्रह्मशर्वादिसद्वसु॥१८८॥

कामरूपः कामगतिः कामदः कामदेश्वरः।
भुक्त्वा यथेप्सितान्भोगानभीष्टैः सह बन्धुभिः॥१८९॥

गणेशानुचरो भूत्वा गणो गणपतिप्रियः।
नन्दीश्वरादिसानन्दैर्नन्दितः सकलैर्गणैः॥१९०॥

शिवाभ्यां कृपया पुत्रनिर्विशेषं च लालितः।
शिवभक्तः पूर्णकामो गणेश्वरवरात्पुनः॥१९१॥

जातिस्मरो धर्मपरः सार्वभौमोऽभिजायते।
निष्कामस्तु जपन्नित्यं भक्त्या विघ्नेशतत्परः॥१९२॥

योगसिद्धिं परां प्राप्य ज्ञानवैराग्यसंयुतः।
निरन्तरे निराबाधे परमानन्दसंज्ञिते॥१९३॥

विश्वोत्तीर्णे परे पूर्णे पुनरावृत्तिवर्जिते।
लीनो वैनायके धाम्नि रमते नित्यनिर्वृते॥१९४॥

यो नामभिर्हुतैर्दत्तैः पूजयेदर्चयेन्नरः।
राजानो वश्यतां यान्ति रिपवो यान्ति दासताम्॥१९५॥

तस्य सिध्यन्ति मन्त्राणां दुर्लभाश्चेष्टसिद्धयः।
मूलमन्त्रादपि स्तोत्रमिदं प्रियतमं मम॥१९६॥

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्या मम जन्मनि।
दूर्वाभिर्नामभिः पूजां तर्पणं विधिवच्चरेत्॥१९७॥

अष्टद्रव्यैर्विशेषेण कुर्याद्भक्तिसुसंयुतः।
तस्येप्सितं धनं धान्यमैश्वर्यं विजयो यशः॥१९८॥

भविष्यति न सन्देहः पुत्रपौत्रादिकं सुखम्।
इदं प्रजपितं स्तोत्रं पठितं श्रावितं श्रुतम्॥१९९॥

व्याकृतं चर्चितं ध्यातं विमृष्टमभिवन्दितम्।
इहामुत्र च विश्वेषां विश्वैश्वर्यप्रदायकम्॥२००॥

स्वच्छन्दचारिणाप्येष येन सन्धार्यते स्तवः।
स रक्ष्यते शिवोद्भूतैर्गणैरध्यष्टकोटिभिः॥२०१॥

लिखितं पुस्तकस्तोत्रं मन्त्रभूतं प्रपूजयेत्।
तत्र सर्वोत्तमा लक्ष्मीः सन्निधत्ते निरन्तरम्॥२०२॥

दानैरशेषैरखिलैर्व्रतैश्च
तीर्थैरशेषैरखिलैर्मखैश्च ।
न तत्फलं विन्दति यद्गणेश-
सहस्रनामस्मरणेन सद्यः॥२०३॥

एतन्नाम्नां सहस्रं पठति दिनमणौ प्रत्यहं प्रोज्झिहाने
सायं मध्यन्दिने वा त्रिषवणमथवा सन्ततं वा जनो यः।
स स्यादैश्वर्यधुर्यः प्रभवति वचसां कीर्तिमुच्चैस्तनोति
दारिद्र्यं हन्ति विश्वं वशयति सुचिरं वर्धते पुत्रपौत्रैः॥२०४॥

अकिञ्चनोऽप्येकचित्तो नियतो नियतासनः।
प्रजपंश्चतुरो मासान् गणेशार्चनतत्परः॥२०५॥
दरिद्रतां समुन्मूल्य सप्तजन्मानुगामपि।
लभते महतीं लक्ष्मीमित्याज्ञा पारमेश्वरी॥२०६॥

आयुष्यं वीतरोगं कुलमतिविमलं सम्पदश्चार्तिनाशः
कीर्तिर्नित्यावदाता भवति खलु नवा कान्तिरव्याजभव्या।
पुत्राः सन्तः कलत्रं गुणवदभिमतं यद्यदन्यच्च तत्तत्
नित्यं यः स्तोत्रमेतत् पठति गणपतेस्तस्य हस्ते समस्तम्॥२०७॥

गणञ्जयो गणपतिर्हेरम्बो धरणीधरः।
महागणपतिर्बुद्धिप्रियः क्षिप्रप्रसादनः॥२०८॥
अमोघसिद्धिरमृतमन्त्रश्चिन्तामणिर्निधिः ।
सुमङ्गलो बीजमाशापूरको वरदः कलः॥२०९॥

काश्यपो नन्दनो वाचासिद्धो दुण्ढिर्विनायकः।
मोदकैरेभिरत्रैकविंशत्या नामभिः पुमान्॥२१०॥

उपायनं ददेद्भक्त्या मत्प्रसादं चिकीर्षति।
वत्सरं विघ्नराजोऽस्य तथ्यमिष्टार्थसिद्धये॥२११॥

यः स्तौति मद्गतमना ममाराधनतत्परः।
स्तुतो नाम्ना सहस्रेण तेनाहं नात्र संशयः॥२१२॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये
नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
नमो नमो विपुलदयैकसिद्धये
नमो नमः करिकलभाननाय ते॥२१३॥

किङ्किणीगणरचितचरणः
प्रकटितगुरुमितचारुकरणः ।
मदजललहरीकलितकपोलः
शमयतु दुरितं गणपतिनाम्ना॥२१४॥

॥इति श्रीगणेशपुराणे उपासनाखण्डे ईश्वरगणेशसंवादे गणेशसहस्रनामस्तोत्रं
नाम षट्त्वारिंशोऽध्यायः॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः पूजाक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे गजाननम्॥

अनया पूजया श्री-सिद्धिविनायकः प्रीयताम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ सिद्धिविनायक-चतुर्थी-व्रत-कथा ॥

(मूलम्—श्री-व्रतराजः)

शौनकाद्या ऋषिगणा नैमिषारण्यवासिनः।
सूतं पौराणिकं श्रेष्ठमिदमूचुर्वचस्तदा॥१॥

ऋषय ऊचुः

निर्विघ्ने तु कार्याणि कथं सिध्यन्ति सूतज।
अर्थसिद्धिः कथं नृणां पुत्रसौभाग्यसम्पदः॥२॥
दम्पत्योः कलहे चैव बन्धुभेदे तथा नृणाम्।
उदासीनेषु लोकेषु कथं सुमुखता भवेत्॥३॥
विद्यारम्भे तथा नृणां वाणिज्ये च कृषौ तथा।
नृपतेः परचक्रं च जयसिद्धिः कथं भवेत्॥४॥
कां देवतां नमस्कृत्य कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम्।
एतत् समस्तं विस्तार्य ब्रूहि मे सूत पृच्छतः॥५॥

सूत उवाच

सन्नद्धयोः पुरा विप्राः कुरुपाण्डवसेनयोः।
पृष्टवान् देवकीपुत्रं कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः॥६॥

युधिष्ठिर उवाच

निर्विघ्नेन जयं मह्यं वद त्वां देवकीसुत।
कां देवतां नमस्कृत्य सम्यग्राज्यं लभेमहि॥७॥

कृष्ण उवाच

पूजयस्व गणाध्यक्षमुमा-मल-समुद्भवम्।
तस्मिन् सम्पूजिते देवे ध्रुवं राज्यमवाप्स्यसि॥८॥

युधिष्ठिर उवाच

देव केन विधानेन पूजनीयो गणाधिपः।
पूजितस्तु तित्थौ कस्यां सिद्धिदो गणपो भवेत्॥१॥

कृष्ण उवाच

मासि भाद्रपदे शुक्ले चतुर्थ्या पूजयेन्नृप।
मासि माघे श्रावणे वा मार्गशीर्षेऽथवा भवेत्॥१०॥

गजवक्रं तु शुक्लायां चतुर्थ्या पूजयेन्नृप।
यदा चोत्पद्यते भक्तिस्तदा पूज्यो गणाधिपः॥११॥

प्रातः शुक्लितिलैः स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेन्नृप।
निष्कमात्रसुवर्णेन तदर्धार्धेन वा पुनः॥१२॥

स्वशक्त्या गणनाथस्य स्वर्णरौप्यमयाकृतिम्।
अथवा मृन्मयीं कुर्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१३॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं गजवक्रं चतुर्भुजम्।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥१४॥

ध्यात्वा चानेन मन्त्रेण स्नाप्य पश्चामृतैः पृथक्।
गणाध्यक्षेति नाम्ना वै गन्धं दद्याच्च भक्तितः॥१५॥

आवाहनार्थं पाद्यं च दत्त्वा पश्चात् प्रयत्नतः।
रक्तवस्त्रयुगं सर्वप्रदं दद्याच्च भक्तितः॥१६॥

विनायकेति पुष्पाणि धूपं चोमासुताय च।
दीपं रुद्रप्रियायेति नैवेद्यं विघ्ननाशिने॥१७॥

किञ्चित् सुवर्णं पूजां च ताम्बूलं च समर्पयेत्।
ततो दूर्वाङ्कुरान् गृह्य विंशतिं चैकमेव हि॥१८॥

पूजनीयः प्रयत्नेन एभिर्नामपदैः पृथक्।
गणाधिप नमस्तेऽस्तु उमापुत्राघनाशन॥१९॥

विनायकेशपुत्रेति सर्वसिद्धिप्रदायक।
एकदन्तेभवक्रेति तथा मूषकवाहन॥२०॥

कुमारगुरवे तुभ्यं पूजनीयः प्रयत्नतः।
दूर्वायुग्मं गृहीत्वा तु गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्॥२१॥

एकैकेन तु नाम्ना वै दत्त्वैकं सर्वनामभिः।
अथैकविंशतिं गृह्य मोदकान् घृतपाचितान्॥२२॥

स्थापयित्वा गणाध्यक्षसमीपे कुरुनन्दन।
दश विप्राय दातव्याः स्वयं ग्राह्यास्तथा दश॥२३॥

एकं गणाधिपे दद्यात् सनैवेद्यं नृपोत्तम।
विनायकस्य प्रतिमां ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥२४॥

विनायकस्य प्रतिमां वस्त्रयुग्मेन वेष्टिताम्।
तुभ्यं सम्प्रददे विप्र प्रीयतां मे गजाननः॥२५॥

विनायक गणेश त्वं सर्वदेवनमस्कृत।
पार्वतीप्रिय विघ्नेश मम विघ्नं विनाशय॥२६॥

गणेशः प्रतिगृह्णाति गणेशो वै ददाति च।
गणेशस्तारकोभाभ्यां गणेशाय नमो नमः॥२७॥

कृत्वा नैमित्तिकं कर्म पूजयेदिष्टदेवताम्।
ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाद् भुञ्जीयात् तैलवर्जितम्॥२८॥

एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने।
विजयस्ते भवेन्नूनं सत्यं सत्यं मयोदितम्॥२९॥

त्रिपुरं हन्तुकामेन पूजितः शूलपाणिना।
शक्रेण पूजितः पूर्वं वृत्रासुरवधेच्छया॥३०॥

अन्वेषयन्त्या भर्तारं पूजितोऽहल्यया पुरा।
नलस्यान्वेषणार्थाय दमयन्त्या पुराऽऽर्चितः॥३१॥

रघुनाथेन तद्वच्च सीतायान्वेषणे पुरा।
द्रष्टुं सीतां महाभागां वीरेण च हनूमता॥३२॥

भगीरथेन तद्वच्च गङ्गामानयता पुरा।
अमृतोत्पादनार्थाय तथा देवासुरैरपि॥३३॥

अमृतं हरता पूर्वं वैनतेयेन पक्षिणा।
आराधितो गणाध्यक्षो ह्यमृतं च हृतं बलात्॥३४॥

रुक्मिणीहेतुकामेन पूजितोऽसौ मया प्रभुः।
तस्य प्रसादाद्राजेन्द्र रुक्मिणीं प्राप्तवानहम्॥३५॥

यदा पूर्वं हि दैत्येन हृतो रुक्मिणिनन्दनः।
आराधितो मया तद्वद् रुक्मिण्या सहितेन च॥३६॥

कुष्ठव्याधियुतेनाथ साम्बेनाऽऽराधितः पुरा।
जयकामस्तथा शीघ्रं त्वमाराधय शाङ्करिम्॥३७॥

विद्याकामो लभेद् विद्यां धनकामो धनं तथा।
जयं च जयकामस्तु पुत्रार्थी विन्दते सुतान्॥३८॥

पतिकामा च भर्तारं सौभाग्यं च सुवासिनी।
विधवा पूजयित्वा तु वैधव्यं नाप्रयात्कचित्॥३९॥

वैष्णव्याद्यासु दीक्षासु आदौ पूज्यो गणाधिपः।
तस्मिन् सम्पूजिते विष्णुरीशो भानुस्तथा ह्युमा॥४०॥

हव्यवाहमुखा देवाः पूजिताः स्युर्न संशयः।
चण्डिकाद्या मातृगणाः परितुष्टा भवन्ति च॥४१॥

तस्मिन्सम्पूजिते विप्रा भक्त्या सिद्धिविनायके।
एवं कृते धर्मराज गणनाथस्य पूजने॥४२॥

प्राप्स्यसि त्वं स्वकं राज्यं हत्वा शत्रून् रणाजिरे।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि नात्र कार्या विचारणा॥४३॥

एवमुक्तस्तु कृष्णेन सानुजः पाण्डुनन्दनः।
पूजयामास देवस्य पुत्रं त्रिपुरघातिनः॥४४॥

शत्रुसङ्घं निहत्यासौ प्राप्तवान्राज्यमोजसा।

सूत उवाच

यः पूजयेन्मन्दभाग्यो गणेशं सिद्धिदायकम्॥४५॥

सिध्यन्ति तस्य कार्याणि मनसा चिन्तितान्यपि।
ख्यातिं गमिष्यते तेन नाम्ना सिद्धिविनायकः॥४६॥

य इदं शृणुयान्नित्यं श्रावयेद् वा समाहितः।
सिध्यन्ति सर्वकार्याणि विनायकप्रसादतः॥४७॥

॥इति सिद्धिविनायकव्रतं भविष्योक्तं सम्पूर्णम्॥

॥स्यमन्तकोपाख्यानम्॥

॥सारभूतः श्लोकः॥

“सिंहः प्रसेनम् अवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।
सुकुमारक मा रोदीः तव ह्येष स्यमन्तकः॥”

॥ स्यमन्तकोपाख्यानपठने प्रमाणवचनानि ॥

कन्यादित्ये चतुर्थ्यां च शुक्ले चन्द्रस्य दर्शनम्।
 मिथ्याभिदूषणं कुर्यात् तस्मात् पश्येन्न तं तदा॥
 तद्दोषशान्तये जाप्यं विष्णुनोक्तं स्यमन्तकम्॥
 (व्रतचूडामण्यादौ व्रतग्रन्थेषु)
 ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्॥
 चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥
 (अत्रैव अग्रे उपाख्याने)

नन्दिकेश्वर उवाच

शृणुष्वैकाग्रचित्तः सन् व्रतं गाणेश्वरं महत्।
 चतुर्थ्यां शुक्लपक्षे तु सदा कार्यं प्रयत्नतः॥१॥
 सनत्कुमार योगीन्द्र यदीच्छेच्छुभमात्मनः।
 नारी वा पुरुषो वाऽपि यः कुर्याद् विधिवद् व्रतम्॥२॥
 मोचयत्याशु विप्रेन्द्र सङ्कष्टाद् व्रतिनं हि तत्।
 अपवादहरं चैव सर्वविघ्नप्रणाशनम्॥३॥
 कान्तारे विषमे वाऽपि रणे राजकुलेऽथवा।
 सर्वसिद्धिकरं विद्धि व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥४॥
 गजाननप्रियं चाथ त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
 अतो न विद्यते ब्रह्मन् सर्वसङ्कष्टनाशनम्॥५॥

सनत्कुमार उवाच

केन चादौ पुरा चीर्णं मर्त्यलोकं कथं गतम्।
 एतत्समस्तं विस्तार्य ब्रूहि गाणेश्वरं व्रतम्॥६॥

नन्दिकेश्वर उवाच

चक्रे व्रतं जगन्नाथो वासुदेवः प्रतापवान्।
आदिष्टं नारदेनैव वृथालाञ्छनमुक्तये॥७॥

सनत्कुमार उवाच

षड्गुणैश्वर्य-सम्पन्नः सृष्टिसंहार-कारकः।
वासुदेवो जगद्धापी प्राप्तवान् लाञ्छनं कथम्॥८॥

एतदाश्चर्यमाख्यानं ब्रूहि त्वं नन्दिकेश्वर।

नन्दिकेश्वर उवाच

भूमिभारनिवृत्त्यर्थं वसुदेवसुताबुभौ॥९॥
रामकृष्णौ समुत्पन्नौ पद्मनाभ-फणीश्वरौ।
जरासन्धभयात् कृष्णो द्वारकां समकल्पयत्॥१०॥
विश्वकर्माणमाहूय पुरीं हाटकनिर्मिताम्।
तत्र षोडशसाहस्रं स्त्रीणां चैव शताधिकम्॥११॥
भवनानि मनोज्ञानि तेषां मध्ये व्यकल्पयत्।
पारिजाततरुं मध्ये तासां भोगाय कल्पयत्॥१२॥
यादवानां गृहास्तत्र षट् पञ्चाशच्च कोटयः।
अन्येऽपि बहवो लोका वसन्ति विगतज्वराः॥१३॥
यत् किञ्चित् त्रिषु लोकेषु सुन्दरं तत्र दृश्यते।
सत्राजितप्रसेनाख्यौ पुत्राबुग्रस्य विश्रुतौ॥१४॥
अम्भोधितीरमासाद्य तन्मनस्कतया च सः।
सत्राजितस्तपस्तेपे सूर्यमुद्दिश्य बुद्धिमान्॥१५॥
व्रतं निरशनं गृह्य सूर्यसम्बद्धलोचनः।
ततः प्रसन्नो भगवान् सत्राजितपुरः स्थितः॥१६॥

सत्राजितोऽपि तुष्टाव दृष्ट्वा देवं दिवाकरम्।
तेजोराशे नमस्तेऽस्तु नमस्ते सर्वतोमुख॥१७॥

विश्वव्यापिन् नमस्तेऽस्तु नमस्ते विश्वरूपिणे।
काश्यपेय नमस्तेऽस्तु हरिदश्व नमोऽस्तु ते॥१८॥

ग्रहराज नमस्तेऽस्तु नमस्ते चण्डरोचिषे।
वेदत्रय नमस्तेऽस्तु सर्वदेव नमोऽस्तु ते॥१९॥

प्रसीद पाहि देवेश सुदृष्ट्या मां दिवाकर।
इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो दिवाकरः॥२०॥

स्निग्धगम्भीरमधुरं सत्राजितमुवाच ह।

सूर्य उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते॥२१॥

सत्राजित महाभाग तुष्टोऽहं तव निश्चयात्।

सत्राजित उवाच

स्यमन्तकमणिं देहि यदि तुष्टोऽसि भास्कर॥२२॥

ददौ तस्य च तद् रत्नं स्वकण्ठादवतार्य सः।

भास्कर उवाच

भाराष्टकं शातकुम्भं स्रवतेऽसौ महामणिः॥२३॥

शुचिष्मता सदा धार्यं रत्नमेतन्महोत्तमम्।
सत्राजित क्षणेनैतदशुचिं हन्ति मानवम्।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे देवस्तेजोराशिर्दिवाकरः॥२४॥

तत्कण्ठरत्नज्वलमानरूपी

पुरीं स कृष्णस्य विवेश सत्वरम्।

दृष्ट्वा तु लोका मनसा दिवाकरं

सञ्चिन्तयन्तो हि विमुष्टदृष्टयः॥२५॥

समागतोऽयं हरिदश्वदीधिति-

र्जनार्दनं द्रष्टुमसंशयेन।

नायं सहस्रांशुरितीह लोकाः

सत्राजितोऽयं मणिकण्ठभास्वान्॥२६॥

स्यमन्तकं महारत्नं दृष्ट्वा तत्कण्ठमण्डले।

स्पृहां चक्रे जगन्नाथो न जहार मणिं तु सः॥२७॥

सत्राजितो जातभयो याचयिष्यति मां हरिः।

प्रसेनाय ददौ भ्रात्रे धार्योऽयं शुचिना त्वया॥२८॥

एकदा कण्ठदेशेऽसौ क्षित्वा तं मणिमुत्तमम्।

मृगया क्रीडनार्थाय ययौ कृष्णेन संयुतः॥२९॥

अश्वारूढोऽशुचिश्चासौ हतः सिंहेन तत्क्षणात्।

रत्नमादाय सिंहोऽपि गच्छन् जाम्बवता हतः॥३०॥

नीत्वा स विवरे रत्नं ददौ पुत्राय जाम्बवान्।

पुरीं विवेश कृष्णोऽपि स्वकैः सर्वैः समावृतः॥३१॥

प्रसेनोऽद्यापि नाऽऽयाति हतः कृष्णेन निश्चितम्।

मणिलोभेन हा कष्टं बान्धवः पापिना हतः॥३२॥

द्वारकावासिनः सर्वे जना ऊचुः परस्परम्।

वृथापवादसन्तप्तः कृष्णोऽपि निरगाच्छनैः॥३३॥

सहैव तैर्गतोऽरण्यं दृष्ट्वा सिंहेन पातितम्।

प्रसेनं वाहनयुतं तत्पदानुचरः शनैः॥३४॥

ऋक्षेण निहतं दृष्ट्वा कृष्णश्चर्क्षबिलं गतः।

विवेश योजनशतमन्धकारं स्वतेजसा॥३५॥

निवारयन् ददर्शाग्रे प्रासादं बद्धभूमिकम्।

तं कुमारं जाम्बवतो दोलायाममितद्युतिम्॥३६॥

माणिक्यं लम्बमानं च ददर्श भगवान् हरिः।

रूपयौवनसम्पन्नां कन्यां जाम्बवतीं पुनः॥३७॥

दोलां दोलयमानां च ददर्श कमलेक्षणः।

महान्तं विस्मयं चक्रे दृष्ट्वा तां चारुहासिनीम्।

दोलां दोलयमाना सा जगौ गीतमिदं मुहुः॥३८॥

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।

सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥३९॥

मदनज्वरदाहार्ता दृष्ट्वा तं कमलेक्षणम्।

उवाच ललितं बाला गम्यतां गम्यतामिति॥४०॥

रत्नं गृहीत्वा वेगेन यावच्छेते तु जाम्बवान्।

इत्याकर्ण्य वचः शौरिः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥४१॥

आकर्ण्य सहस्रोत्थाय युयुधे ऋक्षराट् ततः।

तयोर्युद्धमभूद्धोरं हरिजाम्बवतोस्तदा॥४२॥

द्वारकावासिनः सर्वे गतास्ते सप्तमे दिने।

मृतः कृष्णो भक्षितो वा निःसन्दिग्धं विचार्य च॥४३॥

परलोकक्रियां चक्रुः परेतस्य तु ते तदा।

एकविंशद्दिनं यावद् बाहुप्रहरणो विभुः॥४४॥

युयुधे तेन ऋक्षेण युद्धकर्मणि तोषितः।

जाम्बवान् प्राक्तनं स्मृत्वा दृष्ट्वा देवबलं महत्॥४५॥

जाम्बवानुवाच

अजेयोऽहं सुरैः सर्वैर्यक्षराक्षसदानवैः।
त्वया जितोऽहं देवेश देवस्त्वमसि निश्चितम्॥४६॥

जाने त्वां वैष्णवं तेजो नान्यथा बलमीदृशम्।
इति प्रसाद्य देवेशं ददौ माणिक्यमुत्तमम्॥४७॥

सुतां जाम्बवतीं नाम भार्यार्थं वरवर्णिनीम्।
पाणिं वै ग्राहयामास देवदेवं च जाम्बवान्॥४८॥

मणिमादाय देवोऽपि जाम्बवत्याऽपि संयुतः।
तद्वृत्तान्तं समाचष्टे द्वारकावासिनां स्वयम्॥४९॥

सत्राजितस्य माणिक्यं दत्तवान् संसदि स्थितः।
मिथ्यापवादसंशुद्धिं प्राप्तवान् मधुसूदनः॥५०॥

सत्राजितोऽपि सत्रस्तः कृष्णाय प्रददौ सुताम्।
सत्यभामां महाबुद्धिस्तदा सर्वगुणान्विताम्॥५१॥

शतधन्वाक्रूरमुखा यादवा दुष्टमानसाः।
सत्राजितेन ते वैरं चकू रत्नाभिलाषिणः॥५२॥

दुरात्मा शतधन्वाऽपि गते कृष्णे च कुत्रचित्।
सत्राजितं निहत्याशु मणिं जग्राह पापधीः॥५३॥

कृष्णस्य पुरतः सत्या समाचष्टे विचेष्टितम्।
अन्तर्हृष्टो बहिःकोपी कृष्णः कपटनायकः॥५४॥

बलदेवपुरो वाक्यमुवाच धरणीधरः।
हत्वा सत्राजितं दुष्टो मणिमादाय गच्छति॥५५॥

निहत्य शतधन्वानं गृहीमो रत्नमावयोः।
मम भोग्यं च तद् रत्नं भविष्यति सुनिश्चितम्॥५६॥

एतच्छ्रुत्वा भयत्रस्तः शतधन्वाऽपि यादवः।
आहूयाक्रूरनामानं माणिक्यं प्रददौ च सः॥५७॥

आरुह्य वडवां वेगान्निर्गतो दक्षिणां दिशम्।
रथस्थावनुगच्छेतां तदा रामजनार्दनौ॥५८॥

शतयोजनमात्रेण ममार वडवा तदा।
पलायमानो निहतः पदातिस्तु पदातिना॥५९॥

रथस्थे बलदेवे तु हरिणा रत्नलोभतः।
न दृष्टं तत्र तद्रत्नं बलदेवपुरोऽवदत्॥६०॥

तदाकर्ण्य महारोषादुवाच वचनं बली।
कपटी त्वं सदा कृष्ण लोभी पापी सुनिश्चितम्॥६१॥

अर्थाय स्वजनं हंसि कस्त्वां बन्धुः समाश्रयेत्।
अनेकशपथैः कृष्णो बलदेवं प्रसादयत्॥६२॥

सोऽपि धिक् कष्टमित्युक्त्वा ययौ वैदर्भमण्डलम्।
कृष्णोऽपि रथमारुह्य द्वारकां प्रययौ पुनः॥६३॥

तथैवोचुर्जनाः सर्वे न साधीयानयं हरिः।
निष्कासितो रत्नलोभाज्ज्येष्ठो भ्राता बलो बली॥६४॥

तच्छ्रुत्वा दीनवदनः पापीयानिव संस्थितः।
वृथाभिशापात् सन्तप्तो बभूव स जगत्पतिः॥६५॥

अक्रूरोऽपि विनिष्क्रम्य तीर्थयात्रानिमित्ततः।
काशीं गत्वा सुखेनासौ यजन् यज्ञपतिं प्रभुम्॥६६॥

तोषमुत्पादयामास तेन द्रव्येण बुद्धिमान्।
सुरालयगृहैश्चित्रैर्नगरं समकल्पयत्॥६७॥

न दुर्मिक्षं न वै रोग ईतयो न च विद्वरम्।
शुचिना धार्यते यत्र मणिः सूर्यस्य निश्चितम्॥६८॥

जानन्नपि हि तत् सर्वं मानुषं भावमाश्रितः।
लोकाचारं तथा मायामज्ञानं च समाश्रितः॥६९॥

बन्धुवैरं समुत्पन्नं लाञ्छनं समुपस्थितम्।
वृथापवादबहुलं जायमानं कथं सहे॥७०॥

इति चिन्तातुरं कृष्णं नारदः समुपस्थितः।
गृहीत्वा तत्कृतां पूजां सुखासीनस्ततोऽब्रवीत्॥७१॥

नारद उवाच

किमर्थं खिद्यसे देव किं वा ते शोककारणम्।
यथावृत्तं समाचष्टे नारदाय च केशवः॥७२॥

नारद उवाच

जानामि कारणं देव यदर्थं लाञ्छनं तव।
त्वया भाद्रपदे शुक्लचतुर्थ्या चन्द्रदर्शनम्॥७३॥

कृतं तेन समुत्पन्नं लाञ्छनं तु वृथैव हि।

श्रीकृष्ण उवाच

वद नारद मे शीघ्रं को दोषश्चन्द्रदर्शने॥७४॥

किमर्थं तु द्वितीयायां तस्य कुर्वन्ति दर्शनम्।

नारद उवाच

गणनाथेन संशप्तश्चन्द्रमा रूपगर्वतः॥७५॥

त्वद्दर्शने नराणां हि वृथानिन्दा भविष्यति।

श्रीकृष्ण उवाच

किमर्थं गणनाथेन शप्तश्चन्द्रः सुधामयः॥७६॥

इदमाख्यानकं श्रेष्ठं यथावद् वक्तुमर्हसि।

नारद उवाच

गणानामाधिपत्ये च रुद्रेण विहितः पुरा॥७७॥

अणिमा महिमा चैव लघिमा गरिमा तथा।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः॥७८॥

भार्यार्थं प्रददौ देवो गणेशस्य प्रजापतिः।
पूजयित्वा गणाध्यक्षं स्तुतिं कर्तुं प्रचक्रमे॥७९॥

ब्रह्मोवाच

गजवक्त्र गणाध्यक्ष लम्बोदर वरप्रद।
विघ्नाधीश्वर देवेश सृष्टिसंहारकारक॥८०॥

यः पूजयेद् गणाध्यक्षं मोदकाद्यैः प्रयत्नतः।
तस्य प्रजायते सिद्धिर्निविघ्नेन न संशयः॥८१॥

असम्पूज्य गणाध्यक्षं ये वाञ्छन्ति सुरासुराः।
न तेषां जायते सिद्धिः कल्पकोटिशतैरपि॥८२॥

त्वद्भक्त्या तु गणाध्यक्ष विष्णुः पालयते सदा।
रुद्रोऽपि संहरत्याशु त्वद्भक्त्यैव करोम्यहम्॥८३॥

इत्थं संस्तूयमानोऽसौ देवदेवो गजाननः।
उवाच परमप्रीतो ब्रह्माणं जगतां पतिम्॥८४॥

श्रीगणेश उवाच

वरं ब्रूहि प्रदास्यामि यत् ते मनसि वर्तते।

ब्रह्मोवाच

क्रियमाणस्य मे सृष्टिर्निविघ्नं जायतां प्रभो॥८५॥

एवमस्त्विति देवोऽसौ गृहीत्वा मोदकान् करे।
सत्यलोकात् समागच्छन् स्वेच्छया गगने शनैः॥८६॥

चन्द्रलोकं समासाद्य चलितो गणनायकः।
उपहासं तदा चक्रे सोमो रूपमदान्वितः॥८७॥

तं दृष्ट्वा कोपताम्राक्षो गणनाथः शशाप ह।
दर्शनीयः सुरूपोऽहं सुन्दरश्चाहमित्यथ॥८८॥

गर्वितोऽसि शशाङ्कः त्वं फलं प्राप्स्यसि सत्वरम्।
अद्यप्रभृति लोकास्त्वां न हि पश्यन्ति पापिनम्॥८९॥

ये पश्यन्ति प्रमादेन त्वां नरा मृगलाञ्छनम्।
मिथ्याभिशापसंयुक्ता भविष्यन्तीह ते ध्रुवम्॥९०॥

हाहाकारो महाज्जातः श्रुत्वा शापं च भीषणम्।
अत्यन्तं म्लानवदनश्चन्द्रो जलमथाविशत्॥९१॥

कुमुदं कौमुदीनाथः स्थितस्तत्र कृतालयः।
ततो देवर्षिगन्धर्वा निराशा दीनमानसाः॥९२॥

तुरासाहं पुरोधाय जग्मुस्ते तं पितामहम्।
देवं शशंसुश्चन्द्रस्य गणेशस्य च चेष्टितम्॥९३॥

दत्तः शापो गणेशेन कथयामासुरादरात्।
विचार्य भगवान् ब्रह्मा तान् सुरानिदमब्रवीत्॥९४॥

गणेशशापो देवेन्द्र शक्यते केन वाऽन्यथा।
कर्तुं रुद्रेण न मया विष्णुना चापि निश्चितम्॥९५॥

तमेव देवदेवेशं ब्रजध्वं शरणं सुराः।
स एव शापमोक्षं च करिष्यति न संशयः॥१६॥

देवा ऊचुः

केनोपायेन वरदो गजवक्रो गणेश्वरः।
पितामह महाप्राज्ञ तदस्माकं वद प्रभो॥१७॥

पितामह उवाच

चतुर्थ्यां देवदेवोऽसौ पूजनीयः प्रयत्नतः।
कृष्णपक्षे विशेषेण नक्तं कुर्याच्च तद् व्रतम्॥१८॥
अपूपैर्घृतसंयुक्तैर्मोदकैः परितोषयेत्।
मधुरान्नं हविष्यं च स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः॥१९॥
स्वर्गरूपं गणेशस्य दातव्यं द्विजसत्तम।
शक्त्या च दक्षिणां दद्याद् वित्तशाठ्यं न कारयेत्॥१००॥
एवं श्रुत्वा च तैः सर्वैर्गीष्पतिः प्रेषितस्तदा।
स गत्वा कथयामास चन्द्राय ब्रह्मणोदितम्॥१०१॥
व्रतं चक्रे ततश्चन्द्रो यथोक्तं ब्रह्मणा पुरा।
आविर्बभूव भगवान् गणेशो व्रततोषितः॥१०२॥
तं क्रीडमानं गणनायकं च
तुष्टाव दृष्ट्वा तु कलानिधानः।
त्वं कारणं कारणकारणानां
वेत्तासि वेद्यं च विभो प्रसीद॥१०३॥
प्रसीद देवेश जगन्निवास
गणेश लम्बोदर वक्रतुण्ड।
विरिञ्चिनारायणपूज्यमान
क्षमस्व मे गर्वकृतं च हास्यम्॥१०४॥

ये त्वामसम्पूज्य गणेश नूनं
 वाच्छन्ति मूढाः स्वकृतार्थसिद्धिम्।
 ते दैवनष्टा निभृतं च लोके
 ज्ञातो मया ते सकलः प्रभावः॥१०५॥

ये चाप्युदासीनतरास्तु पापाः
 ते यान्ति वासं नरके सदैव।
 हेरम्ब लम्बोदर मे क्षमस्व
 दुश्चेष्टितं तत् करुणासमुद्र॥१०६॥

एवं संस्तूयमानोऽसौ चन्द्रेणाह गजाननः।
 तुष्टोऽहं तव दास्यामि वरं ब्रूहि निशाकर॥१०७॥

चन्द्र उवाच

लोकानां दर्शनीयोऽहं भवामि पुनरेव हि।
 विशापोऽहं भविष्यामि त्वत्प्रसादाद् गणेश्वर॥१०८॥

गणेश उवाच

वरमन्यं प्रदास्यामि नैतद् देयं मया तव।
 ततो ब्रह्मादयः सर्वे समाजग्मुर्भयार्दिताः॥१०९॥

विशापं कुरु देवेश प्रार्थयामो वयं तव।
 विशापमकरोच्चन्द्रं कमलासनगौरवात्॥११०॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु ये पश्यन्ति सदैव हि।
 मिथ्यापवादमावर्षं प्राप्स्यन्तीह न संशयः॥१११॥

मासादौ पूर्वमेव त्वां ये पश्यन्ति सदा जनाः।
 भद्रायां शुक्लपक्षस्य तेषां दोषो न जायते॥११२॥

तदाप्रभृति लोकोऽयं द्वितीयायां कृतादरः।
 पुनरेव तु पप्रच्छ कलावान् गणनायकम्॥११३॥

केनोपायेन देवेश तुष्टो भवसि तद्वद।

गणेश उवाच

यश्च कृष्णचतुर्थ्यां तु मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम्॥११४॥

रोहिण्या सहितं त्वां च समभ्यर्च्यार्घ्यदानतः।

यथाशक्त्या च मद्रूपं स्वर्णेन परिकल्पितम्॥११५॥

दत्त्वा द्विजाय भुञ्जीत कथां श्रुत्वा विधानतः।

सदा तस्य करिष्यामि सङ्कष्टस्य निवारणम्॥११६॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु मृन्मयी प्रतिमा शुभा।

हेमाभावे तु कर्तव्या नानापुष्पैः प्रपूज्य माम्॥११७॥

ब्राह्मणान् भोजयेत् पश्चाज्जागरं च विशेषतः।

स्थापयेदव्रणं कुम्भं धान्यस्योपरि शोभितम्॥११८॥

यथाशक्त्या च मद्रूपं शातकुम्भेन निर्मितम्।

वस्त्रद्वयसमाच्छन्नं मोदकाद्यैः प्रपूज्य माम्॥११९॥

रक्ताम्बरधरो मर्त्यो ब्रह्मचर्यव्रतः शुचिः।

रोहिणीसहितं त्वां च पूजयेत् स्थाप्य मत्पुरः॥१२०॥

रजतस्य तु रूपं ते कृत्वा शक्त्या विनिर्मितम्।

वस्त्रं शिवप्रियायेति उपवस्त्रं गणाधिपे॥१२१॥

गन्धं लम्बोदरायेति पुष्पं सिद्धिप्रदायके।

धूपं गजमुखायेति दीपं मूषकवाहने॥१२२॥

विघ्ननाथाय नैवेद्यं फलं सर्वार्थसिद्धिदे।

ताम्बूलं कामरूपाय दक्षिणां धनदाय च॥१२३॥

इक्षुदण्डैर्मोदकैश्च होमं कुर्याच्च नामभिः।

विसर्जनं ततः कुर्यात् सर्वसिद्धिप्रदायकम्॥१२४॥

एवं सम्पूज्य विघ्नेशं कथां श्रुत्वा विधानतः।
मन्त्रेणानेन तत् सर्वं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥१२५॥

दानेनानेन देवेश प्रीतो भव गणेश्वर।
सर्वत्र सर्वदा देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा॥१२६॥

मानोन्नतिं च राज्यं च पुत्रपौत्रान् प्रदेहि मे।
गाश्च धान्यं च वासांसि दद्यात् सर्वं स्वशक्तितः॥१२७॥

दत्त्वा तु ब्राह्मणे सर्वं स्वयं भुञ्जीत वाग्यतः।
मोदकापूपमधुरं लवणक्षारवर्जितम्॥१२८॥

एवं करोति यश्चन्द्र तस्याहं सर्वदा जयम्।
सिद्धिं च धनधान्ये च दादामि विपुलां प्रजाम्॥१२९॥

इत्युक्तान्तर्दधे देवो विघ्नराजो विनायकः।
तद् व्रतं कुरु कृष्ण त्वं ततः सिद्धिमवाप्स्यसि॥१३०॥

नारदेनैवमुक्तस्तु व्रतं चक्रे हरिः स्वयम्।
मिथ्यापवादं निर्मृज्य ततः कृष्णोऽभवच्छुचिः॥१३१॥

ये शृण्वन्ति तवाख्यानं स्यमन्तकमणीयकम्।
चन्द्रस्य चरितं सर्वं तेषां दोषो न जायते॥१३२॥

भाद्रशुक्लचतुर्थ्यां तु क्वचिच्चन्द्रस्य दर्शनम्।
जातं तत्परिहारार्थं श्रोतव्यं सर्वमेव हि॥१३३॥

यदा यदा मनःकष्टं सन्देह उपजायते।
तदा तदा च श्रोतव्यमाख्यानं कष्टनाशनम्।
एवमुक्त्वा गतो देवो गणेशः कृष्णतोषितः॥१३४॥

यदा यदा पश्यति कार्यमुत्थितं
नारी नरश्चाथ करोति तद् व्रतम्।
सिध्यन्ति कार्याणि मनेप्सितानि
किं दुर्लभं विघ्नहरे प्रसन्ने॥१३५॥

॥इति श्रीस्कन्दपुराणे नन्दिकेश्वरसनत्कुमारसंवादे स्यमन्तकोपाख्यानं
सम्पूर्णम्॥

॥ श्री-सरस्वती-पूजा ॥

(मूलम्—पूजा-सङ्ग्रहः (राधाकृष्ण-शास्त्रिणः))

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्वं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-सरस्वती-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{२९} नाम संवत्सरे दक्षिणायने वर्ष-ऋतौ (कन्या/तुला)-आश्वयुज-
मासे शुक्लपक्षे नवम्यां शुभतिथौ ()-वासरयुक्तायाम् ()^{३०} नक्षत्र
()^{३१} नाम योग ()^{३२} करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम्
अस्याम् () शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-
आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं
पुत्रपौत्राभिवृद्धयर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि
जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां
रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-
पापक्षयार्थं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीत्यर्थं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजां
करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

^{२९}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{३०}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{३१}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

^{३२}पृष्ठं १२९ पश्यताम्

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

सरस्वतीं सत्यवासां सुधांशुसमविग्रहाम्।
स्फटिकाक्षस्रजं पद्मं पुस्तकं च शुकं करैः॥

चतुर्भिर्दधतीं देवीं चन्द्रबिम्ब-समाननाम्।
वल्लभामखिलार्थानां वल्लकीवादनप्रियाम्॥

भारतीं भावये देवीं भाषाणामधिदेवताम्।
भावितां हृदये सद्भिर्भामिनीं परमेष्ठिनः॥

अस्मिन् पुस्तक-मण्डले दुर्गालक्ष्मी-युक्तां सरस्वतीं ध्यायामि।

चतुर्भुजां चन्द्रवर्णां चतुराननवल्लभाम्।
आवाहयामि वाणि त्वामाश्रितार्ति-विनाशिनीम्॥

अस्मिन् पुस्तक-मण्डले दुर्गालक्ष्मी-युक्तां सरस्वतीमावाहयामि।

आसनं संगृहाणेदमाश्रिते सकलामरैः।
आदृते सर्वमुनिभिरार्तिदे सुरवैरिणाम् ॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यमाद्यन्तशून्यायै वेद्यायै वेदवादिभिः।
दास्यामि वाणि वरदे देवराजसमर्चिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अघहन्त्रि गृहाणेदम् अर्घ्यमष्टाङ्गसंयुतम्।
अम्बाखिलानां जगताम् अम्बुजासनसुन्दरि॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचम्यतां तोयमिदमाश्रितार्थप्रदायिनि।
आत्मभूवदनावसे आधिहारिणि ते नमः॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं गृहाणेदं मधुसूदनवन्दिते।
मन्दस्मिते महादेवि महादेवसमर्चिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पञ्चामृतं गृहाणेदं पञ्चाननसमर्चिते।
पयोदधिघृतोपेतं पञ्चपातकनाशिनि॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पञ्चामृतं समर्पयामि।

नमस्ते हंसवाहिन्यै नमस्ते धातृपत्निके।
गन्धोदकेन सम्पूर्णं स्नानं च प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।^{३३}

साध्वीनामग्रतो गण्ये साधुसङ्घसमादृते।
सरस्वति नमस्तुभ्यं स्नानं स्वीकुरु सम्प्रति॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

दुकूलद्वितयं देवि दुरितापहवैभवे।
विधिप्रिये गृहाणेदं सुधानिधिसमं शिवे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं गृहाणेदमुपमाशून्यवैभवे।
हिरण्यगर्भमहिषि हिरण्मयगुणैः कृतम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, उपवीतं समर्पयामि।

वर्णरूपे गृहाणेदं स्वर्णवर्यपरिष्कृतम्।
अर्णवोद्धृतरत्नाढ्यं कर्णभूषादिभूषणम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, आभरणानि समर्पयामि।

विन्यस्तं नेत्रयोः कान्त्यै सौवीराञ्जनमुत्तमम्।
सङ्गृहाण सुरश्रेष्ठे वागीश्वरि नमोऽस्तु ते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नेत्राञ्जनं समर्पयामि। ३३

कुङ्कुमाञ्जन-सिन्दूर-कञ्चुकादिकमम्बिके ।
सौभाग्यद्रव्यमखिलं सुरवन्द्ये गृहाण मे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि।

अन्धकारिप्रियाराध्ये गन्धमुत्तमसौरभम्।
गृहाण वाणि वरदे गन्धर्वपरिपूजिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षतांस्त्वं गृहाणेमान् अहतानमराचिंते।
अक्षतेऽद्भुतरूपाढ्ये यक्षराजादिवन्दिते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुत्राग-जाती-मल्ल्यादि-पुष्पजातं गृहाण मे।
पुमर्थदायिनि परे पुस्तकाढ्य-कराम्बुजे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

- | | | | |
|-----|--------------------|---|------------------------|
| १. | पावनायै नमः | — | पादौ पूजयामि |
| २. | गिरे नमः | — | गुल्फौ पूजयामि |
| ३. | जगद्वन्द्यायै नमः | — | जङ्घे पूजयामि |
| ४. | जलजासनायै नमः | — | जानुनी पूजयामि |
| ५. | उत्तमायै नमः | — | ऊरू पूजयामि |
| ६. | कमलासनप्रियायै नमः | — | कटिं पूजयामि |
| ७. | नानाविद्यायै नमः | — | नाभिं पूजयामि |
| ८. | वाण्यै नमः | — | वक्षः पूजयामि |
| ९. | कुरङ्गाक्ष्यै नमः | — | कुचौ पूजयामि |
| १०. | कलारूपिण्यै नमः | — | कण्ठं पूजयामि |
| ११. | भाषायै नमः | — | बाहून् पूजयामि |
| १२. | चिरन्तनायै नमः | — | चुबुकं पूजयामि |
| १३. | मुग्धस्मितायै नमः | — | मुखं पूजयामि |
| १४. | लोलेक्षणायै नमः | — | लोचने पूजयामि |
| १५. | कलायै नमः | — | ललाटं पूजयामि |
| १६. | वर्णरूपायै नमः | — | कर्णौ पूजयामि |
| १७. | करुणायै नमः | — | कचान् पूजयामि |
| १८. | शिवायै नमः | — | शिरः पूजयामि |
| १९. | सरस्वत्यै नमः | — | सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि |

॥ दुर्गाष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

सत्यै नमः

साध्व्यै नमः

भवप्रीतायै नमः

भवान्यै नमः

भवमोचन्यै नमः

आर्यायै नमः

दुर्गायै नमः

जयायै नमः

आद्यायै नमः

त्रिनेत्रायै नमः

१०

शूलधारिण्यै नमः

पिनाकधारिण्यै नमः

चित्रायै नमः

चण्डघण्टायै नमः

महातपसे नमः

मनसे नमः

बुद्ध्यै नमः

अहङ्कारायै नमः

चित्तरूपायै नमः

चितायै नमः

२०

चित्त्यै नमः

सर्वमन्त्रमय्यै नमः

सत्तायै नमः

सत्यानन्दस्वरूपिण्यै नमः

अनन्तायै नमः

भाविन्यै नमः

भाव्यायै नमः

भव्यायै नमः

अभव्यायै नमः

सदागत्यै नमः

३०

शाम्भव्यै नमः

देवमात्रे नमः

चिन्तायै नमः

रत्नप्रियायै नमः

सर्वविद्यायै नमः

दक्षकन्यायै नमः

दक्षयज्ञविनाशिन्यै नमः

अपर्णायै नमः

अनेकवर्णायै नमः

पाटलायै नमः

४०

पाटलावत्यै नमः

पट्टाम्बरपरीधानायै नमः

कलमञ्जीररञ्जिन्यै नमः

अमेयविक्रमायै नमः

क्रूरायै नमः

सुन्दर्यै नमः

| | | | |
|------------------------|----|-------------------------|----|
| सुरसुन्दर्यै नमः | | चण्डमुण्डविनाशिन्यै नमः | |
| वनदुर्गायै नमः | | सर्वासुरविनाशायै नमः | |
| मातङ्ग्यै नमः | | सर्वदानवघातिन्यै नमः | |
| मतङ्गमुनिपूजितायै नमः | ५० | सर्वशास्त्रमय्यै नमः | |
| ब्राह्म्यै नमः | | सत्यायै नमः | |
| माहेश्वर्यै नमः | | सर्वास्त्रधारिण्यै नमः | |
| ऐन्द्र्यै नमः | | अनेकशस्त्रहस्तायै नमः | |
| कौमार्यै नमः | | अनेकास्त्रधारिण्यै नमः | |
| वैष्णव्यै नमः | | कुमार्यै नमः | ८० |
| चामुण्डायै नमः | | एककन्यायै नमः | |
| वाराह्यै नमः | | कैशोर्यै नमः | |
| लक्ष्म्यै नमः | | युवत्यै नमः | |
| पुरुषाकृत्यै नमः | | यत्यै नमः | |
| विमलायै नमः | ६० | अप्रौढायै नमः | |
| उत्कर्षिण्यै नमः | | प्रौढायै नमः | |
| ज्ञानायै नमः | | वृद्धमात्रे नमः | |
| क्रियायै नमः | | बलप्रदायै नमः | |
| नित्यायै नमः | | महोदर्यै नमः | |
| बुद्धिदायै नमः | | मुक्तकेश्यै नमः | ९० |
| बहुलायै नमः | | घोररूपायै नमः | |
| बहुलप्रेमायै नमः | | महाबलायै नमः | |
| सर्ववाहनवाहनायै नमः | | अग्निज्वालायै नमः | |
| निशुम्भशुम्भहनन्यै नमः | | रौद्रमुख्यै नमः | |
| महिषासुरमर्दिन्यै नमः | ७० | कालरात्र्यै नमः | |
| मधुकैटभह्त्र्यै नमः | | तपस्विन्यै नमः | |

नारायण्यै नमः

भद्रकाल्यै नमः

विष्णुमायायै नमः

जलोदर्यै नमः १००

शिवदूत्यै नमः

कराल्यै नमः

अनन्तायै नमः

परमेश्वर्यै नमः

कात्यायन्यै नमः

सावित्र्यै नमः

प्रत्यक्षायै नमः

ब्रह्मवादिन्यै नमः १०८

॥ इति श्री-दुर्गाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

प्रकृत्यै नमः

विकृत्यै नमः

विद्यायै नमः

सर्वभूतहितप्रदायै नमः

श्रद्धायै नमः

विभूत्यै नमः

सुरभ्यै नमः

परमात्मिकायै नमः

वाचे नमः

पद्मालयायै नमः १०

पद्मायै नमः

शुचये नमः

स्वाहायै नमः

स्वधायै नमः

सुधायै नमः

धन्यायै नमः

हिरण्मय्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

नित्यपुष्टायै नमः

विभावर्यै नमः २०

अदित्यै नमः

दित्यै नमः

दीप्तायै नमः

वसुधायै नमः

वसुधारिण्यै नमः

कमलायै नमः

कान्तायै नमः

क्षमायै नमः

क्षीरोदसम्भवायै नमः
 अनुग्रहप्रदायै नमः
 बुद्धये नमः
 अनघायै नमः
 हरिवल्लभायै नमः
 अशोकायै नमः
 अमृतायै नमः
 दीप्तायै नमः
 लोकशोकविनाशिन्यै नमः
 धर्मनिलयायै नमः
 करुणायै नमः
 लोकमात्रे नमः
 पद्मप्रियायै नमः
 पद्महस्तायै नमः
 पद्माक्ष्यै नमः
 पद्मसुन्दर्यै नमः
 पद्मोद्भवायै नमः
 पद्ममुख्यै नमः
 पद्मनाभप्रियायै नमः
 रमायै नमः
 पद्ममालाधरायै नमः
 देव्यै नमः
 पद्मिन्यै नमः
 पद्मगन्धिन्यै नमः
 पुण्यगन्धायै नमः

३०

४०

५०

सुप्रसन्नायै नमः
 प्रसादाभिमुख्यै नमः
 प्रभायै नमः
 चन्द्रवदनायै नमः
 चन्द्रायै नमः
 चन्द्रसहोदर्यै नमः
 चतुर्भुजायै नमः
 चन्द्ररूपायै नमः
 इन्दिरायै नमः
 इन्दुशीतलायै नमः
 आह्लादजनन्यै नमः
 पुष्ट्यै नमः
 शिवायै नमः
 शिवकर्यै नमः
 सत्यै नमः
 विमलायै नमः
 विश्वजनन्यै नमः
 तुष्ट्यै नमः
 दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
 शान्तायै नमः
 शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
 श्रियै नमः
 भास्कर्यै नमः
 बिल्वनिलयायै नमः

६०

७०

| | | | |
|------------------------|----|------------------------------|-----|
| वरारोहायै नमः | | समुद्रतनयायै नमः | |
| यशस्विन्यै नमः | ८० | जयायै नमः | |
| वसुन्धरायै नमः | | मङ्गलायै देव्यै नमः | |
| उदाराङ्गायै नमः | | विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः | |
| हरिण्यै नमः | | विष्णुपत्न्यै नमः | |
| हेममालिन्यै नमः | | प्रसन्नाक्ष्यै नमः | |
| धनधान्यकर्यै नमः | | नारायणसमाश्रितायै नमः | १०० |
| सिद्ध्यै नमः | | दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः | |
| स्त्रैणसौम्यायै नमः | | देव्यै नमः | |
| शुभप्रदायै नमः | | सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः | |
| नृपवेश्मगतानन्दायै नमः | | नवदुर्गायै नमः | |
| वरलक्ष्म्यै नमः | ९० | महाकाल्यै नमः | |
| वसुप्रदायै नमः | | ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः | |
| शुभायै नमः | | त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः | |
| हिरण्यप्राकारायै नमः | | भुवनेश्वर्यै नमः | १०८ |

॥इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | | |
|-----------------|--|------------------|----|
| सरस्वत्यै नमः | | पद्मनिलयायै नमः | |
| महाभद्रायै नमः | | पद्माक्ष्यै नमः | |
| महामायायै नमः | | पद्मवक्रकायै नमः | |
| वरप्रदायै नमः | | शिवानुजायै नमः | |
| श्रीप्रदायै नमः | | पुस्तकभृते नमः | १० |

ज्ञानमुद्रायै नमः
 रमायै नमः
 परायै नमः
 कामरूपायै नमः
 महाविद्यायै नमः
 महापातकनाशिन्यै नमः
 महाश्रयायै नमः
 मालिन्यै नमः
 महाभोगायै नमः
 महाभुजायै नमः
 महाभागायै नमः
 महोत्साहायै नमः
 दिव्याङ्गायै नमः
 सुरवन्दितायै नमः
 महाकाल्यै नमः
 महापाशायै नमः
 महाकारायै नमः
 महाङ्कुशायै नमः
 पीतायै नमः
 विमलायै नमः
 विश्वायै नमः
 विद्युन्मालायै नमः
 वैष्णव्यै नमः
 चन्द्रिकायै नमः
 चन्द्रवदनायै नमः

२०

३०

चन्द्रलेखविभूषितायै नमः
 सावित्र्यै नमः
 सुरसायै नमः
 देव्यै नमः
 दिव्यालङ्कारभूषितायै नमः
 वाग्देव्यै नमः
 वसुदायै नमः
 तीव्रायै नमः
 महाभद्रायै नमः
 महाबलायै नमः
 भोगदायै नमः
 भारत्यै नमः
 भामायै नमः
 गोविन्दायै नमः
 गोमत्यै नमः
 शिवायै नमः
 जटिलायै नमः
 विन्ध्यवासायै नमः
 विन्ध्याचलविराजितायै नमः
 चण्डिकायै नमः
 वैष्णव्यै नमः
 ब्राह्म्यै नमः
 ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः
 सौदामिन्यै नमः
 सुधामूर्त्यै नमः

४०

५०

६०

सुभद्रायै नमः
 सुरपूजितायै नमः
 सुवासिन्यै नमः
 सुनासायै नमः
 विनिद्रायै नमः
 पद्मलोचनायै नमः
 विद्यारूपायै नमः
 विशालाक्ष्यै नमः
 ब्रह्मजायायै नमः
 महाफलायै नमः
 त्रयीमूर्त्यै नमः
 त्रिकालज्ञायै नमः
 त्रिगुणायै नमः
 शास्त्ररूपिण्यै नमः
 शुम्भासुरप्रमथिन्यै नमः
 शुभदायै नमः
 स्वरात्मिकायै नमः
 रक्तबीजनिहत्र्यै नमः
 चामुण्डायै नमः
 अम्बिकायै नमः
 मुण्डकायप्रहरणायै नमः
 धूम्रलोचनमर्दन्यै नमः
 सर्वदेवस्तुतायै नमः
 सौम्यायै नमः

७०

८०

सुरासुरनमस्कृतायै नमः
 कालरात्र्यै नमः
 कलाधारायै नमः
 रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः
 वाग्देव्यै नमः
 वरारोहायै नमः
 वाराह्यै नमः
 वारिजासनायै नमः
 चित्राम्बरायै नमः
 चित्रगन्धायै नमः
 चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
 कान्तायै नमः
 कामप्रदायै नमः
 वन्द्यायै नमः
 विद्याधरसुपूजितायै नमः
 श्वेताननायै नमः
 नीलभुजायै नमः
 चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः
 चतुराननसाम्राज्यायै नमः
 रक्तमध्यायै नमः
 निरञ्जनायै नमः
 हंसासनायै नमः
 नीलजङ्घायै नमः
 ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः

१०

१००

१०८

॥इति श्री-सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नानाविधपरिमलपत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

॥उत्तराङ्ग-पूजा॥

(मूलम्—व्रत-कल्प-त्रयम्)

गुग्गुलागरु-कस्तूरी-गोरोचन-समन्वितम् ।

धूपं गृहाण देवेशि भक्तिं त्वय्यचलां कुरु॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

कामधेनुसमुद्भूत-घृतवर्ति-समन्वितम् ।

दीपं गृहाण कल्याणि कमलासनवल्लभे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

नैवेद्यं षड्रसोपेतं शर्करामधुसंयुतम्।

पायसान्नं च भारत्यै ददामि प्रतिगृह्यताम्॥

अपूपान् विविधान् स्वादून् शालिपिष्टोपपाचितान्।

मृदुलान् गुडसम्मिश्रान् भक्ष्यादींश्च ददामि ते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः,() निवेदयामि।

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये मध्ये

अमृतपानीयं समर्पयामि। नैवेद्यानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफल-समायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्ण-संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, कर्पूर-ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाण त्वं जगदानन्ददायिनि।
जगत्तिमिरमार्तण्डमण्डले ते नमो नमः॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, कर्पूर-नीराजनं सन्दर्शयामि।
कर्पूरनीराजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

शारदे लोकमातस्त्वम् आश्रिताभीष्टदायिनि।
पुष्पाञ्जलिं गृहाण त्वं मया भक्त्या समर्पितम्॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥
प्रदक्षिणं कृत्वा।

पाहि पाहि जगद्वन्द्ये नमस्ते भक्तवत्सले।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे भक्तवत्सले।
त्राहि मां नरकाद् घोरात् ब्रह्मपत्नि नमोऽस्तु ते॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-युक्तायै सरस्वत्यै नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

॥ प्रार्थना ॥

या कुन्देन्दु-तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
 या वीणा-वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

सरस्वती सरसिजकेसरप्रभा
 तपस्विनी सितकमलासनप्रिया।
 घनस्तनी कमलविलोललोचना
 मनस्विनी भवतु वरप्रसादिनी॥

पाशाङ्कुशधरा वाणी वीणापुस्तकधारिणी।
 मम वक्त्रे वसेन्नित्यं सन्तुष्टाऽस्तु च सर्वदा॥
 चतुर्दशसु विद्यासु रमते या सरस्वती।
 सा देवी कृपया मह्यं जिह्वासिद्धिं करोतु च॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

॥ उपायनदानम् ॥

ब्राह्मणपूजा।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अद्य-पूर्वोक्त-एवं-गुण-सकल-विशेषेण-विशिष्टायां अस्यां नवम्यां शुभतिथौ
 श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-देवतामुद्दिश्य अद्य मया
 अनुष्ठित-श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजान्ते श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीत्यर्थं
 उपायनदानं करिष्ये।

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदम् आसनम्। इमे
गन्धाः। सकलाराधनैः स्वरचितम्।

भारती प्रतिगृह्णातु भारतीयं ददाति च।
भारती तारिका द्वाभ्यां भारत्यै ते नमो नमः॥

इदम् उपायनं सदक्षिणाकं सताम्बूलं श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीतिं
कामयमानः श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-स्वरूपाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे
न मम।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजाकाले अस्मिन् मया
क्रियमाण-श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-पूजायां यद्देयमुपायनदानं
तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं

श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-प्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे नमः न मम।
अनया पूजया श्री-दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वत्यः प्रीयन्ताम्।

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥
सर्वं तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

श्रीमच्चन्दनचर्चितोज्ज्वलवपुः शुक्लाम्बरा मल्लिका-
मालालालित-कुन्तला प्रविलसन्मुक्तावलीशोभना।
सर्वज्ञाननिधानपुस्तकधरा रुद्राक्षमालाङ्किता
वाग्देवी वदनम्बुजे वसतु मे त्रैलोक्यमाता शुभा॥

श्री-नारद उवाच

भगवन् परमेशान सर्वलोकैकनायक।
कथं सरस्वती साक्षात्प्रसन्ना परमेष्ठिनः॥१॥
कथं देव्या महावाण्याः सतत्प्राप सुदुर्लभम्।
एतन्मे वद तत्त्वेन महायोगीश्वरप्रभो॥२॥

श्री-सनत्कुमार उवाच

साधु पृष्टं त्वया ब्रह्मन् गुह्याद्ब्रह्ममुत्तमम्।
भयानुगोपितं यत्नादिदानीं सत्प्रकाश्यते॥३॥
पुरा पितामहं दृष्ट्वा जगत्स्थावरजङ्गमम्।
निर्विकारं निराभासं स्तम्भीभूतमचेतसम्॥४॥
सृष्ट्वा त्रैलोक्यमखिलं वागभावात्तथाविधम्।
आधिकाभावतः स्वस्य परमेष्ठी जगद्गुरुः॥५॥
दिव्यवर्षायुतं तेन तपो दुष्करमुत्तमम्।
ततः कदाचित्सञ्जाता वाणी सर्वार्थशोभिता॥६॥
अहमस्मि महाविद्या सर्ववाचामधीश्वरी।
मम नाम्नां सहस्रं तु उपदेक्ष्याम्यनुत्तमम्॥७॥

अनेन संस्तुता नित्यं पत्नी तव भवाम्यहम्।
त्वया सृष्टं जगत्सर्वं वाणीयुक्तं भविष्यति॥८॥

इदं रहस्यं परमं मम नामसहस्रकम्।
सर्वपापौघशमनं महासारस्वतप्रदम्॥९॥

महाकवित्वदं लोके वागीशत्वप्रदायकम्।
त्वं वा परः पुमान्यस्तु स्तवेनानेन तोषयेत्॥१०॥

तस्याहं किङ्करी साक्षाद्भविष्यामि न संशयः।
इत्युक्त्वाऽन्तर्दधे वाणी तदारभ्य पितामहः॥११॥

स्तुत्वा स्तोत्रेण दिव्येन तत्पतित्वमवाप्तवान्।
वाणीयुक्तं जगत्सर्वं तदारभ्याभवन्मुने॥१२॥

तत्तेहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणु यत्नेन नारद।
सावधानमना भूत्वा क्षणं शुद्धो मुनीश्वरः॥१३॥

॥ स्तोत्रम् ॥

वाग्वाणी वरदा वन्द्या वरारोहा वरप्रदा।
वृत्तिर्वागीश्वरी वार्ता वरा वागीशवल्लभा॥१॥

विश्वेश्वरी विश्ववन्द्या विश्वेशप्रियकारिणी।
वाग्वादिनी च वाग्देवी वृद्धिदा वृद्धिकारिणी॥२॥

वृद्धिर्वृद्धा विषघ्नी च वृष्टिर्वृष्टिप्रदायिनी।
विश्वाराध्या विश्वमाता विश्वधात्री विनायका॥३॥

विश्वशक्तिर्विश्वसारा विश्वा विश्वविभावरी।
वेदान्तवेदिनी वेद्या वित्ता वेदत्रयात्मिका॥४॥

वेदज्ञा वेदजननी विश्वा विश्वविभावरी।
वरेण्या वाङ्मयी वृद्धा विशिष्टप्रियकारिणी॥५॥

विश्वतोवदना व्यासा व्यापिनी व्यापकात्मिका।
व्यालघ्नी व्यालभूषाङ्गी विरजा वेदनायिका॥६॥

वेदवेदान्तसंवेद्या वेदान्तज्ञानरूपिणी।
विभावरी च विक्रान्ता विश्वामित्रा विधिप्रिया॥७॥

वरिष्ठा विप्रकृष्टा च विप्रवर्यप्रपूजिता।
वेदरूपा वेदमयी वेदमूर्तिश्च वल्लभा॥८॥

गौरी गुणवती गोप्या गन्धर्वनगरप्रिया।
गुणमाता गुहान्तस्था गुरुरूपा गुरुप्रिया॥९॥

गिरिविद्या गानतुष्टा गायकप्रियकारिणी।
गायत्री गिरिशाराध्या गीर्गिरीशप्रियङ्करी॥१०॥

गिरिज्ञा ज्ञानविद्या च गिरिरूपा गिरीश्वरी।
गीर्माता गणसंस्तुत्या गणनीयगुणान्विता॥११॥

गूढरूपा गुहा गोप्या गोरूपा गौर्गुणात्मिका।
गुर्वी गुर्वम्बिका गुह्या गेयजा ग्रहनाशिनी॥१२॥

गृहिणी गृहदोषघ्नी गवघ्नी गुरुवत्सला।
गृहात्मिका गृहाराध्या गृहबाधाविनाशिनी॥१३॥

गङ्गा गिरिसुता गम्या गजयाना गुहस्तुता।
गरुडासनसंसेव्या गोमती गुणशालिनी॥१४॥

शारदा शाश्वती शैवी शाङ्करी शङ्करात्मिका।
श्रीः शर्वाणी शतघ्नी च शरच्चन्द्रनिभानना॥१५॥

शर्मिष्ठा शमनघ्नी च शतसाहस्ररूपिणी।
शिवा शम्भुप्रिया श्रद्धा श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया॥१६॥

शुचिष्मती शर्मकरी शुद्धिदा शुद्धिरूपिणी।
शिवा शिवङ्करी शुद्धा शिवाराध्या शिवात्मिका॥१७॥

श्रीमती श्रीमयी श्राव्या श्रुतिः श्रवणगोचरा।
शान्तिः शान्तिकरी शान्ता शान्ताचारप्रियङ्करी॥१८॥

शीललभ्या शीलवती श्रीमाता शुभकारिणी।
शुभवाणी शुद्धविद्या शुद्धचित्तप्रपूजिता॥१९॥

श्रीकरी श्रुतपापघ्नी शुभाक्षी शुचिवल्लभा।
शिवेतरघ्नी शबरी श्रवणीयगुणान्विता॥२०॥

शारी शिरीषपुष्पाभा शमनिष्ठा शमात्मिका।
शमान्विता शमाराध्या शितिकण्ठप्रपूजिता॥२१॥

शुद्धिः शुद्धिकरी श्रेष्ठा श्रुतानन्ता शुभावहा।
सरस्वती च सर्वज्ञा सर्वसिद्धिप्रदायिनी॥२२॥

सरस्वती च सावित्री सन्ध्या सर्वेप्सितप्रदा।
सर्वार्तिघ्नी सर्वमयी सर्वविद्याप्रदायिनी॥२३॥

सर्वेश्वरी सर्वपुण्या सर्गस्थित्यन्तकारिणी।
सर्वाराध्या सर्वमाता सर्वदेवनिषेविता॥२४॥

सर्वैश्वर्यप्रदा सत्या सती सत्वगुणाश्रया।
स्वरक्रमपदाकारा सर्वदोषनिषूदिनी॥२५॥

सहस्राक्षी सहस्रास्या सहस्रपदसंयुता।
सहस्रहस्ता साहस्रगुणालङ्कृतविग्रहा॥२६॥

सहस्रशीर्षा सद्रूपा स्वधा स्वाहा सुधामयी।
षड्ब्रन्धिभेदिनी सेव्या सर्वलोकैकपूजिता॥२७॥

स्तुत्या स्तुतिमयी साध्या सवितृप्रियकारिणी।
संशयच्छेदिनी साङ्ख्यवेद्या सङ्ख्या सदीश्वरी॥२८॥

सिद्धिदा सिद्धसम्पूज्या सर्वसिद्धिप्रदायिनी।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च सर्वसम्पत्प्रदायिनी॥२९॥

सर्वाशुभघ्नी सुखदा सुखा संवित्स्वरूपिणी।
सर्वसम्भीषणी सर्वजगत्सम्मोहिनी तथा॥३०॥

सर्वप्रियङ्करी सर्वशुभदा सर्वमङ्गला।
सर्वमन्त्रमयी सर्वतीर्थपुण्यफलप्रदा॥३१॥

सर्वपुण्यमयी सर्वव्याधिघ्नी सर्वकामदा।
सर्वविघ्नहरी सर्ववन्दिता सर्वमङ्गला॥३२॥

सर्वमन्त्रकरी सर्वलक्ष्मीः सर्वगुणान्विता।
सर्वानन्दमयी सर्वज्ञानदा सत्यनायिका॥३३॥

सर्वज्ञानमयी सर्वराज्यदा सर्वमुक्तिदा।
सुप्रभा सर्वदा सर्वा सर्वलोकवशङ्करी॥३४॥

सुभगा सुन्दरी सिद्धा सिद्धाम्बा सिद्धमातृका।
सिद्धमाता सिद्धविद्या सिद्धेशी सिद्धरूपिणी॥३५॥

सुरूपिणी सुखमयी सेवकप्रियकारिणी।
स्वामिनी सर्वदा सेव्या स्थूलसूक्ष्मापराम्बिका॥३६॥

साररूपा सरोरूपा सत्यभूता समाश्रया।
सितासिता सरोजाक्षी सरोजासनवल्लभा॥३७॥

सरोरुहाभा सर्वाङ्गी सुरेन्द्रादिप्रपूजिता।
महादेवी महेशानी महासारस्वतप्रदा॥३८॥

महासरस्वती मुक्ता मुक्तिदा मलनाशिनी।
महेश्वरी महानन्दा महामन्त्रमयी मही॥३९॥

महालक्ष्मीर्महाविद्या माता मन्दरवासिनी।
मन्त्रगम्या मन्त्रमाता महामन्त्रफलप्रदा॥४०॥

महामुक्तिर्महानित्या महासिद्धिप्रदायिनी।
महासिद्धा महामाता महदाकारसंयुता॥४१॥

महा महेश्वरी मूर्तिर्मोक्षदा मणिभूषणा।
मेनका मानिनी मान्या मृत्युघ्नी मेरुरूपिणी॥४२॥

मदिराक्षी मदावासा मखरूपा मखेश्वरी।
महामोहा महामाया मातृणां मूर्धिसंस्थिता॥४३॥

महापुण्या मुदावासा महासम्पत्प्रदायिनी।
मणिपूरैकनिलया मधुरूपा महोत्कटा॥४४॥

महासूक्ष्मा महाशान्ता महाशान्तिप्रदायिनी।
मुनिस्तुता मोहहन्त्री माधवी माधवप्रिया॥४५॥

मा महादेवसंस्तुत्या महिषीगणपूजिता।
मृष्टान्नदा च माहेन्द्री महेन्द्रपददायिनी॥४६॥

मतिर्मतिप्रदा मेधा मर्त्यलोकनिवासिनी।
मुख्या महानिवासा च महाभाग्यजनाश्रिता॥४७॥

महिला महिमा मृत्युहारी मेधाप्रदायिनी।
मेध्या महावेगवती महामोक्षफलप्रदा॥४८॥

महाप्रभाभा महती महादेवप्रियङ्करी।
महापोषा महर्द्धिश्च मुक्ताहारविभूषणा॥४९॥

माणिक्यभूषणा मन्त्रा मुख्यचन्द्रार्धशेखरा।
मनोरूपा मनःशुद्धिर्मनःशुद्धिप्रदायिनी॥५०॥

महाकारुण्यसम्पूर्णा मनोनमनवन्दिता।
महापातकजालघ्नी मुक्तिदा मुक्तभूषणा॥५१॥

मनोन्मनी महास्थूला महाक्रतुफलप्रदा।
महापुण्यफलप्राप्या मायात्रिपुरनाशिनी॥५२॥

महानसा महामेघा महामोदा महेश्वरी।
मालाधरी महोपाया महातीर्थफलप्रदा॥५३॥

महामङ्गलसम्पूर्णा महादारिद्र्यनाशिनी।
महामखा महामेघा महाकाली महाप्रिया॥५४॥

महाभूषा महादेहा महाराज्ञी मुदालया।
भूरिदा भाग्यदा भोग्या भोग्यदा भोगदायिनी॥५५॥

भवानी भूतिदा भूतिर्भूमिर्भूमिसुनायिका।
भूतधात्री भयहरी भक्तसारस्वतप्रदा॥५६॥

भुक्तिर्भुक्तिप्रदा भेकी भक्तिर्भक्तिप्रदायिनी।
भक्तसायुज्यदा भक्तस्वर्गदा भक्तराज्यदा॥५७॥

भागीरथी भवाराध्या भाग्यासञ्जनपूजिता।
भवस्तुत्या भानुमती भवसागरतारणी॥५८॥

भूतिर्भूषा च भूतेशी भाललोचनपूजिता।
भूता भव्या भविष्या च भवविद्या भवात्मिका॥५९॥

बाधापहारिणी बन्धुरूपा भुवनपूजिता।
भवघ्नी भक्तिलभ्या च भक्तरक्षणतत्परा॥६०॥

भक्तार्तिशमनी भाग्या भोगदानकृतोद्यमा।
भुजङ्गभूषणा भीमा भीमाक्षी भीमरूपिणी॥६१॥

भाविनी भ्रातृरूपा च भारती भवनायिका।
भाषा भाषावती भीष्मा भैरवी भैरवप्रिया॥६२॥

भूतिर्भासितसर्वाङ्गी भूतिदा भूतिनायिका।
भास्वती भगमाला च भिक्षादानकृतोद्यमा॥६३॥

भिक्षुरूपा भक्तिकरी भक्तलक्ष्मीप्रदायिनी।
भ्रान्तिघ्ना भ्रान्तिरूपा च भूतिदा भूतिकारिणी॥६४॥

भिक्षणीया भिक्षुमाता भाग्यवदृष्टिगोचरा।
 भोगवती भोगरूपा भोगमोक्षफलप्रदा॥६५॥
 भोगश्रान्ता भाग्यवती भक्ताघौघविनाशिनी।
 ब्राह्मी ब्रह्मस्वरूपा च बृहती ब्रह्मवल्लभा॥६६॥
 ब्रह्मदा ब्रह्ममाता च ब्रह्माणी ब्रह्मदायिनी।
 ब्रह्मेशी ब्रह्मसंस्तुत्या ब्रह्मवेद्या बुधप्रिया॥६७॥
 बालेन्दुशेखरा बाला बलिपूजाकरप्रिया।
 बलदा बिन्दुरूपा च बालसूर्यसमप्रभा॥६८॥
 ब्रह्मरूपा ब्रह्ममयी ब्रध्मण्डलमध्यगा।
 ब्रह्माणी बुद्धिदा बुद्धिर्बुद्धिरूपा बुधेश्वरी॥६९॥
 बन्धक्षयकरी बाधनाशनी बन्धुरूपिणी।
 बिन्द्वालया बिन्दुभूषा बिन्दुनादसमन्विता॥७०॥
 बीजरूपा बीजमाता ब्रह्मण्या ब्रह्मकारिणी।
 बहुरूपा बलवती ब्रह्मजा ब्रह्मचारिणी॥७१॥
 ब्रह्मस्तुत्या ब्रह्मविद्या ब्रह्माण्डाधिपवल्लभा।
 ब्रह्मेशविष्णुरूपा च ब्रह्मविष्ण्वीशसंस्थिता॥७२॥
 बुद्धिरूपा बुधेशानी बन्धी बन्धविमोचनी।
 अक्षमालाऽक्षराकाराऽक्षराऽक्षरफलप्रदा ॥७३॥
 अनन्ताऽऽनन्दसुखदाऽनन्तचन्द्रनिभानना।
 अनन्तमहिमाऽघोराऽनन्तगम्भीरसम्मिता ॥७४॥
 अदृष्टाऽदृष्टदाऽनन्ताऽदृष्टभाग्यफलप्रदा।
 अरुन्धत्यव्ययीनाथाऽनेकसद्गुणसंयुता ॥७५॥
 अनेकभूषणाऽदृश्याऽनेकलेखनिषेविता ।
 अनन्ताऽनन्तसुखदाऽघोराऽघोरस्वरूपिणी॥७६॥

अशेषदेवतारूपाऽमृतरूपाऽमृतेश्वरी ।
अनवद्याऽनेकहस्ताऽनेकमाणिक्यभूषणा ॥ ७७ ॥

अनेकविघ्नसंहर्त्री ह्यनेकाभरणान्विता ।
अविद्याऽज्ञानसंहर्त्री ह्यविद्याजालनाशिनी ॥ ७८ ॥

अभिरूपाऽनवद्याङ्गी ह्यप्रतर्क्यगतिप्रदा ।
अकलङ्कारूपिणी च ह्यनुग्रहपरायणा ॥ ७९ ॥

अम्बरस्थाऽम्बरमयाऽम्बरमालाऽम्बुजेक्षणा ।
अम्बिकाऽञ्जकराऽञ्जस्थाऽशुमत्यंशुशतान्विता ॥ ८० ॥

अम्बुजाऽनवराऽखण्डाऽम्बुजासनमहाप्रिया ।
अजरामरसंसेव्याऽजरसेवितपद्मगा ॥ ८१ ॥

अतुलार्थप्रदाऽर्थैक्याऽत्युदारा त्वभयान्विता ।
अनाथवत्सलाऽनन्तप्रियाऽनन्तेप्सितप्रदा ॥ ८२ ॥

अम्बुजाक्ष्यम्बुरूपाऽम्बुजातोद्भवमहाप्रिया ।
अखण्डा त्वमरस्तुत्याऽमरनायकपूजिता ॥ ८३ ॥

अजेया त्वजसङ्काशाऽज्ञाननाशिन्यभीष्टदा ।
अक्ताऽघनेना चास्त्रेशी ह्यलक्ष्मीनाशिनी तथा ॥ ८४ ॥

अनन्तसाराऽनन्तश्रीरनन्तविधिपूजिता ।
अभीष्टाऽमर्त्यसम्पूज्या ह्यस्तोदयविवर्जिता ॥ ८५ ॥

आस्तिकस्वान्तनिलयाऽस्त्ररूपाऽस्त्रवती तथा ।
अस्खलत्यस्खलद्रूपाऽस्खलद्विद्याप्रदायिनी ॥ ८६ ॥

अस्खलत्सिद्धिदाऽऽनन्दाऽम्बुजाताऽमरनायिका ।
अमेयाऽशेषपापघ्न्यक्षयसारस्वतप्रदा ॥ ८७ ॥

जया जयन्ती जयदा जन्मकर्मविवर्जिता ।
जगत्प्रिया जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ॥ ८८ ॥

जातिर्जया जितामित्रा जप्या जपनकारिणी।
जीवनी जीवनिलया जीवाख्या जीवधारिणी॥८९॥

जाह्नवी ज्या जपवती जातिरूपा जयप्रदा।
जनार्दनप्रियकरी जोषनीया जगत्स्थिता॥९०॥

जगज्ज्येष्ठा जगन्माया जीवनत्राणकारिणी।
जीवातुलतिका जीवजन्मी जन्मनिर्बहणी॥९१॥

जाड्यविध्वंसनकरी जगद्योनिर्जयात्मिका।
जगदानन्दजननी जम्बूश्च जलजेक्षणा॥९२॥

जयन्ती जङ्गपूगघ्नी जनितज्ञानविग्रहा।
जटा जटावती जप्या जपकर्तृप्रियङ्करी॥९३॥

जपकृत्पापसंहर्त्री जपकृत्फलदायिनी।
जपापुष्पसमप्रख्या जपाकुसुमधारिणी॥९४॥

जननी जन्मरहिता ज्योतिर्वृत्यभिदायिनी।
जटाजूटनचन्द्रार्धा जगत्सृष्टिकरी तथा॥९५॥

जगत्राणकरी जाड्यध्वंसकर्त्री जयेश्वरी।
जगद्धीजा जयावासा जन्मभूर्जन्मनाशिनी॥९६॥

जन्मान्तरहिता जैत्री जगद्योनिर्जपात्मिका।
जयलक्षणसम्पूर्णा जयदानकृतोद्यमा॥९७॥

जम्भराद्यादिसंस्तुत्या जम्भारिफलदायिनी।
जगत्रयहिता ज्येष्ठा जगत्रयवशङ्करी॥९८॥

जगत्रयाम्बा जगती ज्वाला ज्वालितलोचना।
ज्वालिनी ज्वलनाभासा ज्वलन्ती ज्वलनात्मिका॥९९॥

जितारातिसुरस्तुत्या जितक्रोधा जितेन्द्रिया।
जरामरणशून्या च जनित्री जन्मनाशिनी॥१००॥

जलजाभा जलमयी जलजासनवल्लभा।

जलजस्था जपाराध्या जनमङ्गलकारिणी॥१०१॥

कामिनी कामरूपा च काम्या कामप्रदायिनी।

कमाली कामदा कर्त्री ऋतुकर्मफलप्रदा॥१०२॥

कृतघ्नघ्नी क्रियारूपा कार्यकारणरूपिणी।

कञ्जाक्षी करुणारूपा केवलामरसेविता॥१०३॥

कल्याणकारिणी कान्ता कान्तिदा कान्तिरूपिणी।

कमला कमलावासा कमलोत्पलमालिनी॥१०४॥

कुमुद्वती च कल्याणी कान्तिः कामेशवल्लभा।

कामेश्वरी कमलिनी कामदा कामबन्धिनी॥१०५॥

कामधेनुः काञ्चनाक्षी काञ्चनाभा कलानिधिः।

क्रिया कीर्तिकरी कीर्तिः ऋतुश्रेष्ठा कृतेश्वरी॥१०६॥

ऋतुसर्वक्रियास्तुत्या ऋतुकृत्प्रियकारिणी।

क्लेशनाशकरी कर्त्री कर्मदा कर्मबन्धिनी॥१०७॥

कर्मबन्धहरी कृष्टा क्लमघ्नी कञ्जलोचना।

कन्दर्पजननी कान्ता करुणा करुणावती॥१०८॥

क्लीङ्कारिणी कृपाकारा कृपासिन्धुः कृपावती।

करुणार्द्रा कीर्तिकरी कल्मषघ्नी क्रियाकरी॥१०९॥

क्रियाशक्तिः कामरूपा कमलोत्पलगन्धिनी।

कला कलावती कूर्मी कूटस्था कञ्जसंस्थिता॥११०॥

कालिका कल्मषघ्नी च कमनीयजटान्विता।

करपद्मा कराभीष्टप्रदा ऋतुफलप्रदा॥१११॥

कौशिकी कोशदा काव्या कर्त्री कोशेश्वरी कृशा।

कूर्मयाना कल्पलता कालकूटविनाशिनी॥११२॥

कल्पोद्यानवती कल्पवनस्था कल्पकारिणी।
 कदम्बकुसुमाभासा कदम्बकुसुमप्रिया॥११३॥
 कदम्बोद्यानमध्यस्था कीर्तिदा कीर्तिभूषणा।
 कुलमाता कुलावासा कुलाचारप्रियङ्करी॥११४॥
 कुलानाथा कामकला कलानाथा कलेश्वरी।
 कुन्दमन्दारपुष्पाभा कपर्दस्थितचन्द्रिका॥११५॥
 कवित्वदा काव्यमाता कविमाता कलाप्रदा।
 तरुणी तरुणीताता ताराधिपसमानना॥११६॥
 तृप्तिस्तृप्तिप्रदा तर्क्या तपनी तापिनी तथा।
 तर्पणी तीर्थरूपा च त्रिदशा त्रिदशेश्वरी॥११७॥
 त्रिदिवेशी त्रिजननी त्रिमाता त्र्यम्बकेश्वरी।
 त्रिपुरा त्रिपुरेशानी त्र्यम्बका त्रिपुराम्बिका॥११८॥
 त्रिपुरश्रीस्त्रयीरूपा त्रयीवेद्या त्रयीश्वरी।
 त्रय्यन्तवेदिनी ताम्रा तापत्रितयहारिणी॥११९॥
 तमालसदृशी त्राता तरुणादित्यसन्निभा।
 त्रैलोक्यव्यापिनी तृप्ता तृप्तिकृत्तत्त्वरूपिणी॥१२०॥
 तुर्या त्रैलोक्यसंस्तुत्या त्रिगुणा त्रिगुणेश्वरी।
 त्रिपुरघ्नी त्रिमाता च त्र्यम्बका त्रिगुणान्विता॥१२१॥
 तृष्णाच्छेदकरी तृप्ता तीक्ष्णा तीक्ष्णस्वरूपिणी।
 तुला तुलादिरहिता तत्तद्ब्रह्मस्वरूपिणी॥१२२॥
 त्राणकर्त्री त्रिपापघ्नी त्रिपदा त्रिदशान्विता।
 तथ्या त्रिशक्तिस्त्रिपदा तुर्या त्रैलोक्यसुन्दरी॥१२३॥
 तेजस्करी त्रिमूर्त्याद्या तेजोरूपा त्रिधामता।
 त्रिचक्रकर्त्री त्रिभगा तुर्यातीतफलप्रदा॥१२४॥

तेजस्विनी तापहारी तापोपप्लवनाशिनी।
तेजोगर्भा तपःसारा त्रिपुरारिप्रियङ्करी॥१२५॥

तन्वी तापससन्तुष्टा तपताङ्गजभीतिनुत्।
त्रिलोचना त्रिमार्गा च तृतीया त्रिदशस्तुता॥१२६॥

त्रिसुन्दरी त्रिपथगा तुरीयपददायिनी।
शुभा शुभावती शान्ता शान्तिदा शुभदायिनी॥१२७॥

शीतला शूलिनी शीता श्रीमती च शुभान्विता।
योगसिद्धिप्रदा योग्या यज्ञेनपरिपूरिता॥१२८॥

यज्या यज्ञमयी यक्षी यक्षिणी यक्षिवल्लभा।
यज्ञप्रिया यज्ञपूज्या यज्ञतुष्टा यमस्तुता॥१२९॥

यामिनीयप्रभा याम्या यजनीया यशस्करी।
यज्ञकर्त्री यज्ञरूपा यशोदा यज्ञसंस्तुता॥१३०॥

यज्ञेशी यज्ञफलदा योगयोनिर्यजुस्तुता।
यमिसेव्या यमाराध्या यमिपूज्या यमीश्वरी॥१३१॥

योगिनी योगरूपा च योगकर्तृप्रियङ्करी।
योगयुक्ता योगमयी योगयोगीश्वराम्बिका॥१३२॥

योगज्ञानमयी योनिर्यमाद्यष्टाङ्गयोगता।
यन्त्रिताघौघसंहारा यमलोकनिवारिणी॥१३३॥

यष्टिव्यष्टीशसंस्तुत्या यमाद्यष्टाङ्गयोगयुक्।
योगीश्वरी योगमाता योगसिद्धा च योगदा॥१३४॥

योगारूढा योगमयी योगरूपा यवीयसी।
यन्त्ररूपा च यन्त्रस्था यन्त्रपूज्या च यन्त्रिता॥१३५॥

युगकर्त्री युगमयी युगधर्मविवर्जिता।
यमुना यमिनी याम्या यमुनाजलमध्यगा॥१३६॥

यातायातप्रशमनी यातनानान्निकृन्तनी।
योगावासा योगिवन्द्या यत्तच्छब्दस्वरूपिणी॥१३७॥

योगक्षेममयी यन्त्रा यावदक्षरमातृका।
यावत्पदमयी यावच्छब्दरूपा यथेश्वरी॥१३८॥

यत्तदीया यक्षवन्द्या यद्विद्या यतिसंस्तुता।
यावद्विद्यामयी यावद्विद्याबृन्दसुवन्दिता॥१३९॥

योगिहृत्पद्मनिलया योगिवर्यप्रियङ्करी।
योगिवन्द्या योगिमाता योगीशफलदायिनी॥१४०॥

यक्षवन्द्या यक्षपूज्या यक्षराजसुपूजिता।
यज्ञरूपा यज्ञतुष्टा यायजूकस्वरूपिणी॥१४१॥

यन्त्राराध्या यन्त्रमध्या यन्त्रकर्तृप्रियङ्करी।
यन्त्रारूढा यन्त्रपूज्या योगिध्यानपरायणा॥१४२॥

यजनीया यमस्तुत्या योगयुक्ता यशस्करी।
योगबद्धा यतिस्तुत्या योगज्ञा योगनायकी॥१४३॥

योगिज्ञानप्रदा यक्षी यमबाधाविनाशिनी।
योगिकाम्यप्रदात्री च योगिमोक्षप्रदायिनी॥१४४॥

॥ फलश्रुतिः ॥

इति नाम्नां सरस्वत्याः सहस्रं समुदीरितम्।
मन्त्रात्मकं महागोप्यं महासारस्वतप्रदम्॥१॥

यः पठेच्छृणुयाद्भक्त्या त्रिकालं साधकः पुमान्।
सर्वविद्यानिधिः साक्षात् स एव भवति ध्रुवम्॥२॥

लभते सम्पदः सर्वाः पुत्रपौत्रादिसंयुताः।
मूकोऽपि सर्वविद्यासु चतुर्मुख इवापरः॥३॥

भूत्वा प्राप्नोति सान्निध्यम् अन्ते धातुर्मुनीश्वर।
सर्वमन्नमयं सर्वविद्यामानफलप्रदम्॥४॥

महाकवित्वदं पुंसां महासिद्धिप्रदायकम्।
कस्मैचिन्न प्रदातव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि॥५॥

महारहस्यं सततं वाणीनामसहस्रकम्।
सुसिद्धमस्मदादीनां स्तोत्रं ते समुदीरितम्॥६॥

॥इति श्रीस्कान्दपुराणान्तर्गत-सनत्कुमार-संहितायां नारद-सनत्कुमार-संवादे
सरस्वती-सहस्रनाम-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ श्री-धन्वन्तरि-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — धन्वन्तरिपूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये ()^{३४} नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{३५} नक्षत्र ()^{३६} नाम योग () करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् त्रयोदश्यां शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीधन्वन्तरि-देवता-प्रीत्यर्थं श्री-धन्वन्तरि-देवता-प्रीति-पूर्वकम् आयुष्य-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्ध्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार धन्वन्तरि-पूजां करिष्ये तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

^{३४}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{३५}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{३६}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कारशोभितम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं सुरासुरनमस्कृतम्॥

युवानं पुण्डरीकाक्षं सर्वाभरणभूषितम्।
दधानममृतस्यैव कमण्डलुं श्रिया युतम्॥

यज्ञ-भोग-भुजं देवं सुरासुरनमस्कृतम्।
ध्याये धन्वन्तरिं देवं श्वेताम्बरधरं शुभम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-धन्वन्तरिं ध्यायामि।

सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-धन्वन्तरिम् आवाहयामि।

पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, आसनं समर्पयामि।

एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, पाद्यं समर्पयामि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादौऽस्येहाऽऽभवात्पुनः।
ततो विश्वङ्मिक्रामत्। साशनानशने अभि॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

सप्तास्याऽऽसन् परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अर्यजन्त। साध्या ऋषेयश्च ये॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चैकै वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।
गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, पुष्पाणि समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. ॐ वराहाय नमः — पादौ पूजयामि
२. सङ्कर्षणाय नमः — गुल्फौ पूजयामि
३. कालात्मने नमः — जानुनी पूजयामि
४. विश्वरूपाय नमः — जङ्घे पूजयामि
५. क्रोढाय नमः — ऊरू पूजयामि
६. भोक्त्रे नमः — कटिं पूजयामि
७. विष्णवे नमः — मेढ्रं पूजयामि
८. हिरण्यगर्भाय नमः — नाभिं पूजयामि
९. श्रीवत्सधारिणे नमः — कुक्षिं पूजयामि
१०. परमात्मने नमः — हृदयं पूजयामि
११. सर्वास्त्रधारिणे नमः — वक्षः पूजयामि
१२. वनमालिने नमः — कण्ठं पूजयामि
१३. सर्वात्मने नमः — मुखं पूजयामि
१४. सहस्राक्षाय नमः — नेत्राणि पूजयामि

१५. सुप्रभाय नमः — ललाटं पूजयामि
 १६. चम्पकनासिकाय नमः— नासिकां पूजयामि
 १७. सर्वेशाय नमः — कर्णौ पूजयामि
 १८. सहस्रशिरसे नमः — शिरः पूजयामि
 १९. नीलमेघनिभाय नमः — केशान् पूजयामि
 २०. महापुरुषाय नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|-----------------------|------------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | १४. ॐ वासुदेवाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः |
| ६. ॐ मधुसूदनाय नमः | १८. ॐ अधोक्षजाय नमः |
| ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः | १९. ॐ नृसिंहाय नमः |
| ८. ॐ वामनाय नमः | २०. ॐ अच्युताय नमः |
| ९. ॐ श्रीधराय नमः | २१. ॐ जनार्दनाय नमः |
| १०. ॐ हृषीकेशाय नमः | २२. ॐ उपेन्द्राय नमः |
| ११. ॐ पद्मनाभाय नमः | २३. ॐ हरये नमः |
| १२. ॐ दामोदराय नमः | २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः |

॥ धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

धन्वन्तरये नमः
 सुधापूर्णकलशाढ्यकराय नमः
 हरये नमः
 जरामृतित्रस्तदेवप्रार्थना-
 साधकाय नमः
 प्रभवे नमः
 निर्विकल्पाय नमः
 निस्समानाय नमः
 मन्दस्मितमुखाम्बुजाय नमः
 आञ्जनेयप्रापिताद्रये नमः
 पार्श्वस्थविनतासुताय नमः १०
 निमग्नमन्दरधराय नमः
 कूर्मरूपिणे नमः
 बृहत्तनवे नमः
 नीलकुञ्चितकेशान्ताय नमः
 परमाद्भुतरूपधृते नमः
 कटाक्षवीक्षणाश्वस्तवासुकिने नमः
 सिंहविक्रमाय नमः
 स्मर्तृहृद्रोगहरणाय नमः
 महाविष्णवंशसम्भवाय नमः
 प्रेक्षणीयोत्पलश्यामाय नमः २०
 आयुर्वेदाधिदैवताय नमः
 भेषजग्रहणानेहस्मरणीय-

पदाम्बुजाय नमः
 नवयौवनसम्पन्नाय नमः
 किरीटान्वितमस्तकाय नमः
 नक्रकुण्डलसंशोभि-
 श्रवणद्वयशष्कुलये नमः
 दीर्घपीवरदोर्दण्डाय नमः
 कम्बुग्रीवाय नमः
 अम्बुजेक्षणाय नमः
 चतुर्भुजाय नमः
 शङ्खधराय नमः ३०
 चक्रहस्ताय नमः
 वरप्रदाय नमः
 सुधापात्रोपरिलसदाम्रपत्र-
 लसत्कराय नमः
 शतपद्माढ्यहस्ताय नमः
 कस्तूरीतिलकाञ्चिताय नमः
 सुकपोलाय नमः
 सुनासाय नमः
 सुन्दरभ्रूलताञ्चिताय नमः
 स्वङ्गुलीतलशोभाढ्याय नमः
 गूढजत्रवे नमः ४०
 महाहनवे नमः
 दिव्याङ्गदलसद्बाह्वे नमः

केयूरपरिशोभिताय नमः
 विचित्ररत्नखचितवलयद्वय-
 शोभिताय नमः
 समोल्लसत्सुजातांसाय नमः
 अङ्गुलीयविभूषिताय नमः
 सुधागन्धरसास्वादमिलद्भृङ्ग-
 मनोहराय नमः
 लक्ष्मीसमर्पितोत्फुल्ल-
 कञ्जमालालसद्गलाय नमः
 लक्ष्मीशोभितवक्षस्काय नमः
 वनमालाविराजिताय नमः
 नवरत्नमणीकूटहारशोभित-
 कन्धराय नमः
 हीरनक्षत्रमालादिशोभारञ्जित-
 दिङ्मुखाय नमः
 विरजाय नमः
 अम्बरसंवीताय नमः
 विशालोरवे नमः
 पृथुश्रवसे नमः
 निम्ननाभये नमः
 सूक्ष्ममध्याय नमः
 स्थूलजङ्घाय नमः
 निरञ्जनाय नमः
 सुलक्षणपदाङ्गुष्ठाय नमः
 सर्वसामुद्रिकान्विताय नमः

५०

६०

अलक्तकारक्तपादाय नमः
 मूर्तिमते नमः
 वार्धिपूजिताय नमः
 सुधार्थान्योन्यसंयुध्यद्देवदैतेय-
 सान्त्वनाय नमः
 कोटिमन्मथसङ्काशाय नमः
 सर्वावयवसुन्दराय नमः
 अमृतास्वादनोद्युक्तदेवसङ्घ-
 परिष्टुताय नमः
 पुष्पवर्षणसंयुक्तगन्धर्वकुल-
 सेविताय नमः
 शङ्खतूर्यमृदङ्गादि-
 सुवादित्राप्सरोवृताय नमः
 विष्वक्सेनादियुक्पार्श्वाय नमः
 सनकादिमुनिस्तुताय नमः
 साश्चर्यसस्मितचतुर्मुखनेत्र-
 समीक्षिताय नमः
 साशङ्कसम्भ्रमदितिदनुवंश्य-
 समीडिताय नमः
 नमनोन्मुखदेवादिमौलीरत्न-
 लसत्पदाय नमः
 दिव्यतेजसे नमः
 पुञ्जरूपाय नमः
 सर्वदेवहितोत्सुकाय नमः
 स्वनिर्गमक्षुब्धदुग्धवाराशये नमः ८०

७०

दुन्दुभिस्वनाय नमः
 गन्धर्वगीतापदानश्रवणोत्क-
 महामनसे नमः
 निष्किञ्चनजनप्रीताय नमः
 भवसम्प्राप्तरोगहृते नमः
 अन्तर्हितसुधापात्राय नमः
 महात्मने नमः
 मायिकाग्रण्ये नमः
 क्षणार्धमोहिनीरूपाय नमः
 सर्वस्त्रीशुभलक्षणाय नमः
 मदमत्तेभगमनाय नमः
 सर्वलोकविमोहनाय नमः
 संसन्नीवीग्रन्थिबन्धासक्त-
 दिव्यकराङ्गुलिने नमः
 रत्नदर्वीलसद्धस्ताय नमः
 देवदैत्यविभागकृते नमः
 सङ्ख्यातदेवतान्यासाय नमः
 दैत्यदानववञ्चकाय नमः
 देवामृतप्रदात्रे नमः
 परिवेषणहृष्टधिये नमः

१०

उन्मुखोन्मुखदैत्येन्द्रदन्त-
 पङ्क्तिविभाजकाय नमः
 पुष्पवत्सुविनिर्दिष्टराहुरक्षःशिरोहराय
 नमः १००
 राहुकेतुग्रहस्थानपश्चाद्गति-
 विधायकाय नमः
 अमृतालाभनिर्विण्णयुध्यद्देवारि-
 सूदनाय नमः
 गरुत्मद्वाहनारूढाय नमः
 सर्वेशस्तोत्रसंयुताय नमः
 स्वस्वाधिकारसन्तुष्ट-
 शक्रवह्न्यादिपूजिताय नमः
 मोहिनीदर्शनायात-
 स्थाणुचित्तविमोहकाय नमः
 शचीस्वाहादिदिक्पालपत्नी-
 मण्डलसन्नुताय नमः
 वेदान्तवेद्यमहिम्ने नमः
 सर्वलोकैकरक्षकाय नमः
 राजराजप्रपूज्याङ्घ्रये नमः ११०
 चिन्तितार्थप्रदायकाय नमः

॥इति श्री-धन्वन्तर्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादाबुच्येते॥

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं सुगन्धं सुमनोहरम्।
धूपं गृहाण देवेश सर्वभूत मनोहर॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, धूपमाग्रापयामि।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥

उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं मम।
पशूँश्च मह्यमावह जीर्वनं च दिशो दिश॥
मा नो हिंसीज्जातवेदो गामश्च पुरुषं जगत्।
अबिभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय॥
श्री-धन्वन्तरये नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, () निवेदयामि। अमृतापिधानमसि।
निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाँ अकल्पयन्॥

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे।
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।
कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः।
तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते॥

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवस्सुवरोम्॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

सुवर्णरजतैर्युक्तं चामीकरविनिर्मितम्।

स्वर्णपुष्पं प्रदास्यामि गृह्यतां मधुसूदन॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणं करोम्यद्य पापानि नुत माधव।

मयार्पितान्यशेषाणि परिगृह्य कृपां कुरु॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते भक्तवत्सल।
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष वासुदेवाय ते नमः॥

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधाररूपिणे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामोस्तु जगन्नाथ मया कृतः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑यजन्त दे॒वाः। तानि॑ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन्।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानं॑ सचन्ते। यत्र॒ पूर्वं॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः॥

श्री-धन्वन्तरये नमः, छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

धन्वन्तरिजयन्ती-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण धन्वन्तरिपूजायां
यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं श्री-धन्वन्त्रिप्रीतिं कामयमानः
मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया
श्री-धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

॥ विसर्जनम् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपः-पूजा-क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥

अस्मात् बिम्बात् श्री-धन्वन्तरिं यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि
(अक्षतानर्पित्वा देवमुत्सर्जयेत्।)

अनया पूजया श्री-धन्वन्तरिः प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु॥

॥ धन्वन्तरि स्तोत्रम् (मत्स्य पुराणान्तर्गतम्) ॥

क्षीरोदमोतं दिव्य-गन्धानुलेपनम्।
सुधा-कलश-हस्तं तं वन्दे धन्वन्तरिं हरिम्॥

देव-दानवा ऊचुः

नमो लोक-त्र्याध्यक्ष तेजसा जित-भास्कर।
नमो विष्णो नमो जिष्णो नमस्ते कैटभार्दन॥१॥

नमः सर्ग-क्रिया-कर्त्रे जगत् पालयते नमः।
नमः स्मृतार्ति-नाशाय नमः पुष्कर मालिने॥२॥

दिव्यौषधि-स्वरूपाय सुधा-कलश-पाणये।
शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणे वनमालिने॥३॥

देवेन्द्रादि-सुरेड्याय नमः क्षीराब्धि-जन्मने।
निर्गुणाय विशेषाय हरये ब्रह्म-रूपिणे॥४॥

जगत् प्रतिष्ठितं यत्र जगतां यो न दृश्यते।
नमः सूक्ष्मातिसूक्ष्माय तस्मै देवाय शङ्खिने॥५॥

यं न पश्यन्ति पश्यन्तं जगदप्यखिलं नराः।
अपश्यद्विर्जगद् यश्च दृश्यते हृदि संस्थितः॥६॥

यस्मिन् वनानि पर्वता नद्यश्चैवाखिलं जगत्।
तस्मै नमोऽस्तु जगताम् आधाराय नमो नमः॥७॥

आद्य-प्रजापतिर्यश्च यः पितॄणां परः पतिः।
पतिः सुराणां यस्तस्मै नमः कृष्णाय वेधसे॥८॥

यः प्रवृत्तौ निवृत्तौ च इज्यते कर्मभिः स्वकैः।
स्वर्गापवर्ग-फल-दो नमस्तस्मै गदा-भृते॥९॥

यश्चिन्त्यमानो मनसा सद्यः पापं व्यपोहति।
नमस्तस्मै विशुद्धाय पराय हरि-मेधसे॥१०॥

यं बुद्ध्वा सर्वभूतानि देव-देवेशमव्ययम्।
न पुनर्जन्म-मरणे प्राप्नुवन्ति नमामि तम्॥११॥

यो यज्ञे यज्ञ-परमैरिज्यते यज्ञ-संज्ञितः।
तं यज्ञ-पुरुषं विष्णुं नमामि प्रभुमीश्वरम्॥१२॥

गीयते सर्व-वेदेषु वेद-विद्विर्विदां गतिः।
यस्तस्मै वेद-वेद्याय विष्णवे जिष्णवे नमः॥१३॥

यो विश्वं समुत्पन्नं यस्मिंश्च लयमेष्यति।
विश्वोद्भव-प्रतिष्ठाय नमस्तस्मै महात्मने॥१४॥

ब्रह्मादि-स्तम्ब-पर्यन्तं येन विश्वमिदं ततम्।
माया जालं समुत्तर्त्तं तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१५॥

विषाद-तोष-रोषाद्यैर्योऽजस्रं सुख-दुःखजम्।
नृत्यत्यखिल-भूत-स्थस्तमुपेन्द्रं नमाम्यहम्॥१६॥

यमाराध्य विशुद्धेन कर्मणा मनसा गिरा।
तरन्त्यविद्याम् अखिलाम् आदि-वैद्यं नमाम्यहम्॥१७॥

यः स्थितो विश्व-रूपेण बिभर्ति ह्यखिलौषधीः।
तं रत्न-कलशोद्भासि-हस्तं धन्वन्तरिं नुमः॥१८॥

विश्वं विश्व-पतिं विष्णुं तं नमामि प्रजापतिम्।
मूर्त्या चासुरमय्या तु तद्विधान् विनिहन्ति यः॥१९॥

रात्रि-रूपं सूर्य-रूपं भजेत्तं सान्ध्य-रूपिणम्।
हन्ति विद्या-प्रदानेन यो वा अज्ञान-जं तमः॥२०॥

यस्तु भेषज-रूपेण जगदाप्याययेत् सदा।
यस्याक्षिणी चन्द्र-सूर्यौ सर्व-लोक-शुभङ्करः।
पश्यतः कर्म सततं तं च धन्वन्तरिं नुमः॥२१॥

यस्मिन् सर्वेश्वरे वश्यं जगत् स्थावर-जङ्गमम्।
आभाति तमजं विष्णुं नमामि प्रभुमव्ययम्॥२२॥
॥इति मत्स्य-पुराणान्तर्गतं धन्वन्तरि-स्तोत्रं सम्पूर्णम्॥



॥ श्री-लक्ष्मी-कुबेर-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीमहालक्ष्मी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{३७} नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला-मासे कृष्णपक्षे
अमावास्यायां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर / भानु)
वासरयुक्तायाम् ()^{३८} नक्षत्र ()^{३९} नाम योग (चतुष्पात्/नागव)
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् अमावास्यायां
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्धयर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
श्रीमहालक्ष्मी-प्रीत्यर्थं श्रीमहालक्ष्मी-पूजां करिष्ये। तदङ्गं मातृगणपूजां
नवग्रहपूजां लोकपाल-पूजां च करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय

^{३७}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{३८}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{३९}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।
ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ मातृगण-पूजा ॥

- | | |
|---------------------|-----------------------------|
| १. ॐ गौर्यै नमः | ९. ॐ स्वधायै नमः |
| २. ॐ पद्मायै नमः | १०. ॐ स्वाहायै नमः |
| ३. ॐ शच्यै नमः | ११. ॐ मातृभ्यो नमः |
| ४. ॐ मेधायै नमः | १२. ॐ लोकमातृभ्यो नमः |
| ५. ॐ सावित्र्यै नमः | १३. ॐ धृत्यै नमः |
| ६. ॐ विजयायै नमः | १४. ॐ पुष्ट्यै नमः |
| ७. ॐ जयायै नमः | १५. ॐ तुष्ट्यै नमः |
| ८. ॐ देवसेनायै नमः | १६. ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः |

षोडश-मातृभ्यो नमः ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

आभरणार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। धूपदीपार्थम् अक्षतान् समर्पयामि।

नैवेद्यम्। (कदलीफलानि)

कर्पूरताम्बूलं कर्पूरनीराजनार्थं अक्षतान् समर्पयामि।
प्रार्थनाः समर्पयामि।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः॥

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः॥

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वरदाभयपाणयः॥

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।
छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ नवग्रहपूजा ॥

(चित्रे दर्शितया रीत्या मण्डलानि प्रतिष्ठाप्य आरभेत।)

| | | |
|---|--|---|
| ५. बुधः हरितवस्त्रम् मुद्र-मण्डलम् | ३. शुक्रः श्वेतवस्त्रम् राजमाष-मण्डलम् | ४. सोमः श्वेतवस्त्रम् तण्डुल-मण्डलम् |
| ६. बृहस्पतिः पीतवस्त्रम् चणक-मण्डलम् | १. आदित्यः रक्तवस्त्रम् गोधूम-मण्डलम् | २. अङ्गारकः रक्तवस्त्रम् आढकी-मण्डलम् |
| ९. केतुः कृष्णवस्त्रम् कुलत्थ-मण्डलम् | ७. शनैश्चरः कृष्णवस्त्रम् तिल-मण्डलम् | ८. राहुः कृष्णवस्त्रम् माष-मण्डलम् |

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥१॥

आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो नि॒वेश॑यन्न॒मृतं॑ म॒र्त्यं च। हिर॑ण्ययेन स॒विता॑
रथे॒नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना वि॒पश्यन्। अ॒ग्निं दू॑तं वृ॒णीम॑हे हो॒तारं वि॒श्ववे॑दसम्।
अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म्॥ येषा॒मीशे॑ पशु॒पतिः॑ पशूनां चतु॑ष्पदामु॒त च॑ द्वि॒पदा॑म्।
निष्क्री॑तोऽयं य॒ज्ञियं॑ भा॒गमे॑तु रा॒यस्पोषा॑ यज॑मानस्य सन्तु॥ अधि॑देवता
प्रत्यधि॑देवता स॒हिताय॑ आ॒दित्याय॑ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं आदित्य-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥२॥

अ॒ग्निर्मूर्द्धा दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम्। अ॒पा५ रे॒ता५सि जि॒न्वति॑।
स्यो॒ना पृ॑थिवि॒ भवा॑ऽनृ॒क्षरा नि॒वेश॑नी। यच्छा॑नः शर्म स॒प्रथाः॑। क्षेत्र॑स्य पति॑ना
व॒य५ हि॒ते नै॒व ज॑यामसि। गाम॑श्च॒ पोष॑यित्वा स नो मृ॒डाती॒दृशे॑॥ अधि॑देवता
प्रत्यधि॑देवता स॒हिताय॑ अ॒ङ्गारकाय॑ नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं अङ्गारक-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥३॥

प्र॒वः शु॒क्राय॑ भा॒नवे॑ भर॒ध्व५ ह॒व्यं म॒तिं चा॒ग्नये॑ सु॒पूत॑म्॥ यो दै॒व्यानि॑
मा॒नुषा॑ ज॒नू५ष्यन्तर्वि॒श्वानि॑ वि॒द्म ना॒ जिगा॑ति॥ इन्द्रा॒णीमा॒सु ना॒रिषु॑
सु॒प॒त्नीम॒हम॑श्रवम्। न ह्य॑स्या अ॒परं च॒न ज॒रसा॑ म॒रते॑ पतिः॥ इन्द्र॑

वो वि॒श्वत॒स्परि॒ हवा॑महे॒ जने॑भ्यः। अ॒स्माक॑मस्तु॒ केव॑लः॥ अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शुक्र-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

दधि॑शङ्ख॒तुषा॑राभं क्षी॒रोदा॑र्णवसम्भवम्।
नमामि॑ श॒शिनं॑ सोमं श॒म्भो॑र्मुकुटभूषणम्॥४॥

आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्णि॑यम्। भवा॒ वाज॑स्य सङ्ग॒थे॥
अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीदन्तर्वि॒श्वानि॑ भेष॒जा। अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वश॑म्भुव॒माप॑श्च
वि॒श्वभे॑षजीः। गौरी॑ मि॒माय॑ सलिलानि॒ तक्ष॑ती। एक॑पदी द्वि॒पदी॑ सा
चतु॑ष्पदी। अ॒ष्टाप॑दी नव॑पदी बभूवुषी॑। स॒हस्रा॑क्षरा पर॒मे व्यो॑मन्। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं सोम-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

प्रि॒यङ्गु॑कलिकाश्यामं रू॒पेणा॑प्रतिमं बुधम्।
सौम्यं॑ सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥५॥

उद्धु॑यस्वाग्ने॒ प्रति॑जागृह्येनमिष्टापूर्ते स॒सृजे॑थाम॒यं च॑। पुनः॑ कृ॒ण्व॑स्त्वा
पि॒तरं॑ युवा॑नम॒न्वाता॑सी॒त्वयि॑ तन्तुमे॒तम्॥ इ॒दं वि॒ष्णुर्विच॑क्रमे त्रे॒धा नि॑दधे
प॒दम्। समू॑ढमस्यपा॒सु रे॥ वि॒ष्णो र॒राट॑मसि॒ विष्णोः॑ पृ॒ष्ठम॑सि॒ विष्णोः॑
श्र॒त्रे॒स्थो वि॒ष्णोः॑ स्यूर॑सि॒ विष्णो॑र्ध्रुवम॑सि॒ वैष्ण॑वम॑सि॒ विष्णा॑वे त्वा। अधिदेवता
प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बुध-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥६॥

बृहस्पते अतियदर्यो अहोद्विमद्विभाति क्रतुमञ्जनेषु। यद्दीदयच्छवसर्तप्रजातु
तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते
अपिबः सुतस्य। तव प्रणीती तव शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचो वेन आवः। सबुधिया उपमा
अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय
बृहस्पतये नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं बृहस्पति-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥७॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ प्रजापते न
त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः
संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व॥
अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं शनैश्चर-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥८॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः
पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबन्धु

दामं ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथाजीवः पितुमंद्धि
प्रमुक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥

अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं राहु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।

रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥९॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्विरजायथाः॥ ब्रह्मा
देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां
स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं
चितयन् तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं
चन्द्रं चन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥
अस्मिन् मण्डले अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-सहितं केतु-ग्रहं ध्यायामि।
आवाहयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि।
अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम्
अक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

१. ॐ आदित्याय नमः

२. ॐ अङ्गारकाय नमः

३. ॐ शुक्राय नमः
४. ॐ सोमाय नमः
५. ॐ बुधाय नमः
६. ॐ बृहस्पतये नमः
७. ॐ शनैश्चराय नमः
८. ॐ राहवे नमः
९. ॐ केतवे नमः

नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः धूपमाग्रापयामि।

दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ लोकपाल-पूजा ॥

प्राणान् आयम्य। ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् अद्य-पूर्वोक्त एवं गुण-विशेषेण विशिष्टायाम् अस्यां अमावास्यायां शुभतिथौ श्रीमहालक्ष्मी-पूजाङ्गभूतां ब्रह्म-विष्णु-त्र्यम्बक-क्षेत्रपाल-पूजां करिष्ये।

अस्मिन् कूर्चे ब्रह्मादीन् ध्यायामि। ब्रह्मन् सरस्वत्या सह इह आगच्छ आगच्छ। सरस्वती-सहित-ब्रह्माणम् आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

लक्ष्मी-विष्णुभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

दुर्गा-त्र्यम्बकाभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

क्षेत्रपाल-भूमिभ्यां नमः।

ध्यायामि। आवाहयामि। आसनं समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रार्थम् अक्षतान् समर्पयामि। यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि। दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पैः पूजयामि।

नैवेद्यम्।

कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

प्रार्थनाः समर्पयामि। अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

ब्रह्मादिभ्यो नमः (अक्षतान् समर्पयित्वा) यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय च।

॥ प्रार्थना ॥

विघ्नराजं नमस्कृत्य नमस्कृत्य विधिं परम्।
विष्णुं रुद्रं श्रियं दुर्गां वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥

क्षेत्राधिपं नमस्कृत्य दिवानाथं निशाकरम्।
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥

दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्।
राहुकेतू नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥

शक्राद्या देवताः सर्वाः मुनींश्च प्रणमाम्यहम्।
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥

वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं भृगोः सुतम्।
 व्यासं मुनिं नमस्कृत्य आचार्याश्च तपोधनान्॥
 सर्वान् तान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा।
 शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग-पद्मपाणिर्जनार्दनः ॥
 सर्वासु दिक्षु रक्षेन्मां यावत् पूजावसानकम्।

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा
 करकमलधृतेष्टाऽभीतियुग्माम्बुजा च।
 मणिमकुटविचित्रालङ्कृता कल्पजातैः
 भवतु भुवनमाता सन्ततं श्रीः श्रियै नः॥
 हिरण्यवर्णां हिरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
 चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म् आवह॥१॥
 अस्मिन् बिम्बे श्रीमहालक्ष्मीं ध्यायामि।
 आवाहये महालक्ष्मि चैतन्यस्तन्यदायिनि।
 विष्णुपत्नि जगन्मातः पूजां गृह्णीष्व ते नमः॥
 श्रीमहालक्ष्मीम् आवाहयामि।
 तां म् आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
 यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥
 तप्तकाञ्चनवर्णाभिं मुक्तामणिविराजितम्।
 अमलं कमलं दिव्यम् आसनं प्रतिगृह्यताम्॥
 आसनं समर्पयामि।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम्।

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीमदेवीर्जुषताम्॥३॥

गङ्गातीर्थ-समुद्धृतं गन्ध-पुष्पादिभिर्युतम्।
पाद्यं ददाम्यहं देवि गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥

पाद्यं समर्पयामि।

कां सोऽस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां
पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥४॥

एलागन्धसमायुक्तं स्वर्णपात्रे प्रपूरितम्।
अर्घ्यं गृहाण मदत्तं प्रसीद त्वं महेश्वरि॥

अर्घ्यं समर्पयामि।

चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं
शरणमहं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

सर्वलोकस्य या शक्तिः ब्रह्मरुद्रादिभिः स्तुता।
ददाम्याचमनं तस्यै महालक्ष्म्यै मनोहरम्॥

आचमनीयं समर्पयामि।

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि
तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

घृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

पयसा स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

दध्ना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

मधुना स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

पञ्चामृतेन स्नपयामि। पुनः शुद्धोदकं समर्पयामि।

(कलशजलेन श्री-सूक्तं जप्य) शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि।

उपैतु मां देवसुखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

दिव्याम्बरयुगं सूक्ष्मं कञ्चुकं च मनोहरम्।
महालक्ष्मि महादेवि गृहाणेदं मयाऽर्पितम्॥
वस्त्रं समर्पयामि।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वां
निर्णुद मे गृहात्॥८॥

माङ्गल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताविद्रुमसंयुतम्।
दत्तं मङ्गलसूत्रं च गृहाण हरिवल्लभे॥
कण्ठसूत्रं समर्पयामि।

रत्नकङ्कणवैडूर्य-मुक्ताहारादिकानि च।
सुप्रसन्नेन मनसा दत्तानि त्वं गृहाण मे॥
आभरणानि समर्पयामि।

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये
श्रियम्॥९॥

सिन्दूरारुणवर्णा च सिन्दूरतिलकप्रिया।
अतो दत्तं मया देवि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥
तिलकं समर्पयामि।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः
श्रयतां यशः॥१०॥

मन्दार-पारिजाताद्याः पाटली केतकी तथा।
माकन्दं कुरवं चैव गृहाणाऽऽशु नमोऽस्तु ते॥
पुष्पमालां धारयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

१. ॐ चपलायै नमः — पादौ पूजयामि
२. चञ्चलायै नमः — जानुनी पूजयामि
३. कमलायै नमः — कटिं पूजयामि
४. कात्यायन्यै नमः — नाभिं पूजयामि
५. जगन्मात्रे नमः — जठरं पूजयामि
६. विश्ववल्लभायै नमः — वक्षःस्थलं पूजयामि
७. कमलवासिन्यै नमः — हस्तौ पूजयामि
८. पद्माननायै नमः — मुखं पूजयामि
९. कमलपत्राक्ष्यै नमः — नेत्रत्रयं पूजयामि
१०. श्रियै नमः — शिरः पूजयामि
११. महालक्ष्म्यै नमः — सर्वाणि अङ्गानि पूजयामि

॥ अष्टलक्ष्मी-अर्चना ॥

(प्राच्याम् आरभ्य अष्टदिक्षु प्रदक्षिणेन)

१. ॐ आद्यलक्ष्म्यै नमः
२. ॐ विद्यालक्ष्म्यै नमः

३. ॐ सौभाग्यलक्ष्म्यै नमः

६. ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः

४. ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः

७. ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः

५. ॐ कामलक्ष्म्यै नमः

८. ॐ योगलक्ष्म्यै नमः

आद्यादिलक्ष्मीनां षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

प्रकृत्यै नमः

लक्ष्म्यै नमः

विकृत्यै नमः

नित्यपुष्टायै नमः

विद्यायै नमः

विभावयै नमः २०

सर्वभूतहितप्रदायै नमः

अदित्यै नमः

श्रद्धायै नमः

दित्यै नमः

विभूत्यै नमः

दीप्तायै नमः

सुरभ्यै नमः

वसुधायै नमः

परमात्मिकायै नमः

वसुधारिण्यै नमः

वाचे नमः

कमलायै नमः

पद्मालयायै नमः १०

कान्तायै नमः

पद्मायै नमः

क्षमायै नमः

शुचये नमः

क्षीरोदसम्भवायै नमः

स्वाहायै नमः

अनुग्रहप्रदायै नमः ३०

स्वधायै नमः

बुद्धये नमः

सुधायै नमः

अनघायै नमः

धन्यायै नमः

हरिवल्लभायै नमः

हिरण्मय्यै नमः

अशोकायै नमः

अमृतायै नमः
 दीप्तायै नमः
 लोकशोकविनाशिन्यै नमः
 धर्मनिलयायै नमः
 करुणायै नमः
 लोकमात्रे नमः ४०
 पद्मप्रियायै नमः
 पद्महस्तायै नमः
 पद्माक्ष्यै नमः
 पद्मसुन्दर्यै नमः
 पद्मोद्भवायै नमः
 पद्ममुख्यै नमः
 पद्मनाभप्रियायै नमः
 रमायै नमः
 पद्ममालाधरायै नमः
 देव्यै नमः ५०
 पद्मिन्यै नमः
 पद्मगन्धिन्यै नमः
 पुण्यगन्धायै नमः
 सुप्रसन्नायै नमः
 प्रसादाभिमुख्यै नमः
 प्रभायै नमः
 चन्द्रवदनायै नमः
 चन्द्रायै नमः
 चन्द्रसहोदर्यै नमः

चतुर्भुजायै नमः ६०
 चन्द्ररूपायै नमः
 इन्दिरायै नमः
 इन्दुशीतलायै नमः
 आह्लादजनन्यै नमः
 पुष्ट्यै नमः
 शिवायै नमः
 शिवकर्यै नमः
 सत्यै नमः
 विमलायै नमः
 विश्वजनन्यै नमः ७०
 तुष्ट्यै नमः
 दारिद्र्यनाशिन्यै नमः
 प्रीतिपुष्करिण्यै नमः
 शान्तायै नमः
 शुक्लमाल्याम्बरायै नमः
 श्रियै नमः
 भास्कर्यै नमः
 बिल्वनिलयायै नमः
 वरारोहायै नमः
 यशस्विन्यै नमः ८०
 वसुन्धरायै नमः
 उदाराङ्गायै नमः
 हरिण्यै नमः
 हेममालिन्यै नमः

| | | |
|------------------------|------------------------------|-----|
| धनधान्यकर्यै नमः | विष्णुवक्षःस्थलस्थितायै नमः | |
| सिद्धौ नमः | विष्णुपत्न्यै नमः | |
| स्त्रेणसौम्यायै नमः | प्रसन्नाक्ष्यै नमः | |
| शुभप्रदायै नमः | नारायणसमाश्रितायै नमः | १०० |
| नृपवेश्मगतानन्दायै नमः | दारिद्र्यध्वंसिन्यै नमः | |
| वरलक्ष्म्यै नमः | देव्यै नमः | |
| वसुप्रदायै नमः | सर्वोपद्रवहारिण्यै नमः | |
| शुभायै नमः | नवदुर्गायै नमः | |
| हिरण्यप्राकारायै नमः | महाकाल्यै नमः | |
| समुद्रतनयायै नमः | ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः | |
| जयायै नमः | त्रिकालज्ञानसम्पन्नायै नमः | |
| मङ्गलायै देव्यै नमः | भुवनेश्वर्यै नमः | १०८ |

॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

कु॒र्दमे॑न प्र॒जाभू॑ता म॒यि स॒म्भ॑व कु॒र्दम॑ । श्रि॒यं वा॒सय॑ मे कु॒ले मा॒तरं॑
पद्म॑मा॒लिनी॑म् ॥ ११ ॥

वनस्पति-रसोत्पन्नो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आग्नेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्री-महालक्ष्म्यै नमः धूपमाग्रापयामि ।

आपः॑ सृ॒जन्तु॑ स्निग्धा॒नि चि॒क्री॑त व॒स मे॒ गृहे॑ । नि च॑ दे॒वीं मा॒तरं॑ श्रि॒यं
वा॒सय॑ मे कु॒ले ॥ १२ ॥

कार्पासवर्तिसंयुक्तं घृतयुक्तं मनोहरम्।
तमोनाशकरं दीपं गृहाण परमेश्वरि॥

श्री-महालक्ष्म्यै नमः अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा॥

आर्द्रा पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्या हिरण्मयीं लक्ष्मीं
जातवेदो म आवह॥१३॥

नैवेद्यं गृह्यतां लक्ष्मि भक्ष्य-भोज्य-समन्वितम्।
षड्रसैरचितं दिव्यं लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्यम्

- श्री-महालक्ष्म्यै नमः () निवेदयामि,

अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-महालक्ष्म्यै नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

श्री-महालक्ष्म्यै नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।

य एव वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।

ओं तद्ब्रह्म। ओं तद्वायुः। ओं तदात्मा। ओं तत्सत्यम्।

ओं तत्सर्वम्। ओं तत्पुरोर्नमः॥

अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु।

त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व९ रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापतिः।

त्वं तदाप॒ आपो॒ ज्योती॒ रसोऽमृतं॒ ब्रह्म॒ भूर्भुव॒स्सुव॒रोम्॥
 श्री-महा॒लक्ष्म्यै॒ नमः॒ वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं॒ समर्पयामि॑।
 स्वर्णपुष्पं॒ समर्पयामि॑
 अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान्॒ समर्पयामि॑
 छत्रचामरादिसमस्तोपचारान्॒ समर्पयामि॑

॥ ईशानादि पूजा ॥

ॐ ईशानाय नमः
 ॐ शचिने नमः
 ॐ मरुद्ध्यो नमः
 ॐ प्रजापतये नमः
 ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः
 ॐ अमरराजाय नमः
 ॐ सूर्याय नमः
 ॐ विश्वकर्मणे नमः
 ॐ गुरवे नमः
 ॐ अथर्वाङ्गिरोभ्यां नमः
 ॐ अश्विभ्यां नमः
 ॐ मित्रावरुणाभ्यां नमः
 ॐ विष्णवे नमः
 ॐ ईशानादिभ्यो नमः
 षोडशोपचार-पूजार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ कुबेर पूजा ॥

धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माय ते नमः।

भवन्तु त्वत्प्रसादान्मे धनधान्यानि सम्पदः॥

कुबेरं पुष्पकगतं निधिभिर्नवभिर्युतम्।

सुवर्णवर्णं पिङ्गाक्षं मनसा भावयाम्यहम्॥

नरवाहन यक्षेश सर्वपुण्यजनेश्वर।

कुबेराय नमः, षोडशोपचार-पूजां करिष्ये। कुबेराय नमः, आवाहयामि।

कुबेराय नमः, आसनं समर्पयामि। कुबेराय नमः, पाद्यं समर्पयामि। कुबेराय

नमः, अर्घ्यं समर्पयामि। कुबेराय नमः, आचमनीयं समर्पयामि। कुबेराय

नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

कुबेराय नमः, वस्त्रं समर्पयामि। कुबेराय नमः, दिव्यपरिमलगन्धान्

धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। कुबेराय नमः, अक्षतान्

समर्पयामि। कुबेराय नमः, पुष्पैः पूजयामि। कुबेराय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

कुबेराय नमः, अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। कुबेराय नमः, कदलीफलानि

निवेदयामि,

कुबेराय नमः, अमृतापिधानमसि। निवेदनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

कुबेराय नमः, कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीराजनं

दर्शयामि। कुबेराय नमः, कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

कुबेराय नमः, समस्तोपचारान् समर्पयामि।

मनुजबाह्यविमानवरस्तुतम्

गरुडरत्ननिभं निधिनायकम्।

शिवसखं मुकुटादिविभूषितम्

वररुचिं तमहमुपास्महे सदा॥

अगस्त्य देवदेवेश मर्त्यलोकहितेच्छया।
पूजयामि विधानेन प्रसन्नसुमुखो भव॥

॥ कुबेराष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

| | | | |
|-------------------------|----|----------------------------|----|
| कुबेराय नमः | | लक्ष्मीसाम्राज्यदायकाय नमः | |
| धनदाय नमः | | इलपिलापत्याय नमः | |
| श्रीमते नमः | | कोशाधीशाय नमः | |
| यक्षेशाय नमः | | कुलोचिताय नमः | |
| गुह्यकेश्वराय नमः | | अश्वारूढाय नमः | |
| निधीशाय नमः | | विश्ववन्द्याय नमः | |
| शङ्करसखाय नमः | | विशेषज्ञाय नमः | |
| महालक्ष्मीनिवासभुवे नमः | | विशारदाय नमः | |
| महापद्मनिधीशाय नमः | | नलकूबरनाथाय नमः | |
| पूर्णाय नमः | १० | मणिग्रीवपित्रे नमः | ३० |
| पद्मनिधीश्वराय नमः | | गूढमन्त्राय नमः | |
| शङ्खाख्यनिधिनाथाय नमः | | वैश्रवणाय नमः | |
| मकराख्यनिधिप्रियाय नमः | | चित्रलेखामनःप्रियाय नमः | |
| सुकच्छपाख्यनिधीशाय नमः | | एकपिनाकाय नमः | |
| मुकुन्दनिधिनायकाय नमः | | अलकाधीशाय नमः | |
| कुन्दाख्यनिधिनाथाय नमः | | पौलस्त्याय नमः | |
| नीलनित्याधिपाय नमः | | नरवाहनाय नमः | |
| महते नमः | | कैलासशैलनिलयाय नमः | |
| वरनिधिदीपाय नमः | | राज्यदाय नमः | |
| पूज्याय नमः | २० | रावणाग्रजाय नमः | ४० |

चित्रचैत्ररथाय नमः
 उद्यानविहाराय नमः
 विहारसुकुतूहलाय नमः
 महोत्सहाय नमः
 महाप्राज्ञाय नमः
 सदापुष्पकवाहनाय नमः
 सार्वभौमाय नमः
 अङ्गनाथाय नमः
 सोमाय नमः
 सौम्यादिकेश्वराय नमः ५०
 पुण्यात्मने नमः
 पुरुहुतश्रियै नमः
 सर्वपुण्यजनेश्वराय नमः
 नित्यकीर्तये नमः
 निधिवेत्रे नमः
 लङ्काप्राक्तननायकाय नमः
 यक्षिणीवृताय नमः
 यक्षाय नमः
 परमशान्तात्मने नमः
 यक्षराजे नमः ६०
 यक्षिणीहृदयाय नमः
 किन्नरेश्वराय नमः
 किम्पुरुषनाथाय नमः
 खड्गायुधाय नमः
 वशिने नमः

ईशानदक्षपार्श्वस्थाय नमः
 वायुवामसमाश्रयाय नमः
 धर्ममार्गनिरताय नमः
 धर्मसम्मुखसंस्थिताय नमः
 नित्येश्वराय नमः ७०
 धनाध्यक्षाय नमः
 अष्टलक्ष्म्याश्रितालयाय नमः
 मनुष्यधर्मिणे नमः
 सुकृतिने नमः
 कोषलक्ष्मीसमाश्रिताय नमः
 धनलक्ष्मीनित्यवासाय नमः
 धान्यलक्ष्मीनिवासभुवे नमः
 अष्टलक्ष्मीसदावासाय नमः
 गजलक्ष्मीस्थिरालयाय नमः
 राज्यलक्ष्मीजन्मगेहाय नमः ८०
 धैर्यलक्ष्मीकृपाश्रयाय नमः
 अखण्डैश्वर्यसंयुक्ताय नमः
 नित्यानन्दाय नमः
 सुखाश्रयाय नमः
 नित्यतृप्ताय नमः
 निराशाय नमः
 निरुपद्रवाय नमः
 नित्यकामाय नमः
 निराकाङ्क्षाय नमः
 निरूपाधिकवासभुवे नमः ९०

शान्ताय नमः
 सर्वगुणोपेताय नमः
 सर्वज्ञाय नमः
 सर्वसम्मताय नमः
 सर्वाणिकरुणापात्राय नमः
 सदानन्दकृपालयाय नमः
 गन्धर्वकुलसंसेव्याय नमः
 सौगन्धिककुसुमप्रियाय नमः
 स्वर्णनगरीवासाय नमः
 निधिपीठसमाश्रयाय नमः १००

महामेरूत्तरस्थाय नमः
 महर्षिगणसंस्तुताय नमः
 तुष्टाय नमः
 शूर्पणखाज्येष्ठाय नमः
 शिवपूजारताय नमः
 अनघाय नमः
 राजयोगसमायुक्ताय नमः
 राजशेखरपूज्याय नमः
 राजराजाय नमः

॥ इति श्री-कुबेराष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ नमस्कारः ॥

नमस्ते देवदेवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
 नमस्तेऽस्तु जगन्मातः नमस्ते केशवप्रिये॥

महालक्ष्म्यै नमः, नमस्करोमि॥

॥ प्रार्थना ॥

दामोदरि नमस्तेऽस्तु नमस्त्रैलोक्यमातृके।
 नमस्तेऽस्तु महालक्ष्मि त्राहि मां परमेश्वरि॥
 सर्वदा देहि मे द्रव्यं दानायापि च भुक्तये।
 धनधान्यं धरां हर्षं कीर्तिम् आयुश्च देहि मे॥
 यन्मया वाञ्छितं देवि तत्सर्वं सफलं कुरु।
 न बाधन्तां कुकर्माणि सङ्कटं मे निवारय॥

॥ अपराध-क्षमापनम् ॥

न्यूनं वाऽप्यगुणं वाऽपि यन्मया मोहितं कृतम्।
सर्वं तदस्तु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

लक्ष्मि त्वत्कृपया नित्यं कृता पूजा तवाऽऽज्ञया।
स्थिरा भव गृहे ह्यस्मिन् मम सन्तानकर्मणि॥

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।

अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

आश्वयुज-अमावास्या-पुण्यकालेऽस्मिन् मया क्रियमाण श्रीमहालक्ष्मी-
पूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रतिनिधित्वेन हिरण्यं श्री-महालक्ष्मीप्रीतिं
कामयमानः मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम। अनया पूजया
श्री-महालक्ष्मीः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा

बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।

करोमि यद्यत् सकलं परस्मै

नारायणायेति

समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ कार्तिकसोमवारार्घ्यम् ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

सोमवारे दिवा स्थित्वा निराहारो महेश्वर।
नक्तं भोक्ष्यामि देवेश अर्पयामि सदाशिव॥१॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नक्तं च सोमवारे च सोमनाथ जगत्पते।
अनन्तकोटिसौभाग्यं अक्षय्यं कुरु शङ्कर ॥२॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नमः सोमविभूषाय सोमायामिततेजसे।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सोमो यच्छतु मे शिवम्॥३॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

आकाशदिग्शरीराय ग्रहनक्षत्रमालिने।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥४॥

—साम्बशिवाय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

अम्बिकायै नमस्तुभ्यं नमस्ते देवि पार्वति।
अनघे वरदे देवि गृहाणार्घ्यं प्रसीद मे॥५॥

—पार्वत्यै नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

सुब्रह्मण्य महाभाग कार्तिकेय सुरेश्वर।
इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीतो वरदो भव॥६॥

—सुब्रह्मण्याय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

नन्दिकेश महाभाग शिवध्यानपरायण।
शैलादये नमस्तुभ्यं गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो॥७॥

—नन्दिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)

[नीलकण्ठ-पदाम्भोज-परिस्फुरित-मानस ।
शम्भोः सेवाफलं देहि चण्डेश्वर नमोऽस्तु ते॥८॥

—चण्डिकेश्वराय नमः इदमर्घ्यम्। (त्रिः)]

॥ कथा ॥

॥ अथ नामाष्टमोऽध्यायः—सोमवारव्रतवर्णनम् ॥

सूत उवाच

नित्यानन्दमयं शान्तं निर्विकल्पं निरामयम्।
शिवतत्त्वमनाद्यन्तं ये विदुस्ते परं गताः॥१॥

विरक्ताः कामभोगेभ्यो ये प्रकुर्वन्त्यहैतुकीम्।
भक्तिं परां शिवे धीरास्तेषां मुक्तिर्न संसृतिः॥२॥

विषयानभिसन्धाय ये कुर्वन्ति शिवे रतिम्।
विषयैर्नाभिभूयन्ते भुञ्जानास्तत्फलान्यपि॥३॥

येन केनापि भावेन शिवभक्तियुतो नरः।
न विनश्यति कालेन स याति परमां गतिम्॥४॥

आरुरुक्षुः परं स्थानं विषयासक्तमानसः।
पूजयेत्कर्मणा शम्भुं भोगान्ते शिवमाप्नुयात्॥५॥

अशक्तः कश्चिदुत्स्रष्टुं प्रायो विषयवासनाम्।
अतः कर्ममयी पूजा कामधेनुः शरीरिणाम्॥६॥

मायामयेऽपि संसारे ये विहृत्य चिरं सुखम्।
मुक्तिमिच्छन्ति देहान्ते तेषां धर्मोऽयमीरितः॥७॥

शिवपूजा सदा लोके हेतुः स्वर्गापवर्गयोः।
सोमवारे विशेषेण प्रदोषादिगुणान्विते॥८॥

केवलेनापि ये कुर्युः सोमवारे शिवार्चनम्।
न तेषां विद्यते किञ्चिदिहामुत्र च दुर्लभम्॥९॥

उपोषितः शुचिर्भूत्वा सोमवारे जितेन्द्रियः।
वैदिकैर्लौकिकैर्वाऽपि विधिवत्पूजयेच्छिवम्॥१०॥

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा कन्या वाऽपि सभर्तृका।
विभर्तृका वा सम्पूज्य लभते वरमीप्सितम्॥११॥

अत्राहं कथयिष्यामि कथां श्रोतृमनोहराम्।
श्रुत्वा मुक्तिं प्रयान्त्येव भक्तिर्भवति शाम्भवी॥१२॥

आर्यावर्ते नृपः कश्चिदासीद्धर्मभृतां वरः।
चित्रवर्मेति विख्यातो धर्मराजो दुरात्मनाम्॥१३॥

स गोप्ता धर्मसेतूनां शास्ता दुष्पथगामिनाम्।
यष्टा समस्तयज्ञानां त्राता शरणमिच्छताम्॥१४॥

कर्ता सकलपुण्यानां दाता सकलसम्पदाम्।
जेता सपत्नवृन्दानां भक्तः शिवमुकुन्दयोः॥१५॥

सोऽनुकूलासु पत्नीषु लब्ध्वा पुत्रान्महौजसः।
चिरेण प्रार्थितां लेभे कन्यामेकां वराननाम्॥१६॥

स लब्ध्वा तनयां दिष्ट्या हिमवानिव पार्वतीम्।
आत्मानं देवसदृशं मेने पूर्णमनोरथम्॥१७॥

स एकदा जातकलक्षणज्ञान्
 आहूय साधून् द्विजमुख्यवृन्दान्।
 कुतूहलेनाभिनिविष्टचेताः
 पप्रच्छ कन्याजनने फलानि॥१८॥

अथ तत्राब्रवीदेको बहुज्ञो द्विजसत्तमः।
 एषा सीमन्तिनी नाम्ना कन्या तव महीपते॥१९॥

उमेव माङ्गल्यवती दमयन्तीव रूपिणी।
 भारतीव कलाभिज्ञा लक्ष्मीरिव महागुणा॥२०॥

सुप्रजा देवमातेव जानकीव धृतव्रता।
 रविप्रभेव सत्कान्तिश्चन्द्रिकेव मनोरमा॥२१॥
 दशवर्षसहस्राणि सह भर्त्रा प्रमोदते।
 प्रसूय तनयानष्टौ परं सुखमवाप्स्यति॥२२॥

इत्युक्तवन्तं नृपतिर्धनैः सम्पूज्य तं द्विजम्।
 अवाप परमां प्रीतिं तद्वागमृतसेवया॥२३॥

अथान्योऽपि द्विजः प्राह धैर्यवानमितद्युतिः।
 एषा चतुर्दशे वर्षे वैधव्यं प्रतिपत्स्यति॥२४॥

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य वज्रनिर्घातनिष्ठुरम्।
 मुहूर्तमभवद्राजा चिन्ताव्याकुलमानसः॥२५॥

अथ सर्वान्समुत्सृज्य ब्राह्मणान्ब्रह्मवत्सलः।
 सर्वं दैवकृतं मत्वा निश्चिन्तः पार्थिवोऽभवत्॥२६॥

सापि सीमन्तिनी बाला क्रमेण गतशैशवा।
 वैधव्यमात्मनो भावि शुश्रावाऽऽत्मसखीमुखात्॥२७॥

परं निर्वेदमापन्ना चिन्तयामास बालिका।
 याज्ञवल्क्यमुनेः पत्नीं मैत्रेयीं पर्यपृच्छत्॥२८॥

मातस्त्वच्चरणाम्भोजं प्रपन्नाऽस्मि भयाकुला।
सौभाग्यवर्धनं कर्म मम शंसितुमर्हसि॥२९॥

इति प्रपन्नां नृपतेः कन्यां प्राह मुनेः सती।
शरणं ब्रज तन्वङ्गि पार्वतीं शिवसंयुताम्॥३०॥

सोमवारे शिवं गौरीं पूजयस्व समाहिता।
उपोषिता वा सुस्नाता विरजाम्बरधारिणी॥३१॥

यतवाङ्गिश्चलमनाः पूजां कृत्वा यथोचिताम्।
ब्राह्मणान्भोजयित्वाऽथ शिवं सम्यक्प्रसादयत्॥३२॥

पापक्षयोऽभिषेकेण साम्राज्यं पीठपूजनात्।
सौभाग्यमखिलं सौख्यं गन्धमाल्याक्षतार्पणात्॥३३॥

धूपदानेन सौगन्ध्यं कान्तिर्दीपप्रदानतः।
नैवेद्यैश्च महाभोगो लक्ष्मीस्ताम्बूलदानतः॥३४॥

धर्मार्थकाममोक्षाश्च नमस्कारप्रदानतः।
अष्टैश्वर्यादिसिद्धीनां जप एव हि कारणम्॥३५॥

होमेन सर्वकामानां समृद्धिरुपजायते।
सर्वेषामेव देवानां तुष्टिर्ब्राह्मणभोजनात्॥३६॥

इत्थमाराधय शिवं सोमवारे शिवामपि।
अत्यापदमपि प्राप्ता निस्तीर्णाभिभवा भवेः॥३७॥

घोराद् घोरं प्रपन्नापि महाक्लेशं भयानकम्।
शिवपूजाप्रभावेण तरिष्यसि महद्भयम्॥३८॥

इत्थं सीमन्तिनीं सम्यगनुशास्य पुनः सती।
ययौ साऽपि वरारोहा राजपुत्री तथाऽकरोत्॥३९॥

दमयन्त्यां नलस्यासीदिन्द्रसेनाभिधः सुतः।
तस्य चन्द्राङ्गदो नाम पुत्रोऽभूच्चन्द्रसन्निभः॥४०॥

चित्रवर्मा नृपश्रेष्ठस्तमाहूय नृपात्मजम्।
कन्यां सीमन्तिनीं तस्मै प्रायच्छद्गुर्वनुज्ञया॥४१॥

सोऽभून्महोत्सवस्तत्र तस्या उद्वाहकर्मणि।
यत्र सर्वमहीपानां समवायो महानभूत्॥४२॥

तस्याः पाणिग्रहं काले कृत्वा चन्द्राङ्गदः कृती।
उवास कतिचिन्मासांस्तत्रैव श्वशुरालये॥४३॥

एकदा यमुनां तर्तुं स राजतनयो बली।
आरुरोह तरीं कैश्चिद्वयस्यैः सह लीलया॥४४॥

तस्मिंस्तरति कालिन्दीं राजपुत्रे विधेर्वशात्।
ममञ्ज सह कैवर्तेरावर्ताभिहता तरी॥४५॥

हा हेति शब्दः सुमहानासीत्तस्यास्तटद्वये।
पश्यतां सर्वसैन्यानां प्रलापो दिवमस्पृशत्॥४६॥

मञ्जन्तो मग्निरे केचित्केचिद्वाहोदरं गताः।
राजपुत्रादयः केचिन्नादृश्यन्त महाजले॥४७॥

तदुपश्रुत्य राजाऽपि चित्रवर्माऽतिविह्वलः।
यमुनायास्तटं प्राप्य विचेष्टः समजायत॥४८॥

श्रुत्वाऽथ राजपत्न्यश्च बभूवुर्गतचेतनाः।
सा च सीमन्तिनी श्रुत्वा पपाप भुवि मूर्च्छिता॥४९॥

तथाऽन्ये मन्त्रिमुख्याश्च नायकाः सपुरोहिताः।
विह्वलाः शोकसन्तप्ता विलेपुर्मुक्तमूर्धजाः॥५०॥

इन्द्रसेनोऽपि राजेन्द्रः पुत्रवार्तां सुदुःखितः।
आकर्ण्य सह पत्नीभिर्नष्टसंज्ञः पपात ह॥५१॥

तन्मन्त्रिणश्च तत्पौरास्तथा तद्देशवासिनः।
आबालवृद्धवनिताश्चक्रुशुः शोकविह्वलाः॥५२॥

शोकात्केचिदुरो जघ्नुः शिरो जघ्नुश्च केचन।
हा राजपुत्र हा तात क्वासि क्वासीति बभ्रमुः॥५३॥

एवं शोकाकुलं दीनमिन्द्रसेनमहीपतेः।
नगरं सहसा क्षुब्धं चित्रवर्मपुरं तथा॥५४॥

अथ वृद्धैः समाश्वस्तश्चित्रवर्मा महीपतिः।
शनैर्नगरमागत्य सान्त्वयामास चाऽऽत्मजाम्॥५५॥

स राजाऽम्भसिमग्नस्य जामातुस्तस्य बान्धवैः।
आगतैः कारयामास साकल्यादौर्ध्वदैहिकम्॥५६॥

सा च सीमन्तिनी साध्वी भर्तृलोकमतिः सती।
पित्रा निषिद्धा स्नेहेन वैधव्यं प्रत्यपद्यत॥५७॥

मुनेः पत्न्योऽपदिष्टं यत्सोमवारव्रतं शुभम्।
न तत्याज शुभाचारा वैधव्यं प्राप्तवत्यपि॥५८॥

एवं चतुर्दशे वर्षे दुःखं प्राप्य सुदारुणम्।
ध्यायन्ती शिवपादाब्जं वत्सरत्रयमत्यगात्॥५९॥

पुत्रशोकादिवोन्मत्तमिन्द्रसेनं महीपतिम्।
प्रसह्य तस्य दायादाः सप्ताङ्गं जहुरोजसा॥६०॥

हृतसिंहासनः शूरैर्दायादैः सोऽप्रजो नृपः।
निगृह्य काराभवने सपत्नीको निवेशितः॥६१॥

चन्द्राङ्गदोऽपि तत्पुत्रो निमग्नो यमुनाजले।
अधोधोमञ्जमानोऽसौ ददर्शोरगकामिनीः॥६२॥

जलक्रीडासु सक्तास्ता दृष्ट्वा राजकुमार कम्।
विस्मितास्तमथो निन्युः पातालं पन्नगालयम्॥६३॥

स नीयमानस्तरसा पन्नगीभिर्नृपात्मजः।
तक्षकस्य पुरं रम्यं विवेश परमाद्भुतम्॥६४॥

सोऽपश्यद्राजतनयो महेन्द्रभवनोपमम्।
महारत्नपरिभ्राजन्मयूखपरिदीपितम् ॥६५॥

वज्रवैडूर्यपाचादिप्रासादशतसङ्कुलम् ।
माणिक्यगोपुरद्वारं मुक्तादामभिरुज्ज्वलम्॥६६॥

चन्द्रकान्तस्थलं रम्यं हेमद्वारकपाटकम्।
अनेकशतसाहस्रमणिदीपविराजितम् ॥६७॥

तत्रापश्यत्सभामध्ये निषण्णं रत्नविष्टरे।
तक्षकं पन्नगाधीशं फणानेकशतोज्ज्वलम्॥६८॥

दिव्याम्बरधरं दीप्तं रत्नकुण्डलराजितम्।
नानारत्नपरिक्षिप्तमुकुटद्युतिरञ्जितम् ॥६९॥

फणामणिमयूखाढ्यैरसङ्ख्यैः पन्नगोत्तमैः।
उपासितं प्राञ्जलिभिश्चित्ररत्नविभूषितैः॥७०॥

रूपयौवनमाधुर्यविलासगति शोभिना।
नागकन्यासहस्रेण समन्तात्परिवारितम्॥७१॥

दिव्याभरणदीप्ताङ्गं दिव्यचन्दनचर्चितम्।
कालाग्निमिव दुर्धर्षं तेजसाऽऽदित्यसन्निभम्॥७२॥

दृष्ट्वा राजसुतो धीरः प्रणिपत्य सभास्थले।
उत्थितः प्राञ्जलिस्तस्य तेजसाऽऽक्षितलोचनः॥७३॥

नागराजोऽपि तं दृष्ट्वा राजपुत्रं मनोरमम्।
कोऽयं कस्मादिहायात इति पप्रच्छ पन्नगीः॥७४॥

ता ऊचुर्यमुनातोये दृष्टोऽस्माभिर्यदृच्छया।
अज्ञातकुलनामायमानीतस्तव सन्निधिम्॥७५॥

अथ पृष्टो राजपुत्रस्तक्षकेण महात्मना।
कस्यासि तनयः कस्त्वं को देशः कथमागतः॥७६॥

राजपुत्रो वचः श्रुत्वा तक्षकं वाक्यमब्रवीत्॥७७॥

राजपुत्र उवाच

अस्ति भूमण्डले कश्चिद्देशो निषधसंज्ञकः।
तस्याधिपोऽभवद्राजा नलो नाम महायशः।
स पुण्यकीर्तिः क्षितिपो दमयन्तीपतिः शुभः॥७८॥

तस्मादपीन्द्रसेनाख्यस्तस्य पुत्रो महाबलः।
चन्द्राङ्गदोऽस्मि नाम्नाऽहं नवोढः श्वशुरालये।
विहरन्यमुनातोये निमग्नो देवचोदितः॥७९॥

एताभिः पन्नगस्त्रीभिरानीतोऽस्मि तवान्तिकम्।
दृष्ट्वाऽहं तव पादाब्जं पुण्यैर्जन्मान्तरार्जितैः॥८०॥

अद्य धन्योऽस्मि धन्योऽस्मि कृतार्थो पितरौ मम।
यत्प्रेक्षितोऽहं कारुण्यात्त्वया सम्भाषितोऽपि च॥८१॥

सूत उवाच

इत्युदारमसम्भ्रान्तं वचः श्रुत्वाऽतिपेशलम्।
तक्षकः पुनरौत्सुक्याद्वभाषे राजनन्दनम्॥८२॥

तक्षक उवाच

भो भो नरेन्द्रदायाद मा भैषीर्धीरतां ब्रज।
सर्वदेवेषु को देवो युष्माभिः पूज्यते सदा॥८३॥

राजपुत्र उवाच

यो देवः सर्वदेवेषु महादेव इति स्मृतः।
पूज्यते स हि विश्वात्मा शिवोऽस्माभिरुमापतिः॥८४॥

यस्य तेजोऽंशलेशेन रजसा च प्रजापतिः।
कृतरूपोऽसृजद्विश्वं स नः पूज्यो महेश्वरः॥८५॥

यस्यांशात्सात्त्विकं दिव्यं बिभ्रद्विष्णुः सनातनः।
विश्वं बिभर्ति भूतात्मा शिवोऽस्माभिः स पूज्यते॥८६॥

यस्यांशात्तामसाज्जातो रुद्रः कालाग्निसन्निभः।
विश्वमेतद्धरत्यन्ते स पूज्योऽस्माभिरीश्वरः॥८७॥

यो विधाता विधातुश्च कारणस्यापि कारणम्।
तेजसां परमं तेजः स शिवो नः परा गतिः॥८८॥

योऽन्तिकस्थोऽपि दूरस्थः पापोपहृतचेतसाम्।
अपरिच्छेद्य धामासौ शिवो नः परमा गतिः॥८९॥

योऽग्नौ तिष्ठति यो भूमौ यो वायौ सलिले च यः।
य आकाशे च विश्वात्मा स पूज्यो नः सदाशिवः॥९०॥

यः साक्षी सर्वभूतानां य आत्मस्थो निरञ्जनः।
यस्येच्छावशगो लोकः सोऽस्माभिः पूज्यते शिवः॥९१॥

यमेकमाद्यं पुरुषं पुराणं
वदन्ति भिन्नं गुणवैकृतेन।
क्षेत्रज्ञमेकेऽथ तुरीयमन्ये
कूटस्थमन्ये स शिवो गतिर्नः॥९२॥

यं नास्पृशंश्चैत्यमचिन्त्यतत्त्वं
 दुरन्तधामानमतत्स्वरूपम् ।
 मनोवचोवृत्तय आत्मभाजां
 स एष पूज्यः परमः शिवो नः॥१३॥
 यस्य प्रसादं प्रतिलभ्य सन्तो
 वाञ्छन्ति नैन्द्रं पदमुञ्चलं वा।
 निस्तीर्णकर्मागलकालचक्राः
 चरन्त्यभीताः स शिवो गतिर्नः॥१४॥
 यस्य स्मृतिः सकलपापरुजां विधातं
 सद्यः करोत्यपि चु पुल्कसजन्मभाजाम्।
 यस्य स्वरूपमखिलं श्रुतिभिर्विमृग्यं
 तस्मै शिवाय सततं करवाम पूजाम्॥१५॥
 यन्मूर्ध्नि लब्धनिलया सुरलोकसिन्धुः
 यस्याङ्गा भगवती जगदम्बिका च।
 यत्कुण्डले त्वहह तक्षकवासुकी द्वौ
 सोऽस्माकमेव गतिरर्घशशाङ्कमौलिः॥१६॥
 जयति निगमचूडाग्रेषु यस्याङ्घ्रिपद्मं
 जयति च हृदि नित्यं योगिनां यस्य मूर्तिः।
 जयति सकलतत्त्वोद्भासनं यस्य मूर्तिः
 स विजितगुणसर्गः पूज्यतेऽस्माभिरीशः॥१७॥

सूत उवाच

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य तक्षकः प्रीतमानसः।
 जातभक्तिर्महादेवे राजपुत्रमभाषत॥१८॥

तक्षक उवाच

परितुष्टोऽस्मि भद्रं स्तात् तव राजेन्द्रनन्दन।
 बालोऽपि यत्परं तत्त्वं वेत्सि शैवं परात्परम्॥१९॥

एष रत्नमयो लोक एताश्चारुदृशोऽबलाः।
एते कल्पद्रुमाः सर्वे वाऽप्योमृतरसाम्भसः॥१००॥

नात्र मृत्युभयं घोरं न जरारोगपीडनम्।
यथेष्टं विहरात्रैव भुङ्क्ते भोगान्यथोचितान्॥१०१॥

इत्युक्तो नागराजेन स राजेन्द्रकुमारकः।
प्रत्युवाच परं प्रीत्या कृताञ्जलिरुदारधीः॥१०२॥

कृतदारोऽस्म्यहं काले सुव्रता गृहिणी मम।
शिव पूजापरा नित्यं पितरावेकपुत्रकौ॥१०३॥

ते त्वद्य मां मृतं मत्वा शोकेन महताऽऽवृताः।
प्रायः प्राणैर्वियुज्यन्ते दैवात्प्राणान्वहन्ति वा॥१०४॥

अतो मया बहुतिथं नात्र स्थेयं कथञ्चन।
तमेव लोकं कृपया मां प्रापयितुमर्हसि॥१०५॥

इत्युक्तवन्तं नरदेवपुत्रं
दिव्यैर्वरात्रैः सुरपादपोत्थैः।
आप्याययित्वा वरगन्धवासः
स्रग्नदिव्याभरणैर्विचित्रैः ॥१०६॥

सन्तोषयित्वा विविधैश्च भोगैः
पुनर्बभाषे भुजगाधिराजः।
यदा यदा त्वं स्मरसि त्वदग्रे
तदा तदाऽऽविष्क्रियते मयेति॥१०७॥

पुनश्च राजपुत्राय तक्षकोऽश्वं च कामगम्।
नानाद्वीपसमुद्रेषु लोकेषु च निरर्गलम्॥१०८॥

दत्तवान्नलाभरणदिव्याभरणवाससाम्।
वाहनाय ददावेकं राक्षसं पन्नगेश्वरः॥१०९॥

तत्सहायार्थमेकं च पन्नगेन्द्रकुमारकम्।
नियुज्य तक्षकः प्रीत्या गच्छेति विससर्ज तम्॥११०॥

इति चन्द्राङ्गदः सोऽथ सङ्गृह्य विविधं धनम्।
अश्वं कामगमारुह्य ताभ्यां सह विनिर्ययौ॥१११॥

स मूहूर्तादिवोन्मज्ज्य तस्मा देव सरिज्जलात्।
विजहार तटे रम्ये दिव्यमारुह्य वाजिनम्॥११२॥

अथास्मिन्समये तन्वी सा च सीमन्तिनी सती।
स्नातुं समाययौ तत्र सखीभिः परिवारिता॥११३॥

सा ददर्श नदीतीरे विहरन्तं नृपात्मजम्।
रक्षसा नररूपेण नागपुत्रेण चान्वितम्॥११४॥

दिव्यरत्नसमाकीर्णं दिव्य माल्यावतंसकम्।
देहेन दिव्यगन्धेन व्याक्षिप्तदशयोजनम्॥११५॥

तमपूर्वाकृतिं वीक्ष्य दिव्याश्वमधिसंस्थितम्।
जडोन्मत्तेव भीतेव तस्थौ तन्म्यस्तलोचना॥११६॥

तां च राजेन्द्रपुत्रोऽसौ दृष्टपूर्वामिति स्मरन्।
निर्मुक्तकण्ठाभरणां कण्ठसूत्रविवर्जिताम्॥११७॥

असंयोजितधम्मिल्लामङ्गरागविवर्जिताम् ।
त्यक्तनीलाञ्जनापाङ्गीं कृशाङ्गीं शोकदूषिताम्॥११८॥

दृष्ट्वाऽवतीर्य तुरगादुपविष्टः सरित्तटे।
तामाहूय वरारोहामुपवेश्येदमब्रवीत्॥११९॥

का त्वं कस्य कलत्रं वा कस्यासि तनया सती।
किमिदं तेऽङ्गने बाल्ये दुःसहं शोकलक्षणम्॥१२०॥

इति स्नेहेन सम्पृष्टा सा वधूरश्रुलोचना।
लज्जिता स्वयमाख्यातुं तत्सखी सर्वमब्रवीत्॥१२१॥

इयं सीमन्तिनी नाम्ना सुषा निषधभूपतेः।
चन्द्राङ्गदस्य महिषी तनया चित्रवर्मणः॥१२२॥

अस्याः पतिर्देवयोगान्निमग्नोऽस्मिन्महाजले।
तेनेयं प्राप्तवैधव्या बाला दुःखेन शोषिता॥१२३॥

एवं वर्षत्रयं नीतं शोकेनातिबलीयसा।
अद्येन्दुवारे सम्प्राप्ते स्नातुमत्र समागता॥१२४॥

श्वशुरोऽस्याश्च राजेन्द्रो हृतराज्यश्च शत्रुभिः।
बलाद्गृहीतो बद्धश्च सभार्यस्तद्वशे स्थितः॥१२५॥

तथाऽप्येषा शुभाचारा सोमवारे महेश्वरम्।
साम्बिकं परया भक्त्या पूजयत्यमलाशया॥१२६॥

सूत उवाच

इत्थं सखीमुखेनैव सर्वमावेद्य सुव्रता।
ततः सीमन्तिनी प्राह स्वयमेव नृपात्मजम्॥१२७॥

कस्त्वं कन्दर्पसङ्काशः काविमौ तव पार्श्वगौ।
देवो नरेन्द्रः सिद्धो वा गन्धर्वो वाऽथ किन्नरः॥१२८॥

किमर्थं मम वृत्तान्तं स्नेहवानिव पृच्छसि।
किं मां वेत्सि महाबाहो दृष्टवान्किमु कुत्रचित्॥१२९॥

दृष्टपूर्वं इवाऽऽभासि मया च स्वजनो यथा।
सर्वं कथय तत्त्वेन सत्यसारा हि साधवः॥१३०॥

सूत उवाच

एतावदुक्ता नरदेवपुत्री
 सबाष्पकण्ठं सुचिरं रुरोद।
 मुमोह भूमौ पतिता सखीभिः
 वृता न किञ्चित्कथितुं शशाक॥१३१॥

श्रुत्वा चन्द्राङ्गदः सर्वं प्रियायाः शोककारणम्।
 मुहूर्तमभवत्तूष्णीं स्वयं शोकसमाकुलः॥१३२॥

अथाऽऽश्वास्य प्रियां तन्वीं विविधैर्वाक्यनैपुणैः।
 सिद्धा नाम वयं देवाः कामगा इति सोऽब्रवीत्॥१३३॥

ततो बलादिवाकृष्य पाणिग्रहणशङ्किताम्।
 पुलकाश्रितसर्वाङ्गीं तां कर्णे त्विदमब्रवीत्॥१३४॥

क्वापि लोके मया दृष्टस्तव भर्ता वरानने।
 त्वद्वताचरणात्प्रीतः सद्य एवागमिष्यति॥१३५॥

अपनेष्यति ते शोकं द्वित्रैरेव दिनैर्ध्रुवम्।
 एतच्छंसितुमायातस्तव भर्तुः सखाऽस्म्यहम्॥१३६॥

अत्र कार्यो न सन्देहः शपामि शिवपादयोः।
 तावत्त्वद्धृदये स्थेयं न प्रकाश्यं च कुत्रचित्॥१३७॥

सा तु तद्वचनं श्रुत्वा सुधाधाराशताधिकम्।
 सम्भ्रमोद्भ्रान्तनयना तमेव मुहुरैक्षत॥१३८॥

प्रेमबन्धानुगुणितं वाक्यं चाह रसायनम्।
 विभ्रमोदारसहितं मधुरापाङ्गवीक्षणम्॥१३९॥

स्वपाणिस्पर्शनोद्धिन्नपुलकाश्रितविग्रहम्।
 पूर्वदृष्टानि चाङ्गेषु लक्षणानि स्वरादिषु।
 वयःप्रमाणं वर्णं च परीक्ष्यैनमतर्कयत्॥१४०॥

एष एव पतिर्मे स्याद्भुवं नान्यो भविष्यति।
 अस्मिन्नेव प्रसक्तं मे हृदयं प्रेमकातरम्॥१४१॥
 परलोकादिहायातः कथमेवं स्वरूपधृक्।
 दुर्भाग्यायाः कथं मे स्याद्भर्तुर्नष्टस्य दर्शनम्॥१४२॥
 स्वप्नोऽयं किमु न स्वप्नो भ्रमोऽयं किं तु न भ्रमः।
 एष धूर्तोऽथवा कश्चिद् यक्षो गन्धर्व एव वा॥१४३॥
 मुनिपत्न्या यदुक्तं मे परमापद्गताऽपि च।
 व्रतमेतत्कुरुष्वेति तस्य वा फलमेव वा॥१४४॥
 यो वर्षायुतसौभाग्यं ममेत्याह द्विजोत्तमः।
 नूनं तस्य वचः सत्यं को विद्यादीश्वरं विना॥१४५॥
 निमित्तानि च दृश्यन्ते मङ्गलानि दिनेदिने।
 प्रसन्ने पार्वतीनाथे किमसाध्यं शरीरिणाम्॥१४६॥
 इत्थं विमृश्य बहुधा तां पुनर्मुक्तसंशयाम्।
 लज्जानम्रमुखीं कर्णे शशंसात्मप्रयोजनम्॥१४७॥
 इमं वृत्तान्तमाख्यातुं तत्पित्रोः शोकतप्तयोः।
 गच्छामः स्वस्ति ते भद्रे सद्यः पतिमवाप्स्यसि॥१४८॥
 इत्युक्त्वाऽश्वं समारुह्य जगाम नृपनन्दनः।
 ताभ्यां सह निजं राष्ट्रं प्रत्यपद्यत तत्क्षणात्॥१४९॥
 स पुरोपवनाभ्याशे स्थित्वा तं फणिपुत्रकम्।
 विससर्जाऽऽत्मदायादानृपासनगतान्प्रति ॥१५०॥
 स गत्वोवाच ताञ्छीघ्रमिन्द्रसेनो विमुच्यताम्।
 चन्द्राङ्गदस्तस्य सुतः प्राप्तोऽयं पन्नगालयात्॥१५१॥
 नृपासनं विमुञ्चन्तु भवन्तो न विचार्यताम्।
 नो चेच्चन्द्राङ्गदस्याऽऽशु बाणाः प्राणान्हरन्ति वः॥१५२॥

स मग्नो यमुनातोये गत्वा तक्षकमन्दिरम्।
लब्ध्वा च तस्य साहाय्यं पुनर्लोकादिहागतः॥१५३॥

इत्याख्यातमशेषेण तद्वृत्तान्तं निशम्य ते।
साधुसाध्विति सम्भ्रान्ताः शशंसुः परिपन्थिनः॥१५४॥

अथेन्द्रसेनाय निवेद्य सत्वरं
नष्टस्य पुत्रस्य पुनः समागमम्।
प्रसाद्य तं प्राप्तनरेश्वरासनं
दायादमुख्यास्तु भयं प्रपेदिरे॥१५५॥

अथ पौरजनाः सर्वे पुरोद्याने नृपात्मजम्।
दृष्ट्वा राज्ञे द्रुतं प्रोचुर्लेभिरे च महाधनम्॥१५६॥

आकर्ण्य पुत्रमायान्तं राजाऽऽनन्दजलाप्लुतः।
न व्यजानादिमं लोकं राज्ञी च परया मुदा॥१५७॥

अथ नागरिकाः सर्वे मन्त्रिवृद्धाः पुरोधसः।
प्रत्युद्गम्य परिष्वज्य तमानिन्युर्नृपान्तिकम्॥१५८॥

अथोत्सवेन महता प्रविश्य निजमन्दिरम्।
राजपुत्रः स्वपितरौ ववन्दे बाष्पमुत्सृजन्॥१५९॥

तं पादमूले पतितं स्वपुत्रं
विवेद नासौ पृथिवीपतिः क्षणम्।
प्रबोधितोऽमात्यजनैः कथञ्चिद्
उत्थाय क्लिन्नेन हृदाऽऽलिलिङ्गः॥१६०॥

क्रमेण मातुरभिवन्द्य ताभिः
प्रवर्धिताशीः प्रणयाकुलाभिः।
आलिङ्गितः पौरजनानशेषान्
सम्भावयामास स राजसूनुः॥१६१॥

तेषां मध्ये समासीनः स्ववृत्तान्तमशेषतः।
पित्रे निवेदयामास तक्षकस्य च मित्रताम्॥१६२॥

दत्तं भुजङ्गराजेन रत्नादिधनसञ्चयम्।
दिव्यं तद्राक्षसानीतं पित्रे सर्वं न्यवेदयत्॥१६३॥

राजपुत्रस्य चरितं दृष्ट्वा श्रुत्वा च विह्वलः।
मेने स्नुषायाः सौभाग्यं महेशाराधनार्जितम्॥१६४॥

सौमाङ्गल्यमयीं वार्तामिमां निषधभूपतिः।
चारैर्निवेदयामास चित्रवर्ममहीपतेः॥१६५॥

श्रुत्वाऽमृतमयीं वार्तां स समुत्थाय सम्भ्रमात्।
तेभ्यो दत्त्वा धनं भूरि ननर्ताऽऽनन्दविह्वलः॥१६६॥

अथाऽऽहूय स्वतनयां परिष्वज्याश्रुलोचनः।
भूषणैर्भूषयामास त्यक्तवैधव्यलक्षणाम्॥१६७॥

अथोत्सवो महानासीद्राष्ट्रग्रामपुरादिषु।
सीमन्तिन्याः शुभाचारं शशंसुः सर्वतो जनाः॥१६८॥

चित्रवर्माऽथ नृपतिः समाहूयेन्द्रसेनजम्।
पुनर्विवाहविधिना सुतां तस्मै न्यवेदयत्॥१६९॥

चन्द्राङ्गदोऽपि रत्नाद्यैरानीतैस्तक्षकालयात्।
स्वां पत्नीं भूषयां चक्रे मर्त्यानामतिदुर्लभैः॥१७०॥

अङ्गरागेण दिव्येन तप्तकाञ्चनशोभिना।
शुशुभे सा सुगन्धेन दशयोजनगामिना॥१७१॥

अम्लानमालया शश्वत्पद्मकिञ्जल्कवर्णया।
कल्पद्रुमोत्थया बाला भूषिता शुशुभे सती॥१७२॥

एवं चन्द्राङ्गदः पत्नीमवाप्य समये शुभे।
ययौ स्वनगरीं भूयः श्वशुरेणानुमोदितः॥१७३॥

इन्द्रसेनोऽपि राजेन्द्रो राज्ये स्थाप्य निजात्मजम्।
तपसा शिवमाराध्य लेभे संयमिनां गतिम्॥१७४॥

दशवर्षसहस्राणि सीमन्तिन्या स्वभार्यया।
सार्धं चन्द्राङ्गदो राजा बुभुजे विषयान्बहून्॥१७५॥

प्रासूत तनयानष्टौ कन्यामेकां वराननाम्।
रेमे सीमन्तिनी भर्त्रा पूजयन्ती महेश्वरम्।
दिनेदिने च सौभाग्यं प्राप्तं चैवेन्दुवासरात्॥१७६॥

सूत उवाच

विचित्रमिदमाख्यां मया समनुवर्णितम्।
भूयोऽपि वक्ष्ये माहात्म्यं सोमवारव्रतोदितम्॥१७७॥

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां ब्रह्मोत्तरखण्डे
सोमवारव्रतवर्णनं नामाष्टमोऽध्यायः॥

॥ अथ नवमोऽध्यायः—सीमन्तिन्याः प्रभाववर्णनम् ॥

ऋषय ऊचुः

साधु साधु महाभाग त्वया कथितमुत्तमम्।
आख्यां पुनरन्यत्र विचित्रं वक्तुमर्हसि॥१॥

सूत उवाच

विदर्भविषये पूर्वमासीदेको द्विजोत्तमः।
वेदमित्र इति ख्यातो वेदशास्त्रार्थवित्सुधीः॥२॥

तस्यासीदपरो विप्रः सखा सारस्वताह्वयः।
तावुभौ परमस्निग्धावेकदेशनिवासिनौ॥३॥

वेदमित्रस्य पुत्रोऽभूत्सुमेधा नाम सुव्रतः।
सारस्वतस्य तनयः सोमवानिति विश्रुतः॥४॥

उभौ सवयसौ बालौ समवेषौ समस्थितौ।
समं च कृतसंस्कारौ समविद्यौ बभूवतुः॥५॥

साङ्गानधीत्य तौ वेदांस्तर्कव्याकरणानि च।
इतिहासपुराणानि धर्मशास्त्राणि कृत्स्नशः॥६॥

सर्वविद्याकुशलिनौ बाल्य एव मनीषिणौ।
प्रहर्षमतुलं पित्रोर्ददतुः सकलैर्गुणैः॥७॥

तावेकदा स्वतनयौ तावुभौ ब्राह्मणोत्तमौ।
आहूयावोचतां प्रीत्या षोडशाब्दौ शुभाकृती॥८॥

हे पुत्रकौ युवां बाल्ये कृतविद्यौ सुवर्चसौ।
वैवाहिकोऽयं समयो वर्तते युवयोः समम्॥९॥

इमं प्रसाद्य राजानं विदर्भेशं स्वविद्यया।
ततः प्राप्य धनं भूरि कृतोद्वाहौ भविष्यथः॥१०॥

एवमुक्तौ सुतौ ताभ्यां तावुभौ द्विजनन्दनौ।
विदर्भराजमासाद्य समतोषयतां गुणैः॥११॥

विद्यया परितुष्टाय तस्मै द्विजकुमारकौ।
विवाहार्थं कृतोद्योगौ धनहीनावशंसताम्॥१२॥

तयोरपि मतं ज्ञात्वा स विदर्भमहीपतिः।
प्रहस्य किञ्चित्प्रोवाच लोकतत्त्वविवित्सया॥१३॥

आस्ते निषधराजस्य राज्ञी सीमन्तिनी सती।
सोमवारे महादेवं पूजयत्यम्बिकायुतम्॥१४॥

तस्मिन्दिने सपत्नीकान्द्विजाग्र्यान्वेदवित्तमान्।
सम्पूज्य परया भक्त्या धनं भूरि ददाति च॥१५॥

अतोऽत्र युवयोरैको नारीविभ्रमवेषधृक्।
एकस्तस्या पतिर्भूत्वा जायेतां विप्रदम्पती॥१६॥

युवां वधूवरौ भूत्वा प्राप्य सीमन्तिनीगृहम्।
भुक्त्वा भूरि धनं लब्ध्वा पुनर्यातं ममान्तिकम्॥१७॥

इति राज्ञा समादिष्टौ भीतौ द्विजकुमारकौ।
प्रत्यूचतुरिदं कर्म कर्तुं नौ जायते भयम्॥१८॥

देवतासु गुरौ पित्रोस्तथा राजकुलेषु च।
कौटिल्यमाचरन्मोहात्सद्यो नश्यति सान्वयः॥१९॥

कथमन्तर्गृहं राज्ञां छद्मना प्रविशेत्पुमान्।
गोप्यमानमपिच्छद्म कदाचित्ख्यातिमेष्यति॥२०॥

ये गुणाः साधिताः पूर्वं शीलाचारश्रुतादिभिः।
सद्यस्ते नाशमायान्ति कौटिल्यपथगामिनः॥२१॥

पापं निन्दा भयं वैरं चत्वार्येतानि देहिनाम्।
छद्ममार्गप्रपन्नानां तिष्ठन्त्येव हि सर्वदा॥२२॥

अत आवां शुभाचारौ जातौ च शुचिनां कुले।
वृत्तं धूर्तजनश्लाघ्यं नाश्रयावः कदाचन॥२३॥

राजोवाच

दैवतानां गुरूणां च पित्रोश्च पृथिवीपतेः।
शासनस्याप्यलङ्घ्यत्वात्प्रत्यादेशो न कर्हिचित्॥२४॥

एतैर्यद्यत्समादिष्टं शुभं वा यदि वाऽशुभम्।
कर्तव्यं नियतं भीतैरप्रमत्तैर्बुभूषुभिः॥२५॥

अहो वयं हि राजानः प्रजा यूयं हि सम्मताः।
राजाज्ञया प्रवृत्तानां श्रेयः स्यादन्यथा भयम्॥२६॥

अतो मच्छासनं कार्यं भवद्भ्यामविलम्बितम्।
इत्युक्तौ नरदेवेन तौ तथेत्यूचतुर्भयात्॥२७॥

सारस्वतस्य तनयं सामवन्तं नराधिपः।
स्त्रीरूपधारिणं चक्रे वस्त्राकल्पां जनादिभिः॥२८॥

स कृत्रिमोद्धूतकलत्रभावः
प्रयुक्तकर्णाभिरणाङ्गरागः ।
स्निग्धाञ्जनाक्षः स्पृहणीयरूपो
बभूव सद्यः प्रमदोत्तमाभः॥२९॥

तावुभौ दम्पती भूत्वा द्विजपुत्रौ नृपाज्ञया।
जग्मतुर्नैषधं देशं यद्वा तद्वा भवत्विति॥३०॥

उपेत्य राजसदनं सोमवारे द्विजोत्तमैः।
सपत्नीकैः कृतातिथ्यौ धौतपादौ बभूवतुः॥३१॥

सा राज्ञी ब्राह्मणान्सर्वानुपविष्टान्वरासने।
प्रत्येकमर्चयाश्चक्रे सपत्नीकान्द्विजोत्तमान्॥३२॥

तौ च विप्रसुतौ दृष्ट्वा प्राप्तौ कृतकदम्पती।
ज्ञात्वा किञ्चिद्विहस्याथ मेने गौरीमहेश्वरौ॥३३॥

आवाह्य द्विजमुख्येषु देवदेवं सदाशिवम्।
पत्नीष्वावाहयामास सा देवीं जगदम्बिकाम्॥३४॥

गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिर्धूपैर्नीराजनैरपि।
अर्चयित्वा द्विजश्रेष्ठान्नमश्चक्रे समाहिता॥३५॥

हिरण्मयेषु पात्रेषु पायसं घृतसंयुतम्।
शर्करामधुसंयुक्तं शाकैर्जुष्टं मनोरमैः॥३६॥

गन्धशाल्योदनैर्हृद्यैर्मोदकापूपराशिभिः ।

शष्कुलीभिश्च संयावैः कृसरैर्माषपक्कैः॥३७॥

तथान्यैरप्यसङ्घातैर्भक्ष्यैर्भोज्यैर्मनोरमैः ।

सुगन्धैः स्वादुभिः सूपैः पानीयैरपि शीतलैः॥३८॥

कृप्तमन्नं द्विजाग्रेभ्यः सा भक्त्या पर्यवेषयत्।

दध्योदनं निरुपमं निवेद्य समतोषयत्॥३९॥

भुक्तवत्सु द्विजाग्रेषु स्वाचान्तेषु नृपाङ्गना।

प्रणम्य दत्त्वा ताम्बूलं दक्षिणां च यथार्हतः॥४०॥

धेनूर्हिरण्यवासांसि रत्नस्रग्भूषणानि च।

दत्त्वा भूयो नमस्कृत्य विससर्ज द्विजोत्तमान्॥४१॥

तयोर्द्वयोर्भूसुरवर्यपुत्रयोः

एकस्तथा हैमवतीधियार्चितः।

एको महादेवधियाभिपूजितः

कृतप्रणामौ ययतुस्तदाज्ञया॥४२॥

सा तु विस्मृतपुम्भावा तस्मिन्नेव द्विजोत्तमे।

जातस्पृहा मदोत्सिक्ता कन्दर्पविवशाऽब्रवीत्॥४३॥

अयि^{४०} नाथ विशालाक्ष सर्वावयवसुन्दर।

तिष्ठ तिष्ठ क्व वा यासि मां न पश्यसि ते प्रियाम्॥४४॥

इदमग्रे वनं रम्यं सुपुष्पितमहाद्रुमम्।

अस्मिन्निर्हर्तुमिच्छामि त्वया सह यथासुखम्॥४५॥

इत्थं तयोक्तमाकर्ण्य पुरोऽगच्छद्विजात्मजः।

विचिन्त्य परिहासोक्तिं गच्छति स्म यथा पुरा॥४६॥

पुनरप्याह सा बाला तिष्ठ तिष्ठ क्व यास्यसि।
दुरुत्सहस्मरावेशां परिभोक्तुमुपेत्य माम्॥४७॥

परिष्वजस्व मां कान्तां पाययस्व तवाधरम्।
नाहं गन्तुं समर्थाऽस्मि स्मरबाणप्रपीडिता॥४८॥

इत्थमश्रुतपूर्वा तां निशम्य परिशङ्कितः।
आयान्तीं पृष्ठतो वीक्ष्य सहसा विस्मयं गतः॥४९॥

कैषा पद्मपलाशाक्षी पीनोन्नतपयोधरा।
कृशोदरी बृहच्छ्रोणी नवपल्लवकोमला॥५०॥

स एव मे सखा किं नु जात एव वराङ्गना।
पृच्छाम्येनमतः सर्वमिति सञ्चिन्त्य सोऽब्रवीत्॥५१॥

किमपूर्वं इवाऽऽभाषि सखे रूपगुणादिभिः।
अपूर्वं भाषसे वाक्यं कामिनीव समाकुला॥५२॥

यस्त्वं वेदपुराणज्ञो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः।
सारस्वतात्मजः शान्तः कथमेवं प्रभाषसे॥५३॥

इत्युक्ता सा पुनः प्राह नाहमस्मि पुमान्प्रभो।
नाम्ना सामवती बाला तवास्मि रतिदायिनी॥५४॥

यदि ते संशयः कान्त ममाङ्गानि विलोकय।
इत्युक्तः सहसा मार्गे रहस्येनां व्यलोकयत्॥५५॥

तामकृत्रिमधम्मिल्लां जवनस्तनशोभिनीम्।
सुरूपां वीक्ष्य कामेन किञ्चिद्वाकुलतामगात्॥५६॥

पुनः संस्तभ्य यत्नेन चेतसो विकृतिं बुधः।
मुहूर्तं विस्मयाविष्टो न किञ्चित्प्रत्यभाषत॥५७॥

सामवत्युवाच

गतस्ते संशयः कश्चित्कर्त्तव्यगच्छ भजस्व माम्।
पश्येदं विपिनं कान्त परस्त्रीसुरतोचितम्॥५८॥

सुमेधा उवाच

मैवं कथय मर्यादां मा हिंसीर्मदमत्तवत्।
आवां विज्ञातशास्त्रार्थो त्वमेवं भाषसे कथम्॥५९॥

अधीतस्य च शास्त्रस्य विवेकस्य कुलस्य च।
किमेष सदृशो धर्मो जारधर्मनिषेवणम्॥६०॥

न त्वं स्त्री पुरुषो विद्वान्जानीह्यात्मानमात्मना।
अयं स्वयङ्कृतोऽनर्थ आवाभ्यां यद्विचेष्टितम्॥६१॥

वञ्चयित्वाऽऽत्मपितरौ धूर्तराजानुशासनात्।
कृत्वा चानुचितं कर्म तस्यैतद् भुज्यते फलम्॥६२॥

सर्वं त्वनुचितं कर्म नृणां श्रेयोविनाशनम्।
यस्त्वं विप्रात्मजो विद्वान्गतः स्त्रीत्वं विगर्हितम्॥६३॥

मार्गं त्यक्त्वा गतोऽरण्यं नरो विध्येत कण्टकैः।
बलाद्धिंस्येत वा हिंस्त्रैर्यदा त्यक्तसमागमः॥६४॥

एवं विवेकमाश्रित्य तूष्णीमेहि स्वयं गृहम्।
देवद्विजप्रसादेन स्त्रीत्वं तव विलीयते॥६५॥

अथवा दैवयोगेन स्त्रीत्वमेव भवेत्तव।
पित्रा दत्ता मया साकं रंस्यसे वरवर्णिनि॥६६॥

अहो चित्रमहो दुःखमहो पापबलं महत्।
अहो राज्ञः प्रभावोऽयं शिवाराधनसम्भृतः॥६७॥

इत्युक्ताऽप्यसकृत् तेन सा वधूरतिविह्वला।
बलेन तं समालिङ्ग्य चुचुम्बाधरपल्लवम्॥६८॥

धर्षितोऽपि तया धीरः सुमेधा नूतनस्त्रियम्।
यत्नादानीय सदनं कृत्स्नं तत्र न्यवेदयत्॥६९॥

तदाकर्ण्यार्थं तौ विप्रौ कुपितौ शोकविह्वलौ।
ताभ्यां सह कुमाराभ्यां वैदर्भान्तिकमीयतुः॥७०॥

ततः सारस्वतः प्राह राजानं धूर्तचेष्टितम्।
राजन्ममात्मजं पश्य तव शासनयन्त्रितम्॥७१॥

एतौ तवाज्ञावशगौ चक्रतुः कर्म गर्हितम्।
मत्पुत्रस्तत्फलं भुङ्क्ते स्त्रीत्वं प्राप्य जुगुप्सितम्॥७२॥

अद्य मे सन्ततिर्नष्टा निराशाः पितरो मम।
नापुत्रस्य हि लोकोऽस्ति लुप्तपिण्डादिसंस्कृतेः॥७३॥

शिखोपवीतमजिनं मौञ्जीं दण्डं कमण्डलुम्।
ब्रह्मचर्योचितं चिह्नं विहायेमां दशां गतः॥७४॥

ब्रह्मसूत्रं च सावित्रीं स्नानं सन्ध्यां जपार्चनम्।
विसृज्य स्त्रीत्वमाप्तोऽस्य का गतिर्वद पार्थिव॥७५॥

त्वया मे सन्ततिर्नष्टा नष्टो वेदपथश्च मे।
एकात्मजस्य मे राजन्का गतिर्वद शाश्वती॥७६॥

इति सारस्वतेनोक्तं वाक्यमाकर्ण्य भूपतिः।
सीमन्तिन्याः प्रभावेण विस्मयं परमं गतः॥७७॥

अथ सर्वान्समाहूय महर्षीन्मितद्युतीन्।
प्रसाद्य प्रार्थयामास तस्य पुंस्त्वं महीपतिः॥७८॥

तेऽब्रुवन्नथ पार्वत्याः शिवस्य च समीहितम्।
तद्भक्तानां च माहात्म्यं कोऽन्यथा कर्तुमीश्वरः॥७९॥

अथ राजा भरद्वाजमादाय मुनिपुङ्गवम्।
ताभ्यां सह द्विजाग्राभ्यां तत्सुताभ्यां समन्वितः॥८०॥

अम्बिकाभवनं प्राप्य भरद्वाजोपदेशतः।
तां देवीं नियमैस्तीव्रैरुपास्ते स्म महानिशि॥८१॥

एवं त्रिरात्रं सुविसृष्टभोजनः
स पार्वतीध्यानरतो महीपतिः।
सम्यक्प्रणामैर्विविधैश्च संस्तवैः
गौरीं प्रपन्नार्तिहरामतोषयत्॥८२॥

ततः प्रसन्ना सा देवी भक्तस्य पृथिवीपतेः।
स्वरूपं दर्शयामास चन्द्रकोटिसमप्रभम्॥८३॥

अथाऽऽह गौरी राजानं किं ते ब्रूहि समीहितम्।
सोऽप्याह पुंस्त्वमेतस्य कृपया दीयतामिति॥८४॥

भूयोऽप्याह महादेवी मद्भक्तैः कर्म यत्कृतम्।
शक्यते नान्यथा कर्तुं वर्षायुतशतैरपि॥८५॥

राजोवाच

एकात्मजो हि विप्रोऽयं कर्मणा नष्टसन्ततिः।
कथं सुखं प्रपद्येत विना पुत्रेण तादृशः॥८६॥

देव्युवाच

तस्यान्यो मत्प्रसादेन भविष्यति सुतोत्तमः।
विद्या विनयसम्पन्नो दीर्घायुरमलाशयः॥८७॥

एषा सामवती नाम सुता तस्य द्विजन्मनः।
भूत्वा सुमेधसः पत्नी कामभोगेन युज्यताम्॥८८॥

इत्युक्त्वाऽन्तर्हिता देवी ते च राजपुरोगमाः।
गताः स्वं स्वं गृहं सर्वे चक्रुस्तच्छासने स्थितिम्॥८९॥

सोऽपि सारस्वतो विप्रः पुत्रं पूर्वसुतोत्तमम्।
 लेभे देव्याः प्रसादेन ह्यचिरादेव कालतः॥९०॥
 तां च सामवतीं कन्यां ददौ तस्मै सुमेधसे।
 तौ दम्पती चिरं कालं बुभुजाते परं सुखम्॥९१॥

सूत उवाच

इत्येष शिवभक्तायाः सीमन्तिन्या नृपस्त्रियाः।
 प्रभावः कथितः शम्भोर्माहात्म्यमपि वर्णितम्॥९२॥
 भूयोऽपि शिवभक्तानां प्रभावं विस्मयावहम्।
 समासाद्वर्णयिष्यामि श्रोतृणां मङ्गलायनम्॥९३॥

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराणे एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां तृतीये
 ब्रह्मोत्तरखण्डे सीमन्तिन्याः प्रभाववर्णनं नाम नवमोऽध्यायः॥

॥ श्री-स्कन्द-षष्ठी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — स्कन्द-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{४१} नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे
कार्तिक-शुक्लपक्षे षष्ठ्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४२} नक्षत्र ()^{४३} नाम योग (कौलव/तैतिल)
करण युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्यां षष्ठ्यां शुभतिथौ
श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-प्रीत्यर्थं प्रसाद-सिद्ध्यर्थम् अस्माकं
सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याणाम् अभिवृद्ध्यर्थं
धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्ट-
काम्यार्थसिद्ध्यर्थं मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां
ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं गो-भू-धन-धान्य-
पुत्र-पौत्रादि अनविच्छिन्न-सन्तति स्थिर-लक्ष्मी-कीर्ति-लाभ शत्रु-पराजयादि
सदभीष्ट-सिद्ध्यर्थं दिव्यज्ञान-सिद्ध्यर्थं

^{४१}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{४२}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{४३}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

यावच्छक्ति-ध्यानावाहनादि षोडशोपचारैः कल्पोक्त-प्रकारेण श्री-वल्ली-
देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-पूजाराधनं करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।
श्रीविघ्नेश्वराय नमः, यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ घण्टापूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुरु घण्टारवं तत्र देवताऽऽह्वानलाञ्छनम्॥

॥ कलशपूजा ॥

(कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अभ्यर्च्य)

गङ्गायै नमः। यमुनायै नमः। गोदावर्यै नमः। सरस्वत्यै नमः। नर्मदायै नमः।
सिन्धवे नमः। कावेर्यै नमः।

सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्।)

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्मपूजा ॥

आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

॥ मण्टप-पूजा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं मण्डूकादि-परतत्त्वात्म-पर्यन्त-पीठ-शक्ति-देवताभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शं शकुन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं रं रेवत्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं पूं पूताय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं मं महापूतायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं निं निशीथिन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं मां मालिन्यै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शीं शीतलायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं शुं शुद्धायै नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं विं विश्वतोमुख्यै नमः।

षोडशोपचार-पूजा

सिन्धूरारुणमिन्दुकान्तिवदनं केयूरहारादिभिः

दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं स्वर्गादिसौख्यप्रदम्।

अम्भोजाभयशक्तिकुक्कुटधरं रक्ताङ्गराकोज्ज्वलं

सुब्रह्मण्यमुपास्महे प्रणमतां भीतिप्रणाशोद्यतम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् ध्यायामि।

षड्वक्त्रं शिखिवाहनं त्रिनयनं चित्राम्बरालङ्कृतम्
 वज्रं शक्तिमसिं त्रिशूलमभयं खेटं धनुश्चक्रकम्।
 पाशं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं दोर्भिर्दधानं सदा
 ध्यायेद्दीप्सितसिद्धिदं शिवसुतं स्कन्दं सुराराधितम्॥

अस्मिन् कुम्भे सपरिवारं

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनम् आवाहयामि।

आवाहिता भव। संस्थापिता भव।

सन्निहिता भव। सन्निरुद्धा भव।

अवकुण्ठिता भव। सुप्रीता भव।

सुप्रसन्ना भव। वरदा भव।

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम्।

तावत् त्वं प्रीतिभावेन दीपेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते।

आसनं दिव्यमीशान दास्येयं परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, आसनं समर्पयामि।

यद्भक्तिलेशसम्पर्कात् परमानन्दविग्रह।

तस्मै ते शरणाजाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, पाद्यं समर्पयामि।

तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम्।

तापत्रयविनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

वेदानामपि वेद्याय देवानां देवतात्मने।

आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं प्रतिगृह्णीष्व देवेश॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पयोदधिघृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, क्षीरस्नानं समर्पयामि।

भागीरथी यमुना चैव गौतमी च सरस्वती।
तासां सुसलिलमादाय करोमि त्वामभिषेचनम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, स्नानं समर्पयामि।

स्नानान्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतात्मकम्।
उपवीतं प्रदास्यामि गृहाण परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

मुक्ता-माणिक्य-वैडूर्य-रत्न-हेमादि-निर्मितम्।
नानाभरणं दास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, नवमणि-मकुटादि
नानाभरणम् समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम् ।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, गन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्रा-कुङ्कुमं समर्पयामि।

अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ता सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृह्यतां परमेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

मन्दार-पारिजाताब्ज-केतक्युत्पल-पाटलैः ।

मल्लिका-जाति-वकुलैः पुष्पैस्त्वां पूजयाम्यहम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः,

मल्लिकादि-सर्वर्तु-पुष्पमालाः समर्पयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

- | | |
|-------------------------|----------------------|
| १. शरवणोद्भूताय नमः | — पादौ पूजयामि। |
| २. रौद्रेयाय नमः | — जङ्घे पूजयामि। |
| ३. सहस्रपदे नमः | — जानुनी पूजयामि। |
| ४. भयनाशनाय नमः | — ऊरू पूजयामि। |
| ५. बालग्रहाच्छाटनाय नमः | — मेढ्रं पूजयामि। |
| ६. भक्तपालनाय नमः | — गुह्यं पूजयामि। |
| ७. गुणनिधये नमः | — कटिं पूजयामि। |
| ८. महनीयाय नमः | — नाभिं पूजयामि। |
| ९. सर्वाभीष्टप्रदाय नमः | — हृदयं पूजयामि। |
| १०. विशालवक्षसे नमः | — वक्षस्थलं पूजयामि। |

| | |
|----------------------------------|---------------------------|
| ११. शक्तिधराय नमः | — हस्तान् पूजयामि। |
| १२. अभयप्रदानाय नमः | — बाहून् पूजयामि। |
| १३. नीलकण्ठ-तनयाय नमः | — कण्ठान् पूजयामि। |
| १४. पतित-पावनाय नमः | — चुबुकानि पूजयामि। |
| १५. पुरुष-श्रेष्ठाय नमः | — नासिकानि पूजयामि। |
| १६. कमललोचनाय नमः | — लोचनानि पूजयामि। |
| १७. पुण्यमूर्तये नमः | — श्रोत्राणि पूजयामि। |
| १८. कस्तूरी-तिलकाञ्चित-फालाय नमः | — ललाटानि पूजयामि। |
| १९. षडाननाय नमः | — मुखानि पूजयामि। |
| २०. त्रिलोकगुरवे नमः | — ओष्ठानि पूजयामि। |
| २२. सहस्रशीर्ष्णे नमः | — शिरांसि पूजयामि। |
| २३. भस्मोद्धूलित-विग्रहाय नमः | — सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। |

॥ षोडश-नामपूजा ॥

| | |
|----------------------------|-------------------------|
| १. ॐ ज्ञानशक्त्यात्मने नमः | ९. ॐ षण्मुखाय नमः |
| २. ॐ स्कन्दाय नमः | १०. ॐ कुक्कुटध्वजाय नमः |
| ३. ॐ अग्निभुवे नमः | ११. ॐ शक्तिधराय नमः |
| ४. ॐ बाहुलेयाय नमः | १२. ॐ गुहाय नमः |
| ५. ॐ गाङ्गेयाय नमः | १३. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः |
| ६. ॐ शरवणोद्धवाय नमः | १४. ॐ षण्मातुराय नमः |
| ७. ॐ कार्तिकेयाय नमः | १५. ॐ क्रौञ्चभिन्ने नमः |
| ८. ॐ कुमाराय नमः | १६. ॐ शिखिवाहनाय नमः |

॥ सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलि: ॥

स्कन्दाय नमः

गुहाय नमः

षण्मुखाय नमः

फालनेत्रसुताय नमः

प्रभवे नमः

पिङ्गलाय नमः

कृत्तिकासूनवे नमः

शिखिवाहाय नमः

द्विषङ्गुजाय नमः

द्विषण्णेत्राय नमः

शक्तिधराय नमः

पिशिताशप्रभञ्जनाय नमः

तारकासुरसंहारिणे नमः

रक्षोबलविमर्दनाय नमः

मत्ताय नमः

प्रमत्ताय नमः

उन्मत्ताय नमः

सुरसैन्यसुरक्षकाय नमः

देवसेनापतये नमः

प्राज्ञाय नमः

कृपालवे नमः

भक्तवत्सलाय नमः

उमासुताय नमः

शक्तिधराय नमः

कुमाराय नमः

क्रौञ्चदारणाय नमः

सेनानिने नमः

अग्निजन्मने नमः

विशाखाय नमः

शङ्करात्मजाय नमः

शिवस्वामिने नमः

गणस्वामिने नमः

सर्वस्वामिने नमः

सनातनाय नमः

अनन्तमूर्तये नमः

अक्षोभ्याय नमः

पार्वतीप्रियनन्दनाय नमः

गङ्गासुताय नमः

शरोद्भूताय नमः

आहूताय नमः

पावकात्मजाय नमः

जृम्भाय नमः

प्रजृम्भाय नमः

उञ्जृम्भाय नमः

कमलासनसंस्तुताय नमः

एकवर्णाय नमः

१०

२०

३०

४०

| | | | |
|------------------|----|-------------------------|----|
| द्विवर्णाय नमः | | अमेयात्मने नमः | |
| त्रिवर्णाय नमः | | तेजोयोनये नमः | |
| सुमनोहराय नमः | | अनामयाय नमः | |
| चतुर्वर्णाय नमः | ५० | परमेष्ठिने नमः | |
| पञ्चवर्णाय नमः | | परब्रह्मणे नमः | |
| प्रजापतये नमः | | वेदगर्भाय नमः | |
| अहस्पतये नमः | | विराट्पुत्राय नमः | |
| अग्निगर्भाय नमः | | पुलिन्दकन्याभर्त्रे नमः | |
| शमीगर्भाय नमः | | महासारस्वतावृताय नमः | ८० |
| विश्वरेतसे नमः | | आश्रिताखिलदात्रे नमः | |
| सुरारिघ्ने नमः | | चोरघ्नाय नमः | |
| हरिद्वर्णाय नमः | | रोगनाशनाय नमः | |
| शुभकराय नमः | | अनन्तमूर्तये नमः | |
| वटवे नमः | ६० | आनन्दाय नमः | |
| पटुवेषभृते नमः | | शिखण्डिने नमः | |
| पूष्णे नमः | | कृतकेतनाय नमः | |
| गभस्तये नमः | | डम्भाय नमः | |
| गहनाय नमः | | परमडम्भाय नमः | |
| चन्द्रवर्णाय नमः | | महाडम्भाय नमः | ९० |
| कलाधराय नमः | | वृषाकपये नमः | |
| मायाधराय नमः | | कारणोत्पत्ति-देहाय नमः | |
| महामायिने नमः | | कारणातीत-विग्रहाय नमः | |
| कैवल्याय नमः | | अनीश्वराय नमः | |
| शङ्करात्मजाय नमः | ७० | अमृताय नमः | |
| विश्वयोनये नमः | | प्राणाय नमः | |

प्राणायामपरायणाय नमः

विरुद्धहन्त्रे नमः

वीरघ्नाय नमः

रक्तश्यामगलाय नमः

१००

सुब्रह्मण्याय नमः

गुहाय नमः

प्रीताय नमः

ब्रह्मण्याय नमः

ब्राह्मणप्रियाय नमः

वंशवृद्धिकराय नमः

वेदवेद्याय नमः

अक्षयफलप्रदाय नमः

॥ इति श्री-सुब्रह्मण्याष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ वल्ली अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

महावल्ल्यै नमः

वन्द्यायै नमः

वनवासायै नमः

वरलक्ष्म्यै नमः

वरप्रदायै नमः

वाणीस्तुतायै नमः

वीतमोहायै नमः

वामदेवसुतप्रियायै नमः

वैकुण्ठतनयायै नमः

वर्यायै नमः

१०

वनेचरसमादृतायै नमः

दयापूर्णायै नमः

दिव्यरूपायै नमः

दारिद्र्यभयनाशिन्यै नमः

देवस्तुतायै नमः

दैत्यहन्त्र्यै नमः

दोषहीनायै नमः

दयाम्बुधये नमः

दुःखहन्त्र्यै नमः

दुष्टदूरायै नमः

२०

दुरितघ्न्यै नमः

दुरासदायै नमः

नाशहीनायै नमः

नागनुतायै नमः

नारदस्तुतवैभवायै नमः

लवलीकुञ्जसम्भूतायै नमः

ललितायै नमः

ललनोत्तमायै नमः

| | | | |
|-----------------------------|----|--------------------------|----|
| शान्तदोषायै नमः | | मल्लिकाकुसुमप्रियायै नमः | |
| शर्मदात्र्यै नमः | ३० | चन्द्रवक्रायै नमः | |
| शरजन्मकुटुम्बिन्यै नमः | | चारुरूपायै नमः | |
| पद्मिन्यै नमः | | चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः | |
| पद्मवदनायै नमः | | गिरिवासायै नमः | |
| पद्मनाभसुतायै नमः | | गुणनिधये नमः | |
| परायै नमः | | गतावन्यायै नमः | ६० |
| पूर्णरूपायै नमः | | गुहप्रियायै नमः | |
| पुण्यशीलायै नमः | | कलिहीनायै नमः | |
| प्रियङ्गुवनपालिन्यै नमः | | कलारूपायै नमः | |
| सुन्दर्यै नमः | | कृत्तिकासुतकामिन्यै नमः | |
| सुरसंस्तुतायै नमः | ४० | गतदोषायै नमः | |
| सुब्रह्मण्यकुटुम्बिन्यै नमः | | गीतगुणायै नमः | |
| मान्यायै नमः | | गङ्गाधरसुतप्रियायै नमः | |
| मनोहरायै नमः | | भद्ररूपायै नमः | |
| मायायै नमः | | भगवत्यै नमः | |
| महेश्वरसुतप्रियायै नमः | | भाग्यदायै नमः | ७० |
| कुमार्यै नमः | | भवहारिण्यै नमः | |
| करुणापूर्णायै नमः | | भवहीनायै नमः | |
| कार्तिकेयमनोहरायै नमः | | भव्यदेहायै नमः | |
| पद्मनेत्रायै नमः | | भवात्मजमनोहरायै नमः | |
| परानन्दायै नमः | ५० | सौम्यायै नमः | |
| पार्वतीसुतवल्लभायै नमः | | सर्वेश्वर्यै नमः | |
| महादेव्यै नमः | | सत्यायै नमः | |
| महामायायै नमः | | साध्यै नमः | |

सिद्धसमर्चितायै नमः

हानिहीनायै नमः

हरिसुतायै नमः

हरसूनुमनःप्रियायै नमः

कल्याण्यै नमः

कमलायै नमः

कल्यायै नमः

कुमारसुमनोहरायै नमः

जन्महीनायै नमः

जन्महृत्र्यै नमः

जनार्दनसुतायै नमः

जयायै नमः

रमायै नमः

रामायै नमः

रम्यरूपायै नमः

८०

राज्ञ्यै नमः

राजवरादृतायै नमः

नीतिज्ञायै नमः

निर्मलायै नमः

नित्यायै नमः

नीलकण्ठसुतप्रियायै नमः

शिवरूपायै नमः

१००

सुधाकारायै नमः

शिखिवाहनवल्लभायै नमः

व्याधात्मजायै नमः

व्याधिहृत्र्यै नमः

विविधागमसंस्तुतायै नमः

हर्षदात्र्यै नमः

हरिभवायै नमः

हरसूनुप्रियङ्गनायै नमः

९०

॥ इति श्री-वल्लभष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

देवसेनायै नमः

देवलोकजनन्यै नमः

दिव्यसुन्दर्यै नमः

देवपूज्यायै नमः

दयारूपायै नमः

दिव्याभरणभूषितायै नमः

दारिद्र्यनाशिन्यै नमः

देव्यै नमः

दिव्यपङ्कजधारिण्यै नमः

दुःस्वप्ननाशिन्यै नमः

१०

दुष्टशमन्यै नमः
 दोषवर्जितायै नमः
 पीताम्बरायै नमः
 पद्मवासायै नमः
 परानन्दायै नमः
 परात्परायै नमः
 पूर्णायै नमः
 परमकल्याण्यै नमः
 प्रकटायै नमः
 पापनाशिन्यै नमः २०
 प्राणेश्वर्यै नमः
 परायै शक्त्यै नमः
 परमायै नमः
 परमेश्वर्यै नमः
 महावीर्यायै नमः
 महाभोगायै नमः
 महापूज्यायै नमः
 महाबलायै नमः
 माहेन्द्र्यै नमः
 महत्यै नमः ३०
 मायायै नमः
 मुक्ताहारविभूषितायै नमः
 ब्रह्मानन्दायै नमः
 ब्रह्मरूपायै नमः
 ब्रह्माण्यै नमः

ब्रह्मपूजितायै नमः
 कार्तिकेयप्रियायै नमः
 कान्तायै नमः
 कामरूपायै नमः
 कलाधरायै नमः ४०
 विष्णुपूज्यायै नमः
 विश्ववेद्यायै नमः
 वेदवेद्यायै नमः
 वज्रिजातायै नमः
 वरप्रदायै नमः
 विशाखकान्तायै नमः
 विमलायै नमः
 विशालाक्ष्यै नमः
 सत्यसन्धायै नमः
 सत्प्रभावायै नमः ५०
 सिद्धिदायै नमः
 स्कन्दवल्लभायै नमः
 सुरेश्वर्यै नमः
 सर्ववन्द्यायै नमः
 सुन्दर्यै नमः
 साम्यवर्जितायै नमः
 हतदैत्यायै नमः
 हानिहीनायै नमः
 हर्षदात्र्यै नमः
 हतासुरायै नमः ६०

हितकर्त्र्यै नमः
 हीनदोषायै नमः
 हेमाभायै नमः
 हेमभूषणायै नमः
 लयहीनायै नमः
 लोकवन्द्यायै नमः
 ललितायै नमः
 ललनोत्तमायै नमः
 लम्बवामकरायै नमः
 लभ्यायै नमः
 लज्जाढ्यायै नमः
 लाभदायिन्यै नमः
 अचिन्त्यशक्त्यै नमः
 अचलायै नमः
 अचिन्त्यरूपायै नमः
 अक्षरायै नमः
 अभयायै नमः
 अम्बुजाक्ष्यै नमः
 अमराराध्यायै नमः
 अभयदायै नमः
 असुरभीतिदायै नमः
 शर्मदायै नमः
 शक्रतनयायै नमः
 शङ्करात्मजवल्लभायै नमः

७०

८०

शुभायै नमः
 शुभप्रदायै नमः
 शुद्धायै नमः
 शरणागतवत्सलायै नमः
 मयूरवाहनदयितायै नमः
 महामहिमशालिन्यै नमः
 मदहीनायै नमः
 मातृपूज्यायै नमः
 मन्मथारिसुतप्रियायै नमः
 गुणपूर्णायै नमः
 गणाराध्यायै नमः
 गौरीसुतमनःप्रियायै नमः
 गतदोषायै नमः
 गतावद्यायै नमः
 गङ्गाजातकुटुम्बिन्यै नमः
 चतुरायै नमः
 चन्द्रवदनायै नमः
 चन्द्रचूडभवप्रियायै नमः
 रम्यरूपायै नमः
 रमावन्द्यायै नमः
 रुद्रसूनुमनःप्रियायै नमः
 मङ्गलायै नमः
 मधुरालापायै नमः
 महेशतनयप्रियायै नमः

९०

१००

॥इति श्री-देवसेना अष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः,
नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

दशाङ्गं च पटीरं च एला-कुङ्कुम-संयुतम्।
धूपं गृहाण देवेश सुब्रह्मण्य नमोऽस्तु ते॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, धूपम् आग्रापयामि।

इन्द्रर्कवहिनेत्राय देवसेनापतये नमः।
घृतवर्तिसुसंयुक्तं दीपोऽयम् अवलोक्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, दीपं दर्शयामि।
धूप-दीपानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि।

सत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, () महानैवेद्यं निवेदयामि।
मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि। हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। गण्डूषं
समर्पयामि। पुनः हस्त-प्रक्षालनं समर्पयामि। पाद-प्रक्षालनं समर्पयामि।
आचमनीयं समर्पयामि।

पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम्।
कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं देवदेव सूर्यकोटि-समप्रभ।
अहं भक्त्या प्रदास्यामि स्वीकुरुष्व दयानिधे॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।
पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि।

सर्व-पापौघ-विध्वंस साक्षाद्धर्मस्वरूपक।
पुष्पाञ्जलिं प्रदास्यामि गृहाण भुवनेश्वर॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
स्वर्णपुष्पं समर्पयामि।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण-पदे पदे॥

प्रदक्षिणं कृत्वा।

षण्मुखं पार्वतीपुत्रं क्रौञ्चशैलविमर्दनम्।
देवसेनापतिं देवं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

तारकासुर-हन्तारं मयूरोपरि संस्थितम्।
शक्तिपाणिं च देवेशं स्कन्दं वन्दे शिवात्मजम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, प्रदक्षिण-नमस्कारान्
समर्पयामि।

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम्
नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय।
नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम्
पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः, छत्रं समर्पयामि।
चामरयुगलं वीजयामि।

दर्पणं दर्शयामि। गीतं श्रावयामि।
 नृत्यं दर्शयामि। आन्दोलिकाम् आरोहयामि।
 गजम् आरोहयामि। अश्वम् आरोहयामि।
 रथम् आरोहयामि। समस्त-राजोपचार-देवोपचार-पूजाः समर्पयामि।

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले
 श्री-सुब्रह्मण्य-पूजान्ते अर्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

दत्त्वाऽर्घ्यं कार्तिकेयाय स्थित्वा वै दक्षिणामुखः।
 दध्ना घृतोदकैः पुष्पैर्मन्त्रेणानेन सुव्रत॥

सप्तर्षिदारज स्कन्द स्वाहापतिसमुद्भव।
 रुद्रार्यमाग्निज विभो गङ्गागर्भ नमोऽस्तु ते।
 प्रीयतां देवसेनानीः सम्पादयतु हृद्गतम्॥

श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिने नमः,
 इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्॥

दत्त्वा विप्राय चाऽऽत्मानं यच्चान्यदपि विद्यते।
 पश्चाद्भुङ्क्ते त्वसौ रात्रौ भूमिं कृत्वा तु भाजनम्॥

[श्रीभविष्ये महापुराणे शतार्धसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मेपर्वणि पञ्चमीकल्पे
 षष्ठीकल्पवर्णनं नाम एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः॥]

अनेन अर्घ्यप्रदानेन भगवान् सर्वात्मकः
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
 अनन्तपुण्यफलदम् अतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

स्कन्दषष्ठी-पुण्यकाले अस्मिन् मया क्रियमाण
 श्री-सुब्रह्मण्यपूजायां यद्देयमुपायनदानं तत्प्रत्याम्नायार्थं हिरण्यं
 श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीतिं कामयमानः
 मनसोद्दिष्टाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे नमः न मम।
 अनया पूजया श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्य-स्वामिनः प्रीयन्ताम्।
 कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥
 ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ बृन्दावनपूजा (श्री-तुलसी-विष्णु-पूजा) ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।
पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाघ्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — तुलसी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

शुक्लाम्बरधरं + शान्तये + श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे + तिथौ तुलसी
महाविष्णु प्रसादसिद्ध्यर्थं तुलसी महाविष्णुपूजां करिष्ये। इति सङ्कल्प्य
विघ्नेशमुद्वास्य कलशपूजां कृत्वा, तुलसीं विष्णुं च ध्यायेत्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()-नाम संवत्सरे दक्षिणायने शरद्-ऋतौ तुला/वृश्चिक-मासे कार्तिक-
शुक्ल-पक्षे द्वादश्यां शुभतिथौ ()-वासरयुक्तायां ()-नक्षत्रयुक्तायाम्
()-योगयुक्तायां ()-करणयुक्तायाम् एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम्
अस्यां द्वादश्यां शुभतिथौ

अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभि-
वृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम्
इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां
ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां
सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्रीमहाविष्णु-तुलसी-
प्रीत्यर्थं यावच्छक्ति ध्यानावाहनादि षोडशोपचार-श्रीमहाविष्णु-तुलसी-पूजां
करिष्ये। तदङ्गं कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।
(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥
पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
 ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।
 अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥
 सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायामि तुलसीं देवीं श्यामां कमललोचनाम्।
प्रसन्नवदनाम्भोजां वरदाम् अभयप्रदाम्॥

अस्मिन् क्षुपे तुलसीं ध्यायामि।

ध्यायामि विष्णुं वरदं तुलसीप्रियवल्लभम्।
पीताम्बरं पद्मनेत्रं वासुदेवं वरप्रदम्॥

अस्मिन् आमलक-स्कन्धे महाविष्णुं ध्यायामि।

वासुदेवप्रिये देवि सर्वदेवस्वरूपिणि।
आगच्छ पूजाभवने सदा सन्निहिता भव॥

आगच्छाऽऽगच्छ देवेश तेजोराशे जगत्पते।
क्रियमाणां मया पूजां वासुदेव गृहाण भोः॥

तुलसीविष्णू आवाहयामि।

नानारत्नसमायुक्तं कार्तस्वरविभूषितम्।
आसनं कृपया विष्णो तुलसि प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

नानानदीसमानीतं सुवर्णकलशस्थितम्।
पाद्यं गृहाण तुलसि पापं मे विनिवारय॥

गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो वासुदेव मयाऽऽहृतम्।
 तोयमेतत्सुखस्पर्शं पादार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं गृहाण देवि त्वं अच्युतप्रियवल्लभे।
 अक्षतादिसमायुक्तं अक्षय्यफलदायिनि॥
 नमस्ते देवदेवेश नमस्ते कमलापते।
 नमस्ते सर्वविनुत गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

गृहाणाचमनार्थाय विष्णुवक्षः स्थलालये।
 स्वच्छं तोयमिदं देवि सर्वपापविनाशिनि॥
 कर्पूरवासितं तोयं गङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
 आचम्यतां जगन्नाथ मया दत्तं च भक्तितः॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं गृहाणेमं मधुसूदनवल्लभे।
 मधुदध्याज्यसंयुक्तं महापापविनाशिनि॥
 दध्याज्यमधुसंयुक्तं मधुपर्कं मयाऽऽहृतम्।
 गृहाण विष्णो वरद लक्ष्मीकान्त नमोऽस्तु ते॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पञ्चामृतं गृहाणेदं पञ्चपातकनाशिनि।
 दधिक्षीरसमायुक्तं दामोदरकुटुम्बिनि॥
 मध्वाज्यशर्करायुक्तं दधिक्षीरसमन्वितम्।
 पञ्चामृतं गृहाणेदं भक्तानामिष्टदायक॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पञ्चामृतं समर्पयामि।

गङ्गागोदावरीकृष्णातुङ्गादिभ्यः समाहृतम्।
सलिलं देवि तुलसि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गङ्गा कृष्णा च यमुना नर्मदा च सरस्वती।
तुङ्गा गोदावरी वेणी क्षिप्रा सिन्धुर्घटप्रभा॥

तापी पयोष्णी सरयूस्ताभ्यः स्नानार्थमाहृतम्।
तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानीयं गृह्यतां हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पीताम्बरमिदं दिव्यं पातकव्रजनाशिनि।
पीताम्बरप्रिये देवि परिधत्स्व परात्परे॥
सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
वाससी प्रतिगृह्णातु लक्ष्मीजानिरधोक्षजः॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

भूषणानि वरार्हाणि गृहीतं तुलसीश्वर।
किरीटहारकेयूरकटकानि हरेऽमृते॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, आभरणानि समर्पयामि।

चन्दनागरुकर्पूरकस्तूरीकुङ्कुमान्वितम्।
गन्धं स्वीकुरुतं देवौ रमेशहरिवल्लभे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, गन्धान् धारयामि।

मल्लिकाकुन्दमन्दारजाजीवकुलचम्पकैः।
शतपत्रैश्च कह्लारैरर्चये तुलसीहरी॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अङ्ग-पूजा ॥

| | | |
|------------------|--------------------|---------------------------|
| बृन्दायै | अच्युताय नमः | - पादौ पूजयामि। |
| तुलस्यै | अनन्ताय नमः | - गुल्फौ पूजयामि। |
| जनार्दनप्रियायै | तुलसीकान्ताय नमः | - जङ्घे पूजयामि। |
| जन्मनाशिन्यै | गङ्गाधरपदाय नमः | - जानुनी पूजयामि। |
| उत्तमायै | उत्तमाय नमः | - ऊरू पूजयामि। |
| कमलाक्ष्यै | कमलाक्षाय नमः | - कटिं पूजयामि। |
| नारायण्यै | नारायणाय नमः | - नाभिं पूजयामि। |
| उन्नतायै | उन्नताय नमः | - उदरं पूजयामि। |
| वरदायै | वरदाय नमः | - वक्षः पूजयामि। |
| स्तव्यायै | स्तव्याय नमः | - स्तनौ कौस्तुभं पूजयामि। |
| चतुर्भुजायै | चतुर्भुजाय नमः | - भुजान् पूजयामि। |
| कम्बुकण्ठ्यै | वनमालिने नमः | - कण्ठं पूजयामि। |
| कल्मषघ्न्यै | कल्मषघ्नाय नमः | - कर्णौ पूजयामि। |
| मुनिप्रियायै | मुनिप्रियाय नमः | - नेत्रे पूजयामि। |
| शुभप्रदायै | शुभप्रदाय नमः | - शिरः पूजयामि। |
| सर्वार्थदायिन्यै | सर्वार्थदायिने नमः | - सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि। |

॥ चतुर्विंशति नामपूजा ॥

- | | |
|--------------------|-----------------------|
| १. ॐ केशवाय नमः | ६. ॐ मधुसूदनाय नमः |
| २. ॐ नारायणाय नमः | ७. ॐ त्रिविक्रमाय नमः |
| ३. ॐ माधवाय नमः | ८. ॐ वामनाय नमः |
| ४. ॐ गोविन्दाय नमः | ९. ॐ श्रीधराय नमः |
| ५. ॐ विष्णवे नमः | १०. ॐ हृषीकेशाय नमः |

११. ॐ पद्मनाभाय नमः
 १२. ॐ दामोदराय नमः
 १३. ॐ सङ्कर्षणाय नमः
 १४. ॐ वासुदेवाय नमः
 १५. ॐ प्रद्युम्नाय नमः
 १६. ॐ अनिरुद्धाय नमः
 १७. ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

१८. ॐ अधोक्षजाय नमः
 १९. ॐ नृसिंहाय नमः
 २०. ॐ अच्युताय नमः
 २१. ॐ जनार्दनाय नमः
 २२. ॐ उपेन्द्राय नमः
 २३. ॐ हरये नमः
 २४. ॐ श्रीकृष्णाय नमः

॥ तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

तुलस्यै नमः
 पावन्यै नमः
 पूज्यायै नमः
 वृन्दावननिवासिन्यै नमः
 ज्ञानदात्र्यै नमः
 ज्ञानमय्यै नमः
 निर्मलायै नमः
 सर्वपूजितायै नमः
 सत्यै नमः
 पतिव्रतायै नमः
 वृन्दायै नमः
 क्षीराब्धिमथनोद्भवायै नमः
 कृष्णवर्णायै नमः
 रोगहन्त्र्यै नमः
 त्रिवर्णायै नमः

१०

सर्वकामदायै नमः
 लक्ष्मीसख्यै नमः
 नित्यशुद्धायै नमः
 सुदत्यै नमः
 भूमिपावन्यै नमः
 हरिद्रात्रैकनिरतायै नमः
 हरिपादकृतालयायै नमः
 पवित्ररूपिण्यै नमः
 धन्यायै नमः
 सुगन्धिन्यै नमः
 अमृतोद्भवायै नमः
 सुरूपायै आरोग्यदायै नमः
 तुष्टायै नमः
 शक्तित्रितयरूपिण्यै नमः
 देव्यै नमः

२०

३०

देवर्षिसंस्तुत्यायै नमः
 कान्तायै नमः
 विष्णुमनःप्रियायै नमः
 भूतवेतालभीतिघ्न्यै नमः
 महापातकनाशिन्यै नमः
 मनोरथप्रदायै नमः
 मेधायै नमः
 कान्त्यै नमः
 विजयदायिन्यै नमः
 शङ्खचक्रगदापद्मधारिण्यै नमः ४०
 कामरूपिण्यै नमः
 अपवर्गप्रदायै नमः
 श्यामायै नमः
 कृशमध्यायै नमः
 सुकेशिन्यै नमः
 वैकुण्ठवासिन्यै नमः
 नन्दायै नमः
 बिम्बोष्ठ्यै नमः
 कोकिलस्वरायै नमः
 कपिलायै नमः ५०
 निम्नगाजन्मभूम्यै नमः
 आयुष्यदायिन्यै नमः
 वनरूपायै नमः
 दुःखनाशिन्यै नमः
 अविकारायै नमः

चतुर्भुजायै नमः
 गरुत्मद्वाहनायै नमः
 शान्तायै नमः
 दान्तायै नमः
 विघ्ननिवारिण्यै नमः ६०
 श्रीविष्णुमूलिकायै नमः
 पुष्ट्यै नमः
 त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
 महाशक्त्यै नमः
 महामायायै नमः
 लक्ष्मीवाणीसुपूजितायै नमः
 सुमङ्गल्यर्चनप्रीतायै नमः
 सौमङ्गल्यविवर्धिन्यै नमः
 चातुर्मास्योत्सवाराध्यायै नमः
 विष्णुसान्निध्यदायिन्यै नमः ७०
 उत्थानद्वादशीपूज्यायै नमः
 सर्वदेवप्रपूजितायै नमः
 गोपीरतिप्रदायै नमः
 नित्यायै नमः
 निर्गुणायै नमः
 पार्वतीप्रियायै नमः
 अपमृत्युहरायै नमः
 राधाप्रियायै नमः
 मृगविलोचनायै नमः
 अम्लानायै नमः ८०

हंसगमनायै नमः
 कमलासनवन्दितायै नमः
 भूलोकवासिन्यै नमः
 शुद्धायै नमः
 रामकृष्णादिपूजितायै नमः
 सीतापूज्यायै नमः
 राममनःप्रियायै नमः
 नन्दनसंस्थितायै नमः
 सर्वतीर्थमय्यै नमः
 मुक्तायै नमः
 लोकसृष्टिविधायिन्यै नमः
 प्रातर्दृश्यायै नमः
 ग्लानिहृत्र्यै नमः
 वैष्णव्यै नमः

९०

सर्वसिद्धिदायै नमः
 नारायण्यै नमः
 सन्ततिदायै नमः
 मूलमृद्धारिपावन्यै नमः
 अशोकवनिकासंस्थायै नमः
 सीताध्यातायै नमः
 निराश्रयायै नमः
 गोमतीसरयूतीररोपितायै नमः
 कुटिलालकायै नमः
 अपात्रभक्ष्यपापघ्न्यै नमः
 दानतोयविशुद्धिदायै नमः
 श्रुतिधारणसुप्रीतायै नमः
 शुभायै नमः
 सर्वेष्टदायिन्यै नमः

१००

१०८

॥इति श्री-तुलस्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्री-तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नानाविध-परिमल-पत्र-पुष्पाणि समर्पयामि।

धूपं गृहाण वरदे दशाङ्गेन सुवासितम्।
 तुलस्यमृतसम्भूते धूतपापे नमोऽस्तु ते॥

दशाङ्गो गुग्गुलूपेतः सुगन्धः सुमनोहरः।
 श्रीवत्साङ्ग हृषीकेश धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

वर्तित्रययुतं दीप्तं गोघृतेन समन्वितम्।
 दीपं देवि गृहाणेमं दैत्यारिहृदयस्थिते॥

साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं दीप्तं देव जनार्दन।
 गृहाण मङ्गलं दीपं त्रैलोक्यतिमिरं हर॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

नानाभक्ष्यैश्च भोज्यैश्च फलैः क्षीरघृतादिभिः।
 नैवेद्यं गृह्यतां युक्तं नारायणमनःप्रिये॥
 भोज्यं चतुर्विधं चोष्यभक्ष्यसूपफलैर्युतम्।
 दधिमध्वाज्यसंयुक्तं गृह्यतामम्बुजेक्षण॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, महानैवेद्यं निवेदयामि।

कर्पूरचूर्णताम्बूलवल्लीपूगफलैर्युतम् ।
 जगतः पितरावेतत्ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनं गृहाणेदं कर्पूरैः कलितं मया।
 तुलस्यमृतसम्भूते गृहाण हरिवल्लभे॥
 चन्द्रादित्यौ च नक्षत्रं विद्युदग्निस्त्वमेव च।
 त्वमेव सर्वज्योतींषि कुर्यां नीराजनं हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, कर्पूर-नीराजनं दर्शयामि।

प्रकृष्टपापनाशाय प्रकृष्टफलसिद्धये।
 युवां प्रदक्षिणी कुर्वे तुलसीशौ प्रसीदतम्॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, प्रदक्षिणं समर्पयामि।

नमोऽस्तु पीयूषसमुद्भवायै
 नमोऽस्तु पद्माक्षमनः प्रियायै।
 नमोऽस्तु जन्माप्यय-भीतिहृत्र्यै
 नमस्तुलस्यै जगतां जनन्यै॥

शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
 गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागत(ता)म्॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नमस्कारान् समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिं गृहाणेदं पङ्कजाक्षस्य वल्लभे।
 नमस्ते देवि तुलसि नताभीष्टफलप्रदे॥
 मन्दारनीलोत्पलकुन्दजाती पुन्नागमल्लीकरवीरपद्मेः।
 पुष्पाञ्जलिं ते जगदेकबन्धो हरे त्वदङ्घ्रौ विनिवेशयामि॥
 तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

आयुरारेग्यमतुलमैश्वर्यं पुत्रसम्पदः।
 देहि मे सकलान्कामान् तुलस्यमृतसम्भवे॥
 नमो नमः सुखवरपूजिताङ्घ्रये
 नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने।
 नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये
 नमो नमः परमदयानिधे हरे॥

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, प्रार्थनाः समर्पयामि।

नमस्ते देवि तुलसि नमस्ते मोक्षदायिनि।
 इदमर्घ्यं प्रदास्यामि सुप्रीता वरदा भव॥
 लक्ष्मीपते नमस्तुभ्यं तुलसीदामभूषण।
 इदमर्घ्यं प्रदास्यामि गृहाण गरुडध्वज॥

श्री-तुलस्यै महाविष्णवे च नमः, इदमर्घ्यमिदमर्घ्यमिदमर्घ्यम्।

नमस्ते देवि तुलसि माधवेन समन्विता।
 प्रयच्छ सकलान्कामान् द्वादश्यां पूजिता मया॥
 अनेन पूजनेन श्री-तुलसी-विष्णू प्रीयेताम्।

तुलसीविवाहविधिः

(इक्षुदण्डनिर्मिते पुष्पाद्यलङ्कृते मण्टपे विवाहः।

तुलसी हरिद्राचन्दनकुङ्कुमपुष्पाद्यालङ्कृता स्वीयवेद्यां प्रथमं पूज्यते।

शुक्लाम्बरधरं + परमेश्वरप्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते + शुभतिथौ तुलस्याः
विष्णुना सह विवाहोत्सवमाचरिष्ये।

(अप उपस्पृश्य)

विष्णुं विवाहार्थे वरार्ह-वस्त्रालङ्करण-पुष्पमालादिभिः अलङ्कृत्य वाद्यघोषगीतपुरस्सरं
विवाहमण्टपमानीय कर्ता नारिकेल-कदलीफलताम्बूलादिभिः उपसृत्य
मण्टपे आसने प्रतिष्ठाप्य प्रार्थयेत्।

आगच्छ भगवन् देव अर्हयिष्यामि केशव।

तुभ्यं ददामि तुलसीं प्रतीच्छन् कामदो भव॥

आसनमिदं, अलङ्कियताम्। पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि।
हरिद्रालेप-मङ्गलविधिं समर्पयामि। तैलाभ्यङ्गपूर्वकं मङ्गलस्नानं समर्पयामि।
वस्त्रालङ्करणपुष्पमालाः समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धोपरि हरिद्राकुङ्कुमं
समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

तुलसी-विष्णुभ्यां नमः, नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

(वधूवरौ परस्परमभिमुखौ स्थापयित्वा)

... गोत्रोद्भवां ... शर्मणः प्रपौत्रीं, ... शर्मणः पौत्रीं, ... शर्मणः
पुत्रीं तुलसीनाम्नीम् इमां कन्यकां अजाय परब्रह्मणे श्री-विष्णवे वराय
प्रतिपादयामि। (त्रिः उक्त्वा)

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक।
इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥

पार्वती-बीजसम्भूतां बृन्दाभस्मनि संस्थिताम्।
अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥

पयोधृतैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्धितां मया।
त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥

वाद्यघोष-वेदस्वस्तिवाचन-मङ्गलाशीर्भिः उभौ मेलयित्वा गीतादिभिः
सन्तोषयेत्।

सायमपि पुनः पूजां कृत्वा स्त्रीधनं यथाशक्तिं दद्यात्।

विवाहोत्सवपूर्तो—

वैकुण्ठं गच्छ भगवन् तुलस्या सहितः प्रभो।
मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ जनार्दन॥

इति उभौ अभ्यनुज्ञापयेत् मङ्गलारार्तिकेन सह। तुलसीं यथापूर्वं रक्षेत्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।



॥ श्रीसूर्य-नमस्कारः ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः॑ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्री-सूर्यनारायण-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिके प्रभवादि षष्टिसंवत्सराणां मध्ये ()
नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने () -ऋतौ () मासे शुक्लपक्षे
() शुभतिथौ (इन्दु/भौम/बुध/गुरु/भृगु/स्थिर/भानु) वासरयुक्तायाम्
() नक्षत्रयुक्तायां () -योग () -करण-युक्तायां च एवं गुण-
विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां
क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्ष-
चतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभिवृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम
इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहा-
पातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां
सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-
सूर्यनारायणप्रीत्यर्थं श्री-सूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं श्री-सूर्यनारायण-पूज-
पुरस्सरं तृचकल्पेन अरुणप्रश्नेन च श्री-सूर्यनमस्कारान् करिष्ये। तदङ्गं
कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। (गणपति-प्रसादं शिरसा
गृहीत्वा)

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ कुम्भे वरुण-सूर्य-नारायण-पूजा ॥

ॐ। इ॒मं मे॑ वरुण॒ श्रुधी॒ हव॑म॒द्या च॑ मृ॒डय। त्वा॒मव॑स्युराच॑के॥ तत्त्वा॑
या॒मि ब्र॑ह्म॒णा व॑न्द॒मान॒स्तदा॑शास्ते॒ यज॑मानो ह॒विर्भिः॑। अहे॑ड॒मानो वरु॑णे॒ह
बो॒ध्युरु॑श॒स॒ मा न॒ आयुः॑ प्रमो॑षीः॥

अस्मिन् कुम्भे सकल-तीर्थाधिपतिं वरुणं ध्यायामि। वरुणमावाहयामि।
वरुणाय नमः। आसनं समर्पयामि।

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, स्नानं, स्नानानन्तरमाचमनीयं, वस्त्रं, उपवीतं, गन्धं,
गन्धोपरि अक्षतान्, पुष्पाणि समर्पयामि।

वरुणाय नमः। प्रचेतसे नमः। सूरूपिणे नमः। अपां पतये नमः।
मकरवाहनाय नमः। जलाधिपतये नमः। पाशहस्ताय नमः। वरुणाय नमः।
नानाविधपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

वरुणाय नमः समस्तोपचारान् समर्पयामि।

ॐ। आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो नि॒वेश॑यन्न॒मृतं॒ मर्त्यं॑ च। हि॒र॒ण्यये॑न सवि॒ता
रथे॒नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना वि॒पश्य॑न्।

सूर्य सुन्दरलोकनाथममृतं वेदान्तसारं शिवम्
ज्ञानं ब्रह्ममयं सुरेशममलं लोकैकचित्तं प्रभुम्।
इन्द्रादित्यनराधिपं सुरगुरुं त्रैलोक्यचूडामणिं
विष्णुब्रह्मशिवस्वरूपहृदयं वन्दे सदा भास्करम्॥

अस्मिन् कुम्भे श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणं ध्यायामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायणम् आवाहयामि।

आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। उपवीतं समर्पयामि। आभरणम् समर्पयामि। गन्धान् धारयामि। गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पाणि समर्पयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|------------------|-----------------------|
| १. ॐ मित्राय नमः | ७. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः |
| २. ॐ रवये नमः | ८. ॐ मरीचये नमः |
| ३. ॐ सूर्याय नमः | ९. ॐ आदित्याय नमः |
| ४. ॐ भानवे नमः | १०. ॐ सवित्रे नमः |
| ५. ॐ खगाय नमः | ११. ॐ अर्काय नमः |
| ६. ॐ पूष्णे नमः | १२. ॐ भास्कराय नमः |

॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

अरुणाय नमः
शरण्याय नमः
करुणारससिन्धवे नमः
असमानबलाय नमः
आर्तरक्षकाय नमः
आदित्याय नमः

आदिभूताय नमः
अखिलागमवेदिने नमः
अच्युताय नमः
अखिलज्ञाय नमः
अनन्ताय नमः
इनाय नमः

| | | | |
|-------------------------------|----|----------------------------|----|
| विश्वरूपाय नमः | | रुग्घन्त्रे नमः | |
| इज्याय नमः | | ऋक्षचक्रचराय नमः | |
| इन्द्राय नमः | | ऋजुस्वभावचित्ताय नमः | ४० |
| भानवे नमः | | नित्यस्तुत्याय नमः | |
| इन्दिरामन्दिराप्ताय नमः | | ऋकारमातृकावर्णरूपाय नमः | |
| वन्दनीयाय नमः | | उज्ज्वलतेजसे नमः | |
| ईशाय नमः | | ऋक्षाधिनाथमित्राय नमः | |
| सुप्रसन्नाय नमः | २० | पुष्कराक्षाय नमः | |
| सुशीलाय नमः | | लुप्तदन्ताय नमः | |
| सुवर्चसे नमः | | शान्ताय नमः | |
| वसुप्रदाय नमः | | कान्तिदाय नमः | |
| वसवे नमः | | घनाय नमः | |
| वासुदेवाय नमः | | कनत्कनकभूषाय नमः | ५० |
| उज्ज्वल नमः | | खद्योताय नमः | |
| उग्ररूपाय नमः | | लूनिताखिलदैत्याय नमः | |
| ऊर्ध्वगाय नमः | | सत्यानन्दस्वरूपिणे नमः | |
| विवस्वते नमः | | अपवर्गप्रदाय नमः | |
| उद्यत्किरणजालाय नमः | ३० | आर्तशरण्याय नमः | |
| हृषीकेशाय नमः | | एकाकिने नमः | |
| ऊर्जस्वलाय नमः | | भगवते नमः | |
| वीराय नमः | | सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे नमः | |
| निर्जराय नमः | | गुणात्मने नमः | |
| जयाय नमः | | घृणिभृते नमः | ६० |
| ऊरुद्वयाभावरूपयुक्तसारथये नमः | | बृहते नमः | |
| ऋषिवन्द्याय नमः | | ब्रह्मणे नमः | |

| | | |
|---------------------------------|-----------------------|-----|
| ऐश्वर्यदाय नमः | परमात्मने नमः | |
| शर्वाय नमः | तरुणाय नमः | |
| हरिदश्वाय नमः | वरेण्याय नमः | |
| शौरये नमः | ग्रहाणां पतये नमः | |
| दशदिक्सम्प्रकाशाय नमः | भास्कराय नमः | ९० |
| भक्तवश्याय नमः | आदिमध्यान्तरहिताय नमः | |
| ओजस्कराय नमः | सौख्यप्रदाय नमः | |
| जयिने नमः | सकलजगतां पतये नमः | |
| जगदानन्दहेतवे नमः | सूर्याय नमः | |
| जन्ममृत्युजराव्याधिवर्जिताय नमः | कवये नमः | |
| उच्चस्थान समारूढरथस्थाय नमः | नारायणाय नमः | |
| असुरारये नमः | परेशाय नमः | |
| कमनीयकराय नमः | तेजोरूपाय नमः | |
| अञ्जवल्लभाय नमः | हिरण्यगर्भाय नमः | |
| अन्तर्बहिः प्रकाशाय नमः | सम्पत्कराय नमः | १०० |
| अचिन्त्याय नमः | ऐं इष्टार्थदाय नमः | |
| आत्मरूपिणे नमः | अं सुप्रसन्नाय नमः | |
| अच्युताय नमः | श्रीमते नमः | |
| अमरेशाय नमः | श्रेयसे नमः | |
| परस्मै ज्योतिषे नमः | सौख्यदायिने नमः | |
| अहस्कराय नमः | दीप्तमूर्तये नमः | |
| रवये नमः | निखिलागमवेद्याय नमः | |
| रवये नमः | नित्यानन्दाय नमः | १०८ |

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नानाविध-परिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि।

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

धूपमाघ्रापयामि। अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः नैवेद्यं निवेदयामि। निवेदनान्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः कर्पूरताम्बूलं समर्पयामि।

भास्कराय विद्महे महद्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्।

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः समस्त-अपराध-क्षमापनार्थं कर्पूरनीराजनं दर्शयामि। कर्पूरनीरजनानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि। रक्षां धारयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः वेदोक्तमन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। स्वर्णपुष्पं समर्पयामि। श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः प्रदक्षिणनमस्काराः समर्पयामि।

॥ न्यासः ॥

ओं अस्य श्रीसूर्यनमस्कार-महामन्त्रस्य, कण्वपुत्रः प्रस्कन्न ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसूर्यनारायणो देवता।

हां बीजम्, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकम्। श्रीसूर्यनारायण-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे नमस्कारे विनियोगः।

हां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

हूं मध्यमाभ्यां नमः।

है अनामिकाभ्यां नमः।

हौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
 ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
 ह्रां हृदयाय नमः।
 हीं शिरसे स्वाहा।
 हूं शिखायै वषट्।
 है कवचाय हुम्।
 हौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
 ह्रः अस्त्राय फट्।
 भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥

॥ ध्यानम् ॥

उदयगिरिमुपेतं भास्करं पद्महस्तं
 सकलभुवननेत्रं नूतनरत्नोपधेयम्।
 तिमिरकरिमृगेन्द्रं बोधकं पद्मिनीनां
 सुरगुरुमभिवन्दे सुन्दरं विश्वरूपम्॥

लं-पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।
 हं- आकाशात्मने पुष्पाणि समर्पयामि।
 यं-वाय्वात्मने धूपमाग्रापयामि।
 रं-वह्न्यात्मने दीपं दर्शयामि।
 वं-अमृतात्मने अमृतोपहारं निवेदयामि।
 सं-सर्वात्मने सर्वोपचारान् समर्पयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं
ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

ॐ महागणपतये नमः॥

उमाकोमल-हस्ताब्ज-सम्भावित-ललाटकम्।
हिरण्यकुण्डलं वन्दे कुमारं पुष्करस्रजम्॥

ॐ श्री-वल्ली-देवसेना-समेत-सुब्रह्मण्यस्वामिने नमः॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

गुरवे सर्वलोकानां भिषजे भवरोगिणाम्।
निधये सर्वविद्यानां दक्षिणामूर्तये नमः॥

विनतातनयो देवः कर्मसाक्षी सुरेश्वरः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु॥

रज्जुवेत्रकशापाणिं प्रसन्नं कश्यपात्मजम्।
सर्वाभरणदीप्ताङ्गमरुणं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ कर्मसाक्षिणे अरुणाय नमः॥

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतां रत्न-धातमम्॥ ऋग्वेदात्मने
सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

इषेत्वोर्जे त्वा वायवं स्थो पायवं स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय
कर्मणे॥ यजुर्वेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥
सामवेदात्मने सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

शत्रो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑। शं यो॒र॒भिस्र॑वन्तु नः॥ अथर्ववेदात्मने
सूर्य॑नारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारायणोपनिषत्))

घृ॒णिः सूर्य॑ आ॒दि॒त्यो न प्रभा॑ वा॒त्यक्ष॑रम्। मधु॑ क्षरन्ति॒ तद्र॑सम्। स॒त्यं वै
तद्र॑स॒मापो॒ ज्योती॑र॒सोऽमृतं॑ ब्रह्म॒ भूर्भुवः॑ सु॒व॒रोम्॥ श्री-छा॒या-सुव॑र्चलाम्बा-
समेत-श्री-सूर्य॑नारायण-स्वामिने नमः॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः १/प्रश्नः - ४)

त॒र॒णिर्वि॑श्वद॑र्शतो॒ ज्योति॑ष्कृद॑सि सूर्य॑। वि॒श्व॒मा भा॑सि रोच॒नम्॥
उ॒प॒या॒मगृ॑हीतोऽसि॒ सूर्या॑य त्वा॒ भ्राज॑स्वत ए॒ष ते॒ योनिः॑ सूर्या॑य त्वा॒
भ्राज॑स्वते॥ ३२॥ श्री-छा॒या-सुव॑र्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्य॑नारायण-स्वामिने
नमः॥

ॐ हाम्। उ॒द्यन्न॑द्य मि॒त्रम॑हः। मि॒त्राय॑ नमः॥
ॐ ह्रीम्। आ॒रोह॑न्नुत्त॑रां दि॒वम्। रव॑ये नमः॥
ॐ ह्रूम्। हृ॒द्रो॒गं मम॑ सूर्य॑। सूर्या॑य नमः॥
ॐ हैम्। ह॒रि॒माणं॑ च नाशय। भान॑वे नमः॥
ॐ ह्रौम्। शु॒कैषु॑ मे ह॒रि॒माणम्। खगा॑य नमः॥
ॐ हः। रो॒प॒णाका॑सु दध्म॑सि॥ पू॒ष्णे नमः॥
ॐ हाम्। अथो॑ ह॒रि॒द्र॒वेषु॑ मे। हिर॑ण्यग॒र्भाय॑ नमः॥
ॐ ह्रीम्। ह॒रि॒माणं॑ नि दध्म॑सि। मरी॑चये नमः॥
ॐ ह्रूम्। उद॑गाद॒यमा॑दि॒त्यः। आ॒दि॒त्याय॑ नमः॥
ॐ हैम्। वि॒श्वेन॑ स॒हसा॑ स॒ह। स॒वि॒त्रे नमः॥

ॐ हौम्। द्विषन्तं मम रन्धयन्। अर्काय नमः॥

ॐ हः। मो अहं द्विषतो रंधम्। भास्कराय नमः॥

ॐ हां हीम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोहन्नुत्तरां दिवम्। मित्र-रविभ्यां नमः॥

ॐ हूं हैम्। हृद्रोगं मम सूर्य। हरिमाणं च नाशय। सूर्य-भानुभ्यां नमः॥

ॐ हौं हः। शुकैषु मे हरिमाणम्। रोपणाकासु दध्मसि॥ खग-पूषभ्यां नमः॥

ॐ हां हीम्। अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणं नि दध्मसि। हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यां नमः॥

ॐ हूं हैम्। उदंगादयमादित्यः। विश्वेन सहसा सह। आदित्य-सवितृभ्यां नमः॥

ॐ हौं हः। द्विषन्तं मम रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। अर्क-भास्कराभ्यां नमः॥

ॐ हां हीं हूं हैम्। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य। हरिमाणं च नाशय। मित्र-रवि-सूर्य-भानुभ्यो नमः॥

ॐ हौं हः हां हीम्। शुकैषु मे हरिमाणम्। रोपणाकासु दध्मसि॥ अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणं नि दध्मसि। खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीचिभ्यो नमः॥

ॐ हूं हैं हौं हः। उदंगादयमादित्यः। विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मम रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। आदित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः। आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य। हरिमाणं च नाशय। शुकैषु मे हरिमाणम्। रोपणाकासु दध्मसि॥ मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूषभ्यो नमः॥

ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणं नि दध्मसि।

उदगादयमादित्यः। विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मम रन्धयन्। मो अहं
द्विषतो रंधम्। हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - ३/प्रश्नः - ७/अनुवाकः - ६/ पञ्चादयः ७६-७७)

ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। ॐ हां हीं हूं हैं हौं हः। उद्यन्नद्य मित्रमहः।
आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृद्रोगं मम सूर्य। हरिमाणं च नाशय। शुकैषु मे
हरिमाणम्। रोपणाकासु दध्मसि॥ अथो हारिद्रवेषु मे। हरिमाणं नि
दध्मसि। उदगादयमादित्यः। विश्वेन सहसा सह। द्विषन्तं मम रन्धयन्। मो
अहं द्विषतो रंधम्। मित्र-रवि-सूर्य-भानु-खग-पूष-हिरण्यगर्भ-मरीच्यादित्य-
सवित्रर्क-भास्करेभ्यो नमः॥

॥ आदित्यमण्डले परब्रह्मोपासनम् ॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति तत्र ता ऋचस्तदृचा मण्डलं स
ऋचां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिर्दीप्यते तानि सामानि स साम्नां
मण्डलं स साम्नां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिषि पुरुषस्तानि
यजूंषि स यजुषा मण्डलं स यजुषां लोकः सैषा त्रय्येव विद्या तपति
य एषोऽन्तरादित्ये हिंरन्मयः पुरुषः॥ ३१॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-
सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

॥ आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्वप्रदर्शनम् ॥

(तैत्तिरीयारण्यके प्रश्नः - १० (महानारयणोपनिषत्))

आदित्यो वै तेज ओजो बलं यशश्चक्षुः श्रोत्रमात्मा मनो मन्युर्मनुर्मृत्युः सत्यो
मित्रो वायुराकाशः प्राणो लोकपालः कः किं कं तत्सत्यमन्नमृतौ जीवो
विश्वः कतमः स्वयम्भु ब्रह्मतदमृत एष पुरुष एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः
सायुज्यं सलोकतामाप्नोत्येतासामेव देवतानां सायुज्यं सार्ष्टितां

समानलोकतामाप्नोति य एवं वेदैत्युपनिषत्॥३२॥ श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-
समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः॥

॥ अरुणप्रश्नः ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु-
वाꣳसंस्तूयामि। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो
बृहस्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु-
वाꣳसंस्तूयामि। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो
बृहस्पतिर्दधातु। आपमापामपः सर्वाः। अस्मादस्मादितोऽमुतः॥१॥

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संञ्चस्करद्धिया। वाय्वश्चा रश्मिपतयः।
मरीच्यात्मानो अद्रुहः। देवीर्भुवनसूवरीः। पुत्रवत्वाय मे सुत। महानाग्नीर्महा-
मानाः। महसो महसः स्वः। देवीः पर्जन्यसूवरीः। पुत्रवत्वाय मे सुत॥२॥

अपाश्र्युष्णिमपा रक्षः। अपाश्र्युष्णिमपा रघम। अपाघ्नमपं चावर्तिम।
अपदेवीरितो हित। वज्रं देवीरजीताश्च। भुवनं देवसूवरीः। आदित्यानदितिं
देवीम्। योनिर्नोर्ध्वमुदीपत। शिवा नः शन्तमा भवन्तु। दिव्या आप ओषधयः।
सुमृडीका सरस्वति। मा ते व्योम सन्दृशि॥३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

स्मृतिः प्रत्यक्षमैतिह्यम्। अनुमानश्चतुष्टयम्। एतैरादित्यमण्डलम्। सर्वैरेव विधास्यते। सूर्यो मरीचिमादत्ते। सर्वस्माद्भुवनादधि। तस्याः पाकविशेषेण। स्मृतं कालविशेषणम्। नदीव प्रभवात्काचित्। अक्षय्याथ्स्यन्दते यथा॥४॥

तां नद्योऽभि संमायन्ति। सौरुः सती न निर्वर्तते। एवं नानासमुत्थानाः। कालाः संवत्सरः श्रिताः। अणुशश्च महशश्च। सर्वे समवयत्रितम्। सतैः सर्वैः संमाविष्टः। ऊरुः सन्न निर्वर्तते। अधिसंवत्सरं विद्यात्। तदेवं लक्षणे॥५॥

अणुभिश्च महद्भिश्च। समारूढः प्रदृश्यते। संवत्सरः प्रत्यक्षेण। नाधिसत्त्वः प्रदृश्यते। पटरो विक्लिधः पिङ्गः। एतद्वरुणलक्षणम्। यत्रैतदुपदृश्यते। सहस्रं तत्र नीयते। एकः हि शिरो नाना मुखे। कृत्स्नं तद्वतुलक्षणम्॥६॥

उभयतः सप्तैन्द्रियाणि। जल्पितं त्वेव दिह्यते। शुक्लकृष्णे संवत्सरस्य। दक्षिणवामयोः पार्श्वयोः। तस्यैषा भवति। शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यत्। विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवसि स्वधावः। भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्त्विति। नात्र भुवनम्। न पूषा। न पशवः। नाऽऽदित्यः संवत्सर एव प्रत्यक्षेण प्रियतमं विद्यात्। एतद्वै संवत्सरस्य प्रियतमं रूपम्। योऽस्य महानर्थ उत्पत्स्यमानो भवति। इदं पुण्यं कुरुष्वेति। तमाहरणं दद्यात्॥७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२]

साकञ्जानाः सप्तथमाहुरेकजम्। षडुद्यमा ऋषयो देवजा इति। तेषामिष्टानि विहितानि धामशः। स्थात्रे रजन्ते विकृतानि रूपशः। को नु मर्या अमिथितः। सखा सखायमब्रवीत्। जहाको अस्मदीषते। यस्तित्याज सखिविदः सखायम्। न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति। यदीः शृणोत्यलकः शृणोति॥८॥

न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामिति। ऋतुर्ऋतुना नुद्यमानः। विनंनादा-
भिधावः। षष्टिश्च त्रिंशंका वल्गाः। शुक्लकृष्णौ च षाष्टिकौ। सारागवस्त्रैर्ज-
दक्षः। वसन्तो वसुभिः सह। संवत्सरस्य सवितुः। प्रैषकृत्प्रथमः स्मृतः।
अमूनादयतेत्यन्यान्॥१॥

अमूँश्च परिरक्षतः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। यत्रैतदुपदृश्यते। एतदेव
विजानीयात्। प्रमाणं कालपर्यये। विशेषणं तु वक्ष्यामः। ऋतूनां तन्निबोधत।
शुक्लवासां रुद्रगणः। ग्रीष्मेणाऽऽवर्तते सह। निजहन् पृथिवीं सर्वाम्॥१०॥

ज्योतिषाऽप्रतिख्येन सः। विश्वरूपाणि वासाँसि। आदित्यानां निबोधत।
संवत्सरीणं कर्मफलम्। वर्षाभिर्ददताँ सह। अदुःखो दुःखचक्षुरिव।
तद्माऽऽपीत इव दृश्यते। शीतेनाव्यथयन्निव। रुरुदक्ष इव दृश्यते। ह्लादयते
ज्वलतश्चैव। शाम्यतश्चास्य चक्षुषी। या वै प्रजा भ्रँश्यन्ते। संवत्सरात्ता
भ्रँश्यन्ते। याः प्रतितिष्ठन्ति। संवत्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति। वर्षाभ्य
इत्यर्थः॥११॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[३]

अक्षिदुःखोत्थितस्यैव। विप्रसन्ने कनीनिके। आङ्गे चाद्रणं नास्ति। ऋभूणां
तन्निबोधत। कनकाभानि वासाँसि। अहतानि निबोधत। अन्नमश्रीतं
मृज्मीत। अहं वो जीवनप्रदः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। शरद्यत्रोपदृश्यते॥१२॥

अभिधून्वन्तोऽभिघ्नन्त इव। वातवन्तो मरुद्गणाः। अमुतो जेतुमिषुमुखमिव।
सन्नद्धाः सह ददृशे ह। अपध्वस्तैर्वस्तिवर्णैरिव। विशिखासः कपर्दिनः।
अक्रुद्धस्य योत्स्यमानस्य। क्रुद्धस्यैव लोहिनी। हेमतश्चक्षुषी विद्यात्।
अक्ष्णयोः क्षिपणोरिव॥१३॥

दुर्भिक्षं देवलोकेषु। म॒नूना॑मु॒दकं॑ गृहे। ए॒ता वा॒चः प्र॑वद॒न्तीः। वै॒द्युतो॑ यान्ति
शै॒शिरीः॑। ता अ॒ग्निः प॑र्वम॒ना अ॒न्वैक्ष॑ता। इ॒ह जी॑विका॒मप॑रिपश्यन्। तस्यै॒षा
भ॑वति। इ॒हेह॑वः स्व॒तप॑सः। मरु॑तः सूर्य॑त्वचः। शर्म॑ स॒प्रथा॑ आवृ॒णे॥१४॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[४]

अति॑ता॒म्राणि॑ वासा॒ऽसि। अ॒ष्टिर्व॑ज्रिश॒तग्निं॑ च। वि॒श्वे दे॒वा वि॑प्र॒हर॑न्ति।
अ॒ग्निजि॑ह्वा अ॒सश्च॑ता। नैव दे॒वो न॑ म॒र्त्यः। न राजा वरु॑णो वि॒भुः। ना॒ग्निर्ने॒न्द्रो
न प॑वमा॒नः। मा॒तृक्क॑चन॒ विद्य॑ते। दि॒व्यस्यै॒का ध॑नुरा॒र्त्तिः। पृ॒थि॒व्याम॑परा
श्रि॒ता॥१५॥

तस्ये॒न्द्रो व॑मि॒रूपे॑ण। ध॒नुर्ज्या॑मछि॒नश्च॑यम्। तदि॒न्द्रध॑नुरि॒त्यज्य॑म्।
अ॒भ्रव॑र्गेषु चक्ष॑ते। ए॒तदे॒व शं॑योर्बा॒र्हस्प॑त्य॒स्य। ए॒तद्रु॑द्रस्य॒ धनुः॑। रु॒द्रस्य॑ त्वे॒व
ध॑नुरा॒र्त्तिः। शि॒र उ॒त्पि॑पेष। स प्र॑व॒र्ग्योऽभ॑वत्। तस्मा॒द्यः स॑प्र॒व॒र्ग्येण॑ य॒ज्ञेन॑
यज॑ते। रु॒द्रस्य॑ स शि॒रः प्र॑ति॒दधा॑ति। नैन॑ऽरु॒द्र आ॑रु॒को भ॑वति। य ए॒वं
वेद॑॥१६॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[५]

अ॒त्यूर्ध्वा॒क्षोऽति॑रश्चात्। शि॒शि॒रः प्र॑दृश्य॑ते। नैव रू॒पं न॑ वासा॒ऽसि। न चक्षुः॑
प्र॑ति॒दृश्य॑ते। अ॒न्यो॒न्यं तु॑ न॑ हि॒ऽस्मा॑तः। स॒तस्त॑द्दे॒वल॑क्ष॒णम्। लो॒हितोऽक्षि॑ण
शा॒रशी॑र्णिः। सूर्य॑स्यो॒दय॑नं प्र॑ति। त्वं करो॑षि॒ न्यञ्ज॑लिकाम्। त्वं करो॑षि
नि॒जानु॑काम्॥१७॥

नि॒जानु॑का मे॒ न्यञ्ज॑लिका। अमी वा॒चमु॑पास॑तामि॒ति। तस्मै॑ सर्व ऋ॒तवो॑
नम॑न्ते। मर्या॑दाकर॒त्वात्प्र॑पुरो॒धाम्। ब्रा॒ह्मणं॑ आ॒प्नो॑ति। य ए॒वं वे॒द। स खलु॑

संवत्सर एतैः सेनानीभिः सह। इन्द्राय सर्वान्कामान्भिवृहति। स द्रुप्सः। तस्यैषा भवति॥१८॥

अवद्रुप्सो अशुमतीमतिष्ठत्। इयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः। आवर्तमिन्द्रः शच्या धमन्तम्। उपस्रुहि तं नृमणामथद्रामिति। एतयैवेन्द्रः सलावृक्या सह। असुरान् परिवृश्चति। पृथिव्यशुमती। तामन्ववस्थितः संवत्सरो दिवं च। नैवं विदुषाऽऽचार्यान्तेवासिनौ। अन्योन्यस्मै द्रुह्याताम्। यो द्रुह्यति। भ्रश्यते स्वर्गाल्लोकात्। इत्युतुमण्डलानि। सूर्यमण्डलान्याख्यायिकाः। अत ऊर्ध्वं सन्निर्वचनाः॥१९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[६]

आरोगो भ्राजः पटरः पतङ्गः। स्वर्णरो ज्योतिषीमान् विभासः। ते अस्मै सर्वे दिवमातपन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरन्त इति। कश्यपोऽष्टमः। स महामेरुं न जहाति। तस्यैषा भवति। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावत्। इन्द्रियावत्पुष्कलं चित्रभानु। यस्मिन्सूर्या अर्पिताः सप्त साकम्॥२०॥

तस्मिन् राजानमधिविश्रयेममिति। ते अस्मै सर्वे कश्यपाज्यो-
तिर्लभन्ते। तान्त्सोमः कश्यपादधिनिर्धमति। भस्ताकर्मकृदिवैवम्। प्राणो
जीवानीन्द्रियजीवनि। सप्त शीर्षण्याः प्राणाः। सूर्या इत्याचार्याः।
अपश्यमहमेतान्त्सप्त सूर्यानि। पञ्चकर्णो वात्स्यायनः। सप्तकर्णश्च
प्लाक्षिः॥२१॥

आनुश्रविक एव नौ कश्यप इति। उभौ वेदयिते। न हि शेकुमिव
महामेरुं गन्तुम्। अपश्यमहमेत्सूर्यमण्डलं परिवर्तमानम्। गार्ग्यः प्राणत्रातः।
गच्छन्त महामेरुम्। एकं चाजुहतम्। भ्राजपटरपतङ्गा निहने। तिष्ठन्नातपन्ति।

तस्मादिह तत्रितपाः॥२२॥

अमुत्रेतरे। तस्मादिहातत्रितपाः। तेषामेषा भवति। सप्त सूर्या दिवमनुप्रविष्टाः। तानन्वेति पृथिभिर्दक्षिणावान्। ते अस्मै सर्वे घृतमातपन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरन्त इति। सप्तर्त्विजः सूर्या इत्याचार्याः। तेषामेषा भवति। सप्त दिशो नानासूर्याः॥२३॥

सप्त होतार ऋत्विजः। देवा आदित्या ये सप्त। तेभिः सोमाभी रक्षण इति। तदप्याम्नायः। दिग्भ्राज ऋतून् करोति। एतयैवावृता सहस्रसूर्यताया इति वैशम्पायनः। तस्यैषा भवति। यद्वाव इन्द्र ते शतं शतं भूमीः। उतस्युः। नत्वा वज्रिन्सहस्रं सूर्याः॥२४॥

अनु न जातमष्ट रोदसी इति। नानालिङ्गत्वादृतूनां नानासूर्यत्वम्। अष्टौ तु व्यवसिता इति। सूर्यमण्डलान्यष्टौ ऊर्ध्वम्। तेषामेषा भवति। चित्रं देवानामुदगादनीकम्। चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेति॥२५॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[७]

क्वेदमभ्रं निविशते। कायं संवत्सरो मिथः। काहः केयं देव रात्री। क मासा ऋतवः श्रिताः। अर्धमासा मुहूर्ताः। निमेषास्तुटिभिः सह। केमा आपो निविशन्ते। यदीतो यान्ति सम्प्रति। काला अप्सु निविशन्ते। आपः सूर्यं समाहिताः॥२६॥

अभ्राण्यपः प्रपद्यन्ते। विद्युत्सूर्यं समाहिता। अनवर्णे इमे भूमी। इयं चाऽसौ च रोदसी। किंस्विदत्रान्तरा भूतम्। येनेमे विधृते उभे। विष्णुना विधृते भूमी। इति वत्सस्य वेदना। इरावती धेनुमती हि भूतम्। सूयवसिनी

मनुषे दशस्ये॥२७॥

व्यष्टभ्राद्रोदसी विष्णवेते। दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः। किं तद्विष्णोर्बल-
माहुः। का दीप्तिः किं परायणम्। एको यद्धारयद्देवः। रेजती रोदसी उभे।
वाताद्विष्णोर्बलमाहुः। अक्षरादीप्तिरुच्यते। त्रिपदाद्धारयद्देवः। यद्विष्णोरेक-
मुत्तमम्॥२८॥

अग्नयो वायवश्चैव। एतदस्य परायणम्। पृच्छामि त्वा परं मृत्युम्। अवमं
मध्यमश्चतुम्। लोकं च पुण्यपापानाम्। एतत्पृच्छामि सम्प्रति। अमुमाहुः परं
मृत्युम्। पवमानं तु मध्यमम्। अग्निरेवावमो मृत्युः। चन्द्रमाश्चतुरुच्यते॥२९॥

अनाभोगाः परं मृत्युम्। पापाः संयन्ति सर्वदा। आभोगास्त्वेवं संयन्ति।
यत्र पुण्यकृतो जनाः। ततो मध्यममायन्ति। चतुर्माग्निं च सम्प्रति। पृच्छामि
त्वा पापकृतः। यत्र यातयते यमः। त्वं नस्तद्वह्नन् प्रब्रूहि। यदि वैत्थाऽसतो
गृहान्॥३०॥

कश्यपादुदिताः सूर्याः। पापान्निर्घ्नन्ति सर्वदा। रोदस्योन्तर्देशेषु।
तत्र न्यस्यन्ते वासवैः। तेऽशरीराः प्रपद्यन्ते। यथाऽपुण्यस्य कर्मणः।
अपाण्यपादकेशासः। तत्र तेऽयोनिजा जनाः। मृत्वा पुनर्मृत्युमापद्यन्ते।
अद्यमानाः स्वकर्मभिः॥३१॥

आशातिकाः क्रिमय इव। ततः पूयन्ते वासवैः। अपैतं मृत्युं जयति।
य एवं वेद। स खल्वैवं विद्वाह्मणः। दीर्घश्रुत्तमो भवति। कश्यपस्यातिथिः
सिद्धगमनः सिद्धागमनः। तस्यैषा भवति। आयस्मिन्सप्त वासवाः। रोहन्ति
पूर्व्या रुहः॥३२॥

ऋषिर्ह दीर्घश्रुत्तमः। इन्द्रस्य घर्मो अतिथिरिति। कश्यपः पश्यको

भवति। यत्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्। अथाग्नेरष्टपुरुषस्य। तस्यैषा भवति। अग्ने नयं सुपथा राये अस्मान्। विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मङ्गुहुराणमेनः। भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेमेति॥३३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[८]

अग्निश्च जातवेदाश्च। सहोजा अजिराप्रभुः। वैश्वानरो नर्यापाश्च। पङ्क्तिराधाश्च सप्तमः। विसर्पेवाऽष्टमोऽग्नीनाम्। एतेऽष्टौ वसवः, क्षिता इति। यथर्त्वेवाग्नेरर्चिर्वर्णविशेषाः। नीलार्चिश्च पीतकार्चिश्चेति। अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशश्रीकस्य। प्रभ्राजमाना व्यवदाताः॥३४॥

याश्च वासुकिवैद्युताः। रजताः परुषाः श्यामाः। कपिला अतिलोहिताः। ऊर्ध्वा अवपतन्ताश्च। वैद्युत इत्येकादश। नैनं वैद्युतो हिनस्ति। य एवं वेद। स होवाच व्यासः पाराशर्यः। विद्युद्वधमेवाहं मृत्युमैच्छमिति। न त्वकामं हन्ति॥३५॥

य एवं वेद। अथ गन्धर्वगणाः। स्वानुभ्राट्। अङ्घ्रिर्बम्भारिः। हस्तः सुहस्तः। कृशानुर्विश्वावसुः। मूर्धन्वान्सूर्यवर्चाः। कृतिरित्येकादश गन्धर्वगणाः। देवाश्च महादेवाः। रश्मयश्च देवा गरुगिरः॥३६॥

नैनं गरो हिनस्ति। य एवं वेद। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभ्रुवर्षी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्निति। वाचो विशेषणम्। अथ निगदंव्याख्याताः। ताननुक्रमिष्यामः। वराहवः स्वतपसः॥३७॥

विद्युन्महसो धूपयः। श्वापयो गृहमेधाश्चेत्येते। ये चेमेऽशिमिविद्विषः। पर्जन्याः सप्त पृथिवीमभिवर्षन्ति। वृष्टिभिरिति। एतयैव विभक्तिर्विपरीताः। सप्तभिर्वा तैरुदीरिताः। अमूल्लोकानभिवर्षन्ति। तेषामेषा भवति। समानमेत-

दुदकम् ॥ ३८ ॥

उच्चैत्यवचाहभिः। भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति। दिवं जिन्वन्त्यग्रय
इति। यदक्षरं भूतकृतम्। विश्वे देवा उपासन्ते। महर्षिमस्य गोप्तारम्।
जमदग्निमकुर्वत। जमदग्निराप्यायते। छन्दोभिश्चतुरुत्तरैः। राज्ञः सोमस्य
तृप्तासः ॥ ३९ ॥

ब्रह्मणा वीर्यावता। शिवा नः प्रदिशो दिशः। तच्छुं योरावृणीमहे। गातुं
यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये। दैवीः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं
जिगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदैः। शं चतुष्पदे। सोमपा (३) असोमपा
(३) इति निगदव्याख्याताः ॥ ४० ॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय ॥

[१]

सहस्रवृद्धियं भूमिः। परं व्योम सहस्रवृत्। अश्विनां भुज्यूनास्त्या।
विश्वस्य जगतस्पती। जाया भूमिः पतिव्योम। मिथुनन्ता अतुर्यथुः। पुत्रो
बृहस्पती रुद्रः। सरमा इति स्त्रीपुमम्। शुक्रं वामन्यद्यजतं वामन्यत्। विषुरूपे
अहनी द्यौरिव स्थः ॥ ४१ ॥

विश्वा हि माया अवन्थः स्वधावन्तौ। भद्रा वां पूषणाविह रातिरस्तु।
वासांत्यौ चित्रौ जगतो निधानौ। द्यावाभूमी चरथः स२ सखायौ।
तावश्विना रासभाश्वा हवं मे। शुभस्पती आगत२ सूर्यया सह। त्युग्रोह
भुज्युमश्विनोदमेघे। रयिं न कश्चिन्ममृवां (२) अवाहाः। तमूहथुर्नोभिरात्मन्-
वतीभिः। अन्तरिक्षप्रुङ्गिरपोदकाभिः ॥ ४२ ॥

तिस्रः, क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्विः। नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः। समुद्रस्य
धन्वन्त्रार्द्रस्य पारे। त्रिभीरथैः शतपद्विः षडश्वैः। सवितारं वितन्वन्तम्।

अनुबध्नाति शाम्बरः। आपपूरूषम्बरश्चैव। सवितारेपसोऽभवत्। त्य९ सुतुप्तं विदित्वैव। बहुसोम गिरं वंशी॥४३॥

अन्वेति तुग्रो वक्रियान्तम्। आयसूयान्त्सोमंतृप्सुषु। स सङ्ग्राम-स्तमोद्योऽत्योतः। वाचो गाः पिपाति तत्। स तद्गोभिः स्तवाऽत्येत्यन्ये। रक्षसानन्विताश्च ये। अन्वेति परिवृत्याऽस्तः। एवमेतौ स्थौ अश्विना। ते एते द्युः पृथिव्योः। अहरहर्गर्भं दधाथे॥४४॥

तयोरेतौ वत्सावहोरात्रे। पृथिव्या अहः। दिवो रात्रिः। ता अविंसृष्टौ। दम्पती एव भवतः। तयोरेतौ वत्सौ। अग्निश्चाऽऽदित्यश्च। रात्रेर्वत्सः। श्वेत आदित्यः। अहोऽग्निः॥४५॥

ताम्रो अरुणः। ता अविंसृष्टौ। दम्पती एव भवतः। तयोरेतौ वत्सौ। वृत्रश्च वैद्युतश्च। अग्नेर्वृत्रः। वैद्युतं आदित्यस्य। ता अविंसृष्टौ। दम्पती एव भवतः। तयोरेतौ वत्सौ॥४६॥

उष्मा च नीहारश्च। वृत्रस्योष्मा। वैद्युतस्य नीहारः। तौ तावेव प्रतिपद्येते। सेय९ रात्री गर्भिणी पुत्रेण संवसति। तस्या वा एतदुल्बणम्। यद्रात्रौ रश्मयः। यथा गोर्गर्भिण्या उल्बणम्। एवमेतस्या उल्बणम्। प्रजयिष्णुः प्रजया च पशुभिश्च भवति। य एवं वेदा एतमुद्यन्तमपियन्तं चेति। आदित्यः पुण्यस्य वत्सः। अथ पवित्राङ्गिरसः॥४७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१०]

पवित्रवन्तः परिव्राजमासन्ते। पितृषां प्रबो अभिरक्षति व्रतम्। महः संमुद्रं वरुणस्तिरोदधे। धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वाभम्। पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते। प्रभुर्गात्राणि पर्येषिविश्वतः। अतस्तनूर्न तदामो अंश्रुते। श्रुतास

इद्वहन्तस्तत्समाशत। ब्रह्मा देवानाम्। असंतः सद्ये ततक्षुः॥४८॥

ऋषयः सप्तात्रिंश्च यत्। सर्वेऽत्रयो अंगस्त्यश्च। नक्षत्रैः शङ्कृतोऽवसन्।
अथ सवितुः श्यावाश्वस्याऽवर्तिकामस्य। अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा।
नक्तं ददृशे कुहचिद्विवेयुः। अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि। विचाकशच्चन्द्रमा
नक्षत्रमेति। तथ्संवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि॥४९॥

धियो यो नः प्रचोदयात्। तथ्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठं
सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि। अपांगूहत सविता तृभीन्। सर्वाँन्दिवो
अन्धसः। नक्तं तान्यभवनृशे। अस्थ्यस्त्रा सम्भविष्यामः। नाम नामैव नाम
मै॥५०॥

नपुंसकं पुमांश्च स्मि। स्थावरोऽस्म्यथ जङ्गमः। यजेऽयक्षि यष्टाहे
च। मया भूतान्ययक्षत। पशवो मम भूतानि। अनूबन्धोऽस्म्यहं विभुः। स्त्रियः
सतीः। ता उमे पुंस आहुः। पश्यदक्षणावविचेतदन्धः। कविर्यः पुत्रः स
इमा चिकेत॥५१॥

यस्ता विजानाथ्संवितुः पितासत्। अन्धो मणिमविन्दत्। तमनङ्गुलिरावयत्।
अग्नीवः प्रत्यमुञ्चत्। तमजिह्वा असञ्चत। ऊर्ध्वमूलमवाक्छाखम्। वृक्षं यो
वेद सम्प्रति। न स जातु जनः श्रद्दध्यात्। मृत्युर्मा मारयादितिः। हसितं
रुदितं गीतम्॥५२॥

वीणापणवलासितम्। मृतं जीवं च यत्किञ्चित्। अङ्गानि स्नेव विद्धि तत्।
अतृष्यंस्तृष्यध्यायत्। अस्माज्जाता मै मिथू चरन्। पुत्रो निर्ऋत्या वैदेहः।
अचेता यश्च चेतनः। स तं मणिमविन्दत्। सोऽनङ्गुलिरावयत्। सोऽग्नीवः
प्रत्यमुञ्चत्॥५३॥

सोऽजिह्वो असञ्चत। नैतमृषिं विदित्वा नगरं प्रविशेत्। यदि प्रविशेत्।

मिथौ चरित्वा प्रविशेत्। तत्सम्भवस्य व्रतम्। आतमग्रे रथं तिष्ठ।
एकांश्वमेकयोजनम्। एकचक्रमेकधुरम्। वातध्राजिगतिं विभो। न रिष्यति न
व्यथते॥५४॥

नास्याक्षो यातु सञ्जति। यच्छ्वेतान् रोहितांश्चाग्नेः। रथे युक्त्वाऽधितिष्ठति।
एकया च दशभिश्च स्वभूते। द्वाभ्यामिष्टये विशत्या च। तिसृभिश्च वहसे
त्रिंशता च। नियुद्धिर्वायविह तां विमुञ्च॥५५॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[११]

आतनुष्व प्रतनुष्व। उद्धमाऽऽधमं सन्धम। आदित्ये चन्द्रवर्णानाम्।
गर्भमार्धेहि यः पुमान्। इतः सिक्तं सूर्यगतम्। चन्द्रमसे रसं कृधि। वारादं
जनयाग्रेऽग्निम्। य एको रुद्र उच्यते। असङ्ख्याताः संहस्राणि। स्मर्यते न च
दृश्यते॥५६॥

एवमेतं निबोधत। आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः। याहि मयूररोमभिः। मा त्वा
केचिन्नियेमुरिन्न पाशिनः। दधन्वेव ता इहि। मा मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः। यामि
मयूररोमभिः। मा मा केचिन्नियेमुरिन्न पाशिनः। निधन्वेव तां (२) इमि।
अणुभिश्च महद्भिश्च॥५७॥

निघृष्वैरसमायुतैः। कालैरहरित्वमापन्नैः। इन्द्राऽऽयाहि सहस्रयुक्।
अग्निर्विभ्राष्टिवसनः। वायुः श्वेतसिकद्रुकः। संवत्सरो विष्ववर्णैः। नित्यास्तेऽ-
नुचरास्तवा। सुब्रह्मण्योः सुब्रह्मण्योः सुब्रह्मण्योम्। इन्द्राऽऽगच्छ हरिव
आगच्छ मैधातिथेः। मेष वृषणश्वस्य मेने॥५८॥

गौरावस्कन्दिन्नहल्यायै जार। कौशिकब्राह्मण गौतमब्रुवाण। अरुणाश्वा
इहागताः। वसंवः पृथिविक्षितः। अष्टौदिग्वासंसोऽग्नयः। अग्निश्च जात-

वेद॑श्चेत्ये॒ते। ताम्रा॑श्चा॒स्ताम्र॒रथाः। ताम्र॑वर्णा॒स्तथा॒ऽसिताः। दण्ड॑हस्ताः।
खाद॑गदतः। इतो रु॒द्राः परा॒ङ्गताः॥५९॥

उक्तं॑ स्थानं प्रमाणं च पुर इत। बृहस्पतिश्च सविता च। विश्वरूपैरिहा-
ऽऽगताम्। रथेनोदकवर्त्मना। अप्सुषा इति तद्वयोः। उक्तो वेषो वासा॑ऽसि
च। कालावयवानामितः प्रतीच्या। वासात्या इत्यश्विनोः। कोऽन्तरिक्षे शब्दं
करोतीति। वासिष्ठो रौहिणो मीमा॑ऽसां चक्रे। तस्यैषा भवति। वाश्रेव
विद्युदिति। ब्रह्मण उदरणमसि। ब्रह्मण उदीरणमसि। ब्रह्मण आस्तरणमसि।
ब्रह्मण उपस्तरणमसि॥६०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१२]

[अपक्रामत गर्भिण्यः]

अष्टयो॑नीमष्टपु॒त्राम्। अष्टप॑त्नीमिमां मही॑म्। अ॒हं वेद॑ न मे मृत्युः। न
चामृ॑त्युर॒घाऽऽह॑रत्। अष्टयो॑न्यष्टपु॒त्रम्। अष्टप॑दिदमन्तरिक्षम्। अ॒हं वेद॑ न मे
मृत्युः। न चामृ॑त्युर॒घाऽऽह॑रत्। अष्टयो॑नीमष्टपु॒त्राम्। अष्टप॑त्नीममं दिवम्॥६१॥

अ॒हं वेद॑ न मे मृत्युः। न चामृ॑त्युर॒घाऽऽह॑रत्। सु॒त्रामा॑णं म॒हीमू॑ षु।
अदि॑तिर्द्यौरदि॑तिरन्तरिक्षम्। अदि॑तिर्मा॒ता स पि॒ता स पु॒त्रः। विश्वे॑ दे॒वा
अदि॑तिः पञ्चज॑नाः। अदि॑तिर्जा॒तमदि॑तिर्जनित्वम्। अष्टौ पु॒त्रासो॑ अदि॑तेः।
ये जा॒तास्त॒न्वः परि॑। दे॒वां (२) उप॑प्रैत्सप्तभिः॥६२॥

प॒रा मा॒र्ताण्ड॑मास्यत्। सप्तभिः पु॒त्रैरदि॑तिः। उप॑प्रैत्पू॒र्व्यं युग॑म्। प्र॒जायै॑
मृत्यवे॑ तत्। प॒रा मा॒र्ताण्ड॑माभ॑रदिति। ताननु॑क्रमिष्यामः। मि॒त्रश्च वरु॑णश्च।
धा॒ता चा॑र्य॒मा च। अ॒शश्च भग॑श्च। इन्द्रश्च वि॒वस्वा॑श्चेत्ये॒ते। हि॒र॒ण्य॒ग॒र्भो
ह॒सः शु॒चि॒षत्। ब्रह्म॑जज्ञानं तदित्पदमिति। गर्भः प्राजाप॒त्यः। अथ॑ पुरु॒षः

सुत पुरुषः॥६३॥

[यथास्थानं गर्भिण्यः]

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१३]

योऽसौ तपन्नुदेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेति। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणानादायोदंगाः। असौ योऽस्तमेति। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायास्तमेति। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणानादायास्तङ्गाः। असौ य आपूर्यति। स सर्वेषां भूतानां प्राणैरापूर्यति॥६४॥

मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरापूरिष्ठाः। असौ योऽपक्षीयति। स सर्वेषां भूतानां प्राणैरपक्षीयति। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरपक्षेष्ठाः। अमूनि नक्षत्राणि। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपप्रसर्पन्ति चोत्सर्पन्ति च। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरपप्रसृपत् मोत्सृपत्॥६५॥

इमे मासांश्चार्धमासाश्च। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपप्रसर्पन्ति चोत्सर्पन्ति च। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरपप्रसृपत् मोत्सृपत्। इम ऋतवः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपप्रसर्पन्ति चोत्सर्पन्ति च। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरपप्रसृपत् मोत्सृपत्। अयं संवत्सरः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपप्रसर्पति चोत्सर्पति च॥६६॥

मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा मम प्राणैरपप्रसृपत् मोत्सृपत्। इदमहः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपप्रसर्पति चोत्सर्पति च। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्।

मा ममं प्राणैरपंप्रसृपु मोथ्सृप। इयं रात्रिः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति
 चोथ्सर्पति च। मा मै प्रजाया मा पशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपु मोथ्सृप।
 ॐ भूर्भुवः स्वः। एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीद्वम्॥६७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१४]

अथाऽऽदित्यस्याष्टपुरुषस्य। वसूनामादित्यानां स्थाने स्वतेजसा भानि।
 रुद्राणामादित्यानां स्थाने स्वतेजसा भानि। आदित्यानामादित्यानां स्थाने
 स्वतेजसा भानि। सतां सत्यानाम्। आदित्यानां स्थाने स्वतेजसा भानि।
 अभिधून्वतामभिघ्नताम्। वातवतां मरुताम्। आदित्यानां स्थाने स्वतेजसा
 भानि। ऋभूणामादित्यानां स्थाने स्वतेजसा भानि। विश्वेषां देवानाम्।
 आदित्यानां स्थाने स्वतेजसा भानि। संवत्सरस्य सवितुः। आदित्यस्य
 स्थाने स्वतेजसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वः। रश्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुनं
 रीद्वम्॥६८॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१५]

आरोगस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। भ्राजस्य स्थाने स्वतेजसा भानि।
 पटरस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। पतङ्गस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। स्वर्णरस्य
 स्थाने स्वतेजसा भानि। ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। विभासस्य
 स्थाने स्वतेजसा भानि। कश्यपस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वः।
 आपो वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीद्वम्॥६९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१६]

अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशस्त्रीकस्य। प्रभ्राजमानानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। व्यवदातानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। वासुकिवैद्युतानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। रजतानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। परुषाणां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। श्यामानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। कपिलानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। अतिलोहितानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। ऊर्ध्वानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि॥७०॥

अवपतन्तानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। वैद्युतानां रुद्राणां स्थाने स्वतेजसा भानि। प्रभ्राजमानीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। व्यवदातीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। वासुकिवैद्युतीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। रजतानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। परुषाणां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। श्यामानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। कपिलानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। अतिलोहितीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। ऊर्ध्वानां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। अवपतन्तीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। वैद्युतीनां रुद्राणीनां स्थाने स्वतेजसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वः। रूपाणि वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीद्वम्॥७१॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१७]

अथाग्नेरष्टपुरुषस्य। अग्नेः पूर्वदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। जातवेदस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। सहोजसो दक्षिणदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। अजिराप्रभव उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। वैश्वानरस्यापरदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। नर्यापस उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। पङ्क्तिराधस उदग्दिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि।

विसर्पिण उपदिश्यस्य स्थाने स्वतेजसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वः। दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीढम्॥७२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१८]

दक्षिणपूर्वस्यां दिशि विसर्पी नरकः। तस्मान्नः परिपाहि। दक्षिणापरस्यां दिश्यविसर्पी नरकः। तस्मान्नः परिपाहि। उत्तरपूर्वस्यां दिशि विषादी नरकः। तस्मान्नः परिपाहि। उत्तरापरस्यां दिश्यविषादी नरकः। तस्मान्नः परिपाहि। आ यस्मिन्थ्सप्त वासवा इन्द्रियाणि शतक्रतवित्येते॥७३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[१९]

इन्द्रघोषा वो वसुभिः पुरस्तादुपदधताम्। मनोजवसो वः पितृभिर्दक्षिणत उपदधताम्। प्रचेता वो रुद्रैः पश्चादुपदधताम्। विश्वकर्मा व आदित्यैरुत्तरत उपदधताम्। त्वष्टा वो रूपैरुपरिष्ठादुपदधताम्। संज्ञानं वः पश्चादिति। आदित्यः सर्वोऽग्निः पृथिव्याम्। वायुरन्तरिक्षे। सूर्यो दिवि। चन्द्रमा दिक्षु। नक्षत्राणि स्वलोके। एवा ह्येवा। एवा ह्यग्ने। एवा हि वायो। एवा हीन्द्र। एवा हि पूषन्। एवा हि देवाः॥७४॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२०]

आपमापामपः सर्वाः। अस्मादस्मादितोऽमुतः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्वस्करद्धिया। वाय्वश्वा रश्मिपतयः। मरीच्यात्मानो अद्रुहः। देवीर्भुवनसूवरीः। पुत्रवत्वाय मे सुता। महानाग्नीर्महामानाः। महसो महसः स्वः॥७५॥

देवीः पर्जन्यसूवरीः। पुत्रवत्वाय मे सुत। अ॒पाश्र्यु॑ष्णिम॒पा रक्षः॑।
अ॒पाश्र्यु॑ष्णिम॒पा रघ॑म्। अपा॑घ्नमपंचावर्तिम्। अप॑देवीरितो हि॑त। वज्रं दे॒वी-
रजी॑ताश्च। भुव॑नं दे॒वसू॑वरीः। आ॒दि॒त्यान॑दि॒तिं दे॒वीम्। योनि॑नोर्ध्वमुदी॑षत॥७६॥

भ॒द्रं क॑र्णेभिः शृणु॒याम॑ दे॒वाः। भ॒द्रं प॑श्येमाक्षभिर्यज॑त्राः। स्थि॒रैरङ्गै॑स्तुष्टु-
वा॒९स॑स्त॒नूभिः॑। व्य॒शेम॑ दे॒वहि॑तं यदायुः॑। स्व॒स्ति न॒ इन्द्रो॑ वृद्धश्र॑वाः।
स्व॒स्ति नः॑ पू॒षा वि॒श्ववे॑दाः। स्व॒स्ति न॒स्ताक्ष्यो॑ अरि॑ष्टनेमिः। स्व॒स्ति नो॑
बृ॒हस्प॑तिर्दधातु। के॒तवो॑ अरु॑णासश्च। ऋ॒षयो॑ वात॑रश॒नाः। प्र॑ति॒ष्ठा९श॑तधा
हि। स॒माहि॑तासो सह॑स्रधा॒य॑सम्। शि॒वा नः॑ शन्त॑मा भवन्तु। दि॒व्या आप॑
ओष॑धयः। सु॒मृडी॒का सर॑स्वति। मा ते॒ व्योम॑ स॒न्दृशि॑॥७७॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२१]

योऽपां पुष्पं वेद॑। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति। च॒न्द्रमा॒ वा अ॒पां
पुष्प॑म्। पुष्प॑वान् प्र॒जावा॑न् पशु॒मान् भ॑वति। य ए॒वं वेद॑। योऽपामा॒यत॑नं
वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति। अ॒ग्निर्वा॑ अ॒पामा॒यत॑नम्। आ॒यत॑नवान् भवति।
योऽग्नेरा॒यत॑नं वेद॑॥७८॥

आ॒यत॑नवान् भवति। आपो॒ वा अ॒ग्नेरा॒यत॑नम्। आ॒यत॑नवान् भवति। य
ए॒वं वेद॑। योऽपामा॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति। वा॒युर्वा॑ अ॒पामा॒यत॑नम्।
आ॒यत॑नवान् भवति। यो वा॒योरा॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति॥७९॥

आपो॒ वै वा॒योरा॒यत॑नम्। आ॒यत॑नवान् भवति। य ए॒वं वेद॑। योऽपामा॒यत॑नं
वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति। अ॒सौ वै त॑प॒न्न॒पामा॒यत॑नम्। आ॒यत॑नवान् भवति।
योऽमु॑ष्य॒ तप॑त आ॒यत॑नं वेद॑। आ॒यत॑नवान् भवति। आपो॒ वा अ॒मुष्य॒ तप॑त
आ॒यत॑नम्॥८०॥

आयतनवान् भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति। चन्द्रमा वा अपामायतनम्। आयतनवान् भवति। यश्चन्द्रमस आयतनं वेद। आयतनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमस आयतनम्। आयतनवान् भवति॥८१॥

य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति। नक्षत्राणि वा अपामायतनम्। आयतनवान् भवति। यो नक्षत्राणामायतनं वेद। आयतनवान् भवति। आपो वै नक्षत्राणामायतनम्। आयतनवान् भवति। य एवं वेद॥८२॥

योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति। पर्जन्यो वा अपामायतनम्। आयतनवान् भवति। यः पर्जन्यस्याऽऽयतनं वेद। आयतनवान् भवति। आपो वै पर्जन्यस्याऽऽयतनम्। आयतनवान् भवति। य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद॥८३॥

आयतनवान् भवति। संवत्सरो वा अपामायतनम्। आयतनवान् भवति। यः संवत्सरस्याऽऽयतनं वेद। आयतनवान् भवति। आपो वै संवत्सरस्याऽऽयतनम्। आयतनवान् भवति। य एवं वेद। योऽप्सु नावं प्रतिष्ठितां वेद। प्रत्येव तिष्ठति॥८४॥

इमे वै लोका अप्सु प्रतिष्ठिताः। तदेषाभ्यनूक्ता। अपा५ रसमुदय५ सन्। सूर्ये शुक्र५ समाभृतम्। अपा५ रसस्य यो रसः। तं वो गृह्णाम्युत्तममिति। इमे वै लोका अपा५ रसः। तैऽमुष्मिन्नादित्ये समाभृताः। जानुदघ्नीमुत्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरयित्वा गुल्फदघ्नम्॥८५॥

पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्च स५स्तीर्य। तस्मिन्विहायसे। अग्निं प्रणीयोपसमाधाय। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। कस्मात्प्रणीतेऽयमग्निश्चीयते। साप्रणीतेऽयमप्सु ह्ययं चीयते। असौ भुवनेऽप्यनाहिताग्निरेताः। तमभित एता अबीष्टका उपदधाति। अग्निहोत्रे दर्शपूर्णमासयोः। पशुबन्धे चातुर्मास्येषु॥८६॥

अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञक्रतुष्विति। एतद्ध स्म वा आहुः शण्डिलाः। कमग्निं चिनुते। सत्रियमग्निं चिन्वानः। संवत्सरं प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। सावित्रमग्निं चिन्वानः। अमुमादित्यं प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते॥८७॥

नाचिकेतमग्निं चिन्वानः। प्राणान्प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। चातुरहोत्रिय-
मग्निं चिन्वानः। ब्रह्मं प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। वैश्वसृजमग्निं चिन्वानः। शरीरं
प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। उपानुवाक्यमाशुमग्निं चिन्वानः॥८८॥

इमाँल्लोकान्प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। इममारुणकेतुकमग्निं चिन्वान
इति। य एवासौ। इतश्चाऽमुतश्चाऽव्यतीपाती। तमिति। योऽग्नेर्मिथूया वेदं।
मिथुनवान्भवति। आपो वा अग्नेर्मिथूयाः। मिथुनवान्भवति। य एवं वेदं॥८९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२२]

आपो वा इदमासन्त्सलिलमेव। स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत्।
तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्तत। इदं सृजेयमिति। तस्माद्यत्पुरुषो
मनसाऽभिगच्छति। तद्वाचा वंदति। तत्कर्मणा करोति। तदेषाऽभ्यनूक्ता।
कामस्तदग्रे समवर्तताधि। मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्॥९०॥

सतो बन्धुमसंति निरविन्दन्। हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषेति।
उपैनन्तदुपनमति। यत्कामो भवति। य एवं वेदं। स तपोऽतप्यत। स
तपस्तप्त्वा। शरीरमधूनुत। तस्य यन्मांसमासीत्। ततोऽरुणाः केतवो
वातरशना ऋषय उदतिष्ठन्॥९१॥

ये नखाः। ते वैखानसाः। ये वालाः। ते वालखिल्याः। यो रसः। सोऽपाम्।
अन्तरतः कूर्मं भूतं सर्पन्तम्। तमब्रवीत्। मम वैत्वङ्मांसं। समभूत्॥९२॥

नेत्यब्रवीत्। पूर्वमेवाहमिहासमिति। तत्पुरुषस्य पुरुषत्वम्। स
सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। भूत्वोदतिष्ठत्। तमब्रवीत्।
त्वं वै पूर्वः समभूः। त्वमिदं पूर्वः कुरुष्वेति। स इत आदायाऽऽपः॥१३॥

अञ्जलिना पुरस्तादुपादधात्। एवा ह्येवेति। तत आदित्य उदतिष्ठत्। सा
प्राची दिक्। अथारुणः केतुर्दक्षिणत उपादधात्। एवा ह्यग्न इति। ततो वा
अग्निरुदतिष्ठत्। सा दक्षिणा दिक्। अथारुणः केतुः पश्चादुपादधात्। एवा हि
वायो इति॥१४॥

ततो वायुरुदतिष्ठत्। सा प्रतीची दिक्। अथारुणः केतुरुत्तरत उपादधात्।
एवा हीन्द्रेति। ततो वा इन्द्र उदतिष्ठत्। सोदीची दिक्। अथारुणः केतुर्मध्यं
उपादधात्। एवा हि पूषन्निति। ततो वै पूषोदतिष्ठत्। सेयं दिक्॥१५॥

अथारुणः केतुरुपरिष्ठादुपादधात्। एवा हि देवा इति। ततो देवमनुष्याः
पितरः। गन्धर्वाप्सरसश्चोदतिष्ठन्। सोर्ध्वा दिक्। या विप्रुषो विपरापतन्।
ताभ्योऽसुरा रक्षांसि पिशाचाश्चोदतिष्ठन्। तस्मात्ते पराभवन्। विप्रुङ्गो हि
ते समभवन्। तदेषाऽभ्यनूक्ता॥१६॥

आपो ह यद्वहतीर्गर्भमायन्। दक्षं दधाना जनयन्तीः स्वयम्भुम्। तत
इमेध्यसृज्यन्त सर्गाः। अद्ध्यो वा इदं समभूत्। तस्मादिदं सर्वं ब्रह्म
स्वयम्भ्विति। तस्मादिदं सर्वं शिथिलमिवाध्रुवमिवाभवत्। प्रजापतिर्वाव
तत्। आत्मनाऽऽत्मानं विधाय। तदेवानुप्राविशत्। तदेषाऽभ्यनूक्ता॥१७॥

विधाय लोकान् विधाय भूतानि। विधाय सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। प्रजापतिः
प्रथमजा ऋतस्य। आत्मनाऽऽत्मानमभि संविवेशेति। सर्वमेवेदमात्स्वा।
सर्वमवरुद्धा। तदेवानुप्राविशति। य एवं वेद॥१८॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२३]

चतुष्टय्य आपो गृह्णाति। चत्वारि वा अ॒पाः रू॒पाणि॑। मेघो॑
विद्युत्। स्तन॒यितुर्वृष्टिः॑। तान्ये॒वाव॑रुन्धे। आ॒तप॑ति॒ वर्ष्वा॑ गृह्णाति। ताः
पुरस्ता॒दुप॑दधाति। ए॒ता वै ब्र॑ह्मवर्च॒स्या आपः॑। मुख॒त ए॒व ब्र॑ह्मवर्च॒समव॑रुन्धे।
तस्मा॑न्मुख॒तो ब्र॑ह्मवर्च॒सित॑रः॥१९॥

कूप्या॑ गृह्णाति। ता दक्षिण॒त उप॑दधाति। ए॒ता वै ते॑ज॒स्विनी॒रापः॑।
तेज॑ ए॒वास्य॑ दक्षिण॒तो द॑धाति। तस्मा॑द्दक्षिणोऽर्ध॒स्तेज॒स्वित॑रः। स्था॒वरा॑
गृह्णाति। ताः प॒श्चादुप॑दधाति। प्र॒तिष्ठि॑ता॒ वै स्था॑व॒राः। प॒श्चादे॒व प्र॒ति॒तिष्ठ॑ति।
वह॑न्तीर्गृह्णाति॥१००॥

ता उत्तर॒त उप॑दधाति। ओज॑सा॒ वा ए॒ता वह॑न्तीरिवो॒द्गती॑रिव
आकूज॑तीरिव धाव॑न्तीः। ओज॑ ए॒वास्यो॑त्तर॒तो द॑धाति। तस्मा॑दुत्तरोऽर्ध॒
ओज॑स्वित॒रः। स॒म्भार्या॑ गृह्णाति। ता मध्य॒ उप॑दधाति। इ॒यं वै स॑म्भार्याः।
अ॒स्यामे॒व प्र॒ति॒तिष्ठ॑ति। प॒ल्व॒ल्या गृह्णाति॑। ता उ॒परि॑ष्ठादुपाद॑धाति॥१०१॥

अ॒सौ वै प॑ल्व॒याः। अ॒मुष्या॑मे॒व प्र॒ति॒तिष्ठ॑ति। दिक्षू॑प॒दधाति॑। दिक्षु॑
वा आपः॑। अ॒न्नं वा आपः॑। अ॒द्ध्यो वा अ॒न्नं जा॑यते। यदे॒वाद्ध्योऽन्नं॑
जाय॑ते। तदव॑रुन्धे। तं वा ए॒तम॑रु॒णाः के॒तवो॑ वात॑र॒शना॑ ऋष॑योऽचिन्वन्।
तस्मा॑दारुणके॒तुकः॑॥१०२॥

तदे॒षाऽभ्य॑नू॒क्ता। के॒तवो॑ अरु॑णासश्च। ऋष॑यो वात॑र॒शनाः। प्र॒तिष्ठा॑ः
श॒तधा॑ हि। स॒माहि॑तासो स॒हस्र॑धा॒यस॑मि॒तिः। श॒तश॑श्चै॒व स॒हस्र॑शश्च
प्र॒ति॒तिष्ठ॑ति। य ए॒तम॑ग्निं चि॑नुते। य उ॒चैन॑मे॒वं वेद॑॥१०३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२४]

जा॒नुद॒ग्नीमु॒त्तरवे॒दीं खा॒त्वा। अ॒पां पू॒रय॑ति। अ॒पां सं॒र्वत्वा॑य। पु॒ष्कर॒पर्णं॑ रु॒क्मं पु॒रुष॑मित्युप॒दधा॑ति। तपो॒ वै पु॒ष्कर॒पर्णम्। स॒त्यं रु॒क्मः। अ॒मृतं॑ पु॒रुषः॑। ए॒ताव॒द्वा वा॑ऽस्ति। याव॑दे॒तत्। याव॑दे॒वास्ति॥१०४॥

तदव॑रुन्धे। कूर्ममुप॒दधा॑ति। अ॒पामे॒व मे॒धम॑वरुन्धे। अथो॑ स्व॒र्गस्य॑ लो॒कस्य॑ सम॑ष्ठौ। आप॑मापाम॒पः सर्वाः॑। अ॒स्माद॒स्मादि॑तोऽमु॒तः। अ॒ग्निर्वा॒युश्च॑ सू॒र्यश्च॑। स॒ह सं॒श्चस्कर॑र्द्धि॒या इति॑। वा॒य्वश्वा॑ रश्मि॒पत॑यः। लो॒कं पृ॑णच्छि॒द्रं पृ॑ण॥१०५॥

यास्ति॒स्रः प॑रम॒जाः। इन्द्र॒घोषा वो॒ वसु॑भिरे॒वाह्ये॑वेति। पञ्च॒चित॑य उप॒दधा॑ति। पाङ्क्तोऽग्निः। यावा॑ने॒वाग्निः। तं चि॑नुते। लो॒कं पृ॑णया द्वितीया॒मुप॑दधाति। पञ्च॑ पदा॒ वै वि॒राट्। तस्या॑ वा इ॒यं पादः॑। अ॒न्तरि॑क्षं पादः। द्यौः पादः। दि॒शः पादः॑। प॒रोर॑जाः पादः। वि॒राज्ये॑व प्र॒ति॒ति॒ष्ठति॑। य ए॒तम॒ग्निं चि॑नुते। य उ॒चैनमे॒वं वेद॑॥१०६॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२५]

अ॒ग्निं प्र॒णीयो॑पसमा॒धाय॑। तम॒भित॑ ए॒ता अ॒बीष्ट॑का उप॒दधा॑ति। अ॒ग्निहो॑त्रे दर्शपूर्णमा॒सयोः॑। प॒शुब॑न्धे चा॒तुर्मा॒स्येषु॑। अथो॑ आहुः। सर्वेषु॑ यज्ञ॒क्रतु॑ष्विति। अथ॑ ह स्माहारु॒णः स्वा॑य॒म्भुवः॑। सा॒वि॒त्रः सर्वो॑ऽग्निरित्यन॑नुषङ्गं॑ म॒न्याम॑हे। नाना॒ वा ए॒तेषां॑ वी॒र्या॑णि। क॒म॒ग्निं चि॑नुते॥१०७॥

स॒त्रि॒यम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते। सा॒वि॒त्रम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते। ना॒चि॒के॒तम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते। चा॒तुर्हो॒त्रि॒यम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते। वै॒श्वसृ॒जम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते॥१०८॥

उ॒पा॒नु॒वा॒क्य॑मा॒शुम॒ग्निं चि॑न्वा॒नः। क॒म॒ग्निं चि॑नुते। इ॒ममा॑रुणकेतुक॒म॒ग्निं चि॑न्वा॒न इति॑। वृषा॒ वा अ॒ग्निः। वृषा॑णौ स॒स्फाल॑येत्। ह॒न्येता॑स्य य॒ज्ञः। तस्मा॑न्नानुष॒ज्यः। सो॒त्तर॑वेदिषु॒ ऋ॒तुषु॑ चिन्वीत। उ॒त्तर॑वेद्या॒ ह्य॒ग्निश्ची॒यते॑। प्र॒जाका॑मश्चिन्वीत॥१०९॥

प्रा॒जा॒प॒त्यो वा ए॒षोऽग्निः॑। प्रा॒जा॒प॒त्याः प्र॒जाः। प्र॒जावा॑न् भवति। य एवं वेद॑। प॒शुका॑मश्चिन्वीत। सं॒ज्ञानं॑ वा ए॒तत् प॑शूनाम्। यदापः॑। प॒शूनामे॒व सं॒ज्ञाने॑ऽग्निं चि॑नुते। प॒शुमान् भ॑वति। य एवं वेद॑॥११०॥

वृ॒ष्टि॑का॒मश्चिन्वी॑त। आपो॒ वै वृ॒ष्टिः। प॒र्जन्यो॑ व॒र्षुको॑ भवति। य एवं वेद॑। आ॒मया॑वी चिन्वीत। आपो॒ वै भे॑षजम्। भे॒षज॑मे॒वास्मै॑ करोति। सर्व॒मायु॑रेति। अ॒भि॒चर॑श्चिन्वीत। व॒ज्रो वा आपः॑॥१११॥

व॒ज्रमे॒व भ्रात॑र्व्येभ्यः प्रहरति। स्तृ॒णुत॑ ए॒नम्। तेज॑स्कामो॒ यश॑स्कामः। ब्र॒ह्म॒वर्च॑सका॒मः स्व॒र्गका॑मश्चिन्वीत। ए॒ताव॑द्वा वा॑ऽस्ति। याव॑दे॒तत्। याव॑दे॒वास्ति॑। तदव॑रुन्धे। तस्यै॒तद्व॒तम्। व॒र्षति॑ न धा॒वेत्॥११२॥

अ॒मृतं॑ वा आपः॑। अ॒मृत॑स्यान॒न्तरि॑त्यै। ना॒प्सु मूत्र॑पुरीषं कुर्यात्। न नि॒ष्ठीवे॑त्। न वि॒वस॑नः स्नायात्। गु॒ह्यो वा ए॒षोऽग्निः॑। ए॒तस्या॒ग्नेरन॑तिदाहाय। न पु॒ष्कर॑पर्णानि॒ हिर॑ण्यं वा॒ऽधि॒तिष्ठे॑त्। ए॒तस्या॒ग्नेरन॑भ्यारोहाय। न कूर्म॑स्याश्रीयात्। नो॒दक॑स्या॒घात॑कान्येन॒मोद॑कानि॒ भव॑न्ति। अ॒घात॑का॒ आपः॑। य ए॒तम॒ग्निं चि॑नुते। य उ॒चैन॑मे॒वं वेद॑॥११३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२६]

इ॒मानु॑कं भु॒वना॑ सीषधे॒म। इन्द्र॑श्च॒ विश्वे॑ च दे॒वाः। य॒ज्ञं च॑ नस्त॒न्वं च॑ प्र॒जां च॑। आ॒दित्यै॑रिन्द्रः स॒ह सी॑षधातु। आ॒दित्यै॑रिन्द्रः सग॑णो म॒रुद्भिः॑।

अस्माकं भूत्वविता तनूनाम्। आप्लवस्व प्रप्लवस्व। आण्डीभवज मा मुहुः।
सुखादीन्दुःखनिधनाम्। प्रतिमुञ्चस्व स्वां पुरम्॥११४॥

मरीचयः स्वायम्भुवाः। ये शरीराण्यकल्पयन्। ते ते देहं कल्पयन्तु। मा च
ते ख्यास्मं तीरिषत्। उत्तिष्ठत् मा स्वप्त। अग्निमिच्छध्वं भारताः। राज्ञः सोमस्य
तृप्तासः। सूर्येण सयुजोषसः। युवा सुवासाः। अष्टाचक्रा नवद्वारा॥११५॥

देवानां पूरयोध्या। तस्यां हिरण्मयः कोशः। स्वर्गो लोको ज्योतिषा-
ऽऽवृतः। यो वै तां ब्रह्मणो वेद। अमृतेनाऽऽवृतां पुरीम्। तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा
च। आयुः कीर्तिं प्रजां ददुः। विभ्राजमानां हरिणीम्। यशसा सम्प्रीवृताम्।
पुरं हिरण्मयीं ब्रह्मा॥११६॥

विवेशाऽपराजिता। पराडेत्यज्यामयी। पराडेत्यनाशकी। इह चामुत्र
चान्वेति। विद्वान्देवासुरानुभयान्। यत्कुमारी मन्द्रयते। यद्योषिद्यत्पतिव्रता।
अरिष्टं यत्किं च क्रियते। अग्निस्तदनुवेधति। अश्रुतासः श्रुतासश्च॥११७॥

यज्वानो येऽप्ययज्वनः। स्वर्यन्तो नापैक्षन्ते। इन्द्रमग्निं च ये विदुः।
सिकता इव संयन्ति। रश्मिभिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादमुष्माच्च।
ऋषिभिरदात्पृश्निभिः। अपेतु वीतु वि च सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुराणा ये च
नूतनाः। अहोभिरद्विरक्तुभिर्व्यक्तम्॥११८॥

यमो ददात्ववसानमस्मै। नृ मुणन्तु नृपात्वर्यः। अकृष्टा ये च कृष्टजाः।
कुमारीषु कनीनीषु। जारिणीषु च ये हिताः। रेतः पीता आण्डपीताः।
अङ्गारेषु च ये हुताः। उभयान् पुत्रपौत्रकान्। युवेऽहं यमराजंगान्। शतमिन्नु
शरदः॥११९॥

अदो यद्वह्म विलबम्। पितृणां च यमस्य च। वरुणस्याश्विनोरग्नेः। मरुतां

च विहायसाम्। कामप्रयवणं मे अस्तु। स ह्येवास्मिं सुनातनः। इति नाको
ब्रह्मिश्रवो रायो धनम्। पुत्रानापो देवीरिहाऽऽहितः॥१२०॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२७]

विशीर्ष्णीं गृध्रशीर्ष्णीं च। अपेतो निर्ऋतिः हंथः। परिबाधः श्वेतकुक्षम्।
निजङ्घः शबलोदरम्। स तान् वाच्यायया सह। अग्ने नाशय सन्दर्शः।
ईर्ष्यासूये बुभुक्षाम्। मन्युं कृत्यां च दीधिरे। रथेन किं शुकावता। अग्ने
नाशय सन्दर्शः॥१२१॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२८]

पर्जन्याय प्रगायत। दिवस्पुत्राय मीढुषे। स नो यवसमिच्छतु।
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे। हृदो अस्त्वन्तरन्तद्युयोत। मयोभूर्वातो
विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे। सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः। यो गर्भमोषधीनाम्।
गवां कृणोत्यर्वताम्। पर्जन्यः पुरुषीणाम्॥१२२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[२९]

पुनर्माँमैत्विन्द्रियम्। पुनरायुः पुनर्भगः। पुनर्ब्राह्मणमैतु मा। पुनर्द्रविणमैतु
मा। यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्। यदोषधीरप्यसंरद्यदापः। इदं तत्पुनराददे।
दीर्घायुत्वाय वर्चसे। यन्मे रेतः प्रसिच्यते। यन्म आजायते पुनः। तेन माममृतं
कुरु। तेन सुप्रजसं कुरु॥१२३॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[३०]

अ॒द्ध्यस्तिरोऽधाऽजाय॑त। तव॑ वैश्र॒वणः॑ स॒दा। तिरोऽधे॑हि स॒प॒त्नान्नः॑। ये
अपोऽश्र॑न्ति॒ केच॑न। त्वा॒ष्ट्रीं मा॒यां वैश्र॒वणः॑। रथ॑ꣳ सह॒स्रव॑न्धु॒रम्। पु॒रु॒श्च॒क्रꣳ
सह॑स्राश्वम्। आ॒स्थायाया॑हि नो ब॒लिम्। यस्मै॑ भू॒तानि॑ ब॒लिमा॑व॒हन्ति॑। ध॒नं
गावो॑ ह॒स्ति॒ हिर॑ण्य॒मश्वान्॑॥१२४॥

असा॑म सु॒म॒तौ य॒ज्ञिय॑स्य। श्रियं॑ बिभ्र॒तोऽन्न॑मुखीं वि॒राज॑म्। सु॒दर्श॑ने
च॑ क्रौ॒श्चे च॑। मै॒नागे च॑ म॒हागि॑रौ। श॒त॒द्वा॒ट्टार॑गम॒न्ता। सꣳहा॒र्यं न॑गरं॒ तव॑।
इति॑ म॒न्त्राः। क॒ल्पोऽत॑ ऊ॒र्ध्वम्। यदि॑ ब॒लिꣳ ह॑र॑त्। हिर॑ण्य॒नाभ॑यै॒ वितु॑दयै
कौ॒बेरा॑या॒यं ब॑लिः॥१२५॥

सर्व॑भू॒ताधि॑प॒तये॑ नम॒ इति॑। अथ॑ ब॒लिꣳ ह॒त्वोप॑तिष्ठे॒त। क्ष॒त्रं क्ष॒त्रं वैश्र॒वणः॑।
ब्रा॒ह्म॒णां वय॑ꣳ स्मः। नम॑स्ते अस्तु॒ मा मां हिꣳसीः। अ॒स्मात्प्र॑वि॒श्यान्न॑म॒द्धीति॑।
अथ॑ तम॒ग्निमा॑दधी॒त। यस्मि॑न्ने॒तत्कर्म॑ प्र॒युञ्जी॑त। तिरोऽधा॒ भूः। तिरोऽधा॒
भुवः॑॥१२६॥

तिरोऽधाः॑ स्वः। तिरोऽधा॒ भूर्भुवः॑ स्वः। सर्वे॑षां लो॒काना॑माधि॒पत्ये॑ सीदेति॒।
अथ॑ तम॒ग्निमि॑न्धी॒त। यस्मि॑न्ने॒तत्कर्म॑ प्र॒युञ्जी॑त। तिरोऽधा॒ भूः स्वाहा॑। तिरोऽधा॒
भुवः॑ स्वाहा॑। तिरोऽधाः॑ स्वः स्वाहा॑। तिरोऽधा॒ भूर्भुवः॑ स्वः स्वाहा॑। यस्मि॑न्नस्य
का॒ले सर्वा॑ आ॒हुती॑र॒हुता॑ भवे॒युः॥१२७॥

अपि॑ ब्रा॒ह्म॒णमु॑खी॒नाः। तस्मि॑न्न॒हः का॒ले प्र॑युञ्जी॒त। परः॑ सु॒प्तज॑नाद्वे॒पि।
मास्म॑ प्र॒माद्य॑न्त॒माध्या॑पयेत्। सर्वा॑र्थाः सि॒द्ध्यन्ते॑। य ए॒वं वे॒द। क्षु॒ध्यन्नि॑दम॒
जा॒नता॑म्। सर्वा॑र्था न॑ सि॒द्ध्यन्ते॑। यस्ते॑ वि॒घातु॑को भ्रा॒ता। ममा॑न्त॒र्हद॑ये
श्रि॒तः॥१२८॥

तस्मा॑ इ॒मम॑ग्र॒पिण्डं॑ जु॒होमि॑। स मे॑ऽर्था॒न्मा वि॑व॒धीत्। मयि॑ स्वाहा॑।
रा॒जाधि॑रा॒जाय॑ प्र॒सह्य॑सा॒हिने॑। नमो॑ व॒यं वैश्र॒वणा॑य॒ कुर्म॑हे। स मे॑

कामान्कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय।
महाराजाय नमः। केतवो अरुणासश्च। ऋषयो वार्तरशनाः। प्रतिष्ठा ५ शतधा
हि। समाहितासो सहस्रधायसम्। शिवा नः शन्तमा भवन्तु। दिव्या आप
ओषधयः। सुमृडीका सरस्वति। मा ते व्योम सन्दृशि॥१२९॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[३१]

संवत्सरमेतद्व्रतं चरेत्। द्वौ वा मासौ। नियमः समासेन। तस्मिन्नियम-
विशेषाः। त्रिषवणमुदकोपस्पर्शी। चतुर्थकालपानभक्तः स्यात्। अहरहर्वा
भैक्षमश्रीयात्। औदुम्बरीभिः समिद्धिरग्निं परिचरेत्। पुनर्मामैत्विन्द्रियमि-
त्येतानुवाकेन। उद्धृतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वीत॥१३०॥

असञ्चयवान्। अग्नये वायवे सूर्याय। ब्रह्मणे प्रजापतये। चन्द्रमसे
नक्षत्रेभ्यः। ऋतुभ्यः संवत्सराय। वरुणायारुणायेति व्रतहोमाः। प्रवर्ग्यवदादेशः।
अरुणाः काण्डऋषयः। अरण्येऽधीयीरन्। भद्रं कर्णेभिरिति द्वे जपित्वा॥१३१॥

महानाम्नीभिरुदक ५ संऽस्पर्श्य। तमाचार्यो दद्यात्। शिवा नः
शन्तमेत्योषधीरालभते। सुमृडीकैति भूमिम्। एवमपवर्गे। धेनुर्दक्षिणा।
क ५ सं वासश्च क्षौमम्। अन्यद्वा शुक्लम्। यथाशक्ति वा। एव ५ स्वाध्यायधर्मेण।
अरण्येऽधीयीत। तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति॥१३२॥

श्री-छाया-सुवर्चलाम्बा-समेत-श्री-सूर्यनारायण-स्वामिने नमः।

ॐ नमो नारायणाय॥

[३२]

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु-
वा ५ संस्तूयामि। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो

बृहस्पतिर्दधातु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥



॥ नवग्रहसूक्तम् ॥

आ स॒त्येन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो नि॒वेश॑यन्न॒मृतं॑ म॒र्त्यं च॑ । हि॒र॒ण्य॑येन स॒वि॒ता
रथे॒नाऽदे॒वो या॑ति॒ भुव॑ना वि॒पश्य॑न् । अ॒ग्निं द॒त्तं वृ॑णीमहे॒ होत॑रं वि॒श्ववे॑दसम् ।
अ॒स्य य॒ज्ञस्य॑ सु॒क्रतु॑म् ॥ येषा॒मीशे॑ पशु॒पतिः॑ पशूनां चतु॑ष्पदामु॒त च॑ द्वि॒पदाम्॑ ।
निष्क्री॑तोऽयं य॒ज्ञियं॑ भा॒गमे॑तु रा॒यस्पोषा॑ यज॑मानस्य सन्तु ॥

अधिदे॒वता प्र॒त्यधि॑दे॒वता स॒हिता॑य आ॒दि॒त्याय॑ नमः ॥ १ ॥

अ॒ग्निर्मूर्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम् । अ॒पा॒ रेता॑सि जि॒न्वति॑ ।
स्यो॒ना पृ॑थि॒वि भवा॑ऽनृ॒क्षरा॑ नि॒वेश॑नी । यच्छा॑नः शर्म स॒प्रथाः॑ । क्षे॒त्रस्य॑ पति॑ना
व॒यं हि॒ते नै॒व ज॑यामसि । गा॒मश्च॑ पोषयित्वा स नो॑ मृ॒डाती॒दृशे॑ ॥

अधिदे॒वता प्र॒त्यधि॑दे॒वता स॒हिता॑य अ॒ङ्गार॑काय॒ नमः॑ ॥ २ ॥

प्र वः॑ शु॒क्राय॑ भा॒नवे॑ भर॒ध्वं ह॒व्यं म॒तिं चा॒ग्नये॑ सु॒पूत॑म् ॥ यो दै॒व्यानि॑
मा॒नु॒षा ज॒नूँष्य॑न्तर्वि॒श्वानि॑ वि॒द्वना॑ जिगा॑ति ॥ इन्द्रा॑णीमा॒सु ना॒रिषु॑
सु॒प॒त्नीम॒हम॑श्रवम् । न ह्य॑स्या अ॒परं च॒न ज॒रसा॑ मर॑ते पतिः ॥ इन्द्रं॑ वो
वि॒श्वत॑स्प॒रि ह॒वाम॑हे जने॑भ्यः । अ॒स्माक॑मस्तु के॒वलः॑ ॥

अधिदे॒वता प्र॒त्यधि॑दे॒वता स॒हिता॑य शु॒क्राय॑ नमः ॥ ३ ॥

आप्या॑यस्व॒ समे॑तु ते वि॒श्वतः॑ सोम॒ वृष्णि॑यम् । भवा॑ वाज॑स्य सङ्ग॒थे ॥ अ॒प्सु मे॒
सोमो॑ अब्रवीद॒न्तर्वि॒श्वानि॑ भेष॒जा । अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वश॑म्भु॒वमाप॑श्च वि॒श्वभे॑षजीः ।

गौरी मिमाय सलिलानि तक्षती। एकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी
नवपदी बभ्रुवर्षी। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्।

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्ध्व्यस्वाग्ने प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ते सःसृजेथामयं च। पुनः कृण्वस्त्वा
पितरं युवानमन्वातासीत्वयि तन्तुमेतम्॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे
पदम्। समूढमस्यपाः सुरे॥ विष्णो रराटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोः
श्रत्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।
अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहस्पते अतियदर्यो अर्होद्विमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदीदयच्छवसर्तप्रजात
तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते
अपिबः सुतस्य। तव प्रणीती तव शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥
ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्रिया उपमा
अस्य विष्टाः सुतश्च योनिमसंतश्च विवः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥ प्रजापते न
त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः
संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन् हविषा मादयस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शनैश्चराय नमः॥७॥

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः
पृश्निरक्रमीदसनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निर्रतिराबबन्ध
दामं ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदं ते तद्विष्याम्यायुषो न मध्यादथाजीवः पितुमद्वि
प्रमुक्तः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्विरजायथाः॥ ब्रह्मा
देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्। श्येनो गृध्राणां
स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं
चितयन् तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं
चन्द्रचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥

॥ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवताभ्यो नमो नमः॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ प्रार्थना ॥

भानो भास्कर मार्तण्ड चण्डरश्मे दिवाकर।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रियं पुत्रांश्च देहि मे॥

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम्।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायाश्लिष्टतनुं भजे॥

सौरमण्डलमध्यस्थं साम्बं संसारभेषजम्।
नीलग्रीवं विरूपाक्षं नमामि शिवमव्ययम्॥

ध्येयः सदा सवितृमण्डल-मध्यवर्ती
नारायणः सरसि-जासन-सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

शङ्ख-चक्र-गदापाणे द्वारकानिलयाच्युत।
गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम्॥

आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रतिगच्छति॥

श्री-केशवं प्रतिगच्छत्यो नम इति॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

अनेन पूजनेन सपरिवार-भगवान्-सूर्यः प्रीयताम्।

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ आदित्यहृदयम् ॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्॥१॥
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः॥२॥
राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि॥३॥
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम्॥४॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम्॥५॥
रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्॥६॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः॥७॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः॥८॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः॥९॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः॥१०॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान्॥११॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥१२॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः॥१३॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥१४॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥१५॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥१६॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥१७॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।

नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः॥१८॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।

भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥१९॥

तमोग्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।

कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥२०॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।

नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥२१॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।

पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥२२॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।

एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम्॥२३॥

वेदाश्च ऋतवश्चैव ऋतूनां फलमेव च।

यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः॥२४॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।

कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव॥२५॥

पूजयस्वेनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।

एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि॥२६॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि।

एवमुक्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽऽगतम्॥२७॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा।

धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्॥२८॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्।

त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्॥२९॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत्॥३०॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसङ्क्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति॥३१॥

॥इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे आदित्यहृदयं
नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः॥

॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः ॥

उद्यन्नद्य विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः।
हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽऽशु नाशयतु॥१॥

निमिषार्धेनैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे।
क्रममाण योजनानां नमोऽस्तु ते नलिननाथाय॥२॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय।
द्वादशधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय॥३॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषट्कारः।
त्वं विश्वं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च॥४॥

शिवरूपाज्ज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्।
शिखिरूपादैश्वर्यं त्वत्तश्चरोग्यमिच्छामि॥५॥

त्वचि दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽखिलेन्द्रियज-दोषाः।
तान् पूषा हतदोषः किञ्चिद्रोषाग्निना दहतु॥६॥

धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान् ।
बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः॥७॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमखिलम्।
धृतबोधं तं नलिनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे॥८॥

यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः।
भासयति नक्तमखिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः॥९॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलमिवाशेष-रोग-पटलं नः।
काशमिवाधि-निकायं कालपिता रोगयुक्तां हरतात्॥१०॥

वाताश्मरी-गदार्शस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च ।
ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि॥११॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः।
त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदामर्क प्रसीद मम भानो॥१२॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पतितम्।
पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात्॥१३॥

॥इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा॥



॥ शिवरात्रि-पूजा — याम-चतुष्टय-पूजा ॥

आचम्य।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

॥ व्रत-सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{४४} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४५} नक्षत्र ()^{४६} नाम योग () करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां)
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शिवरात्रि-व्रतं करिष्ये।

^{४४}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{४५}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{४६}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत्करिष्येऽहं महाफलम्।
 निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाञ्जगत्पते॥
 चतुर्दश्यां निराहारो भूत्वा शम्भो परेऽहनि।
 भोक्ष्येऽहं भुक्तिमुक्त्यर्थं शरणं मे भवेश्वर॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः१ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
 ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (प्रथम-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{४७} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{४८} नक्षत्र ()^{४९} नाम योग () करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां)
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं प्रथम-यामपूजां करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

^{४७}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{४८}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{४९}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि। आवाहयामि॥१॥

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया
नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म सुमना
असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अ॒र्घ्य॒वोच॑दधि॒वक्ता॑ प्र॒थ॒मो दै॒व्यो भि॒षक्। अ॒ही॒श्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑-न्त्स॒र्वाश्च॑
यातु॒धान्यः॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। ज्ये॒ष्ठाय॑ नमः। म॒धुपर्कं॑ स॒मर्प॑यामि॥६॥

अ॒सौ यस्ता॒म्रो अ॑रु॒ण उ॒त ब॒भ्रुः सु॑म॒ङ्गलः॑। ये चे॒मा रु॒द्रा अ॒भितो॑ दि॒क्षु
श्रि॒ताः स॑हस्र॒शोऽवै॑षा रु॒द्रा इ॒महे॑॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। श्रे॒ष्ठाय॑ नमः। स्ना॒नं
स॒मर्प॑यामि।

रु॒द्रम्। च॒मक॑म्। पु॒रुष॑सू॒क्तम्॥

स्ना॒नान॑न्तर॒म् आ॑च॒मनी॑यं स॒मर्प॑यामि॥७॥

सा॒क्षत॑ज॒लेन॑ त॒र्पणं॑ का॒र्यम्॥

ॐ भ॒वं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑। ॐ श॒र्वं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑। ॐ ई॒शानं॑ दे॒वं त॑र्प॒यामि॑।
ॐ प॒शुप॑तिं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑। ॐ रु॒द्रं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑। ॐ उ॒ग्रं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑।
ॐ भी॑मं दे॒वं त॑र्प॒यामि॑। ॐ म॒हान्तं॑ दे॒वं त॑र्प॒यामि॑॥

ॐ भ॒वस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑। ॐ श॒र्वस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑।
ॐ ई॒शानस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑। ॐ प॒शुप॑तेर्दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑।
ॐ रु॒द्रस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑। ॐ उ॒ग्रस्य॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑। ॐ
भी॑मस्य दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑। ॐ म॒हतो॑ दे॒वस्य॑ पत्नीं त॑र्प॒यामि॑॥

अ॒सौ योऽव॑स॒र्पति॑ नील॒ग्री॒वो वि॒लो॒हितः॑। उ॒तैनं॑ गो॒पा अ॑दृ॒शन्नु॑दृ॒शन्नु॑द॒हार्यः॑।
उ॒तैनं॑ वि॒श्वा भू॑तानि॒ स दृ॒ष्टो मृ॑ड॒याति॑ नः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। रु॒द्राय॑
नमः। वस्त्रो॒त्तरी॑यं स॒मर्प॑यामि॥८॥

नमो॑ अस्तु नील॒ग्री॒वाय॑ स॒हस्रा॑क्षाय॒ मी॒ढुषे॑। अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नोऽहं
तेभ्यो॑ऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं न॒मः शि॒वाय॑। का॒लाय॑ नमः। यज्ञो॒पवी॑ताभरणानि
स॒मर्प॑यामि॥९॥

प्र मु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्त्रि॑यो॒ज्याम्। याश्च॑ ते ह॒स्त इ॒षवः॑ प॒रा ता भ॑गवो

वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्वः सहस्राक्ष शतैषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो
नः सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शशिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः
विरूपाक्षाय नमः
कपर्दिने नमः
नीललोहिताय नमः

शङ्कराय नमः
शूलपाणिने नमः
खट्वाङ्गिने नमः
विष्णुवल्लभाय नमः
शिपिविष्टाय नमः
अम्बिकानाथाय नमः
श्रीकण्ठाय नमः
भक्तवत्सलाय नमः
भवाय नमः

| | | | |
|--------------------------|----|-------------------------|----|
| शर्वाय नमः | | त्रयीमूर्तये नमः | |
| त्रिलोकेशाय नमः | २० | अनीश्वराय नमः | |
| शितिकण्ठाय नमः | | सर्वज्ञाय नमः | |
| शिवाप्रियाय नमः | | परमात्मने नमः | |
| उग्राय नमः | | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| कपालिने नमः | | हविषे नमः | |
| कामारये नमः | | यज्ञमयाय नमः | ५० |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः | | सोमाय नमः | |
| गङ्गाधराय नमः | | पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ललाटाक्षाय नमः | | सदाशिवाय नमः | |
| कालकालाय नमः | | विश्वेश्वराय नमः | |
| कृपानिधये नमः | ३० | वीरभद्राय नमः | |
| भीमाय नमः | | गणनाथाय नमः | |
| परशुहस्ताय नमः | | प्रजापतये नमः | |
| मृगपाणये नमः | | हिरण्यरेतसे नमः | |
| जटाधराय नमः | | दुर्धर्षाय नमः | |
| कैलासवासिने नमः | | गिरीशाय नमः | ६० |
| कवचिने नमः | | गिरिशाय नमः | |
| कठोराय नमः | | अनघाय नमः | |
| त्रिपुरान्तकाय नमः | | भुजङ्गभूषणाय नमः | |
| वृषाङ्काय नमः | | भर्गाय नमः | |
| वृषभारूढाय नमः | ४० | गिरिधन्वने नमः | |
| भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | | गिरिप्रियाय नमः | |
| सामप्रियाय नमः | | कृत्तिवाससे नमः | |
| स्वरमयाय नमः | | पुरारातये नमः | |

| | | | |
|-------------------|----|-------------------|-----|
| भगवते नमः | | अजाय नमः | |
| प्रमथाधिपाय नमः | ७० | पाशविमोचकाय नमः | ९० |
| मृत्युञ्जयाय नमः | | मृडाय नमः | |
| सूक्ष्मतनवे नमः | | पशुपतये नमः | |
| जगद्धापिने नमः | | देवाय नमः | |
| जगद्गुरवे नमः | | महादेवाय नमः | |
| व्योमकेशाय नमः | | अव्ययाय नमः | |
| महासेनजनकाय नमः | | हरये नमः | |
| चारुविक्रमाय नमः | | पूषदन्तभिदे नमः | |
| रुद्राय नमः | | अव्यग्राय नमः | |
| भूतपतये नमः | | दक्षाध्वरहराय नमः | |
| स्थाणवे नमः | ८० | हराय नमः | १०० |
| अहये बुध्याय नमः | | भगनेत्रभिदे नमः | |
| दिगम्बराय नमः | | अव्यक्ताय नमः | |
| अष्टमूर्तये नमः | | सहस्राक्षाय नमः | |
| अनेकात्मने नमः | | सहस्रपदे नमः | |
| सात्त्विकाय नमः | | अपवर्गप्रदाय नमः | |
| शुद्धविग्रहाय नमः | | अनन्ताय नमः | |
| शाश्वताय नमः | | तारकाय नमः | |
| खण्डपरशवे नमः | | परमेश्वराय नमः | |

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाग्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्तै बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय
धृष्णवै। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥

रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ प्रथम-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।

करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

नमः शिवाय शान्ताय सर्वपापहराय च।
शिवरात्रौ मया दत्तं गृहाणार्घ्यं मम प्रभो॥१॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमो यज्ञजगन्नाथ नमस्त्रिभुवनेश्वर।
पूजां गृहाण मे दत्तां महेश प्रथमे पदे॥१॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (द्वितीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{५०} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{५१} नक्षत्र ()^{५२} नाम योग () करण
युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां)
शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं द्वितीय-यामपूजां करिष्ये।

^{५०}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{५१}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{५२}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
 पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
 विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
 नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि। आवाहयामि॥१॥

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया
 नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
 समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
 गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
 माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
 पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना
 असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
 यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमा रुद्रा अभितो दिक्षु
 श्रिताः सहस्रशोऽवैषा हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं

समर्पयामि।

॥ महान्यासः ॥

॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् ॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।

कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥

नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खं गं घं ङं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्।

महापापहरं वन्दे मकाराय नमो नमः॥२॥

अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिः शीयतां रयिः स च तान्नः शचीपतिः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्।

शिवमेकं परं वन्दे शिकाराय नमो नमः॥३॥

ॐ। निधनपतये नमः। निधनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णलिङ्गाय नमः।

नमः। दिव्याय नमः। दिव्यलिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः।
शर्वाय नमः। शर्वलिङ्गाय नमः। शिवाय नमः। शिवलिङ्गाय नमः। ज्वलाय
नमः। ज्वललिङ्गाय नमः। आत्माय नमः। आत्मलिङ्गाय नमः। परमाय नमः।
परमलिङ्गाय नमः। एतत्सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं
पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय
नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय
नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्।
यलिङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥

प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व॥ नमो रुद्राय
विष्णवे मृत्युर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय
नमः।



॥ पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् ॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

संवर्ताग्नि-तटित्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम्
गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्।
अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम्
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तिपङ्केक्षणम्
कर्णोद्भासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्।
सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम्
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चार्थर्वनादोदयम्॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्धवाय नमः॥
प्रालेयाचलमिन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम्
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् ।
विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम्
वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वा॒म॒दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒
नमः॑ कल॑विकर॒णाय॒ नमो॑ बल॑विकर॒णाय॒ नमो॑ बला॑य॒ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॒
नमः॑ सर्व॑भूतदम॒नाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑॥

गौरं कुङ्कुमपङ्कितं सुतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम्
भ्रूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम्
वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्त्रं हरस्योत्तरम्॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्या॒नामी॒श्वरः॑ सर्व॑भूता॒नां ब्र॒ह्माधि॑पतिर्ब्रह्म॒णोऽधि॑पतिर्ब्रह्मा॑ शि॒वो
मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम्॥

व्यक्ताव्यक्तरूपितं च परमं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकम्
तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम्
वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः ॥

या ते॑ रु॒द्र शि॒वा त॒नूर॑घो॒राऽपा॑पकाशिनी।
तया॑ नस्त॒नुवा॒ शन्त॑मया॒ गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि॥
शि॒खायै॑ नमः॥ (TUFT)

अ॒स्मिन् म॑ह॒त्यर्ण॑वे॒ऽन्तरि॑क्षे भ॒वा अधि॑।
तेषा॑ सहस्रयो॒जने॒ऽवध॑न्वा॒नि तन्म॑सि॥

शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्रस्वः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्योमसद्भा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्॥
भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥
नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्नुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च
सरस्याय च नमो नाद्याय च वैशन्ताय च।
कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥
नासिकायै^{५३} नमः॥ (NOSE)

अवतत्य धनुस्त्वहं सहस्राक्ष शतैषुधे॥
निशीर्य शल्यानां मुखं शिवो नः सुमनां भव।
मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

^{५३} नासिकाभ्यां

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नील॑ग्री॒वाः शि॒ति॒कण्ठा॒ दिव॑ꣳ रु॒द्रा उप॑श्रिताः।
तेषांꣳ सह॑स्रयो॒जनेऽव॑धन्वा॒नि तन्म॑सि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नम॑स्ते अ॒स्त्वायु॑धा॒याना॑त॒ताय धृ॑ष्णवै।
उ॒भाभ्या॑मु॒त ते नमो॑ बा॒हुभ्या॑ तव॒ धन्व॑ने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते॑ हे॒तिर्मी॑दुष्ट॒म ह॑स्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑।
तया॒ऽस्मान् वि॒श्वत॑स्त्वम॒यक्ष्म॑या॒ परि॑बुज॥
उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परि॑ णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु॒ परि॑ त्वे॒षस्य॑ दुर्म॒तिर॑घा॒योः।
अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय॒ मृड॑य॥
मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये ती॒र्थानि॑ प्र॒चर॑न्ति॒ सृका॑व॒न्तो नि॑षङ्गि॒णः।
तेषांꣳ सह॑स्रयो॒जनेऽव॑धन्वा॒नि तन्म॑सि॥
हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

स॒द्योजा॑तं प्र॒पद्या॑मि॒ स॒द्योजा॑ताय॒ वै नमो॑ नमः॑।
भ॒वे भ॑वे॒ नाति॑ भवे॒ भव॑स्व॒ माम्। भ॒वोद्ध॑वाय॒ नमः॑॥
अङ्गुष्ठाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वा॒मदे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒ नमः॑
क॒ल॒विक॑र॒णाय॒ नमो॑ ब॒ल॒विक॑र॒णाय॒ नमो॑ ब॒लाय॒ नमो॑ ब॒ल॒प्रम॑थ॒नाय॒ नमः॑
सर्व॑भू॒तद॑म॒नाय॒ नमो॑ म॒नोन्म॑नाय॒ नमः॑॥

तर्जनीभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अ॒घोरे॑भ्योऽथ॒ घोरे॑भ्यो॒ घो॒र॒घो॒रं॑तरेभ्यः।

सर्वे॑भ्यः सर्व॑शर्वे॑भ्यो॒ नम॑स्ते अस्तु रु॒द्ररू॑पेभ्यः॥

मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पु॑रुषाय वि॒द्महे॑ म॒हादे॒वाय॑ धीमहि।

तन्नो॑ रु॒द्रः प्र॑चो॒दया॑त्॥

अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ई॒शानः॑ सर्व॑विद्याना॒मीश्वरः॑ सर्व॑भू॒तानां॑ ब्र॒ह्माधि॑पतिर्ब्र॒ह्मणो॑ऽधि॑पतिर्ब्र॒ह्मा शि॒वो मे॑ अस्तु सदाशि॒वोम्॥

कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो॑ हिरण्यबा॒हवे॑ हिरण्यवर्णाय॑ हिरण्यरूपाय॑ हिरण्यपतये॑ऽम्बिकापतय॑ उमापतये॑ पशुपतये॑ नमो॑ नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND BACK)

नमो॑ वः कि॒रि॒केभ्यो॑ दे॒वाना॑ ५ हृद॑येभ्यः॥

हृदयाय नमः॥ (HEART)

नमो॑ गु॒णेभ्यो॑ गु॒णप॑तिभ्यश्च वो॒ नमः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नम॑स्तक्ष॑भ्यो रथका॒रेभ्य॑श्च वो॒ नमः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो॑ हिर॑ण्यबा॒हवे॑ सेना॒न्ये दि॒शां च॒ पत॑ये॒ नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं॑ धनुः॑ कप॒र्दिनो॑ वि॒शल्यो॑ बा॒णवा॑ ५ उ॒त।

अ॒नै॒शन्न॑स्ये॒षं व आ॒भुर॑स्य नि॒षङ्ग॑थिः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकं आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
नाभ्यै नमः॥ (NAVEL)

मीढुष्टम् शिवतम शिवो नः सुमनां भव।
परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वसान् आ चरं पिनाकं बिभ्रदा गंहि॥
कट्यै नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
गुह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अत्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान्।
तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥
अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स शिरा जातवेदा अक्षरं परमं पदम्।
वेदानां शिरसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥
अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥
ऊरुभ्यां नमः॥ (THIGHS)

एष तै रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेन परो मूर्जवतोऽतीह्यवततधन्वा
पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥
जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स॒ꣳसृष्टिजि॒त्सोम॒पा बा॑हु॒श॒ध्यूर्ध्वध॑न्वा॒ प्रति॑हि॒ताभि॒रस्ता॑।
 बृह॑स्पते॒ परि॑दीया॒ रथे॑न र॒क्षोहा॑ऽमित्रा॑ꣳ अ॒प॒बाध॑मानः॥
 जङ्घा॑भ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्व॑ भूतं भुव॑नं चि॒त्रं ब॑हु॒धा जा॒तं जाय॑मानं च॒ यत्।
 सर्वो॑ ह्येष रु॒द्रस्तस्मै॑ रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु॥
 गुल्फा॑भ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये प॒थां प॑थि॒रक्षय॑ ऐ॒लवृ॑दा य॒व्युधः॑।
 तेषा॑ꣳ स॒हस्र॑योज॒नेऽव॑ध॒न्वानि॑ तन्मसि॥
 पादा॑भ्यां नमः॥ (FEET)

अध्य॑वोचदधि॒वक्ता प्र॑थ॒मो दैव्यो॑ भि॒षक्।
 अही॑ꣳश्च॒ सर्वा॑ञ्ज॒म्भय॑न्त्सर्वा॑श्च यातु॒धान्यः॑॥
 कवचा॑य हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING SHOULDERS)
 नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमः॑ श्रुताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च॥
 उप॑कवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमो॑ अस्तु नील॑ग्रीवाय स॒हस्रा॑क्षाय॑ मी॒दुषे॑।
 अथो॒ ये अ॑स्य॒ सत्वा॑नो॒ऽहं तेभ्यो॑ऽकरं॒ नमः॑॥
 नेत्र॑त्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERS ACROSS THE THREE EYES)

प्र मु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॑भयो॒रार्णियो॑र्ज्याम्।
 याश्च॑ ते ह॒स्त॒ इष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो वप॥
 अस्त्रा॑य फट्॥ (SLAP INDEX AND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य ए॒ताव॑न्तश्च॒ भूया॑ꣳसश्च॒ दिशो॑ रु॒द्रा वि॑तस्थिरे।
 तेषा॑ꣳ स॒हस्र॑योज॒नेऽव॑ध॒न्वानि॑ तन्मसि॥

इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND SELF)



॥ मूर्धादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः ॥

ॐ मूर्ध्ने नमः। नं नासिकाय^{५४} नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः।
गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रूं वामहस्ताय
नमः। द्रां नाभ्यै नमः। यं पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्धान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः ॥

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नमः॥
पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः
कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः
सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥
ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
मुखाय नमः॥

^{५४}नासिकाभ्यां

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
 मे अस्तु सदाशिवोम्॥
 हंस हंस मूर्ध्ने नमः॥



॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री-हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री
 छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥
 परमहंस-प्रसाद-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसैं
 अनामिकाभ्यां नमः। हंसौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां
 नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखायै वषट्। हंसैं
 कवचाय हुम्। हंसौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम्
 इति दिग्बन्धः॥

॥ ध्यानम् ॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्।
 पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हंसु हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि।

तन्नो हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः।
 एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥



॥ दिक् सम्पुटन्यासः ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ॐ] लं। त्रा॒तार॒मिन्द्र॑मवि॒तार॒मिन्द्र॑ः॒ हवे॑हवे सु॒हवः॑ शूर॒मिन्द्र॑म्।

हुवे नु श॒क्रं पु॒रुहू॑तमिन्द्र॑ः॒ स्व॒स्ति नो॑ म॒घवा॑ धा॒त्विन्द्रः॑॥

[ॐ] लं भूर्भुवः सुवः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥]

॥ १ ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[नं] रं। त्वन्नो॑ अ॒ग्ने वरु॑णस्य वि॒द्वान् दे॒वस्य॑ हेडोऽव॑ यासिसी॒ष्टाः।

यजि॑ष्ठो वह्नि॑तमः शोशु॑चानो॒ विश्वा॒ द्वेषा॑सि प्रमु॑मु॒गध्य॑स्मत्॥

[नं] रं भूर्भुवः सुवः। अ॒ग्नये॑ शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अ॒ग्नये॑ नमः। अ॒ग्निः सु॒प्रीतो॑ वरदो भवतु॥ [अ॒ग्निः संरक्षतु॥]

॥ २ ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मो] हं। सु॒गं नः॒ पन्था॑मभयं कृणोतु। यस्मि॒न्नक्ष॑त्रे य॒म ए॒ति रा॒जा॑।

यस्मि॒न्नेन॑मभ्यर्षि॒ञ्चन्त॑ दे॒वाः। तद॑स्य चि॒त्रं ह॒विषा॑ यजाम॥

[मो] हं भूर्भुवः सुवः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥]

॥ ३ ॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[भं] षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्करस्यान्वैषि।

अन्यमस्मदिच्छ सा तं इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥

[भं] षं भूर्भुवः सुवः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥] ॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशः स मा न आयुः प्रमोषीः॥

[गं] वं भूर्भुवः सुवः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥] ॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[वं] यं। आ नो नियुद्धिः श्रुतिर्नीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायो अस्मिन् हविर्षि मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

[वं] यं भूर्भुवः सुवः। वायवे साङ्कुशध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने^{५५} यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥] ॥६॥

^{५५}नासिकयोः स्थाने

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[ते] सं। वयं सोम व्रते तव। मनस्तनूषु बिभ्रतः।

प्रजावन्तो अशीमहि॥

[ते] सं भूर्भुवः सुवः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये
अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय
उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[सोमः संरक्षतु॥]

॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिम्। धियं जिन्वमवंसे हूमहे
वयम्।

पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥

[रुं] शं भूर्भुवः सुवः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय
साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय
नमः।

ईशानदिग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[ईशानः संरक्षतु॥]

॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरंहूतो सजोषाः।

यः शंसते स्तुवते धारिं पञ्च इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥

[द्रां] खं भूर्भुवः सुवः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय
सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्ध्वदिग्भागे मूर्ध्निस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा
संरक्षतु॥]

॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[यं] ह्रीं। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी।

यच्छानः शर्म सप्रथाः॥

[यं] ह्रीं भूर्भुवः सुवः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने ह्रीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥

[विष्णुः संरक्षतु॥]

॥१०॥



॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् ॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ अं। विभूरसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ अं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ आं। वह्निरसि हव्यवाहनो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ आं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ इं। श्वात्रोऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ इं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मूर्ध्निस्थाने रुद्राय नमः॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च

च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ईं। तुथोऽसि विश्ववेदा रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ ईं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ उं। उशिगंसि कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ उं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नेत्रयोः^{५६} स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऊं। अङ्घारिरसि बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ ऊं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऋं। अवस्युरसि दुवस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ ऋं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ॠं। शुन्ध्यूरसि मार्जालीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिंसीः॥ ॠं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लं। सम्राडसि कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ लं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥१॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ लृं। परिषद्योऽसि पवंमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ लृं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ एं। प्रतक्त्रोऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ एं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ऐं। असम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ ऐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ ॐं। ऋतधामाऽसि सुवर्ज्योती रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ ॐं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ औं। ब्रह्मज्योतिरसि सुवर्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां
हिंसीः॥ औं [ॐ] भूर्भुवः सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ अं। अ॒जोऽस्येकपा॒द्रौद्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्रे पि॒पृहि मा॒ मा मां हि॑सीः॥
अं [ॐ] भूर्भुवः सुव॒रोम्। जङ्घा॒स्थाने रु॒द्राय नमः॥१५॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। नमः शम्भवे च मयोभवे च नमः शङ्कराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

ॐ अः। अ॒हि॒रसि बु॒ध्रियो॒ रौद्रे॒णानी॑केन पा॒हि मा॑ऽग्रे पि॒पृहि मा॒ मा मां हि॑सीः॥
अः [ॐ] भूर्भुवः सुव॒रोम्। पा॒दयोः स्था॒ने रु॒द्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति।
ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शाकिनी-डाकिनी-सर्प-श्वापद-
वृश्चिक-तस्कराद्युपद्रवाद्युपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु।
यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः ॥

मनो॒ ज्योति॑र्जुषता॒माज्यं॑ विच्छि॒न्नं य॒ज्ञं॑ स॒मिमं॑ द॒धातु॑।
या इ॒ष्टा उ॒षसो॑ नि॒म्रुचंश्च॒ ताः स॒न्द॒धामि॑ ह॒विषा॑ घृ॒तेन॑॥ गुह्याय नमः॥१॥

अ॒बो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒ प्रति॑ धे॒नुमि॑वाऽऽय॒तीमु॒षास॑म्।
य॒ह्ना इ॒व प्र॒व॒यामु॒ज्जिहा॑नाः प्रभा॒नवः॑ सि॒स्रते॒ नाक॑मच्छ॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अ॒ग्निर्मूर्धा॑ दि॒वः क॒कुत्प॑तिः पृथि॒व्या अ॒यम्।
अ॒पां॑ रेता॑सि जि॒न्वति॑॥ हृ॒दया॑य नमः॥३॥

मूर्धा॑नं दि॒वो अ॒रतिं॑ पृथि॒व्या वै॑श्वा॒न॒र॒मृता॑य जा॒तम॒ग्निम्।
क॒विं॑ स॒म्राज॑मति॒थिं॑ जना॑नामा॒सन्ना पात्रं॑ जनयन्त दे॒वाः॥ कण्ठाय

नमः॥ ४॥

मर्माणि ते वर्मभिक्षादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतैर्नाभिवस्ताम्।
 उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनु मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥ ५॥
 जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि।
 शं प्रजाभ्यो यजमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं ददद्भ्याववृथ्स्व॥ शिरसे
 नमः॥ ६॥



॥ आत्मरक्षा ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मात्मन्वदंसृजत। तदकामयत। समात्मना पद्येयेति।
 आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै दशमं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स दशहूतोऽभवत्।
 दशहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं दशहूतं सन्तम्। दशहोतेत्याचक्षते पुरोक्षेण।
 पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै सप्तमं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स सप्तहूतोऽभवत्।
 सप्तहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं सप्तहूतं सन्तम्। सप्तहोतेत्याचक्षते
 पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै षष्ठं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स षड्हूतोऽभवत्।
 षड्हूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं षड्हूतं सन्तम्। षड्होतेत्याचक्षते पुरोक्षेण।
 पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै पञ्चमं हूतः प्रत्यंशृणोत्। स पञ्चहूतोऽभवत्।
 पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तम्। पञ्चहोतेत्याचक्षते
 पुरोक्षेण। पुरोक्षप्रिया इव हि देवाः॥

आत्मन्नात्मन्नित्यामन्नयत्। तस्मै चतुर्थः हूतः प्रत्यशृणोत्। स चतुरहूतोऽभवत्।
 चतुरहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं चतुरहूतं सन्तम्। चतुर्होतेत्याचक्षते
 परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः॥
 तमब्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठः हूतः प्रत्यश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार इति।
 तस्मान्नु हैनाश्चतुरहोतार इत्याचक्षते। तस्माच्छुश्रूषुः पुत्राणां हृद्यतमः।
 नेदिष्ठो हृद्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद।
 आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
 येन यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति।
 यत्सम्मितामनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२॥

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
 यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
 यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥४॥

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
 हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥५॥

यस्मिनृचः साम यजूंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविंवाराः।
 यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥६॥

यदत्र षष्ठं त्रिशतं सुवीरं यज्ञस्य गुह्यं नवनावमाय्यम्।
दशं पञ्च त्रिंशतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥७॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥८॥

येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः।
तदेवाग्निस्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥९॥

येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च।
येनेदं जगद्घ्यातं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१०॥

ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः।
ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चरन्तं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्।
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१२॥

एकां च दश शतं च सहस्रं चायुतं च
नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे
मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पञ्च पञ्चादश शतं सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च।
ते अग्निचित्येष्टकास्तं शरीरं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१४॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्।
स्थावरं जङ्गमं द्यौराकाशं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परा॑त्पर॑तरं॒ चैव॒ यत्परा॑च्चैव॒ यत्पर॑म्।
यत्परा॑त्पर॑तो ज्ञेयं॒ तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥१७॥

परा॑त्पर॑तरो ब्रह्मा॒ तत्परा॑त्पर॑तो ह॑रिः।
तत्परा॑त्पर॑तोऽधी॑शस्तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥१८॥

या वे॑दादिषु॑ गाय॑त्री सर्व॑व्यापी॒ महेश्व॑री।
ऋग्यजुः॑ सामा॑थर्वैश्च॒ तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै दे॒वं महा॑दे॒वं प्र॑णव॑ पर॒मेश्व॑रम्।
यः सर्वे॑ सर्व॒वेदैश्च॒ तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२०॥

प्रय॑तः प्रण॑वोङ्कारं॒ प्रण॑वं पु॒रुषो॑त्तमम्।
ओङ्का॑रं प्रण॑वात्मा॒नं तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२१॥

योऽसौ॑ सर्वेषु॑ वे॒देषु॒ प॒ठ्यते॑ ह्यज॒ इश्व॑रः।
अ॒कायो॑ निर्गु॑णो ह्या॒त्मा तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२२॥

गोभि॑र्जुष्टं॒ धने॑न॒ ह्यायु॑षा च॒ बले॑न च।
प्र॒जया॑ प॒शुभिः॑ पु॒ष्करा॑क्षं तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैला॑सशिख॑रे रम्ये॒ शङ्कर॑स्य शिवा॑लये।
दे॒वता॑स्तत्र॒ मोद॑न्ते॒ तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२४॥

वि॒श्वत॑श्चक्षुरु॒त वि॒श्वतो॑मुखो वि॒श्वतो॑हस्त उ॒त वि॒श्वत॑स्पात्।
सं बा॒हुभ्या॑ न॒मति॑ सम्प॒तत्रै॒र्द्यावा॑पृथि॒वी ज॒नय॑न्दे॒व एक॑स्तन्मे॒ मनः॑
शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥२५॥

त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्।

उ॒र्वा॒रु॒कमि॑व॒ बन्ध॑ना॒न्मृत्यो॑र्मु॒क्षीय॒ माऽमृ॑ता॒त्तन्मे॒ मनः॑
शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ २६॥

च॒तु॒रो॑ वे॒दान॑धी॒यीत॒ सर्व॑शास्त्रमयं वि॒दुः।
इति॑हा॒सपु॑राणा॒नां तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ २७॥

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ अ॒र्भकं॑ मा न॒ उक्ष॑न्तमु॒त मा न॑
उक्षि॑तम्।

मा नो॑ व॒धीः पि॒तरं॑ मो॒त मा॒तरं॑ प्रि॒या मा
न॑स्त॒नुवो॑ रु॒द्र री॒रिष॑स्तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ २८॥

मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ आयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॑ मा नो॒
अश्वेषु॑ री॒रिषः॑।

वी॒रा॒न्मा नो॑ रु॒द्र भा॒मितो॑ऽव॒धीर॑ह॒विष्म॑न्तो॒ नम॑सा वि॒धेम॒ ते तन्मे॒ मनः॑
शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ २९॥

ऋ॒त॑ स॒त्यं प॑रं ब्र॒ह्म पु॒रुषं॑ कृष्ण॒पिङ्ग॑लम्।
ऊ॒र्ध्वरे॑तं वि॒रूपा॑क्षं वि॒श्वरू॑पाय॒ वै नमो॑
नम॑स्तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ ३०॥

क॒द्रु॒द्राय॑ प्र॒चेत॑से मी॒दुष्ट॑माय॒ तव्य॑से।
वो॒ चेम् श॑न्त॒म॑ हृ॒दे।

सर्वो॑ ह्येष रु॒द्रस्तस्मै॑ रु॒द्राय॑ नमो॑ अस्तु॒ तन्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ ३१॥

ब्रह्म॑ज॒ज्ञानं॑ प्रथ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि॒सीम॑तः सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः।
सबु॑ध्रि॒या उप॑मा अ॒स्य वि॒ष्टाः स॒तश्च॒ योनि॑मस॒तश्च॒
वि॒वस्त॑न्मे॒ मनः॑ शिव॑सङ्कल्पमस्तु॥ ३२॥

यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हि॒त्वैक॑ इ॒द्राजा॒ जग॑तो ब॒भूव॑।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३३॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय
हविषा विधेम तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३५॥

गन्धद्वारां दुराधरूपां नित्यपुष्टां करिषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां
तामिहोपह्वये श्रियं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३६॥
य इदं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः।
ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥
हृदयाय नमः॥



॥ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो
वृत्वा। अत्यतिष्ठद्वशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेदं सर्वम्। यद्धृतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नैनातिरोहति॥ एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायांश्च
पूरुषः।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः।

पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्माक्रामत्। साशनानशने अभि॥
तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत।
पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः
शरद्धविः॥ सप्तास्याऽऽसन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं
तन्वानाः। अबेधन्पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्माद् यज्ञात्सर्वहुतः। सम्भृतं
पृषदाज्यम्। पशून्स्तांश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये॥ तस्माद्
यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्।

यजुस्तस्मादजायत॥ तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादतः। गावो
ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यदधुः। कतिधा
व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥ ब्राह्मणोऽस्य
मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥ चन्द्रमा मनसो जातः।
चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरजायत॥ नाभ्यां
आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा
लोका अकल्पयन्॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि
विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार।
शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृत इह भवति। नान्यः पन्था
अयनाय विद्यते॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानं सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥

शिरसे स्वाहा॥



॥ उत्तरनारायणम् ॥

अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा
विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था
विद्यतेयं ऽनाय॥ प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।
तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः॥ यो देवेभ्य
आतपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वी यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥
रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य
देवा असन् वशै॥ ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्।
अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥
शिखायै वषट्॥



॥ अप्रतिरथम् ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आशुः शिशानो वृषभो न युध्मो घनाघ्नः क्षोभणश्चरषणीनाम्। सङ्क्रन्दनो-
ऽनिमिष एकवीरः शतं सेनां अजयत् साकमिन्द्रः। सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण
जिष्णुना युत्कारेण दुश्श्ववनेन धृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत् तत्सहध्वं युधो नर
इषुहस्तेन वृष्णा। स इषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्वशी सः स्रष्टा स युध इन्द्रो
गणेन। सः सृष्टजिह्वसोमपा बाहुशध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।

बृहस्पते॒ परि॑ दीया॒ रथे॑न रक्षो॒हाऽमित्रा॑ꣳ अप॒बाध॑मानः। प्र॒भ॒ञ्जन्त्सेनाः॑ प्रमृ॒णो
यु॒धा जय॑न्त॒स्माक॑मे॒ध्यवि॑ता रथो॒नाम्। गो॒त्रभि॑दं गो॒विदं॑ वज्र॒बाहुं॑ जय॑न्त॒मज्मं॑
प्रमृ॒णन्त॒मोज॑सा। इ॒मꣳ सं॑जाता॒ अनु॑ वी॒रय॑ध्व॒मिन्द्रꣳ स॒खायोऽनु॑ सꣳ
र॑भध्वम्। ब॒ल॒वि॒ज्ञायः॑ स्थवि॑रः प्रवी॑रः स॒ह॒स्वान् वा॒जी स॒ह॒मान॑ उ॒ग्रः।
अ॒भि॒वी॒रो अ॒भिस॑त्त्वा स॒हो॒जा जै॒त्रमि॑न्द्र रथ॒मा तिष्ठ॑ गो॒वित्। अ॒भि गो॒त्राणि॑
स॒ह॒सा गा॒र्हमा॑नोऽदा॒यो वी॒रः श॒तम॑न्युरिन्द्रः॑।

दु॒श्च॒य॒वनः॑ पृ॒तना॒षाड॑यु॒ध्योऽस्माक॑ꣳ सेना॑ अव॒तु प्र॑ यु॒थ्सु। इन्द्र॑ आसां ने॒ता
बृह॑स्पति॒र्दक्षि॑णा य॒ज्ञः पु॒र ए॒तु सोमः॑। दे॒व॒से॒नाना॑म॒भिभ॑ञ्जती॒नां जय॑न्ती॒नां
म॒रुतो॑ य॒न्त्व॒ग्रे। इन्द्र॑स्य॒ वृष्णो॑ वरु॒णस्य॒ राज्ञ॑ आदि॒त्याना॑ म॒रुता॑ꣳ
शर्ध॑ उ॒ग्रम्। म॒हाम॑नसां भु॒वन॑च्य॒वानां॑ घोषो॑ दे॒वानां॑ जय॑ता॒मुद॑स्थात्।
अ॒स्माक॑मिन्द्रः॑ स॒मृते॑षु ध्व॒जेष्व॒स्माकं॑ या इष॑व॒स्ता ज॑यन्तु।

अ॒स्माकं॑ वी॒रा उत्त॑रे भव॒न्त्व॒स्मानु॑ दे॒वा अव॑ता॒ हवै॑षु। उद्ध॑र्षय
म॒घव॑न्नायु॒धान्यु॑त् स॒त्त्वेना॑ मा॒मका॑नां॒ महा॑ꣳसि। उद्ध॑त्रहन् वा॒जिनां॑
वा॒जिना॑न्यु॒द्रथानां॑ जय॑तामे॒तु घोषः॑। उ॒प॒ प्रे॒त॒ जय॑ता नरः स्थि॒रा वः॑
सन्तु॑ बा॒हवः॑। इन्द्रो॑ वः शर्म॑ यच्छ॒त्त्वना॑धृ॒ष्या यथा॑ऽस॒था। अव॑सृष्टा॒ परा॑ प॒त॒
शर॑व्ये ब्र॒ह्मसꣳशि॑ता।

गच्छा॑मित्रान् प्रवि॑श मै॒षां कं च॒नोच्छि॑षः। म॒र्माणि॑ ते॒ वर्म॑भिश्छादयामि
सोम॑स्त्वा॒ राजा॑ऽमृते॒नाभि॑वे॒स्ताम्। उ॒रोर्व॑री॒यो वरि॑वस्ते अस्तु॒ जय॑न्तं॒ त्वाम॑नु॒
मद॑न्तु दे॒वाः। यत्र॑ बा॒णाः स॒म्पत॑न्ति कुमा॒रा वि॑शि॒खा इ॒वा। इन्द्रो॑ न॒स्तत्र॑
वृ॒त्रहा॑ वि॒श्वाहा॑ शर्म॑ यच्छ॒तु॥ क॒वचा॑य हुम्॥



॥ प्रतिपूरुषम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेककपाला॒न्निर्व॑पत्ये॒कमति॑रिक्तं॒ याव॑न्तो गृ॒ह्याः स्म॑स्तेभ्यः॒ कर्म॑करं
 पशूना॑ः शर्मा॑सि शर्म॒ यज॑मानस्य॒ शर्म॑ मे य॒च्छैकं॑ ए॒व रु॒द्रो न॑ द्वितीयाय
 तस्थ आ॒खुस्ते॑ रु॒द्र प॒शुस्तं॑ जु॒षस्वैष॑ ते॒ रुद्र॑ भा॒गः स॒ह स्व॑स्राऽम्बिकया॒
 तं जु॑षस्व भेष॒जं गवे॑ऽश्वाय॒ पुरु॑षाय भेष॒जमथो॑ अ॒स्मभ्य॑ भेष॒जः सु॑भेष॒जं
 यथा॑ऽस॒ति। सु॒गं मे॒षाय॑ मे॒ष्या॑ अवा॒म्ब रु॒द्रम॑दिम॒ह्यव॑ दे॒वं त्र्य॑म्बकम्।
 यथा॑ नः॒ श्रेय॑सः॒ कर॑द्यथा॒ नो व॑स्यसः॒ कर॑द्यथा॒ नः प॑शुम॒तः कर॑द्यथा॒
 नो व॑यसाययात्। त्र्य॑म्बकं यजामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्। उ॒र्वारु॑कमि॒व
 ब॑न्ध॒नान्मृ॒त्योर्मु॑क्षीय॒ माऽमृ॑तात्॥ ए॒ष ते॑ रु॒द्रभा॑गस्तं जु॒षस्व॑ तेना॒वसे॑न॒ परो॑
 मू॒जव॑तोऽती॒ह्यव॑ततधन्वा॒ पिना॑कहस्तः॒ कृत्ति॑वासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निर्वन्दयते। एकमति-
रिक्तम्। जनिष्यमाणा एव प्रजा रुद्रान्निर्वन्दयते। एकंकपाला भवन्ति।
एकधैव रुद्रं निर्वन्दयते। नाभिघारयति। यदभिघारयैत्। अन्तरवचारिणः
रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेन यन्ति। तद्धि रुद्रस्य भागधेयम्। इमां दिशं
यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायामेव दिशि रुद्रं निर्वन्दयते। रुद्रो
वा अपशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत। असौ तं पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्।
यमेव द्वेष्टि। तमस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते पशुरिति
ब्रूयात्। न ग्राम्यान् पशून् हिनस्ति। नारण्यान्। चतुष्पथे जुहोति। एष
वा अग्नीनां पङ्क्तिशो नाम। अग्निवत्येव जुहोति। मध्यमेन पर्णेन जुहोति।
सुग्येषा। अथो खलु। अन्तमेनैव होतव्यम्। अन्त एव रुद्रं निर्वन्दयते।
एष तं रुद्र भागः सह स्वस्त्राऽम्बिकयेत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसा।
तया वा एष हिनस्ति। यः हिनस्ति। तयैवेन सह शमयति। भेषजं
गव इत्याह। यावन्त एव ग्राम्याः पशवः। तेभ्यो भेषजं करोति। अवाम्ब
रुद्रमदिमहीत्याह। आशिषमेवैतामाशास्ते। त्र्यम्बकं यजामह इत्याह।
मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतदाह। उत्किरन्ति। भगस्य लीप्सन्ते। मूतं
कृत्वाऽऽसजन्ति। यथा जनं यतैऽवसं करोति। तादृगेव तत्। एष तं रुद्र भाग
इत्याह निर्वन्दयै। अप्रतीक्षमायन्ति। अपः परिषिञ्चति। रुद्रस्यान्तरहित्यै। प्र
वा एतैस्माल्लोकाच्चवन्ते। ये त्र्यम्बकैश्चरन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति।
इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति।
नेत्रत्रयाय वौषट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०) ॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व॑ शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं
वातैररुणैर्यासि शङ्गयस्त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मना। आ वो
राजानमध्वरस्य रुद्र॑ होतार॑ सत्ययज॑ रोदस्योः। अग्निं पुरा
तनयितोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि पसादा
यजीयानुपस्थे मातुः सुरभावु लोके। युवा कविः पुरुनिष्ठ ऋतावा
धर्ता कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम्। स आयुराऽ-
गात्सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्या। अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः
क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी
भानुना भात्यन्तः। त्वे वसूनि पूर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः।

क्षामैव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्स॑ सौभंगानि दधिरे पावके। तुभ्यं ता
अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय येमिरे। अश्याम्
तं काममग्ने तवोत्यश्याम रयि॑ रयिवः सुवीरम्। अश्याम् वाजमभि
वाजयन्तोऽश्याम द्युम्नमजराऽजरन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने द्युमन्तमा भर।
वसो पुरुस्पृह॑ रयिम्। स श्वितानस्तन्यतू रोचनस्था अजरैभिर्नानदद्विर्यविष्ठः।
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भवन्। आयुष्टे विश्वतो
दधदयमग्निरवण्यः। पुनस्ते प्राण आयति परा यक्ष्म॑ सुवामि ते। आयुर्दा
अग्ने हविषो जुषाणो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं
पितेव पुत्रमभिरक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचरणे। अग्ने जनामि सुष्टुतिम्।
 दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निस्मद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयमप्सु नृमणा
 अजस्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक वन्द्योऽग्रे बृहद्विरोचसे।
 त्वं घृतेभिराहुतः। दृशानो रुक्म उर्व्या व्यद्यौ दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः।
 अग्निर्मृतौ अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आनुद्धुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीकै। अग्निः शर्धमनवद्यं
 युवानं स्वाधियं जनयत्सूदयच्च। स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष
 स्वपत्यस्य शिक्षोः। अग्रे रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश्च वस्वः।
 अग्रे सहन्तमा भर द्युमस्य प्रासहा रयिम्।

विश्वा यश्चरषणीरभ्यासा वाजेषु सासहत्। तमग्रे पृतना सह रयि सहस्व
 आ भर। त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः। उक्षान्नाय वशान्नाय
 सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्रये। वद्मा हि सूनो अस्यंघ्रसद्वा चक्रे
 अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं न ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेप्यन्तः।

अग्र आयूषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम्। अग्रे
 पवस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधत्पोष रयिं मयि। अग्रे पावक
 रोचिषा मन्द्रया देव जिह्या। आ देवान् वक्षि यक्षि च। स नः पावक
 दीदिवोऽग्रे देवा इहाऽऽवह। उप यज्ञं हविश्च नः। अग्निः शुचिं व्रततमः
 शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुचीं रोचत आहुतः। उदग्रे शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त
 ईरते। तव ज्योतींष्यचयः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०) ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व९ शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं
 वातैररुणैर्यासि शङ्गयः। त्वं पूषा विधृतः पांसि नु त्मना। देवां देवेषु श्रयध्वम्।
 प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्थाः पञ्चमेषु श्रयध्वम्। पञ्चमाः षष्ठेषु श्रयध्वम्॥ षष्ठाः सप्तमेषु
 श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषु श्रयध्वम्। अष्टमा नवमेषु श्रयध्वम्। नवमा
 दशमेषु श्रयध्वम्। दशमा एकादशेषु श्रयध्वम्। एकादशा द्वादशेषु श्रयध्वम्।
 द्वादशास्त्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चतुर्दशेषु श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पञ्चदशेषु
 श्रयध्वम्। पञ्चदशाः षोडशेषु श्रयध्वम्॥ षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वम्। सप्तदशा
 अष्टादशेषु श्रयध्वम्। अष्टादशा एकान्नवि९शेषु श्रयध्वम्। एकान्नवि९शा
 वि९शेषु श्रयध्वम्। वि९शा एकवि९शेषु श्रयध्वम्। एकवि९शा द्वावि९शेषु
 श्रयध्वम्। द्वावि९शास्त्रयोवि९शेषु श्रयध्वम्। त्रयोवि९शाश्चतुर्वि९शेषु
 श्रयध्वम्। चतुर्वि९शाः पञ्चवि९शेषु श्रयध्वम्। पञ्चवि९शाः षड्वि९शेषु
 श्रयध्वम्॥ षड्वि९शाः सप्तवि९शेषु श्रयध्वम्। सप्तवि९शा अष्टावि९शेषु
 श्रयध्वम्। अष्टावि९शा एकान्नत्रि९शेषु श्रयध्वम्। एकान्नत्रि९शास्त्रि९शेषु
 श्रयध्वम्। त्रि९शा एकत्रि९शेषु श्रयध्वम्। एकत्रि९शा द्वात्रि९शेषु श्रयध्वम्।
 द्वात्रि९शास्त्रयस्त्रि९शेषु श्रयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रयस्त्रि९शाः। उत्तरे
 भवता उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्त्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्।
 वय९ स्याम पतयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥
 ॐ भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥ अस्त्राय फट्॥

॥ पञ्चाङ्गम् ॥

ह॒२सः शुचि॒षद्वसु॑रन्तरिक्ष॒सद्धोता॑ वेदि॒षदति॑थिर्दु॒रोण॒सत्।
 नृ॒षद्वर॑सद॒तसद्भ्यो॑म॒सद॒ब्जा गो॒जा ऋ॒तजा अ॒द्रिजा ऋ॒तं बृ॒हत्॥
 प्र॒तद्विष्णुः॑ स्तव॒ते वी॒र्या॑य। मृ॒गो न भी॒मः कु॑च॒रो गि॑रि॒ष्ठाः।
 य॒स्यो॒रुषु॑ त्रि॒षु वि॒क्रम॑णेषु। अ॒धि॒क्षि॒यन्ति॒ भुव॑नानि॒ विश्वा॑॥
 त्र्य॒म्बकं॑ यजामहे सु॒गन्धिं॑ पु॒ष्टि॒वर्ध॑नम्।
 उ॒र्वारु॒कमि॑व॒ बन्ध॑नान्मृत्यो॒र्मुक्षी॑य॒ माऽमृ॑ता॒त्॥
 तथ्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे। व॒यं दे॒वस्य॒ भो॒ज॑नम्।
 श्रेष्ठ॑२ स॒र्वधा॑त॒मम्। तुरं॑ भ॒गस्य॒ धी॒महि॑॥
 विष्णु॑र्योनिं॒ कल्प॑यतु। त्व॒ष्टा रू॒पाणि॑ पि॒२शतु॑।
 आ॒सि॑श्चतु॒ प्र॒जाप॑तिः। धा॒ता गर्भं॑ दधातु॒ ते॥



॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः ॥

हि॒र॒ण्य॒गर्भः॑ स॒मव॑र्त॒ताग्रे॑ भू॒तस्य॑ जा॒तः प॒तिरे॑कं आसीत्।
 स॒दा॒धार॑ पृथि॒वीं द्या॑मु॒तेमां॑ कस्मै॒ दे॒वाय॑ ह॒विषां॑ वि॒धेम॑॥
 [उरसा] उ॒माम॑हेश्वराभ्यां॒ नमः॑॥१॥

यः प्रा॑ण॒तो नि॑मिष॒तो म॑हि॒त्वैक॑ इ॒द्राजा॒ जग॑तो ब॒भूव॑।
 य ई॒शे अ॒स्य द्वि॑पदश्चतु॒ष्पदः॑ कस्मै॒ दे॒वाय॑ ह॒विषां॑ वि॒धेम॑॥
 [शिरसा] उ॒माम॑हेश्वराभ्यां॒ नमः॑॥२॥

ब्रह्म॑ज॒ज्ञानं॑ प्रथ॒मं पु॒रस्ता॒द्वि॒सी॒मतः॑ सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः।
 स॒बु॒ध्रिया॑ उप॒मा अ॒स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॑म॒सतश्च॒ वि॒वः॑॥१॥

[दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

म॒ही द्यौः पृ॒थि॒वी च॑ न इ॒मं य॒ज्ञं मि॑मिक्षताम्।

पि॒पृ॒ता॒न्नो भ॑रीमभिः॥

[मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उप॑श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा ते॑ मनु॒तां वि॑ष्टि॒तं जग॑त्।
स दु॑न्दु॒भे स॒ज्जूरि॑न्द्रेण दे॒वैर्दू॒राद्वि॑यो॒ अप॑सेधु॒ शत्रू॑न्॥

[वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अ॒ग्ने न॑य॒ सुप॑था॒ रा॒ये अ॒स्मान् वि॒श्वानि॑ दे॒व व॒युना॑नि वि॒द्वान्।
यु॒यो॒र्ध्य॒स्मञ्जु॑हुराणमे॒नो भू॑यि॒ष्ठां ते॑ नम॑ उ॒क्तिं वि॑धेम॥

[पञ्चाम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते॑ अ॒ग्ने रु॒द्रिया॑ तनू॒स्तया॑ नः पा॒हि तस्या॑स्ते स्वाहा॑॥
[कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इ॒मं य॑मप्र॒स्तर॑मा॒हि सी॒दाऽङ्गि॑रोभिः पि॒तृभिः॑ संवि॒दानः॑।
आ॒त्वा म॒न्त्राः क॑विश॒स्ता व॑हन्त्वेना रा॒जन् ह॑विषा॒ माद॑यस्व॥
[कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥



॥ लघुन्यासे श्री-रुद्रध्यानम् ॥

अथाऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री-रुद्र रूपं ध्यायेत्।

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम्।

गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्।

व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥

कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्।
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥

वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्धधारिणम्।
अमृते नाप्नुतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥

दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्।
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्।
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥

अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा
उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्लवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य
दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम् ॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्-
तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्त्रे
सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्।
कर्णयोरश्विनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्ध्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि
महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली
तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बहिः
सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं
तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निर्मे वाचि श्रितः। वाग्धृदये। हृदयं मयि। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि।
(जिह्वा)

वा॒युर्मे॑ प्रा॒णे श्रि॒तः। प्रा॒णो हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(नासिका)

सूर्यो॑ मे चक्षु॑षि श्रि॒तः। चक्षु॑र॒हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(नेत्रे)

च॒न्द्रमा॑ मे म॒नसि॑ श्रि॒तः। म॒नो हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(वक्षः)

दि॒शो मे॑ श्रोत्रे॑ श्रि॒ताः। श्रोत्र॑र॒हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(श्रोत्रे)

आपो॑ मे रे॒तसि॑ श्रि॒ताः। रे॒तो हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(गुह्यम्)

पृ॒थि॒वी मे॑ शरी॑रे श्रि॒ता। शरी॑र॒र॒हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (शरीरम्)

ओष॑धि॒व॒न॒स्प॒तयो॑ मे लो॒म॑सु श्रि॒ताः। लो॒मा॑नि हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (लोमानि)

इन्द्रो॑ मे ब॒ले श्रि॒तः। ब॒ल॒र॒हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(बाहू)

प॒र्ज॒न्यो मे॑ मूर्ध्नि॑ श्रि॒तः। मूर्धा॑ हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(शिरः)

ईशा॑नो मे म॒न्यौ श्रि॒तः। म॒न्यु॒र॒हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि।
(हृदयम्)

आ॒त्मा मं॑ आ॒त्म॒नि श्रि॒तः। आ॒त्मा हृद॑ये। हृद॑यं मयि॑। अ॒हम॒मृते॑। अ॒मृतं॑ ब्रह्म॑णि। (हृदयम्)

पुनर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुनः प्राणः पुनराकूतमागात्। वैश्वानरो
रश्मिभिर्वावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य
स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)



॥ आत्मपूजा ॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धेर्देवासुरादिभिः।
आराधयामि भक्त्या त्वाऽनुग्रहाण महेश्वर॥

॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् ॥

ध्यायेन्निरामयं वस्तुं सर्गस्थितिलयादिकम्।
निर्गुणं निष्कलं नित्यं मनोवाचामगोचरम्॥१॥

गङ्गाधरं शशिधरं जटामकुटशोभितम्।
श्वेतभूतित्रिपुण्ड्रेण विराजितललाटकम्॥२॥

लोचनत्रयसम्पन्नं स्वर्णकुण्डलशोभितम्।
स्मेराननं चतुर्बाहुं मुक्ताहारोपशोभितम्॥३॥

अक्षमालां सुधाकुम्भं चिन्मयीं मुद्रिकामपि।
पुस्तकं च भुजैर्दिव्यैर्दधानं पार्वतीपतिम्॥४॥

श्वेताम्बरधरं श्वेतं रत्नसिंहासनस्थितम्।
सर्वाभीष्टप्रदातारं वटमूलनिवासिनम्॥५॥

वामाङ्कसंस्थितां गौरीं बालार्कायुतसन्निभाम्।
जपाकुसुमसाहस्रसमानश्रियमीश्वरीम् ।
सुवर्णरत्नखचितमकुटेन विराजिताम्॥६॥

ललाटपट्टसंराजत्संलग्नतिलकाञ्चिताम् ।
राजीवायतनेत्रान्तां नीलोत्पलदलेक्षणाम् ॥ ७ ॥

सन्तप्तहेमखचित-ताटङ्काभरणान्विताम् ।
ताम्बूलचर्वणरतरक्तजिह्वाविराजिताम् ॥ ८ ॥

पताकाभरणोपेतां मुक्ताहारोपशोभिताम् ।
स्वर्णकङ्कणसंयुक्तैश्चतुर्भिर्बाहुभिर्युताम् ॥ ९ ॥

सुवर्णरत्नखचित-काञ्चीदामविराजिताम् ।
कदलीललितस्तम्भ-सन्निभोरुयुगान्विताम् ॥ १० ॥

श्रिया विराजितपदां भक्तत्राणपरायणाम् ।
अन्योन्याश्लिष्टहृद्वाहू गौरीशङ्करसंज्ञकम् ॥ ११ ॥

सनातनं परं ब्रह्म परमात्मानमव्ययम् ।
आवाहयामि जगतामीश्वरं परमेश्वरम् ॥ १२ ॥

मङ्गलायतनं देवं युवानमति सुन्दरम् ।
ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुखासीनं सहोमया ॥ १३ ॥

आगच्छाऽऽगच्छ भगवन् देवेश परमेश्वर ।
सच्चिदानन्द भूतेश पार्वतीश नमोऽस्तु ते ॥ १४ ॥



॥ प्रदक्षिणम् ॥

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्रनीललोहिता। एषां पुरुषाणामेषां पशूनां मा भेर्माऽरो
 मो एषां किं चनाऽऽममत्॥ या तै रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहभेषजी।
 शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे॥ इमां रुद्राय तवसे कपर्दिनं
 क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतिम्॥ यथा नः शमसद्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं
 ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा
 विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥
 मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा
 नो वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवो रुद्र रीरिषः॥ मा नस्तोके
 तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो
 रुद्र भामितोऽवधीर्हविष्मन्तो नमसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने
 क्षयद्वीराय सुम्रमस्मे तै अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूहधा च नः शर्म
 यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपह्वमुग्रम्। मृडा
 जंरित्रे रुद्र स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु
 परि त्वेषस्य दुर्मतिरंघायोः। अव स्थिरा मघवञ्चस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय
 मृडय॥ मीढुष्टम् शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय
 कृत्तिं वसान आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि॥ विकिरिद विलोहित नमस्ते अस्तु
 भगवः। यास्ते सहस्रं हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा
 बाहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ प्रदक्षिणं
 कृत्वा॥



॥ नमस्काराः ॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१॥

अस्मिन् महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भुवा अधि। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥२॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥३॥

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवः रुद्रा उपश्रिताः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥४॥

ये वृक्षेषु सस्पर्शरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥५॥

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥६॥

ये अन्त्रेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबन्तो जनान्। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥७॥

ये पथां पथिरक्षय एलबृदा यव्युधः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्गिणः। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावन्तश्च भूयांसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे। तेषां सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमो रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश

प्र॒तीची॒र्दशो॒र्दीची॒र्दशो॒र्ध्वास्ते॒भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॒
तं वो॒ जम्भे॑ दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॒ येऽन्तरि॑क्षे येषां वा॒त इष॑वस्तेभ्यो दश प्राची॒र्दश दक्षिणा दश॑
प्र॒तीची॒र्दशो॒र्दीची॒र्दशो॒र्ध्वास्ते॒भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॒
तं वो॒ जम्भे॑ दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमो॑ रु॒द्रेभ्यो॒ ये दि॒वि येषां॑ व॒रुष॑मिषवस्तेभ्यो दश प्राची॒र्दश दक्षिणा दश॑
प्र॒तीची॒र्दशो॒र्दीची॒र्दशो॒र्ध्वास्ते॒भ्यो नम॒स्ते नो॑ मृडयन्तु ते यं द्वि॒ष्मो यश्च॑ नो॒ द्वेष्टि॒
तं वो॒ जम्भे॑ दधामि। श्री-महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना ॥

अ॒ग्नावि॑ष्णू स॒जोष॑से॒मा व॑र्धन्तु वां गिरः। द्यु॒मैर्वा॑जैर्भिरा॒गतम्॥ वा॒जंश्च॑ मे
प्र॒सव॑श्च॒ मे प्र॒यति॑श्च॒ मे प्र॒सि॒तिश्च॒ मे धी॒तिश्च॒ मे ऋ॒तुश्च॒ मे स्वर॑श्च॒ मे श्लो॒कश्च॒ मे
मे श्रा॒वश्च॒ मे श्रु॒तिश्च॒ मे ज्यो॒तिश्च॒ मे सु॒वश्च॒ मे प्रा॒णश्च॒ मेऽपा॒नश्च॒ मे व्या॒नश्च॒ मे
मेऽसु॑श्च॒ मे चि॒त्तं च॑ म॒ आ॒धी॒तं च॑ मे॒ वाक्क्र॑ मे॒ मन॑श्च॒ मे चक्षु॑श्च॒ मे श्रो॒त्रं च॑
मे॒ दक्ष॑श्च॒ मे ब॒लं च॑ म॒ ओज॑श्च॒ मे स॒हश्च॑ म॒ आयु॑श्च॒ मे ज॒रा च॑ म॒ आ॒त्मा
च॑ मे॒ तनू॑श्च॒ मे श॒र्म च॑ मे॒ वर्म॑ च॒ मेऽङ्गा॑नि च॒ मेऽस्थानि॑ च॒ मे प॒रू॒षि च॑
मे॒ शरी॑राणि च॒ मे॥१॥

ज्यै॒ष्ठ्यं च॑ म॒ आधि॑पत्यं च॒ मे म॒न्युश्च॑ मे॒ भाम॑श्च॒ मेऽम॑श्च॒ मेऽम्भ॑श्च॒ मे जे॒मा
च॑ मे॒ महि॑मा च॒ मे व॒रि॒मा च॑ मे॒ प्रथि॑मा च॒ मे व॒र्ष्मा च॑ मे॒ द्राघु॑या च॒ मे
वृ॒द्धं च॑ मे॒ वृ॒द्धिश्च॑ मे॒ स॒त्यं च॑ मे॒ श्र॒द्धा च॑ मे॒ जग॑च्च॒ मे ध॒नं च॑ मे॒ व॒शश्च॑ मे॒

त्विषि॑श्च मे क्री॒डा च॑ मे मोद॑श्च मे जा॒तं च॑ मे जनि॒ष्यमा॑णं च मे सू॒क्तं च॑
मे सुकृ॑तं च॑ मे वि॒त्तं च॑ मे वेद्यं॑ च मे भू॒तं च॑ मे भवि॒ष्यच्च॑ मे सु॒गं च॑ मे
सुप॑थं च म ऋ॒द्धं च॑ म ऋ॒द्धिश्च॑ मे क्लृ॑प्तं च॑ मे क्लृ॑प्तिश्च मे म॒तिश्च॑ मे सुम॒तिश्च॑
मे॥२॥

शं च॑ मे मय॑श्च मे प्रि॒यं च॑ मेऽनु॒का॒मश्च॑ मे का॒मश्च॑ मे सौम॒न॒सश्च॑ मे भ॒द्रं च॑
मे श्रेय॑श्च मे वस्य॑श्च मे यश॑श्च मे भ॒गश्च॑ मे द्रवि॑णं च मे य॒न्ता च॑ मे ध॒र्ता च॑
मे क्षे॒मश्च॑ मे धृ॒तिश्च॑ मे वि॒श्वं च॑ मे मह॑श्च मे संवि॑च्च मे ज्ञा॒त्रं च॑ मे सू॒श्च मे
प्र॒सू॒श्च मे सी॒रं च॑ मे ल॒यश्च॑ म ऋ॒तं च॑ मेऽमृ॑तं च मेऽय॒क्ष्मं च॑ मेऽना॑मयच्च
मे जी॒वातु॑श्च मे दी॒र्घायु॑त्वं च॑ मेऽन॒मि॒त्रं च॑ मेऽभ॑यं च मे सु॒गं च॑ मे श॒य॒नं
च मे सू॒षा च॑ मे सु॒दि॒नं च॑ मे॥३॥

ऊ॒र्क्कं मे सू॒नृता॑ च मे प॒य॑श्च मे रस॑श्च मे घृ॒तं च॑ मे मधु॑ च मे स॒ग्धिश्च॑ मे
स॒र्पी॒तिश्च॑ मे कृ॒षिश्च॑ मे वृ॒ष्टिश्च॑ मे जै॒त्रं च॑ म औ॒द्भि॒द्यं च॑ मे र॒यिश्च॑ मे रा॒य॑श्च
मे पु॒ष्टं च॑ मे पु॒ष्टिश्च॑ मे वि॒भु च॑ मे प्र॒भु च॑ मे ब॒हु च॑ मे भू॒यश्च॑ मे पूर्णं॑ च॑ मे
पूर्ण॑तरं च॑ मेऽक्षि॑तिश्च मे कू॒य॒वाश्च॑ मेऽन्नं॑ च॑ मेऽक्षु॑च्च मे व्री॒ह॒य॑श्च मे यवा॑श्च
मे मा॒षा॑श्च मे ति॒ला॑श्च मे मु॒द्गाश्च॑ मे ख॒ल्वा॑श्च मे गो॒धूमा॑श्च मे म॒सुरा॑श्च मे
प्रि॒यङ्ग॑वश्च मेऽण॑वश्च मे श्या॒माका॑श्च मे नी॒वारा॑श्च मे॥४॥

अ॒श्मा च॑ मे मृ॒त्तिका॑ च मे गि॒र॒य॑श्च मे पर्व॑ताश्च मे सि॒क॒ताश्च॑ मे वन॒स्पत॑यश्च
मे हि॒र॒ण्यं च॑ मेऽय॑श्च मे सी॒सं च॑ मे त्रपु॑श्च मे श्या॒मं च॑ मे लो॒हं च॑ मेऽग्नि॑श्च
म आ॒प॑श्च मे वी॒रुध॑श्च म ओष॑धयश्च मे कृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मेऽकृ॒ष्टप॑च्यं च॑ मे
ग्रा॒म्याश्च॑ मे प॒शव॑ आ॒र॒ण्याश्च॑ य॒ज्ञेन॑ कल्प॒न्तां वि॒त्तं च॑ मे वि॒त्ति॑श्च मे भू॒तं च॑
मे भू॒ति॑श्च मे वसु॑ च॑ मे वस॒तिश्च॑ मे कर्म॑ च॑ मे शक्ति॑श्च मेऽर्थ॑श्च म ए॒मश्च॑
म इति॑श्च मे गति॑श्च मे॥५॥

अ॒ग्निश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सोम॑श्च म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सवि॑ता च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ सर॑स्वती
 च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ पूषा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ बृह॑स्पतिश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मि॒त्रश्च॑ म॒
 इन्द्र॑श्च मे॒ वरु॑णश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ त्वष्टा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ धा॒ता च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒
 विष्णु॑श्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ऽश्विनौ॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मरु॑तश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ विश्वे॑ च॒
 मे॒ दे॒वा इन्द्र॑श्च मे॒ पृथि॑वी च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ऽन्तरि॑क्षं च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ द्यौश्च॑ म॒
 इन्द्र॑श्च मे॒ दि॒शश्च॑ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ मूर्धा॑ च॒ म॒ इन्द्र॑श्च मे॒ प्र॒जाप॑तिश्च॒ म॒ इन्द्र॑श्च
 मे॥६॥

अ॒॒शुश्च॑ मे॒ र॒श्मिश्च॑ मे॒ऽदा॑भ्यश्च॒ मे॒ऽधि॑पतिश्च॒ म॒ उपा॒॑शुश्च॑ मे॒ऽन्तर्या॑मश्च॒ म॒
 ऐ॒न्द्रवा॑यवश्च॒ मे॒ मै॒त्रावरु॑णश्च॒ म॒ आ॒श्विनश्च॑ मे॒ प्र॒तिप्र॑स्थानश्च॒ मे॒ शु॒क्रश्च॑ मे॒
 म॒न्थी च॑ म॒ आ॒ग्रय॑णश्च॒ मे॒ वैश्व॑देवश्च॒ मे॒ ध्रु॒वश्च॑ मे॒ वैश्वान॑रश्च॒ म॒ ऋ॒तुग्र॑हाश्च॒
 मे॒ऽति॒ग्राह्या॑श्च॒ म॒ ऐ॒न्द्राग्र॑श्च॒ मे॒ वैश्व॑देवश्च॒ मे॒ मरु॑त्वतीयाश्च॒ मे॒ माहे॑न्द्रश्च॒
 म॒ आ॒दि॒त्यश्च॑ मे॒ सा॒वि॒त्रश्च॑ मे॒ सा॒रस्व॑तश्च॒ मे॒ पौ॒ष्णश्च॑ मे॒ पा॒त्नीव॑तश्च॒ मे॒
 हा॒रि॒यो॒जन॑श्च॒ मे॥७॥

इ॒ध्मश्च॑ मे॒ ब॒र्हिश्च॑ मे॒ वे॒दिश्च॑ मे॒ धि॒ष्णि॒याश्च॑ मे॒ सु॒च॑श्च॒ मे॒ च॒म॒साश्च॑ मे॒ ग्रा॒वा॒णश्च॑
 मे॒ स्वर॑वश्च॒ म॒ उप॑र॒वाश्च॑ मे॒ऽधि॑षव॒णे च॑ मे॒ द्रो॒णक॑लशश्च॒ मे॒ वा॒य॒व्या॒नि च॑ मे॒
 पू॒तभृ॑च्च॒ म॒ आ॒ध॒व॒नीय॑श्च॒ म॒ आ॒ग्नी॑ध्रं च॒ मे॒ ह॒वि॒र्धा॒नं च॑ मे॒ गृ॒हाश्च॑ मे॒ स॒द॑श्च॒
 मे॒ पु॒रो॒डा॒शा॑श्च॒ मे॒ प॒च॒ताश्च॑ मे॒ऽव॒भृ॒थश्च॑ मे॒ स्व॒गाका॑रश्च॒ मे॥८॥

अ॒ग्निश्च॑ मे॒ घ॒र्मश्च॑ मे॒ऽर्क॑श्च॒ मे॒ सूर्य॑श्च॒ मे॒ प्रा॒णश्च॑ मे॒ऽश्व॑मेधश्च॒ मे॒ पृथि॑वी
 च॒ मे॒ऽदि॑तिश्च॒ मे॒ दि॒तिश्च॑ मे॒ द्यौश्च॑ मे॒ श॒क्ती॒र॒ङ्गुल॑यो॒ दि॒शश्च॑ मे॒ य॒ज्ञेन॑
 क॒ल्प॒न्ता॒मृ॒कं मे॒ सा॒मं च॑ मे॒ स्तो॒मंश्च॑ मे॒ य॒जु॑श्च॒ मे॒ दी॒क्षा च॑ मे॒ त॒प॑श्च॒ म॒
 ऋ॒तुश्च॑ मे॒ व्र॑तं च॒ मे॒ऽहो॒रा॒त्रयो॑र्वृ॒ष्ट्या बृ॑ह॒द्रथ॑न्त॒रे च॑ मे॒ य॒ज्ञेन॑ क॒ल्पे॒ताम्॥९॥

ग॒र्भा॑श्च॒ मे॒ व॒त्सा॑श्च॒ मे॒ त्र्य॒वि॑श्च॒ मे॒ त्र्य॒वी च॑ मे॒ दि॒त्य॒वा॒चं मे॒ दि॒त्यौ॒ही च॑ मे॒
 प॒श्चा॒वि॑श्च॒ मे॒ प॒श्चा॒वी च॑ मे॒ त्रि॒व॒त्सश्च॑ मे॒ त्रि॒व॒त्सा च॑ मे॒ तु॒र्य॒वा॒चं मे॒ तु॒र्यौ॒ही च॑

मे पष्ठवाच्च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनुङ्गा
 च मे धेनुश्च म आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो यज्ञेन
 कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां
 मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन
 कल्पताम्॥१०॥

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च म एकादश च मे
 त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे नवदश च म एकविंशतिश्च
 मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च
 म एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे
 षोडश च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च
 मे षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे
 वाजश्च प्रसवश्चापिजश्च ऋतुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यश्रियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च
 भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥११॥

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा देवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शसिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः
 पृथिवि मातर्मा मां हिंसीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं
 वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासं शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा
 अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।

सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।

तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ (दशवारं जपेत्)।

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥ श्रीरुद्रजपः ॥

अस्य श्री-रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः।

अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः।

महादेवायेति कीलकम्।

श्री-साम्बसदाशिवप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥ करन्यासः ॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः।

चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥अङ्गन्यासः॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः।

दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा।

चातुर्मास्यात्मने शिखायै वषट्।

निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं।

ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

सर्वक्रत्वात्मने अस्त्राय फट्।

भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ ध्यानम् ॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत्
ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णन्दु-वान्तामृतैः।
अस्तोकाप्लुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन्
ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भसित-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः
कण्ठे कालाः कपर्दा-कलित-शशि-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः।
त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः
रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥

॥पञ्चपूजा॥

लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि।

हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि।

यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि।

रं अग्न्यात्मने दीपं दर्शयामि।

वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि।

सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपति॑ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत॑ आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥
ॐ महागणपतये नमः॥

शं च मे मयंश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामंश्च मे सौमनसश्च मे
भद्रं च मे श्रेयंश्च मे वस्यंश्च मे यशंश्च मे भगंश्च मे द्रविणं च मे यन्ता
च मे धर्ता च मे क्षेमंश्च मे धृतिंश्च मे विश्वं च मे महंश्च मे संविच्च मे
ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं
च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च
मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—प्रथमं गन्धतोयं च

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्नाविष्णू सजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरः। द्युमैर्वाजैभिरागतम्॥ वाजंश्च मे
प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च
मे श्रावश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवश्च मे प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च
मेऽसुश्च मे चित्तं च मे आधीतं च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च
मे दक्षश्च मे बलं च मे ओजश्च मे सहश्च मे आयुश्च मे जरा च मे आत्मा
च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूषि च
मे शरीराणि च मे॥१॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियो रुद्रो महर्षिः।

हिरण्यगर्भं पश्यत जायमानं स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

महादेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—द्वितीयं पञ्चगव्यकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा
च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्ष्मा च मे द्राघुया च मे
वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे वशश्च मे
त्विषिश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च
मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे
सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च
मे॥२॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित्।

वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥

अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शिवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—पञ्चामृतं तृतीयं स्यात्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वस्यश्च मे यशश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे युन्ता च मे धृता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे ऋतं च मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुगं च मे शयनं च मे सूषा च मे सुदिनं च मे॥३॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानुशुः।

परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥

अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

श्री-रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—घृतस्नानं चतुर्थकम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

ऊर्क् मे सूनृतां च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे
 सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च मे औद्भिद्यं च मे रयिश्च मे रायश्च
 मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे बहु च मे भूयश्च मे पूर्णं च मे
 पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूयवाश्च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे ब्रीहयश्च मे यवाश्च
 मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे
 प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्न्यास योगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।

ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥

अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—पञ्चमं पयसा स्नानं

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अश्मां च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च
 मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे सीसं च मे त्रपुश्च मे श्यामं च मे लोहं च मेऽग्निश्च
 म आपश्च मे वीरुधश्च म ओषधयश्च मे कृष्टपच्यं च मेऽकृष्टपच्यं च मे
 ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च
 मे भूतिश्च मे वसुं च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च
 म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

दहं विपापं परमेऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसंस्थम्।
 तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपासितव्यम्॥
 अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
 नीललोहितः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—दधिस्नानं तु षष्ठकम्।

...

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती
च म इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे मित्रश्च म
इन्द्रश्च मे वरुणश्च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे
विष्णुश्च म इन्द्रश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रश्च मे मरुतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वे च
मे देवा इन्द्रश्च मे पृथिवी च म इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म
इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे मूर्धा च म इन्द्रश्च मे प्रजापतिश्च म इन्द्रश्च
मे॥६॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।

तस्य प्रकृतिं लीनस्य यः परः स महेश्वरः॥

अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

ईशानः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—सप्तमं मधुना स्नानम्

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

अ॒शु॒श्च मे र॒श्मिश्च मेऽदा॑भ्यश्च मेऽधि॑पतिश्च म उपा॒शु॒श्च मेऽन्तर्या॑मश्च म
ऐन्द्र॑वायवश्च मे मैत्रावरु॑णश्च म आश्वि॑नश्च मे प्रति॑प्रस्थानश्च मे शु॒क्रश्च मे
म॒न्थी च॑ म आग्रय॑णश्च मे वैश्वदे॒वश्च मे ध्रु॒वश्च मे वैश्वान॑रश्च म ऋतु॑ग्रहाश्च
मेऽति॑ग्राह्याश्च म ऐन्द्रा॑ग्रश्च मे वैश्वदे॒वश्च मे मरु॑त्वतीयाश्च मे माहेन्द्र॑श्च
म आदि॑त्यश्च मे सावि॑त्रश्च मे सारस्व॑तश्च मे पौष्ण॑श्च मे पाली॑वतश्च मे
हारि॑योज॒नश्च मे॥ ७॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

सद्योजा॑तं प्रपद्यामि सद्योजा॑ताय वै नमो नमः।

भवे॑ भवे॑ नाति॑ भवे॑ भवस्व॑ माम्। भवो॑द्भवाय॑ नमः॥

अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

विजयः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥ ७॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—इक्षुसारमथाष्टमम्॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

इ॒ध्मश्च॑ मे॒ ब॒र्हिश्च॑ मे॒ वेदि॑श्च मे॒ धिष्णि॑याश्च मे॒ सुच॑श्च मे॒ चम॑साश्च मे॒ ग्रावा॑णश्च
मे॒ स्वर॑वश्च म॒ उपर॑वाश्च मे॒ऽधि॑षवणे च मे॒ द्रोण॑कल॒शश्च॑ मे॒ वाय॑व्या॒नि च॑ मे॒
पू॒तभृ॑च्च॒ म आ॑धव॒नीय॑श्च म॒ आ॒ग्नी॑ध्रं च मे॒ हवि॑र्धानं च मे॒ गृ॒हाश्च॑ मे॒ सद॑श्च
मे॒ पुरो॑डाशा॑श्च मे॒ पच॑ताश्च॒ मेऽव॑भृथश्च॒ मे स्व॑गाका॒रश्च॑ मे॥८॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

वाम॑दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नमः॑ का॒लाय॒ नमः॑
कल॑विक॒रणा॒य नमो॑ बल॑विक॒रणा॒य नमो॑ ब॒लाय॒ नमो॑ बल॑प्रमथ॒नाय॒ नमः॑

सर्व॑भूतदम॒नाय॒ नमो॑ म॒नो॒न्म॑नाय॒ नमः॑॥

अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

भीमः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥
 नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...
 अभिषेकः—नवमं फलसारं च

...
 त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
 उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी
 च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे शक्ररीरङ्गुलयो दिशश्च मे यज्ञेन
 कल्पन्तामृक् मे सामं च मे स्तोमंश्च मे यजुंश्च मे दीक्षा च मे तपंश्च म
 ऋतुश्च मे व्रतं च मेऽहोरात्रयोर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः।
 सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
 अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
 देवदेवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। ...

अभिषेकः—दशमं नाळिकेरकम्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

गर्भाश्च मे वृथाश्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाच्च मे दित्यौही च मे
पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवृथाश्च मे त्रिवृथा च मे तुर्यवाच्च मे तुर्यौही
च मे पष्ठवाच्च मे पष्ठौही च मे उक्षा च मे वशा च मे ऋषभश्च मे वेहच्च
मेऽनङ्गां च मे धेनुश्च मे आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतामपानो
यज्ञेन कल्पतां व्यानो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन
कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां यज्ञो
यज्ञेन कल्पताम्॥१०॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।

नीराजनम्—

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः

भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥



॥ रुद्रप्रश्नः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। . . .

अभिषेकः—एकादशं गन्धतोयं द्वादशं तीर्थमुच्यते॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै
रुद्राय नमो अस्तु॥ तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।

(ऋक्) यक्ष्वामहे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो
भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिर्मर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्य मायया सर्वानव
यजामहे। मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे
मृत्युर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व॥
नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि॥

एका च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे सप्त च मे नव च मे एकादश च मे
त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे एकविंशतिश्च
मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च
मे एकत्रिंशच्च मे त्रयस्त्रिंशच्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे
षोडश च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वात्रिंशच्च
मे षट्त्रिंशच्च मे चत्वारिंशच्च मे चतुश्चत्वारिंशच्च मेऽष्टाचत्वारिंशच्च मे
वाजंश्च प्रसवश्चापिजश्च ऋतुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यश्रियश्चान्त्यायुनश्चान्त्यंश्च
भौवनश्च भुवनश्चाधिपतिश्च॥११॥

धूपम्। दीपम्। नैवेद्यम्। कर्पूरताम्बूलम्।
नीराजनम्—

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥

अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः
आदित्यात्मकः श्री-रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥



[इडा देवहूर्मनुयज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शंसिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः
पृथिवि मातर्मा मां हिंसीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं
वदिष्यामि मधुमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासं शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा
अवन्तु शोभायै पितरोऽनुमदन्तु॥]

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नदहार्यः।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्विर्ज्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भंगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो
नः सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।

ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ श्रीरुद्रनाम त्रिशती ॥

नमो हिरण्यबाहवे नमः। सेनान्ये नमः।
 दिशां च पतये नमः। नमो वृक्षेभ्यो नमः।
 हरिकेशेभ्यो नमः। पशूनां पतये नमः।
 नमः सस्मिञ्जराय नमः। त्विषीमते नमः।
 पथीनां पतये नमः। नमो बभ्रुशाय नमः।
 विव्याधिने नमः। अन्नानां पतये नमः।
 नमो हरिकेशाय नमः। उपवीतिने नमः।
 पुष्टानां पतये नमः। नमो भवस्य हेत्यै नमः।
 जगतां पतये नमः। नमो रुद्राय नमः।
 आतताविने नमः। क्षेत्राणां पतये नमः।
 नमः सूताय नमः। अहन्त्याय नमः।
 वनानां पतये नमः। नमो रोहिताय नमः।
 स्थपतये नमः। वृक्षाणां पतये नमः।
 नमो मन्त्रिणे नमः। वाणिजाय नमः।
 कक्षाणां पतये नमः। नमो भुवन्तये नमः।
 वारिवस्कृताय नमः। ओषधीनां पतये नमः।
 नम उच्चैर्घोषाय नमः। आक्रन्दयते नमः।
 पत्तीनां पतये नमः। नमः कृत्स्नवीताय नमः।
 धावते नमः। सत्त्वंनां पतये नमः॥
 नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः।
 आव्याधिनीनां पतये नमः। नमः ककुभाय नमः।
 निषङ्गिणे नमः। स्तेनानां पतये नमः।

नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः।
 तस्कराणां पतये नमः। नमो वञ्चते नमः।
 परिवञ्चते नमः। स्तायूनां पतये नमः।
 नमो निचेरवे नमः। परिचराय नमः।
 अरण्यानां पतये नमः। नमः सृकाविभ्यो नमः।
 जिघांसद्भ्यो नमः। मुष्णतां पतये नमः।
 नमोऽसिमद्भ्यो नमः। नक्तं चरद्भ्यो नमः।
 प्रकुन्तानां पतये नमः। नम उष्णीषिने नमः।
 गिरिचराय नमः। कुलुञ्चानां पतये नमः।
 नम इषुमद्भ्यो नमः। धन्वाविभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नम आतन्वानेभ्यो नमः। प्रतिदधानेभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नम आयच्छद्भ्यो नमः। विसृजद्भ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमोऽस्यद्भ्यो नमः। विध्यद्भ्यश्च नमः। वो नमः।
 नम आसीनेभ्यो नमः। शयानेभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमः स्वपद्भ्यो नमः। जाग्रद्भ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमस्तिष्ठद्भ्यो नमः। धावद्भ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमः सभाभ्यो नमः। सभापतिभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमो अश्वेभ्यो नमः। अश्वपतिभ्यश्च नमः। वो नमः॥
 नम आव्याधिनीभ्यो नमः। विविध्यन्तीभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नम उगणाभ्यो नमः। तृहतीभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमो गृत्सेभ्यो नमः। गृत्सपतिभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमो व्रातेभ्यो नमः। व्रातपतिभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमो गणेभ्यो नमः। गणपतिभ्यश्च नमः। वो नमः।
 नमो विरूपेभ्यो नमः। विश्वरूपेभ्यश्च नमः। वो नमः।

नमो॑ म॒हद्भ्यो॑ नमः॑। क्षु॒ल्लके॒भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थिभ्यो॑ नमः॑। अ॒रथे॒भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ र॒थेभ्यो॑ नमः॑। र॒थप॑तिभ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ से॒नाभ्यो॑ नमः॑। से॒नानि॑भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ क्ष॒त्त॒भ्यो॑ नमः॑। स॒ङ्ग॒हीतृ॑भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑स्तक्ष॒भ्यो॑ नमः॑। र॒थका॑रेभ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ कु॒लाले॑भ्यो॑ नमः॑। क॒र्मरि॑भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ पु॒ञ्जिष्टे॑भ्यो॑ नमः॑। नि॒षादे॑भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नम॑ इषु॒कृद्भ्यो॑ नमः॑। ध॒न्व॒कृद्भ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमो॑ मृ॒गयु॑भ्यो॑ नमः॑। श्व॒निभ्य॑श्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑।
 नमः॑ श्व॒भ्यो॑ नमः॑। श्व॒प॑तिभ्यश्च॑ नमः॑। वो॒ नमः॑॥
 नमो॑ भ॒वाय॑ च॒ नमः॑। रु॒द्राय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ श॒र्वाय॑ च॒ नमः॑। प॒शुप॑तये च॒ नमः॑।
 नमो॑ नील॑ग्रीवाय च॒ नमः॑। शि॒ति॒क॒ण्ठाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ क॒पर्दि॑ने च॒ नमः॑। व्यु॒प्त॒केशाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ स॒हस्रा॑क्षाय च॒ नमः॑। श॒तध॑न्वने च॒ नमः॑।
 नमो॑ गि॒रि॒शाय॑ च॒ नमः॑। शि॒पि॒वि॒ष्टाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ मी॒ढुष्ट॑माय च॒ नमः॑। इषु॑मते च॒ नमः॑।
 नमो॑ ह॒स्वाय॑ च॒ नमः॑। वा॒म॒नाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ बृ॒हते॑ च॒ नमः॑। व॒र्षी॒य॒से च॒ नमः॑।
 नमो॑ वृ॒द्धाय॑ च॒ नमः॑। स॒ंवृ॒ध्व॒ने च॒ नमः॑।
 नमो॑ अ॒ग्नि॒याय॑ च॒ नमः॑। प्र॒थ॒माय॑ च॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒शवे॑ च॒ नमः॑। अ॒जि॒राय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ शी॒घ्रि॒याय॑ च॒ नमः॑। शी॒भ्याय॑ च॒ नमः॑।

नमः ऊ॒र्म्या॑य च॒ नमः॑। अ॒व॒स्व॒न्या॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्त्रो॒त॒स्या॑य च॒ नमः॑। द्वी॒प्या॑य च॒ नमः॑॥
 नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑। क॒नि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ पू॒र्व॒जा॑य च॒ नमः॑। अ॒प॒र॒जा॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ म॒ध्य॒मा॑य च॒ नमः॑। अ॒प॒ग॒ल्भा॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ जघ॒न्या॑य च॒ नमः॑। बु॒ध्नि॑याय च॒ नमः॑।
 नमः॑ सो॒भ्या॑य च॒ नमः॑। प्र॒ति॒स॒र्या॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ या॒म्या॑य च॒ नमः॑। क्षे॒म्या॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ उ॒र्व॒र्या॑य च॒ नमः॑। ख॒ल्या॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्लो॒का॑य च॒ नमः॑। अ॒व॒सा॒न्या॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ व॒न्या॑य च॒ नमः॑। क॒क्ष्या॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्र॒वा॑य च॒ नमः॑। प्र॒ति॒श्र॒वा॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ आ॒शु॒षे॒णाय॑ च॒ नमः॑। आ॒शु॒र॒था॑य च॒ नमः॑।
 नमः॑ शू॒रा॑य च॒ नमः॑। अ॒व॒भि॒न्द॒ते च॒ नमः॑।
 नमो॑ वर्मि॒णे च॒ नमः॑। व॒रू॒थि॒ने च॒ नमः॑।
 नमो॑ बि॒ल्मि॒ने च॒ नमः॑। क॒व॒चि॒ने च॒ नमः॑।
 नमः॑ श्रु॒ता॑य च॒ नमः॑। श्रु॒त॒से॒ना॑य च॒ नमः॑॥
 नमो॑ दु॒न्दु॒भ्या॑य च॒ नमः॑। आ॒ह॒न॒न्या॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ धृ॒ष्ण॒वे च॒ नमः॑। प्र॒मृ॒शा॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ दू॒ता॑य च॒ नमः॑। प्र॒हि॒ता॑य च॒ नमः॑।
 नमो॑ निष॒ङ्गि॒णे च॒ नमः॑। इ॒षु॒धि॒म॒ते च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्ती॒क्ष्णेष॑वे च॒ नमः॑। आ॒यु॒धि॒ने च॒ नमः॑।
 नमः॑ स्वा॒यु॒धा॑य च॒ नमः॑। सु॒ध॒न्व॒ने च॒ नमः॑।

नमः सु॒त्याय च॒ नमः। प॒थ्याय च॒ नमः।
 नमः का॒ट्याय च॒ नमः। नी॒प्याय च॒ नमः।
 नमः सू॒द्याय च॒ नमः। सर॒स्याय च॒ नमः।
 नमो ना॒द्याय च॒ नमः। वै॒श॒न्ताय च॒ नमः।
 नमः कू॒प्याय च॒ नमः। अ॒व॒ट्याय च॒ नमः।
 नमो व॒र्ष्याय च॒ नमः। अ॒व॒र्ष्याय च॒ नमः।
 नमो मे॒घ्याय च॒ नमः। वि॒द्यु॒त्याय च॒ नमः।
 नम ई॒ध्रियाय च॒ नमः। आ॒त॒प्याय च॒ नमः।
 नमो वा॒त्याय च॒ नमः। रे॒ष्मियाय च॒ नमः।
 नमो वा॒स्त॒व्याय च॒ नमः। वा॒स्तु॒पाय च॒ नमः॥
 नमः सो॒माय च॒ नमः। रु॒द्राय च॒ नमः।
 नम॒स्ता॒म्राय च॒ नमः। अ॒रु॒णाय च॒ नमः।
 नमः श॒ङ्गाय च॒ नमः। प॒शु॒प॒तये च॒ नमः।
 नम उ॒ग्राय च॒ नमः। भी॒माय च॒ नमः।
 नमो अ॒ग्रे॒व॒धाय च॒ नमः। दू॒रे॒व॒धाय च॒ नमः।
 नमो ह॒त्रे च॒ नमः। ह॒नी॒य॒से च॒ नमः।
 नमो वृ॒क्षे॒भ्यो नमः। ह॒रि॒केशे॒भ्यो नमः।
 नम॒स्ता॒राय नमः। नमः श॒म्भ॒वे च॒ नमः।
 म॒यो॒भ॒वे च॒ नमः। नमः श॒ङ्क॒राय च॒ नमः।
 म॒य॒स्क॒राय च॒ नमः। नमः शि॒वाय च॒ नमः।
 शि॒व॒त॒राय च॒ नमः। नम॒स्ती॒र्थ्याय च॒ नमः।
 कू॒ल्याय च॒ नमः। नमः पा॒र्याय च॒ नमः।
 अ॒वा॒र्याय च॒ नमः। नमः प्र॒त॒र॒णाय च॒ नमः।

उत्तर॑णाय च॒ नमः॑। नम॑ आ॒ता॒र्या॒य च॒ नमः॑।
 आ॒ला॒द्या॒य च॒ नमः॑। नमः॑ श॒ष्या॒य च॒ नमः॑।
 फे॒न्या॒य च॒ नमः॑। नमः॑ सि॒क॒त्या॒य च॒ नमः॑।
 प्र॒वा॒ह्या॒य च॒ नमः॑॥

नम॑ इ॒रि॒ण्या॒य च॒ नमः॑। प्र॒प॒थ्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ कि॒श॒िला॒य च॒ नमः॑। क्ष॒य॒णाय॑ च॒ नमः॑।
 नमः॑ क॒प॒र्दि॒नै च॒ नमः॑। पु॒ल॒स्त॒र्यै च॒ नमः॑।
 नमो॑ गो॒ष्ठ्या॒य च॒ नमः॑। गृ॒ह्या॒य च॒ नमः॑।
 नम॑स्त॒ल्प्या॒य च॒ नमः॑। गे॒ह्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ का॒ट्या॒य च॒ नमः॑। गृ॒हृ॒रे॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑।
 नमो॑ हृ॒द॒य्या॒य च॒ नमः॑। नि॒वे॒ष्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ पा॒स॒व्या॒य च॒ नमः॑। र॒ज॒स्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ शु॒ष्क्या॒य च॒ नमः॑। ह॒रि॒त्या॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ लो॒प्या॒य च॒ नमः॑। उ॒ल॒प्या॒य च॒ नमः॑।
 नम॑ ऊ॒र्व्या॒य च॒ नमः॑। सू॒र्या॒य च॒ नमः॑।
 नमः॑ पु॒र्या॒य च॒ नमः॑। पु॒र्ण॒श॒द्या॒य च॒ नमः॑।
 नमो॑ऽप॒गु॒रमा॑णाय च॒ नमः॑। अ॒भि॒घ्न॒ते च॒ नमः॑।
 नम॑ आ॒खि॒व॒द॒ते च॒ नमः॑। प्र॒खि॒व॒द॒ते च॒ नमः॑। नमो॑ वो॒ नमः॑।
 कि॒रि॒के॒भ्यो नमः॑। दे॒वा॒ना॒ं हृ॒द॒ये॒भ्यो नमः॑।
 नमो॑ वि॒क्षी॒ण॒के॒भ्यो नमः॑। नमो॑ वि॒चि॒न्व॒त्के॒भ्यो नमः॑।
 नम॑ आ॒नि॒र॒ह॒ते॒भ्यो नमः॑। नम॑ आ॒मी॒व॒त्के॒भ्यो नमः॑।
 ॥इति॑ श्री-श्रीरुद्रनाम त्रिशती सम्पूर्णा॥



॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

| | | | |
|-------------------|----|--------------------------|----|
| शिवाय नमः | | कपालिने नमः | |
| महेश्वराय नमः | | कामारये नमः | |
| शम्भवे नमः | | अन्धकासुरसूदनाय नमः | |
| पिनाकिने नमः | | गङ्गाधराय नमः | |
| शशिशेखराय नमः | | ललाटाक्षाय नमः | |
| वामदेवाय नमः | | कालकालाय नमः | |
| विरूपाक्षाय नमः | | कृपानिधये नमः | ३० |
| कर्पदिने नमः | | भीमाय नमः | |
| नीललोहिताय नमः | | परशुहस्ताय नमः | |
| शङ्कराय नमः | १० | मृगपाणये नमः | |
| शूलपाणिने नमः | | जटाधराय नमः | |
| खट्वाङ्गिने नमः | | कैलासवासिने नमः | |
| विष्णुवल्लभाय नमः | | कवचिने नमः | |
| शिपिविष्टाय नमः | | कठोराय नमः | |
| अम्बिकानाथाय नमः | | त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| श्रीकण्ठाय नमः | | वृषाङ्गाय नमः | |
| भक्तवत्सलाय नमः | | वृषभारूढाय नमः | ४० |
| भवाय नमः | | भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| शर्वाय नमः | | सामप्रियाय नमः | |
| त्रिलोकेशाय नमः | २० | स्वरमयाय नमः | |
| शितिकण्ठाय नमः | | त्रयीमूर्तये नमः | |
| शिवाप्रियाय नमः | | अनीश्वराय नमः | |
| उग्राय नमः | | सर्वज्ञाय नमः | |

| | | | |
|-------------------------|----|-------------------|----|
| परमात्मने नमः | | सूक्ष्मतनवे नमः | |
| सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | | जगद्ध्यापिने नमः | |
| हविषे नमः | | जगद्गुरवे नमः | |
| यज्ञमयाय नमः | ५० | व्योमकेशाय नमः | |
| सोमाय नमः | | महासेनजनकाय नमः | |
| पञ्चवक्त्राय नमः | | चारुविक्रमाय नमः | |
| सदाशिवाय नमः | | रुद्राय नमः | |
| विश्वेश्वराय नमः | | भूतपतये नमः | |
| वीरभद्राय नमः | | स्थाणवे नमः | ८० |
| गणनाथाय नमः | | अहये बुध्याय नमः | |
| प्रजापतये नमः | | दिगम्बराय नमः | |
| हिरण्यरेतसे नमः | | अष्टमूर्तये नमः | |
| दुर्धर्षाय नमः | | अनेकात्मने नमः | |
| गिरीशाय नमः | ६० | सात्त्विकाय नमः | |
| गिरिशाय नमः | | शुद्धविग्रहाय नमः | |
| अनघाय नमः | | शाश्वताय नमः | |
| भुजङ्गभूषणाय नमः | | खण्डपरशवे नमः | |
| भर्गाय नमः | | अजाय नमः | |
| गिरिधन्वने नमः | | पाशविमोचकाय नमः | ९० |
| गिरिप्रियाय नमः | | मृडाय नमः | |
| कृत्तिवाससे नमः | | पशुपतये नमः | |
| पुरारातये नमः | | देवाय नमः | |
| भगवते नमः | | महादेवाय नमः | |
| प्रमथाधिपाय नमः | ७० | अव्ययाय नमः | |
| मृत्युञ्जयाय नमः | | हरये नमः | |

पूषदन्तभिदे नमः

अव्यग्राय नमः

दक्षाध्वरहराय नमः

हराय नमः

भगनेत्रभिदे नमः

अव्यक्ताय नमः

१००

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः

अपवर्गप्रदाय नमः

अनन्ताय नमः

तारकाय नमः

परमेश्वराय नमः

॥ इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनैशन्नस्येषंव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीदुष्टम् हस्तै बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानां तताय
धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि घेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्रिकालाय कालाग्रिरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णिं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वार्तेन सगरेण रक्ष॥
रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।
ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः।
ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः।
ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः।
ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो
मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।
शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः।
महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः।
त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति

द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ द्वितीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।

करोमि विधिवद्वत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर।

गृहाणार्घ्यमुमाकान्त शिवरात्रौ प्रसीद मे॥२॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

पूर्वं नन्दि महाकालौ गणभृङ्गी च दक्षिणे।

वृषस्कन्दौ पश्चिमे ते देशकालौ तथोत्तरे।

गङ्गा च यमुना पार्श्वे पूजां गृह्ण नमोऽस्तुते॥२॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।

तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ते क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।

शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।

त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।

उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (तृतीय-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
()^{५७} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर /
भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{५८} नक्षत्र ()^{५९} नाम योग () करण

^{५७}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{५८}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{५९}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां)
 शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
 वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां
 प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
 शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं तृतीय-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
 रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
 पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
 विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
 नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि। आवाहयामि॥१॥

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शर्व्या या तव तया
 नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
 समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
 गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
 माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
 पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्धवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयुक्ष्मः सुमना
असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमाः रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषाः हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं
समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्त्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि

समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरात्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषंवः परा ता भंगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व९ सहस्राक्ष शतैषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो
नः सुमना भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शशिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः

विरूपाक्षाय नमः
कपर्दिने नमः
नीललोहिताय नमः
शङ्कराय नमः
शूलपाणिने नमः
खट्वाङ्गिने नमः

| | | | |
|---------------------|----|--------------------------|----|
| विष्णुवल्लभाय नमः | | त्रिपुरान्तकाय नमः | |
| शिपिविष्टाय नमः | | वृषाङ्गाय नमः | |
| अम्बिकानाथाय नमः | | वृषभारूढाय नमः | ४० |
| श्रीकण्ठाय नमः | | भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | |
| भक्तवत्सलाय नमः | | सामप्रियाय नमः | |
| भवाय नमः | | स्वरमयाय नमः | |
| शर्वाय नमः | | त्रयीमूर्तये नमः | |
| त्रिलोकेशाय नमः | २० | अनीश्वराय नमः | |
| शितिकण्ठाय नमः | | सर्वज्ञाय नमः | |
| शिवाप्रियाय नमः | | परमात्मने नमः | |
| उग्राय नमः | | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| कपालिने नमः | | हविषे नमः | |
| कामारये नमः | | यज्ञमयाय नमः | ५० |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः | | सोमाय नमः | |
| गङ्गाधराय नमः | | पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ललाटाक्षाय नमः | | सदाशिवाय नमः | |
| कालकालाय नमः | | विश्वेश्वराय नमः | |
| कृपानिधये नमः | ३० | वीरभद्राय नमः | |
| भीमाय नमः | | गणनाथाय नमः | |
| परशुहस्ताय नमः | | प्रजापतये नमः | |
| मृगपाणये नमः | | हिरण्यरेतसे नमः | |
| जटाधराय नमः | | दुर्धर्षाय नमः | |
| कैलासवासिने नमः | | गिरीशाय नमः | ६० |
| कवचिने नमः | | गिरिशाय नमः | |
| कठोराय नमः | | अनघाय नमः | |

भुजङ्गभूषणाय नमः
 भर्गाय नमः
 गिरिधन्वने नमः
 गिरिप्रियाय नमः
 कृत्तिवाससे नमः
 पुरारातये नमः
 भगवते नमः
 प्रमथाधिपाय नमः
 मृत्युञ्जयाय नमः
 सूक्ष्मतनवे नमः
 जगद्धापिने नमः
 जगद्गुरवे नमः
 व्योमकेशाय नमः
 महासेनजनकाय नमः
 चारुविक्रमाय नमः
 रुद्राय नमः
 भूतपतये नमः
 स्थाणवे नमः
 अहये बुध्याय नमः
 दिगम्बराय नमः
 अष्टमूर्तये नमः
 अनेकात्मने नमः
 सात्त्विकाय नमः

७०

८०

शुद्धविग्रहाय नमः
 शाश्वताय नमः
 खण्डपरशवे नमः
 अजाय नमः
 पाशविमोचकाय नमः
 मृडाय नमः
 पशुपतये नमः
 देवाय नमः
 महादेवाय नमः
 अव्ययाय नमः
 हरये नमः
 पूषदन्तभिदे नमः
 अव्यग्राय नमः
 दक्षाध्वरहराय नमः
 हराय नमः
 भगनेत्रभिदे नमः
 अव्यक्ताय नमः
 सहस्राक्षाय नमः
 सहस्रपदे नमः
 अपवर्गप्रदाय नमः
 अनन्ताय नमः
 तारकाय नमः
 परमेश्वराय नमः

९०

१००

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्तै बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय
धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥

रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ तृतीय-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्वत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥निशीथे॥

दुःखदारिद्र्यभारैश्च दग्धोऽहं पार्वतीपते।
त्रायस्व मां महादेव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥३॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

नमोऽव्यक्ताय सूक्ष्माय नमस्ते त्रिपुरान्तक।
पूजां गृहाण देवेश यथाशक्त्युपपादिताम्॥३॥

यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्नग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः ।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
 बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
 करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
 नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ प्रधान-पूजा — साम्ब-परमेश्वर-पूजा (चतुर्थ-यामः) ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
 अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
 कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
 शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकणां प्रभवादि षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये
 ()^{६०} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ कुम्भ-मासे कृष्ण-पक्षे
 त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर
 / भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{६१} नक्षत्र ()^{६२} नाम योग () करण
 युक्तायां च एवं गुण विशेषण विशिष्टायाम् अस्याम् (त्रयोदश्यां/चतुर्दश्यां)
 शुभतिथौ अस्माकं सहकुटुम्बानां क्षेमस्थैर्य-धैर्य-वीर्य-विजय-आयुरारोग्य-
 ऐश्वर्याभिवृद्ध्यर्थम् धर्मार्थकाममोक्षचतुर्विधफलपुरुषार्थसिद्ध्यर्थं पुत्रपौत्राभि-
 वृद्ध्यर्थम् इष्टकाम्यार्थसिद्ध्यर्थम् मम इहजन्मनि पूर्वजन्मनि जन्मान्तरे च
 सम्पादितानां ज्ञानाज्ञानकृतमहापातकचतुष्टय-व्यतिरिक्तानां रहस्यकृतानां

^{६०}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{६१}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{६२}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

प्रकाशकृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनद्वारा सकल-पापक्षयार्थं
शिवरात्रौ श्री-साम्ब-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं चतुर्थ-यामपूजां करिष्ये।

॥ षोडशोपचार-पूजा ॥

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

अस्मिन् बिम्बे श्री-साम्ब-परमेश्वरं ध्यायामि।

नमस्ते रुद्र मन्यवे उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते
नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजातं प्रपद्यामि। आवाहयामि॥१॥

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्या या तव तया
नो रुद्र मृडय॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। सद्योजाताय वै नमो नमः। आसनं
समर्पयामि॥२॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया
गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवे भवे नाति भवे भवस्व
माम्। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥३॥

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंसीः
पुरुषं जगत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। भवोद्भवाय नमः॥ अर्घ्यं समर्पयामि॥४॥

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म सुमना
असत्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। वामदेवाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥५॥

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च
यातुधान्यः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। ज्येष्ठाय नमः। मधुपर्कं समर्पयामि॥६॥

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चेमां रुद्रा अभितो दिक्षु
श्रिताः सहस्रशोऽवैषां हेड ईमहे॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। श्रेष्ठाय नमः। स्नानं
समर्पयामि।

रुद्रम्। चमकम्। पुरुषसूक्तम्॥

स्नानानन्तरम् आचमनीयं समर्पयामि॥७॥

साक्षतजलेन तर्पणं कार्यम्॥

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि।
ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि।
ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि॥

ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ
भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महतो देवस्य पत्नीं तर्पयामि॥

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः।
उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृडयाति नः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। रुद्राय
नमः। वस्त्रोत्तरीयं समर्पयामि॥८॥

नमो अस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं
तेभ्योऽकरं नमः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कालाय नमः। यज्ञोपवीताभरणानि
समर्पयामि॥९॥

प्र मुञ्च धन्वंनस्त्वमुभयोरार्त्रियोज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
वप॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। कलविकरणाय नमः। दिव्यपरिमलगन्धान्
धारयामि। गन्धस्योपरि अक्षतान् समर्पयामि॥१०॥

अवतत्य धनुस्त्व२ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखां शिवो
नः सुमनां भव॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलविकरणाय नमः। पुष्पैः
पूजयामि॥११॥

ॐ भवाय देवाय नमः। ॐ शर्वाय देवाय नमः।
ॐ ईशानाय देवाय नमः। ॐ पशुपतये देवाय नमः।
ॐ रुद्राय देवाय नमः। ॐ उग्राय देवाय नमः।
ॐ भीमाय देवाय नमः। ॐ महते देवाय नमः॥
ॐ भवस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ ईशानस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्न्यै नमः।
ॐ भीमस्य देवस्य पत्न्यै नमः। ॐ महतो देवस्य पत्न्यै नमः॥

॥ शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः ॥

शिवाय नमः
महेश्वराय नमः
शम्भवे नमः
पिनाकिने नमः
शशिशेखराय नमः
वामदेवाय नमः
विरूपाक्षाय नमः
कपर्दिने नमः
नीललोहिताय नमः
शङ्कराय नमः
शूलपाणिने नमः

१०

खट्वाङ्गिने नमः
विष्णुवल्लभाय नमः
शिपिविष्टाय नमः
अम्बिकानाथाय नमः
श्रीकण्ठाय नमः
भक्तवत्सलाय नमः
भवाय नमः
शर्वाय नमः
त्रिलोकेशाय नमः
शितिकण्ठाय नमः
शिवाप्रियाय नमः

२०

| | | | |
|--------------------------|----|-------------------------|----|
| उग्राय नमः | | सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः | |
| कपालिने नमः | | हविषे नमः | |
| कामारये नमः | | यज्ञमयाय नमः | ५० |
| अन्धकासुरसूदनाय नमः | | सोमाय नमः | |
| गङ्गाधराय नमः | | पञ्चवक्त्राय नमः | |
| ललाटाक्षाय नमः | | सदाशिवाय नमः | |
| कालकालाय नमः | | विश्वेश्वराय नमः | |
| कृपानिधये नमः | ३० | वीरभद्राय नमः | |
| भीमाय नमः | | गणनाथाय नमः | |
| परशुहस्ताय नमः | | प्रजापतये नमः | |
| मृगपाणये नमः | | हिरण्यरेतसे नमः | |
| जटाधराय नमः | | दुर्धर्षाय नमः | |
| कैलासवासिने नमः | | गिरीशाय नमः | ६० |
| कवचिने नमः | | गिरिशाय नमः | |
| कठोराय नमः | | अनघाय नमः | |
| त्रिपुरान्तकाय नमः | | भुजङ्गभूषणाय नमः | |
| वृषाङ्काय नमः | | भर्गाय नमः | |
| वृषभारूढाय नमः | ४० | गिरिधन्वने नमः | |
| भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः | | गिरिप्रियाय नमः | |
| सामप्रियाय नमः | | कृत्तिवाससे नमः | |
| स्वरमयाय नमः | | पुरारातये नमः | |
| त्रयीमूर्तये नमः | | भगवते नमः | |
| अनीश्वराय नमः | | प्रमथाधिपाय नमः | ७० |
| सर्वज्ञाय नमः | | मृत्युञ्जयाय नमः | |
| परमात्मने नमः | | सूक्ष्मतनवे नमः | |

जगद्ध्यापिने नमः

जगद्गुरवे नमः

व्योमकेशाय नमः

महासेनजनकाय नमः

चारुविक्रमाय नमः

रुद्राय नमः

भूतपतये नमः

स्थाणवे नमः

अहये बुध्याय नमः

दिगम्बराय नमः

अष्टमूर्तये नमः

अनेकात्मने नमः

सात्त्विकाय नमः

शुद्धविग्रहाय नमः

शाश्वताय नमः

खण्डपरशवे नमः

अजाय नमः

पाशविमोचकाय नमः

८०

९०

मृडाय नमः

पशुपतये नमः

देवाय नमः

महादेवाय नमः

अव्ययाय नमः

हरये नमः

पूषदन्तभिदे नमः

अव्यग्राय नमः

दक्षाध्वरहराय नमः

हराय नमः

भगनेत्रभिदे नमः

अव्यक्ताय नमः

सहस्राक्षाय नमः

सहस्रपदे नमः

अपवर्गप्रदाय नमः

अनन्ताय नमः

तारकाय नमः

परमेश्वराय नमः

१००

॥इति शाक्तप्रमोदे श्री-शिवाष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

॥ उत्तराङ्ग-पूजा ॥

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाꣳ उत। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य
निषङ्गथिः॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलाय नमः। धूपमाघ्रापयामि॥१२॥

या ते हेतिर्मीढुष्टम् हस्तै बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया
परिभुज॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। बलप्रमथनाय नमः। अलङ्कारदीपं
सन्दर्शयामि॥१३॥

ॐ भूर्भुवः सुवः। + ब्रह्मणे स्वाहा। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय
धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय।
सर्वभूतदमनाय नमः। () निवेदयामि। मध्ये मध्ये अमृतपानीयं समर्पयामि।
अमृतापिधानमसि।

हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। पादप्रक्षालनं समर्पयामि। निवेदनानन्तरम्
आचमनीयं समर्पयामि॥१४॥

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवाऽऽरे
अस्मन्नि धेहि तम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय। मनोन्मनाय नमः। कर्पूरताम्बूलं
समर्पयामि॥१५॥

नमस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वराय महादेवाय त्र्यम्बकाय त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय कालाग्निरुद्राय नीलकण्ठाय मृत्युञ्जयाय सर्वेश्वराय
सदाशिवाय श्रीमन्महादेवाय नमः॥ कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥१६॥

॥ रक्षा ॥

बृहत्सामं क्षत्रभृद्वृद्ध वृष्णियं त्रिष्टुभौजः शुभितमुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेन
पञ्चदशेन मध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष॥

रक्षां धारयामि॥

॥ नमस्काराः ॥

ॐ भवाय देवाय नमः।

ॐ शर्वाय देवाय नमः।

ॐ ईशानाय देवाय नमः।

ॐ पशुपतये देवाय नमः।

ॐ रुद्राय देवाय नमः।

ॐ उग्राय देवाय नमः।

ॐ भीमाय देवाय नमः।

ॐ महते देवाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्॥ ॐ ह्रीं नमः शिवाय॥ मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

शिवाय नमः। रुद्राय नमः। पशुपतये नमः। नीलकण्ठाय नमः। महेश्वराय नमः। हरिकेशाय नमः। विरूपाक्षाय नमः। पिनाकिने नमः। त्रिपुरान्तकाय नमः। शम्भवे नमः। शूलिने नमः। महादेवाय नमः। इति द्वादशनामभिर्द्वादशपुष्पाञ्जलीन् दत्त्वा॥

प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा॥

॥ अर्घ्यप्रदानम् ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम् शिवरात्रौ चतुर्थ-याम-पूजान्ते क्षीरार्घ्यप्रदानं करिष्ये॥

शिवरात्रिव्रतं देव पूजाजपपरायणः।
करोमि विधिवद्दत्तं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते॥

इत्यर्घ्यं दत्त्वा।

किं न जानासि देवेश त्वयि भक्तिं प्रयच्छ मे।
स्वपादाग्रतले देव दास्यं देहि जगत्पते॥४॥

॥ पूजानिवेदनम् ॥

बद्धोऽहं विविधैः पाशैः संसारभयबन्धनैः।
पतितं मोहजाले मां त्वं समुद्धर शङ्कर॥४॥
यत्किञ्चित् कुर्महे देव सदा सुकृतदुष्कृतम्।
तन्मे शिवपदस्थस्य भुङ्क्ष्व क्षपय शङ्कर॥

शिवो दाता शिवो भोक्ता शिवः सर्वमिदं जगत्।
शिवो जयति सर्वत्र यः शिवः सोऽहमेव हि॥

इति प्रार्थ्य॥

देवहृदयस्थं पादस्थं च पुष्पमादाय प्रणम्य देवेन दत्तमिति ध्यात्वा॥

प्रपन्नं पाहि मामीश भीतमृत्युमहार्णवात्।
त्वयोपभुक्त-स्रग्-गन्ध-वासो-लङ्कार-चर्चिताः।
उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेम हि॥

इति मूर्ध्नि धृत्वा॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर।
यत्कृतं तु मया देव परिपूर्णं तदस्तु ते॥

अनेन पूजनेन साम्बसदाशिवः प्रीयताम्।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु।

॥ उत्तरस्मिन् दिने पारणम् ॥

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर।
प्रसीद सुमुखो नाथ ज्ञानदृष्टिप्रदो भव॥

॥ कथा ॥

सूत उवाच

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम्।
पञ्चवक्त्रं दशभुजं त्रिनेत्रं शूलपाणिनम्॥१॥

पिनाकशोभितकरं खड्गखेटकधारिणम्।
कपालखट्वाङ्गधरं नीलकण्ठसुशोभितम्॥२॥

भस्माङ्गं व्यालशोभाढ्यमस्थिमालाविभूषितम्।
नीलजीमूतसङ्काशं सूर्यकोटिसमप्रभम्॥३॥

क्रीडन्तं च शिवं तत्र गणैश्च परिवारितम्।
विसृज्य देवताः सर्वास्तिष्ठन्तं परमेश्वरम्॥४॥

तं दृष्ट्वा देवदेवेशं प्रहस्योत्फुल्ललोचनम्।
पार्वती परिपप्रच्छ विनयावनता स्थिता॥५॥

पार्वत्युवाच

कथयस्व प्रसादेन यद्गोप्यं व्रतमुत्तमम्।
श्रुतास्त्वयोक्ता देवेश व्रतानां निर्णयाः शुभाः॥६॥

तथा वै दानधर्माश्च तीर्थधर्मास्त्वयोदिताः।
नास्ति मे निश्चयो देव भ्रान्ताऽहं च पुनः पुनः॥७॥

तस्माद्वदस्व मे देव ह्येकं निःसंशयं व्रतम्।
व्रतानामुत्तमं देव भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥८॥

तदहं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व मम प्रभो।

ईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि^{६३} व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥९॥

यन्न कस्यचिदाख्यातं रहस्यं मुक्तिदायकम्।
येनैव कथ्यमानेन यमोऽपि विलयं व्रजेत्॥१०॥

तदहं कथयिष्यामि शृणुष्वैकमनाः प्रिये।
माघमासे कृष्णपक्षे अमायुक्ता चतुर्दशी^{६४}॥११॥

शिवरात्रिस्तु सा ज्ञेया सर्वयज्ञोत्तमोत्तमा।
दानैर्यज्ञैस्तपोभिश्च व्रतैश्च विविधैरपि॥१२॥

न तीर्थैस्तद्भवेत्पुण्यं यत्पुण्यं शिवरात्रितः।
शिवरात्रिसमं नास्ति व्रतानामुत्तमं व्रतम्॥१३॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि कृत्वा मोक्षमवाप्नुयात्।
मृतास्ते निरयं यान्ति यैरेषा न कृता क्वचित्॥१४॥

कृता येर्निरयं त्यक्त्वा गतास्ते शिवसन्निधौ।
सर्वमङ्गलशीला च सर्वामङ्गलनाशिनी॥१५॥

भुक्तिमुक्तिप्रदा चैषा सत्यं सत्यं वरानने।

देव्युवाच

कथं यमपुरं त्यक्त्वा शिवलोके व्रजेन्नरः॥१६॥

^{६३}परं गुह्यम् इत्यपि पाठः

^{६४}माघान्ते कृष्णपक्षे तु अविद्धा या चतुर्दशी। इत्यपि पाठः

एतन्मे महदाश्चर्यं प्रत्यक्षं कुरु शङ्कर।

शङ्कर उवाच

शृणु देवि यथावृत्तां कथां पौराणिकीं शुभाम्॥१७॥

यमशासनहन्त्रीं च शिवस्थानप्रदायिनीम्।
कश्चिदासीत्पुरा देवि निषादो जीवघातकः^{६५}॥१८॥

प्रत्यन्तदेशवासी च भूधरासन्नकेतनः।
सीमान्ते स सदा तिष्ठन्कुटुम्बपरिपालकः॥१९॥

तन्वा पीनो धनुर्धारी श्यामाङ्गः कृष्णकञ्चुकः।
बद्धगोधाङ्गुलित्राणः सदैव मृगयारतः॥२०॥

एवंविधो निषादोऽसौ चतुर्दश्या दिने शुभे।
व्यवहारिकैश्च द्रव्यार्थं देवागारे प्ररोधितः॥२१॥

तेनापि देवता दृष्टा जनानां वचनं श्रुतम्।
उपवासव्रतीनां च जल्पतां शिवशिवेति च॥२२॥

दिनान्ते तैस्तदा मुक्तः प्रातर्द्रव्यं प्रदीयताम्।
ततोऽसौ धनुरादाय दक्षिणेन गतः स्वयम्॥२३॥

आगच्छन्स वनोद्देशे जनहासं चकार सः।
शिवशिव किमेतद्वै कुर्वन्ति नगरे जनाः॥२४॥

वनेचरान्निरीक्षंस्तु चतुर्दिक्षु इतस्ततः।
पदं च पदमार्गं च अन्विष्यन्सूकरान्मृगान्॥२५॥

इतश्चेतश्च धावन्वै आमिषे लुब्धमानसः।
वनं च पर्वतान्सर्वान्भ्रमत्वा गिरिकन्दराः॥२६॥

^{६५}निषादस्त्वामिषप्रियः। इत्यपि पाठः

सम्प्राप्तं तेन नो किञ्चिन्मृगसूकरचित्तलम्^{६६}।
निराशो लुब्धको यावत्तावदस्तं गतो रविः॥२७॥

चिन्तयित्वा जलोपान्ते जागरं^{६७} जीवघातनम्।
संविधास्याम्यहं रात्रौ निश्चितं मम जीवनम्॥२८॥

तडागसन्निधौ गत्वा तत्तीरे जालिमध्यतः।
आश्रमं कर्तुमारेभे आत्मनो गुप्तिकारणात्॥२९॥

जालिमध्ये महालिङ्गं स्थितं स्वायम्भुवं शुभम्।
बिल्ववृक्षो महान्दिव्यो जालिमध्ये च संस्थितः॥३०॥

गृहीत्वा तस्य पर्णानि मार्गशुद्ध्यर्थमक्षिपत्।
क्षिप्तानि दक्षिणे भागे निपेतुर्लिङ्गमूर्धनि॥३१॥

तस्य गन्धं समासाद्य लुब्धकस्य वरानने।
न तिष्ठन्ति मृगाः सर्वे शरघातभयात्तदा॥३२॥

न दिवा भोजनं जातं संरोधस्य प्रभावतः।
मृगान्निरीक्षतो रात्रौ निद्रानाशोऽप्यजायत॥३३॥

जालिमध्ये गतस्यास्य प्रथमः प्रहरो गतः।
ततो जलार्थमायाता हरिणी गर्भसंयुता॥३४॥

यौवनस्था सुरूपा च स्तनपीना सुशोभना।
निरीक्षन्ती दिशः सर्वा भृशमुत्फुल्ललोचना॥३५॥

लुब्धकेनापि सा दृष्टा बाणगोचरमागता।
कृतं च बाणसन्धानं तेनैकाग्रेण चेतसा॥३६॥

त्रोटयित्वाथ पत्राणि प्रक्षिप्तानि शिवोपरि।
शिवेति संस्मरन्वादं शीतेन परिपीडितः॥३७॥

^{६६}तित्तिरमित्यपि पाठः

^{६७}जागर चिन्तायित्वेन्वयः

एतस्मिन्नन्तरे दृष्टो हरिण्या लुब्धकस्तदा।
 लुब्धकस्तु स्वरूपेण कृतान्त इव तिष्ठति॥३८॥
 दृष्ट्वा तु तस्य सन्धानं यमदंष्ट्रासमप्रभम्।
 मृगी सा दिव्यया वाचा लुब्धकं वाक्यमब्रवीत्॥३९॥

मृग्युवाच

स्थिरो भव महाव्याध सर्वजीवनिकृन्तन।
 कथयस्व महाबाहो किमर्थं मां हनिष्यसि॥४०॥

शिव उवाच

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा लुब्धकः प्राह तां मृगीम्।

लुब्धक उवाच

समातृकं कुटुम्बं मे क्षुधया पीड्यते भृशम्॥४१॥
 धनं वै मद्गृहे नास्ति तेन त्वां हन्मि शोभने।

सूत उवाच

याम^{६८}पूजाप्रभावेण जागरोपोषणेन च॥४२॥
 चतुर्थांशेन पापानां विमुक्तो लुब्धकस्तदा।
 लुब्धकस्तु ततो दृष्ट्वा मृगी मानुषभाषिणीम्॥४३॥
 उवाच वचनं तां वै धर्मयुक्तमसंशयम्।

लुब्धक उवाच

मया हि घातिता जीवा उत्तमाधममध्यमाः॥४४॥
 न श्रुता ईदृशी वाणी श्वापदानां कथञ्चन।
 कस्मिन् देशे त्वमुत्पन्ना कस्मात्स्थानादिहागता॥४५॥

कथयस्व प्रयत्नेन परं कौतहलं हि मे।

मृग्युवाच

शृणु त्वं लुब्धकश्रेष्ठ कथयामि तवाखिलम्॥४६॥

आसं पूर्वमहं रम्भा स्वर्गे शक्रस्य चाप्सराः।
अनन्तरूपलावण्या सौभाग्येन च गर्विता॥४७॥

सौभाग्यमदपुष्टाङ्गो दानवो बलगर्वितः।
मयैव च वृतो भर्ता हिरण्याक्षो महासुरः॥४८॥

तेन सार्धं मया भुक्तं चिरकालं यथेप्सितम्।
एवं कालो गतो व्याध क्रीडन्त्या मेऽसुरेण च॥४९॥

एकदा प्रेक्षितुं नृत्यं शङ्करस्य गताग्रतः।
यावद्गच्छाम्यहं तत्र तावन्मां शङ्करोऽब्रवीत्॥५०॥

क्व गता त्वं वरारोहे केन वा सङ्गता शुभे।
किं वा सौभाग्यगर्वेण नाऽऽयाता मम मन्दिरम्॥५१॥

सत्यं कथय शीघ्रं त्वं नो वा शापं ददामि ते।
शापभीत्या मया तत्र सत्यमुक्तं शिवाग्रतः॥५२॥

शृणु देव प्रवक्ष्यामि शापानुग्रहकारक।
ममास्ति भर्ता विश्वेश दानवेन्द्रो महाबलः॥५३॥

तेन सार्धं मया देव क्रीडितं निजमन्दिरे।
तेनाहं नाऽऽगमं शीघ्रं सृष्टिसंहारकारक॥५४॥

रुद्रस्तद्वचनं श्रुत्वा सकोपो वाक्यमब्रवीत्।
मृगः कामातुरो नित्यं हिरण्याक्षो भविष्यति॥५५॥

त्वं मृगी तस्य भार्या वै भविष्यसि न संशयः।
त्यक्त्वा^{६९} स्वर्गं तथा देवान्दानवं भोक्तुमिच्छसि॥५६॥

तस्मात्त्वं निर्जले देशे तृणाहारा भविष्यसि।
द्वादशाब्दानि भो भद्रे भविता शाप एष ते॥५७॥

परस्परस्य शोकेन शापान्तोऽपि भविष्यति।
अनुग्रहः पुनस्त्वेष शङ्करेण कृतः स्वयम्॥५८॥

कदाचिद्धि व्याधवरो मम सान्निध्यमाश्रितः।
बाणाग्रे तस्य सम्प्राप्ता पूर्वजन्म स्मरिष्यसि॥५९॥

शङ्करस्य तदा रूपं दृष्ट्वा मोक्षमवाप्स्यसि।
शङ्करो न मया दृष्टो वसन्त्यस्मिन्महावने॥६०॥

तेन दुःखमनुप्राप्ता मांसमेदोविवर्जिता।
गर्भाक्रान्ता विशेषेण न वध्या चेति निश्चितम्॥६१॥

सकुटुम्बस्य ते नूनं भोजनं न भविष्यति।
आयास्यति मृगी त्वन्या मार्गेणानेन लुब्धकः॥६२॥

पीना यौवनसम्पन्ना बहुमांसा मदोद्धता।
भोजनं सकुटुम्बस्य तया सद्यो भविष्यति॥६३॥

अथवाऽन्यो मृगो व्याध पानार्थं तु जलाशये^{७०}।
आगमिष्यति प्रत्यूषे क्षुधार्तस्य न संशयः॥६४॥

गर्भं त्यक्त्वा पुनः प्रातर्बालान्सन्दिश्य बन्धुषु।
शपथैरागमिष्यामि सन्दिश्य च सखीजनम्॥६५॥

तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा व्याधो विस्मयमागतः।
क्षणमेकं तथा स्थित्वा व्याधो वचनमब्रवीत्॥६६॥

^{६९}यत इति शेषः

^{७०}तव बाणस्य गोचरे इत्यपि पाठः

नाऽऽगमिष्यति चेदन्यो जीव^{७१}स्त्वमपि गच्छसि।
क्षुधया पीडितोऽहं वै कुटुम्बं च विशेषतः॥६७॥

प्रातस्त्वया मम गृहमागन्तव्यं यथायथम्।
शपथैश्च ब्रज त्वं हि यथा मे प्रत्ययो भवेत्॥६८॥

पृथिवी वायुरादित्यः सत्ये तिष्ठन्ति देवताः।
पालनीयं ततः सत्यं लोकद्वयमभीप्सुभिः॥६९॥

तस्मात्सत्येन गन्तव्यं भवत्या स्वगृहं प्रति।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा गर्भार्ता सा मृगी तदा॥७०॥

चक्रे सत्यप्रतिज्ञां वै व्याधस्याग्रे पुनः पुनः।

मृग्युवाच

द्विजो भूत्वा तु यो व्याध वेदभ्रष्टोऽभिजायते॥७१॥

स्वाध्यायसन्धारहितः सत्यशौचविवर्जितः।
अविक्रेयाणां विक्रेता अयाज्यानां च याजकः॥७२॥

^{७२}तस्य पापेन लिप्यामि यद्यहं नाऽऽगमं पुनः।
दुष्टबुद्धौ तु यत्पापं धूर्ते वा ग्रामकण्टके॥७३॥

नास्तिके च विशीले च परदाररते तथा।
वेदविक्रयणे चैव शवसूतकभोजने॥७४॥

तेन पापेन लिप्यामि यद्यहं नाऽऽगमं पुनः।
मृतशय्याप्रतिग्राहे माता पित्रोरपालके॥७५॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि तेऽन्तिकम्।
दानं दातुं प्रवृत्तस्य योऽन्तरायकरो नरः॥७६॥

^{७१}मृग इत्यपि पाठः

^{७२}तस्य यत्पापमिति शेषः। एवमेवाग्रेऽपि।

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
देवद्रव्यं गुरुद्रव्यं ब्रह्मद्रव्यं हरेत्तु यः॥७७॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
दीपं दीपेन यः कुर्यात्पादं पादेन धावयेत्॥७८॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
भर्तारं स्वामिनं मित्रमात्मानं बालमेव च॥७९॥

गां विप्रं च गुरुं नारीं यो मारयति दुर्मतिः।
तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥८०॥

अवैष्णवेचयत्पापं यत्पापं दाम्भिके जने।
अजितेन्द्रियेषु यत्पापं परदोषानुकीर्तने॥८१॥

कृतघ्ने च कदर्ये च परदाररते तथा।
सदाचारविहीने च परपीडाप्रदायके॥८२॥

परपैशुन्ययुक्ते च कन्याविक्रयकारके।
हैतुके बकवृत्तौ च कूटसाक्ष्यप्रदे तथा॥८३॥

एतेषां पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
यत्पापं ब्रह्महत्यायां पितृमातृवधे तथा॥८४॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
यत्पापं लुब्धकानां च यत्पापं गरदायिनाम्॥८५॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
द्विभार्यः पुरुषो यस्तु समदृष्ट्या न पश्यति॥८६॥

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
सकृद्वत्त्वा तु यः कन्यां द्वितीयाय प्रयच्छति॥८७॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
कथायां कथ्यमानायामन्तरं कुरुते नरः॥८८॥

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
पतिनिन्दापरो नित्यं वेदनिन्दापरो हि यः॥८९॥

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
यस्य सङ्ग्रहणी भार्या ब्राह्मणी च विशेषतः॥९०॥

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
प्रेतश्राद्धे तु यो भुङ्क्ते पतिते बहुयाजके॥९१॥

असच्छास्त्रार्थनिपुणज्ञपुराणार्थविवर्जिते।
मूर्खे पाखण्डनिरते क्रयविक्रयिके द्वये॥९२॥

एतेषां पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
एकाकी मिष्टमश्राति भार्यापुत्रविवर्जितः॥९३॥

आत्मजां गुणसम्पन्नां समाने सदृशे वरे।
न प्रयच्छति यः कन्यां नरो वै ज्ञानदुर्बलः॥९४॥

तेन पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
मृगीवाक्यं ततः श्रुत्वा लुब्धको हृष्टमानसः॥९५॥

संहृत्य बाणं सन्धानान्मुमोच हरिणीं तदा।
तस्या मुक्तिप्रभावेण लिङ्गस्यापि प्रपूजनात्॥९६॥

मुक्तोऽसौ पातकैः सर्वैस्तत्क्षणान्नात्र संशयः।
द्वितीये प्रहरे प्राप्ते मध्यरात्रे वरानने॥९७॥

तस्मिन्नेव क्षणे प्राप्ता कामार्ता मृगसुन्दरी।
सन्नस्ता भयसंविग्ना पतिमन्वेष्यतीमुहुः॥९८॥

जालिमध्ये स्थितेनाथ दृष्टा सा लुब्धकेन तु।
 पुनर्वृक्षस्य पत्राणि त्रोटयित्वा करेण तु॥१९॥
 क्षिप्तानि दक्षिणे भागे लिङ्गोपरिदिदृक्षया।
 तस्या वधार्थं तेनाथ बाणो धनुषि सन्धितः॥१००॥
 तिष्ठस्तत्रैकचित्तेन कुटुम्बार्थं जिघांसया।
 निरीक्ष्य लुब्धको यावद्बाणं तस्यां विमुञ्चति॥१०१॥
 तावन्मृग्या स सन्दृष्टो दृष्ट्वा तं विह्वलाऽभवत्।
 अद्यैव भगिनी मे हि लुब्धकेन विनाशिता॥१०२॥
 मम किं जीवितव्येन तस्या दुःखेन पीडिता।
 वरो मृत्युर्न शोको वै दृष्ट्वा व्याधं विशेषतः॥१०३॥
 एवं सञ्चिन्त्य हरिणी लुब्धकं वाक्यमब्रवीत्।

हरिण्युवाच

धनुर्धरवर व्याध सर्वजीवनिकृन्तन॥१०४॥
 देहि मे वचनं चैकं पश्चात्त्वं मां निपातय।
 आयाता हरिणी चैका मार्गेणानेन लुब्धक॥१०५॥
 समायाताऽथ वा नैव सत्यं कथय सुव्रत।
 तच्छ्रुत्वा लुब्धकस्तत्र विस्मितः क्षणमैक्षत॥१०६॥
 तस्यास्तु यादृशी वाणी अस्याश्चैव तु तादृशी।
 सैवेयमागता नूनं प्रतिज्ञापालनाय च॥१०७॥
 अथवाऽन्या समायाता या तया कथिता पुरा।
 एवं सञ्चिन्त्य मनसा लुब्धको वाक्यमब्रवीत्॥१०८॥

लुब्धक उवाच

शृणु त्वं मृगि मे वाक्यं गता सा निजमन्दिरम्।
त्वां दत्त्वा मम नूनं हि सा भवेत्सत्यवागपि॥१०९॥

अहोरात्रं कृतं कष्टं कुटुम्बार्थं मया मृगि।
अधुना त्वां हनिष्यामि देवतास्मरणं कुरु॥११०॥

व्याधोक्तं वचनं श्रुत्वा हरिणी दुःखिता भृशम्।
व्याधं प्राह रुदित्वा वै मा मां व्याध निपातय॥१११॥

तेजो बलं तथा सर्वं निर्दग्धं विरहाग्निना।
अहं च दुर्बला नूनं मेदो मांसविवर्जिता॥११२॥

केवलं पापभाक् त्वं हि मम प्राणविमोचकः।
अहं प्राणैर्वियुज्यामि भोजनं ते न जायते॥११३॥

बलवांश्च महातेजा मेदोमांससमन्वितः।
अन्यश्च पीनगौराङ्गो मृगो ह्यत्रागमिष्यति॥११४॥

तं हत्वा ते कुटुम्बस्य तृप्तिर्नूनं भविष्यति।
अथवा त्वद्गृहं प्रातरागमिष्यामि लुब्धक॥११५॥

तयोक्तं लुब्धकः श्रुत्वा किं करोमीत्यचिन्तयत्।
सञ्चिन्त्य लुब्धकः प्राह मृगीं शोकातुरां कृशाम्॥११६॥

सत्यं वद महाभागे प्रत्ययो मे यथा भवेत्।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा हरिणी दुःखकर्षिता॥११७॥

चक्रे सत्यप्रतिज्ञां तु व्याधस्याग्रे पुनः पुनः।

मृग्युवाच

क्षत्रियस्तु रणं दृष्ट्वा तस्माद्यो विनिवर्तते॥११८॥

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
भेदयन्ति तडागानि वापीश्चाथ गवामपि॥११९॥

मार्गं स्थानं च ये घ्नन्ति सर्वसत्त्वभयङ्कराः।
तेषां वै पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१२०॥

एतच्छ्रुत्वा तु व्याधेन साऽपि मुक्ता मृगी तदा।
जलं पीत्वा तु बहुशो गता सद्यो यथागतम्॥१२१॥

जालिमध्ये स्थितस्यास्य द्वितीयः प्रहरो गतः।
त्रोटित्वा बिल्वपत्राणि पुनर्देवे न्ययोजयत्॥१२२॥

पीडितोऽतीव शीतेन क्षुधया गृहचिन्तया।
शिवशिवेति जल्पन्वै न निद्रामुपलब्धवान्॥१२३॥

कृतं शिवार्चनं तेन तृतीये प्रहरेऽपि च।
वीक्षते स्म दिशः सर्वा जीवनार्थं वरानने॥१२४॥

लुब्धकेनाथ दृष्टोऽसौ हरिणश्चञ्चलक्ष्णः।
विलोकयन्दिशः सर्वा मार्गमाणो मृगीपदम्॥१२५॥

सौभाग्यबलदर्पाढ्यो मदनोन्मत्तपीवरः।
तं दृष्ट्वा बाणमाकृष्य ह्याकर्णं तुष्टमानसः॥१२६॥

बाणं मुञ्चति यावद्वै तावद् दृष्टो मृगेण तु।
कालरूपं तु तं दृष्ट्वा मृगश्चिन्तितवान् भृशम्॥१२७॥

निश्चितं भविता मृत्युर्गोचरेऽस्य गतो यतः।
भार्या प्राणसमा मेऽद्य व्याधेनेह निपातिता॥१२८॥

तया विरहितस्याद्य नूनं मृत्युर्भविष्यति।
हा हा कालकृतं पापं यद्भार्यादुःखमागता॥१२९॥

भार्यया न समं सौख्यं गृहेऽपि च वनेऽपि च।
तया विना न धर्मोऽस्ति नार्थकामौ विशेषतः॥१३०॥

वृक्षमूलेऽपि दयिता यत्र तिष्ठति तद्गृहम्।
प्रासादोऽपि तथा हीनः कान्तारादतिरिच्यते॥१३१॥

धर्मकामार्थकार्येषु भार्या पुंसः सहायिनी।
विदेशे च गतस्यापि सैव विश्वासकारिणी॥१३२॥

नास्ति भार्यासमो बन्धुर्नास्ति भार्यासमं सुखम्।
नास्ति भार्यासमं लोके नरस्याऽऽर्तस्य भेषजम्॥१३३॥

यस्य भार्या गृहे नास्ति साध्वी च प्रियवादिनी।
अरण्यं तेन गन्तव्यं यथाऽरण्यं तथा गृहम्॥१३४॥

एका प्राणसमा मेऽभूद् द्वितीया प्राणदा मम।
भार्याविरहितस्याद्य जीवितं मम निष्फलम्॥१३५॥

इत्येवं चिन्तयित्वा तु लुब्धकं वाक्यमब्रवीत्।

मृग उवाच

शृणु व्याध नरश्रेष्ठ ह्यामिषाहारभोजन॥१३६॥

यत्ते पृच्छाम्यहं वीर तत्सत्यं वद मे प्रभो।
आगतं हरिणीयुग्मं केन मार्गेण तद्गतम्॥१३७॥

त्वया विनाशितं वाऽथ सत्यं कथय मेऽधुना।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा लुब्धको विस्मयं गतः॥१३८॥

असावपि न सामान्यो देवता काऽप्यनुत्तम।
उवाच लुब्धकः सद्यस्तस्याग्रे वाक्यमुत्तमम्॥१३९॥

लुब्धक उवाच

ते गतेनेन मार्गेण सत्यं कृत्वा ममाग्रतः।
ताभ्यां दत्तोऽसि भुक्त्यर्थं मम त्वमधुनाऽनघ॥१४०॥

सम्प्रति त्वं हनिष्यामि नैव मोक्ष्यामि कर्हिचित्।
व्याधोक्तं हि वचः श्रुत्वा हरिणः प्राह सत्वरम्॥१४१॥

मृग उवाच

तत्सत्यं कीदृशं ताभ्यां वाक्यमुक्तं तवाग्रतः।
येन ते प्रत्ययो जातो मुक्तं तद्धरिणीद्वयम्॥१४२॥

ते गते केन मार्गेण ये मुक्ते व्याध तेऽधुना।

व्याध उवाच

ते गतेऽनेन मार्गेण स्वमाश्रमपदं प्रति॥१४३॥
व्याधेन कथितास्ताभ्यां शपथा ये कृतास्तदा।
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य हरिणो हृष्टमानसः॥१४४॥

व्याधं प्राह ततः शीघ्रं वचनं धर्मसंहितम्।

मृग उवाच

ताभ्यां व्याध यदुक्तं च तत्करोमि न चान्यथा॥१४५॥
प्रभाते त्वद्गृहं नूनमागमिष्यामि निश्चतम्।
भार्या ऋतुमती मेऽद्य कामार्ताऽप्यधुना भृशम्॥१४६॥

गत्वा गृहेऽथ भुक्त्वा तामापृच्छ च सुहृज्जनान्।
शपथैरागमिष्यामि गृहं ते नात्र संशयः॥१४७॥

न मदेहेऽस्त्यसुङ्गांसं यत्त्वं भोक्तुमभीप्ससि।
तद्वृथा मरणं मेऽस्माद्यदि मां त्वं हनिष्यसि॥१४८॥

तन्मृगस्य वचः श्रुत्वा व्याधो वचनमब्रवीत्।

लुब्धक उवाच

असत्यं भाषसे धूर्त प्रतारयसि मां वृथा॥१४९॥

ज्ञातो मृत्युः स्फुटं यत्र तत्र गच्छति कोऽल्पधीः।
व्याधस्य वचनं श्रुत्वा हरिणो वाक्यमब्रवीत्॥१५०॥

शपथैरागमिष्यामि यथा ते प्रत्ययो भवेत्।

व्याध उवाच

मृग त्वं शपथान्ब्रूहि विश्वासो मे भवेद्यथा॥१५१॥

यथा हि प्रेषयामि त्वां स्वगृहं प्रति कामुक।

मृग उवाच

भर्तारं वञ्चयेद्या स्त्री स्वामिनं वञ्चयेन्नरः॥१५२॥

मित्रं च वञ्चयेद्यस्तु गुरुद्रोहं करोति यः।

विषमं तु^{७३} रसं दद्यात्प्रेमभेदं करोति यः॥१५३॥

भेदयेद्यस्तडागानि प्रासादं पातयेत्तथा।

प्रवासशीलो यो विप्रः क्रयविक्रयकारकः॥१५४॥

सन्ध्यास्नानविहीनश्च वेदशास्त्रविवर्जितः।

मद्यपाः स्त्रीषु रक्ता ये परनिन्दारताश्च ये॥१५५॥

परस्त्री सेवका विप्राः परपैशून्यसूचकाः।

शूद्रान्नभोजिनो ये च भार्यापुत्रांस्त्यजन्ति ये॥१५६॥

वेदनिन्दापरा ये च वेदशास्त्रार्थनिन्दकाः।

तेषां वै पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१५७॥

भार्या सङ्ग्रहणी यस्य व्रतशौचविर्वाजता।

सर्वाशी सर्वविक्रेता द्विजानामपि निन्दकः॥१५८॥

त्रिषु वर्णेषु शुश्रूषां यः शूद्रो न करोति वै।

विप्रवाक्यं परित्यज्य पाखण्डाभिरतः सदा॥१५९॥

ब्रह्मचर्यरताः शूद्रा ये च पाखण्डसंश्रिताः।
तेषां वै पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१६०॥

तिलांस्तैलं घृतं क्षौद्रं लवणं सगुडं तथा।
लोहं लाक्षादिकं सर्वं रङ्गान्नानाविधानपि॥१६१॥

मद्यं मांसं विषं दुग्धं नीलं च वृषभं तथा।
मीनं क्षीरं सर्पकूटं चित्रातकफलानि च॥१६२॥

विक्रीणीते द्विजो यस्तु तस्य पापं भवेन्मम।
आदित्यं विष्णुमीशानं गणाध्यक्षं तु पार्वतीम्॥१६३॥

एतांस्त्यक्त्वा गृहे मूढो योऽन्यं पूजयते नरः।
तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१६४॥

यो गां स्पृशति पादेन ह्युदितेऽर्के च सुप्यति।
एकाकी मिष्टमश्राति तस्य पापस्य भागहम्॥१६५॥

मातापित्रोरपोष्टा च क्रियामुद्दिश्य^{७४} पाचकः।
कन्याशुल्कोपजीवी च देवब्राह्मणनिन्दकः॥१६६॥

गोग्रासं हन्तकारं च अतिथीनां च पूजनम्।
ये न कुर्वन्ति गृहिणस्तेषां पापं भवेन्मम॥१६७॥

वृन्ताकं च पटोलं च कलिङ्गं तुम्बिकाफलम्।
मूलकं लशुनं कन्दं कुसुम्भं कालशाककम्॥१६८॥

एतानि भक्षयेद्यस्तु नरो वै ज्ञानदुर्बलः।
न यस्य जायते शुद्धिश्चान्द्रायणशतैरपि॥१६९॥

एतस्य पातकं मह्यं यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
यः पठेत्स्वरहीनं च लक्षणेन विवर्जितम्॥१७०॥

^{७४} आत्मोद्देशेनैव भुजिक्रियामित्यर्थः।

रथ्यां पर्यटमानस्तु वेदानुद्गिरयेत्तु यः।

विप्रस्य पठतो यस्य शृणोति यदि चान्त्यजः॥१७१॥

वेदोपजीवको विप्रोऽतिलोभाच्छूद्रभोजनः।

तस्य पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१७२॥

शूद्रान्नेषु च ये सक्ताः शूद्रसम्पर्कदूषिताः।

तेषां पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१७३॥

लेखकश्चित्रकर्ता च वैद्यो नक्षत्रसूचकः।

कूटकर्ता द्विजो यश्च तस्य पापस्य भागहम्॥१७४॥

कूटसाक्षी मृषावादी परद्रव्यस्य तस्करः।

परदाराभिगामी च तथा विश्वासघातकः॥१७५॥

द्रव्ये द्रव्यं विनिक्षिप्य पानकूटं समाश्रितः।

वेश्यारताः सदा ये च दानदातुर्निवारकाः॥१७६॥

भर्तारमर्थहीनं च कुरूपं व्याधिपीडितम्।

या न पूजयते नारी रूपयौवनगर्विता॥१७७॥

एकादशीं तथा माघे कृष्णे शिवचतुर्दशीम्।

पूर्वविद्धां प्रकुर्वन्ति तेषां पापस्य भागहम्॥१७८॥

अथ किं बहunoक्तेन भो लुब्धक तवाग्रतः।

यदि नाऽऽयामि ते गेहं ममासत्यं भवेत्तदा॥१७९॥

तेन वाक्येन सन्तुष्टो व्याधो वै वीतकल्मषः।

संहृत्य धनुषो बाणं मृगो मुक्तो गृहं प्रति॥१८०॥

जलं पीत्वा तु हरिणः प्रविष्टो गहनं प्रति।

गतोऽसौ तेन मार्गेण गतं येन मृगीद्वयम्॥१८१॥

लुब्धकेन तदा तत्र जालिमध्ये स्थितेन हि।

प्रत्यूषे बिल्वपत्राणि त्रोटयत्वोज्झितानि वै॥१८२॥

शिवशिवेति जल्पन्वै ह्याशु यातो निजाश्रमम्।
अथोदिते सूर्यबिम्बे अकामाञ्जागरे कृते॥१८३॥

पापान्मुक्तोऽप्यसौ सद्यः शिवपूजाप्रभावतः।
यावद्विशो निरीक्षेत निराशो भोजनं प्रति॥१८४॥

तावच्छशुवृता चान्या मृगी तत्र समागता।
दृष्ट्वा मृगी तदा व्याधो बाणं धनुषि योजयन्॥१८५॥

यावन्मुञ्चत्यसौ बाणं तावत्प्रोवाच तं मृगी।
मा बाणान्मुञ्च धर्मात्मन्धर्मं मा मुञ्च सुव्रत॥१८६॥

अहं न वध्या सर्वेषामिति शास्त्रविनिश्चयः।
शयानो मैथुनासक्तः स्तनपो व्याधिपीडितः॥१८७॥

न हन्तव्यो मृगो राज्ञा मृगी च शिशुना वृता।
अथवा धर्ममुत्सृज्य मां हनिष्यसि मानद॥१८८॥

बालकं स्वगृहे मुक्त्वा सखीनां च निवेद्य वै।
शपथैरागमिष्यामि शृणु व्याध वचो मम॥१८९॥

या स्वभर्तारमुत्सृज्य परे पुंसि रता सदा।
तस्याः पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्॥१९०॥

मद्यं मांसं विषं दुग्धं नीलीं कुम्भफलानि च।
एतानि विक्रयेद्यस्तु नरो मोहसमन्वितः॥१९१॥

तेषां पापेन लिप्यामि यदि नाऽऽयामि ते गृहम्।
ये कृताः शपथाः पूर्वं तवाग्रे व्याधसत्तम॥१९२॥

ते सर्वे मम सन्त्यत्र यदि नायाम्यहं पुनः।
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा व्याधो विस्मयमागमत्॥१९३॥

ततो व्याधेन सा युक्ता गता वै निजमन्दिरम्।
व्याधोऽपि तत्स्थलं त्यक्त्वा जगाम स्वगृहं प्रति॥१९४॥

सर्वेषां वचनं ध्यायन्मृगाणां सत्यवादिनाम्।
एतेषां घातको नित्यमहं यास्यामि कां गतिम्॥१९५॥

एवं चिन्तयता गेहे दृष्टाः क्षुधितबालकाः।
नान्नं मांसं गृहे तस्य भोजनं येन जायते॥१९६॥

निरामिषं तु तं दृष्ट्वा निराशास्तेऽभवन्स्तदा।
व्याधोपि च तदा तत्र तेषां वाक्यानि संस्मरन्॥१९७॥

न भोजनं न निद्रां च लभते विस्मयान्वितः।
आगमिष्यन्ति ते नूनं शपथैरतियन्त्रिताः॥१९८॥

न तानहं वधिष्यामि सतां व्रतमनुस्मरन्।
लुब्धकेन तदा मुक्तो हरिणः शपथैः कृतैः॥१९९॥

स्वमाश्रमं तु सम्प्राप्तो यत्र तद्धरिणीद्वयम्।
सद्यः प्रसूता सा चैका द्वितीया रतिलालसा॥२००॥

तृतीयाऽपि समायाता बालकैर्बहुभिर्वृता।
सर्वाः समेता एकत्र मरणे कृतनिश्चयाः॥२०१॥

परस्परं प्रजल्पन्त्यो लुब्धकस्य विचेष्टितम्।
सार्तावां हरिणीं भुक्त्वा रूपाढ्यां रतिलालसाम्॥२०२॥

कृतकृत्योऽभवत्ताभिस्ततो वाक्यमथाब्रवीत्।
युष्माभिरिह संस्थेयं कर्तव्यं प्राणरक्षणम्॥२०३॥

व्याघ्राद्विपालुब्धकेभ्यो बालकानां प्रयत्नतः।
अहमत्र समायातः शपथैरतियन्त्रितः॥२०४॥

^{१९४}मुक्त इत्यस्य तेनेति गृहं प्रतीत्यस्य गमनायेति च शेषः।

अस्या ऋतुप्रदानाय पुनः सन्तानहेतवे।
 ऋतुमतीं तु यो भार्या न भुङ्क्ते मोहसंवृतः॥२०५॥
 भ्रूणहा सन्तु विज्ञेयस्तस्य जन्म निरकर्तम्।
 सन्तानात् स्वर्गमाप्नोति इह कीर्तिं च शाश्वतीम्॥२०६॥
 सन्ततिर्यत्नतः पाल्या स्वर्गसौख्यप्रदायिका।
 अपुत्रस्य गतिर्नास्ति इह लोके परत्र च॥२०७॥
 येन केनाप्युपायेन पुत्रमुत्पादयेत्पुमान्।
 मया च तत्र गन्तव्यं यत्र व्याधस्य मन्दिरम्॥२०८॥
 सत्यं तु पालनीयं स्यात्सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः।
 एतच्छ्रुत्वा तु ता नार्यो वाक्यमूचुः सुदुःखिताः॥२०९॥
 वयमप्यागमिष्यामस्त्वया सार्धं मृगोत्तम।
 तथा ते विप्रियं कान्त न स्मरामः कदाचन॥२१०॥
 पुष्पितेषु वनान्तेषु नदीनां सङ्गमेषु च।
 कन्दरेषु च शैलानां भवता रमिता वयम्॥२११॥
 न कार्यमप्यतः कान्त जीवितेन त्वया विना।
 नारीणां पतिहीनानां जीवितैः किं प्रयोजनम्॥२१२॥
 मितं ददाति हि पिता मितं भ्राता मितं सुतः।
 अमितस्य हि दातारं भर्तारं का न पूजयेत्॥२१३॥
 अपि द्रव्ययुता नारी बहुपुत्रसुहृद्वता।
 सा शोच्या बन्धुवर्गस्य पतिहीनकुलाङ्गना॥२१४॥
 वैधव्यसदृशं दुःखं स्त्रीणामन्यत्र विद्यते।
 धन्यास्ता योषितो यास्तु म्रियन्ते भर्तुरग्रतः॥२१५॥
 नातन्त्री वाद्यते वीणा नाचक्रो भ्रमते रथः।
 नापतिः सुखमाप्नोति नारी पुत्रशतैर्वृता॥२१६॥

नास्ति भर्तृसमो धर्मो नास्ति धर्मसमः सुहृत्।
नास्ति भर्तृसमो नाथः स्त्रीणां भर्ता परा गतिः॥२१७॥

एवं विलिप्य ताः सर्वा मरणे कृतनिश्चयाः।
बालकैस्तैः समायुक्ता भर्तृशोकेन दुःखिताः॥२१८॥

मृगस्तासां वचः श्रुत्वा हृदि चिन्तापरोऽभवत्।
गन्तव्यं किं न गन्तव्यं मया व्याधस्य मन्दिरम्॥२१९॥

एकतस्तु कृतं रक्षन्कुटुम्बस्य^{७५} क्षयो भवेत्।
तदन्तिकं न चेद्यामि मम सत्यं क्षयं व्रजेत्॥२२०॥

वरं पुत्रस्य मरणं भार्याया आत्मनस्तथा।
सत्ये त्यक्ते नरो नित्यमाकल्पं रौरवं व्रजेत्॥२२१॥

तस्मात्सत्यं पालनीयं नरैः श्रेयोरर्थिभिः सदा।
सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः॥२२२॥

सत्येन वायवो वान्ति सत्येन वर्धते परम्।
एवं सञ्चिन्त्य हरिणी धर्मान् हृदि मनोरमान्॥२२३॥

ताभिः सहैव शनकैः क्षणात्तस्याश्रमं ययौ।
तस्मिन्सरसि स स्नात्वा कर्मन्यासं चकार ह॥२२४॥

तल्लिङ्गं प्रणिपत्याशु हृदि ध्यायन्सदाशिवम्।
भक्ष्यं पानं परित्यज्य मैथुनं भोगमेव च॥२२५॥

कामं क्रोधं तथा लोभं मायां मोक्षविनाशिनीम्।
वन्दयित्वा^{७६} तु तं देवं लुब्धकाभिमुखं ययौ॥२२६॥

तस्य भार्याश्च पुत्राश्च मरणे कृतनिश्चयाः।
अनशनं व्रतं गृह्य पृष्ठलग्नाः समाययुः॥२२७॥

^{७५}गमिष्यामि चेदिति शेषः।

^{७६}खाद्यपेयादिकं चैवेत्यपि पाठः।

भार्यापुत्रैः परिवृतो मृगस्तं देशमागमत्।
क्षुधितैर्बालकैर्युक्तो लुब्धको यत्र तिष्ठति॥२२८॥

मृगस्तं देशमागत्य कुटुम्बेन समन्वितः।
पालयन्सर्ववाक्यानि^{७७} लुब्धकं वाक्यमब्रवीत्॥२२९॥

मृग उवाच

हन्या मां प्रथमं व्याध पश्चाद्भार्याः क्रमेण तु।
बालकानि ततः पश्चाद्धन्यतां मा विलम्बय॥२३०॥
लुब्धकैस्तु मृगा भक्ष्या नास्ति दोषः कदाचन।
वयं यास्याम स्वर्लोकं सत्यपूता न संशयः।
तवापि सकुटुम्बस्य प्राणपुष्टिर्भविष्यति॥२३१॥
एतच्छ्रुत्वा तु वचनं मृगोक्तं लुब्धकस्तदा।
आत्मानं निन्दयित्वा तु हरिणं वाक्यमब्रवीत्॥२३२॥

व्याध उवाच

अहो मृग महासत्त्व गच्छ गच्छ स्वमाश्रमम्।
आमिषेण न मे कार्यं यद्वाव्यं तद्विष्यति॥२३३॥
जीवानां घातने पापं बन्धने तर्जने तथा।
नैव पापं करिष्यामि कुटुम्बार्थं कदाचन॥२३४॥
त्वं गुरुर्मम धर्माणामुपदेष्टा मृगोत्तम।
गच्छ गच्छ मृगश्रेष्ठ कुटुम्बेन समन्वितः॥२३५॥
मया त्यक्तानि शस्त्राणि सत्यधर्मः समाश्रितः।
तद् व्याधवचनं श्रुत्वा हरिणः प्राह तं पुनः॥२३६॥

^{७७}पूर्वोक्तानीत्यर्थः

मृग उवाच

कर्मन्यासमहं कृत्वा त्वत्सकाशमिहागतः।
 हन्यतां हन्यतां शीघ्रं न ते पापं भविष्यति॥२३७॥
 मया दत्ता पुरा वाक्यं तया बद्धो न याम्यहम्।
 मया मम कुटुम्बेन त्यक्तो लोभं स्वजीवने॥२३८॥
 एतच्छ्रुत्वा तु वचनं लुब्धको वाक्यमब्रवीत्।

लुब्धक उवाच

त्वं बन्धुस्त्वं गुरुस्माता त्वं मे माता पिता सुहृत्॥२३९॥
 मया त्यक्तानि शस्त्राणि त्यक्तं मायादिकं बलम्।
 कस्य भार्या सुताः कस्य कुटुम्बं कस्य तन्मृग॥२४०॥
 तैः स्वकर्म च भोक्तव्यं मृग गच्छ यथासुखम्।
 इत्युक्त्वा स तदा तूर्णं बभञ्ज सशरं धनुः॥२४१॥
 मृगं प्रदक्षिणीकृत्य नमस्कृत्य क्षमापयत्।
 एतस्मिन्नन्तरे नेदुर्देवदुन्दुभयो दिवि॥२४२॥
 आकाशात्पुष्पवृष्टिस्तु पपात सुमनोहरा।
 तदा दूतः समायातो विमानं गृह्य शोभनम्॥२४३॥

देवदूत उवाच

अहो व्याध महासत्त्व सर्वसत्त्वक्षयङ्कर।
 विमानमिदमारुह्य सदेहः स्वर्गमाविश॥२४४॥
 शिवरात्रिप्रभावेण पातकं ते क्षयं गतम्।
 उपवासस्तु सञ्जातो निशि जागरणं कृतम्॥२४५॥
 यामे यामे कृता पूजा अज्ञानेन शिवस्य च।
 सर्वपापविनिर्मुक्तो गच्छ त्वं रुद्रमन्दिरम्॥२४६॥

विमानं च समारुह्य सद्यः शिवपदं व्रज।
मृगराज महासत्व भार्यापुत्रसमन्वितः॥२४७॥

भार्यात्रितयसंयुक्तो नक्षत्रपदमाप्नुहि।
तव नाम्ना तु तद् वृक्षं लोके ख्यातं भविष्यति॥२४८॥

एतच्छ्रुत्वा तु वचनं लुब्धकोऽथ मृगस्तथा।
विमानानि समारुह्य नाक्षत्रं पदमागताः॥२४९॥

हरिणीद्वयमन्वेनं पृष्ठतो मृगमेव च।
तारात्रितयसंयुक्तं मृगशीर्षं तदुच्यते॥२५०॥

बालकद्वितयं चाग्रे तृतीया पृष्ठतो मृगी।
पृष्ठतस्तत्र सम्प्राप्ता मृगशीर्षस्य सन्निधौ॥२५१॥

मृगराड् दृश्यतेऽद्यापि ऋक्षं व्योमगमुत्तमम्।
उपवासं करिष्यन्ति जागरेण समन्वितम्।
यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः॥२५२॥

शिवरात्रिसमं नास्ति व्रतं पापक्षयावहम्।
यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः॥२५३॥

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा॥२५४॥

॥इति श्रीलिङ्गपुराणे उमामहेश्वरसंवादे शिवरात्रिव्रतकथा सम्पूर्णा॥



॥ श्री-सावित्री-व्रतम् — कामाक्षी-पूजा ॥

॥ पूर्वाङ्ग-विघ्नेश्वर-पूजा ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

(अप उपस्पृश्य, पुष्पाक्षतान् गृहीत्वा)

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा

श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं करिष्यमाणस्य कर्मणः

अविघ्नेन परिसमाप्त्यर्थम् आदौ विघ्नेश्वरपूजां करिष्ये।

ॐ गुणानां त्वा गुणपतिः५ हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नृतिभिः सीद सादनम्॥

अस्मिन् हरिद्राबिम्बे महागणपतिं ध्यायामि, आवाहयामि।

ॐ महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि।

पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयं समर्पयामि।

ॐ भूर्भुवस्सुवः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नानानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वस्त्रार्थमक्षतान् समर्पयामि।

यज्ञोपवीताभरणार्थं अक्षतान् समर्पयामि।

दिव्यपरिमलगन्धान् धारयामि।

गन्धस्योपरि हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालिकां समर्पयामि। पुष्पैः पूजयामि।

॥ अर्चना ॥

- | | |
|---------------------|--------------------------|
| १. ॐ सुमुखाय नमः | ९. ॐ धूमकेतवे नमः |
| २. ॐ एकदन्ताय नमः | १०. ॐ गणाध्यक्षाय नमः |
| ३. ॐ कपिलाय नमः | ११. ॐ फालचन्द्राय नमः |
| ४. ॐ गजकर्णकाय नमः | १२. ॐ गजाननाय नमः |
| ५. ॐ लम्बोदराय नमः | १३. ॐ वक्रतुण्डाय नमः |
| ६. ॐ विकटाय नमः | १४. ॐ शूर्पकर्णाय नमः |
| ७. ॐ विघ्नराजाय नमः | १५. ॐ हेरम्बाय नमः |
| ८. ॐ विनायकाय नमः | १६. ॐ स्कन्दपूर्वजाय नमः |

नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

धूपमाग्रापयामि।

अलङ्कारदीपं सन्दर्शयामि।

नैवेद्यम्।

ताम्बूलं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

कर्पूरनीराजनानन्तरमाचमनीयं समर्पयामि।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।

अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

प्रार्थनाः समर्पयामि।

अनन्तकोटिप्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

छत्रचामरादिसमस्तोपचारान् समर्पयामि।

॥ प्रधान-पूजा — श्रीकामाक्षी-पूजा ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

॥ सङ्कल्पः ॥

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्री-परमेश्वर-प्रीत्यर्थं शुभे शोभने मुहूर्ते
अद्य ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे
कलियुगे प्रथमे पादे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे मेरोः दक्षिणे पार्श्वे
शकाब्दे अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां
मध्ये ()^{७८} नाम संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर-ऋतौ (कुम्भ)-मासे
() पक्षे () शुभतिथौ ()-वासरयुक्तायाम् ()^{७९} नक्षत्र ()^{८०}
नाम योग ()^{८१} करणयुक्तायां च एवं-गुण-विशेषण-विशिष्टायाम् अस्याम्
() शुभतिथौ ममोपात्त-समस्त-दुरितक्षयद्वारा श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं
कामाक्ष्याः प्रीत्यर्थं कामाक्ष्याः प्रसादेन मम दीर्घ सौमाङ्गल्य-अवाप्त्यर्थं
मम भर्तुश्च अन्योन्यप्राप्त्यर्थम् अवियोगार्थं श्रीकामाक्षी पूजां करिष्ये। तदङ्गं
कलशपूजां च करिष्ये।

श्रीविघ्नेश्वराय नमः यथास्थानं प्रतिष्ठापयामि। शोभनार्थं क्षेमाय पुनरागमनाय
च।

(गणपति-प्रसादं शिरसा गृहीत्वा)

^{७८}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{७९}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{८०}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

^{८१}पृष्ठं १२९ पश्यताम्

॥ आसन-पूजा ॥

पृथिव्या मेरुपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं चासनं कुरु॥

॥ घण्टा-पूजा ॥

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
घण्टारवं करोम्यादौ देवताऽऽह्वानकारणम्॥

॥ कलश-पूजा ॥

ॐ कलशाय नमः दिव्यगन्धान् धारयामि।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

ॐ गङ्गायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ गोदावर्यै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः।

ॐ नर्मदायै नमः। ॐ सिन्धवे नमः। ॐ कावेर्यै नमः।

ॐ सप्तकोटिमहातीर्थान्यावाहयामि।

(अथ कलशं स्पृष्ट्वा जपं कुर्यात्)

आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतान्यापः प्राणा वा आपः पशव
आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापश्छन्दाऽस्यापो
ज्योतीऽप्यापो यजूऽप्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप
ओम्॥

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।

मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।

ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः।

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः॥

सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि च हृदा नदाः।
 आयान्तु विष्णुपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
 ॐ भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवः।

(इति कलशजलेन सर्वोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य।)

॥ आत्म-पूजा ॥

ॐ आत्मने नमः, दिव्यगन्धान् धारयामि।

- | | |
|----------------------|----------------------|
| १. ॐ आत्मने नमः | ४. ॐ जीवात्मने नमः |
| २. ॐ अन्तरात्मने नमः | ५. ॐ परमात्मने नमः |
| ३. ॐ योगात्मने नमः | ६. ॐ ज्ञानात्मने नमः |

समस्तोपचारान् समर्पयामि।

देहो देवालयः प्रोक्तो जीवो देवः सनातनः।
 त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत्॥

॥ पीठ-पूजा ॥

- | | |
|-----------------------|-------------------------|
| १. ॐ आधारशक्त्यै नमः | ८. ॐ रत्नवेदिकायै नमः |
| २. ॐ मूलप्रकृत्यै नमः | ९. ॐ स्वर्णस्तम्भाय नमः |
| ३. ॐ आदिकूर्माय नमः | १०. ॐ श्वेतच्छत्राय नमः |
| ४. ॐ आदिवराहाय नमः | ११. ॐ कल्पकवृक्षाय नमः |
| ५. ॐ अनन्ताय नमः | १२. ॐ क्षीरसमुद्राय नमः |
| ६. ॐ पृथिव्यै नमः | १३. ॐ सितचामराभ्यां नमः |
| ७. ॐ रत्नमण्डपाय नमः | १४. ॐ योगपीठासनाय नमः |

॥ गुरु-ध्यानम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

ध्यानम्—

एकाम्रनाथ-दयितां कामाक्षीं भुवनेश्वरीम्।
ध्यायामि हृदये देवीं वाञ्छितार्थप्रदायिनीम्॥

कामाक्षीं ध्यायामि।

सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थदायिनि।
आवाहयामि कुम्भेऽस्मिन् मम माङ्गल्य-सिद्धये॥

कामाक्षीं आवाहयामि।

कामाक्षि वरदे देवि काञ्चनेन विनिर्मितम्।
भक्त्या दास्ये स्वीकुरुष्व वरदा भव चासनम्॥

कामाक्ष्यै नमः, आसनं समर्पयामि।

गङ्गादि-सर्व-तीर्थेभ्यः नदीभ्यश्च समाहृतम्।
पाद्यं सम्प्रददे देवि गृहाण त्वं शिवप्रिये॥

कामाक्ष्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

कामाक्षि स्वर्ण-कलशेनाहृतं च मया शिवे।
मधुकैटभ-हन्त्रि त्वं ददाम्यर्घ्यं गृहाण भोः॥

कामाक्ष्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचम्यतां महादेवि एलोशीर-सुवासितम्।
ददामि तीर्थममलं गृहीत्वा लोकरक्षके॥

कामाक्ष्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कं मया देवि काञ्चीपुर-निवासिनि।
स्वीकृत्य दयया देहि चिरं मह्यं तु मङ्गलम्॥

कामाक्ष्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

पञ्चामृतमिदं दिव्यं पञ्चपातक-नाशनम्।
पञ्चभूतात्मके देवि पाहि स्वीकृत्य शङ्करि॥

कामाक्ष्यै नमः, पञ्चामृत-स्नानं समर्पयामि।

स्नास्यतां पापनाशाय या प्रवृत्ता सुरापगा।
मयाऽर्पिता त्वं गृह्णीष्व प्रीता भव दयानिधे॥

कामाक्ष्यै नमः, स्नानं समर्पयामि।

दुकूलान्यम्बराणीह वस्त्राणि विविधानि च।
ददामि हरदेवीशि विद्याधिष्ठान-पीठिके॥

कामाक्ष्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवीतं मया प्रीत्यै काञ्चनेन विनिर्मितम्।
गृहीत्वा तव मे भक्तिं प्रयच्छ करुणानिधे॥

कामाक्ष्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धं सुवासितं रत्नं कुङ्कुमान्वितम् अम्बिके।
गङ्गानुजे देहि मह्यं दीर्घमङ्गल-सूत्रकम्॥

कामाक्ष्यै नमः, गन्धान् धारयामि। हरिद्राकुङ्कुमं समर्पयामि।

कार्पास-सूत्रं दास्यामि सुवर्णमणि-संयुतम्।
भूषणार्थं मयाऽऽनीतं देहि मे वरमुत्तमम्॥

कामाक्ष्यै नमः, मङ्गलसूत्रं समर्पयामि।

जातीचम्पक-पुन्नाग-केतकी-वकुलानि च।
मयाऽर्पितानि सुभगे गृहाण जननि मम॥

कामाक्ष्यै नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

अङ्ग-पूजा

| | |
|------------------------|------------------------|
| कामाक्ष्यै नमः | पादौ पूजयामि |
| कल्मषघ्न्यै नमः | गुल्फौ पूजयामि |
| विद्याप्रदायिन्यै नमः | जङ्घे पूजयामि |
| करुणामृत-सागरायै नमः | जानुनी पूजयामि |
| वरदायै नमः | ऊरू पूजयामि |
| काञ्चीनगर-वासिन्यै नमः | कटिं पूजयामि |
| कन्दर्प-जनन्यै नमः | नाभिं पूजयामि |
| पुरमथन-पुण्यकोट्यै नमः | वक्षः पूजयामि |
| महाज्ञान-दायिन्यै नमः | स्तनौ पूजयामि |
| लोकमात्रे नमः | कण्ठं पूजयामि |
| मायायै नमः | नेत्रे पूजयामि |
| मधुरवेणी-सहोदर्यै नमः | ललाटं पूजयामि |
| एकाम्र-नाथायै नमः | कर्णौ पूजयामि |
| कामकोटि-निलयायै नमः | शिरः पूजयामि |
| कामेश्वर्यै नमः | चिकुरं पूजयामि |
| कामितार्थ-दायिन्यै नमः | धम्मिल्लं पूजयामि |
| कामाक्ष्यै नमः | सर्वाण्यङ्गानि पूजयामि |

श्री कामाक्ष्यष्टोत्तरशतनामावलि:

| | | |
|---------------------------|---------------------------------------|----|
| कालकण्ठ्यै नमः | भक्तानुरक्तायै नमः | |
| त्रिपुरायै नमः | रक्ताङ्ग्यै नमः | |
| बालायै नमः | शङ्करार्धशरीरिण्यै नमः | |
| मायायै नमः | पुष्पबाणेक्षुकोदण्डपाशाङ्कुशकरायै नमः | |
| त्रिपुरसुन्दर्यै नमः | उज्ज्वलायै नमः | |
| सुन्दर्यै नमः | सच्चिदानन्दलह्र्यै नमः | |
| सौभाग्यवत्यै नमः | श्रीविद्यायै नमः | ३० |
| क्लीङ्कार्यै नमः | परमेश्वर्यै नमः | |
| सर्वमङ्गलायै नमः | अनङ्गकुसुमोद्यानायै नमः | १० |
| ऐङ्कार्यै नमः | चक्रेश्वर्यै नमः | |
| स्कन्दजनन्यै नमः | भुवनेश्वर्यै नमः | |
| परायै नमः | गुप्तायै नमः | |
| पञ्चदशाक्षर्यै नमः | गुप्ततरायै नमः | |
| त्रैलोक्यमोहनाधीशायै नमः | नित्यायै नमः | |
| सर्वाशापूरवल्लभायै नमः | नित्यक्लिन्नायै नमः | |
| सर्वसङ्क्षोभणाधीशायै नमः | मदद्रवायै नमः | |
| सर्वसौभाग्यवल्लभायै नमः | मोहिन्यै नमः | ४० |
| सर्वार्थसाधकाधीशायै नमः | परमानन्दायै नमः | |
| सर्वरक्षाकराधिपायै नमः | कामेश्वर्यै नमः | २० |
| सर्वरोगहराधीशायै नमः | तरुणीकलायै नमः | |
| सर्वसिद्धिप्रदाधिपायै नमः | श्रीकलावत्यै नमः | |
| सर्वानन्दमयाधीशायै नमः | भगवत्यै नमः | |
| योगिनीचक्रनायिकायै नमः | | |

पद्मरागकिरीटायै नमः
 रक्तवस्त्रायै नमः
 रक्तभूषायै नमः
 रक्तगन्धानुलेपनायै नमः
 सौगन्धिकलसद्वेण्यै नमः
 मन्त्रिण्यै नमः
 तन्त्ररूपिण्यै नमः
 तत्त्वमय्यै नमः
 सिद्धान्तपुरवासिन्यै नमः
 श्रीमत्यै नमः
 चिन्मय्यै नमः
 देव्यै नमः
 कौलिन्यै नमः
 परदेवतायै नमः
 कैवल्यरेखायै नमः
 वशिन्यै नमः
 सर्वेश्वर्यै नमः
 सर्वमातृकायै नमः
 विष्णुस्वप्ने नमः
 वेदमय्यै नमः
 सर्वसम्पत्प्रदायिन्यै नमः
 किङ्करीभूतगीर्वाण्यै नमः
 सुतवापिविनोदिन्यै नमः
 मणिपूरसमासीनायै नमः
 अनाहताब्जवासिन्यै नमः

५०

६०

७०

विशुद्धिचक्रनिलयायै नमः
 आज्ञापद्मनिवासिन्यै नमः
 अष्टत्रिंशत्कलामूर्त्यै नमः
 सुषुम्नाद्वारमध्यकायै नमः
 योगीश्वरमनोध्येयायै नमः
 परब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः
 चतुर्भुजायै नमः
 चन्द्रचूडायै नमः
 पुराणागमरूपिण्यै नमः
 ओङ्कार्यै नमः
 विमलायै नमः
 विद्यायै नमः
 पञ्चप्रणवरूपिण्यै नमः
 भूतेश्वर्यै नमः
 भूतमय्यै नमः
 पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै नमः
 षोडान्यासमहारूपिण्यै नमः
 कामाक्ष्यै नमः
 दशमातृकायै नमः
 आधारशक्त्यै नमः
 अरुणायै नमः
 लक्ष्म्यै नमः
 त्रिपुरभैरव्यै नमः
 रहःपूजासमालोलायै नमः
 रहोयन्त्रस्वरूपिण्यै नमः

८०

९०

त्रिकोणमध्यनिलयायै नमः

वृत्तत्रयवासिन्यै नमः

बिन्दुमण्डलवासिन्यै नमः

चतुरस्रस्वरूपास्यायै नमः

वसुकोणपुरावासायै नमः

नवचक्रस्वरूपिण्यै नमः

दशारद्वयवासिन्यै नमः

महानित्यायै नमः

चतुर्दशारचक्रस्थायै नमः

१००

विजयायै नमः

वसुपद्मनिवासिन्यै नमः

श्रीराजराजेश्वर्यै नमः

१०८

स्वराजपत्रनिलयायै नमः

एकाम्रनाथ-दयिते काञ्चीपुर-निवासिनि।

धूपं गृहाण देवि त्वं सर्वाभीष्ट-प्रदायिनि॥

कामाक्ष्यै नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

घृतवर्ति-समायुक्तं सर्वलोक-प्रकाशकम्।

दीपं गृहीष्व सुभगे वाञ्छितार्थ-प्रदायिनि॥

कामाक्ष्यै नमः, दीपं सन्दर्शयामि।

गुडापूपत्रयं देवि साढकं प्रददाम्यहम्।

नवनीतयुतं देवि मोदकापूपसंयुतम्॥

पायसं सघृतं दद्यां सफलं लङ्घुकान्वितम्।

मम भर्तुस्सदा देवि गृहीत्वा प्रीतिदा भव॥

कामाक्ष्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

पूगीफल-समायुक्तं नागवल्लिदलैर्युतम्।

कर्पूरचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

कामाक्ष्यै नमः, कर्पूरताम्बूलं निवेदयामि।

कर्पूरदीपं सुभगे सर्वमङ्गल-वर्धनम्।
सर्वव्याधिहरं देवि गृह्यताम् अम्बिके शिवे॥

कामाक्ष्यै नमः, मम दीर्घसौमाङ्गल्यता-सिद्ध्यर्थं कर्पूर-नीराञ्जनं सन्दर्शयामि।

कान्ता कामदुधा करीन्द्रगमना कामारिवामाङ्गगा
कल्याणी कलितावतारसुभगा कस्तूरिकाचर्चिता।
कम्पातीररसालमूलनिलया कारुण्यकल्लोलिनी
कल्याणानि करोतु मे भगवती काश्चीपुरीदेवता॥

मङ्गले मङ्गलाधारे माङ्गल्ये मङ्गलप्रदे।
मङ्गलाढ्ये मङ्गलेशे मङ्गलं देहि मे भवे॥

नमो देव्यै महादेव्यै लोकमात्रे नमो नमः।
शिवायै शिवरूपिण्यै भक्ताभीष्टप्रदा भव॥

कामाक्षि काञ्चिनिलये मम माङ्गल्यवृद्धये।
नमस्करोमि देवेशि मह्यं कुरु दयां शिवे॥

कामाक्ष्यै नमः, अनन्तकोटि-प्रदक्षिण-नमस्कारान् समर्पयामि।

कामाक्षी स्वरूपस्य ब्राह्मणस्य इदमासनम् — सकलाराधनैः स्वर्चितम्।

कामाक्षी काम-वृद्ध्यर्थं मम माङ्गल्य-सिद्ध्ये।
उपायनं प्रदास्यामि ददामोघं वरं मम॥

इदं हिरण्यं सदक्षिणाकं सताम्बूलं कामाक्षी-स्वरूपाय ब्राह्मणाय सम्प्रददे
न मम॥

॥ दोर-बन्धनम् ॥

दोरं गृह्णामि सुभगे सहारिद्रं धराम्यहम्।
भर्तुरायुष्य-सिद्ध्यर्थं सुप्रीता भव सर्वदा॥



श्री-कामाक्षी-चूर्णिका

श्री-चन्द्र-मौलीश्वराय नमः। श्री-कामाक्षी-देव्यै नमः।

जय जय श्री-काम-गिरीन्द्र-निलये!

जय जय श्री-कामकोटि-पीठ-स्थिते!

जय जय श्री-त्रिचत्वारिंशत्-कोण-श्रीचक्रान्तराल-बिन्दु-पीठोपरि-लसत्-पञ्च-
ब्रह्म-मय-मञ्च-मध्य-स्थ-श्री-शिव-कामेश-वामाङ्ग-निलये!

जय जय श्री-विधि-हरि-हर-सुर-गण-वन्दित-चरणारविन्द-युगले!

जय जय श्री-रमा-वाणीन्द्राणी-प्रमुख-रमणी-कर-कमल-समर्पित-चरण-
कमले!

जय जय श्री-निखिल-निगमागम-सकल-संवेद्यमान-विविध-वस्त्रालङ्कृत- हेम-
निर्मित-अनर्घ-भूषण-भूषित-दिव्य-मूर्ते!

जय जय श्रीमद्-अनवरताभिषेक-धूप-दीप-नैवेद्यादि-नाना-विधोपचारैः
परिशोभिते!

जय जय श्री-काञ्ची-नगर्यां द्वात्रिंशद्-धर्म-प्रतिपादनार्थ-स्थापित-हेम-
ध्वजालङ्कृते!

जय जय श्री-सकल-मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र-मय-परा-बिलाकाश-स्वरूपे!

जय जय श्री-काञ्ची-नगर्यां कामाक्षीति प्रख्यात-नामाङ्किते!

जय जय श्री-महात्रिपुरसुन्दरि बहु पराक्!
शुभम्॥



॥ पतिव्रतामाहात्म्यपर्व ॥

॥ श्रीवेदव्यासाय नमः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥

॥ चतुर्नवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९४ ॥ ॥

युधिष्ठिर उवाच

नात्मानमनुशोचामि नेमान्भ्रातृन्महामुने।
हरणं चापि राज्यस्य यथेमां द्रुपदात्मजाम्॥१॥
द्यूते दुरात्मभिः क्लिष्टाः कृष्णया तारिता वयम्।
जयद्रथेन चपुनर्वनाच्चापि हृता बलात्॥२॥
अस्ति सीमन्तिनी काचिद्दृष्टपूर्वाऽपिवा श्रुता।
पतिव्रता महाभागा यथेयं द्रुपदात्मजा॥३॥

मार्कण्डेय उवाच

शृणु राजन्कुलस्त्रीणां महाभाग्यं युधिष्ठिर।
सर्वमेतद्यथाप्राप्तं सावित्र्या राजकन्यया॥४॥
आसीन्मद्रेषु धर्मात्मा राजा परमधार्मिकः।
ब्रह्मण्यश्चमहात्मा च सत्यसन्धो जितेन्द्रियः॥५॥

यज्वा दानपतिर्दक्षः पौरजानपदप्रियः।
पार्थिवोऽश्वपतिर्नाम सर्वभूतहिते रतः॥६॥

क्षमावाननपत्यश्च सत्यवाग्विजितेन्द्रियः।
 अतिक्रान्तेन वयसा सन्तापमुपजग्मिवान्॥७॥
 अपत्योत्पादनार्थं च तीव्रं नियममास्थितः।
 काले परिमिताहारो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः॥८॥
 हुत्वा शतसहस्रं स सावित्र्या राजसत्तम।
 षष्ठेषु तदाकाले बभूव मितमोजनः॥९॥
 एतेन नियमेनासीद्वर्षाण्यष्टादशैव तु।
 पूर्णे त्वष्टादशे वर्षे सावित्री तुष्टिमभ्यगात्॥१०॥
 रूपिणी तु तदा राजन्दर्शयामास तं नृपम्।
 अग्निहोत्रात्समुत्थाय हर्षेण महताऽन्विता॥११॥
 उवाच चैनं वरदा वचनं पार्थिवं तदा।
 सा तमश्वपतिं राजन्सावित्री नियमे स्थितम्॥१२॥
 ब्रह्मचर्येण शुद्धेन दमेन नियमेन च।
 सर्वात्मना च भक्त्या च तुष्टाऽस्मि तव पार्थिवाः॥१३॥
 वरं वृणीष्वश्वपते मद्रराज यदीप्सितम्।
 न प्रामादश्च धर्मेषु कर्तव्यस्ते कथञ्चन॥१४॥

अश्वपतिरुवाच

अपत्यार्थः समारम्भः कृतो धर्मेप्सया मया।
 पुत्रा मे बहवो देवि भवेयुः कुलभावनाः॥१५॥
 तुष्टाऽसि यदि मे देवि वरमेतं वृणोम्यहम्।
 सन्तानं परमो धर्म इत्याहुर्मां द्विजातयः॥१६॥

सावित्र्युवाच

पूर्वमेव मया राजन्नभिप्रायमिमं तव।
 ज्ञात्वा पुत्रार्थमुक्तो वै भगवांस्ते पितामहः॥१७॥

प्रसादाच्चैव तस्मात्ते स्वयं विहितवत्यहम्।
कन्या तेजस्विनी सौम्य क्षिप्रमेव भविष्यति॥१८॥

उत्तरं च न ते किञ्चिद्वाहर्तव्यं कथञ्चन।
पितामहनियोगेन तुष्टा ह्येतद्वीमि ते॥१९॥

स तथेति प्रतिज्ञाय सावित्र्या वचनं नृपः।
प्रसादयामास पुनः क्षिप्रमेतद्विष्यति॥२०॥

अन्तर्हितायां सावित्र्यां जगाम स्वपुरं नृपः।
स्वराज्ये चावसद्वीरः प्रजा धर्मेण पालयन्॥२१॥

कस्मिंश्चित्तु गते काले स राजा नियतव्रतः।
ज्येष्ठायां धर्मचारिण्यां महिष्यां गर्भमादधे॥२२॥

राजपुत्र्यास्तु गर्भः स मानव्या भरतर्षभ।
व्यवर्धत तदा शुक्ले तारापतिरिवाम्बरे॥२३॥

प्राप्ते काले तु सुषुवे कन्यां राजीवलोचनाम्।
क्रियाश्च तस्या मुदितश्चक्रे च नृपसत्तमः॥२४॥

सावित्र्या प्रीतया दत्ता सावित्र्या हुतया ह्यपि।
सावित्रीत्येव नामास्याश्चक्रुर्विप्रास्तथा पिता॥२५॥

सा विग्रहवतीव श्रीव्यवर्धत नृपात्मजा।
कालेन चापि सा कन्या यौवनस्ता बभूव ह॥२६॥

तां सुमध्यां पृथुश्रोणीं प्रतिमां काञ्चनीमिव।
प्राप्तेयं देवकन्येति दृष्ट्वा सम्मेनिरे जनाः॥२७॥

तां तु पद्मपलाशार्क्षीं ज्वलन्तीमिव तेजसा।
न कश्चिद्वरयामास तेजसा प्रतिवारितः॥२८॥

अथोपोष्य शिरःस्नाता देवतामभिगम्य सा।
हुत्वाग्निं विधिवद्विप्रान्वाचयामास पर्वणि॥२९॥

ततः सुमनसः शेषाः प्रतिगृह्य महात्मनः।

पितुः समीपमगमद्देवी श्रीरिव रूपिणी॥३०॥

साऽभिवाद्य पितुः पादौ शेषाः पूर्वं निवेद्य च।

कृताञ्जलिर्वरारोहा नृपतेः पार्श्वमास्थिता॥३१॥

यौवनस्थां तु तां दृष्ट्वा स्वां सुतां देवरूपिणीम्।

अयाच्यमानां च वरैर्नृपतिर्दुःखितोऽभवत्॥३२॥

राजोवाच

पुत्रि प्रदानकालस्ते न च कश्चिद्वृणोति माम्।

स्वयमन्विच्छ भर्तारं गुणैः सदृशमात्मनः॥३३॥

प्रार्थितः पुरुषो यश्च स निवेद्यस्त्वया मम।

विमृश्याहं प्रदास्यामि वरय त्वं यथेप्सितम्॥३४॥

श्रुतं हि धर्मशास्त्रेषु पठ्यमानं द्विजातिभिः।

तथा त्वमपिकल्याणि गदतो मे वचः शृणु॥३५॥

अप्रदाता पिता वाच्यो वाच्यश्चानुपयन्पतिः।

मृते पितरि पुत्रश्च वाच्यो मातुररक्षिता॥३६॥

इदं मे वचनं क्षुत्वा भर्तुरन्वेषणे न्वर।

देवतानां यथा याच्यो न भवेयं तथा कुरु॥३७॥

एवमुक्त्वा दुहितरं तथा वृद्धांश्च मन्त्रिणः।

व्यादिदेशानुयात्रं च गम्यतां चेत्यचोदयत्॥३८॥

साऽभिवाद्य पितुः पादौ व्रीडितेव मनस्विनी।

पितुर्वचनमाज्ञाय निर्जगामाविचारितम्॥३९॥

सा हैमं रथमास्थाय स्थविरैः सचिवैर्वृता।

तपोवनानिरम्याणि राजर्षीणां जगाम ह॥४०॥

मान्यानां तत्र वृद्धानां कृत्वा पादाभिवादनम्।
वनानि क्रमशस्तात सर्वाण्येवाभ्यगच्छत॥४१॥

एवं तीर्थेषु सर्वेषु धनोत्सर्गं नृपात्मजा।
कुर्वती द्विजमुख्यानां तं तं देशं जगाम ह॥४२॥

॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
चतुर्नवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९४॥

॥ पञ्चनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९५ ॥ ॥

मार्कण्डेय उवाच

अथ मद्राधिपो राजा नारदेन समागतः।
उपविष्टः सभामध्ये कथायोगेन भारत॥४३॥
ततोऽभिगम्य तीर्थानि सर्वाण्येवाश्रमांस्तथा।
आजगाम पितुर्वेश्म सावित्री सह मन्त्रिभिः॥४४॥

नारदेन सहासीनं सा दृष्ट्वा पितरं शुभा।
उभयोरेव शिरसा चक्रे पादाभिवादनम्॥४५॥

नारद उवाच

क्व गताऽभूत्सुतेयं ते कुतश्चैवागता नृपा।
किमर्थं युवतीं भद्रं न चैनां सम्प्रयच्छसि॥४६॥

अश्वपतिरुवाच

कार्येण खल्वनेनैव प्रेषिताद्यैव चागता।
एतस्याः शृणु देवर्षे भर्तारं योऽनया वृतः॥४७॥

मार्कण्डेय उवाच

सा ब्रूहि विस्तरेणेति पित्रा संयोदिता शुभा।
तदैव तस्य वचनं प्रतिगृह्येदमब्रवीत्॥४८॥

आसीत्साल्वेषु धर्मात्मा क्षत्रियः पृथिवीपतिः।
 द्युमत्सेन इति ख्यातः पश्चाच्चान्धो बभूव ह॥४९॥
 विनष्टचक्षुषस्तस्य बालपुत्रस्य धीमतः।
 सामीप्येन हृतं राज्यं छिद्रेऽस्मिन्पूर्ववैरिणा॥५०॥
 स बालवत्सया सार्धं भार्यया प्रस्थितो वनम्।
 महारण्यं गतश्चापि तपस्तेपे महाव्रतः॥५१॥
 तस्य पुत्रः पुरे जातः संवृद्धश्च तपोवने।
 सत्यवानुरूपो मे भर्तेति मनसा वृतः॥५२॥

नारद उवाच

अहो वत महत्पापं सावित्र्या नृपते कृतम्।
 अजानन्त्या यदनया गुणवान्सत्यवान्वृतः॥५३॥
 सत्यं वदत्यस्य पिता सत्यं माता प्रभाषते।
 तथाऽस्य ब्राह्मणाश्चक्रुर्नामैतत्सत्यवानिति॥५४॥
 बालस्याश्वाः प्रियाश्वास्य करोत्यश्वांश्च मृन्मयान्।
 चित्रेऽपि विलिखत्यश्वांश्चित्राश्च इति चोच्यते॥५५॥

राजोवाच

अपीदानीं स तेजस्वी बुद्धिमान्वा नृपात्मजः।
 क्षमावानपि वा शूरः सत्यवान्पितृवत्सलः॥५६॥

नारद उवाच

विवस्वानिव तेजस्वी बृहस्पतिसमो मतौ।
 महेन्द्र इव वीरश्च वसुधेव क्षमान्वितः॥५७॥

अश्वपतिरुवाच

अपि राजात्मजो दाता ब्रह्मण्यश्चापि सत्यवान्।
 रूपवानप्युदारो वाऽप्यथवा प्रियदर्शनः॥५८॥

नारद उवाच

साङ्कृते रन्तिदेवस्य स्वशक्त्या दानतः समः।
 ब्रह्मण्यः सत्यवादी च शिबिरौशीनरो यथा॥५९॥
 ययातिरिव चोदारः सोमवत्प्रियदर्शनः।
 रूपेणान्यतमोऽश्विभ्यां द्युमत्सेनसुतो बली॥६०॥

स वदान्यः स तेजस्वी धीमांश्चैव क्षमान्वितः।
 स दान्तः स मृदुः शूरः स सत्यः संयतेन्द्रियः।
 सन्मैत्रः सोनसूयश्च स ह्रीमान्द्युतिमांश्च सः॥६१॥

नित्यशश्चार्जवं तस्मिन्धृतिस्तत्रैव च ध्रुवा।
 सङ्क्षेपतस्तपोवृद्धैः शीलवृद्धैश्च कथ्यते॥६२॥

अश्वपतिरुवाच

गुणैरुपेतं सर्वैस्तं भगवन्प्रब्रवीषि मे।
 दोषानप्यस्य मे ब्रूहि यदि सन्तीह केचन॥६३॥

नारद उवाच

एक एवास्य दोषो हि गुणानाक्रम्य तिष्ठति।
 स च दोषः प्रयत्नेन न शक्यमतिवर्तितुम्॥६४॥
 एको दोषोऽस्ति नान्योऽस्य सोद्यप्रभृति सत्यवान्।
 संवत्सरेण क्षीणायुर्देहन्यासं करिष्यति॥६५॥

राजोवाच

एहि सावित्रि गच्छस्व अन्यं वरय शोभने।
 तस्य दोषो महानेको गुणानाक्रम्य च स्थितः॥६६॥
 यथा मे भगवानाह नारदो देवसत्कृतः।
 संवत्सरेण सोऽल्पायुर्देहन्यासं करिष्यति॥६७॥

सावित्र्युवाच

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते।
 सकृदाह ददानीति त्रीण्येतानि सकृत् सकृत्॥६८॥
 दीर्घायुरथवाऽल्पायुः सगुणो निर्गुणोऽपि वा।
 सकृद्धृतो मया भर्ता न द्वितीयं वृणोम्यहम्॥६९॥
 मनसा निश्चयं कृत्वाततो वाचाऽभिधीयते।
 क्रियते कर्मणा पश्चात्प्रमाणं मे मनस्ततः॥७०॥

नारद उवाच

स्थिरा बुद्धिर्नरश्रेष्ठ सावित्र्या दुहितुस्तव।
 नैषा वारयितुं शक्या धर्मादस्मात्कथञ्चन॥७१॥
 नान्यस्मिन्पुरुषे सन्ति ये सत्यवति वै गुणाः।
 प्रदानमेव तस्मान्मे रोचते दुहितुस्तव॥७२॥

राजोवाच

अविचाल्यमेतदुक्तं तथ्यं च भवता वचः।
 करिष्याम्येतदेवं च गुरुर्हि भगवान्मम॥७३॥

नारद उवाच

अविघ्नमस्तु सावित्र्याः प्रदाने दुहितुस्तव।
 साधयिष्याम्यहं तावत्सर्वेषां भद्रमस्तु वः॥७४॥

मार्कण्डेय उवाच

एवमुक्त्वा स्वमुत्पत्य नारदस्त्रिदिवं गतः।
 राजाऽपि दुहितुः सञ्जं वैवाहिकमकारयत्॥७५॥

॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
 पञ्चनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९५॥

॥ षण्णवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९६ ॥ ॥

मार्कण्डेय उवाच

अथ कन्याप्रदाने स तमेवार्थं विचिन्तयन्।
 समानित्ये च तत्सर्वम्भाण्डं वैवाहिकं नृपः॥७६॥
 ततो वृद्धान्द्विजान्सर्वानृत्विक्सभ्यपुरोहितान्।
 समाहूय दिने पुण्ये प्रययौ सह कन्यया॥७७॥
 मेध्यारण्यं स गत्वा च द्युमत्सेनाश्रमं नृपः।
 पद्भ्यामेव द्विजैः सार्धं राजर्षिं तमुपागमत्॥७८॥
 तत्रापश्यन्महाभागं सालवृक्षमुपाश्रितम्।
 कौश्यां बृश्यां समासीनं चक्षुर्हीनं नृपं तदा॥७९॥
 स राजा तस्य राजर्षेः कृत्वापूजां यथाऽर्हतः।
 वाचा सुनियतो भूत्वा चकारात्मनिवेदनम्॥८०॥
 तस्यार्घ्यमासनं चैव गां चावेद्य स धर्मवित्।
 किमागमनमित्येवं राजा राजानमब्रवीत्॥८१॥
 तस्य सर्वमभिप्रायमिति कर्तव्यतां च ताम्।
 सत्यवन्तं समुद्दिश्य सर्वमेव न्यवेदयत्॥८२॥
 सावित्री नाम राजर्षे कन्येयं मम शोभना।
 तां स्वधर्मेण धर्मज्ञं स्नुषार्थं त्वं गृहाण मे॥८३॥

द्युमत्सेन उवाच

च्युताः स्म राज्याद्वनवासमाश्रिताश्-
 चराम धर्मं नियतास्तपस्विनः।
 कथं त्वनर्हा वनवासमाश्रमे
 सहिष्यति क्लेशमिमं सुता तव॥८४॥

अश्वमतिरुवाच

सुखं च दुःखं च भवाभवात्मकं
 यदा विजानाति सुताऽहमेव च।
 न मद्विधे युज्यते वाक्यमीदृशं
 विनिश्चयेनाभिगतोऽस्मि ते नृप॥८५॥

आशां नार्हसि मे हन्तुं सौहृदात्प्रणतस्य च।
 अभितश्चागतं प्रेम्णा प्रत्याख्यातुं न माऽर्हसि॥८६॥

अनुरूपो हि युक्तश्च त्वं ममाहं तवापि च।
 स्नुषां प्रतीच्छ मे कन्यां भार्या सत्यवतस्ततः॥८७॥

द्युमत्सेन उवाच

पूर्वमेवाभिलवितः सम्बन्धो मे त्वया सह।
 भ्रष्टराज्यस्त्वहमिति तत एतद्विचारितम्॥८८॥

अभिप्रायस्त्वयं यो मे पूर्वमेवाभिकाङ्क्षितः।
 स निर्वर्ततु मेऽद्यैव काङ्क्षितो ह्यसि मेऽतिथिः॥८९॥

ततः सर्वान्समानाय्य द्विजानाश्रमवासिनः।
 यथाविधि समुद्वाहं कारयामासतुर्नृपौ॥९०॥

दत्त्वा सोऽश्वपतिः कन्यां यथार्हं सपरिच्छदम्।
 ययौ स्वमेव भवनं युक्तः परमया मुदा॥९१॥

सत्यवानपि तां भार्यां लब्ध्वा सर्वगुणान्विताम्।
 मुमुदे सा च तं लब्ध्वा भर्तारं मनसेप्सितम्॥९२॥

गते पितरि सर्वाणि सन्त्यस्याभरणानि सा।
 जगृहेवल्कलान्येव वस्त्रं काषायमेव च॥९३॥

परिचारैर्गुणैश्चैव प्रश्रयेण दमेन च।
 सर्वकामक्रियाभिश्च सर्वेषां तुष्टिमादधे॥९४॥

श्वश्रूं शरीरसत्कारैः सर्वैराच्छादनादिभिः।
श्वशुरं देवसत्कारैर्वाचः संयमनेन च॥१५॥

तथैव प्रियवादेन नैषुणेन शमेन च।
रहश्चैवोपचारेण भर्तारं पर्यतोषयत्॥१६॥

एवं तत्राश्रमे तेषां तदा निवसतां सताम्।
कालस्तपस्यतां कश्चिदपाक्रामत भारत॥१७॥

सावित्र्या ग्लायमानायास्तिष्ठन्त्यास्तु दिवानिशम्।
नारदेन यदुक्तं तद्वाक्यं मनसि वर्तते॥१८॥

॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
षण्णवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९६॥

॥सप्तनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९७॥॥

मार्कण्डेय उवाच

ततः काले बहुतिथे व्यतिक्रान्ते कदाचन।
प्राप्तः स कालो मर्तव्यं यत्र सत्यवता नृप॥१९॥

गणयन्त्याश्च सावित्र्या दिवसदिवसे गते।
यद्वाक्यं नारदेनोक्तं वर्तते हृदि नित्यशः॥१००॥

चतुर्थेऽहनि मर्तव्यमिति सञ्चिन्त्य भामिनी।
व्रतं त्रिरात्रमुद्दिश्य दिवारात्रं स्थिताऽभवत्॥१०१॥

त्रयोदश्यां चोपवासं प्रतिपत्सु च पारणम्।
आयुष्यं वर्धते भ तूर्वतेनानेन भारत॥१०२॥

तं श्रुत्वा नियमं तस्या भृशं दुःखान्वितो नृपः।
उत्थाय वाक्यं सावित्रीमब्रवीत्परिसान्त्वयन्॥१०३॥

अतितीव्रोऽयमारम्भस्त्वयाऽऽरब्धो नृपात्मजे।
तिसृणां वसतीनां हि स्तानं परमदुश्चरम्॥१०४॥

सावित्र्युवाच

न कार्यस्तात सन्तापः पारयिष्याम्यहं व्रतम्।
व्यसंसायकृतं हीदं व्यवसायश्च कारणम्॥१०५॥

द्युमत्सेन उवाच

व्रतं भिन्धीति वक्तुं त्वां नास्मि शक्तः कथञ्चन।
पारयस्वेति वचनं युक्तमस्मद्विधो वदेत्॥१०६॥

मार्कण्डेय उवाच

एवमुक्त्वा द्युमत्सेनो विरराम महामनाः।
तिष्ठन्ती चैव सावित्री काण्ठभूतेव लक्ष्यते॥१०७॥

श्वोभूते भर्तृमरणे सावित्र्या भरतर्षभ।
दुःखान्वितायास्तिष्ठन्त्याः सा रात्रिर्व्यत्यवर्तत॥१०८॥

अद्य तद्विवसं चेति हुत्वा दीप्तं हुताशनम्।
युगमात्रोदिते सूर्येकृत्वा पौर्वाङ्गिकीः क्रियाः॥१०९॥

व्रतं समाप्यसावित्री स्ना त्वा शुद्धा यशस्विनी।
ततः सर्वान्द्विजान्वृद्धाञ्चश्रूं श्वशुरमेव च।
अभिवाद्यानुपूर्व्येण प्राञ्जलिर्नियता स्थिता॥११०॥

अवैधव्याशिषस्ते तु सावित्र्यर्थं हिताः शुभाः।
ऊचुस्तपस्विनः सर्वे तपोवननिवासिनः॥१११॥

एवमस्त्विति सावित्री ध्यानयोगपरायणा।
मनसा ता गिरः सर्वाः प्रत्यगृह्णात्तपस्विनी॥११२॥

तं कालं तं मुहूर्तं च प्रतीक्षन्ती नृपात्मजा।
 यथोक्तं नारदवचश्चिन्तयन्ती सुदुःखिता॥११३॥
 ततस्तु श्वश्रूश्वशुरावूचतुस्तां नृपात्मजाम्।
 एकान्तमास्थितां वाक्यं प्रीत्या भरतसत्तम॥११४॥
 व्रतं यथोपदिष्टं तु तथा तत्पारितं त्वया।
 आहारकालः सम्प्राप्तः क्रियतां यदनन्तरम्॥११५॥

सावित्र्युवाच

अस्तं गते मयाऽऽदित्ये भोक्तव्यं कृतकामया।
 एष मे हृदि सङ्कल्पः समयश्च कृतो मया॥११६॥

मार्कण्डेय उवाच

एवं सम्भाषमाणायाः सावित्र्या भोजनं प्रति।
 स्कन्धे परशुमादाय सत्यवान्प्रस्थितो वनम्॥११७॥
 सावित्री त्वाह भर्तारं नैकस्त्वं गन्तुमर्हसि।
 सह त्वया गमिष्यामि न हित्वां हातुमुत्सहे॥११८॥

सत्यवानुवाच

वनं न गतपूर्वं ते दुःख पन्थाश्च भामिनि।
 व्रतोपवासक्षामा च कथं पद्भ्यां गमिष्यसि॥११९॥

सावित्र्युवाच

उपवासान्न मे ग्लानिर्नास्ति चापि परिश्रमः।
 गमने च कृतोत्साहां प्रतिषेद्धुं न माऽर्हसि॥१२०॥

सत्यवानुवाच

यदि ते गमनोत्साहः करिष्यामि तव प्रयम्।
 मम त्वामन्नय गुरुन्न मां दोषः स्पृशेदयम्॥१२१॥

मार्कण्डेय उवाच

साऽभिवाद्याब्रवीच्छ्रृं श्वशुरं च महाव्रता।
अयं गच्छति मे भर्ता फलाहारो महावनम्॥१२२॥

इच्छेयमभ्यनुज्ञाता आर्यया श्वशुरेण ह।
अनेन सह निर्गन्तुं न मेऽद्य विरहः क्षमः॥१२३॥

गुर्वग्निहोत्रार्तकृतेप्रस्थितश्च सुतस्तव।
न निवार्यो निवार्यः स्यादन्यथा प्रस्थितो वनम्॥१२४॥

संवत्सरः किञ्चिदूनो न निष्क्रान्ताऽहमाश्रमात्।
वनं कुसुमितं द्रष्टुं परं कौतूहलं हि मे॥१२५॥

द्युमत्सेन उवाच

यदा प्रभृति सावित्री पित्रा दत्ता स्नुषा मम।
नानयाऽभ्यर्थनायुक्तमुक्तपूर्वं स्मराम्यहम्॥१२६॥

तदेषा लभतां कामं यथाभिलषितं वधूः।
अप्रमादश्च कर्तव्यः पुत्रि सत्यवतः पथि॥१२७॥

मार्कण्डेय उवाच

उभाभ्यामभ्यनुज्ञाता सा जगाम यशस्विनी।
सहभर्ता हसन्तीव हृदयेन विदूयता॥१२८॥

सा वनानि विचित्राणि रमणीयानि सर्वशः।
मयूरगणजुष्टानि ददर्श विपुलेक्षणा॥१२९॥

नदीः पुण्यवहाश्चैव पुष्पितांश्च नगोत्तमान्।
सत्यवानाह पश्येति सावित्रीं मधुरं वचः॥१३०॥

निरीक्षमाणा भर्तारं सर्वावस्थमनिन्दिता।
मृतमेव हि तं मेने काले मुनिवचः स्मरन्॥१३१॥

अनुव्रजन्ती भर्तारं जगाम मृदुगामिनी।
 द्विधेव हृदयं कृत्वा तं च कालमवेक्षती॥१३२॥
 ॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
 सप्तनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९७॥

॥ अष्टनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः ॥ २९८ ॥ ॥

मार्कण्डेय उवाच

अथ भार्यासहायः स फलान्यादाय वीर्यवान्।
 कठिनं पूरयामास ततः काण्ठान्यपाटयत्॥१३३॥
 तस्य पाटयतः काष्ठं स्वेदो वै समजायत।
 व्यायामेन च तेनास्य जज्ञे शिरसि वेदना॥१३४॥
 सोऽभिगम्य प्रियां भार्यामुवाच श्रमपीडितः।
 व्यायामेन ममानेन जाता शिरसि वेदना॥१३५॥
 अङ्गानि चैव सावित्री हृदयं दूयतीव च।
 अस्वस्थमिव चात्मानं लक्षये मितभाषिणि॥१३६॥
 शूलैरिव शिरो विद्धमिदं संलक्षयाम्यहम्।
 भ्रमन्तीव दिशः सर्वाश्चक्रारूढं मनो मम।
 तत्स्वप्नुमिच्छे कल्याणि न स्तातुं शक्तिरस्ति मे॥१३७॥
 सा समासाद्य सावित्री भर्तारमुपगम्य च।
 उत्सङ्गेऽस्य शिर कृत्वा निषसाद महीतले॥१३८॥
 ततः सा नारदवचो विमृशन्ती तपस्विनी।
 तं मुहूर्तं क्षणं वेलां दिवसं च युयोज ह॥१३९॥
 हन्त प्राप्तः स कालोऽयमिति चिन्तापरा सती।
 मुहूर्तदेव चापश्यत् पुरुषं रक्तवाससम्।
 बद्धमौलिं वपुष्मन्तमादित्यसमतेजसम्॥१४०॥

श्यामावदातं रक्ताक्षं पाशहस्तं भयावहम्।
 स्थितं सत्यवतः पार्श्वे निरीक्षन्तं तमेव च॥१४१॥
 तं दृष्ट्वा सहस्रोत्थाय भर्तुर्न्यस्य शनैः शिरः।
 कृताञ्जलिरुवाचाऽऽर्ता हृदयेन प्रवेपती॥१४२॥
 दैवतं त्वाभिजानामि वपुरेतद्ध्यमानुषम्।
 कामया ब्रूहि देवेश कस्त्वं किञ्च चिकीर्षसि॥१४३॥

यम उवाच

पतिव्रताऽसि सावित्रि तथैव च तपोन्विता।
 अतस्त्वामभिभाषामि विद्धि मां त्वं शुभे यमम्॥१४४॥
 अयं ते सत्यवान्भर्ता क्षीणायुः पार्थिवात्मजः।
 नेष्यामि तमहं बद्धा विद्धोतन्मे चिकीर्षितम्॥१४५॥

सावित्र्युवाच

श्रूयते भगवन्दूतास्तवागच्छन्ति मानवान्।
 नेतुं किल भवान्कस्मादागतोऽसि स्वयं प्रभो॥१४६॥

मार्कण्डेय उवाच

इत्युक्तः पितृराजस्तां भगवान्स्वचिकीर्षितम्।
 यथावत्सर्वमाख्यातुं तत्प्रियार्थं प्रचक्रमे॥१४७॥
 अयं च धर्मसंयुक्तो रूपवान्गुणसागरः।
 नार्हो मत्पुरुषैर्नेतुमतोऽस्मि स्वयमागतः॥१४८॥
 ततः सत्यवतः कायात्पाशबद्धं वशङ्गतम्।
 अङ्गुष्ठमात्रं पुरुषं निश्चकर्ष यमो बलात्॥१४९॥
 ततः समुद्धृतप्राणं गतश्वासं हतप्रभम्।
 निर्विचेष्टं शरीरं तद्वभूवा प्रियदर्शनम्॥१५०॥

यमस्तु तं ततो बद्धा प्रयातो दक्षिणामुखः।
सावित्री चैव दुःखार्ता यममेवान्वगच्छत॥१५१॥

भर्तुः शरीररक्षां च विधाय हि तपस्विनी।
भर्तारमनुगच्छन्ती तथावस्थं सुमध्यमा।
नियमव्रतसंसिद्धा महाभागा पतिव्रता॥१५२॥

यम उवाच

निवर्त गच्छ सावित्री कुरुष्वास्योर्ध्वदैहिकम्।
कृतम्भर्तुस्त्वयाऽऽनृण्यं यावद्भ्रम्यं गतं त्वया॥१५३॥

सावित्र्युवाच

यत्र मे नीयते भर्ता स्वयं वा यत्र गच्छति।
मया च तत्र गन्तव्यमेष धर्मः सनातनः॥१५४॥

तपसा गुरुभक्त्या च भर्तुः स्नेहाद्वतेन च।
तव चैव प्रसादेन न मे प्रतिहता गतिः॥१५५॥

प्राहुः साप्तपदं मैत्रं बुधास्तत्त्वार्थदर्शिनः।
मित्रतां च पुरस्कृत्य किञ्चिद्वक्ष्यामि तच्छृणु॥१५६॥

नानात्मवन्तस्तु वने चरन्ति
धर्मं च वासं च परिश्रमं च।
विज्ञानतो धर्ममुदाहरन्ति
तस्मात्सन्तो धर्ममाहुः प्रधानम्॥१५७॥

एकस्य धर्मेण सतां मतेन
सर्वे स्म तं मार्गमनुप्रपन्नाः।
मा वै द्वितीयं मा तृतीयं च वाञ्छे
तस्मात्सन्तो धर्ममाहुः प्रधानम्॥१५८॥

यम उवाच

निवर्त तुष्टोऽस्मि तवानया गिरा
 स्वराक्षरव्यञ्जनहेतुयुक्तया ।
 वरं वृणीष्वेह विनाऽस्य जीवितं
 ददानि ते सर्वमनिन्दिते वरम्॥१५९॥

सावित्र्युवाच

च्युतः स्वराज्याद्वनवासमाश्रितो
 विनष्टचक्षुः श्वशुरो ममाश्रमे।
 स लब्धचक्षुर्बलवान्भवेन्नृपस्-
 तव प्रसादाञ्जलनार्कसन्निभः॥१६०॥

यम उवाच

ददानि तेऽहं तमनिन्दिते वरं
 यथा त्वयोक्तं भविता च तत्तथा।
 तवाध्वना ग्लानिमिवोपलक्ष्ये
 निवर्त गच्छस्व न ते श्रमो भवेत्॥१६१॥

सावित्र्युवाच

श्रमः कुतो भर्तृसमीपतो हि मे
 यतो हि भर्ता मम सा गतिर्ध्रुवा।
 यतः पतिं नेष्यसि तत्र मे गतिः
 सुरेश भूयश्च वचो निबोध मे॥१६२॥
 सतां सकृत्सङ्गतमीप्सितं परं
 ततः परं मित्रमिति प्रचक्षते।
 न चाफलं सत्पुरुषेण सङ्गतं
 ततः सतां सन्निवसेत्समागमे॥१६३॥

यम उवाच

मनोऽनुकूलं बुधबुद्धिवर्धनं
 त्वया यदुक्तं वचनं हिताश्रयम्।
 विना पुनः सत्यवतोऽस्य जीवितं
 वरं द्वितीयं वरयस्व भामिनि॥१६४॥

सावित्र्युवाच

हृतं पुरा मे श्वशुरस्य धीमतःस्
 वमेव राज्यं लभतां स पार्थिवः।
 जह्यात्स्वधर्मान्न च मे गुरुर्यथा
 द्वितीयमेतद्वरयामि ते वरम्॥१६५॥

यम उवाच

स्वमेवं राज्यं प्रतिपत्स्यतेऽचिरान्-
 न च स्वधर्मात्परिहीयते नृपः।
 कृतेन कामेन मया नृपात्मजे
 निवर्त गच्छस्व न ते श्रमो भवेत्॥१६६॥

सावित्र्युवाच

प्रजास्त्वयैता नियमेन संयता
 नियम्य चैता नयसे निकामया।
 ततो यमत्वं तव देव विश्रुतं
 निबोध चेमां गिरमीरितां मया॥१६७॥

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।
 अनुग्रहश्च दानं च सतां धर्मः सनातनः॥१६८॥

एवम्प्रायश्च लोकोऽयं मनुष्याः शक्तिपेशलाः।
 सन्तस्त्वेवाप्यमित्रेषु दयां प्राप्तेषु कुर्वते॥१६९॥

यम उवाच

पिपासितस्येव भवेद्यथा पयस्-
 तथा त्वया वाक्यमिदं समीरितम्।
 विना पुनः सत्यवतोऽस्य जीवितं
 वरं वृणीष्वेह शुभे यदिच्छसि॥१७०॥

सावित्र्युवाच

ममानपत्यः पृथिवीपतिः पिता
 भवत्पितुः पुत्रशतं तथौरसम्।
 कुलस्य सन्तानकरं च यद्वेत्
 तृतीयमेतद्वरयामि ते वरम्॥१७१॥

यम उवाच

कुलस्य सन्तानकरं सुवर्चसं
 शतं सुतानां पितुरस्तु ते शुभे।
 कृतेन कामेन नराधिपात्मजे
 निवर्त दूरं हि पथस्त्वमागता॥१७२॥

सावित्र्युवाच

न दूरमेतन्मम भर्तृसन्निधौ
 मनो हि मे दूरतरं प्रधावति।
 अथ ब्रजन्नेव गिरं समुद्यताम्
 मयोच्यमानां शृणु भूय एव च॥१७३॥

विवस्वतस्त्वं तनयः प्रतापवान्स्-
 ततो हि वैवस्वत उच्यसे बुधैः।
 समेन धर्मेण चरन्ति ताः प्रजास्
 ततस्तवेहेवर धर्मराजता॥१७४॥

आत्मन्यपि न विश्वासस्तथा भवति सत्सु यः।
तस्मात्सत्सु विशेषेण सर्वः प्रणयमिच्छति॥१७५॥

सौहृदात्सर्वभूतानां विश्वासो नाम जायते।
तस्मात्सत्सु विशेषेण विश्वासं कुरुते जनः॥१७६॥

यम उवाच

उदाहृतं ते वचनं यदङ्गने
शुभे न तादृक् त्वदृते श्रुतं मया।
अनेन तुष्टोऽस्मि विनाऽस्य जीवितं
वरं चतुर्थं वरयस्व गच्छ च॥१७७॥

सावित्र्युवाच

ममात्मजं सत्यवतस्तथौरसं
भवेदुभाभ्यामिह यत्कुलोद्वहम्।
शतं सुतानां बलवीर्यशालिना-
मिदं चतुर्थं वरयामि ते वरम्॥१७८॥

यम उवाच

शतं सुतानां बलवीर्यशालिनां
भविष्यति प्रीतिकरं तवाबले।
परिश्रमस्ते न भवेन्नृपात्मजे
निवर्त दूरं हि पथस्त्वमागता॥१७९॥

सावित्र्युवाच

सतां सदा शाश्वतधर्मवृत्तिः
सन्तो न सीदन्ति न च व्यथन्ति।
सतां सद्भिर्नाफलः सङ्गमोऽस्ति
सद्भ्यो भयन्नानुवर्तन्ति सन्तः॥१८०॥

सन्तो हि सत्येन नयन्ति सूर्यं
 सन्तो भूमिं तपसा धारयन्ति।
 सन्तो गतिर्भूतभव्यस्य राजन्
 सतां मध्ये नावसीदन्ति सन्तः॥१८१॥

आर्यजुष्टमिदं वृत्तमिति विज्ञाय शाश्वतम्।
 सन्तः परार्थं कुर्वाणा नावेक्षन्ति प्रतिक्रियाः॥१८२॥

न च प्रसादः सत्पुरुषेषु मोघो
 न चाप्यर्थो नश्यति नापि मानः।
 यस्मादेतन्नियतं सत्सु नित्यं
 तस्मात्सन्तो रक्षितारो भवन्ति॥१८३॥

यम उवाच

यथा यथा भाषसि धर्मसंहितं
 मनोनुकूलं सुपदं महार्थवत्।
 तथा तथा मे त्वयि भक्तिरुत्तमा
 वरं वृणीष्वप्रतिमं पतिव्रते॥१८४॥

सावित्र्युवाच

न तेऽपवर्गः सुकृताद्विना कृतस्-
 तथा यथाऽन्येषु वरेषु मानद।
 वरं वृणे जीवतु सत्यवानयं
 यथा मृता ह्येवमहं पतिं विना॥१८५॥

न कामये भर्तृविनाकृता सुखं
 न कामये भर्तृविनाकृता दिवम्।
 न कामये भर्तृविनाकृता श्रियं
 न भर्तृहीना व्यवसामि जीवितुम्॥१८६॥

वरातिसर्गः शतपुत्रता मम
 त्वयैव दत्तो ह्रियते च मे पतिः।
 वरं वृणे जीवतु सत्यवानयं
 तवैव सत्यं वचनं भविष्यति॥१८७॥

मार्कण्डेय उवाच

तथेत्युक्त्वा तु तं पाशं मुक्त्वा वैवस्वतो यमः।
 धर्मराजः प्रहृष्टात्मा सावित्रीमिदमब्रवीत्॥१८८॥
 एष भद्रे मया मुक्तो भर्ता ते कुलनन्दिनि।
 तोषितोऽहं त्वया साध्वि वाक्यैर्धर्मार्तसंहितैः॥१८९॥

अरोगस्तव नेयश्च सिद्धार्थः स भविष्यति।
 चतुर्वर्षशतायुश्च त्वया सार्धमवाप्स्यति॥१९०॥
 इष्ट्वा यज्ञैश्च धर्मेण ख्यातिं लोके गमिष्यति।
 त्वयि पुत्रशतं चैव सत्यवाञ्जनयिष्यति॥१९१॥
 ते चापि सर्वे राजानः क्षत्रियाः पुत्रपौत्रिणः।
 ख्यातास्त्वन्नामधेयाश्च भविष्यन्तीह शाश्वताः॥१९२॥

पितुश्च ते पुत्रशतं भविता तव मातरि।
 मालव्यां मालवा नाम शाश्वताः पुत्रपौत्रिणः।
 भ्रातरस्ते भविष्यन्ति क्षत्रियास्त्रिदशोपमाः॥१९३॥

एवं तस्यै वरं दत्त्वा धर्मराजः प्रतापवान्।
 निवर्तयित्वा सावित्रीं स्वमेव भवनं ययौ॥१९४॥
 सावित्र्यपि यमे याते भर्तारं प्रतिलभ्य च।
 जगाम तत्र यत्रास्या भर्तुः शावं कलेवरम्॥१९५॥

सा भूमौ प्रेक्ष्यभर्तारमुपसृत्योपगृह्य च।
 उत्सङ्गे शिर आरोप्य भूमावुपविवेश ह॥१९६॥

संज्ञां चस पुनर्लब्ध्वा सावित्रीमभ्यभाषत।
 प्रोष्यागत इव प्रेम्णा पुनःपुनरुदीक्ष्यवै॥१९७॥
 सुचिरं बत सुप्तोऽस्मि किमर्थं नावबोधितः।
 क्व चासौ पुरुषः श्यामो योसौ मां सञ्चकर्षह॥१९८॥

सावित्र्युवाच

सुचिरं त्वम्प्रसुप्तोऽसि ममाह्वके पुरुषर्षभ।
 गतः स भगवान्देवः प्रजासंयमनो यमः॥१९९॥
 विश्रान्तोऽसि महाभाग विनिद्रश्च नृपात्मज।
 यदि शक्यं समुत्तिष्ठ विगाढां पश्य शर्वरीम्॥२००॥

मार्कण्डेय उवाच

उपलभ्यततः संज्ञां सुखसुप्त इवोत्थितः।
 दिशः सर्वा वनान्तांश्च निरीक्ष्योवाच सत्यवान्॥२०१॥
 फलाहारोऽस्मि निष्क्रान्तस्त्वया सह सुमध्यमे।
 ततः पाटयतः काष्ठं शरिसो मे रुजाऽभवत्॥२०२॥
 शिरोभितापसन्तप्तः स्थातुं चिरमशक्नुवन्।
 तवोत्सङ्गे प्रसुप्तोऽस्मि इति सर्वं स्मरे शुभे॥२०३॥
 त्वयोपगूढस्य च मे निद्रयाऽपहृतं मनः।
 ततोऽपश्यं तमो घोरं पुरुषं च महौजसम्॥२०४॥
 तद्यदि त्वं विजानासि किं तद्ब्रूहि सुमध्यमे।
 स्वप्नो मे यदिवा दृष्टो यदि वा सत्यमेव तत्॥२०५॥
 तमुवाचाथ सावित्री रजनी व्यवगाहते।
 श्वस्ते सर्वयथावृत्तमाख्यास्यामि नृपात्मज॥२०६॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते पितरौ पश्य सुव्रत।
विगाढा रजनी चेयं निवृत्तश्च दिवाकरः॥२०७॥

नक्तश्चराश्चरन्त्येते हृष्टाः क्रूराभिभाषिणः।
श्रूयन्ते पर्णशब्दाश्च मृगाणां चरतां वने॥२०८॥

एता घोरं शिवा नादान्दिशं दक्षिणपश्चिमाम्।
आस्थाय विरुवन्त्युग्राः कम्पयन्त्यो मनो मम॥२०९॥

सत्यवानुवाच

वनं प्रतिभयाकारं घनेन तमसा वृतम्।
न विज्ञास्यसि पन्थानं गन्तुं चैव न शक्यसि॥२१०॥

सावित्र्युवाच

अस्मिन्नद्य वने दग्धे शुष्कवृक्षः स्थितो ज्वलन्।
वायुना धम्यमानोऽत्र दृश्यतेऽग्निः क्वचित् क्वचित्॥२११॥

ततोऽग्निमानयित्वेह ज्वालयिष्यामि सर्वतः।
काष्ठानीमानि सन्तीह जहि सन्तापमात्मनः॥२१२॥

यदि नोत्सहसे गन्तुं सरुजं त्वां हि लक्षये।
न च ज्ञास्यसि पन्थानं तमसा संवृते वने॥२१३॥

श्वः प्रभाते वने दृश्ये यास्यावोऽनुमते तव।
वसावेह क्षपामेकां रुचितं यदि तेऽनघ॥२१४॥

सत्यवानुवाच

शिरोरुजा निवृत्ता मे स्वस्थान्यङ्गानि लक्षये।
मातापितृभ्यामिच्छामि संयोगं त्वत्प्रसादजम्॥२१५॥

न कदाचिद्विकाले हि गतपूर्वोहमाश्रमात्।
अनागतायां सन्ध्यायां माता मे प्ररुणद्धि माम्॥२१६॥

दिवाऽपिमयि निष्क्रान्ते सन्तप्येते गुरू मम।
विचिनोति हि मां तातः सहैवाश्रमवासिभिः॥२१७॥

मात्रा पित्रा च सुभृशं दुःखिताभ्यामहं पुरा।
उपालब्धश्च बहुशश्चिरेणागच्छसीति हि॥२१८॥

कात्ववस्था तयोरद्य मदर्थमिति चिन्तये।
तयोरदृश्ये मयि च महद्दुःखं भविष्यति॥२१९॥

पुरा मामूचतुश्चैव रात्रावस्त्रायमाणकौ।
भृशं सुदुःखितौ वृद्धौ बहुशः प्रीतिसंयुतौ॥२२०॥

त्वया हीनौ न जीवाव मुहूर्तमपि पुत्रक।
यावद्धरिष्यसे पुत्र तावन्नौ जीवितं ध्रुवम्॥२२१॥

वृद्धयोरन्धयोर्दृष्टिस्त्वयि वंशः प्रतिष्ठितः।
त्वयि पिण्डश्च कीर्तिश्च सन्तानश्चावयोरिति॥२२२॥

माता वृद्धा पिता वृद्धस्तयोर्यष्टिरहं किल।
तौ रात्रौ मामपश्यन्तौ कामवस्थां गमिष्यतः॥२२३॥

निद्रायाश्चाभ्यसूयामि यस्या हेतोः पिता मम।
माता च संशयं प्राप्ता मत्कृतेऽनपकारिणी॥२२४॥

अहं च संशयं प्राप्तः कृच्छ्रामापदमास्थितः।
मातापितृभ्यां हि विना नाहं जीवितुमुत्सहे॥२२५॥

व्यक्तमाकुलया बुद्ध्या प्रज्ञाचक्षुः पिता मम।
एकैकमस्यां वेलायां पृच्छत्याश्रमवासिनम्॥२२६॥

नात्मानमनुशोचामि यथाऽहं पितरं शुभे।
भर्तारं चाप्यनुगतां मातरं भृशदुःखिताम्॥२२७॥

मत्कृते न हि तावद्य सन्तापं परमेष्ठ्यतः।
जीवन्तावनुजीवामि भर्तव्यौ तौ मयेति ह॥२२८॥

तयोः प्रियं मे कर्तव्यमिति जीवामि चाप्यहम्।
परमं दैवतं तौ मे पूजनीयौ सदा मया।
तयोस्तु मे सदाऽस्त्येवं व्रतमेतत्पुरातनम्॥२२९॥

मार्कण्डेय उवाच

एवमुक्त्वा स धर्मात्मा गुरुभक्तो गुरुप्रियः।
उच्छ्रित्य बाहू दुःखार्तः सुस्वरं प्ररुरोद ह॥२३०॥
ततोऽब्रवीत्तथा दृष्ट्वाभर्तारं शोककर्षितम्।
प्रमृज्याश्रूणि पाणिभ्यां सावित्री धर्मचारिणी॥२३१॥
यदि मेऽस्ति तपस्तप्तं यदि दत्तं हुतं यदि।
श्वश्रूश्वशुरभर्तृणां मम पुण्याऽस्तु शर्वरी॥२३२॥
न स्मराम्युक्तपूर्वं वै स्वैरेष्वप्यनृतां गिरम्।
तेन सत्येन तावद्य ध्रियेतां श्वशुरौ मम॥२३३॥

सत्यवानुवाच

कामये दर्शनं पित्रोर्याहि सावित्री माचिरम्।
अपिनाम गुरू तौ हि पश्येयं ध्रियमाणकौ॥२३४॥
पुरा मातुः पितुर्वाऽपियदि पश्यामि विप्रियम्।
न जीविष्ये वरारोहे सत्येनात्मानमालभे॥२३५॥
यदि धर्मे च ते बुद्धिर्मां चेज्जीवन्तमिच्छसि।
मम प्रियं वा कर्तव्यं गच्छावाश्रममन्तिकात्॥२३६॥

मार्कण्डेय उवाच

सावित्री तत उत्थाय केशान् संयम्य भामिनी।
पतिमुत्थापयामास बाहुभ्यां परिगृह्य वै॥२३७॥

उत्ताय सत्यवांश्चापि प्रमृज्याङ्गानि पाणिना।
सर्वा दिशः समालोक्य कठिने दृष्टिमादधे॥२३८॥

तमुवाचाथसावित्री श्वः फलानि हरिष्यसि।
योगक्षेमार्थमेतं ते नेष्यामि परशुं त्वहम्॥२३९॥

कृत्वा कठिनभारं सा वृक्षशाखावलम्बिनम्।
गृहीत्वा परशुं भर्तुः सकाशे पुनरागमत्॥२४०॥

वामे स्कन्धे तु वामोरूर्ध्वर्तुर्बाहुं निवेश्य च।
दक्षिणेन परिष्वज्य जगाम गजगामिनी॥२४१॥

सत्यवानुवाच

अभ्यासगमनाद्धीरु पन्थानो विदिता मम।
वृक्षान्तरालोक्तया ज्योत्स्नया चापि लक्ष्ये॥२४२॥

आगतौ स्वः पथा येन फलान्यवचितानि च।
यथागतं शुभे गच्छ पन्थानं मा विचारय॥२४३॥

पलाशखण्डे चैतस्मिन्पन्था व्यावर्तते द्विधा।
तस्योत्तरेण यः पन्थास्तेन गच्छ त्वरस्व च॥२४४॥

स्वस्थोऽस्मि बलवानस्मि दिदृक्षुः पितराबुभौ।
ब्रुवन्नेव त्वरायुक्तः सम्प्रायादाश्रमं प्रति॥२४५॥

॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
अष्टनवत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः॥२९८॥

॥ एकोनत्रिशततमोऽध्यायः ॥ २९९ ॥

मार्कण्डेय उवाच

एतस्मिन्नेव काले तु द्युमत्सेनो महाबलः।
लब्धचक्षुः प्रसन्नायां दृष्ट्यां सर्वं ददर्श ह॥२४६॥

स सर्वानाश्रमान्गत्वा शैब्यया सह भार्यया।
पुत्रहेतोः परामार्तिं जगाम भरतर्षभ॥२४७॥

तावाश्रमान्नदीश्चैववनानि च सरांसि च।
तस्यां निशि विचिन्वन्तौ दम्पती परिजग्मतुः॥२४८॥

श्रुत्वा शब्दं तु यं कञ्चिदुन्मुखौ सुतशङ्कया।
सावित्रीसहितोऽभ्येति सत्यवानित्यभाषताम्॥२४९॥

भिन्नैश्च परुषैः पादैः सत्रणैः शोणितोक्षितैः।
कुशकण्टकविद्धाङ्गावुनमत्ताविव धावतः॥२५०॥

ततोऽभिसृत्य तैर्विप्रैः सर्वैराश्रमवासिभिः।
परिवार्य समाश्वस्य तावानीतौ स्वमाश्रमम्॥२५१॥

तत्रभार्यासहायः स वृतो वृद्धैस्तपोधनैः।
आश्वसितोपि चित्रार्थैः पूर्वराजकथाश्रयैः॥२५२॥

ततस्तौ पुनराश्वस्तौ वृद्धौ पुत्रदिदृक्षया।
बाल्यवृत्तानि पुत्रस्य सावित्र्या दर्शनानि च।
शोकं जग्मतुरन्योन्यं स्मरन्तौ भृशदुःखितौ॥२५३॥

हापुत्र हासाध्वि वधु क्वासिक्कासीत्यरोदताम्।
ब्राह्मणः सत्यवाक्येषामुवाचेदं तयोर्वचः॥२५४॥

सुवर्चा उवाच

यथास्य भार्या सावित्री तपसा च दमेन च।
आचारेण च संयुक्ता तथा जीवति सत्यवान्॥२५५॥

गौतम उवाच

वेदाः साङ्गा मयाऽधीतास्तपो मे सञ्चितं महत्।
कौमारब्रह्मचर्यं च गुरवोऽग्निश्च तोषिताः॥२५६॥

समाहितेन चीर्णानि सर्वाण्येव व्रतानि मे।
वायुभक्षोपवासश्च कृतोमे विधिवत्सदा॥२५७॥

अनेन तपसा वेद्मि सर्वं परचिकीर्षितम्।
सत्यमेतन्निबोधध्वं ध्रियते सत्यवानिति॥२५८॥

शिष्य उवाच

उपाध्यायस्य मे वक्राद्यथा वाक्यं विनिःसृतम्।
नैव जातु भवेन्मिथ्या तथा जीवति सत्यवान्॥२५९॥

ऋषय ऊचुः

यथाऽस्य भार्या सावित्री सर्वैरेव सुलक्षणैः।
अवैधव्यकरैर्युक्ता तथा जीवति सत्यवान्॥२६०॥

भारद्वाज उवाच

यथाऽस्य भार्या सावित्री तपसा च दमेन च।
आचारेण च संयुक्ता तथा जीवति सत्यवान्॥२६१॥

दाल्भ्या रुवाच

यथा दृष्टिः प्रवृत्ता ते सावित्र्याश्च यथा व्रतम्।
गताऽऽहारमकृत्वैव तथा जीवति सत्यवान्॥२६२॥

आपस्तम्ब उवाच

यथा वदन्ति शान्तायां दिशि वै मृगपक्षिणः।
पार्थिवीं चैववृद्धिं ते तथा जीवति सत्यवान्॥२६३॥

धौम्य उवाच

सर्वैर्गुणैरुपेतस्ते यथा पुत्रो जनप्रियः।
दीर्घायुर्लक्षणोपेतस्तथा जीवति सत्यवान्॥२६४॥

मार्कण्डेय उवाच

एवमाश्वासितस्तैस्तु सत्यवाग्भिस्तपस्विभिः।
तांस्तान्विगणयन्सर्वास्ततः स्थिर इवाभवत्॥२६५॥
ततो मुहूर्तात्सावित्री भर्त्रा सत्यवता सह।
आजगामाऽऽश्रमं रात्रौ प्रहृष्टा प्रविवेश ह॥२६६॥
दृष्ट्वा चोत्पतिताः सर्वे हर्षं जग्मुश्च ते द्विजाः।
कण्ठं माता पिता चास्य समालिङ्ग्याभ्यरोदताम्॥२६७॥

ब्राह्मणा ऊचुः

पुत्रेण सङ्गतं त्वां तु चक्षुष्मन्तं निरीक्ष्य च।
सर्वे वयं वै पृच्छामो वृद्धिं वै पृथिवीपते॥२६८॥
समागमेन पुत्रस्य सावित्र्या दर्शनेन च।
चक्षुषश्चात्मनो लाभात्रिभिर्दिष्ट्या विवर्धसे॥२६९॥
सर्वैरस्माभिरुक्तं यत्तथा तन्नात्र संशयः।
भूयोभूयः समृद्धिस्ते क्षिप्रमेव भविष्यति॥२७०॥

मार्कण्डेय उवाच

ततोऽग्निं तत्र सञ्चाल्य द्विजास्ते सर्व एव हि।
उपासाश्चक्रिरे पार्थ द्युमत्सेनं महीपतिम्॥२७१॥

शैव्या च सत्यवांश्चैव सावित्री चैकतः स्थिताः।
 सर्वैस्तैरभ्यनुज्ञाता विशोका समुपाविशन्॥२७२॥

ततो राज्ञा सहासीनाः सर्वे ते वनवासिनः।
 जातकौतूहलाः पार्थ पप्रच्छुर्नृपतेः सुतम्॥२७३॥

प्रागेव नागतं कस्मात्सभार्येण त्वया विभो।
 विरात्रे चागतं कस्मात्कोनु बन्धस्तवाभवत्॥२७४॥

सन्तापितः पिता माता वयं चैव नृपात्मज।
 कस्मादिति न जानीमस्तत्सर्वं वक्तुमर्हिसि॥२७५॥

सत्यवानुवाच

पित्राऽहमभ्यनुज्ञातः सावित्रीसहितो गतः।
 अथ मेऽभूच्छिरोदुःखं वने काष्ठानि भिन्दतः॥२७६॥

सुप्तश्चाहं वेदनया चिरमित्युपलक्षये।
 तावत्कालं न च मया सुप्तपूर्वं कदाचन॥२७७॥

सर्वेषामेव भवतां सन्तापो मा भवेदिति।
 अतो विरात्रागमनं नान्यदस्तीह कारणम्॥२७८॥

गौतम उवाच

अकस्माच्चक्षुषः प्राप्तिर्द्युमत्सेनस्य ते पितुः।
 नास्य त्वं कारणं वेत्सि सावित्री वक्तुमर्हति॥२७९॥

श्रोतुमिच्छामि सावित्रि त्वं हि वेत्थ परावरम्।
 त्वां हि जानामि सावित्रि सावित्रीमिव तेजसा॥२८०॥

त्वमत्र हेतुं जानीषे तस्मात्सत्यं निरुच्यताम्।
 रहस्यं यदि ते नास्ति किञ्चिदत्र वदस्व नः॥२८१॥

सावित्र्युवाच

एवमेतद्यथा वेत्थ सङ्कल्पो नान्यथा हि वः।
 न हि किञ्चिद्रहस्यं मे श्रूयतां तथ्यमेव यत्॥२८२॥
 मृत्युर्मे पत्युराख्यातो नारदेन महात्मना।
 स चाद्य दिवसः प्राप्तस्ततो नैनं जहाम्यहम्॥२८३॥
 सुप्तं चैनं यमः साक्षादुपागच्छत्सकिङ्करः।
 स एनमनयद्वद्धा दिशं पितृनिषेविताम्॥२८४॥
 अस्तौषं तमहं देवं सत्येन वचसा विभुम्।
 पञ्च वै तेन मे दत्ता वराः शृणुत तान्मम॥२८५॥
 चक्षुषी च स्वराज्यञ्च द्वौ वरौ श्वशुरस्य मे।
 लब्धं पितुः पुत्रशतं पुत्राणां चात्मनः शतम्॥२८६॥
 चतुर्वर्षशतायुर्मे भर्ता लब्धश्च सत्यवान्।
 भर्तुर्हि जीवितार्थं तु मया चीर्णं त्विदं व्रतम्॥२८७॥
 एतत्सर्वं मयाऽऽख्यातं कारणं विस्तरेण वः।
 यथावृत्तं सुखोदरकमिदं दुःखं महन्मम॥२८८॥

ऋषय ऊचुः

निमज्जमानं व्यसनैरभिद्रुतं
 कुलं नरन्द्रस्य तमोमये हृदे।
 त्वया सुशीलव्रतपुण्यया कुलं
 समुद्धृतं साध्वि पुनः कुलीनया॥२८९॥

मार्कण्डेय उवाच

तथा प्रशस्य ह्यभिपूज्य चैव
 वरस्त्रियं तामृषयः समागताः।
 नरेन्द्रमामञ्च्य सपुत्रमञ्जसा
 शिवेन जग्मुर्मुदिताः स्वमालयम्॥२९०॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
एकोनत्रिशततमोऽध्यायः ॥ २९९ ॥

॥ त्रिशततमोऽध्यायः ॥ ३०० ॥ ॥

मार्कण्डेय उवाच

तस्यां रात्र्यां व्यतीतायामुदिते सूर्यमण्डले।
कृतपौर्वाहिकाः सर्वे समेयुस्ते तपोधनाः ॥ २९१ ॥

तदेव सर्वं सावित्र्या महाभाग्यं महर्षयः।
द्युमत्सेनाय नातृप्यन्कथयन्तः पुनः पुनः ॥ २९२ ॥

ततः प्रकृतयः सर्वाः साल्वेभ्योऽभ्यागता नृपम्।
आचख्युर्निहतं चैव स्वेनामात्येन तं द्विषम् ॥ २९३ ॥

तं मन्त्रिणा हतं प्रोच्य ससहायं सबान्धवम्।
न्यवेदयन्त्यथावृत्तं विद्रुतं च द्विषद्वलम् ॥ २९४ ॥

ऐकमत्यं च सर्वस्य जनस्य स्वं नृपं प्रति।
सचक्षुर्वाऽप्यचक्षुर्वा स नो राजा भवत्विति ॥ २९५ ॥

अनेन निश्चयेनेह वयं प्रस्थापिता नृप।
प्राप्तानीमानि यानानि चतुरङ्गं च ते बलम् ॥ २९६ ॥

प्रयाहि राजन्भद्रं ते घुष्टस्ते नगरे जयः।
अध्यास्व चिररात्राय पितृपैतामहं पदम् ॥ २९७ ॥

मार्कण्डेय उवाच

चक्षुष्मन्तं च तं दृष्ट्वा राजानं वपुषाऽन्वितम्।
मूर्ध्ना निपतिताः सर्वेविस्मयोत्फुल्ललोचनाः ॥ २९८ ॥

ततोऽभिवाद्य तान्वृद्धान्द्विजानाश्रमवासिनः।
तैश्चाभिपूजितः सर्वैः प्रययौ नगरं प्रति ॥ २९९ ॥

शैव्या च सह सावित्र्या स्वास्तीर्णेन सुवर्चसा।
नरयुक्तेन यानेन प्रययौ सेनया वृता॥३००॥

ततोऽभिषिषिचुः प्रीत्या द्युमत्सेनं पुरोहिताः।
पुत्रं चास्य महात्मानं यौवराज्येऽभ्यषेचयन्॥३०१॥

ततः कालेन महता सावित्र्याः कीर्तिवर्धनम्।
तद्वै पुत्रशतं जज्ञे शूराणामनिवर्तिनाम्॥३०२॥

भ्रातृणां सोदराणां च तथैवास्याभवच्छतम्।
मद्राधिपस्याश्वपतेर्मालव्यां सुमहाबलम्॥३०३॥

एवमात्मा पिता माता श्वश्रुः श्वशुर एव च।
भर्तुः कुलं च सावित्र्या सर्वं कृच्छ्रात्समुद्धृतं॥३०४॥

तथैवैषा हि कल्याणी द्रौपदी शीलसम्मता।
तारयिष्यति वः सर्वान्सावित्रीव कुलाङ्गना॥३०५॥

वैशम्पायन उवाच

एवं स पाण्डवस्तेन अनुनीतो महात्मना।
विशोको विज्वरो राजन्काम्यके न्यवसत्तदा॥३०६॥

यश्चेदं शृणुयाद्भक्त्या सावित्र्याख्यानमुत्तमम्।
स सुखी सर्वसिद्धार्थो न दुःखं प्राप्नुयान्नरः॥३०७॥

॥इति श्रीमन्महाभारते अरण्यपर्वणि पतिव्रतामाहात्म्यपर्वणि
त्रिशततमोऽध्यायः॥३००॥

पतिव्रतामाहात्म्यपर्व समाप्तम्॥१९॥



॥ सङ्क्रमण-पुण्यकाल-स्नान-सङ्कल्पः ॥

(आचम्य)

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

प्राणान् आयम्य। ॐ भूः + भूर्भुवः सुवरोम्।

आचमनम्। शुक्लाम्बरधरं + शान्तये। प्राणायामः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपतेरङ्घ्रियुगं स्मरामि॥

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थागतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

मानसं वाचिकं पापं कर्मणा समुपार्जितम्।
श्रीरामः स्मरणेनैव व्यपोहति न संशयः॥

श्रीराम राम राम।

तिथिर्विष्णुस्तथा वारो नक्षत्रं विष्णुरेव च।
योगश्च करणं चैव सर्वं विष्णुमयं जगत्॥

श्रीहरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द।

ममोपात्त-समस्त-दुरित-क्षयद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थम्, अद्य –
श्रीभगवतः विष्णोः नारायणस्य अचिन्त्यया अपरिमितया शक्त्या
भ्रियमाणस्य महाजलौघस्य मध्ये परिभ्रमताम् अनेककोटिब्रह्माण्डा-
नाम् एकतमे पृथिवी-अप्-तेजो-वायु-आकाश-अहङ्कार-महद्-अव्यक्तैः
आवरणैः आवृते अस्मिन् महति ब्रह्माण्डकरण्डमध्ये चतुर्दशभुवनान्तर्गते
भूमण्डले जम्बू-प्लक्ष-शाक-शाल्मलि-कुश-क्रौञ्च-पुष्कराख्य-सप्तद्वीपमध्ये

जम्बूद्वीपे भारत-किम्पुरुष-हरि-इलावृत-रम्यक-हिरण्मय-कुरु-भद्राश्व-
केतुमाल-नववर्षमध्ये **भारतवर्षे** इन्द्र-चेरु-ताम्र-गभस्ति-नाग-सौम्य-गन्धर्व-
चारण-भरत-नवखण्डमध्ये **भरतखण्डे** सुमेरु-निषद-हेमकूट-हिमाचल-
माल्यवत्-पारियात्रक-गन्धमादन-कैलास-विन्ध्याचलादि-अनेकपुण्यशैलानां
मध्ये दण्डकारण्य-चम्पकारण्य-विन्ध्यारण्य-वीक्षारण्य-श्वेतारण्य-वेदारण्यादि-
अनेकपुण्यारण्यानां मध्ये कर्मभूमौ रामसेतुकेदारयोः मध्ये भागीरथी-
यमुना-नर्मदा-त्रिवेणी-मलापहारिणी-गौतमी-कृष्णवेणी-तुङ्गभद्रा-कावेर्यादि-
अनेकपुण्यनदी-विराजिते इन्द्रप्रस्थ-यमप्रस्थ-अवन्तिकापुरी-हस्तिनापुरी-
अयोध्यापुरी-द्वारका-मथुरापुरी-मायापुरी-काशीपुरी-काशीपुर्यादि-अनेकपुण्य-
पुरी-विराजिते -

सकलजगत्स्रष्टुः परार्धद्वयजीविनः ब्रह्मणः द्वितीयपरार्धे पञ्चाशद्-अब्दादौ
प्रथमे वर्षे प्रथमे मासे प्रथमे पक्षे प्रथमे दिवसे अहि द्वितीये यामे
तृतीये मुहूर्ते स्वायम्भुव-स्वारोचिष-उत्तम-तामस-रैवत-चाक्षुषाख्येषु षट्सु
मनुषु अतीतेषु सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे पादे
अस्मिन् वर्तमाने व्यावहारिकाणां प्रभवादीनां षष्ठ्याः संवत्सराणां मध्ये

()^{८२} नाम संवत्सरे उत्तरायणे / दक्षिणायने (ग्रीष्म / वर्ष / शरद् /
हेमन्त / शिशिर / वसन्त) ऋतौ (मेष / वृषभ / मिथुन / कर्कटक / सिंह
/ कन्या / तुला / वृश्चिक / धनुर् / मकर / कुम्भ / मीन) मासे (शुक्ल
/ कृष्ण) पक्षे () शुभतिथौ (इन्दु / भौम / बुध / गुरु / भृगु / स्थिर
/ भानु) वासरयुक्तायाम् ()^{८३} नक्षत्र ()^{८४} नाम योग () करण
युक्तायां च

एवंगुणविशेषणविशिष्टायाम् अस्याम् () शुभतिथौ-

^{८२}पृष्ठं १२५ पश्यताम्

^{८३}पृष्ठं १२७ पश्यताम्

^{८४}पृष्ठं १२८ पश्यताम्

अनादि-अविद्या-वासनया प्रवर्तमाने अस्मिन् महति संसारचक्रे विचित्राभिः कर्मगतिभिः विचित्रासु योनिषु पुनःपुनः अनेकधा जनित्वा केनापि पुण्यकर्मविशेषेण इदानीन्तन-मानुष-द्विजजन्म-विशेषं प्राप्तवतः मम –
जन्माभ्यासात् जन्मप्रभृति एतत्क्षणपर्यन्तं बाल्ये कौमारे यौवने मध्यमे वयसि वार्धके च जागृत्-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्थासु मनो-वाक्-कायाख्य-त्रिकरणचेष्टया कर्मेन्द्रिय-ज्ञानेन्द्रिय-व्यापारैः सम्भावितानाम् इह जन्मनि जन्मान्तरे च ज्ञानाज्ञानकृतानां महापातकानां महापातक-अनुमन्तृत्वादीनां समपातकानाम् उपपातकानां मलिनीकरणानां गर्ह्यधन-आदान-उपजीवनादीनाम् अपात्रीकरणानां जातिभ्रंशकराणां विहितकर्मत्याग-निन्दितसमाचरणादीनां ज्ञानतः सकृत् कृतानाम् अज्ञानतः असकृत् कृतानां सर्वेषां पापानां सद्यः अपनोदनार्थं –
महागणपत्यादिसमस्तवैदिकदेवतासन्निधौ

()-पुण्यकाल-स्नानमहं करिष्ये। अप उपस्पृश्य।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपमा।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुम् अर्हसि॥

(प्रोक्षण-मन्त्राः/स्नान-मन्त्राः)

स्नात्वा वस्त्रं धृत्वा कुलाचारवत् पुण्ड्रधारणं च कृत्वा आचम्य।



॥ कार्तिकमासमाहात्म्यम् ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥१॥

ऋषय ऊचुः

सूत नः कथितं पुण्यं माहात्म्यमाश्विनस्य च।
भूयोऽन्यच्छ्रोतुमिच्छामः कार्तिकस्य च वैभवम्॥२॥

कलौ कलुषचित्तानां नराणां पापकर्मणाम्।
संसाराब्धौ निमग्नानामनायासेन का गतिः॥३॥

को धर्मः सर्वधर्माणामधिको मोक्षसाधकः।
इहापि मुक्तिदो नृणामेतत्त्वं कथय प्रभो॥४॥

सूत उवाच

भवद्विर्यदहं पृष्टस्तदेतत्पृष्टवान्मुनिः।
नारदो ब्रह्मणः पुत्रो ब्रह्माणं तु जगद्गुरुम्॥५॥

तथैव सत्यभामा च श्रीकृष्णं जगदीश्वरम्।
अपृच्छत्कार्तिकस्यैव वैभवं श्रवणोत्सुका॥६॥

वालखिल्यैश्च ऋषिभिर्यदुक्तमृषिसंसदि।
श्रीसूर्यारुणसंवादरूपेणातिमनोहरम् ॥७॥

कैलासे शङ्करेणैव कार्तिकस्य च वैभवम्।
वर्णितं षण्मुखस्याग्रे नानाख्यानसमन्वितम्॥८॥

पृथुं प्रति नारदेन कथितं च माहात्म्यकम्।
कार्तिकस्य च विप्रेन्द्रा श्रुत्वा ब्रह्ममुखात्पुरा॥९॥

एकदा नारदो योगी सत्यलोकमुपागतः।
पप्रच्छ विनयेनैव सर्वलोकपितामहम्॥१०॥

श्रीनारद उवाच

पापेन्धनस्य घोरस्य शुष्कार्द्रस्य च भूरिशः।
को वह्निर्दहते ब्रह्मंस्तद्भवान्वक्तुमर्हति॥११॥
नाज्ञातं त्रिषु लोकेषु ब्रह्माण्डान्तर्गतस्य यत्।
विद्यते तव देवेश त्रिविधस्य सुनिश्चितम्॥१२॥
मासानां प्रवरो मासो देवानामुत्तमोत्तमः।
तीर्थानि तद्विशेषेण कथयस्व पितामह॥१३॥

ब्रह्मोवाच

मासानां कार्तिकः श्रेष्ठो देवानां मधुसूदनः।
तीर्थं नारायणाख्यं हि त्रितयं दुर्लभं कलौ॥१४॥

नारद उवाच

भगवंस्तव दासोऽस्मि भक्तोऽस्मि हरिवल्लभ।
वैष्णवान्ब्रूहि मे धर्मान्सर्वज्ञोऽसि पितामह॥१५॥
आदौ कार्तिकमाहात्म्यं वक्तुमर्हसि मे प्रभो।
दीपदानस्य माहात्म्यं व्रतिनां नियमांस्तथा॥१६॥
गोपीचन्दनमाहात्म्यं तुलस्याश्च तथा विभो।
धात्र्याश्चैव च माहात्म्यं विधिं स्नानादिकस्य च।
व्रतारम्भः कदा कार्यं उद्यापनविधिं तथा॥१७॥
यत्किञ्चिद्वैष्णवं धर्मं तत्सर्वं वक्तुमर्हसि।
येनाहं त्वत्प्रसादेन पदं यास्याम्यनामयम्॥१८॥

सूत उवाच

इति पुत्रवचः श्रुत्वा ब्रह्मा हर्षसमन्वितः।
राधादामोदरं स्मृत्वा प्रोवाच तनुजं प्रति॥१९॥

ब्रह्मोवाच

साधु पृष्टं त्वया पुत्र लोकोद्धरणहेतवे।
कथयामि न सन्देहः कार्तिकस्य च वैभवम्॥२०॥

एकतः सर्वतीर्थानि सर्वे यज्ञाः सदक्षिणाः।
कार्तिकस्य तु मासस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥२१॥

एकतः पुष्करे वासः कुरुक्षेत्रे हिमालये।
एकतः कार्तिकः पुत्र सर्वपुण्याधिको मतः॥२२॥

स्वर्णानि मेरुतुल्यानि सर्वदानानि चैकतः।
एकतः कार्तिको वत्स सर्वदा केशवप्रियः॥२३॥

यत्किञ्चित्क्रियते पुण्यं विष्णुमुद्दिश्य कार्तिके।
तस्य क्षयं न पश्यामि मयोक्तं तव नारद॥२४॥

सोपानभूतं स्वर्गस्य मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम्।
तथात्मानं समादद्यान्न भ्रश्येत यथा पुनः॥२५॥

दुष्प्राप्यं प्राप्य मानुष्यं कार्तिकोक्तं चरेन्न यः।
धर्मं धर्मभृतां श्रेष्ठ स मातापितृघातकः॥२६॥

कार्तिकः खलु वै मासः सर्वमासेषु चोत्तमः।
पुण्यानां परमं पुण्यं पावनानां च पावनम्॥२७॥

अस्मिन्मासे त्रयस्त्रिंशद्देवाः सन्निहिता मुने।
अत्र स्नानानिदानानि भोजनानि व्रतानि च॥२८॥

तिलधेनुं हिरण्यं च रजतं भूमिवाससी।
गोप्रदानानि कुर्वन्ति सर्वभावेन नारद॥२९॥

तानि दानानि दत्तानि गृह्णन्ति विधिवत्सुराः।
यत्किञ्च दत्तं विप्रेन्द्र तपश्चैव तथा कृतम्॥३०॥

तदक्षय्यफलं प्रोक्तं विष्णुना प्रभविष्णुना।
पापानां मोक्षणं चैव कार्तिके मासि शस्यते॥३१॥
तस्माद्यत्नेन विप्रेन्द्र कार्तिके मासि दीयते।
यत्किञ्चित्कार्तिके दत्तं विष्णुमुद्दिश्य मानवैः॥३२॥

तदक्षयं हि लभते अन्नदानं विशेषतः।
यथा नदीनां विप्रेन्द्र शैलानां चैव नारद॥३३॥
उदधीनां च विप्रर्षे क्षयो नैवोपपद्यते।
दानं कार्तिकमासे तु यत्किञ्चिद्दीयते मुने॥३४॥

न तस्यास्ति क्षयो विप्र पापं याति सहस्रधा।
सम्प्राप्तं कार्तिकं दृष्ट्वा परान्नं यस्तु वर्जयेत्॥३५॥

दिनेदिनेऽतिकृच्छ्रस्य फलं प्राप्नोत्ययत्नतः।
न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्॥३६॥

न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गङ्गाया समम्।
न चान्नसदृशं दानं न सुखं भार्यया समम्॥३७॥

न्यायेनोपार्जितं द्रव्यं दुर्लभं दानकारिणाम्।
दुर्लभं मर्त्यधर्माणां तीर्थे च प्रतिपादनम्॥३८॥

कार्तिके मुनिशार्दूल शालिग्रामशिलार्चनम्।
स्मरणं वासुदेवस्य कर्तव्यं पापभीरुणा॥३९॥

एतादृशं कार्तिकं च अकृतेनैव यो नयेत्।
पूर्वं कृतस्य पुण्यस्य क्षयमाप्नोत्यसंशयम्॥४०॥

नारद उवाच

अशक्तेन कथं कार्यं कार्तिकव्रतमुत्तमम्।
येन तत्फलमाप्नोति तन्मे वद पितामह॥४१॥

ब्रह्मोवाच

अशक्तस्तु यदा मर्त्यस्तदैवं व्रतमाचरेत्।
अन्यस्मै द्रविणं दत्त्वा कारयेत्कार्तिकव्रतम्॥४२॥

तस्मात्पुण्यं प्रगृहीत दानसङ्कल्पपूर्वकम्।
द्रव्यदानेऽप्यशक्तश्चेद्यदा देवर्षिसत्तम॥४३॥

तदा तेन प्रकर्तव्यं पानं तीर्थजलस्य च।
तत्राप्यशक्तो यो मर्त्यस्तेन नित्यं हरेर्मुदा॥४४॥

स्मरणं च प्रकर्तव्यं नाम्ना नियमपूर्वकम्।
अखण्डितं तदा तेन कार्तिकव्रतजं फलम्॥४५॥

विष्णोः शिवस्य वा कुर्यादालये हरिजागरम्।
शिवविष्णवोर्गृहाभावे सर्वदेवालयेष्वपि॥४६॥

दुर्गाटव्यां स्थितो वाऽथ यदि वाऽऽपद्रतो भवेत्।
कुर्यादश्वत्थमूले तु तुलसीनां वनेष्वपि॥४७॥

विष्णुनामप्रबन्धानां गायनं विष्णुसन्निधौ।
गोसहस्रप्रदानस्य फलमाप्नोति मानवः॥४८॥

वाद्यकृत्पुरुषश्चापि वाजपेयफलं लभेत्।
सर्वतीर्थावगाहोत्थं नर्तकः फलमाप्नुयात्॥४९॥

सर्वमेतल्लभेत्पुण्यमेतेषां द्रव्यदः पुमान्।
श्रवणादर्शनाद्वापि षडंशं फलमाप्नुयात्॥५०॥

आपद्गतो यदाप्यम्भो न लभेत्कुत्रचिन्नरः।
व्याधितो वाथवा कुर्याद्विष्णोर्नाम्नाऽपि मार्जनम्॥५१॥

उद्यापनविधिं कर्तुमशक्तो यो व्रतस्थितः।
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्व्रतसम्पूर्तिहेतवे ॥५२॥

अशक्तो दीपदानाय परदीपं प्रबोधयेत्।
तस्य वा रक्षणं कुर्याद्वातादिभ्यः प्रयत्नतः॥५३॥

श्रीविष्णोः पूजनाभावे तुलसीधात्रिपूजनम्।
सर्वाभावे व्रती कुर्याद्ब्राह्मणानां गवामपि।
तस्याप्यभावे मनसि विष्णोर्नामानुकीर्तनम्॥५४॥

नारद उवाच

ब्रह्मन्ब्रूहि विशेषेण धर्मान्कार्तिकसम्भवान्॥५५॥

आदितः श्लोकाः — ५५

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
कार्तिकव्रतप्रशंसावर्णनं
नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥



॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

अथ कार्तिकमासस्य धर्मान्वक्ष्यामि नारद।
सम्प्राप्तं कार्तिकं दृष्ट्वा परान्नं यस्तु वर्जयेत्॥१॥

स तु मोक्षमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।
सर्वेषामेव धर्माणां गुरुपूजा परा मता।
गुरुशुश्रूषया सर्वं प्राप्नोति ऋषिसत्तम॥२॥

गुरौ तुष्टे च तुष्टाः स्युर्देवाः सर्वे सवासवा।
गुरौ रुष्टे च रुष्टाः स्युर्देवाः सर्वे सवासवाः॥३॥

कार्तिकं मासि सम्प्राप्ते कृत्वा कर्माणि भूरिशः।
अकृत्वा गुरुशुश्रूषां नरकानेव विन्दति॥४॥

यत्किञ्चिद्वा समादिष्टो गुरुणा तत्समाचरेत्॥५॥

आज्ञप्तो गुरुणा विप्र न तद्वाक्यं तु लङ्घयेत्।
यदि दुःखादिकं प्राप्तं गुरुं तु शरणं ब्रजेत्॥६॥

मातृत्वे च पितृत्वे च गुरुमेव स्मरेद्बुधः।
गुरौ न प्राप्यते यत्तन्नान्यत्रापि हि लभ्यते॥७॥

गुरुप्रसादात्सर्वं तु प्राप्नोत्येव न संशयः।
मेधावी कपिलश्चैव सुमतिश्च महातपाः।
गौतमस्य गुरोः सम्यक्सेवयाऽमरतां गताः॥८॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कार्तिके विष्णुतत्परः।
गुरुसेवां प्रकुर्वीत ततो मोक्षमवाप्नुयात्॥९॥

नरेभ्यो वैष्णवं धर्मं यो ददाति द्विजोत्तमः।
ससागरमहीदाने तत्पुण्यं लभते हि सः॥१०॥

तिलधेनुं हिरण्यं च रजतं भूमिवाससी।
गोप्रदानानि दास्यन्ति सर्वभावेन सुव्रत॥११॥

सर्वेषामेव दानानां कन्यादानं विशिष्यते।
सहस्रमेव धेनूनां शतं चानडुहां समम्॥१२॥

दशानडुत्समं यानं दशयानसमो हयः।
हयदान सहस्रेभ्यो गजदानं विशिष्यते॥१३॥

गजदानसहस्राणां स्वर्णदानं च तत्समम्।
स्वर्णदानसहस्राणां विद्यादानं च तत्समम्॥१४॥

विद्यादानात्कोटिगुणं भूमिदानं विशिष्यते।
भूमिदानसहस्रेण गोप्रदानं विशिष्यते॥१५॥

गोप्रदानसहस्रेभ्यो ह्यन्नदानं विशिष्यते।
अन्नाधारमिदं प्रोक्तं तस्माद्देयं तु कार्तिके॥१६॥

परान्नवर्जनादेव लभेच्चान्द्रायणं फलम्।
दिनेदिनेऽतिकृच्छ्रस्य फलं प्राप्नोति मानवः॥१७॥

कार्तिके वर्जयेन्मांसं सन्धानं च विशेषतः।
राक्षसीं योनिमाप्नोति सकृन्मांसस्य भक्षणात्॥१८॥

प्रवृत्तानां तु भक्ष्याणां कार्तिके नियमे कृते।
अवश्यं विष्णुरूपत्वं प्राप्यते मोक्षदं पदम्॥१९॥

ब्राह्मणेभ्यो महीं दत्त्वा ग्रहणे सूर्यचन्द्रयोः।
यत्फलं लभते वत्स तत्फलं भूमिशायिनः॥२०॥

भोजनं द्विजदम्पत्योः पूजनं च विलेपनैः।
कम्बलानि च रत्नानि वासांसि विविधानि च॥२१॥

तूलिकाश्च प्रदातव्याः प्रच्छादनपटैः सह।
उपानहावातपत्रं कार्तिके देहि सुव्रत॥२२॥

कार्तिके क्षितिशायी च हन्यात्पापं युगार्जितम्।
जागरं कार्तिके मासि यः करोत्यरुणोदये॥२३॥

दामोदराग्रे देवर्षे गोसहस्रफलं लभेत्।
नदीस्नानं कथा विष्णोर्वैष्णवानां च दर्शनम्॥२४॥

न भवेत्कार्तिके यस्य हरेत्पुण्यं दशाब्धिकम्।
पुष्करं यः स्मरेत्प्राज्ञः कर्मणा मनसा गिरा॥२५॥

कार्तिके मुनिशार्दूल लक्षकोटिगुणं भवेत्।
प्रयागो माघमासे तु पुष्करं कार्तिके तथा॥२६॥

अवन्ती माधवे मासि हन्यात्पापं युगार्जितम्।
धन्यास्ते मानवा लोके कलिकाले विशेषतः॥२७॥

ये कुर्वन्ति नरा नित्यं प्रीत्यर्थं हरिपूजनम्।
तारितास्तैश्च पितरो नरकाच्च न संशयः॥२८॥
क्षीरादिस्रपनं विष्णोः क्रियते पितृकारणात्।
कल्पकोटिं दिवं प्राप्य वसन्ति त्रिदिवैः सह॥२९॥

कार्तिके नार्चितो यैस्तु कृष्णस्तु कमलेक्षणः।
जन्मकोटिषु विप्रेन्द्र न तेषां कमला गृहे॥३०॥

अहो मुष्टा विनष्टास्ते पतिताः कलिकन्दरे।
यैर्नार्चितो हरिर्भक्त्या कमलैरसितैः सितैः॥३१॥

पद्मेनैकेन देवेशं योऽर्चयेत्कमलापतिम्।
वर्षायुतसहस्रस्य पापस्य कुरुते क्षयम्।
पुष्करार्चनयोगेन श्वेतो मुक्तिमवाप ह॥३२॥

अपराधसहस्राणि तथा सप्तशतानि च।
पद्मेनैकेन देवेशः क्षमते प्रणतोऽर्चितः॥३३॥

तुलसीपत्रलक्षेण कार्तिके योऽर्चयेद्धरिम्।
पत्रेपत्रे मुनिश्रेष्ठ मौक्तिकं लभते फलम्॥३४॥

मुखे शिरसि देहे तु कृष्णोत्तीर्णां तु यो वहेत्।
तुलसी कृष्णनिर्माल्यैर्यो गात्रं परिमार्जयेत्।
सर्वरोगैस्तथा पापैर्मुक्तो भवति मानवः॥३५॥

शङ्खोदकं हरेर्भक्तिर्निर्माल्यं पादयोर्जलम्।
चन्दनं धूपशेषं च ब्रह्महत्यापहारकम्॥३६॥

कार्तिके मासि विप्रेन्द्र प्रातःस्नानपरायणः।
विप्रेभ्यश्चान्नदानं तु कुर्याच्छ्रुत्यनुसारतः॥३७॥

सर्वेषामेव दानानामन्नदानं विशिष्यते।
अन्नेन जायते लोको ह्यन्नेनैवाभिवर्द्धते॥३८॥

अन्नं हि सर्वभूतानां प्राणभूतं परं विदुः।
अन्नदः सर्वदो लोके सर्वयज्ञादिकृद्भवेत्॥३९॥

तीर्थस्नानेन किं तस्य देवयात्रादिनाऽपि किम्।
सर्वं सम्पाद्यते ब्रह्मन्नन्नदानान्न संशयः॥४०॥

सत्यकेतुर्द्विजः पूर्वं चान्नदानेन केवलम्।
सर्वपुण्यफलं प्राप्य मोक्षं प्राप सुदुर्लभम्॥४१॥

कार्तिकव्रतनिष्ठस्तु कुर्याद्गोदानमुत्तमम्।
व्रतं सम्पूर्णतां याति गोदानेन न संशयः॥४२॥

गोदानात्परमं दानं संसारार्णवतारकम्।
नास्ति नारद लोकेऽस्मिन्सुशर्मा ब्राह्मणो यथा॥४३॥

कार्तिके मासि विप्रेन्द्र दत्त्वा दानान्यनेकशः।
हरिस्मृतिविहीनश्चेन्न पुनन्ति कदाचन॥४४॥

नामस्मरणमाहात्म्यं मया वक्तुं न शक्यते।
पुष्करेण यथा पूर्वं नारकीयाश्च मोचिताः॥४५॥

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे
गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथाङ्गपाणे
गोविन्द दामोदर माधवेति॥४६॥

श्लोकार्द्धं श्लोकपादं वा नित्यं भागवतोद्भवम्।
कार्तिके यः पठन्मर्त्यः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः॥४७॥

यैर्न श्रुतं भागवतं पुराणं
नाराधितो वै पुरुषः पुराणः।
हुतं मुखे नैव धरामराणां
तेषां वृथा जन्म गतं नराणाम्॥४८॥

कार्तिके मासि विप्रेन्द्र यस्तु गीतां पठेन्नरः।
तस्य पुण्यफलं वक्तुं मम शक्तिर्न विद्यते॥४९॥

गीतायास्तु समं शास्त्रं न भूतं न भविष्यति।
सर्वपापहरा नित्यं गीतैका मोक्षदायिनी॥५०॥

एकेनाध्यायपाठेन सर्वपापकृतोऽपि च।
मुच्यन्ते नरकाद्धोराज्जडो वै ब्राह्मणो यथा॥५१॥

शालिग्रामशिलादानं यः कुर्यात्कार्तिके मुने।
तस्य पुण्यस्य विश्रान्तिर्विष्णुना न निरूपिता॥५२॥

शालिग्रामं समभ्यर्च्य श्रोत्रियाय महामुने।
दानं यः कुरुते विप्र तस्य पुण्यफलं शृणु॥५३॥

सप्तसागरपर्यन्तं भूदानाद्यत्फलं भवेत्।
शालिग्रामशिलादानात्तत्फलं समवाप्नुयात्॥५४॥

शालिग्रामशिलादानात्कार्तिके ब्राह्मणी यथा।
विधवा सधवा जाता विवाहे पञ्चमेऽहनि॥५५॥

तस्मात्तु कार्तिके मासि स्नानदानपुरःसरम्।
शालिग्रामशिलादानं कर्तव्यं नात्र संशयः॥५६॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
कार्तिकव्रतधर्मनिरूपणं
नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥



॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

भूयः शृणुष्व विप्रेन्द्र कार्तिकस्य च वैभवम्।
दशमीदिनमारभ्य दशम्यां तु समापयेत् ॥ १ ॥
पौर्णमासीं समारभ्य पौर्णमास्यां समापयेत्।
आश्विनस्य हरिदिनीं समारभ्य तु भक्तिमान् ॥ २ ॥
दामोदरं नमस्कृत्य कुर्यात्सङ्कल्पमादितः।
दामोदर नमस्तेऽस्तु सर्वपापविनाशन ॥ ३ ॥
कार्तिकस्य व्रतं कर्तुमनुज्ञां दातुमर्हसि।
निर्विघ्नं कुरु देवेश आमासं पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥

इति सम्प्रार्थ्य विधिना कार्तिकव्रतमाचरेत्।
अनूरुं वदता प्रोक्तं भास्करेण श्रुतं मया।
कलौ च स्वर्गगमनकारणं श्रूयतां हि तत् ॥ ५ ॥

सूर्य उवाच

द्वादशानां तु मासानां मार्गशीर्षोऽतिपुण्यदः ॥ ६ ॥
तस्मात्पुण्यफलः प्रोक्तो वैशाखो नर्मदातटे।
ततो लक्षगुणः प्रोक्तः प्रयागे माघमासकः ॥ ७ ॥

तस्मान्महाफलः प्रोक्तः कार्तिको जलमात्रके।
एकतः सर्वदानानि व्रतानि नियमास्तथा॥८॥

एकतः कार्तिकस्नानं ब्रह्मणा तुलया धृतम्।
सन्ततिश्चैव सम्पत्तिः कलौ येषां प्रजायते॥९॥
अवश्यं तैः कृतं विद्धि कार्तिकस्नानमादरात्।
स्नानं च दीपदानं च तुलसीवनपालनम्॥१०॥

भूमिशय्या ब्रह्मचर्य्यं तथा द्विदलवर्जनम्।
विष्णुसङ्कीर्तनं सत्यं पुराणश्रवणं तथा॥११॥
कार्तिके मासि कुर्वन्ति जीवन्मुक्तास्त एव हि।
न कार्तिकसमं धर्म्यमर्थ्यं नो कार्तिकात्परम्॥१२॥
न कार्तिकसमं काम्यं मोक्षदानं न कार्तिकात्।
युधिष्ठिरेण धर्मार्थमर्थार्थं च ध्रुवेण च॥१३॥
श्रीकृष्णेन तु कामार्थं मोक्षार्थं नारदेन च।
कृतमेतद्व्रतं तस्माच्छ्रेष्ठं कृष्णप्रियं च हि॥१४॥

अरुण उवाच

ब्रूहि भास्कर सर्वात्मन् कदाऽऽरभ्य व्रतं कृतम्।
सफलं जायते सम्यक् का च पूज्याऽत्र देवता॥१५॥

भास्कर उवाच

अहं विष्णुश्च शर्वश्च देवी विघ्नेश्वरस्तथा।
एकोऽहं पञ्चधा जातो नाट्ये सूत्रधरो यथा॥१६॥
अस्माकं सर्व एवैते भेदा विद्धि खगेश्वर।
तस्मात्सौरैश्च गाणेशैः शाक्तैः शैवैश्च वैष्णवैः॥१७॥
कर्तव्यं कार्तिकस्नानं सर्वपापापनुत्तये।
सूर्यस्य प्रीतये कार्यं तुलासंस्थे दिवाकरे॥१८॥

इषपूर्णां समारभ्य यावत्कार्तिकपूर्णमा।
 तावत्स्नानं विधातव्यं शिवसन्तुष्टये नरैः॥१९॥
 देवीपक्षं समारभ्य महारात्रिचतुर्दशी।
 तावत्स्नानं विधातव्यं देवी सम्प्रीयतामिति॥२०॥
 गणपक्षं समारभ्य कृष्णा या कार्तिके भवेत्।
 चतुर्थी तावदेव स्यात्स्नानं गणपतुष्टये॥२१॥
 एकादशीं समारभ्य आश्विनस्यासितेतराम्।
 एकादश्यां कार्तिकस्य शुक्लायां परिपूर्यते।
 कृतं येन तु तस्य स्यात्परितुष्टो जनार्दनः॥२२॥
 न कार्तिकसमो मासो न काशीसदृशी पुरी।
 न प्रयागसमं तीर्थं न देवः केशवात्परः॥२३॥
 प्रसङ्गाद्वा बलात्कारैर्ज्ञात्वाज्ञात्वा कृतं भवेत्।
 स्नानं कार्तिकमासस्य न पश्येद्यमयातनाम्॥२४॥
 स्नानार्थं चेन्न सामर्थ्यं दत्त्वान्यस्मै धनादिकम्।
 स्नातस्य तस्य हस्तस्य ग्रहणा पुण्यभाग्भवेत्॥२५॥
 अथवा कार्तिकस्नानं ये कुर्वन्ति द्विजातयः।
 तेषां प्रावरणं दत्त्वा स्नानजं फलमाप्नुयात्॥२६॥
 राधादामोदरः पूज्यः कार्तिके तु विशेषतः॥२७॥
 स्वर्णस्य वाथ रौप्यस्याप्यभावे शुल्बजामपि।
 मृज्जां वा चित्रजातां वाऽथ वा पिष्टविचित्रिताम्॥२८॥
 दामोदरस्य राधायास्तुलस्यधोऽर्चयन्ति ये।
 मूर्तिं ते तु नरा ज्ञेया जीवन्मुक्ता न संशयः॥२९॥
 अपि पापसहस्राढ्यः कार्तिकस्नानतो नरः।
 मुक्तोऽवश्यं स भवति नात्र कार्या विचारणा॥३०॥

तुलस्यभावे कर्तव्या पूजा धात्रीतले खग।
मुख्यपूजाविधानं तु कर्तव्यं सूर्यमण्डले॥३१॥

अप्रत्यक्षाः सर्वदेवाः प्रत्यक्षो भगवानयम्।
सर्वे देवाः कालवशाः कालकालो दिवाकरः॥३२॥

एतदाराधनेऽशक्तः प्रतिमां पूजयेन्नरः।
प्रतिमातोऽधिकं पुण्यं ब्राह्मणस्य तु पूजने॥३३॥

दरिद्रो दानपात्रं स्याद्विद्यावांस्तु विशेषतः।
विप्राभावे पूजनीया गावः कृष्णा मनोहराः॥३४॥

विष्णोर्मूर्तिर्जङ्गमतः स्थावरा तु प्रशस्यते।
शूद्रस्थापितमूर्तीनां नमस्कारं करोति यः।
पितृभिर्निरयं याति दशपूर्वेर्दशापरैः॥३५॥

शूद्रार्चितस्य संस्पर्शाद्दहेदासप्तमं कुलम्॥३६॥

तस्माद्विचार्य विप्रैर्या स्थापिता तां समर्चयेत्।
ततोऽपि या देवताभिः कृता सा भुक्तिमुक्तिदा॥३७॥

मूर्त्यभावे पूजनीयोऽश्वत्थो वाऽथ वटोऽथ वा।
अश्वत्थरूपी विष्णुः स्याद्वटरूपी शिवो यतः॥३८॥

कार्तिके तुलसीशाकं ताम्बूलं वा नराधमः।
अज्ञानाज्ज्ञानतो वाऽपि भुञ्जानो निरयं व्रजेत्॥३९॥

शालिग्रामशिलाचक्रे नित्यं सन्निहितो हरिः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शालिग्रामं प्रपूजयेत्॥४०॥

रुद्रशापवशाद्भावो विष्ठाभक्षणतत्पराः।
तथाऽपि ताः पूजनीया लोकद्वयफलप्रदाः॥४१॥

ब्रह्मांशकसमुद्भूते पालाशे यस्तु भोजनम्।
कुर्यात्कार्तिकमासेऽसौ विष्णुलोकं प्रयास्यति॥४२॥

अश्वत्थरूपी भगवान्वटरूपी सदाशिवः।
 तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कार्तिकेऽश्वत्थमर्चयेत्॥४३॥
 या नारी कार्तिके मासि लक्षं कुर्यात्प्रदक्षिणाः।
 राधादामोदरं पूज्य मन्दवारे च तत्तले॥४४॥
 दम्पती भोजयेद्राधादामोदरस्वरूपिणौ।
 भोजयित्वा सपत्नीकान्यश्चाद्भुञ्जीत वाग्यतः॥४५॥
 वन्ध्याऽपि लभते पुत्रमितरासां तु का कथा।
 सदा सन्निहितो विष्णुर्द्विपत्सु ब्राह्मणे यथा॥४६॥
 बोधिद्रुमे पादपेषु शालिग्रामे शिलासु च।
 तस्मादश्वत्थमूले वै कर्तव्यं विष्णुपूजनम्॥४७॥
 अश्वत्थपूजा स्पर्शेन कर्तव्या शनिवासरे।
 अन्यवारेऽश्वत्थसङ्गाद्वरिद्रो जायते नरः॥४८॥
 स्नानं जागरणं दीपं तुलसीवनपालनम्।
 कार्तिके मासि कुर्वन्ति ते नरा विष्णुमूर्तयः॥४९॥
 सम्मार्जनं विष्णुगृहे स्वस्तिकादिनिवेदनम्।
 विष्णोः पूजां च ये कुर्युर्जीवन्मुक्तास्तु ते नराः॥५०॥
 स्नानकालं प्रवक्ष्यामि तीर्थादिषु च यत्फलम्।
 स्नानधर्माश्च ये केचित्तान्सर्वान्मे निबोधत॥५१॥

आदितः श्लोकाः — १६२

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 कार्तिकवैभववर्णनं
 नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥



॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

नाडीद्वयावशिष्टायां रात्र्यां गच्छेज्जलाशयम्।
तुलसीमृत्तिकायुक्तः सवस्त्रकलशो मुने॥१॥

आगत्य तोयनिकटे तीरे संस्थाप्य पात्रकम्।
पादप्रक्षालनं कृत्वा देशकालादि चोच्चरेत्॥२॥

स्मरेद्गङ्गादिका नद्यो विष्णुशर्वादिवेवताः।
नाभिमात्रे जले स्थित्वा मन्त्रमेतमुदीरयेत्॥३॥

कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातःस्नानं जनार्दन।
प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह॥४॥

नित्ये नैमित्तिके कृत्वा कार्तिके पापनाशन।
स्नानं चार्घ्यं प्रदास्यामि निर्विघ्नं कुरु केशव॥५॥

तीर्थादिवेवताभ्यश्च क्रमादर्घ्यादि दापयेत्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं राधया सहितो हरे॥६॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते॥७॥

व्रतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं दनुजेन्द्रनिषूदन॥८॥

किरणा धूतपापा च पुण्यतोया सरस्वती।
गङ्गा च यमुना चैव पञ्चनद्यः पुनन्तु माम्॥९॥

अन्यासां च नदीनां च दद्यादर्घ्यं यथाविधि।
जाह्नवीस्मरणं कुर्यात्सर्वतीर्थेषु मानवः॥१०॥

नान्यत्तीर्थं तु जाह्नव्यां स्मरणीयं कदाचन।
 एतान्मन्त्रान्समुच्चार्य मलस्नानं समाचरेत्॥११॥
 मृत्स्नानं च पितृस्नानं गुरुस्नानं ततः परम्।
 ततस्तु पावमानीभिरभिषिञ्चेत्स्वमस्तकम्॥१२॥
 अघमर्षणकं कृत्वा स्नानाङ्गं तर्पणं तथा।
 ततः पुरुषसूक्तेन जलं शिरसि सिञ्चयेत्॥१३॥
 ततस्तु बहिरागत्य तीर्थं शिरसि निक्षिपेत्।
 तीर्थं पीत्वा त्रिवारं तु तुलसीं गृह्य पाणिना॥१४॥
 ततो जलाद्विनिष्क्रम्य चाञ्चलं पीडयेद्बहिः।
 यन्मया दूषितं तोयं शारीरमलसञ्चयैः॥१५॥
 तद्दोषपरिहारार्थं यक्ष्मणं तर्पयाम्यहम्।
 वस्त्रनिष्पीडनं कृत्वा कुर्याच्च तिलकादिकम्॥१६॥

सूत उवाच

शृणुध्वमृषयः सर्वे कार्तिकस्नानजं फलम्।
 अरुणं प्रति सूर्येण यदुक्तं च सविस्तरम्॥१७॥

अरुण उवाच

कस्मिंस्तीर्थे विशेषेण फलं कार्तिकसम्भवम्।
 क्षेत्रे वा एतदाऽऽख्याहि भगवन्स्नानयोगतः॥१८॥

सूर्य उवाच

यत्र कुत्रापि कर्तव्यं जले स्नानं तु कार्तिकम्।
 उष्णोदकेन कर्तव्यं स्नानं कुत्रापि कार्तिके॥१९॥
 ततो दशगुणं पुण्यं शीततोयनिमज्जनात्।
 ततः शतगुणं पुण्यं बहिः कूपोदके कृतम्॥२०॥

कूपात्सहस्रगुणितं फलं वापीनिषेकतः।
ततोऽयुतगुणं पुण्यं तडागस्नानतो भवेत्॥२१॥

ततो दशगुणं पुण्यं निझरिषु निमज्जनात्।
ततोऽधिकतरं पुण्यं नदीस्नानस्य कार्तिके॥२२॥

नद्या दशगुणं प्रोक्तं तीर्थस्नानं खगोत्तम।
ततो दशगुणं पुण्यं नद्योर्यत्र च सङ्गमः॥२३॥

नदीत्रयस्य संयोगे पुण्यस्यान्तो न विद्यते।
सिन्धुः कृष्णा च वेणी च यमुना च सरस्वती॥२४॥

गोदावरी विपाशा च नर्मदा तमसा मही।
कावेरी शरयूः शिप्रा तथा चर्मण्वती नदी॥२५॥

वितस्ता वेदिका शोणो वेत्रवत्यपराजिता।
गण्डकी गोमती पूर्णा ब्रह्मपुत्रा सरोवरम्॥२६॥

वाग्मती च शतद्रुश्च तथा बदरिकाश्रमः।
दुर्लभाः कार्तिके त्वेते तीर्थान्यथ निबोध मे॥२७॥

सर्वेभ्यश्च स्थलेभ्यश्च आर्यावर्तं तु पुण्यदम्।
कोल्हापुरी ततः श्रेष्ठा ततः काञ्चीद्वयं स्मृतम्॥२८॥

अनन्तसेनवसतिर्वराहक्षेत्रमेव च।
चक्रक्षेत्रं ततः पुण्यं मुक्तिक्षेत्रं ततोऽधिकम्॥२९॥

अवन्तिका ततः श्रेष्ठा ततो बदरिकाश्रमः।
अयोध्या च ततः श्रेष्ठा गङ्गाद्वारं ततोऽधिकम्॥३०॥

ततः कनखलं तीर्थं ततो मधुपुरी वरा।
एकोऽपि कार्तिको मासो मथुरायमुनाजले॥३१॥

यैः स्नातस्ते तु वैकुण्ठे बहुकालं वसन्ति हि।
राधादामोदरस्तत्र स्वयं स्नातस्तु कार्तिके॥३२॥

अतो मधुपुरी श्रेष्ठा यमुना च विशेषतः॥३३॥

द्वारावती ततः श्रेष्ठा प्रत्यहं स्नाति केशवः।
षोडशस्त्रीसहस्रेण सार्द्धं यादवसंयुतः॥३४॥

द्वारकायां मृत्तिकायास्तिलको येन मस्तके।
धार्यतेऽसौ नरो ज्ञेयो जीवन्मुक्तो न संशयः।
द्वारकास्नानमाहात्म्यं न वक्तुं शक्यते मया॥३५॥

गोविन्दार्पितचित्तानां जायते पुण्यभास्करा।
ततो भागीरथी श्रेष्ठा यत्र विन्ध्येन सङ्गता॥३६॥

तस्माद्दशगुणं पुण्यं तीर्थराजेऽत्र जायते॥३७॥

कलौ दशसहस्रान्ते विष्णुस्त्यक्ष्यति मेदिनीम्।
तदर्द्धं जाह्नवीतोयं तदर्द्धं देवतागणाः॥३८॥

यावत्तिष्ठति गङ्गाऽत्र तावत्तीर्थानि सन्ति च।
स्वस्वस्थाने नृणां पापं तावदेव हरन्ति च॥३९॥

यदैव गङ्गा नष्टा स्यात्को वा तत्पापमाहरेत्।
विचार्यैवं सुतीर्थानि गमिष्यन्ति धरातले॥४०॥

तस्मान्मुनीश्वराः सर्वे यावत्तिष्ठति जाह्नवी।
तावच्च क्रियतां धर्मस्ततो भूमौ निलीयताम्॥४१॥

समाधिं गृह्य सुदृढां यावत्कृतयुगं भवेत्।
अन्यथा कलिकालेन भ्रंशनीयो भवेत्सुधीः॥४२॥

ततः श्रेष्ठतरा काशी यस्या नाशो न जायते।
यदाश्रयेण गङ्गापि सर्वपापं व्यपोहति॥४३॥

काशिकाया नैव नाशो ब्रह्मण्यपि मृते सति।
यद्दर्शनार्थं गङ्गाऽपि जाता चोत्तरवाहिनी।
तस्यां पञ्चनदं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्॥४४॥

आगते कार्तिके मासि रौरवं नरकं गताः।
आक्रोशन्ते तु पितरो वंशेऽस्माकं भविष्यति॥४५॥

कश्चिद्भाग्यवतां श्रेष्ठो गत्वा पञ्चनदे शुभे।
अस्माकं तर्पणं कुर्यान्नरकार्णवतारकम्॥४६॥

तीर्थराजादितीर्थानि प्राप्ते कार्तिकमासके।
स्नानार्थं पञ्चगङ्गं तु समायान्ति न संशयः॥४७॥

कृत्वा तु लक्षपापानि स्नात्वा पञ्चनदे शुभे।
बिन्दुमाधवमभ्यर्च्य विलयं यान्ति तत्क्षणात्॥४८॥

यैः स्नातं कार्तिके मासि सकृत्पञ्चनदे शुभे।
सर्वतीर्थकृतास्नानात्फलं कोटिगुणं भवेत्॥४९॥

ब्रह्मोवाच

कार्तिके मासि कावेर्या यः स्नानं कर्तुमिच्छति।
तावता वै विमुक्ताऽघो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्॥५०॥

कावेर्याश्चैव माहात्म्यं को वदेत्परमुत्तमम्।
अत्र ते वर्णयिष्यामि इतिहासं पुरातनम्॥५१॥

कावेर्या विषये ब्रह्मन्सावधानमनाः शृणु।
गौतम्या उत्तरे तीरे विष्णुपादाब्जसम्भवा॥५२॥

गङ्गा त्रैलोक्यपापघ्नी वर्तते लोकपूजिता।
सा गङ्गा चिन्तयामास कदाचित्पापशङ्किता॥५३॥

सर्वलोकाः समागत्य मयि पापं त्यजन्ति हि।
तत्पापं तु कथं गच्छेदिति चिन्तापरा तदा॥५४॥

प्रष्टुं जगाम कैलासं गिरिजावल्लभं भवम्।
तत्र दृष्ट्वा महारुद्रं प्रोवाच हरिपादजा॥५५॥

गङ्गोवाच

महारुद्र नमस्तेऽस्तु त्वां प्रष्टुमहमागता।
सर्वे लोकाः समागत्य मयि पापं त्यजन्ति हि॥५६॥

तत्पापं तु मया सोढुं न शक्यं पार्वतीपते।
येनोपायेन तत्पापं नाऽऽगच्छेन्मम तद्वद॥५७॥

एवं गङ्गावचः श्रुत्वा प्रत्याह परमेश्वरः।

रुद्र उवाच

पापनिर्हरणायादौ पद्मनाभाङ्घ्रिपङ्कजात्॥५८॥

प्रादुर्भूताऽसि त्वं देवि किमर्थं तप्यते त्वया।
पापप्रहाराऽऽधिपत्यं कल्पितं तव विष्णुना॥५९॥

तथाऽपि पापनिर्हार उपायं ते ब्रवीम्यहम्।
कवेश्च तनया देवी कावेरी सरितां वरा॥६०॥

सर्वोत्कृष्टा च सर्वेषां हरेर्बलवशात्तु सा।
सर्वपापप्रहरणे सामर्थ्यं तत्र वर्तते॥६१॥

कार्तिके मासि कावेर्यां यः स्नानं कुरुते नरः।
स तु पापविनिर्मुक्तो याति विष्णोः परं पदम्॥६२॥

तस्मात्तां गच्छ देवि त्वं ततः पापाद्विमोक्ष्यसे।
इत्युक्ता सा तदागच्छत्कावेरीं पापहारिणीम्॥६३॥

तञ्जलस्पर्शमात्रेण कार्तिके विष्णुपादजा।
 निर्धूतपातका गङ्गा जगाम स्वनिकेतनम्॥६४॥
 कार्तिके प्रतिवर्षं तु गङ्गा त्रैलोक्यपावनीम्।
 स्नातुं भक्त्या समायाति कावेरीं पापहारिणीम्॥६५॥
 तञ्जलस्पर्शमात्रेण कार्तिके विष्णुपादजा।
 निर्धूतपातका गङ्गा जगाम स्वनिकेतनम्॥६६॥
 तस्माच्छस्तं तुलास्नानं कावेर्यां शस्यते बुधैः।
 यः कावेर्यां तुलास्नानं भक्त्या तु कुरुते मुने॥६७॥
 विमुक्तदुरितः सद्यस्ततो याति परां गतिम्।
 तस्मात्स्नानं तु कावेर्यां कार्तिके मासि शस्यते॥६८॥
 इतिहासमिमं श्रुत्वा कार्तिकव्रततत्परः।
 स कावेरी स्नानफलं प्राप्नोति च परां गतिम्॥६९॥
 रात्रिशेषे भवेत्स्नानमुत्तमं विष्णुतुष्टिकृतं।
 सूर्योदये मध्यमं स्याद्वावन्नाऽऽस्ता तु कृत्तिका॥७०॥
 तावदेव भवेत्स्नानमन्यथा तन्न कार्तिकम्।
 स्नानं स्त्रीभिर्विधातव्यं गृहीत्वाऽऽज्ञां धवस्य च॥७१॥
 अपृष्ट्वा यत्कृतं धर्म्यं भर्तारं तत्क्षयं नयेत्।
 स्त्रीणां नास्त्यपरो धर्मो भर्तारं प्रोज्झ्य कश्चन॥७२॥
 कुर्यात्सहस्रपापानि भर्त्राऽऽज्ञां या समाचरेत्।
 सैषा धर्मवती लोके न जायेत व्रतादिना॥७३॥
 दरिद्रः पतितो मूर्खो दीनोऽपि यदि चेत्पतिः।
 तादृशः शरणं स्त्रीणां तत्त्यागान्निरयं व्रजेत्॥७४॥
 कलौ वत्स मनुष्याणां शैथिल्यं स्नानकर्मणि।
 तथापि कथयिष्यामि स्नानं कार्तिकमाघयोः॥७५॥

यस्य हस्तौ च पादौ च वाङ्मनश्च सुसंयतम्।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलभाङ्गरः॥७६॥

अश्रद्धधानः पापात्मा नास्तिकश्छिन्नमानसः।
हेतुवादी च पञ्चैते न तीर्थफलभागिनः॥७७॥

प्रातरुत्थाय यो विप्रस्तीर्थस्नायी सदा भवेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः परं ब्रह्माऽधिगच्छति॥७८॥

स्नानं चतुर्विधं प्रोक्तं स्नानविद्धिर्मनीषिभिः।
वायव्यं वारुणं दिव्यं ब्राह्मं चेति तथा स्मृतम्॥७९॥

वायव्यं गोरजःस्नानं वारुणं सागरादिषु।
ब्राह्मं ब्राह्मणमत्रोक्तं दिव्यं मेघाम्बु भास्करम्॥८०॥

स्नानानां चैव सर्वेषां विशिष्टं तत्र वारुणम्।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यो मन्त्रवत्स्नानमाचरेत्॥८१॥

तूष्णीमेव हि शूद्रस्य स्त्रीणां चैव तथा स्मृतम्।
बाला च तरुणी वृद्धा नरनारीनपुंसकाः॥८२॥

पापैः सर्वैः प्रमुच्यन्ते स्नानात्कार्तिकमाघयोः।
स्नाता वै कार्तिके लोकाः प्राप्नुवन्तीप्सितं फलम्॥८३॥

पुष्करे तीर्थवर्ये तु नन्दायाः सङ्गमे पुरा।
प्रभञ्जनश्च मुक्तोभूतदैव व्याघ्रजन्मतः॥८४॥

नन्दाया वचनेनैव कार्तिके सा परं ययौ।
एवं स्नानविधिः प्रोक्तः किं भूयः श्रोतुमिच्छसि॥८५॥

आदितः श्लोकाः — २४७

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

कार्तिकस्नानविधिनिरूपणं
नाम चतुर्थोऽध्यायः॥४॥



॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

कदा स्नानं प्रकर्तव्यं कथं स्थेयं दिनावधि।
आह्निकं तत्समाचक्ष्व विशेषेण पितामह॥१॥

ब्रह्मोवाच

रात्र्यां तुर्यां शशेषायामुत्तिष्ठेत्सर्वदा व्रती।
विष्णुं स्तुत्वा बहुस्तोत्रैर्दिनकार्यं विचारयेत्॥२॥

ग्रामनैर्ऋत्यदिग्भागे मलोत्सर्गं यथाविधि।
ब्रह्मसूत्रं दक्षकर्णे स्थाप्य तत्र उदङ्मुखः॥३॥

अन्तर्धाय तृणं भूमौ शिरः प्रावृत्य वाससा।
वक्त्रं नियम्य वस्त्रेणाऽसङ्गः सोदकभाजनः॥४॥

कुर्यान्मूत्रपुरीषं तु रात्रौ चेद्दक्षिणामुखः।
तत उत्थाय चाऽऽगच्छेत्समीपं कलशस्य हि॥५॥

गन्धलेपक्षयकरं मृत्तिकाशौचमाचरेत्।
एका लिङ्गे करे तिस्र उभयोर्मृद्वयं स्मृतम्॥६॥

मूत्रशौचे त्विदं ज्ञेयं विष्टाशौचमतः शृणु।
पञ्चापानेऽथवा सप्त दश वामकरे तथा॥७॥

उभयोः सप्त दातव्याः पादयोर्मृत्तिकात्रयम्।
एतच्छौचं गृहस्थस्य द्विगुणं ब्रह्मचारिणः॥८॥

वानप्रस्थस्य त्रिगुणं यतीनां च चतुर्गुणम्।
एतच्छौचं दिवा प्रोक्तं रात्रावर्द्धं समाचरेत्॥९॥

मार्गस्थस्य तदर्धं स्यात्स्त्रीशूद्राणां तदर्धकम्।
शौचकर्मविहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः॥१०॥

दन्तजिह्वाविशुद्धिं च ततः कुर्यादतन्द्रितः।
आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च॥११॥

ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते।
दन्तकाष्ठं तु गृहीयाद्वादशाङ्गुलसम्मितम्॥१२॥

क्षीरवृक्षस्य न ग्राह्यं कार्पासस्य तथैव च।
कण्टकस्य च वृक्षस्य दग्धवृक्षस्य चैव हि॥१३॥

सद्वासनं मृदुतरं दन्तधावनमादितः॥१४॥

उपवासे नवम्यां च षष्ठ्यां श्राद्धदिने रवौ।
ग्रहणे प्रतिपदशे न कुर्यादन्तधावनम्।
कुर्याद्वादशगण्डूषाननुक्ते दन्तधावने॥१५॥

दन्तान्विशोध्य विधिवन्मुखं सम्मार्ज्यं वारिणा।
ललाटे चोर्ध्वपुण्ड्रं तु धृत्वा चाचम्य वारिणा॥१६॥

देवालये नदीतीरे राजमार्गे विशेषतः।
दत्त्वा चाकाशदीपं तु तुलसीसन्निधावथ॥१७॥

गृहीत्वार्चनसामग्रीमिष्टदेवगृहं ब्रजेत्।
ततो गायेत नृत्येत पूजां कृत्वा तु बुद्धिमान्॥१८॥

पठित्वा विष्णुनामानि कुर्यान्नीराजनं हरेः।

नाडीद्वयावशिष्टायां रात्र्यां गच्छेज्जलाशयम्॥१९॥

तत्रोक्तविधिना स्नानं कुर्याद्वै कार्तिकव्रती।
वस्त्रनिष्पीडनं कृत्वा कुर्याच्च तिलकं तथा॥२०॥

ततः सन्ध्यामुपासीत स्वसूत्रोक्तेन वर्त्मना।
ततः कार्यो जपो देव्या यावदकोन्दयो भवेत्॥२१॥

एतत्प्रोक्तं रात्रिशेषकृत्यं दैनमथोच्यते।
यस्मिन्कृते कार्तिकोऽयं सकलः सफलो भवेत्॥२२॥

विष्णोः सहस्रनामाऽऽद्यं सन्ध्यान्ते च पठेत्ततः।
देवालये समागत्य पुनः पूजनमारभेत्॥२३॥

नृत्यगानादिकार्येषु प्रहरं दिवसं नयेत्।
ततः पुराणश्रवणं यामार्धं सम्यगाचरेत्॥२४॥

पौराणिकस्य पूजां तु तुलसीपूजनं तथा।
कृत्वा माध्याह्निकं कर्म भुञ्जीत द्विदलोज्झितम्॥२५॥

बलिदानं वैश्वदेवमतिथीनां समर्पणम्।
कृत्वा भुङ्क्ते तु यो मर्त्यः केवलं चाऽमृतं हि तत्॥२६॥

यथाशक्ति द्विजा भोज्याः प्रत्यहं वाऽथ पर्वणि।
हविष्यभोजनं कुर्यादामिषं परिवर्जयेत्॥२७॥

भक्षयेत्तुलसीं वक्रशुद्ध्यर्थं तीर्थवारिणा।
संसारव्यवहारेण दिनशेषं समापयेत्॥२८॥

सायङ्काले पुनर्गच्छेद्विष्णोर्देवालयं प्रति।
सन्ध्यां कृत्वा प्रयुञ्जीत तत्र दीपन्यथाबलम्॥२९॥

विष्णुं प्रणम्य हरये कृत्वा नीराजनं शुभम्।
स्तोत्रपाठादिकं कुर्वन्नाद्ययामे तु जागरम्॥३०॥

यामे तु प्रथमेऽतीते निद्रां कुर्याद्विचक्षणः।
ब्रह्मचर्यव्रतं कुर्याद्भार्यामीयादृतौ तथा॥३१॥

तथा कामयमानो वा भार्यां गच्छेन्न दोषभाक्।
एवं प्रतिदिनं कुर्यादामासं तु यथाविधि॥३२॥

एवं तु कार्तिके मासि यः कुर्यात्परमं व्रतम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तो याति विष्णोः सलोकताम्॥३३॥

रोगापहं पातकनाशकृत्परं
सद्बुद्धिदं पुत्रधनादिसाधकम्।
मुक्तेर्निदानं नहि कार्तिकव्रता-
द्विष्णुप्रियादन्यदिहाऽस्ति भूतले॥३४॥

आदितः श्लोकाः — २८१

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
नित्यकर्मकथनं
नाम पञ्चमोऽध्यायः॥५॥



॥ अथ षष्ठोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

शृणु नारद वक्ष्यामि कार्तिकस्य व्रतं महत्।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुक्तो मोक्षमवाप्स्यसि॥१॥

कार्तिके मासि सम्प्राप्ते निषिद्धानि च वर्जयेत्।
तैलाभ्यङ्गं परान्नं च तथा वै तैलभोजनम्॥२॥

फलानि बहुबीजानि धान्यानि द्विदलान्यपि।
वर्जयेत्कार्तिके मासि नात्र कार्या विचारणा॥३॥

अलाबुं गृञ्जरं चैव वृन्ताकं बृहतीफलम्।
अन्नं पर्युषितं वाऽपि भिस्सटं च मसूरिकम्॥४॥

पुनर्भोजनं माध्वं च परान्नं कांस्यभोजनम्।
नखं चर्म च छत्राकं काञ्चि दुर्गन्धमेव च॥५॥

गणान्नं गणिकान्नं च तथा वै ग्रामयाजिनः।
शूद्रान्नं शद्रसम्पर्कं सूतकान्नं तथैव च॥६॥

श्राद्धान्नमृतुशान्त्याश्च जातकं नामकं तथा।
श्लेष्मातकफलं चैव वर्जयेत्कार्तिकव्रती॥७॥

निषिद्धेषु च पत्रेषु भोजनं नैव कारयेत्।
मधुपालाशकदलीजम्बूप्लक्ष्मकूटिकाः ।
एतत्पत्रेषु भोक्तव्यं पुष्करे न कदाचन॥८॥

कार्तिके मासि सम्प्राप्ते यः कुर्याद्वनभोजनम्।
स याति परमं लोकं विष्णोर्देवस्य चक्रिणः॥९॥

प्रातःस्नानं तु कर्तव्यं तथैव हरिपूजनम्।
कथायाः श्रवणं चैव कार्तिके शस्यते मुने॥१०॥

गोपीचन्दनदानं तु गोदानं श्रोत्रियाय च।
कर्तव्यं कार्तिके मासि तेन मोक्षमवाप्नुयात्॥११॥

कदलीफलदानं तु दानं धात्रीफलस्य च।
वस्त्रदानं तथा कुर्याच्छ्रीतार्ताय द्विजन्मने॥१२॥

शाकादिदानं कुर्वीत चान्नदानं विशेषतः।
शालिग्रामस्य दानं च कर्तव्यं तु द्विजन्मने॥१३॥

पौराणिकाय यो दद्यादामान्नं घृतपायसम्।
 स चैश्वर्यमवाप्नोति शतब्राह्मणभोजनात्॥१४॥
 कमलैः पूजयेद्यस्तु कार्तिके कमलाप्रियम्।
 स तु पुण्यमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥१५॥
 कार्तिके तुलसीपत्रं यो भक्त्या विष्णवेऽर्पयेत्।
 संसाराच्च विनिर्मुक्तो याति विष्णोः परं पदम्॥१६॥
 कार्तिके केतकीपुष्पैरर्चयेद्गरुडध्वजम्।
 पूजितो जन्मसाहस्रं नात्र कार्या विचारणा॥१७॥
 शङ्खदानं तु यः कुर्यात्तथा चक्राङ्कितस्य च।
 तस्य पापानि नश्यन्ति दानमात्रान्न संशयः॥१८॥
 गीतापाठं तु यः कुर्यात्कार्तिके विष्णुवल्लभे।
 तस्य पुण्यफलं वक्तुं नालं वर्षशतैरपि॥१९॥
 श्रीमद्रागवतस्याऽपि श्रवणं यः समाचरेत्।
 सर्वपापविनिर्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति॥२०॥
 एकादश्यां निराहारमुपवासं करोति यः।
 पूर्वजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः॥२१॥
 शालिग्रामस्य नैवेद्यं कोटियज्ञफलं लभेत्।
 अन्यदेवस्य नैवेद्यं भुक्त्वा चान्द्रायणं चरेत्॥२२॥
 पूजाकाले तु देवस्य घण्टानादं करोति यः।
 हरेस्तृप्तिं परां याति मनुजो नात्र संशयः॥२३॥
 परान्नं वर्जयेद्यस्तु कार्तिके विष्णुतुष्टये।
 दामोदरस्य प्रीतिं स सम्यक्प्राप्नोति मानवः॥२४॥
 अध्वगं तु परिश्रान्तं काले च गृहमागतम्।
 योऽतिथिं पूजयेद्भक्त्या जन्मसाहस्रनाशनम्॥२५॥

निन्दां कुर्वन्ति ये मूढा वैष्णवानां महात्मनाम्।
पतन्ति पितृभिः सार्द्धं महारौरव संज्ञके॥२६॥

दृष्ट्वा भागवतान्विप्रान्सन्मुखो न च याति हि।
न गृह्णाति हरिस्तस्य पूजां द्वादशवार्षिकीम्॥२७॥

निन्दां भगवतः शृण्वंस्तत्परस्य जनस्य च।
ततो नाऽपैति यः सोऽपि हरेः प्रियतमो नहि॥२८॥

प्रदक्षिणां तु यः कुर्यात्कार्तिके केशवस्य हि।
पदेपदेऽश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयः॥२९॥

दण्डप्रणामं यः कुर्यात्कार्तिके केशवाग्रतः।
राजसूयाऽश्वमेधानां फलं प्राप्नोत्यसंशयः॥३०॥

कुटुम्बभोजनं चैव कार्तिके भक्तिसंयुतः।
कारयेद्विप्रशार्दूल तस्य पुण्यमनन्तकम्॥३१॥

परस्त्रीसङ्गमं यस्तु कार्तिके कुरुते नरः।
तस्य पापस्य विश्रान्तिर्यावद्वक्तुं न शक्यते॥३२॥

तुलसीमृत्तिकापुण्ड्रं ललाटे यस्य दृश्यते।
यमस्तं नेक्षितुं शक्तः किमु दूता भयङ्कराः॥३३॥

शाकं वा लवणं वाऽपि यत्किञ्चिद्वा भविष्यति।
तद्देयं कार्तिके मासि प्रीत्यर्थं शार्ङ्गधन्वनः॥३४॥

इत्याद्या बहवो धर्माः कार्तिके विष्णुवल्लभाः।
यथाशक्त्या प्रकुर्वीत धर्मं देवस्य तुष्टिदम्॥३५॥

हरिसन्तुष्टये कार्यस्त्यागो वा स्वेष्टवस्तुनः।
मासान्ते द्विजवर्याय दद्यात्तद्व्रतपूर्तये॥३६॥

सर्वव्रतानि चैकत्र सत्यव्रतमथैकतः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सत्यं भाषेत सर्वदा॥३७॥

अन्यधर्मेष्वधिकृतिः कुलजातिविभागतः।
अधिकारी कार्तिके तु सर्व एव जनो भवेत्॥३८॥

गोग्रासः कार्तिके मासि विशेषाद्यैस्तु दीयते।
तेषां पुण्यफलं वक्तुं न शक्नोति पितामहः॥३९॥

विष्णुदेवालयं प्रातः सम्मार्जयति कार्तिके।
तस्य वैकुण्ठभवने जायते सुदृढं गृहम्॥४०॥

दद्यात्कार्तिकमासे तु धर्मकाष्ठानि भूरिशः।
न तत्पुण्यस्य नाशोस्ति कल्पकोटिशतैरपि॥४१॥

सुधादि लेपयेद्यस्तु कार्तिके विष्णुमन्दिरे।
चित्रादिकं लिखेद्वाऽपि मोदते विष्णुसन्निधौ॥४२॥

देवालये वा तीर्थे वा कृतो दुष्टैर्नृपैः करः।
तं मोचयन्ति ये लोकास्तेषां धर्मः सनातनः॥४३॥

कार्तिके मासि यो विप्रो गभस्तीश्वरसन्निधौ।
शतरुद्रीजपं कुर्यान्मन्त्रसिद्धिः प्रजायते॥४४॥

वाराणस्यां तु यैः स्थित्वा त्रिवर्षं कार्तिकव्रतम्।
सोपाङ्गं साङ्गं यैर्मर्त्यैः कृतं भक्त्यैकतत्परैः॥४५॥

इह लोके फलं तेषां प्रत्यक्षं जायते किल।
सम्पत्त्या चैव सन्तत्या यशोभिर्धर्मबुद्धिभिः॥४६॥

पलाण्डुं शृङ्गं मांसं च शय्यां सौवीरकं तथा।
राजिकोन्मादिकं चापि चिपिटान्नं च वर्जयेत्॥४७॥

धात्रीफलं भानुवारे परदेशागमं तथा।
तीर्थं विना सदैवेह वर्जयेत्कार्तिकव्रती॥४८॥

देववेदद्विजातीनां गुरुगोव्रतिनां तथा।
स्त्रीराजमहतां निन्दां वर्जयेत्कार्तिकव्रती॥४९॥

नरकस्य चतुर्दश्यां तैलाभ्यङ्गं च कारयेत्।
 अन्यत्र कार्तिके मासि तैलस्नानं विवर्जयेत्।
 नालिकां मूलकं चैव कूष्माण्डं च कपित्थकम्॥५०॥

रजस्वलान्त्यज म्लेच्छ पतितऽव्रतिकैस्तथा।
 द्विजद्विद्वेदबाह्यैश्च न वदेत्सर्वदा व्रती॥५१॥

एभिर्दृष्टं च काकैश्च सूतिकात्रं च यद्भवेत्।
 द्विःपाचितं च दग्धान्नं नैवाद्याद्वैष्णवव्रती॥५२॥

क्रमात्कूष्माण्डबृहतीतरुणीमूलकं तथा।
 श्रीफलं च कलिङ्गं च फलं धात्रीभवं तथा॥५३॥

नारिकेलमलाबुं च पटोलं बृहतीफलम्।
 चर्मवृन्ताकचवलीशाकं तुलसिजं तथा॥५४॥

शाकान्येतानि वर्ज्यानि क्रमात्प्रतिपदादिषु।
 एवमेव हि माघेऽपि कुर्याच्च नियमान्व्रती॥५५॥

कार्तिकव्रतिनः पुण्यं यथोक्तव्रतकारिणः।
 न समर्थो भवेद्वक्तुं ब्रह्माऽपीह चतुर्मुखः॥५६॥

आदितः श्लोकाः — ३३७

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 कार्तिकव्रतनिरूपणं
 नाम षष्ठोऽध्यायः॥६॥



॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

भगवन्कृतकृत्योऽस्मि तव पादसमाश्रयात्।
 श्रोतव्यं नेह भूयो मे विद्यते देवसत्तम॥१॥
 तथापि भगवन्किञ्चित्प्रष्टव्यं मे हृदि स्थितम्।
 त्वद्वाक्यामृतपीतस्य न मे तृप्तिर्हि जायते॥२॥
 दीपदानस्य माहात्म्यं श्रोतुमिच्छामि ते प्रभो।
 येन चापि पुरा दत्तस्तद्वदस्व चतुर्मुख॥३॥

ब्रह्मोवाच

प्रातः स्नात्वा शुचिर्भूत्वा दीपं दद्यात्प्रयत्नतः।
 तेन पापानि नश्येयुस्तमांसीव भगोदये॥४॥
 आजन्म यत्कृतं पापं स्त्रिया वा पुरुषेण च।
 तत्सर्वं नाशमायाति कार्तिके दीपदानतः॥५॥
 अत्र ते वर्णयिष्यामि इतिहासं पुरातनम्।
 श्रवणात्सर्वपापघ्नं दीपदानफलप्रदम्॥६॥
 पुरा द्रविडदेशे तु ब्राह्मणो बुद्धनामकः।
 तस्य भार्याऽभवद्दुष्टा अनाचाररता मुने॥७॥
 तस्याः संसर्गदोषेण क्षीणाऽऽयुर्मृतिमाप्तवान्।
 पत्यौ मृतेऽपि सा पत्नी अनाचारे विशेषतः॥८॥
 रताभून्न हि तस्यास्तु लज्जा लोकापवादतः।
 सुतबन्धुविहीना सा सदाभिक्षान्नभोजना॥९॥
 न संस्कारान्नमल्पं वा भुक्त्वा पर्युषिताशिनी।
 परपाकरता नित्यं तीर्थयात्रादिवर्जिता॥१०॥

कथायाः श्रवणं चैव न श्रुतं तु तथा द्विज।
 एकदा ब्राह्मणः कश्चित्तीर्थयात्रापरायणः॥११॥
 तस्या गृहं समागच्छद्विद्वान्वै कुत्सनामकः।
 अनाचाररतां तां तु दृष्ट्वा ब्रह्मर्षिसत्तमः।
 कोपेन रक्तचक्षुः संस्तामुवाचाऽसतीं स्त्रियम्॥१२॥

कुत्स उवाच

वक्ष्यामि साम्प्रतं मूढे मद्वाक्यमवधारय॥१३॥
 दुःखहेतुमिमं देहं पूयशोणितपूरितम्।
 पञ्चभूतात्मकं चैव किं च पुष्पासि दूतिके॥१४॥
 जलबुद्बुदवद्देहो नाशमायाति निश्चितम्।
 अनित्यं देहमाश्रित्य नित्यं त्वं मन्यसे हृदि॥१५॥
 तस्मादन्तःस्थितं मोहं त्यज मूढे विचारतः।
 स्मर सर्वोत्तमं देवं कुरु श्रवणमादरात्॥१६॥
 कार्तिके मासि सम्प्राप्ते स्नानदानादिकं कुरु।
 दामोदरस्य प्रीत्यर्थं दीपदानं तथा कुरु॥१७॥
 लक्षवर्त्यादिकं चैव लक्षपद्मादिकं तथा।
 प्रदक्षिणां तु देवस्य नमस्कारं तथैव च॥१८॥
 धारणं पारणं चैव कुरु भक्त्या हि कार्तिके।
 विधवानां व्रतमिदं सधवानां तथैव च॥१९॥
 सर्वपापप्रशमनं सर्वोपद्रवनाशनम्।
 तत्रापि कार्तिके मासि दीयतां दीप उत्तमः॥२०॥
 दीपो हरेः प्रियकरः कार्तिके मासि निश्चितम्।
 महापातककृद्वापि दीपदानात्प्रमुच्यते॥२१॥

पुरा कश्चिद्विजवरो नाम्ना हरिकरो ह्यभूत्।
अधर्मविषयासक्तः शश्वद्वेश्यारतो द्विजः॥२२॥

पितृवित्तक्षयकरो वंशच्छेदे कुठारकः।
कदाचित्तेन विधवे द्यूते पितृधनं महत्॥२३॥

हारितं दुष्टसंसर्गात्ततो दुःखी स चाभवत्।
कदाचित्साधुसंसर्गात्तीर्थयात्राप्रसङ्गतः ॥२४॥

अयोध्यामागतो वत्से महापापकरो द्विजः।
कार्तिके मासि सम्प्राप्तः श्रीमद्विजगृहे सदा॥२५॥

द्यूतव्याजेन तेनाऽऽशु दीपो दत्तो हरेः पुरः।
ततः कालान्तरे विप्रो मृतो मोक्षमवाप्तवान्॥२६॥

महापातककृद्वाऽपि गतवानभयं हरिम्।
तस्मात्त्वं कार्तिके मासि दीपदानं तथा कुरु॥२७॥

तथाऽन्यान्यपि दानानि कुरु भक्तिसमन्विता।
इत्यादिश्याथ तां कुत्सो जगामाऽन्यगृहं द्विजः॥२८॥

साऽपि कुत्सवचः श्रुत्वा पश्चात्तापेन संयुता।
व्रतं तु कार्तिके मासि करिष्यामीति निश्चिता॥२९॥

पतङ्गोदयवेलायां कार्तिके स्नानमम्भसि।
दीपदानं वत चैव मासमेकं चकार सा॥३०॥

ततः कालान्तरे चैव गतायुर्मृतिमागता।
दीपदानस्य माहात्म्यान्महापापकृदप्यसौ॥३१॥

स्वर्गमार्गं गता सा स्त्री काले मोक्षमवाप ह।
तस्मान्नारद माहात्म्यं दीपदानस्य को वदेत्॥३२॥

कार्तिके दीपदानं तु महापुण्यफलप्रदम्।
कार्तिकव्रतनिष्ठो यो दीपदानादिकृन्नरः॥३३॥

दीपदानस्येतिहासं शृण्वन्वै मोक्षमाप्नुयात्॥३४॥
 दीपदानस्य माहात्म्यं वक्तुं केनेह शक्यते।
 परदीपप्रबोधस्य माहात्म्यं शृणु नारद॥३५॥
 स्वस्याऽपि शक्तिराहित्ये परस्याऽपि प्रबोधनम्।
 यः कुर्याल्लभते सोऽपि नात्र कार्या विचारणा॥३६॥
 दीपार्थं वर्तिकां तैलं पात्रं वा यो ददाति हि।
 सहायं वाऽथ कुरुते ददतां दीपमुत्तमम्॥३७॥
 स तु मोक्षमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा।
 कार्तिके दीपदानस्य माहात्म्यं को नु वर्णयेत्॥३८॥
 स्वस्यापि शक्तिराहित्ये परदीपं प्रबोधयेत्।
 सोऽपि तत्फलमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥३९॥
 वेश्या चेन्दुमतीनाम तस्या गेहेऽथ मूषिका।
 परदीपप्रबोधेन मोक्षं प्राप सुदुर्लभम्॥४०॥
 तस्मात्सर्वप्रयत्नेन परदीपं प्रबोधयेत्।
 तेन मोक्षमवाप्नोति मूषिकावन्न संशयः॥४१॥
 परदीपप्रबोधस्य फलमीदृग्विधं मुने।
 साक्षाद्दीपप्रदानस्य माहात्म्यं केन वर्ण्यते॥४२॥

नारद उवाच

कार्तिके दीपदानस्य माहात्म्यं च मया श्रुतम्।
 परदीप प्रबोधस्य माहात्म्यमपि वै श्रुतम्।
 इदानीं श्रोतुमिच्छामि व्योमदीपस्य वैभवम्॥४३॥

ब्रह्मोवाच

आकाशदीप माहात्म्यं शृणु पुत्र समाहितः।
 यस्य श्रवणमात्रेण दीपदाने मतिर्भवेत्॥४४॥

सम्प्राप्ते कार्तिके मासि प्रातःस्नानपरायणः।
आकाशदीपं यो दद्यात्तस्य पुण्यं वदाम्यहम्॥४५॥

सर्वलोकाधिपो भूत्वा सर्वसम्पत्समन्वितः।
इह लोके सुखं भुक्त्वा चान्ते मोक्षमवाप्नुयात्॥४६॥

स्नानदानक्रियापूर्वं हरिमन्दिरमस्तके।
आकाशदीपो दातव्यो मासमेकं तु कार्तिके।
कार्तिके शुद्धपूर्णायां विधिनोत्सर्जयेच्च तम्॥४७॥

यः करोति विधानेन कार्तिके व्योम्नि दीपकम्।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि॥४८॥

अत्र ते वर्णयिष्यामि इतिहासं पुरातनम्।
यस्य श्रवणमात्रेण व्योमदीपफलं लभेत्॥४९॥

पुरा तु निष्ठुरोनाम लुब्धको लोककण्टकः।
यमुनातीरवासी च कालमृत्युरिवाऽपरः॥५०॥

वने चरन्मृगान्सर्वान्हत्वा वृत्तिमकल्पयत्।
पथिकान्बाधते नित्यं चोरवृत्त्या धनुर्धरः॥५१॥

कश्चिद्द्वामं जगामाशु चौर्यार्थं कार्तिके मुने।
तस्मिन्विदर्भनगरे राजा सुकृतिनामकः॥५२॥

चन्द्रशर्माख्यविप्रस्य वचनात्कार्तिके सुधीः।
चकार व्योमदीपं तु हरिमन्दिरमस्तके॥५३॥

दीपं दत्त्वा महाभक्त्या अशृणोच्च कथां निशि।
एतस्मिन्नेव काले तु चौर्यार्थं समुपागतः॥५४॥

राज्ञा दत्तं व्योमदीपं पश्यन्क्षणमतिष्ठत।
तदानीं दैवयोगेन गृध्रो जवसमन्वितः॥५५॥

शीघ्रमागत्य जग्राह तैलपात्रं सदीपकम्।
स्वमुखेनैव सङ्गृह्य वृक्षाग्रं च समाश्रयत्॥५६॥

तत्र पीत्वा तु तैलं च दीपं स्थाप्य स पक्षिराट्।
वृक्षाग्रं तु समास्थाय क्षणमात्रमतिष्ठत्॥५७॥

तदानीं दैवयोगेन ग्रहीतुं पक्षिसत्तमम्।
मार्जारोऽप्यारुहद्वक्षं पक्षिणाऽधिष्ठितं तु तम्॥५८॥

तदग्रे मुखदीपं च पश्यन्क्षणमतिष्ठत्।
आकाशदीपमाहात्म्यं कथितं चन्द्रशर्मणा॥५९॥

राज्ञे सुकृतिनाम्ने च तौ वै शुश्रुवतुः क्षणम्।
खगमार्जारकौ तत्र स्वस्वचामचल्यदोषतः॥६०॥

मार्जारो जगृहे तत्र शाखामतरगतं खगम्।
दैवेन चोदितौ वृक्षाच्छिलायां पतितौ तदा॥६१॥

भग्नगात्रौ मृतौ तत्र पक्षिमार्जारकौ भुवि।
दिव्यदेहसमायुक्तौ यानारूढौ दिवं गतौ॥६२॥

तत्सर्वं लुब्धको दृष्ट्वा चौर्यार्थं समुपागतः।
निवृत्तो दुष्टभावेन कथयन्तं कथां मुनिम्॥६३॥

चन्द्रशर्माणमाभाष्य इदं वचनमब्रवीत्।
चन्द्रशर्मन्मया दृष्टं चौर्यार्थं ह्यागतेन च॥६४॥

राज्ञा सुकृतिना दत्तं व्योमदीपं मनोहरम्।
तदानीं दैवयोगेन खगः पात्रं प्रगृह्य च॥६५॥

तैलं पीत्वा तु तत्पात्रं सदीपं तु मनोहरम्।
वृक्षाग्रे स्थापयित्वा च तत्र क्षणमतिष्ठत्॥६६॥

मार्जारोऽप्यागतस्तत्र ग्रहीतुं पक्षिपुङ्गवम्।
दैवेन प्रेरितौ तौ च उभे शाखे समाश्रितौ॥६७॥

त्वन्मुखात्कथ्यमानां हि कथां शुश्रुवतुः क्षणम्।
पश्चाच्चाञ्चल्यदोषेण मार्जारो ह्यग्रहीत्खगम्॥६८॥

तौ वृक्षात्पतितौ मृत्युं प्राप्तौ च क्षणमात्रतः।
उभौ तौ दिव्यरूपौ च यानारूढौ दिवं गतौ॥६९॥

तदाश्चर्यमहं दृष्ट्वा त्वां प्रष्टुं समुपागतः।
तौ कौ पुरा च मार्जारखगौ तद्वद भो द्विज॥७०॥

तिर्यग्योनिसमापन्नौ मुक्तौ केन च कर्मणा।
इति लुब्धवचः श्रुत्वा चन्द्रशर्माऽब्रवीत्तदा॥७१॥

शृणु लुब्ध प्रवक्ष्यामि तयोर्वृत्तान्तमञ्जसा।
मार्जारोऽपि पुरा पापी तथा श्रीवत्सगोत्रजः॥७२॥

देवशर्मा इति प्रोक्तो देवद्रव्याऽपहारकः।
अहोबलनृसिंहस्य पूजाकर्तृत्वमाप सः॥७३॥

तस्मिन्देवालये प्राप्तं तैलं द्रव्यादिकं तथा।
अपहृत्य च तेनैव कुटुम्बं पोषयत्यसौ॥७४॥

आयुर्नीत्वैवमेवाऽसौ ततः पञ्चत्वमागतः।
तस्मात्पापात्कालसूत्रं महारौरवरौरवम्॥७५॥

निरुच्छ्वासं तथा प्राप्य असिपत्रवनं क्रमात्।
छिद्यमानो महाकायैर्यमदूतैर्भयङ्करैः॥७६॥

अनुभूय च तान्सर्वान्ब्रह्मराक्षसतां गतः।
ततस्तु श्वानयोनौ च चण्डालोऽभूत्कुर्मतः॥७७॥

एवं जन्मशतं प्राप्य भूमौ मार्जारतां गतः।
आकाशदीपमाहात्म्यं श्रुत्वेदानीं तु देवतः।
निर्मुक्ताऽखिलपापस्तु अगमद्धरिमन्दिरम्॥७८॥

गृध्रोऽयं तु पुरा विप्रो मिथिले वेदपारगः।
शर्यातिरिति विख्यातौ नाम्ना लोके महाप्रभुः॥७९॥

दासीसङ्गं चकारासौ वेश्यासङ्गं तथैव च।
तेन दोषेण महता पञ्चत्वमगमत्तदा॥८०॥

कुम्भीपाके महाघोरे स्थित्वा युगचतुष्टयम्।
कर्मशेषेण भूमौ च गृध्रत्वमगमत्तदा॥८१॥

दैवेन चोदितो गृध्रस्तैलपानार्थमागतः॥८२॥

दत्त्वा चाकाशदीपं च श्रुत्वा चैव हरेः कथाम्।
विध्वस्ताऽखिलपापस्तु जगाम हरिमन्दिरम्॥८३॥

इत्येतत्सर्वमाख्यातं लुब्ध गच्छ यथासुखम्।
व्याधोऽप्यस्य वचः श्रुत्वा गत्वा चैव स्वमन्दिरम्॥८४॥

व्रतं चाकाशदीपस्य चकार विधिवन्मुने।
आयुःशेषं तदा नीत्वा जगाम हरिमन्दिरम्॥८५॥

सुनन्दोपि महाराज आश्चर्यं समुपागतः।
चकार विधिना मासं चन्द्रशर्मोक्तमार्गतः॥८६॥

प्रातः स्नात्वा शुचिर्भूत्वा कार्तिके मासि वै नृपः।
कोमलैस्तुलसीपत्रैः समभ्यर्च्य जनार्दनम्॥८७॥

रात्रौ दद्याद्भ्योमदीपं मन्त्रेणानेन वै नृपः॥८८॥

दामोदराय विश्वाय विश्वरूपधराय च।
नमस्कृत्वा प्रदास्यामि व्योमदीपं हरिप्रियम्।
निर्विघ्नं कुरु देवेश यावन्मासः समाप्यते॥८९॥

व्रतेनानेन देवेश त्वयि भक्तिः प्रवर्द्धताम्।
इति मन्त्रेण राजाऽसौ दीपदानं चकार ह॥९०॥

ब्राह्मे मुहूर्ते च पुनर्व्योमदीपं ददाति हि।
विष्णोः पूजा कृता प्रातः प्रातःस्नानं चकार ह॥११॥

उत्सर्गस्य विधिं कृत्वा व्योम्नि दीपं समाप्य च।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च व्रतं विष्णोः समर्पयत्॥१२॥

तेन पुण्यप्रभावेन स राजा मुनिसत्तम।
शरदां शतसाहस्रमिह भोगान्मनोहरान्॥१३॥

सुपुत्रपौत्रस्वजनैर्बुभुजे सह भार्यया।
ततश्चान्ते द्विजवर विमानं सुमनोहरम्॥१४॥

स्त्रीभिः सह समारुह्य मोक्षमार्गं गतो मुने।
चतुर्भुजः पीतवासाः शङ्खचक्रगदाधरः॥१५॥

विष्णुलोके विष्णुरिव प्रोच्यमानः सदाऽमरैः।
क्रीडयामास राजाऽसौ यथाकामं महामनाः॥१६॥

तस्मात्तु कार्तिके मासि मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम्।
आकाशदीपो दातव्यो विधानेन हरेः प्रियः॥१७॥

दास्यन्ति ये कार्तिकमासि मर्त्या
व्योमप्रदीपं हरितुष्टयेऽत्र।
पश्यन्ति ते नैव कदाऽपि देवं
यमं महाक्रूरमुखं मुनीन्द्र॥१८॥

अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि व्योमदीपस्य वैभवम्।
वालखिल्यैः पुरा प्रोक्तं तच्छृणुष्व द्विजोत्तम॥१९॥

वालखिल्या ऊचुः

कृष्णादिमासक्रमतः कार्तिकस्यादिमासतः।
आकाशादीपदानं तु कुर्वन्तु ऋषिसत्तमाः॥१००॥

तुलायां तिलतैलेन सायं सन्ध्यासमागमे।
 आकाशदीपं यो दयान्मासमेकं निरन्तरम्॥१०१॥
 सश्रीकाय श्रीपतये श्रिया न स वियुज्यते।
 आकाशदीपवंशस्तु विंशद्धस्तोत्तमो भवेत्॥१०२॥
 मध्यमो नवहस्तः स्यात्कनिष्ठः पञ्चहस्तकः।
 यथा दूरस्थितैर्लोकैर्दृश्यते तत्तथाऽऽचरेत्॥१०३॥
 तथाऽभ्रादिकरण्डेषु दीपदानं विशिष्यते।
 वंशस्य नवमांशेन लम्बा कार्या पताकिका॥१०४॥
 मयूरपिच्छमुष्टिं वा कलशं चोपरि न्यसेत्।
 विष्णुप्रीतिकरो दीपः पित्रुद्धारस्य कारकः॥१०५॥
 एकादश्यास्तुलार्काद्वा दीपदानमतोऽपि वा।
 दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह॥१०६॥
 प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे।
 आकाशदीपसदृशं पितुरुद्धारकं नहि॥१०७॥
 हेलिकस्य च द्वौ पुत्रौ तत्रैकस्तु पिशाचकः।
 व्योमदीपपुण्यदानान्मोक्षं प्राप सुदुर्लभम्॥१०८॥
 नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।
 नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः॥१०९॥
 मन्त्रेणानेन ये मर्त्याः पितृभ्यः खे तु दीपकम्।
 प्रयच्छन्ति गता ये स्युर्नरके यान्ति तेऽपि वै।
 उत्तमां गतिमित्थं ते दीपदानं मयेरितम्॥११०॥
 लक्ष्मीसन्ततिसिद्ध्यर्थमारोग्याय प्रदीपयेत्॥१११॥
 कार्तिके कृष्णपक्षे तु द्वादश्यादिषु पञ्चसु।
 तिथीषूक्तः पूर्वरात्रे नृणां नीराजनाविधिः॥११२॥

ब्रह्मविष्णुशिवादीनां भवनेषु विशेषतः।
 कूटागारेषु चैत्येषु सभासु च नदीषु च॥११३॥
 प्राकारोद्यानवापीषु प्रतोलीनिष्कुटेषु च।
 मन्दुरासु विविक्तासु हस्तिशालासु चैव हि॥११४॥
 प्रदोषसमये दीपान्दद्यादेवं मनोहरान्।
 कृतं यैः कार्तिके मासि दीपदानं विधानतः॥११५॥
 दृश्यन्ते ये रत्नभाजस्तेऽत एव प्रकीर्तिताः।
 दीपदानासमर्थश्चेत्परदीपं तु रक्षयेत्॥११६॥
 यो वेदाभ्यासिने दद्याद्दीपार्थं तैलमादरात्।
 को वा तस्य फलं वक्तुं भुवि तिष्ठति मानवः॥११७॥
 दीपान्दद्याद्बहुविधान्कार्तिके विष्णुसन्निधौ।
 कार्तिके मासि सम्प्राप्ते गगने स्वच्छताके॥११८॥
 रात्रौ लक्ष्मीः समायाति द्रष्टुं भुवनकौतुकम्।
 यत्रयत्र च दीपान्सा पश्यत्यब्धिसमुद्भवा॥११९॥
 तत्रतत्र रतिं कुर्यान्नान्धकारे कदाचन।
 तस्माद्दीपः स्थापनीयः कार्तिके मासि वै सदा॥१२०॥
 लक्ष्मीरूपार्थिनां प्रोक्तं दीपदानं विशेषतः।
 देवालये नदीतीरे राजमार्गे विशेषतः॥१२१॥
 निद्रास्थले दीपदाता तस्य श्रीः सर्वतोमुखी।
 दुर्बलस्याऽऽलयं वीक्ष्य दीपशून्यं तु यो ददेत्॥१२२॥
 विप्रस्य वाऽन्यवर्णस्य विष्णुलोके महीयते।
 कीटकण्टकसङ्कीर्णे दुर्गमे विषमस्थले॥१२३॥
 कुर्याद्यो दीपदानानि नरकं स न गच्छति।
 दद्याद्रात्रौ पञ्चनदे दीपं यो विधिपूर्वकम्॥१२४॥

तस्य वंशे प्रजायन्ते बालकाः कुलदीपकाः।
पितृपक्षेऽन्नदानेन ज्येष्ठाषाढे च वारिणा॥१२५॥

कार्तिके तत्फलं तेषां परदीपप्रबोधनात्।
बोधनात्परदीपस्य वैष्णवानां च सेवनात्॥१२६॥

कार्तिके फलमाप्नोति राजसूयाश्वमेधयोः।
पुरा हरिकरोनाम द्विजः पापरतः सदा॥१२७॥

कृतं द्यूतप्रसङ्गेन दीपदानं हि कार्तिके।
तेन पुण्यप्रभावेन स्वर्गं प्राप द्विजोत्तमः॥१२८॥

आकाशदीपदानेन पुरा वै धर्मनन्दनः।
विमानवरमारुह्य विष्णुलोकं ययौ नृपः॥१२९॥

यः कुर्यात्कार्तिके विष्णोः पुरः कर्पूरदीपकम्।
प्रबोधिण्यां विशेषेण तस्य पुण्यं वदाम्यहम्॥१३०॥

कुले तस्य प्रसूता ये पुरुषास्ते हरिप्रियाः।
क्रीडित्वा सुचिरं कालमन्ते मुक्तिं व्रजन्ति च॥१३१॥

दीपको ज्वलते यस्य दिवा रात्रौ हरेर्गृहे।
एकादश्यां विशेषेण स याति हरिमन्दिरम्॥१३२॥

लुब्धकोऽपि चतुर्दश्यां दीपं दत्त्वा शिवालये।
भक्त्या विना परे लिङ्गे शिवलोकं जगाम सः॥१३३॥

गोपः कश्चिदमावास्यां दीपं प्रज्वाल्य शार्ङ्गिणः।
मुहुर्जयजयेत्युक्त्वा स च राजेश्वरोऽभवत्॥१३४॥

आदितः श्लोकाः — ४७१

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

दीपदानमाहात्म्यवर्णनं
नाम सप्तमोऽध्यायः॥७॥



॥ अथ नामाऽष्टमोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

भूयः कथय तृप्तिर्हि नास्ति मे कमलासना।
त्वद्वागमृतपानेन तृषा भूयः प्रवर्धते॥१॥

ब्रह्मोवाच

प्रातः स्नात्वा शुचिर्भूत्वा कार्तिके विष्णुतत्परः।
देवं दामोदरं पूज्य कोमलैस्तुलसीदलैः।
स तु मोक्षमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥२॥

भक्त्या विरहितो यस्तु सुवर्णादिभिरर्चयेत्।
तस्य पूजां न गृह्णाति नात्र कार्या विचारणा॥३॥

सर्वेषामपि वर्णानां भक्तिरेषा परा स्मृता।
भक्त्या विरहितं कर्म न विष्णोः प्रियकारणम्॥४॥

भक्त्या सम्पूजितो नित्यं तुलस्यास्तु दलार्धतः।
स्वयं प्रत्यक्षमायाति भगवान्हरिरीश्वरः॥५॥

विष्णुदासः पुरा भक्त्या तुलसीपूजनेन च।
विष्णुलोकं गतः शीघ्रं चोलो गौणत्वमागतः॥६॥

तुलस्याः शृणु माहात्म्यं पापघ्नं पुण्यवर्द्धनम्।
यत्पुरा विष्णुना प्रोक्तं रमायै तद्वदाम्यहम्॥७॥

सम्प्राप्ते कार्तिके मासि तुलस्याः पूजनं हरेः।
ये कुर्वन्ति नरा भक्त्या ते यान्ति परमं पदम्॥८॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन तुलस्याः कोमलैर्दलैः।
पूजनीयो महाभक्त्या सर्वक्लेशविनाशनः॥९॥

रोपिता तुलसी यावत्कुरुते मूलविस्तरम्।
तावद्युगसहस्राणि ब्रह्मलोके महीयते॥१०॥

तुलसीपत्रसंयुक्तजले स्नानं चरेद्यदि।
सर्वपापविनिर्मुक्तो मोदते विष्णुमन्दिरे॥११॥

वृन्दावनं च कुरुते रोपणार्थं महामुने।
तावतैव विमुक्ताऽघो ब्रह्मभूयाय कल्पते॥१२॥

तुलसीकाननं ब्रह्मन्गृहे यस्यावतिष्ठते।
तद्गृहं तीर्थभूतं तु न यान्ति यमकिङ्कराः॥१३॥

सर्वपापहरं पुण्यं कामदं तुलसीवनम्।
रोपयन्ति नराः श्रेष्ठास्ते न पश्यन्ति भास्करिम्॥१४॥

तुलसीकाष्ठसंयुक्तं गन्धं यो धारयेन्नरः।
तद्देहं न स्पृशेत्पापं क्रियमाणं तथैव च॥१५॥

तुलसीविपिनच्छाया यत्र चैव भवेद्विज।
तत्र श्राद्धं प्रकर्तव्यं पितॄणां तृप्तिहेतवे॥१६॥

यत्कृते तुलसीपत्रं कर्णे शिरसि दृश्यते।
यमस्तं नेक्षितुं शक्तः किमु दूता भयङ्कराः॥१७॥

तुलस्या महिमां यस्तु शृणुयान्नित्यमादृतः।
सर्वपापविमुक्तात्मा ब्रह्मलोकं स गच्छति॥१८॥

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।
तुलस्या विषये ब्रह्मञ्छ्रवणात्पापनाशनम्॥१९॥

पुरा काश्मीरदेशे तु ब्राह्मणौ सम्बभूवतुः।
हरिमेधःसुमेधाख्यौ विष्णुभक्तिपरायणौ॥२०॥

सर्वभूतदयायुक्तौ सर्वतत्त्वार्थवेदिनौ।
कदाचित्तौ द्विजवरौ तीर्थयात्रापरायणौ॥२१॥

गच्छतावेकतो विप्रौ कान्तारे श्रमविह्वलौ।
तुलसीकाननं तत्र ददर्शतुररिन्दमौ॥२२॥

तयोः सुमेधास्तदृष्ट्वा तुलसीकाननं महत्।
प्रदक्षिणीकृत्य तदा ववन्दे भक्तिसंयुतः॥२३॥

दृष्ट्वैतद्धरिमेधास्तु उवाच परया मुदा।
ज्ञातुं तुलस्या माहात्म्यं तत्फलं च पुनःपुनः॥२४॥

हरिमेधा उवाच

किमर्थं विप्र देवेषु तीर्थेषु च व्रतेषु च।
स्थितेषु विप्रमुख्येषु प्रणामं कृतवानसि॥२५॥

सुमेधा उवाच

शृणु विप्र महाभाग साधु वाक्यमुदीरितम्।
आतपो बाधते ह्यावां गत्वैतद्वटसन्निधौ॥२६॥

तस्यच्छायां समाश्रित्य वक्ष्यामि ते यथार्थतः।
एवमुक्तः सुमेधास्तु हरिमेधेन संयुतः॥२७॥

वटं जगाम धर्मज्ञो महत्कोटरसंयुतम्।
तत्र विश्राम्य विप्रोसौ हरिमेधमुवाच ह॥२८॥

श्रूयतां विप्रशार्दूल तुलस्यास्तूतमां कथाम्।
परमेशप्रसादेन सञ्जाता या पयोनिधौ॥२९॥

पुरा दुर्वाससः शापाद्गतैश्वर्ये पुरन्दरे।
ममन्थुः क्षीरजलधिं ब्रह्माद्याः ससुरासुराः॥३०॥

ऐरावतः कल्पतरुश्चन्द्रमाः कमला तथा।
उच्चैःश्रवा कौस्तुभश्च तथा धन्वन्तरिर्हरिः॥३१॥

हरीतक्यादयश्चापि दिव्या ओषधयस्तथा।
अजायन्त द्विजश्रेष्ठ लोकश्रेयोविधायकाः॥३२॥

ततः पीयूषकलशमजरामरदायकम्।
कराभ्यां कलशं विष्णुर्धारयन्सुतलं परम्।
अवेक्ष्य मनसा सद्यः परां निर्वृतिमाप ह॥३३॥

तस्मिन्पीयूषकलश आनन्दास्रोदबिन्दवः।
व्यपतंस्तुलसी सद्यः समजायत मण्डला॥३४॥

सर्वं लक्षणसम्पन्ना सर्वाभरणभूषिता॥३५॥

तत्रोत्पन्नां तथा लक्ष्मीं तुलसीं च ददुर्हरेः।
देवा ब्रह्मादयस्ते हि जगृहे भगवान्हरिः॥३६॥

ततोऽतीव प्रियकरा तुलसी जगतां पतेः॥३७॥

सा तु देवगणैः सर्वैर्विष्णुवत्पूज्यते प्रिया।
नारायणो जगन्नाता तुलसी तस्य वल्लभा॥३८॥

तस्मात्तस्या नमस्कारो मया विप्र कृतस्ततः।
इत्येवं वदतस्तस्य सुमेधस्य महात्मनः॥३९॥

आराददृश्यत महद्विमानं सूर्यवर्चसम्।
तदानीं वटवृक्षस्तु पपात पुरतो मुने॥४०॥

तथैव तस्माद्वृक्षाच्च पुरुषौ द्वौ विनिर्गतौ।
द्योतयन्तौ दिशः सर्वास्तेजसा सूर्यसन्निभौ॥४१॥

प्रणामं चक्रतुस्तौ हि हरिमेधसुमेधयोः।
हरिमेधसुमेधौ तौ तौ दृष्ट्वा भयविह्वलौ॥४२॥

ऊचतुर्विस्मयाविष्टौ तावुभौ देवसन्निभौ॥४३॥

हरिमेधसुमेधसावूचतुः

युवां कौ देवसङ्काशौ भवन्तौ सर्वमङ्गलौ।
मन्दारमालां तरुणां धारयन्तौ तथाऽमरौ।
नमस्कार्यौ तथाऽऽवाभ्यां पूज्यौ च सुररूपिणौ॥४४॥

इत्युक्तौ ब्राह्मणाभ्यां तावूचतुर्वृक्षनिर्गतौ।
युवामेव पिता माता आवयोश्च तथा गुरुः॥४५॥

बन्धादयस्तथा चैव युवामेव न संशयः।

ज्येष्ठ उवाच

अहं तु देवलोकस्य आस्तीकोनाम नामतः॥४६॥

अप्सरोगणसंवीतः कदाचिन्नन्दन वनम्।
क्रीडार्थमगमं चाद्रौ विषयासक्त चेतनः॥४७॥

रेमिरे देववनिता यथाकामं मया सह।
मुक्तामल्लिकमाल्यानि निपेतुस्तानि योषिताम्॥४८॥

तपतो रोमशस्यैव तद्दृष्ट्वा कुपितो मुनिः।
योषितां नापराधोऽयं यासां वै परतन्त्रता॥४९॥

अयमेव दुराचारः शापार्ह इति चाब्रवीत्।
त्वं ब्रह्मराक्षसो भूत्वा वटवृक्षे चरेति माम्॥५०॥

प्रसादितो मया सोऽथ विशापमपि दत्तवान्।
तुलसीपत्रमाहात्म्यं विष्णोर्नाम तथा द्विजात्॥५१॥

यदा शृणोषि सद्यस्त्वं विमुक्तिं यास्यसे पराम्।
इति शप्तस्तु मुनिना चिरकालं सुदुःखितः॥५२॥

वसाम्यत्र वटे दैवाद्भवद्दर्शनतो ध्रुवम्।
मुक्तिर्जाता विप्रशापाद्वितीयस्य कथां शृणु॥५३॥

अयं मुनिवरः पूर्वं गुरुशुश्रूषणे रतः।
गुरोराज्ञामनादृत्य ब्रह्मराक्षसतां गतः॥५४॥

युष्मत्प्रसादादधुना ब्रह्मशापाद्विमोचितः।
तीर्थयात्राफलं चैव युवाभ्यामिह साधितम्॥५५॥

उत्तरोत्तरपुण्यानि वर्धन्ते च दिनेदिने।
इत्युक्त्वा तौ मुनिवरौ प्रणम्य च पुनःपुनः॥५६॥

तावनुज्ञाप्य तौ धाम जग्मतुः परया मुदा।
ततस्तौ तीर्थयात्रार्थं परमौ मुनिपुङ्गवौ॥५७॥

शंसन्तौ तुलसीं पुण्यां जग्मतुर्मुनिपुङ्गव।
एवं नारद माहात्म्यं तुलस्याः को नु वर्णयेत्॥५८॥

तस्मान्नारद मासेऽस्मिन्कार्तिके हरितुष्टिदे।
कर्तव्या तुलसीपूजा नात्र कार्या विचारणा॥५९॥

एवमङ्ग व्रतान्येव प्रोक्तानि मुनिसत्तम।
उपाङ्गानि प्रवक्ष्यामि वालखिल्योदितानि च॥६०॥

आदितः श्लोकाः — ५३१

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

तुलसीमाहात्म्यवर्णनं
नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



॥ अथ नवमोऽध्यायः ॥

वालखिल्या ऊचुः

कृष्णः प्रोवाच धर्माय द्वादशीं वत्ससंज्ञिताम्।
गोधूलिकालसंयुक्ता द्वादशी वत्सपूजने ॥ १ ॥

वत्सपूजा वटे चैव कर्तव्या प्रथमेऽहनि।
सवत्सां तुल्यवर्णां च शीलिनीं गां पयस्विनीम्।
चन्दनादिभिरालिप्य पुष्पमालाभिरर्चयेत् ॥ २ ॥

तद्विने तैलपक्वं च स्थालीपक्वं युधिष्ठिर।
गोक्षीरं गोघृतं चैव दधिक्षीरं च वर्जयेत् ॥ ३ ॥

दिनान्ते सूर्यबिम्बार्धादुभयत्र घटीदलम्।
ततो नीराजनं कार्य्यं निरीक्षेच्च शुभाशुभम् ॥ ४ ॥

नानादीपान्प्रकल्प्याऽऽदौ स्वर्णपात्रादि संस्थितान्।
नीराजयेद्दीपपूर्वं निरीक्षेत शुभाशुभम् ॥ ५ ॥

लापयित्वा सर्वदीपानुत्तराभिमुखान्त्रयेत्।
मुख्या दीपा नव प्रोक्ता अन्यानपि च कल्पयेत् ॥ ६ ॥

ज्वाला चेद्दक्षिणासंस्था सतेजस्का शिखान्विता।
स्थिरा चेत्सौख्यदा प्रोक्ता विपरीता तु दुःखदा ॥ ७ ॥

कार्तिके कृष्णपत्रे तु द्वादश्यादिषु पञ्चसु।
तिथिषूक्तः पूर्वरात्रे नृणां नीराजनाविधिः ॥ ८ ॥

पक्षं संसूचयत्यादिद्वितीयो मासमेव च।
तृतीय ऋतुमेवेह चतुर्थस्त्वयनं तथा।
वर्षं तु पञ्चमो दीपः शुभाशुभं विनिर्णयेत्॥९॥

सूर्याशसम्भवा दीपा अन्धकारविनाशकाः।
त्रिकाले मां दीपयन्तु दिशन्तु च शुभाशुभम्॥१०॥

अभिमन्त्र्य च मन्त्रेण ततो नीराजयेत्क्रमात्॥११॥

आदौ देवांस्ततो विप्रान्हस्तिनश्च तुरङ्गमान्।
ज्येष्ठाश्छेष्टाञ्जघन्यांश्च मातृमुख्याश्च योषितः॥१२॥

ततो नीराजितान्दीपान्स्वस्वस्थानेषु विन्यसेत्।
रूक्षैर्लक्ष्मीविनाशः स्याच्छ्वेतैरन्नक्षयो भवेत्।
अतिरक्तेषु युद्धानि मृत्युः कृष्णशिखेषु च॥१३॥

एकाङ्गीनाम गोपाला तयैतच्च व्रतं कृतम्।
धनधान्यसमायुक्ता जाता वर्षत्रयेण सा॥१४॥

तस्माद्गोपूजनं कार्यं द्वादश्यां कार्तिकस्य तु।
एतद्गोव्रतमाहात्म्यं श्रुत्वा कुर्वन्ति ये नराः॥१५॥

ते गोव्रतप्रभावेन न गोभिर्विच्युता भुवि।
गोऽपराधः कृतो यः स्यात्स व्रताद्विलयं व्रजेत्॥१६॥

वालखिल्या ऊचुः

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां मासि चाऽऽश्वयुजे तथा।
दीपोत्सव समीपे तु व्रतमेतत्समाचरेत्॥१७॥

प्रातः स्नात्वा त्रयोदश्यां कृत्वा वै दन्तधावनम्।
त्रिरात्रनियमं कृत्वा गोविन्दे भक्तितत्परः॥१८॥

कार्य एतद्व्रतस्यान्ते तथा गोवर्द्धनोत्सवः।
 त्रिमुहूर्ताधिका ग्राह्या परवेधो न दोषभाक्॥१९॥
 आश्विनस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
 यमदीपं बलिं दद्यादपमृत्युर्विनश्यति॥२०॥
 पुरा हेमनकस्यैव बालकश्चापमृत्युतः।
 मुक्तोभूदाश्विने कृष्णत्रयोदश्यां दयावशात्॥२१॥

दूता ऊचुः

यथा न जीविताद्भ्रश्येदीदृशे तु महोत्सवे।
 तथोपायं ब्रूहि यम कृपां कृत्वाऽस्मदग्रतः॥२२॥

यम उवाच

आश्विनस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशामुखे।
 प्रतिवर्षं तु यो दद्याद्गृहद्वारे सुदीपकम्॥२३॥
 मन्त्रेणानेन भो दूताः समानेयः स नोत्सवे।
 प्राप्तेऽपमृत्यावपि च शासनं क्रियतां मम॥२४॥
 मृत्युना पाशदण्डाभ्यां कालेन च मया सह।
 त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतामिति॥२५॥
 मन्त्रेणानेन यो दीपं द्वारदेशे प्रयच्छति।
 उत्सवे चाऽपमृत्योश्च भयं तस्य न जायते॥२६॥

वालखिल्या ऊचुः

पूर्वविद्धचतुर्दश्यामाश्विनस्य सितेतरे।
 पक्षे प्रत्यूषसमये स्नानं कुर्यात्प्रयत्नतः॥२७॥
 अरुणोदयतोऽन्यत्र रिक्तायां स्नाति यो नरः।
 तस्याऽब्धिकभवो धर्मो नश्यत्येव न संशयः॥२८॥

तथा कृष्णचतुर्दश्यामाश्विनेऽर्कोदये सुराः।
यामिन्याः पश्चिमे यामे तैलाभ्यङ्गो विशिष्यते॥२९॥

यदा चतुर्दशी न स्याद्विदिने चेद्विधूदये।
दिनद्वये भवेच्चापि तदा पूर्वैव गृह्यते॥३०॥

बलात्काराद्धठाद्वाऽपि शिष्टत्वान्न करोति चेत्।
तैलाभ्यङ्गं चतुर्दश्यां रौरवं नरकं व्रजेत्॥३१॥

तैले लक्ष्मीर्जले गङ्गा दीपावल्याश्चतुर्दशीम्।
प्रातःस्नानं हि यः कुर्याद्यमलोकं न पश्यति॥३२॥

अपामार्गमथो तुम्बीं प्रपुन्नाडमथापरम्।
भ्रामयेत्स्नानमध्ये तु नरकस्य क्षयाय वै॥३३॥

वारत्रयं त्रिवारं च पठित्वा मन्त्रमुत्तमम्॥३४॥

सीतालोष्टसमायुक्त सकण्टकदलान्वित।
हर पापमपामार्गं भ्राम्यमाणः पुनः पुनः।
अपामार्गं प्रपुन्नाडं भ्रामयेच्छिरसोपरि॥३५॥

स्नात्वाद्र्वाससा दद्याद्दीपकं मृत्युपुत्रयोः।
शुनकौ श्यामशबलौ भ्रातरौ यमसेवकौ।
तुष्टौ स्यातां चतुर्दश्यां दीपदानेन मृत्युजौ॥३६॥

इष्टवन्धुजनैः सार्द्धमेतत्स्नानं समाचरेत्।
स्नानाङ्गतर्पणं कृत्वा यमं सन्तर्पयेत्ततः॥३७॥

यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च।
वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥३८॥

औदुम्बराय दक्षाय नीलाय परमेष्ठिने।
वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय ते नमः॥३९॥

चतुर्दशैते मन्त्राः स्युः प्रत्येकं च नमोऽन्विताः।
एकैकेन तिलैर्मिश्रान्दद्यात्रीनुदकाञ्जलीन्॥४०॥

यज्ञोपवीतिना कार्यं प्राचीनावीतिनाऽथवा।
देवत्वं च पितृत्वं च यमस्यास्ति द्विरूपता॥४१॥

जीवत्पिताऽपि कुर्वीत तर्पणं यमभीष्मयोः।
नरकाय प्रदातव्यो दीपः सम्पूज्य देवताः॥४२॥

अत्रैव लक्ष्मीकामस्य विधिः स्नाने मयोच्यते।
इषे भूते च दर्शे च कार्तिके प्रथमे दिने॥४३॥

यदा स्नाति तदाऽभ्यङ्गस्नानं कुर्याद्विधूदये।

ऊर्जशुक्लद्वितीयायां तिथौ च स्वातियुग्मगे॥४४॥

मानवो मङ्गलस्नायी नैव लक्ष्म्या वियुज्यते।
दीपैर्नीराजनादत्र सैषा दीपावलिः स्मृता॥४५॥

इन्दुक्षयेऽपि सङ्क्रातौ रवौ पाते दिनक्षये।
अत्राभ्यङ्गो न दोषाय प्रातः पापापनुत्तये॥४६॥

माषपत्रस्य शाकं वै भुक्त्वा तस्मिन्दिने नरः।
प्रेताख्यायां चतुर्दश्यां सर्वपापैः प्रमुच्यते॥४७॥

इषासितचतुर्दश्यामिन्दुक्षयतिथावपि ।
दर्शादौ स्वातिसंयुक्ते तदा दीपावलिर्भवेत्॥४८॥

कुर्यात्संलग्नमेतच्च दीपोत्सवदिनत्रयम्।
महाराजो बलिः प्रोक्तस्तुष्टेन हरिणा तथा॥४९॥

वरं याचस्व भद्रं ते यद्यन्मनसि वर्तते।
इति विष्णुवचः श्रुत्वा बलिर्वचनमब्रवीत्॥५०॥

आत्मार्थं किं याचनीयं सर्वं दत्तं मया तथा।
लोकार्थं याचयिष्यामि शक्तश्चेदेहि तच्च मे॥५१॥

मयाऽद्य ते धरा दत्ता वामनच्छद्मरूपिणे।
त्रिभिः पदैस्त्रिदिवसैः सा चाऽऽक्रान्ता यतस्त्वया॥५२॥

तस्माद्भूमितले राज्यमस्तु घस्रत्रये हरे॥५३॥

मद्राज्ये ये दीपदानं भुवि कुर्वन्ति मानवाः।
तेषां गृहे तव स्त्रीयं सदा तिष्ठतु सुस्थिरा॥५४॥

मम राज्ये गृहे यैषामन्धकारः पतिष्यति।
लक्ष्मीसन्तानान्धकारः सदा पततु तद्गृहे॥५५॥

चतुर्दश्यां च ये दीपान्नरकाय ददन्ति च।
तेषां पितृगणाः सर्वे नरके न वसन्ति च॥५६॥

बलिराज्यं समासाद्य यैर्न दीपावलिः कृता।
तेषां गृहे कथं दीपाः प्रज्वलिष्यन्ति केशव॥५७॥

बलिराज्ये तु ये लोकाः शोकाऽनुत्साहकारिणः।
तेषां गृहे सदा शोकः पतेदिति न संशयः॥५८॥

चतुर्दशीत्रये राज्यं बलेरस्त्विति याचयेत्।
पुरा वामनरूपेण प्रार्थयित्वा धरामिमाम्।
ददावतिथयेन्द्राय बलिं पातालवासिनम्॥५९॥

दत्तं दैत्यपतेरित्थं हरिणा तद्दिनत्रयम्।
तस्मान्महोत्सवं चात्र सर्वथैव हि कारयेत्॥६०॥

महारात्रिः समुत्पन्ना चतुर्दश्यां मुनीश्वराः।
अतस्तदुत्सवः कार्यः शक्तिपूजापरायणैः॥६१॥

बलिराज्यं समासाद्य यक्षगन्धर्वकिन्नराः।
 औषध्यश्च पिशाचाश्च मन्त्राश्च मणयस्तथा॥६२॥
 सर्व एव प्रहृष्यन्ति नृत्यन्ति च निशामुखे।
 तत्तन्मन्त्राश्च सिद्ध्यन्ति बलिराज्ये न संशयः॥६३॥
 बलिराज्यं समासाद्य यथा लोकाः सुहर्षिताः।
 तथा तद्दिनमध्ये तु लोकाः स्युर्हर्षिता भृशम्॥६४॥
 तुलासंस्थे सहस्रांशौ प्रदोषे भूतदर्शयोः।
 उल्काहस्ता नराः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनम्॥६५॥
 नरकस्थास्तु ये प्रेतास्ते मार्गं तु व्रतात्सदा।
 पश्यन्त्येव न सन्देहः कार्योऽत्र मुनिपुङ्गवैः॥६६॥
 आश्विने मासि भूतादितिथयः कीर्तितास्त्रयः।
 दीपदानादिकार्येषु ग्राह्या मध्याह्नकालिकाः॥६७॥
 यदि स्युः सङ्गवादवागेताश्च तिथयस्त्रयः।
 दीपदानादिकार्येषु कर्तव्याः पूर्वसंयुताः॥६८॥

ऋषय ऊचुः

कौमोदिन्यास्तु माहात्म्यं प्रष्टुमिच्छामहे द्विजाः।
 तस्मिन्दिने तु किं भोज्यं कस्य पूजां तु कारयेत्॥६९॥
 किमर्थं क्रियते सा तु तस्याः का देवता भवेत्।
 किं च तत्र भवेद्देयं किं न देयं विशेषतः॥७०॥
 प्रहर्षः कोऽत्र निर्दिष्टः क्रीडा काऽत्र प्रकीर्तिता।
 दीपावल्याः फलं सर्वं वदन्तु ऋषिसत्तमाः॥७१॥

वालखिल्या ऊचुः

ततः प्रभात समये त्वमायां तु मुनीश्वराः।
 स्नात्वा देवान्पितृन्भक्त्या सम्पूज्याथ प्रणम्य च॥७२॥

कृत्वा तु पार्वणश्राद्धं दधिक्षीरघृतादिभिः।
दिवा तत्र न भोक्तव्यमृते बालातुराञ्जनात्॥७३॥

ततः प्रदोषसमये पूजयेदिन्दिरां शुभाम्।
कुर्यान्नानाविधैर्वस्त्रैः स्वच्छं लक्ष्म्याश्च मण्डपम्॥७४॥

नानापुष्पैः पल्लवैश्च चित्रैश्चापि विचित्रितम्।
तत्र सम्पूजयेल्लक्ष्मीं देवांश्चापि प्रपूजयेत्॥७५॥

सम्पूज्या देवनार्योऽपि बहुभिश्चोपचारकैः।
पादसंवाहनं कुर्याल्लक्ष्म्यादीनां तु भक्तितः॥७६॥

अस्मिन्नहनि सर्वेऽपि विष्णुना मोचिताः पुरा।
बलिकारागृहादेवा लक्ष्मीश्चापि विमोचिताः॥७७॥

लक्ष्म्या सार्द्धं ततो देवा जग्मुः क्षीरोदधौ पुनः।
प्रसुप्ता बहुकालं ते सुखं तस्मान्मुनीश्वराः॥७८॥

रचनीयाः सूत्रगर्भाः पर्यङ्काश्च सुतूलिकाः।
दुग्धफेनोपमैर्वस्त्रैरास्तृताश्च यथादिशम्॥७९॥

स्थापयेत्तान्सुराँल्लक्ष्मीं वेदघोषसमन्वितः।
लक्ष्मीर्देत्यभयान्मुक्ता सुखं सुप्ताम्बुजोदरे॥८०॥

अतोऽत्र विधिवत्कार्या तुष्ट्यै तु सुखसुप्तिका।
तदहि पद्मशय्यां यः पद्मासौख्यविवृद्धये॥८१॥

कुर्यात्तस्य गृहं मुक्त्वा तत्पद्मा क्वापि न ब्रजेत्।
न कुर्वन्ति नरा इत्थं लक्ष्म्या ये सुखसुप्तिकाम्॥८२॥

धनचिन्ता विहीनास्ते कथं रात्रौ स्वपन्ति हि।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन लक्ष्मीं सम्पूजयेन्नरः॥८३॥

स तु दारिद्र्यनिर्मुक्तः स्वजातौ स्यात्प्रतिष्ठितः।
जातिपत्रलंगैलात्वक्कर्पूरसमन्वितम् ॥८४॥

पाचयित्वा गव्यदुग्धं सितां दत्त्वा यथोचिताम्।
लङ्घुकांस्तस्य कुर्वीत तांश्च लक्ष्म्यै समर्पयेत्॥८५॥

अन्यच्चतुर्विधं भक्ष्यं दद्याच्छ्रीः प्रीयतामिति।
अप्रबुद्धे हरौ पूर्वं स्त्रीभिर्लक्ष्मीं प्रबोधयेत्॥८६॥

प्रबोधसमये लक्ष्मीं बोधयित्वा भुनक्ति या।
पुमान्वा वत्सरं यावल्लक्ष्मीस्तं नैव मुञ्चति॥८७॥

अभयं प्राप्य विप्रेभ्यो विष्णुभीताः सुरद्विषः।
क्षीराब्धौ तुष्टुवुर्जात्वा सुप्तां पद्माश्रितां श्रियम्॥८८॥

त्वं ज्योतिः श्रीरवीन्द्रग्निविद्युत्सौवर्णतारकाः।
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपज्योतिःस्थिते नमः॥८९॥

या लक्ष्मीर्दिवसे पुण्ये दीपावल्यां च भूतले।
गवां गोष्ठे तु कार्तिक्यां सा लक्ष्मीर्वरदा मम॥९०॥

दीपदानं ततः कुर्यात्प्रदोषे च तथोल्मुकम्।
भ्रामयेत्स्वस्य शिरसि सर्वारिष्टनिवारणम्॥९१॥

दीपवृक्षास्तथा कार्याः शक्त्या देवगृहादिषु।
चतुष्पथे श्मशाने च नदीपर्वतवेश्मसु॥९२॥

वृक्षमूलेषु गोष्ठेषु चत्वरेषु गृहेषु च।
वस्त्रैः पुष्पैः शोभितव्या राजमार्गस्य भूमयः॥९३॥

सर्वं पुरमलङ्कृत्य प्रदोषे तदनन्तरम्।
ब्राह्मणान्भोजयित्वाऽऽदौ सम्भोज्य च बुभुक्षितान्॥९४॥

अलङ्कृतेन भोक्तव्यं नववस्त्रोपशोभिना।
ततोऽपराह्णसमये घोषयेन्नगरं नृपः॥१५॥

अद्य राज्यं बलेर्लोका यथेच्छं क्रीड्यतामिति।
यथेच्छं क्रीडतां बाला इत्याज्ञाप्य नृपेण तु॥१६॥

तेभ्यो दद्यात्क्रीडनकं ततः पश्येच्छुभाशुभ्य।
बलिराज्ये प्रकर्तव्यं यद्यन्मनसि वर्तते॥१७॥

जीवहिंसा सुरापानमगम्यागमनं तथा।
चौर्यं विश्वासघातश्च पञ्चैतानि मुनीश्वराः।
बलिराज्ये तु नरकद्वाराण्युक्तानि सन्त्यजेत्॥१८॥

ततोऽर्द्धरात्रसमये स्वयं राजा व्रजेत्पुरम्।
अवलोकयितुं रम्यं पद्भ्यामेव शनैःशनैः।
बलिराज्यप्रमोदं च दृष्ट्वा स्वगृहमाव्रजेत्॥१९॥

एवं गते निशीथे च जने निद्रार्द्धलोचने।
एवं नगरनारीभिः शूर्पडिण्डिमवादनैः।
निष्कास्यते प्रदृष्टाभिरलक्ष्मीः स्वगृहाङ्गणात्॥१००॥

दण्डैकरजनीयोगे दर्शः स्यात्तु परेऽहनि।
तदा विहाय पूर्वद्युः परेऽहि सुखरात्रिका॥१०१॥

ये वैष्णवाऽवैष्णवाश्च बलिराज्योत्सवं नराः।
न कुर्वन्ति वृथा तेषां धर्माः स्युर्नात्र संशयः॥१०२॥

रात्रौ जागरणं कुर्यात्पुराणपठनादिभिः।
द्यूतेन वा हरेरग्रे गीतया वा तथैव च॥१०३॥

आदितः श्लोकाः — ६३४

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

वत्सद्वादशीयमत्रयोदशीनरकचतुर्दशीदीपावलीकृत्यवर्णनं
नाम नवमोऽध्यायः॥९॥



॥ अथ दशमोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

प्रतिपद्यथ चाऽभ्यङ्गं कृत्वा नीराजनं ततः।
सुवेषः सत्कथागीतैर्दानैश्च दिवसं नयेत्॥१॥

शङ्करस्तु पुरा द्यूतं ससर्ज सुमनोहरम्।
कार्तिके शुक्लपक्षे तु प्रथमेऽहनि सत्यवत्॥२॥

बलिराज्यदिनस्याऽपि माहात्म्यं शृणु तत्त्वतः।
स्नातव्यं तिलतैलेन नरैर्नारीभिरेव च॥३॥

यदि मोहान्न कुर्वीत स याति यमसादनम्।
पुरा कृतयुगस्यादौ दानवेन्द्रो बलिर्महान्॥४॥

तेन दत्ता वामनाय भूमिः स्वमस्तकान्विता।
तदानीं भगवान्साक्षात्तुष्टो बलिमुवाच ह॥५॥

कार्तिके मासि शुक्लायां प्रतिपद्यां यतो भवान्।
भूमिं मे दत्तवान्भक्त्या तेन तुष्टोऽस्मि तेऽनघ॥६॥

वरं ददामि ते राजन्नित्युक्त्वाऽदाद्वरं तदा।
त्वन्नाम्नैव भवेद्राजन्कार्तिकी प्रतिपत्तिथिः॥७॥

एतस्यां ये करिष्यन्ति तैलस्नानादिकार्चनम्।
तदक्षयं भवेद्राजन्नात्र कार्या विचारणा॥८॥

तदाप्रभृति लोकेऽस्मिन्प्रसिद्धा प्रतिपत्तिथिः।
प्रतिपत्पूर्वविद्धा नो कर्तव्या तु कथञ्चन॥९॥

तत्राभ्यङ्गं न कुर्वीत अन्यथा मृतिमाप्नुयात्।
प्रतिपद्यां यदा दर्शो मुहूर्तप्रमितो भवेत्॥१०॥

माङ्गल्यं तद्दिने चेत्स्याद्वित्तादिस्तस्य नश्यति।
बलेश्च प्रतिपददर्शाद्यदि विद्धं भविष्यति॥११॥

तस्यां यद्यथ चाऽऽर्तिक्यं नारी मोहात्करिष्यति।
नारीणां तत्र वैधव्यं प्रजानां मरणं ध्रुवम्॥१२॥

अविद्धा प्रतिपच्चेत्स्यान्मुहूर्तमपरेऽहनि।
उत्सवादिककृत्येषु सैव प्रोक्ता मनीषिभिः॥१३॥

प्रतिपत्स्वल्पमात्राऽपि यदि न स्यात्परेऽहनि।
पूर्वविद्धा तदा कार्या कृता नो दोषभाग्भवेत्॥१४॥

तद्दिने गृहमध्ये तु कुर्यान्मूर्तिं तदाङ्गणे।
गोमयेन च तत्रापि दधि तत्पुरतः क्षिपेत्॥१५॥

आर्तिक्यं तत्र संस्थाप्य एवं कुर्याद्विधानतः।
अभ्यङ्गं ये न कुर्वन्ति तस्यां तु मुनिपुङ्गव॥१६॥

न माङ्गल्यं भवेत्तेषां यावत्स्याद्वत्सरं ध्रुवम्।
यो यादृशेन रूपेण तस्यां तिष्ठेच्छुभे दिने॥१७॥

आवर्षं तद्भवेत्तस्य तस्मान्मङ्गलमाचरेत्।
यदीच्छेत्स्वशुभान्मोगान्मोक्तुं दिव्यान्मनोहरान्॥१८॥

कुरु दीपोत्सवं रम्यं त्रयोदश्यादिकेषु च।
शङ्करश्च भवानी च क्रीडया द्यूतमास्थिते॥१९॥

गौर्या जित्वा पुरा शम्भुर्नग्नो द्यूते विसर्जितः।
अतोऽर्थं शङ्करो दुःखी गौरी नित्यं सुखस्थिता॥२०॥

द्यूतं निषिद्धं सर्वत्र हित्वा प्रतिपदं बुधाः।
प्रथमं विजयो यस्य तस्य संवत्सरं सुखम्॥२१॥

भवान्याऽभ्यर्थिता लक्ष्मीर्धेनुरूपेण संस्थिता।
प्रातर्गोवर्द्धनः पूज्यो द्यूतं रात्रौ समाचरेत्॥२२॥

भूषणीयास्तदा गावो वर्ज्या वहनदोहनात्॥२३॥

गोवर्द्धन धराधार गोकुलत्राणकारक।
विष्णुबाहुकृतोच्छ्राय गवां कोटिप्रदो भव॥२४॥

या लक्ष्मीर्लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता।
घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु॥२५॥

अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः।
गावो मे हृदयं सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥२६॥

॥इति गोवर्द्धनपूजा॥

सद्भावेनैव सन्तोष्य देवान्सत्पुरुषान्नरान्।
इतरेषामन्नपानैर्वाक्यदानेन पण्डितान्॥२७॥

वस्त्रैस्ताम्बूलधूपैश्च पुष्पकर्पूरकुङ्कुमैः।
भक्ष्यैरुच्चावचैर्भोज्यैरन्तःपुरनिवासिनः॥२८॥

ग्राम्यान्वृषभदानैश्च सामन्तान्नृपतिर्धनैः।
पदातिजनसङ्घांश्च ग्रैवेयैः कटकैः शुभैः।
स्वनामाङ्कैश्च तान्राजा तोषयेत्सञ्जनान्पृथक्॥२९॥

यथार्थं तोषयित्वा तु ततो मल्लान्नरांस्तथा।
वृषभान्महिषांश्चैव युध्यमानान्परैः सह॥३०॥

राज्ञस्तथैव योधांश्च पदातीन्समलङ्कृतान्।
मञ्चाऽऽरूढः स्वयं पश्येन्नटनर्तकचारणान्॥३१॥

युद्धापयेद्वासयेच्च गोमहिष्यादिकं च यत्।
वत्सानाकर्षयेद्गोभिरुक्तिप्रत्युक्तिवादनात् ॥ ३२ ॥

ततोऽपराहसमये पूर्वस्यां दिशि सुव्रत।
मार्गपालीं प्रबध्नाति दुर्गस्तम्भेऽथ पादपे ॥ ३३ ॥

कुशकाशमयीं दिव्यां लम्बकैर्बहुभिः प्रिये।
वीक्षयित्वा गजानश्चान्मार्गपाल्यास्तले नयेत् ॥ ३४ ॥

गावो वृषांश्च महिषान्महिषीर्घटकोत्कटान्।
कृतहोमैर्द्विजेन्द्रैस्तु बध्नीयान्मार्गपालिकाम् ॥ ३५ ॥

नमस्कारं ततः कुर्यान्मन्त्रेणानेन सुव्रत।
मार्गपालि नमस्तुभ्यं सर्वलोकसुखप्रदे।
तले तव सुखेनाश्वा गजा गावश्च सन्तु मे ॥ ३६ ॥

मार्गपालीतले पुत्र यान्ति गावो महावृषाः।
राजानो राजपुत्राश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः ॥ ३७ ॥

मार्गपाली समुल्लङ्घ्य नीरुजः सुखिनो हि ते।
कृत्वैतत्सर्वमेवेह रात्रौ दैत्यपतेर्बलेः ॥ ३८ ॥

पूजां कुर्यात्ततः साक्षाद्भूमौ मण्डलके कृते।
बलिमालिख्य दैत्येन्द्रं वर्णकैः पञ्चरङ्गकैः ॥ ३९ ॥

सर्वाभरणसम्पूर्णं विन्ध्यावलिसमन्वितम्।
कूष्माण्डमयजम्भोरुमधुदानवसंवृतम् ॥ ४० ॥

सम्पूर्णं कृष्टवदनं किरीटोत्कटकण्डलम्।
द्विभुजं दैत्यराजानं कारयित्वा स्वके पुनः ॥ ४१ ॥

गृहस्य मध्ये शालायां विशालायां ततोऽर्चयेत्।
मातृभ्रातृजनैः सार्द्धं सन्तुष्टो बन्धुभिः सह ॥ ४२ ॥

कमलैः कुमुदैः पुष्पैः कङ्कारै रक्तकोत्पलैः।
गन्धपुष्पान्ननैवेद्यैः सक्षीरैर्गुडपायसैः॥४३॥

मद्यमांससुरालेह्यचोष्यभक्ष्योपहारकैः ।
मन्त्रेणानेन राजेन्द्र समन्त्री सपुरोहितः।
पूजां करिष्यते यो वै सौख्यं स्यात्तस्य वत्सरम्॥४४॥

बलिराज नमतुभ्यं विरोचनसुत प्रभो।
भविष्येन्द्र सुराराते पूजेयं प्रतिगृह्यताम्॥४५॥

एवं पूजाविधानेन रात्रौ जागरणं ततः।
कारयेद्वै क्षणं रात्रौ नटनृत्यकथानकैः॥४६॥

लोकश्चापि गृहस्यान्ते सपर्यां शुक्लतन्दुलैः।
संस्थाप्य बलिराजानं फलैः पुष्पैः प्रपूजयेत्॥४७॥

बलिमुद्दिश्य वै तत्र कार्यं सर्वं च सुव्रत।
यानि यान्यक्षयाण्याहुर्मुनयस्तत्त्वदर्शिनः॥४८॥

यदत्र दीयते दानं स्वल्पं वा यदि वा बहु।
तदक्षयं भवेत्सर्वं विष्णोः प्रीतिकरं शुभम्॥४९॥

रात्रौ ये न करिष्यन्ति तव पूजां बले नराः।
तेषां च श्रोत्रियो धर्मः सर्वस्त्वामुपतिष्ठतु॥५०॥

विष्णुना च स्वयं वत्स तुष्टेन बलये पुनः।
उपकारकरं दत्तमसुराणां महोत्सवम्॥५१॥

एकमेवमहोरात्रं वर्षेवर्षे च कार्तिके।
दत्तं दानवराजस्य आदर्शमिव भूतले॥५२॥

यः करोति नृपो राज्ये तस्य व्याधिभयं कुतः।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं तस्य सम्पदनुत्तमा॥५३॥

नीरुजश्च जनाः सर्वे सर्वोपद्रववर्जिताः॥५४॥

कौमुदी क्रियते यस्माद्भावं कर्तुं महीतले।
यो यादृशेन भावेन तिष्ठत्यस्यां च सुव्रत।
हर्षदुःखादिभावेन तस्य वर्षं प्रयाति हि॥५५॥

रुदिते रोदितं वर्षं प्रहृष्टे तु प्रहर्षितम्।
भुक्तौ भोग्यं भवेद्वर्षं स्वस्थे स्वस्थं भविष्यति॥५६॥

वैष्णवी दानवी चेयं तिथिः प्रोक्ता च कार्तिके॥५७॥

दीपोत्सवं जनितसर्वजनप्रमोदं
कुर्वन्ति ये शुभतया बलिराजपूजाम्।
दानोपभोगसुखबुद्धिमतां कुलानां
हर्षं प्रयाति सकलं प्रमुदा च वर्षम्॥५८॥

बलिपूजां विधायैवं पश्चाद्गोक्रीडनं चरेत्॥५९॥

गवां क्रीडादिने यत्र रात्रौ दृश्येत चन्द्रमाः।
सोमो राजा पशून्हन्ति सुरभीपूजकांस्तथा॥६०॥

प्रतिपद्दर्शसंयोगे क्रीडनं तु गवां मतम्।
परविद्धासु यः कुर्यात्पुत्रदारधनक्षयः॥६१॥

अलङ्कार्यास्तदा गावो गोग्रासादिभिरर्चिताः।
गीतवादित्रनिर्घोषैर्नयेन्नगरबाह्यतः ।
आनीय च ततः पश्चात्कुर्यान्नीराजनाविधिम्॥६२॥

अथ चेत्प्रतिपत्स्वल्पा नारी नीराजनं चरेत्।
द्वितीयायां ततः कुर्यात्सायं मङ्गलमालिकाः॥६३॥

एवं नीराजनं कृत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।
प्रतिपत्पूर्वविद्धैव यष्टिकाकर्षणे भवेत्॥६४॥

कुशकाशमयीं कुर्याद्यष्टिकां सुदृढां नवाम्।
देवद्वारे नृपद्वारेऽथवाऽऽनेया चतुष्पथे॥६५॥

तामेकतो राजपुत्रा हीनवर्णास्तथैकतः।
गृहीत्वा कर्षयेयुस्ते यथासारं मुहुर्मुहुः॥६६॥

समसङ्ख्या द्वयोः कार्या सर्वेऽपि बलवत्तराः।
जयोऽत्र हीनजातीनां जयो राज्ञस्तु वत्सरम्॥६७॥

उभयोः पृष्ठतः कार्या रेखा तत्कर्षकोपरि।
रेखान्ते यो नयेत्तस्य जयो भवति नान्यथा॥६८॥

जयचिह्नमिदं राजा निदधीत प्रयत्नतः॥६९॥

आदितः श्लोकाः — ७०३

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
कार्तिकशुक्लप्रतिपन्माहात्म्यवर्णनं
नाम दशमोऽध्यायः॥१०॥



॥ अथ नामैकादशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

भगवन्प्रष्टुमिच्छामि त्वामहं विनयान्वितः।
तद्व्रतं ब्रूहि मे मर्त्यो मृत्युं येन न पश्यति॥१॥

ब्रह्मोवाच

यदि पृच्छसि विप्रेन्द्र व्रतानामुत्तमं व्रतम्।
व्रतं यमद्वितीयाख्यं शृणु त्वं मृत्युनाशनम्॥२॥

कार्तिके मासि शुद्धायां द्वितीयायां मुनीश्वर।
कर्तव्यं तद्विधानेन सर्वमृत्युनिवारणम्॥३॥

ब्राह्मे मुहूर्ते चोप्याय द्वितीयायां मुनीश्वर।
मनसा चिन्तयेदात्महितं नैवाहितं स्मरेत्॥४॥

प्रातःस्नानं ततः कुर्यादन्तधावनपूर्वकम्॥ ततः शुक्लाम्बरधरः
शुक्लमाल्यानुलेपनः॥५॥

कृतनित्यक्रियो हृष्टः कुण्डलाङ्गदभूषितः।
औदुम्बर तरुं गत्वा कृत्वा मण्डलमुत्तमम्॥५॥

पद्ममष्टदलं कृत्वा तस्मिन्नौदुम्बरे शुभे।
विधिं विष्णुं च रुद्रं च वरदां च सरस्वतीम्॥६॥

वीणापुस्तकसंयुक्तां पूजयेत्स्वस्थमानसः।
चन्दनागरुकस्तूरीकुङ्कुमैर्द्विजसत्तम ॥७॥

पुष्पैर्धूपैश्च नैवेद्यैर्नारिकेलफलादिभिः।
ततो मृत्युविनाशाथ सालङ्कारां पयस्विनीम्॥८॥

विप्राय वेदविदुषे गां दद्याच्च सवत्सकाम्।
अपमृत्युविनाशार्थं संसारार्णवतारकाम्॥९॥

हे विप्र ते त्विमां सौम्यां धेनुं सम्प्रददाम्यहम्।
इति मन्त्रेण गां दद्याद्विप्राय ब्रह्मवादिने॥१०॥

तदलाभे तु विप्राय भक्त्या दद्यादुपानहौ।
ततः पूजां समाप्याथ भक्तिमान्पुरुषोत्तमे॥११॥

ज्ञातिश्रेष्ठान्वयोवृद्धान्सम्यग्भक्त्याऽभिवादयेत्।
नानाविधैः फलै रम्यैस्तर्प्येत्स्वजनानपि॥१२॥

ततः सोदरसम्पन्ना भगिनी या भवेन्मुने।
तस्या गृहं समागत्य सम्यग्भक्त्याऽभिवादयेत्॥१३॥

भगिनि सुभगे भद्रे त्वदङ्घ्रिसरसीरुहम्।
श्रेयसेऽथ नमस्कर्तुमागतोऽस्मि तवालयम्॥१४॥

इत्युक्त्वा भगिनीं तां तु विष्णुबुद्ध्याऽभिवादयेत्।
तदा तु भगिनी श्रुत्वा भ्रातुर्वचनमुत्तमम्॥१५॥

भगिन्या भ्रातरं वाक्यं वक्तव्यं प्रति नारद।
अद्य भ्रातरहं जाता त्वत्तो धन्याऽस्मि मङ्गला॥१६॥

भोक्तव्यं तेऽद्य मद्गृहे स्वायुषे कुलदीपक।
कार्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीयायां सहोदर॥१७॥

यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहेर्चितः।
अस्मिन्दिने यमेनापि नारकीयाश्च मोचिताः।
अपि बद्धाः कर्मपाशैः स्वेच्छया पर्यटन्ति ते॥१८॥

स्वसुर्नरो वेश्मनि यो न भुङ्के
यमद्वितीयादिनमत्र लब्ध्वा।
तं पापिनं प्राप्य वयं सुहृष्टाः
प्रभक्षयामोऽद्य च भक्ष्यहीनाः॥१९॥

इति पापा रटन्तीह ब्रह्महत्यादयस्तथा।
तस्माद्भ्रातर्मद्गृहे तु भोजनं कुरु कार्तिके॥२०॥

शुक्लायां तु द्वितीयायां विश्रुतायां जगत्रये।
अस्यां निजगृहे पुत्र भुज्यते न बुधैरपि॥२१॥

इत्युक्तः स तथेत्युक्त्वा भगिनीं पूजयेद्व्रती।
प्रहर्षास्तुमहाभाग वस्त्रालङ्कारभूषणैः॥२२॥

अग्रजामभिवन्द्याऽथ आशिषं च प्रगृह्य च।
सर्वा भगिन्यः सन्तोष्या वस्त्रालङ्कारदानतः॥२३॥

अभावे स्वस्य तु स्वसुः पितृव्याः स्वपितुः स्वसा।
तस्या गृहं समागत्य कुर्याद्भोजनमादरात्॥२४॥

एवं यः कुरुते पुत्र द्वितीयां यमनामिकाम्।
अपमृत्युविनिर्मुक्तः पुत्रपौत्रादिभिर्वृतः॥२५॥

इह भुक्त्वा तु विपुलान्भोगानन्यान्यथेप्सितान्।
अन्ते मोक्षमवाप्नोति नान्यथा मद्वचो भवेत्॥२६॥

व्रतान्येतानि सर्वाणि दानानि विविधानि च।
गृहस्थस्यैव युज्यन्ते तस्माद्गार्हस्थ्यमाश्रयेत्॥२७॥

कथां यमद्वितीयाया व्रतस्थः शृणुयान्नरः।
तस्य सर्वाणि पापानि नश्यन्तीत्याह माधवः॥२८॥

सूत उवाच

कार्तिके च द्वितीयायां पूर्वाह्णे यममर्चयेत्।
भानुजायां नरः स्नात्वा यमलोकं न पश्यति॥२९॥

कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायां तु शौनक।
यमो यमुनया पूर्वं भोजितः स्वगृहेऽर्चितः॥३०॥

द्वितीयायां महोत्सर्गो नारकीयाश्च तर्पिताः।
पापेभ्यो विप्रयुक्तास्ते मुक्ताः सर्वे निबन्धनात्॥३१॥

अत्राऽऽशिताश्च सन्तुष्टाः स्थिताः सर्वे यदृच्छया।
तेषां महोत्सवो वृत्तो यमराष्ट्रसुखावहः॥३२॥

अतो यमद्वितीयेयं त्रिषु लोकेषु विश्रुता।
तस्मान्निजगृहे विप्र न भोक्तव्यं ततो बुधैः॥३३॥

स्नेहेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं बलवर्धनम्।
ऊर्जे शुक्लद्वितीयायां पूजितस्तर्पितो यमः॥३४॥

महिषासनमारूढो दण्डमुद्गरभृत्प्रभुः।
वेष्टितः किङ्करैर्हृष्टैस्तस्मै याम्यात्मने नमः॥३५॥

यैर्भगिन्यः सुवासिन्यो वस्त्रदानादितोषिताः।
न तेषां वत्सरं यावत्कलहो न रिपोर्भयम्॥३६॥

धन्यं यशस्यमायुष्यं धर्मकामार्थसाधनम्।
व्याख्यातं सकलं पुत्र सरहस्यं मयाऽनघ॥३७॥

यस्यां तिथौ यमुनया यमराजदेवः
सम्भोजितः प्रतितिथौ स्वसृसौहृदेन।
तस्मात्स्वसुः करतलादिह यो भुनक्ति
प्राप्नोति वित्तशुभसम्पदमुत्तमां सः॥३८॥

सूत उवाच

विशेषश्चात्र सम्प्रोक्तो वालखिल्यैर्महर्षिभिः।
तदहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुध्वं मुनिसत्तमाः॥३९॥

वालखिल्या ऊचुः

कार्तिकस्य सिते पक्षे द्वितीया यमसंज्ञिता।
तत्राऽपराहे कर्तव्यं सर्वथैव यमार्चनम्॥४०॥

प्रत्यहं यमुनाऽऽगत्य यमं सम्प्रार्थयत्पुरा।
भ्रातर्मम गृहे याहि भोजनार्थं गणावृतः॥४१॥

अद्यश्वो वा परश्वो वा प्रत्यहं वदते यमः।
कार्यव्याकुलचित्तानामवकाशो न जायते॥४२॥

तदैकदा यमुनया बलात्कारान्निमन्त्रितः।
स गतः कार्तिके मासि द्वितीयायां मुनीश्वराः॥४३॥

नारकीयजनान्मुक्त्वा गणैः सह रवेः सुतः।
कृताऽऽतिथ्यो यमुनया नानापाकाः कृताः खगः॥४४॥

कृताभ्यङ्गो यमुनया तैलैर्गन्धमनोहरैः।
उद्वर्तनं लापयित्वा स्नापितः सूर्यनन्दनः॥४५॥

ततोऽलङ्कारकं दत्तं नानावस्त्राणि चन्दनम्।
माल्यानि च प्रदत्तानि मञ्चोपरि उपाविशत्॥४६॥

पक्वान्नानि विचित्राणि कृत्वा सा स्वर्णभाजने।
यमायाभोजयद्देवी यमुना प्रीतमानसा॥४७॥

भुक्त्वा यमोऽपि भगिनीमलङ्कारैः समर्चयत्।
नानावस्त्रैस्ततः प्राह वरं वरय भामिनि।
इति तद्वचनं श्रुत्वा यमुना वाक्यमब्रवीत्॥४८॥

यमुनोवाच

प्रतिवर्षं समागच्छ भोजनार्थं तु मद्गृहे॥४९॥

अद्य सर्वे मोचनीयाः पापिनो नरकाद्यम्।
येऽद्यैव भगिनीहस्तात्करिष्यन्ति च भोजनम्।
तेषां सौख्यं प्रदेहि त्वमेतदेव वृणोम्यहम्॥५०॥

यम उवाच

यमुनायां तु यः स्नात्वा सन्तर्प्य पितृदेवताः॥५१॥

भुङ्क्ते च भगिनीगेहे भगिनीं पूजयेदपि।
कदाचिदपि मद्भारं न स पश्यति भानुजे॥५२॥

वीरेशैशानदिग्भागे यमतीर्थं प्रकीर्तितम्।
तत्र स्नात्वा च विधिवत्सन्तर्प्य पितृदेवताः॥५३॥

पठेदेतानि नामानि आमध्याह्नं नरोत्तमः।
सूर्यस्याभिमुखो मौनी हृतचित्तः स्थिरासनः॥५४॥

यमो निहन्ता पितृधर्मराजो
वैवस्वतो दण्डधरश्च कालः।
भूताधिपो दत्तकृतानुसारी
कृतान्तमेतद्दशभिर्जपन्ति ॥५५॥

ततो यमेश्वरं पूज्य भगिनीगृहमाव्रजेत्।
मन्त्रेणानेन च तया भोजितः पूर्वमादरात्॥५६॥

भ्रातस्तवानुजाताऽहं भुङ्क्ष्व भक्तमिदं शुभम्।
प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥५७॥

ततः सन्तोष्य भगिनीं वस्त्रालङ्कारणादिभिः।
स्वप्नेऽपि यमलोकस्य भविष्यति न दर्शनम्॥५८॥

नृपैः कारागृहे ये च स्थापिता मम वासरे।
अवश्यं ते प्रेषणीया भोजनार्थं स्वसुगृहे॥५९॥

विमोक्तव्या मया पापा नरकेभ्योऽद्य वासरे।
येऽद्य बन्दी करिष्यन्ति ते ताड्या मम सर्वथा॥६०॥

कनीयसी स्वसा नास्ति तदा ज्येष्ठागृहं व्रजेत्।
तदभावे सपत्यायाः पितृव्यजागृहे ततः॥६१॥

तदभावे मातृष्वसुर्मातुलस्याऽऽत्मजा तथा।
सापत्नगोत्रसम्बन्धैः कल्पयेदथवा क्रमम्॥६२॥

सर्वाभावे माननीया भगिनी काचिदेव हि।
गोनद्याद्यथवा तस्या अभावे सति कारयेत्॥६३॥

तदभावेऽप्यरण्यानीं कल्पयित्वा सहोदराम्।
अस्यां निजगृहे देवि न भोक्तव्यं कदाचन॥६४॥

ये भुञ्जते दुराचारा नरके ते पतन्ति च।
एवमुक्त्वा धर्मराजो ययौ संयमिनीं ततः॥६५॥

तस्मादृषिवराः सर्वे कार्तिकव्रतकारिणः।
भुञ्जते भगिनीहस्तात्सत्यं सत्यं न संशयः॥६६॥

यमद्वितीयां यः प्राप्य भगिनीगृहभोजनम्।
न कुर्याद्वर्षजं पुण्यं नश्यतीति रवेः श्रुतिः॥६७॥

या तु भोजयते नारी भ्रातरं भ्रातृके तिथौ।
अर्चयेच्चापि ताम्बूलैर्न सा वैधव्यमाप्नुयात्॥६८॥

भ्रातुरायुःक्षयो नूनं न भवेत्तत्र कर्हिचित्।
अपराहव्यापिनी सा द्वितीया भ्रातृभोजने॥६९॥

अज्ञानाद्यदि वा मोहान्न भुक्तं भगिनीगृहे।
प्रवासिना ह्यभावाद्वा ज्वरितेनाथ बन्दिना॥७०॥

एतदाख्यानकं श्रुत्वा भोजनस्य फलं भवेत्।
कार्तिके तु विशेषेण धात्रीछायां समाश्रितः॥७१॥

भोजनं कुरुते यस्तु स वैकुण्ठमवाप्नुयात्॥७२॥

आदितः श्लोकाः — ७७५

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
यमद्वितीयामाहात्म्यवर्णनं
नामैकादशोऽध्यायः॥११॥



॥ अथ द्वादशोऽध्यायः ॥

शौनक उवाच

कार्तिकस्य च माहात्म्यं महत्पुण्यफलप्रदम्।
कदा धात्री समुत्पन्ना कथं सा ख्यातिमागता॥१॥

कस्मादियं पवित्रा च कस्मात्पापप्रणाशिनी।
आमर्दकी कृता केन कथयस्वात्र विस्तरात्॥२॥

सूत उवाच

कथयामि द्विजश्रेष्ठ यथा चेयं हि पुण्यदा।
ऊर्जशुक्लचतुर्दश्यां धात्रीपूजां समाचरेत्॥३॥

आमर्दकीमहावृक्षः सर्वपापप्रणाशनः।
वैकुण्ठाख्यचतुर्दश्यां धात्रीछायां गतो नरः॥४॥

पूजयेत्तत्र देवेशं राधया सहितं हरिम्।
प्रदक्षिणां ततः कुर्याच्छतमष्टोत्तरं तथा॥५॥

सुवर्णरजतैर्वापि फलैरामलकैस्तथा।
शतमष्टोत्तरं कुर्यादेकैकेन प्रदक्षिणाम्॥६॥

साष्टाङ्गं प्रणतो भूत्वा प्रार्थयेत्परमेश्वरम्।
धात्रीछायां समाश्रित्य शृणुयाच्च कथामिमाम्॥७॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्यथाशक्त्या च दक्षिणाम्।
ब्राह्मणेषु च तुष्टेषु तुष्टो मोक्षप्रदो हरिः॥८॥

अत्र ते कथयिष्यामि कथां पुण्यफलप्रदाम्।
आमर्दकीफलं वक्तुं ब्रह्मा चापि न पार्यते॥९॥

एकार्णवे पुरा जाते नष्टे स्थावरजङ्गमे।
नष्टे देवासुरगणे प्रणष्टोरगराक्षसे॥१०॥

तत्र देवाधिदेवेशः परमात्मा सनातनः।

जजाप ब्रह्म परममात्मनः परमाव्ययम्॥११॥

ततोऽस्य ब्रह्म जपतो निरगाच्छ्वसितं पुरः।

तद्दर्शनानुरागेण नेत्राभ्यामगमञ्जलम्॥१२॥

प्रेमाश्रुभरनिर्भिन्नो भूमौ बिन्दुः पपात सः।

तस्माद्विन्दो समुत्पन्नः स्वयं धात्री नगो महान्॥१३॥

शाखाप्रशाखाबहुलः फलभारेण पीडितः।

सर्वेषामेव वृक्षाणामादिरोहः प्रकीर्तितः॥१४॥

ब्रह्मा तमसृजत्पूर्वं तत्पश्चाच्चासृजत्प्रजाः।

देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगान् ॥१५॥

असृजद्भगवान्देवो मानुषांश्च तथामलान्।

आजग्मुस्तत्र देवास्ते यत्र धात्री हरिप्रिया॥१६॥

तां दृष्ट्वा ते महाभागाः परमं विस्मयं गताः।

न जानीम इमं वृक्षं चिन्तयन्तो मुहुर्मुहुः॥१७॥

एवं चिन्तयतां तेषां वागुवाचाशरीरिणी।

आमर्दकी नगो ह्येष प्रवरो वैष्णवो यतः॥१८॥

अस्य वै स्मरणादेव लभेद्भोदानजं फलम्।

दर्शनाद्विगुणं पुण्यं त्रिगुणं भक्षणात्तथा॥१९॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सेव्या आमर्दकी सदा।

सर्वपापहरा प्रोक्ता वैष्णवी पापनाशिनी॥२०॥

तस्या मूले स्थितो विष्णुस्तदूर्ध्वं च पितामहः।

स्कन्धे च भगवान्नुद्रः संस्थितः परमेश्वरः॥२१॥

शाखासु सवितारश्च प्रशाखासु च देवताः।
पर्णेषु देवताः सन्ति पुष्पेषु मरुतस्तथा॥२२॥

प्रजानां पतयः सर्वे फलेष्वेवं व्यवस्थिताः।
सर्वदेवमयी ह्येषा धात्री वै कथिता मया॥२३॥

अतः सा पूजनीया च सर्वकामार्थसिद्धये।
एकदा नारदो योगी ब्रह्मणः पुरतः स्थितः।
नमस्कृत्वा जगन्नाथं पप्रच्छातीव विस्मितः॥२४॥

श्रीनारद उवाच

यथा प्रियं सुतुलसीकाननं सर्वदा हरेः।
तथा धात्रीवनं मासे कार्तिके श्रीहरिप्रियम्॥२५॥

ब्रह्मोवाच

धात्रीवने हरेः पूजा धात्री छायासु भोजनम्।
कार्तिके मासि यः कुर्यात्तस्य पापं विनश्यति॥२६॥

तीर्थानि मुनयो देवा यज्ञाः सर्वेऽपि कार्तिके।
नित्यं धात्रीं समाश्रित्य तिष्ठन्त्यर्के तुलास्थिते॥२७॥

यत्किञ्चित्कुरुते पुण्यं धात्रीछायासु मानवः।
तत्कोटिगुणितं भूयान्नात्र कार्या विचारणा॥२८॥

अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्॥२९॥

अयोध्यानगरे कश्चिद्वैश्यश्चासीद्विजोत्तम।
पुत्रदारविहीनश्च दैवाद्दारिद्र्यपीडितः॥३०॥

भिक्षया चोदराग्निं स शमयामास नारद।
कदाचिद्वणिजो वैश्यो ययाचे क्षुत्प्रपीडितः॥३१॥

भिक्षाप्तचणकान्गृह्य धात्रीछायामगात्किल।
तत्र तान्भक्षयामास कार्तिके मासि नारद॥३२॥

केचिदुर्वरितास्तेषु चणकास्तत्र नारद।
वैश्येन तेन दत्ता हि क्षुत्क्षामाय द्विजातये॥३३॥

तेन पुण्यप्रभावेन राजाऽऽसीद्धनिकः क्षितौ।
तस्माद्दानं प्रकर्तव्यं कार्तिके मासि सर्वदा॥३४॥

धात्रीवने मुनिश्रेष्ठ सर्वकामार्थसिद्धये।
धात्रीछायां समाश्रित्य कार्तिके च हरेः कथाम्।
यः शृणोति स पापेभ्यो मुच्यते द्विजसूनुवत्॥३५॥

नारद उवाच

कोऽभूद्विजसुतो ब्रह्मन्किं पापं कृतवान्पुरा।
तस्य जाता कथं मुक्तिरेतद्विस्तरतो वद॥३६॥

ब्रह्मोवाच

पुरा द्विजवरश्चासीत्कावेर्या उत्तरे तटे॥३७॥

देवशर्मेति विख्यातो वेदवेदाङ्गपारगः।
तस्य पुत्रो दुराचारस्तमाह च पिता हितम्॥३८॥

इदानीं कार्तिको मासो वर्तते हरिवल्लभः।
तत्र स्नानं च दानं च व्रतानि नियमान्कुरु॥३९॥

तुलसीपुष्पसहितां कुरुपूजां हरेः सुत।
दीपदानं च विविधं नमस्कारं प्रदक्षिणाम्॥४०॥

एवं पितुर्वचः श्रुत्वा पुत्रः क्रोधसमन्वितः।
पितरं प्राह दुष्टात्मा चलदोष्टो विनिन्दयन्॥४१॥

पुत्र उवाच

न करिष्याम्यहं तात कार्तिके पुण्यसङ्ग्रहम्।
इति पुत्रवचः श्रुत्वा सक्रोधः प्राह तं सुतम्॥४२॥

मूषको भव दुर्बुद्धे वने वृक्षस्य कोटरे।
इति शापभयाद्भीतो नत्वा पितरमब्रवीत्॥४३॥

दुर्योनेर्मम मुक्तिः स्यात्कथं तद्वद मे गुरो।
इति प्रसादितो विप्रः प्राह निष्कृतिकारणम्॥४४॥

यदोर्ज्व्रतजं पुण्यं शृणोषि हरिवल्लभम्।
तदा ते भविता मुक्तिस्तत्कथाश्रवणात्सुत॥४५॥

स पित्रा चैवमुक्तस्तु तत्क्षणान्मूषकोऽभवत्।
बहुवर्षसहस्राणि गह्वरे विपिने वसन्॥४६॥

एकदा कार्तिके मासि विश्वामित्रः सशिष्यकः।
स्नात्वा नद्यां हरिं चार्च्य धात्रीछायां समाश्रितः॥४७॥

कथयामास माहात्म्यं शिष्येभ्यश्चोर्ज्व्रसम्भवम्।
तदा कश्चिदुराचारो व्याधोऽगान्मृगयां चरन्॥४८॥

दृष्ट्वा ऋषिगणान्हन्तुं कृतेच्छः प्राणिघातकः।
तेषां दर्शनमात्रेण सुबुद्धिरभवत्तदा॥४९॥

अथोवाच द्विजान्नत्वा भवद्भिः क्रियतेऽत्र किम्।
तेनैवमुक्तो विप्रेन्द्रो विश्वामित्रस्तमब्रवीत्॥५०॥

विश्वामित्र उवाच

सर्वेषामेव मासानां कार्तिकः श्रेष्ठ उच्यते।
तस्मिन्यत्क्रियते कर्म वर्धते वटबीजवत्॥५१॥

कार्तिके मासि यः कुर्यात्स्नानं दानं च पूजनम्।
विप्राणां भोजनं चैव तदक्षय्यफलं भवेत्॥५२॥

व्याधप्रयुक्तमाकर्ण्य धर्मं च ऋषिणा द्विजः।
मौषकं देहमुत्सृज्य दिव्यदेहोऽभवत्तदा॥५३॥

विश्वामित्रं प्रणम्याथ स्ववृत्तान्तं निवेद्य च।
अनुज्ञातोऽथ ऋषिणा विमानस्थो दिवं ययौ॥५४॥

विस्मितो गाधिपुत्रस्तु व्याधश्चैव विशेषतः।
व्याधोऽप्यूर्जव्रतं कृत्वा जगाम हरिमन्दिरम्॥५५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कार्तिके केशवाग्रतः।
धात्रीछायां समाश्रित्य कथाश्रवणमाचरेत्॥५६॥

मूषकोऽपि च दुर्योनेर्मुक्त ऊर्जकथाश्रुतेः।
शृणुयाच्छ्रावयेद्यो वा मुक्तिभागी न संशयः॥५७॥

धात्रीछायां समाश्रित्य वनभोजनमाचरेत्।
आदौ कृत्वा तथा स्नानमुदके वनसंस्थिते।
कृत्वा कर्माणि नित्यानि माधवं पूजयेत्ततः॥५८॥

धात्रीछायां समाश्रित्य हरौ भक्तिसमन्वितः।
शृणुयाच्च कथां दिव्यां मासमाहात्म्यशंसनीम्॥५९॥

ततस्तु ब्राह्मणान्भक्त्या भोजयेद्ब्रह्मवित्तमान्।
ततो भुञ्जीत विप्रेन्द्र स्वयं हरिमनुस्मरन्॥६०॥

एवङ्कृते व्रते विप्र कार्तिके हरिवल्लभे।
यत्पापं नश्यते पुत्र सावधानमना शृणु॥६१॥

हरेर्नार्पितभोगाच्च भोजने सूर्यदर्शनात्।
रजस्वलावाक्छ्रवणपापाद्भोजनके तथा॥६२॥

भोजनावसरे चान्यस्पर्शदोषस्तु यद्भवेत्।
निषिद्धभोजनात्तस्माद्भोजने चान्नदूषणात्॥६३॥

शुद्धस्यापि तथा त्यागात्पुण्यकाले हरिप्रिये।
एतैर्यत्साधितं पापं तत्सर्वं नश्यति ध्रुवम्॥६४॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन धात्र्यां भोजनमाचरेत्॥६५॥

कार्तिके मासि वै विप्रो धात्रीमालां तु यो वहेत्।
तथैव तुलसीमालां तस्य पुण्यमनन्तकम्॥६६॥

धात्रीछायां समाश्रित्य दीपमालार्पणं नरः।
करिष्यति विशेषेण तस्य पुण्यमनन्तकम्॥६७॥

राधादामोदरौ पूज्यौ तुलस्यधो विशेषतः।
तुलस्यभावे कर्तव्या पूजा धात्रीतले शुभा॥६८॥

धात्रीछायातले येन सकृद्भुक्तं तु कार्तिके।
दम्पत्योर्भोजनं दत्तमन्नदोषात्प्रमुच्यते॥६९॥

सम्पूर्णे कार्तिके यस्तु सम्पूज्यामलकीं शुभाम्।
राधादामोदरप्रीत्यै भोजयित्वा च दम्पती।
पश्चात्स्वयं तु भुञ्जीत न श्रीस्तस्य क्षयं व्रजेत्॥७०॥

यः कश्चिद्वैष्णवो लोके धत्ते धात्रीफलं मुने।
प्रियो भवति देवानां मनुष्याणां च का कथा॥७१॥

धात्रीफलविलिप्ताङ्गो धात्रीफलसमन्वितः।
धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत्॥७२॥

धात्रीफलानि यो नित्यं वहते करसम्पुटे।
तस्य नारायणो देवो वरमिष्टं प्रयच्छति॥७३॥

श्रीकामः सर्वदा स्नानं कुर्यादामलकैर्नरः।
तुष्यत्यामलकैर्विष्णुरेकादश्यां विशेषतः॥७४॥

नवम्यां दर्शे सप्तम्यां सङ्क्रान्तौ रविवासरे।
चन्द्रसूर्योपरागे च स्नानमामलकैस्त्यजेत्॥७५॥

धात्रीछायां समाश्रित्य कुर्यात्पिण्डं त यो नरः।
प्रयान्ति पितरो मुक्तिं प्रसादान्माधवस्य तु॥७६॥

मूर्ध्नि पाणौ मुखे चैव बाह्वोः कण्ठे तु यो नरः।
धत्ते धात्रीफलं वत्स धात्रीफलविभूषितः॥७७॥

यावल्लुठति कण्ठस्था धात्रीमाला नरस्य हि।
तावत्तस्य शरीरे तु प्रीत्या लुण्ठति केशवः॥७८॥

धात्रीफलं च तुलसी मृत्तिका द्वारकोद्धवा।
सफलं जीवितं तस्य त्रितयं यस्य वेश्मनि॥७९॥

यावद्दिनानि वहते धात्रीमालां कलौ नरः।
तावद्युगसहस्राणि वैकुण्ठे वसतिर्भवेत्॥८०॥

मालायुग्मं वहेद्यस्तु धात्रीतुलसिसम्भवम्।
यो नरः कण्ठदेशे तु कल्पकोटिं दिवं वसेत्॥८१॥

धात्रीछायां गतो यस्तु द्वादश्यां पूजयेद्धरिम्।
तत्रैव भोजनं यस्तु ब्राह्मणानां च कारयेत्॥८२॥

स्वयं च तत्र भुङ्क्ते यः सूपभक्षादिकं तथा।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि॥८३॥

तुलस्याश्चैव धात्र्याश्च फलैः पत्रैर्हरिं यजेत्॥८४॥

तुलसी धात्रीयुक्ता हि सित्ते सति च कार्तिके।
विलयं यान्ति पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च॥८५॥

धर्मदत्तो द्विजः पूर्वं यथा मुक्तिमवाप ह॥८६॥

नारद उवाच

कार्तिके मासि सा सेव्या पूजनीया सदा नरैः।
चातुर्मास्ये न सेव्या सा इत्युक्तं भवता पुरा।
तस्मात्सर्वमशेषेण कथयस्व ममाग्रतः॥८७॥

ब्रह्मोवाच

कार्तिके मासि विप्रर्षे शुक्ला या दशमी शुभा।
तद्दिनाऽऽरभ्य सा सेव्या दैवे पित्र्ये च कर्मणि।
दशम्यारभ्य तत्पत्रैः फलकैर्मधुसूदनम्॥८८॥

पूजयन्ति नरा ये वै ते वै वैकुण्ठगामिनः।
समाप्ते कार्तिकव्रते वनभोजनमाचरेत्॥८९॥

दशम्यां वाऽथ द्वादश्यां पौर्णमास्यामथापि वा।
पञ्चम्यां वा महाभाग वनभोजनमाचरेत्॥९०॥

सर्वोपस्करसंयुक्तो वृद्धबालैश्च संयुतः।
वनं प्रवेशयेद्धीमान्धात्रीवृक्षैः सुशोभितम्॥९१॥

चूतैर्बकैस्तथाऽश्वत्थैः पिचुमन्दैः कदम्बकैः।
न्यग्रोधतिन्तिणीवृक्षैः समन्तात्परिशोभितम्॥९२॥

तत्र गत्वा महाप्राज्ञ पुण्याहं कारयेत्पुरा।
वास्तुपीठं तथा पूज्यं धात्रीमूले तु कारयेत्॥९३॥

वेदिकां चतुरस्रां च हस्तमात्रायतां शुभाम्।
तथोपवेदिकां कृत्वा वेदिकाग्रे महामते॥९४॥

उपवेशाय देवस्य ह्यलं कार्यं तु धातुभिः।
वेदिकापश्चिमेभागे कारयेत्कुण्डमण्डपम्॥९५॥

मेखलात्रयसंयुक्तं पिप्पलच्छदसंयुतम्।
हस्तमात्रायतं सौम्य एवं कुण्डं तु कारयेत्॥१६॥

पश्चात्स्नात्वा ततो जप्त्वा देवपूजां समाचरेत्।
पश्चादग्निं समाधाय होमं कुर्याद्यथाविधि॥१७॥

पायसाऽऽज्यगुडसूपपालाशसमिधा तथा।
ग्रहाणां वास्तुदेवेभ्यश्चरुं कृत्वा प्रयत्नतः॥१८॥

धात्री शान्तिस्तथा कान्तिर्माया प्रकृतिरेव च।
विष्णुपत्नी महालक्ष्मी रमा मा कमला तथा॥१९॥

इन्दिरा लोकमाता च कल्याणी कमला तथा।
सावित्री च जगद्धात्री गायत्री सुधृतिस्तथा॥१००॥

अन्तर्ज्ञा विश्वरूपा च सुकृपा ह्यब्धिसम्भवा।
प्रधानदेवताभिस्तु रक्षाहोमं समारभेत्॥१०१॥

संसृष्टेति च मन्त्रेण ऋषभं मेति मन्त्रतः।
अपूपं गुडसूपाभ्यां संयुतं जुहुयाद्धविः॥१०२॥

अष्टोत्तरशतं हुत्वा मूलमन्त्रेण पायसम्।
ततो ग्रहादि देवांस्तु यथासङ्ख्येन होमयेत्॥१०३॥

धात्रीहोमे महाप्राज्ञ रक्षाहोमे तु पायसम्।
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा बलिदानं समाचरेत्॥१०४॥

इन्द्रादि लोकपालांश्च रक्षा पूज्या प्रयत्नतः।
धात्रीवृक्षस्य सर्वत्र वेदिकासंयुतस्य च॥१०५॥

सूपेन गुडमिश्रेण बलिं पश्चान्निवेदयेत्।
देवि धात्रि नमस्तुभ्यं गृहाण बलिमुत्तमम्॥१०६॥

मिश्रितं गुडसूपाभ्यां सर्वमङ्गलदायिनि।
पुत्रान्देहि महाप्राज्ञान्यशो देहि शुभप्रदम्॥१०७॥

प्रज्ञां मेधां च सौभाग्यं विष्णुभक्तिं च देहि मे।
नीरोगं कुरु मे नित्यं निष्पापं कुरु सर्वदा॥१०८॥

वर्चस्कं कुरु मां देवि धनवन्तं तथा कुरु।
इति तां प्रार्थयेद्देवीं प्रादक्षिण्याद्वलिं न्यसेत्॥१०९॥

बलिप्रदानकाले तु ये कुर्वन्ति प्रदक्षिणम्।
ते यान्ति विष्णुसालोक्यं पितृभिः सार्द्धमेव च॥११०॥

ततः पूर्णाहुतिं कृत्वा होमशेषं समापयेत्॥१११॥

धात्रीवृक्षस्य मूलस्थं मन्दस्मितरमापतिम्।
ते यान्ति विष्णुसायुज्यं ये पश्यन्तीह चक्षुषा॥११२॥

वैश्वदेवं ततः कृत्वा पूजयेद्वनदेवताः।
गन्धाक्षतांस्ततो दत्त्वा विप्रेभ्यः पद्मसम्भव॥११३॥

ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुञ्जीत बन्धुभिः।
गृहं प्रवेशयेत्पश्चाद्बुद्धान्बालादिकैः सह॥११४॥

ब्रह्मचारी भवेद्रात्रौ क्षितिशायी भवेत्ततः।
ग्रामस्थैश्च मिलित्वा च स्वयं वा कारयेद्बुधः॥११५॥

सर्वपापविमुक्त्यर्थं वनभोजनमुत्तमम्।
कृत्वैवं सकलं कर्म कृष्णाय च समर्पयेत्॥११६॥

अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतस्य च।
यत्फलं समवाप्नोति तत्फलं वनभोजने॥११७॥

अतो धात्री महाभाग पवित्रा पापनाशनी।
धात्री चैव नृणां धात्री धात्रीवत्कुरुते क्रियाम्॥११८॥

ददात्यायुः पयःपानात्स्नानाद्वै धर्मसञ्चयम्।
अलक्ष्मीनाशनं स्नानमात्रैर्निर्वाणमाप्नुयात्।
विघ्नानि नैव जायन्ते धात्रीस्नानेन वै नृणाम्॥११९॥

तस्मात्त्वं कुरु विप्रेन्द्र धात्रीस्नानं हि यत्नतः।
प्रयास्यसि हरेर्द्धाम देवत्वं प्राप्य नारद॥१२०॥

यत्रयत्र मुनिश्रेष्ठ धात्रीस्नानं समाचरेत्।
तीर्थे वाऽपि गृहे वाऽपि तत्रतत्र हरिः स्थितः॥१२१॥

धात्रीस्नानेन विप्रर्षे यस्यास्थीनि कलेवरे।
प्रक्षाल्यन्ते मुनिश्रेष्ठ न स गर्भगृहं वसेत्॥१२२॥

धात्रीजलेन विप्रेन्द्र येषां केशाश्च रञ्जिताः।
ते नराः केशवं यान्ति नाशयित्वा कलेर्मलम्॥१२३॥

धात्रीफलं महापुण्यं स्नानं पुण्यतमं स्मृतम्।
पुण्यात्पुण्यतरं वत्स भक्षणे मुनिसत्तम॥१२४॥

न गङ्गा न गया काशी न वेणी न च पुष्करम्।
एकैव हि यथा पुण्या धात्री माधववासरे॥१२५॥

धात्रीस्नानं हरेर्नाम तथैवैकादशी सुत।
गयाश्राद्धं तथा वत्स समानि मुनयो विदुः॥१२६॥

संस्पृशन्त्यस्तु वै धात्रीमहन्यहनि मानवः।
मुच्यते पातकैः सर्वैर्मनोवाक्कायसम्भवैः॥१२७॥

धात्रीफलैरमावास्यासप्तमीनवमीषु च।
रविवारे च सङ्क्रान्तौ न स्नायान्मुनिसत्तम॥१२८॥

यस्मिन्गृहेमुनिवर धात्री तिष्ठति सर्वदा।
तस्मिन्गृहे न गच्छन्ति प्रेतकूष्माण्डराक्षसाः॥१२९॥

धात्रीफलकृतां मालां कण्ठस्थां यो वहेन्नहि।
 स वैष्णवो न विज्ञेयो विष्णोर्भक्तिपरो यदि॥१३०॥
 न त्याज्या तुलसीमाला धात्रीमाला विशेषतः।
 तथा पद्माक्षमालाऽपि धर्मकामार्थमीप्सुभिः॥१३१॥
 यावद्दिनानि वहते धात्रीमालां कलौ नरः।
 तावद्युगसहस्राणि वैकुण्ठे वसतिर्भवेत्॥१३२॥
 सर्वदेवमयी धात्री वासुदेवमनःप्रिया।
 आरोपणीया सेव्या च पूजनीया सदा नरैः॥१३३॥
 एतत्ते सर्वमाख्यातं धात्रीमाहात्म्यमुत्तमम्।
 श्रोतव्यं च सदा भक्तैश्चतुर्वर्गफलप्रदम्॥१३४॥
 धात्रीछायां समाश्रित्य कार्तिकेऽन्नं भुनक्ति यः।
 अन्नसंसर्गजं पापमावर्षं तस्य नश्यति॥१३५॥

आदितः श्लोकाः — ११०

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 धात्रीमाहात्म्यवर्णनं
 नाम द्वादशोऽध्यायः॥१२॥



॥ अथ त्रयोदशोऽध्यायः ॥

सूत उवाच

श्रियः पतिमथामन्त्र्य गते देवर्षिसत्तमे।
हर्षोत्फुल्लानना सत्या वासुदेवमथाऽब्रवीत्॥१॥

सत्यभामोवाच

धन्यास्मि कृतकृत्याऽस्मि सफलं जीवितं मम।
दानं व्रतं तपो वाऽपि किं नु पूर्वं कृतं मया॥२॥
येनाहं मर्त्यजा देव तवाङ्गार्द्धहराऽभवम्।
भवान्तरे च किंशीला काचाऽहं कस्य कन्यका।
तवाहं वल्लभा जाता तद्वदस्व ममाखिलम्॥३॥

श्रीकृष्ण उवाच

शृणुष्वैकमना कान्ते यथा त्वं पूर्वजन्मनि॥४॥
पुण्यव्रतं कृतवती तत्सर्वं कथयामि ते।
आसीत्कृतयुगस्यान्ते मायापुर्यां द्विजोत्तमः॥५॥
आत्रेयो देवशर्मेति वेदवेदाङ्गपारगः।
तस्यातिवयसश्चाऽऽसीन्नाम्ना गुणवती सुता॥६॥
अपुत्रः स स्वशिष्याय चन्द्रनाम्ने ददौ सुताम्।
तमेव पुत्रवन्मेने स च तं पितृवद्वशी॥७॥
तौ कदाचिद्वनं यातौ कुशेध्माहरणार्थिनौ।
निहतौ रक्षसा तौ च कृतान्तसमरूपिणा॥८॥
स्वस्वपुण्य प्रभावेन विष्णुलोकं गतावुभौ।
ततो गुणवती श्रुत्वा रक्षसा निहतावुभौ॥९॥

पितृभर्तृजदुःखार्ता कारुण्यं पर्यदेवयत्।
सा गृहोपस्करा न्सर्वान्विक्रीयाशु च कर्म तत्॥१०॥

तयोश्चक्रे यथाशक्ति पारलौकीं ततः क्रियाम्।
तस्मिन्नेव पुरे चक्रे वासं सा मृतजीविनी॥११॥

व्रतद्वयं तथा सम्यगाजन्ममरणात्कृतम्।
एकादशीव्रतं सम्यक्सेवनं कार्तिकस्य च॥१२॥

इत्थं गुणवती सम्यक्प्रत्यब्द व्रतिनी ह्यभूत्।
कदाचित्सरुजा साऽथ कृशाङ्गी ज्वरपीडिता॥१३॥

स्नातुं गङ्गां गता कान्ते कथञ्चिच्छनकैस्तदा।
यावज्जलान्तरगता कम्पिता शीतपीडिता॥१४॥

तावत्सा विह्वलाऽपश्यद्विमानं यातमम्बरात्।
अथ सा तद्विमानस्था वैकुण्ठभुवनं ययौ॥१५॥

कार्तिकव्रतपुण्येन मत्सान्निध्यं गताऽभवत्।
अथ ब्रह्मादिदेवानां यदा प्रार्थनया भुवम्॥१६॥

आगतोऽहं गणाः सर्वे यातास्तेऽपि मया सह।
एते हि यादवाः सर्वे मद्गणा एव भामिनि॥१७॥

पिता ते देवशर्माऽभूत्सत्राजिदभिधो ह्ययम्।
यश्चन्द्रनामाऽसोऽक्रूरस्त्वं सा गुणवती शुभा॥१८॥

कार्तिकव्रतपुण्येन बहु मत्प्रीतिदायिनी।
मद्वारि यत्त्वया पूर्वं तुलसीवाटिका कृता॥१९॥

तस्मादयं कल्पवृक्षस्तवाङ्गणगतः शुभे।
आजन्ममरणात्पूर्वं यत्कृतं कार्तिकव्रतम्॥२०॥

कदाचिदपि तेन त्वं मद्वियोगं न यास्यसि।

सत्योवाच

मासानां तु कथं नाम स मासः कार्तिको वरः॥२१॥

प्रियस्ते देवदेवेश कारणं तत्र कथ्यताम्।

श्रीकृष्ण उवाच

साधु पृष्टं त्वया कान्ते शृणुष्वैकाग्रमानसा॥२२॥

पृथोर्वैन्यस्य संवादं महर्षेर्नारदस्य च।

एवमेव पुरा पृष्टो नारदः पृथुनाब्रवीत्॥२३॥

नारद उवाच

शङ्खनामाऽभवत्पूर्वमसुरः सागरात्मजः।

इन्द्रादिलोकपालानामधिकाराञ्जहार ह॥२४॥

सुवर्णाद्रिगुहादुर्गसंस्थितास्त्रिदशादयः ।

तद्वीक्षयाम्बभूवुस्ते तदा दैत्यो व्यचारयत्॥२५॥

हृताधिकारास्त्रिदशा मया यद्यपि निर्जिताः।

लक्ष्यन्ते बलयुक्तास्ते करणीयं मयाऽत्र किम्॥२६॥

ज्ञातं तत्तु मया देवा वेदमन्त्रबलान्विताः।

तान्हरिष्ये ततः सर्वे बलहीना भवन्ति वै॥२७॥

इति मत्वा ततो दैत्यो विष्णुमालक्ष्य निद्रितम्।

सत्यलोकाञ्जहाराशु वेदानादिस्वयम्भुवः॥२८॥

नीतास्तु तेन ते वेदास्तद्भयात्ते निराक्रमन्।

तोयानि विविशुर्यज्ञमन्त्रबीजसमन्विताः॥२९॥

तान्मार्गमाणः शङ्खोऽपि समुद्रान्तर्गतो भ्रमन्।

न ददर्श तदा दैत्यः क्वचिदेकत्र संस्थितान्।

अथ देवैः स्तुतो विष्णुर्बोधितस्तानुवाच ह॥३०॥

विष्णुरुवाच

वरदोऽहं सुरगणा गीतवाद्यादिमङ्गलैः॥ ३१॥
 ऊर्जस्य शुक्लैकादश्यां भवद्भिः प्रतिबोधितः।
 अतश्चैषा तिथिर्मान्या साऽतीव प्रीतिदा मम॥ ३२॥
 वेदाः शङ्खहृताः सर्वे तिष्ठन्त्युदकसंस्थिताः।
 तानानयाम्यहं देवा हत्वा सागरनन्दनम्॥ ३३॥
 अद्यप्रभृति वेदास्तु मन्त्रबीजसमन्विताः।
 प्रत्यब्दं कार्तिके मासि विश्रमन्त्वप्सु सर्वदा॥ ३४॥
 कालेऽस्मिन्ये प्रकुर्वन्ति प्रातःस्नानं नरोत्तमाः।
 ते सर्वे यज्ञावभृथैः सुस्नाताः स्युर्न संशयः॥ ३५॥
 अद्यप्रभृत्यहमपि भवामि जलमध्यगः।
 भवन्तोऽपि मया सार्द्धमायान्तु समुनीश्वराः॥ ३६॥
 कातिकव्रतिनां चेन्द्र रक्षा कार्या त्वया सदा।
 इत्युक्त्वा भगवान्विष्णुः शफरीतुल्यरूपधृक्।
 खात्पपात जले विन्ध्यवासिनः कस्य पश्यतः॥ ३७॥
 हत्वा शङ्खासुरं विष्णुर्बदरीवनमागमत्।
 तत्राऽऽहूय ऋषीन्सर्वानिदमाज्ञापयत्प्रभुः॥ ३८॥

विष्णुरुवाच

जलान्तरविशीर्णास्तान्यूयं वेदान्प्रमार्गथ।
 आनयध्वं च त्वरिताः सागरस्य जलान्तरात्।
 तावत्प्रयागं तिष्ठामि देवतागणसंयुतः॥ ३९॥

नारद उवाच

ततस्तैस्सर्वमुनिभिस्तपोबलसमन्वितैः॥ ४०॥

उद्धृताश्च सबीजास्ते वेदा यज्ञसमन्विताः।
तेषु यावन्मितं येन लब्धं तावद्धि तस्य तत्॥४१॥

स स एव ऋषिर्जातस्तत्तत्प्रभृति पार्थिव।
अथ सर्वेऽपि सङ्गम्य प्रयागं मुनयो ययुः॥४२॥

विष्णवे सविधात्रे ते लब्धान्वेदान्न्यवेदयन्।
लब्ध्वा वेदान्समग्रांस्तु ब्रह्मा हर्षसमन्वितः॥४३॥

अयजद्वाजिमेधेन देवर्षिगणसंयुतः।
यज्ञान्ते देवताः सर्वे विज्ञप्तिं चक्रुरञ्जसा॥४४॥

देवा ऊचुः

देवदेव जगन्नाथ विज्ञप्तिं शृणु नः प्रभो।
हर्षकालोऽयमस्माकं तस्मात्त्वं वरदो भव॥४५॥

स्थानेऽस्मिन्द्रुहिणो वेदान्नष्टान्प्राप पुनस्त्वयम्।
यज्ञभागान्वयं प्राप्तास्त्वत्प्रसादाद्रमापते॥४६॥

स्थानमेतद्धि नः श्रेष्ठं पृथिव्यां पुण्यवर्धनम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदं चाऽस्तु प्रसादाद्भवतः सदा॥४७॥

कालोऽप्ययं महापुण्यो ब्रह्मघ्नाऽऽदिविशुद्धिकृत्।
दत्ताऽक्षयकरं चाऽस्तु वरमेवं ददस्व नः॥४८॥

विष्णुरुवाच

ममाप्येतद्धृतं देवा यद्भवद्भिरुदाहृतम्।
तथास्तु सुलभं त्वेतद्ब्रह्मक्षेत्रमितिप्रथम्॥४९॥

सूर्यवंशोद्भवो राजा गङ्गामत्रानयिष्यति।
सा सूर्यकन्यया चात्र कालिन्द्या योगमेष्यति॥५०॥

यूयं च सर्वे ब्रह्माद्या निवसन्तु मया सह।
 तीर्थराजेति विख्यातं तीर्थमेतद्भविष्यति॥५१॥
 सर्वपापानि नश्यन्ति तीर्थराजस्य दर्शनात्।
 सूर्ये मकरगे प्राप्ते स्नायिनां पापनाशनः॥५२॥
 कालोऽप्येष महापुण्यफलदोऽस्तु सदा नृणाम्।
 सालोक्यादिफलं स्नानैर्माघे मकरगे रवौ॥५३॥

नारद उवाच

एवं देवान्देवदेवस्तदुक्त्वा
 तत्रैवान्तर्धानमागात्सवेधाः ।
 देवाः सर्वेऽप्यंशकैस्तेऽप्यतिष्ठं-
 श्वान्तर्धानं प्रापुरिन्द्रादयस्ते॥५४॥
 कार्तिके तुलसीमूले योऽर्चयेद्धरिमीश्वरम्।
 भुक्तेह निखिलान्भोगानन्ते विष्णुपुरं व्रजेत्॥५५॥

आदितः श्लोकाः — १६५

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 सत्यभामापूर्वजन्मवृत्तान्तकथनपूर्वक प्रयागतीर्थप्रशंसाप्रसङ्गवर्णनं
 नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥१३॥



॥ अथ चतुर्दशोऽध्यायः ॥

पृथुरुवाच

यत्त्वया कथितं ब्रह्मन्त्रतमूर्जस्य विस्तरात्।
 तत्र या तुलसीमूले विष्णोः पूजा त्वयोदिता॥१॥
 तेनाहं प्रष्टुमिच्छामि माहात्म्यं तुलसीभवम्।
 कथं साऽतिप्रिया तस्य देवदेवस्य शार्ङ्गिणः॥२॥
 कथमेषा समुत्पन्ना कस्मिन्स्थाने च नारद।
 एवं ब्रूहि समासेन सर्वज्ञोऽसि मतो मम॥३॥

नारद उवाच

शृणु राजन्नवहितो माहात्म्यं तुलसीभवम्।
 सेतिहासं पुरावृत्तं तत्सर्वं कथयामि ते॥४॥
 पुरा शक्रः शिवं द्रष्टुमगात्कैलासपर्वतम्।
 सर्वदेवैः परिवृतो ह्यप्सरोगणसेवितः॥५॥
 यावद्गतः शिवगृहं तावत्तत्र स दृष्टवान्।
 पुरुषं भीमकर्माणं दंष्ट्राननविभीषणम्॥६॥
 स पृष्टस्तेन कस्त्वं भोः क्व गतो जगदीश्वरः।
 एवं पुनः पुनः पृष्टः स तदा नोक्तवान्नृप॥७॥
 ततः कुद्धो वज्रपाणिस्तं निर्भर्त्स्य वचोऽब्रवीत्।
 रे मया पृच्छ्यमानोऽपि नोत्तरं दत्तवानसि॥८॥
 अतस्त्वां हन्मि वज्रेण कस्ते त्राताऽस्ति दुर्मते।
 इत्युदीर्य ततो वज्री वज्रेणाभ्यहनदृढम्॥९॥
 तेनास्य कण्ठो नीलत्वमगाद्वज्रं च भस्मताम्।
 ततो रुद्रः प्रजज्वाल तेजसा प्रदहन्निव॥१०॥

दृष्ट्वा बृहस्पतिस्तूर्णं कृताञ्जलिपुटोऽभवत्।
इन्द्रं च दण्डवद्भूमौ कृत्वा स्तोतुं प्रचक्रमे॥११॥

बृहस्पतिरुवाच

नमो देवाधिपतये त्र्यम्बकाय कपर्दिने।
त्रिपुरघ्नाय शर्वाय नमोऽधङ्कनिषूदिने॥१२॥
विरूपायातिरूपाय बहुरूपाय शम्भवे।
यज्ञविध्वंसकर्त्रे च यज्ञानां फलदायिने॥१३॥
कालान्तकाय कालाय कालभोगिधराय च।
नमो ब्रह्मशिरोहन्त्रे ब्राह्मणाय नमो नमः॥१४॥

नारद उवाच

एवं स्तुतस्तदा शम्भुर्धिषणेन जगाद तम्।
संहरन्नयनज्वालां त्रिलोकीदहन क्षमाम्॥१५॥
वरं वरय भो ब्रह्मन्प्रीतः स्तुत्याऽनया तव।
इन्द्रस्य जीवदानेन जीवेति त्वं प्रथां वज्र॥१६॥

बृहस्पतिरुवाच

यदि तुष्टोऽसि देव त्वं पाहीन्द्रं शरणागतम्।
अग्निरेष शमं यातु भालनेत्रसमुद्भवः॥१७॥

ईश्वर उवाच

पुनः प्रवेशमायाति भालनेत्रे कथं शिखी।
एनं त्यक्ष्याम्यहं दूरे यथेन्द्रं नैव पीडयेत्॥१८॥

नारद उवाच

इत्युक्त्वा तं करे धृत्वा प्राक्षिपलवणार्णवे।
सोऽपतत्सिन्धुगङ्गायाः सागरस्य च सङ्गमे॥१९॥

तावत्स बालरूपत्वमगात्तत्र रुरोद च।
रुदतस्तस्य शब्देन प्राकम्पद्धरणी मुहुः॥२०॥

स्वर्गाद्याः सत्यलोकान्तास्तत्स्वनाद्वधिरीकृताः।
श्रुत्वा ब्रह्मा ययौ तत्र किमेतदिति विस्मितः॥२१॥

तावत्समुद्रस्योत्सङ्गे तं बालं स ददर्श ह।
दृष्ट्वा ब्रह्माणमायातं समुद्रोऽपि कृताञ्जलिः॥२२॥

प्रणम्य शिरसा बालं तस्योत्सङ्गे न्यवेशयत्।
भो ब्रह्मन्सिन्धुगङ्गायां जातोऽयं मम पुत्रकः।
जातकर्मादिसंस्कारान्कुरुष्वद्य जगद्गुरो॥२३॥

नारद उवाच

इत्थं वदति पाथोधौ स बालः सागरात्मजः॥२४॥
ब्रह्माणमग्रहीत्कूर्चे विधुन्वंस्तं मुहुर्मुहुः।
धुन्वतस्तस्य कूर्चे तु नेत्राभ्यामगमञ्जलम्।
कथञ्चिन्मुक्तकूर्चोऽथ ब्रह्मा प्रोवाच सागरम्॥२५॥

ब्रह्मोवाच

नेत्राभ्यां विधृतं यस्मादनेनैतञ्जलं मम।
तस्माञ्जलन्धर इति ख्यातो नाम्ना भविष्यति॥२६॥

अनेनैवैष तरुणः सर्वशस्त्रास्त्रपारगः।
अवध्यः सर्वभूतानां विना रुद्रं भविष्यति॥२७॥

यत एष समुद्रूतस्तत्रैवान्तं गमिष्यति॥२८॥

नारद उवाच

इत्युक्त्वा शुक्रमाहूय राज्ये तं चाभ्यषेचयत्।
आमन्त्र्य सरितां नाथं ब्रह्मान्तर्धानमागमत्॥२९॥

अथ तद्दर्शनोत्फुल्लनयनः सागरस्तदा।
कालनेमिसुतां वृन्दां तद्भार्यार्थमयाचत॥३०॥

ते कालनेमिप्रमुखास्ततोऽसुरा-
स्तस्मै सुतां तां प्रददुः प्रहर्षिताः।
स चापि तां प्राप्य सुहृद्वरां वशां
शशास गां शुक्रसहायवान्बली॥३१॥

आदितः श्लोकाः — ११६

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरोत्पत्तिवर्णनं
नाम चतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥



॥ अथ पञ्चदशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

ये देवैर्निर्जिताः पूर्वं दैत्याः पातालसंस्थिताः।
तेऽपि भूमण्डलं याता निर्भयास्तमुपाश्रिताः॥१॥

कदाचिच्छिन्नशिरसं राहुं दृष्ट्वा स दैत्यराट्।
पप्रच्छ भार्गवं तत्र तच्छिरश्छेदकारणम्॥२॥

स शशंस समुद्रस्य मथनं देवकारितम्।
रत्नापहरणं चैव दैत्यानां च पराभवम्॥३॥

स श्रुत्वा क्रोधरक्ताक्षः स्वपितुर्मथनं तदा।
दूतं सम्प्रेषयामास घस्मरं शक्रसन्निधौ॥४॥

दूतस्त्रिविष्टपं गत्वा सुधर्मां प्राविशद्वराम्।
जगादाखर्वमौलिस्तु देवेन्द्रं वाक्यमद्भुतम्॥५॥

घस्मर उवाच

जलन्धरोऽब्धितनयः सर्वदैत्यजनेश्वरः।
दूतोऽहमप्रेषितस्तेन स यदाह शृणुष्व तत्॥६॥
कस्मात्त्वया मम पिता मथितः सागरोऽद्विणा।
नीतानि सर्वरत्नानि तानि शीघ्रं प्रयच्छ मे॥७॥
इति दूतवचः श्रुत्वा विस्मितस्त्रिदशाधिपः।
उवाच घस्मरं रौद्रं भयरोषसमन्वितः॥८॥

इन्द्र उवाच

शृणु दूत मया पूर्वं मथितः सागरो यथा।
अद्रयो मद्भयात्रस्ताः स्वकुक्षिस्थाः कृतास्तथा॥९॥
अन्येऽपि मद्विषस्तेन रक्षिता दितिजाः पुरा।
तस्माद्यत्तत्प्रजातं तु मयाऽप्यपहृतं किल॥१०॥
शङ्खोऽप्येवं पुरा देवानद्विषत्सागरात्मजः।
ममानुजेन निहतः प्रविष्टः सागरोदरम्॥११॥
तद्गच्छ कथयस्वास्य सर्वं मथनकारणम्।

नारद उवाच

इत्थं विसर्जितो दूतस्तदेन्द्रेणागमद्भुवम्॥१२॥
तदिदं वचनं सर्वं दैत्यायाकथयत्तदा।
तन्निशम्य तदा दैत्यो रोषात्प्रस्फुरिताधरः॥१३॥
दैत्यसेनासमायुक्तो ययौ योद्धुं त्रिविष्टपम्।
ततो युद्धे महाज्जातो देवदानवसङ्ख्यः॥१४॥

तत्र युद्धे मृतान्दैत्यान्भार्गवस्तूदतिष्ठपत्।
विद्यया मृतजीविन्या मन्त्रितैस्तोयबिन्दुभिः॥१५॥

देवानपि तथा युद्धे तत्राजीवयदङ्गिराः।
दिव्यौषधी समानीय द्रोणाद्रेः स पुनःपुनः॥१६॥

दृष्ट्वा देवांस्तथा युद्धे पुनरेव समुत्थितान्।
जलन्धरः क्रोधवशो भार्गवं वाक्यमब्रवीत्॥१७॥

जलन्धर उवाच

मया युद्धे हता देवा उत्तिष्ठन्ति कथं पुनः।
तव सञ्जीविनीविद्या न वाऽन्यत्रेति विश्रुतम्॥१८॥

शुक्र उवाच

दिव्यौषधीः समानीय द्रोणाद्रेरङ्गिराः सुरान्।
जीवयत्येव तच्छीघ्रं द्रोणाद्रिं त्वमपाहर॥१९॥

नारद उवाच

इत्युक्तः स तु दैत्येन्द्रो नीत्वा द्रोणाचलं तदा।
प्राक्षिपत्सागरे तूर्णं पुनरागान्महाहवम्॥२०॥

अथ देवान्हतान्दृष्ट्वा द्रोणाद्रिमगमद्गुरुः।
तावत्तत्र गिरीन्द्रं तु न ददर्श सुरार्चितः॥२१॥

ज्ञात्वा दैत्यहृतं द्रोणं धिषणो भयविह्वलः।
आगत्य दूराद्वाजहे श्वासाऽऽकुलितविग्रहः॥२२॥

पलायध्वं हवाद्देवा नायं जेतुं क्षमो यतः।
रुद्रांशसम्भवो ह्येष स्मरध्वं शक्रचेष्टितम्॥२३॥

श्रुत्वा तद्वचनं देवा भयविह्वलितास्तदा।
दैत्येन वध्यमानास्ते पलायन्ते दिशो दश॥२४॥

देवान्विद्रावितान्दृष्ट्वा दैत्यैः सागरनन्दनः।
 शङ्खभेरीजयरवैः प्रविवेशामरावतीम्॥ २५॥
 प्रविष्टे नगरीं दैत्ये देवाः शक्रपुरोगमाः।
 सुवर्णाद्रिगुहां प्राप्ता न्यवसन्दैत्यतापिताः॥ २६॥

ततश्च सर्वेष्वसुरोऽधिकारेष्विन्द्रादिकानां विनिवेशयत्तदा।
 शुम्भादिकान्दैत्यवरान्मृथक्पृथक्स्वयं सुवर्णाद्रिगुहामगात्पुनः॥ २७॥

आदितः श्लोकाः — १०२३

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 जलन्धरविजयप्राप्ति
 नाम पञ्चदशोऽध्यायः॥१५॥



॥ अथ षोडशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

पुनर्दैत्यं समायान्तं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः।
 भयप्रकम्पिताः सर्वे विष्णुं स्तोतुं प्रचक्रमुः॥ १॥

नमो मत्स्यकूर्मादिनानास्वरूपैः
 सदाभक्तकार्योद्यतायार्तिहन्त्रे ।
 विधात्रादिसर्गस्थितिध्वंसकर्त्रे
 गदाशङ्खपद्मारिहस्ताय तेस्तु॥ २॥

रमा वल्लभायासुराणां निहन्त्रे
 भुजङ्गारियानाय पीताम्बराय।
 मखादिक्रियापाककर्त्रे विकर्त्रे
 शरण्याय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥ ३॥

नमो दैत्यसन्तापितामर्त्यदुःखा-
 चलध्वंसदम्भोलये विष्णवे ते।
 भुजङ्गेशतल्पेशयायार्कचन्द्र-
 द्विनेत्राय तस्मै नताः स्मो नताः स्मः॥४॥

नारद उवाच

सङ्कष्टनाशनं नाम स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः।
 स कदाचिन्न सङ्कष्टैः पीड्यते कृपया हरेः॥५॥
 इति देवाः स्तुतिं यावत्कुर्वन्ति दनुजद्विषः।
 तावत्सुराणामापत्तिर्विज्ञाता विष्णुना तदा॥६॥
 सहस्रोत्थाय दैत्यारिः सक्रोधः खिन्नमानसः।
 आरूढो गरुडं वेगालक्ष्मीं वचनमब्रवीत्॥७॥

श्रीभगवानुवाच

जलन्धरेण ते भ्रात्रा देवानां कदनं कृतम्।
 तैराहूतो गमिष्यामि युद्धायाद्य त्वरान्वितः॥८॥

श्रीरुवाच

अहं ते वल्लभा नाथ भक्त्या च यदि सर्वदा।
 तत्कथं ते मम भ्राता युद्धे वध्यः कृपानिधे॥९॥

श्रीभगवानुवाच

रुद्रांशसम्भवत्वाच्च ब्रह्मणो वचनादपि।
 प्रीत्या च तव नैवायं मम वध्यो जलन्धरः॥१०॥

नारद उवाच

इत्युक्त्वा गरुडारूढः शङ्खचक्रगदासिभृत्।
 विष्णुर्वेगाद्ययौ योद्धुं यत्र देवाः स्तुवन्ति ते॥११॥

अथाऽरुणानुजात्युग्रपक्षवातप्रपीडिताः ।
वात्या विमर्दिता दैत्या बभ्रमुः खे यथा घनाः॥१२॥

ततो जलन्धरो दृष्ट्वा दैत्यान्वात्याप्रपीडितान् ।
उद्धृत्तनयनः क्रोधात्ततोविष्णुं समभ्ययात्॥१३॥

ततः समभवद्युद्धं विष्णुदैत्येन्द्रयोर्महतम् ।
आकाशं कुर्वतोर्बाणैस्तदा निरवकाशवत्॥१४॥

विष्णुदैत्यस्य बाणौघैर्ध्वजं छत्रं धनुर्हयान् ।
चिच्छेद तं च हृदये बाणेनैकेन ताडयत्॥१५॥

ततो दैत्यः समुत्पत्य गदापाणिस्त्वरान्वितः ।
आहत्य गरुडं मूर्ध्नि पातयामास भूतले॥१६॥

विष्णुर्गदां स्वखड्गेन चिच्छेद प्रहसन्निव ।
तावत्स हृदये विष्णुं जघान दृढमुष्टिना॥१७॥

ततस्तौ बाहुयुद्धेन युयुधाते महाबलौ ।
बाहुभिर्मुष्टिभिश्चैव जानुभिर्नादयन्महीम्॥१८॥

एवं तौ सुचिरं युद्धं कृत्वा विष्णुः प्रतापवान् ।
उवाच दैत्यराजानं मेघगम्भीरनिस्वनः॥१९॥

विष्णुरुवाच

वरं वरय दैत्येन्द्र प्रीतोऽस्मि तव विक्रमात् ।
अदेयमपि ते दन्नि यत्ते मनसि वर्तते॥२०॥

जलन्धर उवाच

यदि भावुक तुष्टोऽसि वरमेनं ददस्व मे ।
मद्भगिन्या सहाऽद्य त्वं मद्गृहे सगणो वस॥२१॥

नारद उवाच

तथेत्युक्ता स भगवान्सर्वदेवगणैः सह।
तदा जलन्धरपुरमगमद्रमया सह॥२२॥

जलन्धरस्तु देवानामधिकारेषु दानवान्।
स्थापयित्वा महाबाहुः पुनरागान्महीतलम्॥२३॥

देवगन्धर्वसिद्धेषु यत्किञ्चिद्रत्नसंयुतम्।
तदात्मवशगं कृत्वाऽतिष्ठत्सागरनन्दनः॥२४॥

पातालभुवने दैत्यं निशुम्भं स महाबलम्।
स्थापयित्वा स शेषादीनानयद्भूतलं बली॥२५॥

देवगन्धर्वसिद्धाऽऽद्यान्सर्पराक्षसमानुषान्।
स्वपुरे नागरान्कृत्वा शशास भुवनत्रयम्॥२६॥

एवं जलन्धरः कृत्वा देवान्स्ववशवर्तिनः।
धर्मेण पालयामास प्रजाः पुत्रानिवौरसान्॥२७॥

न कश्चिद्वाधितो नैव दुःखी नैव कृतस्तथा।
न दीनो दृश्यते तस्मिन्धर्माद्राज्यं प्रशासति॥२८॥

एवं महीं शासति दानवेन्द्रे धर्मेण सम्यक् दिदृक्षयाऽहम्।
कदाचिदागामथ तस्य लक्ष्मीं विलोकितुं श्रीरमणं च सेवितुम्॥२९॥

आदितः श्लोकाः — १०५२

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरसभायां नारदागमनं
नाम षोडशोऽध्यायः॥१६॥



॥ अथ सप्तदशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

स मां प्रोवाच विधिवत्सम्पूज्यातीव भक्तिमान्।
सम्प्रहस्य तदा वाक्यं स्नेहपूर्वं च वै नृप॥१॥

कुत आगम्यते ब्रह्मन्किचिद्दृष्टं त्वया प्रभो।
यदर्थमिह चाऽऽयातस्तदाऽऽज्ञापय मां मुने॥२॥

नारद उवाच

गतः कैलासशिखरं दैत्येन्द्राहं यदृच्छया।
तत्रोमया समासीनं दृष्टवानस्मि शङ्करम्॥३॥

योजनायुतविस्तीर्णे कल्पवृक्षमहावने।
कामधेनुशताकीर्णे चिन्तामणिसुदीपिते॥४॥

तद्दृष्ट्वा महदाश्चर्यं विस्मयो मेऽभवत्तदा।
क्वाऽपीदृशी भवेदृद्धिस्त्रैलोक्ये वा न वेति च॥५॥

तदा तवाऽपि दैत्येन्द्र समृद्धिः संस्मृता मया।
तद्विलोकनकामोऽस्मि त्वत्सान्निध्यमिहाऽऽगतः॥६॥

त्वत्समृद्धिमिमां पश्यन्स्त्रीरत्नरहितां ध्रुवम्।
तर्कयामि शिवादन्यस्त्रिलोक्यां न समृद्धिमान्॥७॥

अप्सरोगागकन्याद्या यद्यपि त्वद्वशे स्थिताः।
तथाऽपि ता न पार्वत्या रूपेण सदृशा ध्रुवम्॥८॥

यस्या लावण्यजलधौ निमग्नश्चतुराननः।
स्वधैर्यममुचत्पूर्वं तया काऽन्योपमीयते॥९॥

वीतरागोऽपि हि यथा मदनारिः स्वलीलया।
सौन्दर्यगहनेऽभ्रामि शफरीरूपया पुरा॥१०॥

यस्याः पुनः पुनः पश्यन्नूपं धाताऽपि सर्जने।
ससर्जाऽप्सरसस्तासां तत्समैकाऽपि नाभवत्॥११॥

अतः स्त्रीरत्नसम्भोक्तुः समृद्धिस्तस्य सा वरा।
तथा न तव दैत्येन्द्र सर्वरत्नाऽधिपस्य च॥१२॥

एवमुक्त्वा तमामत्र्य गते सति स दैत्यराट्।
तद्रूपं श्रवणादासीदनङ्गज्वरपीडितः॥१३॥

अथ सम्प्रेषयामास स दूतं सिंहिकासुतम्।
त्र्यम्बकायाऽपि च तदा विष्णुमायाविमोहितः॥१४॥

कैलासमगमद्राहुः कुर्वञ्छुक्लेन्दुवर्चसम्।
काष्ण्येन कृष्णपक्षेन्दुवर्चसं स्वाङ्गजेन तम्॥१५॥

निवेदितस्तदेशाय नन्दिना प्रविवेश सः।
त्र्यम्बकभ्रूलतासंज्ञा प्रेरितो वाक्यमब्रवीत्॥१६॥

राहुरुवाच

देवपन्नगसेव्यस्य त्रैलोक्याधिपतेः प्रभोः।
सर्वरत्नेश्वरस्य त्वमाज्ञां शृणु वृषध्वज॥१७॥

स्मशानवासिनो नित्यमस्थिभारवहस्य च।
दिगम्बरस्य ते भार्या कथं हैमवती शुभा॥१८॥

अहं रत्नाधिनाथोऽस्मि सा च स्त्रीरत्नसंज्ञिका।
तस्मान्ममैव सा योग्या नैव भिक्षाशिनस्तव॥१९॥

नारद उवाच

वदत्येवं तदा राहौ भ्रूमध्याच्छूलपाणिनः।
अभवत्पुरुषो रौद्रस्तीव्राशनिसमस्वनः॥२०॥

सिंहास्यः प्रललङ्घिह्वः स ज्वलन्नयनो महान्।
ऊर्ध्वकेशः शुष्कतनुर्नृसिंह इव चाऽपरः॥२१॥

स तं खादितुमायान्तं दृष्ट्वा राहुर्भयातुरः।
अधावत स वेगेन बहिः स च दधार तम्॥२२॥

स च राहुर्महाबाहो मेघगम्भीरया गिरा।
उवाच देवदेव त्वं पाहि मां शरणागतम्॥२३॥

ब्राह्मणं मां महादेव खादितुं समुपागतः।
महादेवो वचः श्रुत्वा ब्राह्मणस्य तदाऽब्रवीत्॥२४॥

नैवाऽसौ वध्यतामेति दूतोऽयं परवान्यतः।
मुञ्चेति पुरुषः श्रुत्वा राहुं तत्याज्य सोऽम्बरे॥२५॥

राहुं त्यक्त्वाऽथ पुरुषस्तदा रुद्रं व्यजिज्ञपत्।

पुरुष उवाच

क्षुधा मां वाधतेऽत्यन्तं क्षुत्क्षामश्चाऽस्मि सर्वथा॥२६॥

किं भक्षयामि देवेश तदाज्ञापय मां प्रभो।

ईश्वर उवाच

भक्षयस्वात्मनः शीघ्रं मांसं त्वं हस्तपादयोः॥२७॥

नारद उवाच

स शिवेनैवमाज्ञप्तश्चखाद पुरुषः स्वकम्।
हस्तपादोद्भवं मांसं शिरःशेषो यथाऽभवत्॥२८॥

दृष्ट्वा शिरोऽवशेषं तं सुप्रसन्नस्तदा शिवः।
उवाच भीमकर्माणं पुरुषं जातविस्मयः॥२९॥

ईश्वर उवाच

त्वं कीर्तिमुखसंज्ञो हि भव मद्धारिणः सदा।
त्वदर्चा ये न कुर्वन्ति नैव ते मे प्रियङ्कराः॥३०॥

नारद उवाच

तदा प्रभृति देवस्य द्वारि कीर्तिमुखः स्थितः।
नार्चयन्तीह ये पूर्वं तेषामर्चा वृथा भवेत्॥३१॥

राहुर्विमुक्तो यस्तेन सोऽपि तद्वर्बरे स्थले।
अतः स बर्बरोद्धूत इति भूमौ प्रथां गतः॥३२॥

ततः स राहुः पुनरेव जातमात्मानमस्मिन्निति मन्यमानः।
समेत्य सर्वं कथयाम्बभूव जलन्धरायैव विचेष्टितं तत्॥३३॥

आदितः श्लोकाः — १०८५

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरोपाख्याने दूतवाक्यकथनं
नाम सप्तदशोऽध्यायः॥१७॥



॥ अथ रुद्रसेनापराभवोनामाऽष्टादशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

जलन्धरस्तु तच्छ्रुत्वा कोपाकुलितविग्रहः।
निर्जगामाऽऽशु दैत्यानां कोटिभिः परिवारितः॥१॥

गच्छतोऽस्याग्रतः शुक्रो राहुर्दृष्टिपथेऽभवत्।
मुकुटश्चापतद्भूमौ वेगात्प्रस्खलितस्तदा॥२॥

दैत्यसैन्यावृतैस्तस्य विमानानां शतैस्तदा।
व्यराजत नभःपूर्णं प्रावृषीव यथा घनैः॥३॥

तस्योद्योगं तदा दृष्ट्वा देवाः शक्रपुरोगमाः।
अलक्षितास्तदा जग्मुः शूलिनं तं व्यजिज्ञपुः॥४॥

देवा ऊचुः

न जानासि कथं स्वामिन्देवापत्तिमिमां विभो।
तदस्मद्रक्षणार्थाय जहि सागरनन्दनम्॥५॥

नारद उवाच

इति देववचः श्रुत्वा प्रहस्य वृषभध्वजः।
महाविष्णुं समाहूय वचनं चेदमब्रवीत्॥६॥

ईश्वर उवाच

जलन्धरः कथं विष्णो न हतः सङ्गरे त्वया।
तद्गृहं चापि यातोऽसि त्यक्त्वा वैकुण्ठमात्मनः॥७॥

विष्णुरुवाच

तवांशसम्भवत्वाच्च भ्रातृत्वाच्च तथा श्रियः।
न मया निहतः सङ्क्षो त्वमेनं जहि दानवम्॥८॥

ईश्वर उवाच

नायमेभिर्महातेजाः शस्त्रास्त्रैर्वध्यते मया।
देवैः सह स्वतेजोशं शस्त्रार्थं दीयतां मम॥९॥

नारद उवाच

अथ विष्णुमुखा देवाः स्वतेजांसि ददुस्तदा।
तान्यैक्यमागतानीशो दृष्ट्वा स्वं चामुचन्महः॥१०॥

तेनाकरोन्महादेवो महसा शस्त्रमुत्तमम्।
चक्रं सुदर्शनं नाम ज्वालामालातिभीषणम्॥११॥

ततः शेषेण च तदा वज्रं च कृतवान्हरिः।
तावज्जलन्धरो दृष्टः कैलासतलभूमिषु॥१२॥

हस्त्यश्वरथपत्तीनां कोटिभिः परिवारितः।
तं दृष्ट्वा लक्षिता जग्मुर्देवाः सर्वे यथागताः॥१३॥

गणाश्च समसञ्जन्त युद्धायाऽतित्वरान्विताः।
नन्दीभवक्रसेनानीमुखाः सर्वे शिवाज्ञया॥१४॥

अवतेरुर्गणा वेगात्कैलासाद्युद्धदुर्मदाः।
ततः समभवद्युद्धं कैलासोपत्यकाभुवि॥१५॥

प्रमथाधिपदैत्यानां घोरशस्त्रास्त्रसङ्कुलम्।
भेरीमृदङ्गशङ्खौघ निःस्वनैर्वीरहर्षणैः॥१६॥

गजाश्वरथशब्दैश्च नादिता भूर्व्यकम्पत।
शक्तितोमरबाणौघमुसलप्रासपट्टिशैः ॥१७॥

व्यराजत नभः पूर्णमुल्काभिरिव संवृतम्।
निहतैरथनागाश्वपत्तिभिर्भूर्व्यराजत ॥१८॥

वज्राहताचलशिरःशकलैरिव संवृता।
प्रमथाहतदैत्यौघैर्दैत्याहतगणैस्तथा ॥१९॥

वसासृङ्गांसपङ्काढ्या भूरगम्याऽभवत्तदा।
प्रमथाहतदैत्यौघान्भार्गवः समजीवयत्॥२०॥

युद्धे पुनः पुनस्तत्र मृतसञ्जीविनीबलात्।
तं दृष्ट्वा व्याकुलीभूता गणाः सर्वे भयान्विताः।
शशंसुर्देवदेवाय तत्सर्वं शुक्रचेष्टितम्॥२१॥

अथ रुद्रमुखात्कृत्या बभूवातीवभीषणा।
 तालजङ्घा दरीवक्रा स्तनापीडितभूरुहा॥२२॥
 सा युद्धभूमिमासाद्य भक्षयन्ती महासुरान्।
 भार्गवं स्वभगे धृत्वा जगामान्तर्हिता नभः॥२३॥
 विधृतं भार्गवं दृष्ट्वा दैत्यसैन्यं गणास्तदा।
 अम्लानवदना हर्षान्निजघ्नुर्युद्धदुर्मदाः॥२४॥
 अथाभज्यत दैत्यानां सेना गणभयार्दिता।
 वायुवेगेनाहतेव प्रकीर्णा तृणसन्ततिः॥२५॥
 भग्नां गणभयात्सेनां दृष्ट्वामर्षयुता ययुः।
 निशुम्भशुम्भौ सेनान्यौ कालनेमिश्च वीर्यवान्॥२६॥
 त्रयस्ते वारयामासुर्गणसेनां महाबलाः।
 मुञ्चतः शरवर्षाणि प्रावृषीव बलाहकाः॥२७॥
 ततो दैत्यशरौघास्ते शलभानामिव व्रजाः।
 रुरुधुः खं दिशः सर्वा गणसेनामकम्पयन्॥२८॥
 गणाः शरशतैर्भिन्ना रुधिरासारवर्षिणः।
 वसन्ते किंशुकाभासा न प्राज्ञायत किञ्चन॥२९॥
 पतिताः पात्यमानाश्च भिन्नाश्छिन्नास्तदा गणाः।
 त्यक्त्वा सङ्ग्रामभूमिं ते सर्वेऽपि विमुखाऽभवन्॥३०॥
 ततः प्रभग्नं स्वबलं विलोक्य
 शैलादिलम्बोदरकार्तिकेयाः।
 त्वरान्विता दैत्यवरान्प्रसह्य
 निवारयामासुरमर्षिणस्ते ॥३१॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरोपाख्याने रुद्रसेनापराभ
नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥



॥ अथ वीरभद्रपतननामैकोनविंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

ते गणाधिपतीन्दृष्ट्वा नन्दीभमुखषण्मुखान्।
अमर्षादभ्यधावन्त द्वन्द्वयुद्धाय दानवाः ॥ १ ॥

नन्दिनं कालनेमिश्च शुम्भो लम्बोदरं तथा।
निशुम्भः षण्मुखं वेगादभ्यधावत दंशितः ॥ २ ॥

निशुम्भः कार्तिकेयस्य मयूरं पञ्चभिः शरैः।
हृदि विव्याध वेगेन मूर्च्छितः स पपात च ॥ ३ ॥

ततः शक्तिधरः शक्तिं यावज्जग्राह रोषितः।
तावन्निशुम्भो वेगेन स्वशक्त्या तमपातयत् ॥ ४ ॥

नन्दीश्वरः शरव्रातैः कालनेमिमवध्यत।
सप्तभिश्च हयान्केतुं त्रिभिः सारथिमच्छिनत् ॥ ५ ॥

कालनेमिस्तु सङ्क्रुद्धो धनुश्चिच्छेद नन्दिनः।
तदपास्य स शूलेन तं वक्षस्यहनद्वली ॥ ६ ॥

स शूलभिन्नहृदयो हताश्वो हतसारथिः।
अद्रेः शिखरमामुच्य शैलादिं सोऽप्यपातयत् ॥ ७ ॥

अथ शुम्भो गणेशश्च रथमूषकवाहनौ।
युध्यमानौ शरव्रातैः परस्परमविध्यताम्॥८॥

गणेशस्तु तदा शुम्भं हृदि विव्याध पत्रिणा।
सारथिं च त्रिभिर्बाणैः पातयामास भूतले॥९॥

ततोऽतिक्रुद्धः शुम्भोऽपि बाणषष्ठ्या गणाधिपम्।
मूषकं च त्रिभिर्विद्ध्वा ननाद जलदस्वनः॥१०॥

मूषकः शरभिन्नाङ्गश्चाल दृढवेदनः।
लम्बोदरश्च पतितः पदातिरभवन्नृप॥११॥

ततो लम्बोदरः शुम्भं हत्वा परशुना हृदि।
अपातयत्तदा भूमौ मूषकं चारुहत्पुनः॥१२॥

कालनेमिर्निशुम्भश्चाप्युभौ लम्बोदरं शरैः।
युगपज्जघ्नतुः क्रोधात्तोत्रैरिव महाद्विपम्॥१३॥

तं पीडयमानमालोक्य वीरभद्रो महाबलः।
अभ्यधावत वेगेन भूतकोटियुतस्तदा॥१४॥

कूष्माण्डभैरवाश्चापि वेताला योगिनीगणाः।
पिशाचयोगिनीसङ्घा गणाश्चापि तमन्वयुः॥१५॥

ततः किलकिलाशब्दैः सिंहनादैः सुघर्घरैः।
भेरीतालमृदङ्गैश्च पृथिवी समकम्पत॥१६॥

ततो भूतान्यधावन्त भक्षयन्तिस्म दानवान्।
उत्पतन्त्यापतन्ति स्म ननृतुश्च रणाङ्गणे॥१७॥

नन्दी च कार्तिकेयश्च समाश्वस्य त्वरत्त्वितौ।
निजघ्नतू रणे दैत्यान्निरन्तरशरव्रजैः॥१८॥

छिन्नभिन्ना हतैर्देत्यैः पतितैर्भक्षितैस्तदा।
व्याकुला साऽभवत्सेना विषण्णवदना तदा॥१९॥

प्रविध्वस्तां तदा सेनां दृष्ट्वा सागरनन्दनः।
रथेनातिपताकेन गणानभिययौ बली॥२०॥

हस्त्यश्वरथसंहादाः शङ्खभेरीस्वनास्तथा।
अभवन्सिंहनादाश्च सेनयोरुभयोस्तदा॥२१॥

जलन्धरशरव्रातैर्नीहारपटलैरिव ।
द्यावापृथिव्योराच्छिन्नमन्तरं समपद्यत॥२२॥

गणेशं पञ्चभिर्विद्धा शैलादिं नवभिः शरैः।
वीरभद्रं च विंशत्या ननाद जलदस्वनः॥२३॥
कार्तिकेयस्तदा दैत्यं शक्त्या विव्याध सत्वरः।
युयुधे शक्तिनिर्भिन्नः किञ्चिद्वाकुलमानसः॥२४॥

ततः क्रोधपरीताक्षः कार्तिकेयं जलन्धरः।
गदया ताडयामास स च भूमितलेऽपतत्॥२५॥

तथैव नन्दिनं वेगादपातयत भूतले।
ततो गणेश्वरः क्रुद्धो गदां परशुनाऽहनत्॥२६॥

वीरभद्रस्त्रिभिर्बाणैर्हृदि विव्याध दानवम्।
सप्तभिश्च हयान्केतुं धनुश्छत्रं च चिच्छिदे॥२७॥

ततोऽतिक्रुद्धो दैत्येन्द्रः शक्तिमुद्यम्य दारुणाम्।
गणेशं पातयामास रथं चान्यमथाऽऽरुहत्॥२८॥

अभ्ययादथ वेगेन वीरभद्रं रुषान्वितः।
ततस्तौ सूर्यसङ्काशौ युयुधाते परस्परम्॥२९॥

वीरभद्रः पुनस्तस्य हयान्बाणैरपातयत्।
धनुश्चिच्छेद दैत्येन्द्रः पुष्पुवे परिघायुधः॥३०॥

स वीरभद्रं त्वरयाऽभिगम्य जघान दैत्यः परिघेण मूर्ध्नि।
स चापि वीरः प्रविभिन्नमूर्द्धा पपात भूमौ रुधिरं समुद्गिरन्॥३१॥

आदितः श्लोकाः — ११४७

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरोपाख्याने वीरभद्रपत
नामैकोनविंशोऽध्यायः॥१९॥



॥ अथ विंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

पतितं वीरभद्रं तु दृष्ट्वा रुद्रगणा भयात्।
अगमंस्ते रणं हित्वा क्रोशमाना महेश्वरम्॥१॥

अथ कोलाहलं श्रुत्वा गणानां चन्द्रशेखरः।
अभ्ययाद्वृषभारूढः सङ्ग्रामं प्रहसन्निव॥२॥

रुद्रमायान्तमालोक्य सिंहनादैर्गणाः पुनः।
निवृत्ताः सङ्गरे दैत्यान्निर्जघ्नुः शरवृष्टिभिः॥३॥

दैत्याश्च भीषणं दृष्ट्वा सर्वे चैव विदुद्रुवुः।
कार्तिकव्रतिनं दृष्ट्वा पातकानीव तद्भयात्॥४॥

जलन्धरोथ तान्दैत्यान्निवृत्तान्प्रेक्ष्य सङ्गरे।
रोषादधावच्चण्डीशं मुञ्चन्बाणान्सहस्रशः॥५॥

शुम्भो निशुम्भोऽश्वमुखः कालनेमिर्बलाहकः।
खड्गरोमा प्रचण्डश्च घस्मराद्याः शिवं ययुः॥६॥

बाणान्धकारसञ्छन्नं दृष्ट्वा गणबलं शिवः।
बाणजालमवाच्छिद्य स्वबाणैरावृणोन्नमः॥७॥

दैत्यांश्च बाणवात्याभिः पीडितानकरोत्तदा।
प्रचण्डबाणजालौघैरपातयत भूतले॥८॥

खड्गरोम्णः शिरः कायात्तदा परशुनाऽच्छिनत्।
बलाहकस्य च शिरः खट्वाङ्गेनाऽकरोद्विधा॥९॥

बद्धा च घस्मरं दैत्यं पाशेनाभ्यहनद्भुवि।
वृषभेण हताः केचित्केचिद्बाणैर्निपातिताः॥१०॥

न शेकुरसुराः स्थातुं गजाः सिंहार्दिता इव।
ततः क्रोधपरीतात्मा वेगाद्रुद्रं जलन्धरः॥११॥

आह्वयामास समरे तीव्राशनिसमस्वनः।

जलन्धर उवाच

युध्यस्व च मया सार्द्धं किमेभिर्निहितैस्तव॥१२॥

यच्च किञ्चिद्वलं तेऽस्ति तद्दर्शय जटाधर।
इत्युक्त्वा बाणसप्तत्या जघान वृषभध्वजम्॥१३॥

तान्प्राप्तान्निशितैर्बाणैश्चिच्छेद प्रहसन्निव।
ततो हयान्ध्वजं छत्रं धनुश्चिच्छेद शक्तिभिः॥१४॥

स च्छिन्नधन्वा विरथो गदामुद्यम्य वेगवान्।
अभ्यधावच्छिवस्तावद्गदां बाणैर्विधाऽच्छिनत्॥१५॥

तथाऽपि मुष्टिमुद्यम्य ययौ रुद्रं जिघांसया।
तावच्छिवेन बाणौघैः क्रोशमात्रमपाकृतः॥१६॥

ततो जलन्धरो दैत्यो मत्वा रुद्रं बलाधिकम्।
ससर्ज मायां गान्धर्वीमद्भुतां रुद्रमोहिनीम्॥१७॥

ततो जगुश्च ननृतुर्गन्धर्वाप्सरसां गणाः।
तालवेणुमृदङ्गाद्यान्वादयन्ति स्म चापरे॥१८॥

तदृष्ट्वा महदाश्चर्यं रुद्रो नादविमोहितः।
पतितान्यपि शस्त्राणि करेभ्यो न विवेद सः॥१९॥

एकाग्रीभूतमालोक्य रुद्रं दैत्यो जलन्धरः।
कामार्तः स जगामाशु यत्र गौरी स्थिताऽभवत्॥२०॥

युद्धे शुम्भनिशुम्भाख्यौ स्थापयित्वा महाबली।
दशदोर्दण्डपचास्यस्त्रिनेत्रश्च जटाधरः॥२१॥

महावृषभमारूढः स बभूव जलन्धरः।
अथो रुद्रं समायान्तमालोक्य भववल्लभा॥२२॥

अभ्याययौ सखीमध्यात्तद्दर्शनपथेऽभवत्।
यावद्ददर्श चार्वङ्गी पार्वती दनुजेश्वरः॥२३॥

तावत्स्ववीर्यं मुमुचे जडाङ्गश्चाभवत्तदा।
अथ ज्ञात्वा तदा गौरी दानवं भयविह्वला॥२४॥

जगामान्तर्हिता वेगात्सा तदोत्तरमानसे।
तामदृष्ट्वा ततो दैत्यः क्षणाद्विद्युलतामिव॥२५॥

जवेनाऽऽगात्पुनर्युद्धं यत्र देवो वृषध्वजः।
पार्वत्यपि भयाद्विष्णुं सस्मार मनसा तदा॥२६॥

तावद्ददर्श तं देवं सूपविष्टं समीपगम्।

पार्वत्युवाच

विष्णो जलन्धरो दैत्यः कृतवान्परमाद्भुतम्॥२७॥

तत्किं न विदितं तेऽस्ति चेष्टितं तस्य दुर्मतेः।

विष्णुरुवाच

तेनैव दर्शितः पन्था वयमप्यन्वयामहे॥२७॥

नान्यथा स भवेद्वध्यः पातिव्रत्यसुरक्षितः।

नारद उवाच

जगाम विष्णुरित्युक्त्वा पुनर्जालन्धरं पुरम्॥२८॥

अथ रुद्रश्च गन्धर्वानुगतः सङ्गरे स्थितः।

अन्तर्धानं गतां मायां दृष्ट्वा स बुबुधे तदा॥२९॥

ततो भवो विस्मितमानसः पुन-

र्जगाम युद्धाय जलन्धरं रुषा।

स चापि दैत्यः पुनरागतं शिवं

दृष्ट्वा शरौघैः समवाकिरद्रणे॥३०॥

आदितः श्लोकाः — ११७७

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां

द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

जलन्धरोपाख्याने शिवजलन्धरयुद्धवर्णनं

नाम विंशोऽध्यायः॥२०॥



॥ अथ नामैकविंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

विष्णुर्जलन्धरं गत्वा तद्वैत्यपुटभेदनम्।

पातिव्रत्यस्य भङ्गाय वृन्दायाश्चाऽकरोन्मतिम्॥१॥

अथ वृन्दारका देवी स्वप्रमध्ये ददर्श ह।
भर्तारं महिषारूढं तैलाभ्यक्तं दिगम्बरम्॥२॥

कृष्णप्रसूनभूषाढ्यं क्रव्यादगणसेवितम्।
दक्षिणाशागतं मुण्डं तमसाप्यावृतं तदा॥३॥

स्वपुरं सागरे मग्नं सहसैवाऽऽत्मना सह।
ततः प्रबुद्धा सा बाला तत्स्वप्नं प्रविचिन्वती॥४॥

ददर्शोदितमादित्यं सच्छिद्रं निष्प्रभं मुहुः।
तदनिष्टमिति ज्ञात्वा रुदती भयविह्वला॥५॥

कुत्रचिन्नालभच्छर्म गोपुराट्टालभूमिषु।
ततः सखीद्वययुता नगरोद्यानमागमत्॥६॥

तत्रापि साऽभ्रमद्वाला नालभत्कुत्रचित्सुखम्।
वनाद्वनान्तरं याता नैव वेदात्मनस्तदा॥७॥

ततः सा भ्रमती बाला ददर्शातीवभीषणौ।
राक्षसौ सिंहवदनौ दंष्ट्राननविभीषणौ॥८॥

तौ दृष्ट्वा विह्वलाऽतीव पलायनपराऽभवत्।
ददर्श तापसं शान्तं सशिष्यं मौनमास्थितम्॥९॥

ततस्तत्कण्ठमावृत्य निजां बाहुलतां भयात्।
मुने मां रक्ष शरणमागताऽस्मीत्यभाषत॥१०॥

मुनिस्तां विह्वलां दृष्ट्वा राक्षसानुगतां तदा।
हुङ्कारेणैव तौ घोरौ चकार विमुखौ रुषा॥११॥

तौ हुङ्कारभयत्रस्तौ दृष्ट्वा च विमुखौ गतौ।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ वृन्दा वचनमब्रवीत्॥१२॥

वृन्दोवाच

रक्षिताहं त्वया घोराद्भयादस्मात्कृपानिधे।
किञ्चिद्विज्ञस्तुमिच्छामि कृपया तन्निशामय॥१३॥
जलन्धरो हि मद्भर्ता रुद्रं योद्धुं गतः प्रभो।
स तत्राऽऽस्ते कथं युद्धे तन्मे कथय सुव्रत॥१४॥

नारद उवाच

मुनिस्तद्वाक्यमाकर्ण्य कृपयोर्ध्वमवैक्षत।
तावत्कपी समायातौ प्रणम्य चाग्रतः स्थितौ॥१५॥
ततस्तद्भूलतासंज्ञानियुक्तौ गगनं गतौ।
गत्वा क्षणार्द्धादागत्य प्रणतावग्रतः स्थितौ।
शिरःकबन्धे हस्तौ च गृहीत्वा समुपस्थितौ॥१६॥
शिरःकबन्धे हस्तौ च दृष्ट्वाऽब्धितनयस्य सा।
पपात मूर्छिता भूमौ भर्तृव्यसनदुःखिता॥१७॥
कमण्डलूदकैः सिक्त्वा मुनिनाऽऽश्वासिता तदा।
स्वभर्तृभाले सा भालं कृत्वा दीना रुरोद ह॥१८॥

वृन्दोवाच

यः पुरा सुखसंवादे विनोदयसि मां प्रभो।
स कथं न वदस्यद्य वल्लभा मामनागसम्॥१९॥
येन देवाः सगन्धर्वा निर्जिता विष्णुना सह।
स कथं तापसेनाद्य त्रैलोक्यविजयी हतः॥२०॥

नारद उवाच

रुदित्वेति तदा वृन्दा तं मुनिं वाक्यमब्रवीत्।

वृन्दोवाच

कृपानिधे मुनिश्रेष्ठ जीवयैनं मम प्रियम्॥२१॥
त्वमेवास्य मुने शक्तो जीवनाय मतो मम

नारद उवाच

इति तद्वाक्यमाकर्ण्य प्रहसन्मुनिरब्रवीत्॥२२॥

मुनिरुवाच

नायं जीवयितुं शक्तो रुद्रेण निहतो युधि।
तथाऽपि त्वत्कृपाविष्ट एनं सञ्जीवयाम्यहम्॥२३॥

नारद उवाच

इत्युक्तान्तर्दधे विप्रस्तावत्सागरनन्दनः।
वृन्दामालिङ्ग्य तद्वक्त्रं चुचुम्ब प्रीतमानसः॥२४॥
अथ वृन्दाऽपि भर्तारं दृष्ट्वा हर्षितमानसा।
रेमे तद्वनमध्यस्था तद्युक्ता बहुवासरम्॥२५॥
कदाचित्सुरतस्यान्ते दृष्ट्वा विष्णुं तमेव च।
निर्भर्त्स्य क्रोधसंयुक्ता वृन्दा वचनमब्रवीत्॥२६॥

वृन्दोवाच

धिक्कदीयं हरे शीलं परदाराभिगामिनः।
ज्ञातोऽसि त्वं मया सम्यङ्गायाप्रच्छन्नतापसः॥२७॥
यौ त्वया मायया द्वाःस्थौ स्वकीयौ दर्शितौ मम।
तावेव राक्षसौ भूत्वा भार्या तव हरिष्यतः॥२८॥
त्वं चापि भार्यादुःखार्तो वने कपिसहायवान्।
भ्रम सर्पेश्वरेणाऽयं यस्ते शिष्यत्वमागतः॥२९॥

इत्युक्त्वा सा तदा वृन्दा प्राविशद्व्यवाहनम्।
विष्णुना वार्यमाणाऽपि तस्यामासक्तचेतसा॥३०॥

ततो हरिस्तामनुसंस्मरन्मुहु-
र्वृन्दान्वितोभस्मरजोवगुण्ठितः ।
तत्रैव तस्थौ सुरसिद्धसङ्घैः
प्रबोध्यमानोऽपि ययौ न शान्तिम्॥३१॥

आदितः श्लोकाः — १२०८

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
जलन्धरोपाख्याने वृन्दाग्निप्रवेशवर्णनं
नामैकशोऽध्यायः॥२१॥



॥ अथ द्वाविंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

ततो जलन्धरो दृष्ट्वा रुद्रमद्भुतविक्रमम्।
चकार मायया गौरीं त्र्यम्बकं मोहयन्निव॥१॥
रथोपरि च तां बद्धां रुदन्तीं पार्वतीं शिवः।
निशुम्भप्रमुखाद्यैश्च वध्यमानां ददर्श सः॥२॥
गौरीं तथाविधां दृष्ट्वा शिवोऽप्युद्विग्नमानसः।
अवाङ्मुखः स्थितस्तूष्णीं विस्मृत्य स्वपराक्रमम्॥३॥
ततो जलन्धरो वेगात्रिभिर्विव्याध सायकैः।
आपुङ्खमग्रैस्तं रुद्रं शिरस्युरसि चोदरे॥४॥

ततो जज्ञे स तां मायां विष्णुना च प्रबोधितः।
रौद्ररूपधरो जातो ज्वालामालाऽतिभीषणः॥५॥

तस्यातीव महारौद्रं रूपं दृष्ट्वा महासुराः।
न शेकुः सम्मुखे स्थातुं भेजिरे ते दिशो दश॥६॥

ततः शापं ददौ रुद्रस्तयोः शुम्भनिशुम्भयोः।
मम युद्धादपक्रान्तौ गौर्या बध्यौ भविष्यथः॥७॥

पुनर्जलन्धरो वेगाद्ववर्ष निशितैः शरैः।
बाणान्धकारैः सञ्छन्नं तदा भूमितलं महत्॥८॥

यावद्रुद्रश्च चिच्छेद तस्य बाणगणं जवात्।
तावत्स परिधेणाऽऽशु जघान वृषभं बली॥९॥

वृषस्तेन प्रहारेण परावृत्तो रणाङ्गणात्।
रुद्रेणाऽऽप्यमाणोऽपि न तस्थौ रणभूमिषु॥१०॥

ततः परमसङ्कुद्धो रुद्रो रौद्रवपुर्धरः।
चक्रं सुदर्शनं वेगाच्चिक्षेऽदित्यवर्चसम्॥११॥

प्रदहद्रोदसी वेगात्पपात वसुधातले।
जहार तच्छिरः कायान्महदायतलोचनम्॥१२॥

रथात्कायः पपातास्य नादयन्वसुधातलम्।
तेजश्च निर्गतं देहात्तद्रुद्रे लयमागमत्॥१३॥

वृन्दादेहोद्भवं तेजस्तद्रौर्यां विलयं गतम्।
अथ ब्रह्मादयो देवा हर्षादुत्फुल्ललोचनाः॥१४॥

प्रणम्य शिरसा रुद्रं शशंसुर्विष्णुचेष्टितम्।

देवा ऊचुः

महादेव त्वया देवा रक्षिताः शत्रुजाद्भयात्॥१५॥

किञ्चिदन्यत्समुद्भूतं तत्र किं करवामहे।
वृन्दालावण्यसम्भ्रान्तो विष्णुस्तिष्ठति मोहितः॥१६॥

ईश्वर उवाच

गच्छध्वं शरणं देवा विष्णोर्मोहापनुत्तये।
शरण्यां मोहिनीं मायां सा वः कार्यं करिष्यति॥१७॥

नारद उवाच

इत्युक्तान्तर्दधे देवः सर्वभूतगणैस्तदा।
देवाश्च तुष्टुवुर्मूलप्रकृतिं भक्तवत्सलाम्॥१८॥

देवा ऊचुः

यदुद्धवाः सत्त्वरजस्तमोगुणाः
सर्गस्थितिध्वंसनिदानकारिणः ।
यदिच्छया विश्वमिदं भवाभवौ
तनोति मूलप्रकृतिं नताः स्म ताम्॥१९॥

या हि त्रयोविंशतिभेदशब्दिता जगत्पशेषे समधिष्ठिता परा।
यद्रूपकर्माणि जडास्त्रयोऽपि देवा न विद्युः प्रकृतिं नताः स्म ताम्॥२०॥

यद्भक्तियुक्ताः पुरुषास्तु नित्यं
दारिद्र्यभीमोहपराभवादीन् ।
न प्राप्नुवन्त्येव हि भक्तवत्सलां
सदैव मूलप्रकृतिं नताः स्म ताम्॥२१॥

नारद उवाच

स्तोत्रमेतत्रिसन्ध्यं यः पठेदेकाग्रमानसः।
दारिद्र्यमोहदुःखानि न कदाचित्स्पृशन्ति तम्॥२२॥
इत्थं स्तुवन्तस्ते देवास्तेजोमण्डलमास्थितम्।
ददृशुर्गगनं तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्॥२३॥

तन्मध्याद्भारतीं सर्वे शुश्रुवुर्योमचारिणीम्।

शक्तिरुवाच

अहमेव त्रिधा भिन्ना तिष्ठामि त्रिविधैर्गुणैः॥२४॥
गौरी लक्ष्मी स्वरा चेति रजःसत्त्वतमोगुणैः।
तत्र गच्छत ताः कार्यं विधास्यति च वः सुराः॥२५॥

नारद उवाच

शृण्वतामिति तां वाचमन्तर्धानमगान्महः।
देवानां विस्मयोत्फुल्लनेत्राणां तत्तदा नृप॥२६॥
ततः सर्वेऽपि ते देवा गत्वा तद्वाक्यनोदिताः।
गौरीं लक्ष्मीं स्वरां चैव प्रणेमुर्भक्तितत्पराः॥२७॥
ततस्तास्तान्सुरान्दृष्ट्वा प्रणतान्भक्तवत्सलाः।
बीजानि प्रददुस्तेभ्यो वाक्यान्यूचुश्च भूमिप॥२८॥

देव्य ऊचुः

इमानि तत्र बीजानि विष्णुर्यत्रावतिष्ठते।
निर्वपध्वं ततः कार्यं भवतां सिद्धिमेष्यति॥२९॥

नारद उवाच

ततस्तु हृष्टाः सुरसिद्धसङ्घाः
प्रगृह्य बीजानि विचिक्षिपुस्ते।
वृन्दान्वितो भूमितले स यत्र
विष्णुः सदा तिष्ठति सौख्यहीनः॥३०॥

आदितः श्लोकाः — १२३८

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

जलन्धरमुक्तिकथनं
नाम द्वाविंशोऽध्यायः॥२२॥



॥ अथ त्रयोविंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

क्षिप्तेभ्यस्तत्र बीजेभ्यो वनस्पत्यस्त्रयोऽभवन्।
धात्री च मालती चैव तुलसी च नृपोत्तम॥१॥

धात्र्युद्धवा स्मृता धात्री माभवा मालती स्मृता।
गौरीभवा च तुलसी तमःसत्त्वरजोगुणाः॥२॥

स्त्रीरूपिण्यौ वनस्पत्यौ दृष्ट्वा विष्णुस्तदा नृप।
उत्तस्थौ सम्भ्रमाद्वन्दा रूपातिशयविभ्रमः॥३॥

दृष्ट्वा च याचते मोहात्कामासक्तेन चेतसा।
तं चापि तुलसीधात्र्यौ रागेणैव व्यलोकताम्॥४॥

यच्च लक्ष्म्या पुरा बीजमीर्ष्ययैव समर्पितम्।
तस्मात्तदुद्धवा नारी तस्मिन्नीर्ष्यापराऽभवत्॥५॥

अतः सा बर्बरीत्याख्यामवापाध विगर्हिताम्।
धात्रीतुलस्यौ तद्रागात्तस्य प्रीतिप्रदे सदा॥६॥

ततो विस्तदुःखोऽसौ विष्णुस्ताभ्यां सहैव तु।
वैकुण्ठमगमद्धृष्टः सर्वदेव नमस्कृतः॥७॥

कार्तिकोद्यापने विष्णोस्तस्मात्पूजा विधीयते।
तुलसीमूलदेशेऽस्य प्रीतिदा सा यतः स्मृता॥८॥

तुलसीकाननं राजन्गृहे स्यावतिष्ठते।
 तद्गृहं तीर्थरूपं तु नाऽऽयान्ति यमकिङ्कराः॥१॥
 सर्वपापहरं नित्यं कामदं तुलसीवनम्।
 रोपयन्ति नराः श्रेष्ठास्ते न पश्यन्ति भास्करिम्॥१०॥
 दर्शनं नर्मदायास्तु गङ्गास्नानं तथैव च।
 तुलसीवनसंसर्गः सममेव त्रयं स्मृतम्॥११॥
 रोपणात्पालनात्सेकाद्दर्शनात्स्पर्शनान्नृणाम्।
 तुलसी दहते पापं वाङ्मनःकायसञ्चितम्॥१२॥
 तुलसीमञ्जरीभिर्यः कुर्याद्धरिहरार्चनम्।
 न स गर्भगृहं याति मुक्तिभागी न संशयः॥१३॥
 पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
 वासुदेवादयो देवास्तिष्ठन्ति तुलसीदले॥१४॥
 तुलसीमञ्जरीयुक्तो यस्तु प्राणान्विमुञ्चति।
 यमोऽपि नेक्षितुं शक्तो युक्तं पापशतैरपि॥१५॥
 विष्णोः सायुज्यमाप्नोति सत्यं सत्यं नृपोत्तम।
 तुलसीकाष्ठजं यस्तु चन्दनं धारयेन्नरः॥१६॥
 तद्गृहं न स्पृशेत्पापं क्रियमाणमपीह यत्।
 तुलसीविपिनच्छाया यत्रयत्र भवेन्नृप॥१७॥
 तत्र श्राद्धं प्रकर्तव्यं पितॄणां दत्तमक्षयम्।
 धात्रीफलविमिश्रैश्च तुलसीपत्रमिश्रितैः॥१८॥
 जलैः स्नाति नरस्तस्य गङ्गास्नानफलं स्मृतम्।
 देवार्चनं नरः कुर्याद्धात्रीपत्रैः फलैस्तथा॥१९॥

सुवर्णमणिमुक्तौघैरर्चनस्याप्रुयात्फलम् ।
तीर्थानि मुनयो देवा यज्ञाः सर्वेऽपि कार्तिके ॥ २० ॥

नित्यं धात्रीं समाश्रित्य तिष्ठन्त्यर्के तुलास्थिते।
द्वादश्यां तुलसीपत्रं धात्रीपत्रं तु कार्तिके ॥ २१ ॥

लुनाति स नरो गच्छेन्निरयानतिगर्हितान्।
धात्रीतुलस्योर्माहात्म्यमपि देवश्चतुर्मुखः।
न समर्थो भवेद्वक्तुं यथा देवस्य शार्ङ्गिणः ॥ २२ ॥

धात्रीतुलस्युद्धवकारणं यः
शृणोति यः श्रावयते च भक्त्या।
विधूतपाप्मा सह पूर्वजैः स्वैः
स्वर्गं ब्रजत्यग्रविमानसंस्थैः ॥ २३ ॥

आदितः श्लोकाः — १२६१

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
धात्रीतुलस्युत्पत्तिवर्णनं
नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥



॥ अथ चतुर्विंशोऽध्यायः ॥

पृथुरुवाच

यदूर्जव्रतिनः पुंसः फलं महदुदाहृतम्।
तत्पुनर्ब्रूहि माहात्म्यं केन चीर्णमिदं शुभम्॥१॥

नारद उवाच

आसीत्सह्याद्रिविषये करवीरपुरे पुरा।
ब्राह्मणो धर्मवित्कश्चिद्धर्मदत्तेति विश्रुतः॥२॥

विष्णुव्रतकरः सम्यग्विष्णुपूजारतः सदा।
कदाचित्कार्तिके मासि हरिजागरणाय सः॥३॥

रात्र्यां तुर्यावशेषायां जगाम हरिमदिरम्।
हरिपूजोपकरणान्प्रगृह्य ब्रजता तदा॥४॥

तेन दृष्टा समायाता राक्षसी भीमदर्शना।
तां दृष्ट्वा भयवित्रस्तः कम्पितावयवस्तदा॥५॥

पूजोपकरणैः सर्वैः पयोभिश्चाहनद्भयात्।
संस्मृत्य तद्धरेर्नाम तुलसीयुक्तवारिणा।
तेन वै हतमात्रे तु पापं तस्या ह्यगाल्लयम्॥६॥

अथ संस्मृत्य सा पूर्वजन्मकर्मविपाकजाम्।
स्वां दशामब्रवीद्विप्रं दण्डवच्च प्रणम्य वै॥७॥

कलहोवाच

पूर्वकर्मविपाकेन दशामेतां गतास्म्यहम्।
तत्कथं नु पुनर्विप्र प्रयास्याम्युत्तमां गतिम्॥८॥

नारद उवाच

तां दृष्ट्वा प्रणतां सम्यग्वदमानां स्वकर्म तत्।
अतीव विस्मितो विप्रस्तदा वचनमब्रवीत्॥९॥

धर्मदत्त उवाच

केन कर्मविपाकेन त्वं दशामीदृशीं गता।
कुत्रत्या का च किं शीला तत्सर्वं कथयस्व मे॥१०॥

कलहोवाच

सौराष्ट्रनगरे ब्रह्मन् भिक्षुर्नामाभवद्विजः।
तस्याहं गृहिणी पूर्वं कलहाख्याऽतिनिष्ठुरा॥११॥

न कदाचिन्मया भर्तुर्वचसाऽपि शुभं कृतम्।
नार्पितं तस्य मिष्टान्नं भर्तुर्वचनशीलया॥१२॥

कलहप्रियया नित्यं मयोद्विग्नमना यदा।
परिणेतुं यदाऽन्यां स मतिं चक्रे पतिर्मम॥१३॥

ततो गरं समादाय प्राणास्त्यक्ता मया द्विज।
अथ बद्धा बध्यमानां मां निन्युर्यमकिङ्कराः॥१४॥

यमश्च मां तदा दृष्ट्वा चित्रगुप्तमपृच्छत॥१५॥

यम उवाच

अनया किं कृतं कर्म चित्रगुप्त विलोकय।
प्राप्तोत्वेष्टा च तत्कर्म शुभं वा यदि वाऽशुभम्॥१६॥

कलहोवाच

चित्रगुप्तस्तदा वाक्यं भर्त्सयन्मामुवाच सः।

चित्रगुप्त उवाच

अनया तु कृतं कर्म शुभं किञ्चिन्न विद्यते॥१७॥

मिष्टान्नं भुञ्जमानेयं न भर्तारि तदर्पितम्।
अतश्च वल्गुलीयोन्यां विष्ठादाऽवतिष्ठतु॥१८॥

भर्तुर्द्वेषात्तदाप्येषा नित्यं कलहकारिणी।
विष्ठादां सूकरीं योनिं तस्मात्तिष्ठत्वियं हरे॥१९॥

पाकभाण्डे सदा भुङ्क्ते भुङ्क्ते चैका यतस्ततः।
तस्मादेषा बिडाल्यस्तु स्वजाताऽपत्यभक्षिणी॥२०॥

भर्तारमपि चोद्दिश्य ह्यात्मघातः कृतोऽनया।
तस्मात्प्रेतशरीरेऽपि तिष्ठत्वेकाऽतिनिन्दिता॥२१॥

अतश्चैषा मरुद्देशं प्रापितव्या भटैरियम्।
तत्र प्रेतशरीरस्था चिरं तिष्ठत्वियं ततः॥२२॥

ऊर्ध्वं योनित्रयं चैषा भुनक्तुशुभकारिणी॥२३॥

कलहोवाच

साहं पञ्चशताब्दानि प्रेतदेहे स्थिता किल।
क्षुतृङ्गां पीडिताऽऽविश्य शरीरं वणिजस्य च।
आयाता दक्षिणं देशं कृष्णावेण्योश्च सङ्गमम्॥२४॥

तत्तीरं संश्रिता यावत्तावत्तस्य शरीरतः।
शिवविष्णुगणैर्दूरमपकृष्टा बलादहम्॥२५॥

ततः क्षुत्क्षामया दृष्टो मया हि त्वं द्विजोत्तम।
त्वद्धस्ततुलसीवारिसंसर्गगतपापया ॥२६॥

तत्कृत्यं कुरु विप्रेन्द्र कथं मुक्तिमियाम्यहम्।
योनित्रयादग्रभवादस्माच्च प्रेतदेहतः॥२७॥

इत्थं विचिन्त्य कलहावचनं द्विजाग्र्यस्तत्कर्मपाकभयविस्मयदुःखयुक्तः।
तद्भानिदर्शनकृपाचलचित्तवृत्तिं ध्यात्वा चिरं स वचनं निजगाद दुःखात्॥२८॥

आदितः श्लोकाः — १२८९

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
धर्मदत्तेतिहासकथनं
नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥२४॥



॥ अथ पञ्चविंशोऽध्यायः ॥

धर्मदत्त उवाच

विलयं यान्ति पापानि तीर्थे दानव्रतादिभिः।
प्रेतदेहस्थितायास्ते तेषु नैवाऽधिकारिता॥१॥
त्वद्भानिदर्शनादस्मात्खिन्नं च मम मानसम्।
न वै निर्वृतिमायाति त्वामनुद्धृत्य दुःखिताम्॥२॥
तस्मादाजन्मचरितं यन्मया कार्तिकव्रतम्।
तत्पुण्यस्यार्द्धभागेन सद्गतिं त्वमवाप्नुहि॥३॥

नारद उवाच

इत्युक्त्वा धर्मदत्तोऽसौ यावत्तामभ्यषेचयत्।
तुलसीमिश्रतोयेन श्रावयन्द्वादशाक्षरम्॥४॥
तावत्प्रेतत्वनिर्मुक्ता ज्वलदग्निशिखोपमा।
दिव्यरूपधरा जाता लावण्येन यथेन्दिरा॥५॥

ततः सा दण्डवद्भूमौ प्रणनामाथ तं द्विजम्।
उवाच सा तदा वाक्यैर्हर्षगद्गदभाषिणी॥६॥

कलहोवाच

त्वत्प्रसादाद्विजश्रेष्ठ विमुक्ता निरयादहम्।
पापाब्धौ मज्जमानायास्त्वं नौभूतोऽसि मे ध्रुवम्॥७॥

नारद उवाच

इत्थं वदन्ती सा विप्रं ददर्शाऽऽयातमम्बरात्।
विमानं भास्वरं युक्तं विष्णुरूपधरैर्गणैः॥८॥

अथ सा तद्विमानाग्र्यं द्वाःस्थाभ्यामवरोपिता।
पुण्यशीलसुशीलाभ्यामप्सरोगणसेविता ॥९॥

तद्विमानं तदाऽपश्यद्धर्मदत्तः सविस्मयः।
पपात दण्डवद्भूमौ दृष्ट्वा तौ विष्णुरूपिणौ॥१०॥

पुण्यशीलसुशीलौ च तमुत्थाप्याऽऽनतं द्विजम्।
अभिनन्द्य ततो वाक्यमूचतुर्धर्मसंयुतम्॥११॥

गणावूचतुः

साधुसाधु द्विजश्रेष्ठ यस्त्वं विष्णुरतः सदा।
दीनानुकम्पी सर्वज्ञो विष्णुव्रतपरायणः॥१२॥

आ बालत्वाच्छुभं त्वेतद्यत्त्वया कार्तिकव्रतम्।
कृतं तस्यार्द्धदानेन पुण्यं द्वैगुण्यमागमत्॥१३॥

जन्मान्तरशतोद्धूतं पापं तद्विलयं गतम्।
स्नानैरेव गतं पापं यदस्याः पूर्वकर्मजम्॥१४॥

हरिजागरणाद्यैश्च विमानमिदमास्थिता।
वैकुण्ठे नीयते साधो नानाभोगयुता त्वियम्॥१५॥

दीपदानभवैः पुण्यैस्तेजःसारूप्यमास्थिता।
तुलसीपूजनाद्यैश्च कार्तिकव्रतकैः शुभैः।
विष्णुसान्निध्यगा जाता त्वया दत्तैः कृपानिधे॥१६॥

त्वमप्यस्य भवस्यान्ते भार्याभ्यां सह यास्यसि।
वैकुण्ठ भुवनं विष्णोः सान्निध्यं च सरूपताम्॥१७॥

ते धन्याः कृतकृत्यास्ते तेषां च सफलो भवः।
यैर्भक्त्याराधितो विष्णुर्धर्मदत्त यथा त्वया॥१८॥

सम्यगाराधितो विष्णुः किं न यच्छति देहिनाम्।
औत्तानचरणिर्येन ध्रुवत्वे स्थापितः पुरा॥१९॥

यन्नामस्मरणादेव देहिनो यान्ति सद्गतिम्॥२०॥

ग्राहग्रस्तो हि नागेन्द्रो यन्नामस्मरणात्पुरा।
विमुक्तः सन्निधिं प्राप्तो जातोऽयं जयसंज्ञकः॥२१॥

यतस्त्वयाऽर्चितो विष्णुस्तत्सान्निध्यं प्रयास्यसि।
बहून्यब्दसहस्राणि भार्याद्वययुतः किल॥२२॥

ततः पुण्यक्षयेजाते यदा यास्यसि भूतलम्।
सूर्यवंशोद्भवो राजा विख्यातस्त्वं भविष्यसि॥२३॥

नाम्ना दशरथस्तत्र भार्याद्वययुतः पुनः।
तृतीययाऽनया चापि या ते पुण्यार्द्धभागिनी॥२४॥

तत्रापि तव सान्निध्यं विष्णुर्यास्यति भूतले।
आत्मानं तव पुत्रत्वे प्रकल्प्याऽमरकार्यकृत्॥२५॥

तव जन्मव्रतादस्माद्विष्णुसन्तुष्टिकारकात्।
न यज्ञा न च दानानि न तीर्थान्यधिकानि वै॥२६॥

धन्योऽसि विप्राग्र्य यतस्त्वयैतद्व्रतं कृतं तुष्टिकरं जगद्गुरोः।
यदर्धभागात्सफला मुरारेः प्रणीयतेऽस्माभिरियं सलोकताम्॥२७॥

आदितः श्लोकाः — १३१६

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
धर्मदत्तोपाख्याने कलहामोक्षकथनं
नाम पञ्चविंशोऽध्यायः॥२५॥



॥ अथ षड्विंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

इत्थं तद्वचनं श्रुत्वा धर्मदत्तः सविस्मयः।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ वाक्यमेतदुवाच ह॥१॥

धर्मदत्त उवाच

आराधयन्ति सर्वेऽपि विष्णुं भक्तार्तिनाशनम्।
यज्ञैर्दानैर्व्रतैस्तीर्थैस्तपोभिश्च यथाविधि॥२॥
विष्णुप्रीतिकरं तेषां किञ्चित्सान्निध्यकारकम्।
यत्कृत्वा तानि चीर्णानि सर्वाण्यपि भवन्ति हि॥३॥

गणावूचतुः

साधु पृष्टं त्वया विप्र शृणुष्वैकाग्रमानसः।
सेतिहासकथां पुण्यां कथ्यमानां पुराभवाम्॥४॥
काञ्चिपुर्यां पुरा चोलश्चक्रवर्ती नृपोऽभवत्।
यस्याख्ययैव ते देशाश्चोला इति प्रथां गताः॥५॥

यस्मिञ्छासति भूचक्रं दरिद्रो वाऽपि दुःखितः।
पापबुद्धिः सरुग्वापि नैव कश्चिदभून्नरः॥६॥

यस्याप्युन्नतयज्ञस्य ताम्रपर्ण्यास्तटाबुभौ।
सुवर्णयूपैः शोभाढ्यावास्तां चैत्ररथोपमौ॥७॥

स कदाचिदगाद्राजा ह्यनन्तशयनं द्विज।
यत्रासौ जगतां नाथो योगनिद्रामुपाश्रितः॥८॥

तत्र श्रीरमणं देवं सम्पूज्य विधिवन्नृपः।
मणिमुक्ताफलैर्दिव्यैः स्वर्णपुष्पैश्च शोभनैः॥९॥

प्रणम्य दण्डवद्भूमावुपविष्टः स तत्र वै।
तावद्ब्राह्मणमायातमपश्यद्देवसन्निधौ ॥१०॥

देवार्चनार्थं पाणौ तु तुलस्युदकधारिणम्।
स्वपुरीवासिनं तत्र विष्णुदासाह्वयं द्विजम्॥११॥

स तत्राभ्येत्य विप्रर्षिर्देवदेवमपूजयत्।
विष्णुसूक्तेन संस्नाप्य तुलसीमञ्जरीदलैः॥१२॥

तुलसीपूजया तस्य रत्नपूजां पुरा कृताम्।
आच्छादितां समालोक्य राजा क्रुद्धोऽब्रवीदिदम्॥१३॥

चोल उवाच

माणिक्यस्वर्णपूजाऽत्र शोभाढ्या या कृता मया।
विष्णुदास कथं सेयमाच्छन्ना तुलसीदलैः॥१४॥

विष्णुभक्तिं न जानासि वराकोऽसि मतो मम।
यस्त्विमामतिशोभाढ्यां पूजामाच्छादयस्यहो॥१५॥

इति तद्वचनं श्रुत्वा सक्रोधः स द्विजोत्तमः।
राज्ञो गौरवमुल्लङ्घ्य जगाद वचनं तदा॥१६॥

विष्णुदास उवाच

राजन्भक्तिं न जानासि गर्वितोऽसि नृपश्रिया।
कियद्विष्णुव्रतं पूर्वं त्वया चीर्णं वदस्व तत्॥१७॥

गणावूचतुः

तद्वाह्मणवचः श्रुत्वा प्रहस्य स नृपोत्तमः।
विष्णुदासं तदा गर्वादुवाच वचनं द्विजम्॥१८॥

राजोवाच

इत्थं चेद्वदसे विप्र विष्णुभक्त्याऽतिगर्वितः।
भक्तिस्ते कियती विष्णोर्दरिद्रस्याऽधनस्य च॥१९॥
यज्ञदानादिकं नैव विष्णोस्तुष्टिकरं कृतम्।
नापि देवालयं पूर्वं कृतं विप्र त्वया क्वचित्॥२०॥
ईदृशस्यापि ते गर्व एष तिष्ठति भक्तितः।
तच्छृण्वन्तु वचो मेऽद्य सर्वेऽप्येते द्विजातयः॥२१॥
साक्षात्कारमहं विष्णोरेष वादो गमिष्यति।
पश्यन्तु सर्वेऽपि ततो भक्तिं ज्ञास्यन्ति चावयोः॥२२॥

गणावूचतुः

इत्युक्त्वा स नृपोऽगच्छन्निजराजगृहं तदा।
आरभद्वैष्णवं सत्रं कृत्वाऽऽचार्यं तु मुद्गलम्॥२३॥
ऋषिसङ्घसमाजुष्टं बह्वन्नं बहुदक्षिणम्।
यच्च ब्रह्मकृतं पूर्वं गयाक्षेत्रे समृद्धिमत्॥२४॥
विष्णुदासोऽपि तत्रैव तस्थौ देवालये व्रती।
यथोक्तनियमान्कुर्वन्विष्णोस्तुष्टिकरान्सदा ॥२५॥

माघोर्जयोर्व्रतं सम्यक्तुलसीवनपालनम्।
एकादश्यां हरेर्जाप्यं द्वादशाक्षरविद्यया ॥ २६ ॥

उपचारैः षोडशभिर्नृत्यगीतादिमङ्गलैः।
नित्यं विष्णोस्तथा पूजां व्रतान्येतानि सोऽकरोत् ॥ २७ ॥

नित्यं संस्मरणं विष्णोर्गच्छन्भुवि स्वपन्नपि।
सर्वभूतस्थितं विष्णुमपश्यत्समदर्शनः ॥ २८ ॥

माघकार्तिकयोर्नित्यं विशेषनियमानपि।
अकरोद्विष्णुतुष्ट्यर्थं सोद्यापनविधिं तथा ॥ २९ ॥

एवं समाराधयतोः श्रियः पतिं
तयोश्च चोलेश्वरविष्णुदासयोः।
अगाद्धि कालः सुमहान्ब्रतस्थयो-
स्तन्निष्ठसर्वेन्द्रियकर्मणोस्तदा ॥ ३० ॥

आदितः श्लोकाः — १३४६

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
चोलराजविष्णुदासब्राह्मणविवादकथनं
नाम षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥



॥ अथ सप्तविंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

कदाचिद्विष्णुदासोऽथ कृत्वा नित्यविधिं द्विज।
स पाकमकरोत्तावदहरत्कोऽप्यलक्षितः ॥ १ ॥

तमदृष्ट्वाऽप्यसौ पाकं पुनर्नैवाकरोत्तदा।
सायङ्कालार्चनस्यासौ व्रतभङ्गभयाद्विजः॥२॥

द्वितीयेऽहि पुनः पाकं कृत्वा यावत्स विष्णवे।
उपहारार्पणं कर्तुं गतः कोऽप्यहरत्पुनः॥३॥

एवं सप्तदिनं तस्य पाकं कोऽप्यहरन्वृष।
ततः सविस्मयश्चाथ मनस्येवमधारयत्॥४॥

अहो नित्यं समभ्येत्य कः पाकं हरते मम।
क्षेत्रसन्त्रासिनः स्थानं न त्याज्यं मम सर्वथा॥५॥

पुनः पाकं विधायात्र भुज्यते यदि चेन्मया।
सायङ्कालार्चनं चैव परित्याज्यं कथं भवेत्॥६॥

यदि पाकं विधायैवं भोक्तव्यं तु मया न तत्।
अनिवेद्य हरौ सर्वं वैष्णवैर्नैव भुज्यते॥७॥

उपोषितोऽहं सप्ताहं तिष्ठाम्यत्र व्रतस्थितः।
अद्यसंरक्षणं सम्यक्पाकस्यात्र करोम्यहम्॥८॥

इति पाकं विधायासौ तत्रैवालक्षितः स्थितः।
तावद्दर्शं चण्डालं पाकान्नहरणे स्थितम्॥९॥

क्षुत्क्षामं दीनवदनमस्थिचर्मावशेषितम्।
तमालोक्य द्विजाग्र्योऽभूत्कृपयाऽन्वितमानसः॥१०॥

विलोक्यान्नहरं विप्रस्तिष्ठतिष्ठेत्यभाषत।
कथमश्नासि तद्रूक्षं घृतमेतद्गृहाण भोः॥११॥

इत्थं वदन्तं विप्राग्र्यमायान्तं स विलोक्य च।
वेगादधावत्तद्गीत्या मृच्छितश्च पपात ह॥१२॥

भीतं सम्मूर्च्छितं दृष्ट्वा चण्डालं स द्विजाग्रणीः।
वेगादभ्येत्य कृपया स्ववस्त्रान्तैरवीजयत्॥१३॥

अथोत्थितं तमेवासौ विष्णुदासो व्यलोकयत्।
साक्षान्नारायणं देवं शङ्खचक्रगदाधरम्॥१४॥

तं दृष्ट्वा सात्त्विकैर्भावैरावृतो द्विजसत्तमः।
स्तोतुं चैव नमस्कर्तुं तदा नालं बभूव सः॥१५॥

अथ शक्रादयो देवास्तत्रैवाभ्याययुस्तदा।
गन्धर्वाप्सरसश्चापि जगुश्च ननृतुर्मुदा॥१६॥

विमानशतसङ्कीर्णं देवर्षिशतसङ्कुलम्।
गीतवादित्रनिर्घोषं स्थानं तदभवत्तदा॥१७॥

ततो विष्णुः समालिङ्ग्य स्वभक्तं सात्त्विकव्रतम्।
सारूप्यमात्मनो दत्त्वाऽनयद्वैकुण्ठमन्दिरम्॥१८॥

विमानवरसंस्थं तं गच्छन्तं विष्णुसन्निधिम्।
दीक्षितश्चोलनृपतिर्विष्णुदासं ददर्श सः॥१९॥

वैकुण्ठभुवनं यान्तं विष्णुदासं विलोक्य सः।
स्वगुरुं मुद्गलं वेगादाहूयेत्थं वचोऽब्रवीत्॥२०॥

चोल उवाच

यत्स्पृह्यया मया चैव यज्ञदानादिकं कृतम्।
स विष्णुरूपधृग्विप्रो याति वैकुण्ठमन्दिरम्॥२१॥

दीक्षितेन मया सम्यक्सत्रेऽस्मिन्वैष्णवे त्वया।
हुतमग्नौ कृता विप्रा दानाद्यैः पूर्णमानसाः॥२२॥

नैवाद्यापि स मे देवः प्रसन्नो जायते ध्रुवम्।
विष्णुदासस्य भक्त्यैव साक्षात्कारं ददौ हरिः॥२३॥

तस्माद्दानैश्च यज्ञैश्च नैव विष्णुः प्रसीदति।
भक्तिरेव परं तस्य निदानं दर्शने विभोः॥२४॥

गणावूचतुः

इत्युक्त्वा भागिनेयं स्वमभ्यषिञ्चन्नृपासने।
आबाल्याद्वीक्षितो यज्ञे ह्यपुत्रत्वमगाद्यतः॥२५॥

तस्मादद्यापि तद्देशे सदा राज्यांशभागिनः।
स्वस्त्रेया एव जायन्ते तत्कृतावधिवर्तिनः॥२६॥

यज्ञवाटं ततोऽभ्येत्य यज्ञकुण्डाग्रतः स्थितः।
त्रिरुच्चैर्व्याजहाराऽऽशु विष्णुं सम्बोधयंस्तदा॥२७॥

विष्णो भक्तिं स्थिरां देहि मनोवाक्काय कर्मभिः।
इत्युक्त्वा सोऽपतद्वह्नौ सर्वेषामेव पश्यताम्॥२८॥

मुद्गलस्तु तदा क्रोधाच्छिखामुत्पाटयत्स्वकाम्।
ततस्त्वद्यापि तद्गोत्रे मुद्गला विशिखा बभुः॥२९॥

तावदाविरभूद्विष्णुः कुण्डाग्नौ भक्तवत्सलः।
तमालिङ्ग्य विमानाग्र्यं समारोहयदच्युतः॥३०॥

तमालिङ्ग्याऽऽत्मसारूप्यं दत्त्वा वैकुण्ठमन्दिरम्।
तेनैव सह देवेशो जगाम त्रिदशैर्वृतः॥३१॥

नारद उवाच

यो विष्णुदासः स तु पुण्यशीलो
यश्चोलभूपः स सुशीलनामा।
एतावुभौ तत्समरूपभाजौ
द्वाःस्थौ कृतौ तेन रमाप्रियेण॥३२॥

॥ इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
चोलविष्णुदासमुक्तिकथनं
नाम सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥



॥ अथ नामाऽष्टाविंशोऽध्यायः ॥

धर्मदत्त उवाच

जयश्च विजयश्चैव विष्णोर्द्वास्थौ श्रुतौ मया।
किं नु ताभ्यां पुरा चीर्णं तस्मात्तद्रूपधारिणौ ॥ १ ॥

गणावूचतुः

तृणबिन्दोस्तु कन्यायां देवहूत्यां पुरा द्विज।
कर्दमस्य तु दृष्ट्यैव पुत्रौ द्वौ सम्बभूवतुः ॥ २ ॥

ज्येष्ठो जयः कनिष्ठोऽभूद्विजयश्चैव नामतः।
तस्यामेवाऽभवत्पश्चात्कपिलो योगधर्मवित् ॥ ३ ॥

जयश्च विजयश्चैव विष्णुभक्तिरतौ सदा।
तौ तन्निष्ठेन्द्रियग्रामौ धर्मशीलौ बभूवतुः ॥ ४ ॥

नित्यमष्टाक्षरीजाप्यौ विष्णुव्रतकराबुभौ।
साक्षात्कारं ददौ विष्णुस्तयोर्नित्यार्चने सदा ॥ ५ ॥

मरुत्तेन कदाचित्तावाहूतौ यज्ञकर्मणि।
जग्मतुर्यज्ञकुशलौ देवर्षिगणपूजितौ ॥ ६ ॥

जयस्तत्राभवद्ब्रह्मायाजको विजयोऽभवत्।
ततो यज्ञविधिं कृत्स्नं परिपूर्णं च चक्रतुः ॥ ७ ॥

मरुत्तोऽवभृथस्नातस्ताभ्यां वित्तं ददौ बहु।
तत्समादाय तौ वित्तं जग्मतुः स्वाश्रमं प्रति॥८॥

यजनाय पृथग्विष्णोस्तुष्ट्यर्थं तौ ततो मुनी।
तद्धनं विभजन्तौ तु पस्पर्धति परस्परम्॥९॥

जयोऽब्रवीत्समो भागः क्रियतामिति तत्र सः।
विजयश्चाब्रवीन्नैतद्यल्लब्धं येन तस्य तत्॥१०॥

ततोऽशपञ्चयः क्रोधाद्विजयं लुब्धमानसम्।
गृहीत्वा न ददास्येतत्तस्माद्वाहो भवेति तम्॥११॥

विजयस्तस्य तं शापं श्रुत्वा सोप्यशपच्च तम्।
मदभ्रान्तोऽशपस्त्वं मां तस्मान्मातङ्गतां व्रज॥१२॥

तत्तदाचख्यतुर्विष्णुं दृष्ट्वा नित्यार्चने विभुम्।
शापयोश्च निवृत्तिं तौ ययाचाते रमापतिम्॥१३॥

जयविजयावूचतुः

भक्तावावां कथं देव ग्राहमातङ्गयोनिगौ।
भविष्यावः कृपासिन्धो तच्छापो विनिवर्त्यताम्॥१४॥

श्रीभगवानुवाच

मद्भक्तयोर्वचोऽसत्यं न कदाचिद्भविष्यति।
मयाऽपि नान्यथा कर्तुं शक्यते तत्कदाचन॥१५॥

प्रह्लादवचसा स्तम्भेऽप्याविर्भूतो ह्यहं पुरा।
तथाऽम्बरीषवाक्येन जातो गर्भे स्वयं किल॥१६॥

तस्माद्युवामिमौ शापावनुभूय स्वयङ्कृतौ।
लभेथां मत्पदं नित्यमित्युक्त्वाऽन्तर्दधे हरिः॥१७॥

गणावूचतुः

ततस्तौ ग्राहमातङ्गावभूतां गण्डकीतटे।
जातिस्मरौ तु तद्योन्यामपि विष्णुव्रते स्थितौ॥१८॥

कदाचित्स गजः स्नातुं कार्तिके गण्डकीं गतः।
तावज्जग्राह तं ग्राहः संस्मरञ्छापकारणम्॥१९॥

ग्राहग्रस्तो ह्यसौ नागः सस्मार श्रीपतिं तदा।
तावदाविरभूद्विष्णुश्चक्रशङ्खगदाधरः ॥२०॥

ततस्तौ ग्राहमातङ्गौ चक्रं क्षित्वा समुद्धृतौ।
दत्त्वैव निजसारूप्यं वैकुण्ठमनयद्विभुः॥२१॥

ततःप्रभृति तत्स्थानं हरिक्षेत्रमितिस्मृतम्।
चक्रसङ्घर्षणाद्यस्मिन्ग्रावाणोऽपि हि लाञ्छिताः॥२२॥

तावुभौ विश्रुतौ लोके जयश्च विजयस्तथा।
नित्यं विष्णुप्रियो द्वाःस्थौ पृष्ठौ यौ हि त्वया द्विज॥२३॥

अतस्त्वमपि धर्मज्ञ नित्यं विष्णुव्रते स्थितः।
त्यक्तमात्सर्यदम्भोऽपि भवस्व समदर्शनः॥२४॥

तुलामकरमेषेषु प्रातःस्नायी सदा भव।
एकादशीव्रते तिष्ठ तुलसीवनपालकः॥२५॥

ब्राह्मणानथ गाश्चापि वैष्णवांश्च सदा भज।
मसूरिकामारनालं वृन्ताकान्यपि खाद मा॥२६॥

एवं त्वमपि देहान्ते तद्विष्णोः परमं पदम्।
प्राप्नोषि धर्मदत्त त्वं तद्भक्त्यैव यथा वयम्॥२७॥

तावज्जन्म व्रतादस्माद्विष्णुसन्तुष्टिकारकात्।
न यज्ञा न च दानानि न तीर्थान्यधिकानि वै॥२८॥

धन्योऽसि विप्राग्र्य यतस्त्वयैतद्व्रतं कृतं तुष्टिकरं जगद्गुरोः।
यदर्धभागाप्तफला मुरारेः प्रणीयतेऽस्माभिरियं सलोकताम्॥२९॥

नारद उवाच

इत्थं तौ धर्मदत्तं तमुपदिश्य विमानगौ।
तया कलहया सार्द्धं वैकुण्ठभवनं गतौ॥३०॥

धर्मदत्तो ह्यसौ जातप्रत्ययस्तद्व्रते स्थितः।
देहान्ते तद्विभोः स्थानं भार्याभ्यां संयुतोऽभ्ययात्॥३१॥

इतिहासमिमं पुराभवं शृणुते श्रावयते च यः पुमान्।
हरिसन्निधिकारणीं मतिं लभतेऽसौ कृपया जगद्गुरोः॥३२॥

आदितः श्लोकाः — १४१०

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
धर्मदत्तमोक्षप्राप्तिकथनं
नामाष्टाविंशोऽध्यायः॥२८॥



॥ अथ नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥

श्रीकृष्ण उवाच

इति तद्वचनं श्रुत्वा पृथुर्विस्मितमानसः।
सम्पूज्य नारदं सम्यग्विससर्ज तदा प्रिये॥१॥

पुराऽवन्तीपुरे कश्चिद्विप्र आसीद्धनेश्वरः।
ब्रह्मकर्मपरिभ्रष्टः पापकर्मा सुदुर्मतिः॥२॥

देशाद्देशातरं गच्छन्क्रयविक्रयकारणात्।
माहिष्मतीपुरीमागात्कदाचित्स धनेश्वरः॥३॥

महिषेण कृता पूर्वं तस्मान्माहिष्मतीति सा।
यस्या वप्रगता भाति नर्मदा पापनाशिनी॥४॥

कार्तिकव्रतिनस्तत्र नानादेशागतान्नरान्।
स दृष्ट्वा विक्रयं कुर्वन्मासमेकमुवास सः॥५॥

स नित्यं नर्मदातीरे भ्रमन्विक्रयकारणात्।
ददर्श ब्राह्मणान्स्नानजपदेवार्चने स्थितान्॥६॥

कांश्चित्पुराणं पठतः कांश्चिच्च श्रवणे रतान्।
नृत्यगायनवादित्रविष्णुश्रवणतत्परान् ॥७॥

उद्यापनविधौ सक्तान्कांश्चिज्जागरणे रतान्।
विप्रगोपूजनरतान्दीपदानरतांस्तथा ॥८॥

ददर्श कौतुकाविष्टस्तत्रतत्र धनेश्वरः।
नित्यं परिभ्रमंस्तत्र दर्शनस्पर्शभाषणात्॥९॥

वैष्णवानां तथा विष्णोर्नामश्रावादि सोऽलभत्।
एवं मासं स्थितस्तस्या नर्मदायास्तटे द्विजः॥१०॥

तावत्कृष्णाहिना दष्टो विह्वलः स पपात ह।
अथ देहपरित्यक्तं तं वद्ध्वा यमकिङ्कराः॥११॥

यमाज्ञया कुम्भिपाके चिक्षिपुस्तं धनेश्वरम्।
यावत्क्षिप्तश्च तत्रासौ तावच्छीतलतां ययौ॥१२॥

कुम्भीपाको यथा वह्निः प्रह्लादक्षेपणात्पुरा।
यमस्तु कौतुकं दृष्ट्वा पप्रच्छानीय तं ततः॥१३॥

तावदभ्यागतस्तत्र नारदः प्राह सत्वरम्।

नारद उवाच

नैवायं निरयान्भोक्तुमर्हो ह्यरुणनन्दन॥१४॥

यस्मादन्तेऽस्य सञ्जातं कर्म यन्निरयापहम्।
यः पुण्यकर्मिणां कुर्याद्दर्शनस्पर्शभाषणम्॥१५॥

ततः षडंशमाप्नोति पुण्यस्य नियतं नरः।
सख्यं तु तैस्तु संसर्गं कृतवान्वै धनेश्वरः॥१६॥

कार्तिकव्रतिभिर्मासं तेषां पुण्यांशभागयम्॥१७॥

तस्मादकामपुण्यो हि यक्षयोनिस्थितो ह्ययम्।
विलोक्य निरयान्सर्वान्पापभोगप्रदर्शकान्॥१८॥

श्रीकृष्ण उवाच

इत्युक्त्वा गतवति नारदे स सौरि-
स्तद्वाक्यश्रवणविबुद्धतत्सुकर्मा ।
तं विप्रं पुनरनयत्स्वकिङ्करेण
तान्सर्वान्निरयगणान्प्रदर्शयिष्यन्॥१९॥

ततो धनेश्वरं नीत्वा निरयान्प्रेतपोऽब्रवीत्।
दर्शयिष्यंस्तु तान्सर्वान्यमानुज्ञाकरस्तदा॥२०॥

प्रेतप उवाच

पश्येमान्निरयान्धोरान्धनेश्वर महाभयान्।
एषु पापकरा नित्यं पच्यन्ते यमकिङ्करैः॥२१॥

अकामात्पातकं शुष्कं कामादाद्रमुदाहृतम्।
आर्द्रशुष्कादिभिः पापैर्द्विप्रकारानवस्थितान्॥२२॥

चतुराशीतिसङ्ख्याकैः पृथग्भेदैरवस्थितान्।
यत्प्रकीर्णमपाङ्केयं मलिनीकरणं तथा॥२३॥

जातिभ्रंशकरं तद्वदुपपातकसंज्ञकम्।
अतिपापं महापापं सप्तधा पातकं स्मृतम्॥२४॥

एभिः सप्तसु पच्यन्ते निरयेषु यथाक्रमम्।
कार्तिकव्रतिभिर्यस्मात्संसर्गो ह्यभवत्तव॥२५॥

तत्पुण्योपचयादेते निर्हृता निरयाः खलु।

श्रीकृष्ण उवाच

दर्शयित्वेति निरयान्प्रेतपस्तमथाहरत्॥२६॥

धनेश्वरं यक्षलोकं यक्षश्चाभूत्स तत्र हि।
धनदस्यानुगः सोऽयं धनयक्षेति विश्रुतः॥२७॥

सूत उवाच

इत्युक्त्वा वासुदेवोऽसौ सत्यभामामतिप्रियम्।
सायंसन्ध्याविधिं कर्तुं जगाम जननीगृहम्॥२८॥

ब्रह्मोवाच

एवम्प्रभावः खलु कार्तिकोऽयं मुक्तिप्रदो भुक्तिकरश्च यस्मात्।
प्रयान्त्यनेकाऽर्जितपातकानि व्रतस्य सन्दर्शयतोऽपि मुक्तिम्॥२९॥

आदितः श्लोकाः — १४३९

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
धनेश्वरयक्षजन्मप्राप्तिवर्णनं
नामैकोनत्रिंशोऽध्यायः॥२९॥



॥ अथ त्रिंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

अद्भुतोऽयं त्वया प्रोक्तो महिमा कार्तिकस्य तु।
स्वस्य कर्तुमसामर्थ्यं कथमेतत्कृतं भवेत्॥१॥

ब्रह्मोवाच

नास्ति कर्तुं स्वसामर्थ्यमुपायात्प्राप्यते फलम्।
द्रव्यं दत्त्वा ब्राह्मणाय गृहीयात्फलमुत्तमम्॥२॥
शिष्याद्वा भृत्यवर्गाद्वा स्त्रीभ्यो वाऽऽप्ताच्च कारयेत्।
तस्मादपि फलं गृह्णन्फलभागजायते नरः॥३॥

नारद उवाच

अदत्तान्यपि पुण्यानि प्राप्यन्ते केनचित्क्वचित्।
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं कौतुकं मम वर्तते॥४॥

ब्रह्मोवाच

अदत्तान्यपि पुण्यानि लभन्ते पातकान्यपि।
येनोपायेन तद्वच्मि शृणुष्वैकमना द्विज॥५॥
सुकृतं वा दुष्कृतं वा कृतमेकेन यत्कृते।
जायते तस्य तद्राष्ट्रे त्रेतायां तु पुरो भवेत्॥६॥
द्वापरे वंशमध्ये तु कलौ कर्तैव केवलम्।
आज्ञानाद्यत्कृतं कर्म बाल्ये स्वप्ने तु तत्फलम्॥७॥
अज्ञानाद्यच्च तारुण्ये बाल्ये तस्य फलं भवेत्।
ज्ञानपूर्वं कृतं कर्म आजन्मान्तं च तत्फलम्॥८॥
षण्मासं पापिसङ्गेन नरः पापी प्रजायते।
पापिनां वा धर्मिणां वा संसर्गाद्दशमासिकम्॥९॥

भोजनादेकपङ्क्तौ च विंशांशः पुण्यपापयोः।
एकासने द्वयोर्वासात्सहस्रांशेन लिप्यते॥१०॥

यो वै यस्यान्नमश्राति स भुङ्क्ते तस्य किल्बिषम्।
जपादौ पापिसंसर्गात्षोडशांशो विनश्यति॥११॥

परस्य स्तवनाद्यानादेकपात्रस्थभोजनात्।
एकशय्याप्रावरणात्षष्ठांशः पुण्यपापयोः॥१२॥

पुरुषो हरते सर्वं भार्याया औरसस्य च।
अर्द्धं शिष्याच्चतुर्थांशं पापं पुण्यं तथैव च॥१३॥

भर्तुराज्ञाकरी नारी भर्तुरर्द्धं वृषं हरेत्।
यद्धस्तपक्कं भुजीयादशांशं तदघं हरेत्॥१४॥

वर्षाऽशनं तु यो दत्ते तदर्द्धाघस्य भागयम्।
वर्षाशनार्द्धं पुण्यं तु भुङ्क्ते वर्षाशनी नरः॥१५॥

पुरोहितस्य षष्ठांशं पापं वा पुण्यमेव वा।
यजमानो भुनक्त्येव तदशांशं पुरोहितः॥१६॥

उद्योगी चानुमन्ता च यश्चोपकरणप्रदः।
षष्ठांशं पुण्यपापानामुपद्रष्टा दशांशकम्॥१७॥

यद्धस्तात्कार्यते कर्म नान्नमस्मै प्रयच्छति।
विना भृतकशिष्याभ्यां षष्ठांशं पुण्यमाहरेत्॥१८॥

व्यवहारात्तथा प्रीत्या नित्यं सम्भाषणादिभिः।
दशांशं पुण्यपापानां लभते नात्र संशयः॥१९॥

संसर्गपुण्ययोगेन एकदन्तो द्विजाधमः।
नरकान्विविधान्दृष्ट्वा स्वर्गं प्राप तदैव हि॥२०॥

नारद उवाच

ईदृशं कार्तिकव्रतमल्पायासं महत्फलम्।
न कुर्वन्ति जनाः केचित्किमर्थं वै पितामह॥२१॥

ब्रह्मोवाच

स्वसृष्टिवृद्धये वेधा धर्माधर्मौ ससर्ज ह।
धर्ममेवानुतिष्ठन्तः प्राप्नुवन्ति शुभां गतिम्॥२२॥
अधर्ममनुतिष्ठन्तो यान्ति तेऽधोगतिं नराः।
पुण्यकर्मफलं नाको नरकस्तद्विपर्ययः॥२३॥
तयोः पालनकर्तारौ द्वावेव विधिना कृतौ।
शतक्रतुयमौ तौ च पुण्यपापानुसारिणौ॥२४॥
गुरुतल्पादयः पुत्राः कामस्य प्रथिता भुवि।
क्रोधस्य पितृघाताद्या लोभस्य तनयाञ्छृणु॥२५॥
ब्रह्मस्वहरणाद्याश्च एते नरकनायकाः।
कृता यमेन तैर्व्याप्ता मनुजा न हि कुर्वते॥२६॥
व्रतादिधर्मकृत्यं यैस्तैर्मुक्तास्ते हि कुर्वते॥२७॥
श्रद्धा मेधा विघातिन्यौ वर्तेते भुवि सर्वदा।
ताभ्यां व्याप्तस्तु मनुजः श्रीविष्णोः श्रवणादिकम्॥२८॥
न करोति सुदुर्मेधा येनान्धं याति वै तमः।
कृष्णेन सत्यभामायै यदुक्तं तद्वदामि ते॥२९॥
अध्यापनाद्याजनाद्वाऽप्येकपङ्क्त्यशनादपि।
तुर्यांशं पुण्यपापानां परोक्षं लभते नरः॥३०॥
एकासनादेकयानान्निश्वासस्याङ्गसङ्गतः ।
षडंशं फलभागी स्यान्नियतं पुण्यपापयोः॥३१॥

स्पर्शनाद्भाषणाद्वाऽपि परस्य स्तवनादपि।
दशांशं पुण्यपापानां नित्यं प्राप्नोति मानवः॥३२॥

दर्शनश्रवणाभ्यां च मनोध्यानात्तथैव च।
परस्य पुण्यपापानां शतांशं प्राप्नुयान्नरः॥३३॥

परस्य निन्दां पैशुन्यं धिक्कारं च करोति यः।
तत्कृतं पातकं प्राप्य स्वपुण्यं प्रददाति सः॥३४॥

कुर्वतः पुण्यकर्माणि सेवां यः कुरुते नरः।
पत्नीभृतकशिष्येभ्यो यदन्यः कोऽपि मानवः॥३५॥

तस्य सेवानुरूपं च द्रव्यं किञ्चिन्न दीयते।
सोऽपि सेवानुरूपेण तत्पुण्यफलभाग्भवेत्॥३६॥

एकपङ्क्तिस्थितं यस्तु लङ्घयेत्परिवेषणम्।
तत्पुण्यस्य षडंशं च लभेद्यस्तु विलङ्घितः॥३७॥

स्नानसन्ध्यादिकं कुर्वन्त्यः स्पृशेद्वाऽथ भाषते।
स कर्मपुण्यषष्ठांशं दद्यात्तस्मै विनिश्चितम्॥३८॥

धर्मोद्देशेन यो द्रव्यमपरं याचते नरः।
तत्पुण्यकर्मजं तस्य धनदस्त्वाप्नुयात्फलम्॥३९॥

अपहृत्य परद्रव्यं पुण्यकर्म करोति यः।
कर्मकृत्पापभाक्तत्र धनिनस्तद्भवं फलम्॥४०॥

नापकृत्य ऋणं यस्तु परस्य म्रियते नरः।
धनी तत्पुण्यमादत्ते तद्धनस्यानुरूपतः॥४१॥

बुद्धिदाताऽनुमन्ता च यश्चोपकरणप्रदः।
बलकृच्चापि षष्ठांशं प्राप्नुयात्पुण्यपापयोः॥४२॥

प्रजाभ्यः पुण्यपापानां राजा षष्ठांशमुद्धरेत्।
शिष्याद्भूरुः स्त्रियो भर्ता पिता पुत्रात्तथैव च॥४३॥

स्वपतेरपि पुण्यस्य योषिदर्धमवाप्नुयात्।
चित्तस्यानुव्रता शश्वद्वर्तते तुष्टिकारिणी॥४४॥

परहस्तेन दानादि कुर्वतः पुण्यकर्मणः।
विना भृतकपुत्राभ्यां कर्ता षष्ठांशमुद्धरेत्॥४५॥

वृत्तिदो वृत्तिसम्भोक्तुः पुण्यं षष्ठांशमुद्धरेत्।
आत्मनो वा परस्यापि यदि सेवां न कारयेत्॥४६॥

इत्थं ह्यदत्तान्यपि पुण्यपापान्यायान्ति नित्यं परसञ्चितानि।
कलौ त्वयं वै नियमो न कार्यः कर्तैव भोक्ता खलु पुण्यपापयोः॥४७॥

कलौ ज्ञानं दृढं नास्ति कलौ गर्वेण सत्क्रिया।
कलौ दम्भान्वितो योगो नश्यत्येव न संशयः॥४८॥

तपोनिष्ठः पुरा दम्भी सती शुद्धप्रभावतः।
पित्रोः पूजादर्शनेन चोर्जसेवी परं गतः॥४९॥

नारद उवाच

भगवञ्छ्रोतुमिच्छामि व्रतानामुत्तमं व्रतम्।
विधिं मासोपवासस्य फलं चास्य यथोचितम्॥५०॥

ब्रह्मोवाच

साधु नारद सर्वं ते यत्पृष्टं प्रब्रुवेऽनघ।
भक्त्या मतिमतां श्रेष्ठ शृणुष्व गदतो मम॥५१॥

सुराणां च यथा विष्णुस्तपतां च यथा रविः।
मेरुः शिखरिणां यद्वद्वैनतेयश्च पक्षिणाम्॥५२॥

श्रेष्ठं सर्वव्रतानां तु तद्वन्मासोपवासनम्।
सर्वव्रतेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषु चैव हि॥५३॥

सर्वदानोद्धवं चैव यज्ञैश्च भूरिदक्षिणैः।
न तत्पुण्यमवाप्नोति यन्मासपरिलङ्घनात्॥५४॥

गुरोराज्ञां ततो लब्ध्वा कुर्यान्मासोपवासनम्।
अतिकृच्छ्रं च पाराकं कृत्वा चान्द्रायणं ततः॥५५॥

मासोपवासं कुर्वीत ज्ञात्वा देहबलाबलम्।
वानप्रस्थो यतिर्वापि नारी वा विधवा मुने॥५६॥

मासोपवासं कुर्वीत गुरोर्विप्राज्ञया ततः।
आश्विनस्यामले पक्षे एकादश्यामुपोषितः॥५७॥

व्रतमेतत्तु गृह्णीयाद्यावत्त्रिंशद्दिनानि तु।
अच्युतस्याऽऽलये भक्त्या त्रिकालं पूजयेद्धरिम्॥५८॥

नैवेद्यधूपदीपाद्यैः पुष्पैर्नानाविधैरपि।
मनसा कर्मणा वाचा पूजयेद्गरुडध्वजम्॥५९॥

नरः स्वधर्मनिरतः सधवा च जितेन्द्रिया।
नारी वा विधवा साध्वी वासुदेवं समर्चयेत्॥६०॥

वस्त्वालोकनगन्धादिस्वादितं परिकीर्तितम्।
अन्यस्य वर्जयेद्वासं ग्रासानां सम्प्रमोक्षणम्॥६१॥

गात्राभ्यङ्गं शिरोभ्यङ्गं ताम्बूलं सविलेपनम्।
व्रतस्थो वर्जयेत्सर्वं यच्चान्यच्च निराकृतम्॥६२॥

न व्रतस्थः स्पृशेत्कञ्चिद्विकर्मस्थं न चालपेत्।
देवतायतने तिष्ठन्गृहस्थश्चाऽऽचरेद्व्रतम्॥६३॥

कृत्वा मासोपवासं तु यथोक्तविधिना नरः।
अन्यूनाधिकमेवं तु व्रतं त्रिंशद्दिनैरिति॥६४॥

ततोऽर्चयेदेव पुण्यं द्वादश्यां गरुडध्वजम्।
वस्त्रदानादिभिश्चैव भोजयित्वा द्विजोत्तमान्॥६५॥

दद्याच्च दक्षिणां तेभ्यः प्रणिपत्य क्षमापयेत्।
विप्रांश्क्षमापयित्वा तुविसृज्याभ्यर्च्य पूज्य च॥६६॥

एवं मासोपवासान्ते वृत्वा विप्रांस्त्रयोदश।
कारयेद्वैष्णवं यज्ञमेकादश्यामुपोषितः॥६७॥

ततोऽनुभोजयेद्विप्रात्रमस्कारपुरःसरम् ।
ताम्बूलवस्त्रयुग्मानि भोजनाच्छादनानि च॥६८॥

योगपट्टानि सूत्राणि शय्यां सोपस्करां तथा।
दत्त्वा चैव द्विजाग्रेभ्यः पूजयित्वा विसर्जयेत्॥६९॥

विधिर्मासोपवासस्य यथावत्परिकीर्तितः।
अतःपरं प्रवक्ष्यामि नवम्यादितिथौ विधि॥७०॥

ऋषिभ्यो वालखिल्यैश्च प्रोक्तं तं शृणु नारद॥७१॥

आदितः श्लोकाः — १५१०

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
दत्तपुण्यपापफलप्राप्तिवर्णनपूर्वक मासोपवासव्रतविधिकथनं
नाम त्रिंशोऽध्यायः॥३०॥



॥ अथ नामैकत्रिंशोऽध्यायः ॥

वालखिल्या ऊचुः

कार्तिके शुक्लनवमी तत्राऽभूद्वापरं युगम्।
पूर्वापराह्णगा ग्राह्या क्रमादानोपवासयोः॥१॥

अत्र कूष्माण्डकोनाम हतो दैत्यस्तु विष्णुना।
तद्रोमभिः समुद्धूता वल्लयः कूष्माण्डसम्भवाः॥२॥

तस्मात्कूष्माण्डदानेन फलमाप्नोति निश्चितम्।
अस्यामेव नवम्यां तु कुर्यात्कृष्णोत्सवं नरः॥३॥

स्वशाखोक्तेन विधिना तुलस्याः करपीडनम्।
कन्यादानफलं तस्य जायते नात्र संशयः॥४॥

कार्तिके शुक्लनवमीमवाप्य विजितेन्द्रियः।
हरिं विधाय सौवर्णं तुलस्या सहितं शुभम्॥५॥

पूजयेद्विधिवद्भक्त्या व्रती तत्र दिनत्रयम्।
एवं यथोक्तविधिना कुर्याद्वैवाहिकं विधिम्॥६॥

ग्राह्यं त्रिरात्रमत्रैव नवम्याद्यनुरोधतः।
मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या नवमी पूर्ववेदिता॥७॥

धात्र्यश्वत्थौ य एकत्र पालयित्वा समुद्वहेत्।
न नश्यते तस्य पुण्यं कल्पकोटिशतैरपि॥८॥

कनकस्य सुता पूर्वमेकादश्यां किशोरिका।
चकार भक्तितः सायं तुलस्युद्वाहजं विधिम्॥९॥

तेन वैधव्यदोषेण निर्मुक्ताऽऽसीत्सुलोचना।
तस्मात्सायं प्रकर्तव्यस्तुलस्तुद्वाहजो विधिः॥१०॥

अवश्यमेव कर्तव्यः प्रतिवर्षं तु वैष्णवैः।
विधिं तस्य प्रवक्ष्यामि यथा साङ्गा क्रिया भवेत्॥११॥

विष्णोस्तु प्रतिमां कुर्यात्पलस्य स्वर्णजां शुभाम्।
तदर्द्धार्द्धं तदर्द्धार्द्धं यथाशक्त्या प्रकल्पयेत्॥१२॥

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वैव तुलसीविष्णुरूपयोः।
तत उत्थापयेद्देवं पूर्वोक्तैश्च स्तवादिभिः॥१३॥

उपचारैः षोडशभिः पूजयेत्पुरुषोक्तिभिः।
देशकालौ ततः स्मृत्वा गणेशं तत्र पूजयेत्॥१४॥

पुण्याहं वाचयित्वाथ नान्दीश्राद्धं समाचरेत्।
वेदवाद्यादिनिर्घोषैर्विष्णुमूर्तिं समानयेत्॥१५॥

तुलसीनिकटे सा तु स्थाप्या चान्तर्हिता पटैः।
आगच्छ भगवन्देव अर्चयिष्यामि केशव॥१६॥

तुभ्यं दास्यामि तुलसीं सर्वकामप्रदो भव।
दद्यान्निवारमर्घ्यं च पाद्यं विष्टरमेव च॥१७॥

तत आचमनीयं च त्रिरुक्त्वा च प्रदापयेत्।
ततो दधि घृतं क्षीरं कांस्यपात्रपुटीकृतम्॥१८॥

मधुपर्कं गृहाण त्वं वासुदेव नमोस्तु ते।
हरिद्रालेपानाम्यङ्गकार्यं सर्वं विधाय च॥१९॥

गोधूलिसमये पूज्यौ तुलसीकेशवौ पुनः।
पृथक्पृथक्तथा कार्यौ सम्मुखौ मङ्गलं पठेत्॥२०॥

ईषद्दृश्ये भास्करे तु सङ्कल्पं तु समुच्चरेत्।
स्वगोत्रप्रवरानुक्त्वा तथा त्रिपुरुषादिकम्॥२१॥

अनादिमध्यनिधन त्रैलोक्यप्रतिपालक।
इमां गृहाण तुलसीं विवाहविधिनेश्वर॥२२॥

पार्वतीबीजसम्भूतां वृन्दाभस्मनि संस्थिताम्।
अनादिमध्यनिधनां वल्लभां ते ददाम्यहम्॥२३॥

पयोघटैश्च सेवाभिः कन्यावद्वर्धिता मया।
त्वत्प्रियां तुलसीं तुभ्यं ददामि त्वं गृहाण भोः॥२४॥

एवं दत्त्वा च तुलसीं पश्चात्तौ पूजयेत्ततः।
रात्रौ जागरणं कुर्याद्विवाहोत्सवपूर्वकम्॥२५॥

ततः प्रभातसमये तुलसीं विष्णुमर्चयेत्।
वह्निसंस्थापनं कृत्वा द्वादशाक्षरविद्यया॥२६॥

पायसाऽऽज्यक्षौद्रतिलैर्जुह्यादष्टोत्तरं शतम्।
ततः स्विष्टकृतं हुत्वा दद्यात्पूर्णाहुतिं ततः।
आचार्यं च समभ्यर्च्य होमशेषं समापयेत्॥२७॥

चतुरो वार्षिकान्मासान्नियमो येन यः कृतः।
कथयित्वा द्विजेभ्यस्तत्तथाऽन्यत्परिपूरयेत्॥२८॥

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाञ्जनार्दन॥२९॥

रेवतीतुर्यचरणे द्वादशीसंयुते नरः।
न कुर्यात्पारणं कुर्वन्व्रतं निष्फलतां नयेत्॥३०॥

ततो येषां पदार्थानां वर्जनं तु कृतं भवेत्।
चातुर्मास्येऽथवा चोर्जे ब्राह्मणेभ्यः समर्पयेत्।
ततः सर्वं समश्रीयाद्यद्यत्त्यक्तं व्रते स्थितम्॥३१॥

दम्पतिभ्यां सहैवात्र भोक्तव्यं च द्विजैः सह॥३२॥

ततो भुक्त्युत्तरं यानि गलितानि दलानि च।
तानि भुक्त्वा तुलस्याश्च स्वयं पापैः प्रमुच्यते॥३३॥

इक्षुदण्डं तथा धात्रीफलं कोलिफलं तथा।
भुक्त्वा तु भोजनस्यान्ते तस्योच्छिष्टं विनश्यति॥३४॥

एषु त्रिषु न भुक्तं चेदेकैकमपि येन तु।
ज्ञेय उच्छिष्ट आवर्षं नरोऽसौ नात्र संशयः॥३५॥

ततः सायं पुनः पूज्याविक्षुदण्डैश्च शोभितैः।
तुलसीवासुदेवौ च कृतकृत्यो भवेत्ततः॥३६॥

ततो विसर्जनं कृत्वा दत्त्वा दायादिकं हरेः।
वैकुण्ठं गच्छ भगवँस्तुलसीसहितः प्रभो।
मत्कृतं पूजनं गृह्य सन्तुष्टो भव सर्वदा॥३७॥

गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वरा।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ जनार्दन॥३८॥

एवं विसृज्य देवेशमाचार्याय प्रदापयेत्।
मूर्त्यादिकं सर्वमेव कृतकृत्यो भवेन्नरः॥३९॥

प्रतिवर्षं तु यः कुर्यात्तुलसीकरपीडनम्।
भक्तिमान्धनधान्यैः स युक्तो भवति निश्चितम्।
इहलोके परत्रापि विपुलं च यशो लभेत्॥४०॥

आदितः श्लोकाः — १५५०

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
कूष्माण्डनवमीतुलसीविवाहविधिवर्णनं
नामैकत्रिंशोऽध्यायः॥३१॥



॥ अथ द्वात्रिंशोऽध्यायः ॥

वालखिल्या ऊचुः

कार्तिकस्यामले पक्षे स्नात्वा सम्यग्यतव्रतः।
 एकादश्यां तु गृह्णीयाद्व्रतं पञ्चदिनात्मकम्॥१॥

शरपञ्जरसुप्तेन भीष्मेण तु महात्मना।
 राजधर्मा मोक्षधर्मा दानधर्मास्ततः परम्।
 कथिता पाण्डुदायादैः कृष्णेनापि श्रुतास्तदा॥२॥

ततः प्रीतेन मनसा वासुदेवेन भाषितम्।
 धन्यधन्योऽसि भीष्म त्वं धर्माः संश्रावितास्त्वया॥३॥

एकादश्यां कार्तिकस्य याचितं च जलं त्वया।
 अर्जुनेन समानीतं गाङ्गं बाणस्य वेगतः॥४॥

तुष्टानि तव गात्राणि तस्मादद्यदिनावधि।
 पूर्णान्तं सर्वलोकास्त्वां तर्पयन्त्वर्घ्यदानतः॥५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मम सन्तुष्टिकारकम्।
 एतद्व्रतं प्रकुर्वन्तु भीष्मपञ्चकसंज्ञितम्॥६॥

कार्तिकस्य व्रतं कृत्वा न कुर्याद्भीष्मपञ्चकम्।
 समग्रं कार्तिकव्रतं वृथा तस्य भविष्यति॥७॥

अशक्तश्चेन्नरो भूयादसमर्थश्च कार्तिके।
 भीष्मस्य पञ्चकं कृत्वा कार्तिकस्य फलं लभेत्॥८॥

सत्यव्रताय शुचये गाङ्गेयाय महात्मने।
 भीष्मायैतद्दाम्यर्घ्यमाजन्मब्रह्मचारिणे॥९॥

सव्येनानेन मन्त्रेण तर्पणं सार्ववर्णिकम्॥१०॥

व्रताङ्गत्वात्पूर्णमायां प्रदेयः पापपूरुषः।
अपुत्रेण प्रकर्तव्यं सर्वथा भीष्मपञ्चकम्॥११॥

यः पुत्रार्थं व्रतं कुर्यात्सस्त्रीको भीष्मपञ्चकम्।
प्रदत्त्वा पापपुरुषं वर्षमध्ये सुतं लभेत्॥१२॥

अवश्यमेव कर्तव्यं तस्माद्भीष्मस्य पञ्चकम्।
विष्णुप्रीतिकरं प्रोक्तं मया भीष्मस्य पञ्चकम्॥१३॥

सूत उवाच

शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे विशेषो भीष्मपञ्चके।
कार्तिकेयाय रुद्रेण पुरा प्रोक्तः सविस्तरात्॥१४॥

ईश्वर उवाच

प्रवक्ष्यामि महापुण्यं व्रतं व्रतवतां वर।
भीष्मेणैतद्यतः प्राप्तं व्रतं पञ्चदिनात्मकम्॥१५॥

सकाशाद्वासुदेवस्य तेनोक्तं भीष्मपञ्चकम्।
व्रतस्यास्य गुणान्वक्तुं कः शक्तः केशवादृते॥१६॥

कार्तिके शुक्लपक्षे तु शृणु धर्मं पुरातनम्।
वसिष्ठभृगुगर्गाद्यैश्चीर्णं कृतयुगादिषु॥१७॥

अम्बरीषेण भोगाद्यैश्चीर्णं त्रेतायुगादिषु।
ब्राह्मणैर्ब्रह्मचर्येण जपहोमक्रियादिभिः॥१८॥

क्षत्रियैश्च तथा वैश्यैः सत्यशौचपरायणैः।
दुष्करं सत्यहीनानामशक्यं बालचेतसाम्॥१९॥

दुष्करं भीष्ममित्याहुर्न शक्यं प्राकृतैर्नरैः।
यस्मात्करोति विप्रेन्द्र तेन सर्वं कृतं भवेत्॥२०॥

व्रतं चैतन्महापुण्यं महापातकनाशनम्।
अतो नरैः प्रयत्नेन कर्तव्यं भीष्मपञ्चकम्॥२१॥

कार्तिकस्यामले पक्षे स्नात्वा सम्यग्विधानतः।
एकादश्यां तु गृहीयाद्व्रतं पञ्चदिनात्मकम्॥२२॥

प्रातः स्नात्वा विशेषेण मध्याह्ने च तथा व्रती।
नद्यां निर्झरतोये वा समालभ्य च गोमयम्॥२३॥

यवव्रीहितिलैः सम्यक्पितृन्सन्तर्पयेत्क्रमात्।
स्नात्वा मौनं नरः कृत्वा धौतवासा दृढव्रतः॥२४॥

भीष्मायोदकदानं च अर्घ्यं चैव प्रयत्नतः।
पूजा भीष्मस्य कर्तव्या दानं दद्यात्प्रयत्नतः॥२५॥

पञ्चरत्नं विशेषेण दत्त्वा विप्राय यत्नतः।
वासुदेवोऽपि सम्पूज्यो लक्ष्मीयुक्तः सदा प्रभुः॥२६॥

पञ्चके पूजयित्वा तु कोटिजन्मानि तुष्यति॥२७॥

यत्किञ्चिद्ददते मर्त्यः पञ्चधातुप्रकल्पितम्।
संवत्सरव्रतानां स लभते सकलं फलम्॥२८॥

कृत्वा तूदकदानं तु तथाऽर्घ्यस्य च दापनम्।
मन्त्रेणानेन यः कुर्यान्मुक्तिभागी भवेन्नरः॥२९॥

वैयाघ्रपादगोत्राय साङ्कृत्य प्रवराय च।
अनपत्याय भीष्माय उदकं भीष्मवर्मणे॥३०॥

वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च।
अर्घ्यं ददामि भीष्माय आजन्मब्रह्मचारिणे॥३१॥

॥इत्यर्घ्यमन्त्रः॥

अनेन विधिना यस्तु पञ्चकं तु समापयेत्।
अश्वमेधसमं पुण्यं प्राप्नोत्यत्र न संशयः॥३२॥

पश्चाहमपि कर्तव्यं नियमं च प्रयत्नतः।
नियमेन विना यत्र न भाव्यं वरवर्णिना॥३३॥

उत्तरायणहीनाय भीष्माय प्रददौ हरिः।
उत्तरायणहीनेऽपि शुद्धलग्नं सुतोषितः॥३४॥

ततः सम्पूजयेद्देवं सर्वपापहरं हरिम्।
अनन्तरं प्रयत्नेन कर्तव्यं भीष्मपञ्चकम्॥३५॥

स्नापयेत जलैर्भक्त्या मधुक्षीरघृतेन च।
तथैव पञ्चगव्येन गन्धचन्दनवारिणा॥३६॥

चन्दनेन सुगन्धेन कुमकुमेनाथ केशवम्।
कर्पूरोशीरमिश्रेण लेपयेद्गरुडध्वजम्॥३७॥

अर्चयेद्गुचिरैः पुष्पैर्गन्धधूपसमन्वितैः।
गुग्गुलुं घृतसंयुक्तं ददेत्कृष्णाय भक्तिमान्॥३८॥

दीपकं तु दिवा रात्रौ दद्यात्पञ्च दिनानि तु।
नैवेद्यं देवदेवस्य परमान्नं निवेदयेत्॥३९॥

एवमभ्यर्चयेद्देवं संस्मृत्य च प्रणम्य च।
ॐ नमो वासुदेवायेति जपेदष्टोत्तरं शतम्॥४०॥

जुहुयाच्च घृताभ्यक्तैस्तिलव्रीहियवादिभिः।
षडक्षरेण मन्त्रेण स्वाहाकाराऽन्वितेन च॥४१॥

उपास्य पश्चिमां सन्ध्यां प्रणम्य गरुडध्वजम्।
जपित्वा पूर्ववन्मन्त्रं क्षितिशायी भवेत्सदा॥४२॥

सर्वमेतद्विधानं तु कार्यं पञ्च दिनानि तु।
विशेषोऽत्र व्रते ह्यस्मिन्यदन्यूनं शृणुष्व तत्॥४३॥

प्रथमेऽहि हरेः पादौ पूजयेत्कमलैर्ब्रती।
द्वितीये बिल्वपत्रेण जानुदेशं समर्चयेत्॥४४॥

ततोऽनुपूजयेच्छीर्षं मालत्या चक्रपाणिनः।
कार्तिक्यां देवदेवस्य भक्त्या तद्गतमानसः॥४५॥

अर्चित्वा तं हृषीकेशमेकादश्यां समासतः।
निःप्राश्य गोमयं सम्यगेकादश्यामुपावसेत्॥४६॥

गोमूत्रं मन्त्रवद्भूमौ द्वादश्यां प्राशयेद्व्रती।
क्षीरं चैव त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथा दधि॥४७॥

सम्प्राश्य कायशुद्ध्यर्थं लङ्घयित्वा चतुर्दिनम्।
पञ्चमे दिवसे स्नात्वा विधिवत्पूज्य केशवम्।
भोजयेद्ब्राह्मणान्भक्त्या तेभ्यो दद्याच्च दक्षिणाम्॥४८॥

पापबुद्धिं परित्यज्य ब्रह्मचर्येण धीमता।
मद्यं मांसं परित्याज्यं मैथुनं पापकारणम्॥४९॥

शाकाहारेण मुन्यन्नैः कृष्णार्चनपरो नरः।
ततो नक्तं समश्रीयात्पञ्चगव्यपुरःसरम्॥५०॥

एवं सम्यक्समाप्यं स्याद्यथोक्तं फलमाप्नुयात्॥५१॥

मद्यपो यः पिबेन्मद्यं जन्मनो मरणान्तिकम्।
एतद्भीष्मव्रतं कृत्वा प्राप्नोति परमं पदम्॥५२॥

स्त्रीभिर्वा भर्तृवाक्येन कर्तव्यं धर्मवर्धनम्।
विधवाभिश्च कर्तव्यं मोक्षसौख्यातिवृद्धये॥५३॥

अयोध्यायां पुरा कश्चिदतिथिर्नाम वै नृपः।
वसिष्ठवचनात्कृत्वा व्रतमेतत्सुदुर्लभम्।
भुक्तेह निखिलान्भोगानन्ते विष्णुपुरं ययौ॥५४॥

इत्थं कुर्याद्व्रतं नित्यं पञ्चकं भीष्मसंज्ञितम्।
 नियमेनोपवासेन पञ्चगव्येन वा पुनः।
 पयोमूलफलाहारैर्हविष्यैर्व्रततत्परः ॥५५॥

पौर्णमासीदिने प्राप्ते पूजां कृत्वा तु पूर्ववत्।
 ब्राह्मणान्भोजयेद्व्रतया गां च दद्यात्सवत्सकाम्॥५६॥

यद्भीष्मपञ्चकमिति प्रथितं पृथिव्या-
 मेकादशीप्रभृति पञ्चदशीनिरुद्धम्।
 उक्तं न भोजनपरस्य तदा निषेध-
 स्तस्मिन्व्रते शुभफलं प्रददाति विष्णुः॥५७॥

आदितः श्लोकाः — १६०७

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 भीष्म पञ्चकव्रतमाहात्म्यवर्णनं
 नाम द्वात्रिंशोऽध्यायः॥३२॥



॥ अथ त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

ईश्वर उवाच

प्रबोधिण्याश्च माहात्म्यं पापघ्नं पुण्यवर्धनम्।
 मुक्तिदं तत्त्वबुद्धीनां शृणुष्व सुरसत्तम॥१॥

तावद्गर्जति सेनानीर्गङ्गा भागीरथी क्षितौ।
 यावत्प्रयाति पापघ्नी कार्तिके हरिबोधिनी॥२॥

तावद्गर्जन्ति तीर्थानि आसमुद्रसरांसि वै।
 यावत्प्रबोधिनी विष्णोस्तिथिर्नाऽऽयाति कार्तिके॥३॥

अश्वमेधसहस्राणि राजसूयशतानि च।
एकेनैवोपवासेन प्रबोधिण्या यथाऽभवत्॥४॥

दुर्लभं चैव दुष्प्राप्यं त्रैलोके सचराचरे।
तदपि प्रार्थितं विप्र ददाति प्रतिबोधिनी॥५॥

ऐश्वर्यं सन्ततिं ज्ञानं राज्यं च सुखसम्पदः।
ददात्युपोषिता विप्र हेलया हरिबोधिनी॥६॥

मेरुमन्दरतुल्यानि पापान्युपार्जितानि च।
एकेनैवोपवासेन दहते हरिबोधिनी॥७॥

उपवासं प्रबोधिण्यां यः करोति स्वभावतः।
विधिना नरशार्दूल यथोक्तं लभते फलम्॥८॥

पूर्वजन्मसहस्रेषु पापं यत्समुपार्जितम्।
जागरेण प्रबोधिण्यां दह्यते तूलराशिवत्॥९॥

शृणु षण्मुख वक्ष्यामि जागरस्य च लक्षणम्।
तस्य विज्ञानमात्रेण दुर्लभो न जनार्दनः॥१०॥

गीतं वाद्यं च नृत्यं च पुराणपठनं तथा।
धूपं दीपं च नैवेद्यं पुष्पगन्धाऽनुलेपनम्॥११॥

फलमर्घ्यं च श्रद्धा च दानमिन्द्रियसंयमम्।
सत्याऽन्वितं विनिन्दं च मुदा युक्तं क्रियान्वितम्॥१२॥

साश्चर्यं चैव प्रोत्साहमालस्यादिविवर्जितम्।
प्रदक्षिणादिसंयुक्तं नमस्कारपुरःसरम्॥१३॥

नीराजनसमायुक्तमनिर्विण्णेन चेतसा।
यामेयामे महाभाग कुर्वन्नीराजनं हरेः॥१४॥

एतैर्गुणैः समायुक्तं कुर्याज्जागरणं विभोः।
एकाग्रमनसा यस्तु न पुनर्जायते भुवि॥१५॥

य एवं कुरुते भक्त्या वित्तशाठ्यविवर्जितः।
जागरं वासरे विष्णोर्लीयते परमात्मनि॥१६॥

पुरुषसूक्तेन यो नित्यं कार्तिकेऽथार्चयेद्धरिम्।
वर्षकोटिसहस्राणि पूजितस्तेन केशवः॥१७॥

यथोक्तेन विधानेन पञ्चरात्रोदितेन वै।
कार्तिके त्वर्चयेन्नित्यं मुक्तिभागी भवेन्नरः॥१८॥

नमो नारायणायेति कार्तिके योर्चयेद्धरिम्।
स मुक्तो नारकैर्दुःखैः पदं गच्छत्यनामयम्॥१९॥

हरेर्नामसहस्रं च गजराजस्य मोक्षणम्।
कार्तिके पठते यस्तु पुनर्जन्म न विन्दति॥२०॥

युगकोटिसहस्राणि मन्वन्तरशतानि च।
द्वादश्यां कार्तिके मासि जागरी वसते दिवि॥२१॥

कुले तस्य च ये जाताः शतशोथ सहस्रशः।
प्राप्नुवन्ति पदं विष्णोस्तस्मात्कुर्वीत जागरम्॥२२॥

कार्तिके पश्चिमे यामे स्तवं गानं करोति यः।
श्वेतद्वीपे तु वसते पितृभिः सह सुव्रतः॥२३॥

नैवेद्यदानं हरये कार्तिके दिनसङ्ख्ये।
युगानि वसते स्वर्गे तावन्ति मुनिसत्तमाः॥२४॥

अक्षयं मुनिशार्दूल मालतीकमलार्चनम्।
अर्चयेद्देवदेवेशं स याति परमं पदम्॥२५॥

कार्तिके शुक्लपक्षे तु कृत्वा ह्येकादशीं नरः।
प्रातर्दत्त्वा शुभान्कुम्भान्स याति मम मन्दिरम्॥२६॥

अत्रैव तु प्रकर्तव्यः प्रबोधस्तु हरेः खग।
हतः शङ्खासुरो दैत्यो नभसः शुक्लपक्षके॥२७॥

एकादश्यां ततो विष्णुश्चातुर्मास्ये प्रसुप्तवान्।
क्षीराम्भोधौ जागृतोऽसावेकादश्यां तु कार्तिके॥२८॥

अतः प्रबोधनं कार्यमेकादश्यां तु वैष्णवैः।
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु॥२९॥

इत्युक्त्वा शङ्खभेर्यादि प्रातःकाले तु वादयेत्।
वीणावेणुमृदङ्गादि नृत्यगीतादि कारयेत्॥३०॥

उत्थापयित्वा देवेशं पूजां तस्य विधाय च।
सायङ्काले प्रकर्तव्यस्तुलस्युद्वाहजो विधिः॥३१॥

सर्वदैकादशी पुण्या विशेषात्कार्तिकी स्मृता।
यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च॥३२॥

अन्नमाश्रित्य तिष्ठन्ति सम्प्राप्ते हरिवासरे।
स केवलमघं भुङ्क्ते यो भुङ्क्ते हरिवासरे॥३३॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन कुर्यादेकादशीव्रतम्।
न कुर्याद्यदि मोहेन उपवासं नराधमः॥३४॥

नरके नियतं वासः पितृभिः सह तस्य वै।
सूतके मृतके वाऽपि नोपवासं त्यजेद्बुधः॥३५॥

दशमीवेधसंयुक्ता त्याज्या चैकादशी व्रते।
गान्धार्याऽपि पुरा तस्यामुपवासः कृतो गुहः॥३६॥

तस्याः पुत्रशतं नष्टं तस्मात्तां वधजां त्यजेत्।
एकादशीमुपवसेत्स्नानदानपुरःसरम् ॥३७॥

रुक्माङ्गदोऽपि राजर्षिर्मोहिन्याः सङ्गमेन च।
इह लोके सुखं भुक्त्वा चामते विष्णुपुरं ययौ॥३८॥

॥इति प्रबोधोत्सवः॥

॥अथ द्वादशीमाहात्म्यम्॥

द्वादशी पुण्यदा प्रोक्ता सर्वाघौघविनाशिनी।
किं दानैः किं तपोभिश्च किमु पोष्यैर्व्रतैश्च किम्॥३९॥

किमिष्टैश्चैव पुत्रैश्च द्वादशी येन सेविता।
गङ्गायां चैव दुर्भिक्षे प्रत्यहं कोटिभोजनात्॥४०॥

यत्फलं तदवाप्नोति द्वादश्यामेकभोजनात्।
यदत्तं चार्हते दानं द्वादश्यां तु सिते शुभे॥४१॥

सिक्थेसिक्थे च वैकस्य कतिब्राह्मणभोजनम्।
तदहं नैव जानामि महिमानं हि सुव्रत॥४२॥

शालिग्रामशिलादानं यः कुर्याद्द्वादशीदिने।
सप्तद्वीपवतीं भूमिं गङ्गायां च रविग्रहे।
दत्त्वा यत्फलमाप्नोति तत्फलं लभते नरः॥४३॥

पञ्चामृतैस्तु यो विष्णुं भक्त्या संस्नापयेद्विज।
स सर्वकुलमुद्धृत्य विष्णुलोके महीयते॥४४॥

शुक्ले कार्तिकमासस्य द्वादश्यां परमोत्सवे।
प्रातरारभ्य यः कुर्यात्स्नानदानादिकं तथा।
स तु मोक्षमवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा॥४५॥

द्वादश्यां कार्तिके मासि स्नानसन्ध्यादिकर्म च।
कृत्वा दामोदरं पूज्य भक्तिश्रद्धासमन्वितः॥४६॥

यस्तस्यां सूपनैवेद्यं न ददाति नराधमः।
नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम्॥४७॥

तस्मात्सूपस्य नैवेद्यं द्वादश्यां कार्तिके शुभे।
दद्याद्भक्तियुतो ब्रह्मंश्चान्यथा नरकं व्रजेत्॥४८॥

यस्तस्यां दम्पतीनां तु भोजनं कुरुते नरः।
न तस्य फलविश्रान्तिर्मया वक्तुं तु शक्यते॥४९॥

धात्रीच्छायां गतो यस्तु द्वादश्यां पूजयेद्धरिम्।
तत्रैव भोजनं यस्तु ब्राह्मणानां तु कारयेत्॥५०॥

स्वयं च तत्र भुङ्क्ते यः सूपभक्ष्यादिकं तथा।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि॥५१॥

एवं प्रातर्विधायाथ पूजां दामोदरस्य हि।
रात्रौ पुनः प्रकर्तव्यं पूजाकर्म हरेर्द्विज॥५२॥

तुलसीसन्निधौ कृत्वा पताकाध्वजशोभितम्।
पुष्पमालासमाकीर्णं नानारत्नोपशोभितम्॥५३॥

मुक्तादामभिराच्छन्नं कृत्वा मण्डपमुत्तमम्।
पूजयेद्विष्णुमव्यग्रस्तद्गतैकाग्रमानसः ॥५४॥

पञ्चरात्रोक्तमार्गेण गन्धपुष्पाक्षतादिभिः।
नवनीतं दधिक्षीरं तथैव च घनं घृतम्॥५५॥

विविधैः खाद्यनैवेद्यैर्जलेन च सुगन्धिना।
युक्तं निवेदयेद्विष्णोस्ताम्बूलं सलवङ्गकम्॥५६॥

पुष्पाणि च विचित्राणि सुगन्धीनि बहूनि च।
प्रोक्षयित्वा च विधिवदर्पयित्वा दलैः शुभैः॥५७॥

तुलस्याश्वापि धान्याश्च फलैश्चापि प्रपूजयेत्।
नीराजनं ततः कृत्वा मन्त्रपुष्पं समर्पयेत्॥५८॥

अभिषेकं विना सर्वपूजां कृत्वा विधानतः।
विष्णोः पूजां समाप्याथ ब्राह्मणानां प्रपूजनम्॥५९॥

कुर्याद्भक्तियुतो विप्र दद्याच्चैव फलादिकम्।
ताम्बूलं च ततो दत्त्वा दक्षिणां शक्तितोऽर्पयेत्॥६०॥

ततो वृद्धान्पितृन्मातृन् पूजयित्वा विधानतः।
ततः स्वयं स्वभार्याभिर्नैवेद्यं भक्षयेत्सुधीः॥६१॥

इत्येवं तु विधानेन यः कुर्याद्द्वादशीव्रतम्।
न तस्य लोकाः क्षीयन्ते कल्पकोटिशतैरपि॥६२॥

पुत्रपौत्रैः परिवृतो भुक्त्वा भोगान्मनोहरान्।
भोगान्ते च ब्रजेन्मोक्षमतीतकुलसप्तकैः॥६३॥

तस्मान्नारद माहात्म्यं द्वादश्याः कार्तिकस्य च।
न मया शक्यते वक्तुं किमन्यैर्मनुजैरपि॥६४॥

द्वादश्या ह्युत्तमं पुण्यं माहात्म्यं यः पठेन्नरः।
शृणुयाद्वा मुनिश्रेष्ठ स याति परमां गतिम्॥६५॥

राजर्षिरम्बरीषोऽपि चकारैतद्व्रतं शुभम्।
यथाविधि तपोनिष्ठस्तेन मोक्षमवाप्तवान्॥६६॥

आदितः श्लोकाः — १६७३

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
प्रबोधोत्सवद्वादशीतिथिकृत्यवर्णनं
नाम त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः॥३३॥



॥ अथ चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ॥

नारद उवाच

व्रतानामपि सर्वेषां ब्रह्मन्नुद्यापनं श्रुतम्।
अभावे तूद्यापनस्य फलं नैवाऽऽप्नुयात्कचित्॥१॥

कृतव्रतफलास्यर्थं कुर्यादुद्यापनं बुधः।
अन्यथा निष्फलं याति कृतं व्रतमनुत्तमम्॥२॥

कार्तिकेऽपि कृतं देव व्रतानामुत्तमं व्रतम्।
न तस्योद्यापनाभावे व्रतोक्तफलमाप्नुयात्॥३॥

तस्मात्कार्तिकमासस्य चोद्यापनविधिं प्रभो।
वद मे शिष्यवर्याय प्रपन्नयानुवर्तिने॥४॥

ब्रह्मोवाच

अथोर्जोद्यापनं वक्ष्ये सर्वपापप्रणाशनम्।
तच्छृणुष्व महाभक्त्या सविधानं समासतः॥५॥

ऊर्जे शुक्लचतुर्दश्यां कुर्यादुद्यापनं व्रती।
व्रतसम्पूरणार्थाय विष्णुप्रीत्यर्थहेतवे॥६॥

तुलस्या उपरिष्ठात्तु कुर्यान्मण्डपिकां शुभाम्।
कदलीस्तम्भसंयुक्तां नानाधातुविचित्रिताम्॥७॥

दीपमाला चतुर्दिक्षु कार्या तत्र सुशोभना।
सुतोरणाश्चतुर्द्वारः पुष्पचामरशोभिताः॥८॥

द्वारेषु द्वारपालाश्च पूजयेन्मृन्मयान्मृथक्।
जयश्च विजयश्चैव चण्डश्चैव प्रचण्डकः॥९॥

नन्दश्चैव सुनन्दश्च कुमुदः कुमुदाक्षकः।
एतांश्चतुर्षु द्वारेषु पूजयेद्भक्तिसंयुतः॥१०॥

तुलसीमूलदेशे तु सर्वतोभद्रसंज्ञितम्।
चतुर्भिर्वर्णकैः सम्यक्छोभाढ्यं समलङ्कृतम्॥११॥

तस्योपरिष्ठात्कलशं पूर्णरत्नसमन्वितम्।
तत्र सम्पूजयेद्देवं शङ्खचक्रगदाधरम्॥१२॥

कौशेयपीतवसनं लक्ष्म्या युक्तं प्रपूजयेत्।
इन्द्रादिलोकपालांश्च मण्डपे पूजयेद्व्रती॥१३॥

तस्यामुपवसेद्भक्त्या शान्तः प्रणतमानसः।
रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवाद्यादिमङ्गलैः॥१४॥

गीतं कुर्वन्ति ये भक्त्या जागरे चक्रपाणिनः।
जन्मान्तरशतोद्भूतैस्ते मुक्ताः पापसञ्चयैः॥१५॥

ततस्तु पूर्णिमायां तु सपत्नीकान्द्विजोत्तमान्।
त्रिंशन्मितानथैकं वा ब्राह्मणांश्च निमन्त्रयेत्॥१६॥

प्रातःस्नानं ततः कृत्वा देवपूजां तथैव च।
स्थण्डिले च ततः कृत्वा समाधायाग्निमत्र हि॥१७॥

अतो देवेति मन्त्रेण जुहुयात्तिलपायसम्।
प्रीत्यर्थं देवदेवस्य देवानां च पृथक्पृथक्॥१८॥

होमशेषं समाप्याथ ब्राह्मणान्मूज्य भक्तितः।
ब्राह्मणेभ्यो यथाशक्त्या प्रदद्याद्वक्षिणां नरः॥१९॥

ततो गां कपिलां तत्र पूजयेद्विधिवद्व्रती।
सवत्सां गां तथा दद्याद्विप्राय च कुटुम्बिने॥२०॥

गुरुं व्रतोपदेष्टारं वस्त्रालङ्कारभूषणैः।
सपत्नीकं समभ्यर्च्य तांश्च विप्रान्क्षमापयेत्॥२१॥

युष्मत्प्रसादाद्देवेशः प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।
व्रतादस्माच्च यत्पापं सप्तजन्मकृतं मया॥२२॥

तत्सर्वं नाशमायातु स्थिरा मे चास्तु सन्ततिः।
मनोरथास्तु सफलाः सन्तु भक्तिर्हरौ भवेत्॥२३॥

सतां समागमो भूयान्मम जन्मनिजन्मनि।
इति क्षमाप्य तान्विप्रान्प्रसाद्य च विसर्जयेत्॥२४॥

प्रतिमां तां गुरोर्दद्यात्सवस्त्रां मुनिपुङ्गव।
ततः सुहृद्गुरुयुतः स्वयं भुञ्जीत भक्तिमान्॥२५॥

द्वादश्यां प्रतिबुद्धोऽसौ त्रयोदश्यां युतः सुरैः।
दृष्टोर्चितश्चतुर्दश्यां तस्मात्पूज्यस्तिथाविह॥२६॥

पूजयेद्देवदेवेशं सौवर्णं गुर्वनुज्ञया।
पराऽत्र पौर्णमास्यां तु यात्रा स्यात्पुष्करस्य तु॥२७॥

वरान्दत्त्वा यतो विष्णुर्मत्स्यरूपोऽभवत्ततः।
तस्यां दत्तं हुतं जप्तं तदक्षय्यफलं भवेत्॥२८॥

कार्तिके मासि कर्तव्यो विधिरेष हि नारद।
एवं यः कुरुते सम्यक्कार्तिकस्य व्रतं नरः॥२९॥

यत्फलं तदवाप्नोति व्रतं कृत्वा तु कार्तिके।
ते धन्यास्ते सदा पूज्यास्तेषां वै सफलोदयः॥३०॥

विष्णुभक्तिरता ये स्युः कार्तिके व्रतचारिणः।
देहस्थितानि पापानि विलयं यान्ति तत्क्षणात्॥३१॥

क्व यामोऽद्य भवत्येष यदूर्जव्रतकृन्नरः।
इति सर्वाणि पापानि रटन्तीह पुनःपुनः॥३२॥

तस्मात्कार्तिकमासस्य सदृशं नहि विद्यते।
 सर्वपापस्य दहने अग्नेः सदृश उच्यते॥३३॥
 ऊर्जोद्यापनमाहात्म्यं शृणुयाच्छ्रद्धयान्वितः।
 श्रावयेद्वा पुमान्यस्तु विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्॥३४॥

नारद उवाच

ऊर्जे व्रतोद्यापनादावशक्तः सिद्धिभाक्कथम्।
 कथं विमुच्यते जन्तुर्दुःखसंसारसागरात्॥३५॥

ब्रह्मोवाच

शृणुयादूर्जमाहात्म्यं नियमेन शुचिः पुमान्।
 उद्यापनफलं प्राप्य विष्णुलोके वसेच्च सः॥३६॥

आदितः श्लोकाः — १७०९

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
 द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
 व्रतोद्यापनविधिकथनं
 नाम चतुस्त्रिंशोऽध्यायः॥३४॥



॥ अथ पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

वैकुण्ठाख्यचतुर्दश्या माहात्म्यं ते वदाम्यहम्।
 वालखिल्यैः पुरा प्रोक्तं सङ्क्षेपेण शृणुष्व तत्॥१॥

वालखिल्या ऊचुः

कार्तिकस्य सिते पक्षे चतुर्दश्यां समागमत्।
 वैकुण्ठेशस्तु वैकुण्ठाद्वाराणस्यां कृते युगे॥२॥

रात्र्यां तुर्यां शशेषायां स्नात्वाऽसौ मणिकर्णिके।
गृहीत्वा हेमपद्मानां सहस्रं वै ततोऽब्रजत्॥३॥

अतिभक्त्या पूजयितुं शिवया सहितं शिवम्।
विधाय पूजां वैश्वेशीं ततः पद्मैरपूजयत्॥४॥

सहस्रसङ्ख्यां कृत्वा दावेकनाम्ना ततः परम्।
आरब्धं पूजनं तेन शिवस्तद्भक्तिमैक्षत॥५॥

एकं पद्मं पद्ममध्यान्निलीयाऽऽत्तं हरेण तु।
ततः पूजितवान्विष्णुरेकोनं कमलं त्वभूत्॥६॥

इतस्ततस्तेन दृष्टं पद्मं तिष्ठति न क्वचित्।
कमलेषु भ्रमो जातोऽथवा नामसु मे भ्रमः॥७॥

क्षणं विचार्य स हरिर्न मे नामभ्रमोऽभवत्।
पद्मे चैव भ्रमो जातो विचार्यैवं पुनः पुनः॥८॥

सहस्रपद्मसङ्कल्पः पूजार्थं तु कृतो मया।
अर्च्यः कथं महादेव एकोनकमलैर्मया॥९॥

यद्यानेतुं गमिष्यामि भङ्गः स्यादासनस्य तु।
अतः परं किं विधेयं चिन्तोद्विग्नो हरिस्तदा॥१०॥

एकः प्रकार उत्पन्नो हृदयेऽस्य मुनीश्वराः।
पुण्डरीकाक्ष इत्येवं मां वदन्ति मुनीश्वराः॥११॥

नेत्रं मे पद्मसदृशे पद्मार्थे त्वर्पयाम्यहम्।
इति निश्चित्य मनसा दत्त्वा तर्जनीकां स तु॥१२॥

नेत्रमध्यात्तदुत्पाट्य महादेवस्तु पूजितः।
ततो महेश्वरस्तुष्टो वाक्यमेतदुवाच ह॥१३॥

महादेव उवाच

त्वत्समो नास्ति मद्भक्तस्त्रैलोक्ये सचराचरे।
राज्यं दत्तं त्रिलोक्यास्ते भव त्वं लोकपालकः॥१४॥

अन्यं वरय भद्रं ते वरं यन्मनसेप्सितम्।
अवश्यमेव दास्यामि नात्र कार्या विचारणा॥१५॥

मद्भक्तिं तु समालम्ब्य ये द्विषन्ति जनार्दनम्।
ते मद्द्वेष्या नरा विष्णो ब्रजेयुर्नरकं ध्रुवम्॥१६॥

विष्णुरुवाच

त्रैलोक्यरक्षाकरणं ममादिष्टं महेश्वर।
दुमर्दाश्च महासत्त्वा दैत्या मार्याः कथं मया॥१७॥

शिव उवाच

एतत्सुदर्शनं चक्रं महादैत्यनिकृन्तनम्।
गृहाण भगवन्विष्णो मया तुभ्य निवेदितम्॥१८॥

अनेन सर्वदैत्यानां भगवन्कदनं कुरु।
एवं चक्रं हरेर्दत्त्वा ततो वचनमब्रवीत्॥१९॥

शिव उवाच

वर्षे च हेमलम्बाख्ये मासे श्रीमति कार्तिके।
शुक्लपक्षे चतुर्दश्यामरुणाभ्युदयं प्रति॥२०॥

महादेवतिथौ ब्राह्मे मुहूर्ते मणिकर्णिके।
स्नात्वा वैश्वेश्वरं लिङ्गं वैकुण्ठादेत्य पूजितम्॥२१॥

सहस्रकमलैस्तस्माद्भविष्यति मम प्रिया।
विख्याता सर्वलोकेषु वैकुण्ठाख्या चतुर्दशी॥२२॥

अन्यं वरं प्रयच्छामि शृणु विष्णो वचो मम।
पूर्वरात्रेषु ते पूजा कर्तव्या सर्वजातिभिः॥२३॥

उपवासं दिवा कुर्यात्सायङ्काले तवार्चनम्।
पश्चान्ममार्चनं कार्यमन्यथा निष्फलं भवेत्॥२४॥

ग्राह्या तु हरिपूजायां रात्रिव्याप्ता चतुर्दशी।
अरुणोदयवेलायां शिवपूजां समाचरेत्॥२५॥

सहस्रकमलैर्विष्णुरादौ यैः पूजितो नरैः।
पश्चाच्छिवः पूजितश्चेज्जीवन्मुक्तास्त एव हि॥२६॥

सायं स्नात्वा पश्चनदे बिन्दुमाधवमर्चयेत्।
स्नात्वा यो विष्णुकाश्यां वाऽनन्तसेनं समर्चयेत्॥२७॥

रुद्रकाश्यां ततः स्नात्वा प्रणवेशं समर्चयेत्।
आदौ स्नात्वा वह्नितीर्थे यजेन्नारायणं ततः॥२८॥

रेतोदके ततः स्नात्वा केदारेशं समर्चयेत्।
आदौ स्नात्वा सूर्यपुत्र्यां वेणीमाधवमर्चयेत्॥२९॥

जाह्नव्यां च ततः स्नात्वा सङ्गमेशं प्रपूजयेत्।
सर्वाः श्रियस्तस्य वश्याः सत्यं विष्णो मयोदितम्॥३०॥

एवं तस्मै वरान्दत्त्वा ह्यन्तर्धानं ययौ शिवः।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पूज्यौ हरिहरावुभौ॥३१॥

कलौ दशसहस्राणि विष्णुस्त्यजति मेदिनीम्।
तदर्द्धं जाह्नवीतोयं तदर्द्धं ग्रामदेवताः॥३२॥

कार्तिक्यां पूर्णिमायां तु कुर्यान्नैपुरमुत्सवम्।
दीपो देयोऽवश्यमेव सायङ्काले शिवालये॥३३॥

त्रिपुरो नाम दैत्येन्द्रः प्रयागे तप आस्थितः।
तपसा तस्य सन्तुष्टो ददौ ब्रह्मा वरं परम्॥३४॥

देवासुरमनुष्येभ्यो न ते मृत्युर्भविष्यति।
इति लब्धवरो दैत्यो विश्वकर्मविनिर्मितम्॥३५॥

त्रिपुराख्यं विमानं तमारुह्य भुवनत्रयम्।
यदा वै पीडयामास तदा देवैः स्तुतो हरः॥३६॥

त्रिपुरं घातयामास बाणेनैकेन शत्रुहा।
कार्तिक्यां पूर्णिमायां तु सर्वे देवाः प्रतुष्टुवुः॥३७॥

तस्मिन्दिने सर्वदेवैर्दीपा दत्ता हराय च।
सर्वथैव प्रदेयाश्च दीपास्तु हरतुष्टये॥३८॥

विंशतिः सप्तशतकाः सहिता दीपवर्तयः।
ददद्दीपं पूर्णिमायां सर्वपापैः प्रमुच्यते॥३९॥

पौर्णमास्यां तु सन्ध्यायां कर्तव्यस्त्रिपुरोत्सवः।
दद्यादनेन मन्त्रेण प्रदीपांश्च सुरालये॥४०॥

कीटाः पतङ्गा मशकाश्च वृक्षा जले स्थले ये विचरन्ति जीवाः।
दृष्ट्वा प्रदीपं न च जन्मभागिनो भवन्तु नित्यं श्वपचा हि विप्राः॥४१॥

कार्यस्तस्मात्पौर्णमास्यां त्रिपुराय महोत्सवः।
कार्तिक्यां कृत्तिकायोगे यः कुर्यात्स्वामिदर्शनम्॥४२॥

सप्त जन्म भवेद्विप्रो धनाढ्यो वेदपारगः।
अत्र कृत्वा वृषोत्सर्गं नक्ताच्छैवपुरं व्रजेत्॥४३॥

आदितः श्लोकाः — १७५२

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये

वैकुण्ठचतुर्दशी त्रिपुरीपूर्णिमाव्रतविधानकथनं
नाम पञ्चत्रिंशोऽध्यायः॥३५॥



॥ अथ षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥

ब्रह्मोवाच

यास्तिस्त्रस्तिथयः पुण्या अन्तिके शुक्लपक्षके।
कार्तिके मासि विप्रेन्द्र पूर्णिमान्ताः शुभवहाः॥१॥

अन्तिपुष्करिणी संज्ञा सर्वपापक्षयावहा।
कार्तिके मासि सम्पूर्णं यो वै स्नानं करोति ह॥२॥

तिथिष्वेतासु सः स्नानात्पूर्णमेव फलं लभेत्।
सर्वे वेदास्त्रयोदश्यां गत्वा जन्तून्पुनन्ति हि॥३॥

चतुर्दश्यां सयज्ञाश्च देवा जन्तून्पुनन्ति हि।
पूर्णमायां सुतीर्थानि विष्णुना संस्थितानि हि॥४॥

ब्रह्मघ्नान्वा सुरापान्वा सर्वाञ्जन्तून्पुनन्ति हि।
उष्णोदकेन यः स्नायात्कार्तिक्यादिदिनत्रये॥५॥

रौरवं नरकं याति यावदिन्द्राश्चतुर्दश।
आमासनियमाशक्तः कुर्यादितद्दिनत्रये॥६॥

तेन पूर्णफलं प्राप्य मोदते विष्णुमन्दिरे।
यो वै देवान्पितृन्विष्णुं गुरुमुद्दिश्य मानवः॥७॥

न स्नानादि करोत्यद्धा स याति नरकं ध्रुवम्।
कुटुम्बभोजनं यस्तु गृहस्थस्तु दिनत्रये॥८॥

सर्वान्पितृन्समुद्धृत्य स याति परमं पदम्।
गीतापाठं तु यः कुर्यादन्तिमे च दिनत्रये॥९॥

दिनेदिनेऽश्वमेधानां फलमेति न संशयः।
सहस्रनामपठनं यः कुर्यात्तु दिनत्रये॥१०॥

न पापैर्लिप्यते क्वापि पद्मपत्रमिवाम्भसा।
देवत्वं मनुजैः कैश्चित्कैश्चित्सिद्धत्वमेव च॥११॥

तस्य पुण्यफलं वक्तुं कः शक्तो दिवि वा भुवि।
यो वै भागवतं शास्त्रं शृणोति च दिनत्रयम्॥१२॥

कैश्चित्प्राप्तो ब्रह्मभावो दिनत्रयनिषेवणात्।
ब्रह्मज्ञानेन वा मुक्तिः प्रयागमरणेन वा॥१३॥

अथ वा कार्तिके मासि दिनत्रयनिषेवणात्।
कार्तिके हरिपूजां तु यः करोति दिनत्रये॥१४॥

न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि।
कार्तिके मासि विप्रेन्द्र सर्वमन्त्यदिनत्रये॥१५॥

पुण्यं तत्रापि वैशेष्यं राकायां वर्ततेऽनघ।
प्रातःकाले समुत्थाय शौचं स्नानादिकं चरेत्॥१६॥

समाप्य सर्वकर्माणि विष्णुपूजां समाचरेत्।
उद्याने वा गृहे वाऽपि कार्तिक्यां विष्णुतत्परः॥१७॥

मण्डपं तत्र कुर्वीत कदलीस्तम्भमण्डितम्।
चूतपल्लवसंवीतमिक्षुदण्डैः सुमण्डितम्॥१८॥

चित्रवस्त्रैः स्वलङ्कृत्य तत्र देवं प्रपूजयेत्।
चूतपल्लवपुष्पाढ्यैः फलाद्यैः पूजयेद्धरिम्॥१९॥

शृणुयादूर्जमाहात्म्यं नियमेन शुचिः पुमान्।
सम्पूर्णमथ वाऽध्यायमेकश्लोकमथापि वा॥२०॥

मुहूर्तं वाऽपि शृणुयात्कथां पुण्यां दिनेदिने।
यदि प्रतिदिनं श्रोतुमशक्तः स्यात्तु मानवः॥२१॥

पुण्यमासेऽथवा पुण्यतिथौ संशृणुयादपि।
तेन पुण्यप्रभावेन पापान्मुक्तो भवेन्नरः॥२२॥

पुराणज्ञः शुचिर्दक्षः शान्तो विगतमत्सरः।
साधुः कारुणिको वाग्मी वदेत्पुण्यां कथां सुधीः॥२३॥

व्यासासनं समारूढो यदा पौराणिको भवेत्।
आसमाप्तेः प्रसङ्गस्य नमस्कुर्यान्न कस्यचित्॥२४॥

न दुर्जनसमाकीर्णे न शूद्रश्चापदावृते।
देशे न द्यूतसदने वदेत्पुण्यकथां सुधीः॥२५॥

श्रद्धाभक्तिसमायुक्ता नाऽन्यकार्येषु लालसा।
वाग्यताः शुचयो दक्षाः श्रोतारः पुण्यभागिनः॥२६॥

अभक्ता ये कथां पुण्यां शृण्वन्ति मनुजाधमाः।
तेषां पुण्यफलं नास्ति दुःखं स्याजन्मजन्मनि॥२७॥

पौराणिकं च मासान्ते पूजयेद्भक्तितत्परः।
गन्धमाल्यैस्तथा वस्त्रैरलङ्कारैर्धनेन च॥२८॥

शृण्वन्ति च कथां भक्त्या न दरिद्रा न पापिनः॥२९॥

कथायां कीर्त्यमानायां ये गच्छन्त्यन्यतो नराः।
भोगान्तरे प्रणश्यन्ति तेषां दाराश्च सम्पदः॥३०॥

उच्चासनसमारूढो न नरः प्रणतो भवेत्।
विषवृक्षस्तथा स्वापे वने चाजगरो भवेत्॥३१॥

कथायां कीर्त्यमानायां विघ्नं कुर्वन्ति ये नराः।
कोट्यब्दनरकान्भुक्ता भवन्ति ग्रामसूकराः॥३२॥

ये श्रावयन्ति मनुजाः कथां पौराणिकीं शुभाम्।
कल्पकोटिशतं साग्रं तिष्ठन्ति ब्रह्मणः पदे॥३३॥

आसनार्थं प्रयच्छति पुराणज्ञस्य ये नराः।
कम्बलाजिनवासांसि मश्रुं फलकमेव वा॥३४॥

परिधानीयवस्त्राणि प्रयच्छन्ति च ये नराः।
भूषणादि प्रयच्छन्ति वसेयुर्ब्रह्मसद्मनि॥३५॥

वाचके परितुष्टे तु तुष्टाः स्युः सर्वदेवताः।
अतः सन्तोषयेद्भक्त्या भक्तिश्रद्धान्वितः पुमान्।
तस्य पुण्यफलं पूर्णं भवत्येव न संशयः॥३६॥

यत्फलं सर्वयज्ञेषु सर्वदानेषु यत्फलम्।
सकृत्पुराणश्रवणात्तत्फलं विन्दते नरः॥३७॥

कलौ युगे विशेषेण पुराणश्रवणादृते।
नास्ति धर्मः परः पुंसां नास्ति मुक्तिपथः परः।
पुराणश्रवणाद्विष्णोर्नास्ति सङ्कीर्तनात्परम्॥३८॥

य एतदूर्जमाहात्म्यं शृणुयाच्छ्रावयेदपि।
स तीर्थराज बदरीगमनस्य फलं लभेत्॥३९॥

सर्वरोगापहं सर्वपापनाशकरं शुभम्॥४०॥

श्रुत्वा चैकपदे यो वै अगम्यागमने रतः।
कन्यास्वस्रोर्विक्रयिणमुभयं तु विमोचयेत्॥४१॥

माहात्म्यमेतदाकर्ण्य पूजयेद्यस्तु पाठकम्।
गोभूहिरण्यवस्त्रैश्च विष्णुतुल्यो यतो हि सः॥४२॥

धर्मशास्त्रं पुराणं च वेदविद्यादिकं च यत्।
 पुस्तकं वाचकायैव दातव्यं धर्ममिच्छता।
 पुराणविद्यादातारो ह्यनन्तफलभोगिनः॥४३॥

इदं यः पठते भक्त्या श्रुत्वा चैवावधारयेत्।
 मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥४४॥

न कस्यापीदमाख्येयं श्रद्धाहीनाय दुर्मतेः॥४५॥

अपूजयित्वा गुरुमग्रबुद्ध्या
 धर्मप्रवक्तारमनन्यबुद्धिः ।

भुक्त्वा तु भोगान्नरकेषु चैव
 ततो हि जन्मान्तर दुःखभोगी॥४६॥

तस्मात्सम्पूजयेद्भक्त्या गुरुं तत्त्वावबोधकम्।
 माहात्म्यस्य च लेशोऽयं तव चोक्तो मयाऽनघ॥४७॥

न शक्यते हि सम्पूर्णं वक्तुं वर्षशतैरपि।
 पुरा कैलासशिखरे पार्वत्यै प्रोक्तवाञ्छिवः॥४८॥

कार्तिकस्य तु माहात्म्यं यावद्वर्षशतं वदन्।
 तथापि नान्तमगमदशक्तो विरराम ह॥४९॥

पुत्रार्थी च धनार्थी च राज्यार्थी स्वफलं लभेत्।
 किमत्र बहुनोक्तेन मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात्॥५०॥

सूत उवाच

इत्युक्तो ब्रह्मणा चैव नारदः प्रेमनिर्भरः।
 भूयोभूयो नमस्कृत्य ययौ यादृच्छिको मुनिः॥५१॥

कथितं शङ्करेणापि पुत्राय हितकाम्यया।
 पितुस्तद्वाक्यमाकर्ण्य षण्मुखो हर्षनिर्भरः॥५२॥

कृष्णेन सत्यभामायै कार्तिकस्य च वैभवः।
कथितस्तेन सन्तुष्टा सत्या व्रतमथाकरोत्॥५३॥

ऋषयो वालखिल्येभ्यः श्रुत्वा माहात्म्यमुत्तमम्।
ऊर्जव्रतपरा जातास्तस्मादूर्जोऽतिवल्लभः॥५४॥

अधीत्य सर्वशास्त्राणि पयःसारमिवोद्धृतम्।
नानेन सदृशं शास्त्रं विष्णुप्रीतिकरं शुभम्॥५५॥

व्यास उवाच

इत्युक्त्वा तानृषीन्सर्वान्सूतो वै धर्मवित्तमः।
विरराम ततस्ते तु पूजां चक्रुस्तदास्य च॥५६॥

ते पुनः स्वाश्रमं गत्वा हृष्टास्ते परमर्षयः।
यथा सूतेनोपदिष्टं तथा चक्रुर्व्रतं शुभम्॥५७॥

अनेन विधिना ये वै कुर्वन्ति कार्तिकव्रतम्।
ते सर्वपापनिर्मुक्ता गच्छन्ति विष्णुमन्दिरम्॥५८॥

आदितः श्लोकाः — १८१०

॥इति श्रीस्कान्दे महापुराण एकाशीतिसाहस्र्यां संहितायां
द्वितीये वैष्णवखण्डे कार्तिकमासमाहात्म्ये
पुष्करिणीसंज्ञिकान्तिमतिथित्रयमाहात्म्यकथनपूर्वकपुराणश्रवणमहिमवर्णनं
नाम षट्त्रिंशोऽध्यायः॥३६॥



विभाग: २

उपाङ्गा:

॥ संवत्सर-नामानि ॥

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
 अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च॥१॥
 ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
 चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः॥२॥
 सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
 नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ॥३॥
 हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्लवः।
 शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ॥४॥
 प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
 परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः॥५॥
 पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
 दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः॥६॥

- | | |
|--------------|----------------|
| १. प्रभवः | १०. धाता |
| २. विभवः | ११. ईश्वरः |
| ३. शुक्लः | १२. बहुधान्यः |
| ४. प्रमोदः | १३. प्रमाथी |
| ५. प्रजापतिः | १४. विक्रमः |
| ६. अङ्गिराः | १५. वृषः |
| ७. श्रीमुखः | १६. चित्रभानुः |
| ८. भावः | १७. सुभानुः |
| ९. युवा | १८. तारणः |

| | |
|----------------|------------------|
| १९. पार्थिवः | ४०. पराभवः |
| २०. व्ययः | ४१. प्लवङ्गः |
| २१. सर्वजित् | ४२. कीलकः |
| २२. सर्वधारी | ४३. सौम्यः |
| २३. विरोधी | ४४. साधारणः |
| २४. विकृतिः | ४५. विरोधिकृत् |
| २५. खरः | ४६. परितापी |
| २६. नन्दनः | ४७. प्रमादी |
| २७. विजयः | ४८. आनन्दः |
| २८. जयः | ४९. राक्षसः |
| २९. मन्मथः | ५०. नलः |
| ३०. दुर्मुखः | ५१. पिङ्गलः |
| ३१. हेमलम्बः | ५२. कालयुक्तिः |
| ३२. विलम्बः | ५३. सिद्धार्थी |
| ३३. विकारी | ५४. रौद्रः |
| ३४. शार्वरी | ५५. दुर्मतिः |
| ३५. प्लवः | ५६. दुन्दुभिः |
| ३६. शुभकृत् | ५७. रुधिरोद्गारी |
| ३७. शोभनः | ५८. रक्ताक्षः |
| ३८. क्रोधी | ५९. क्रोधनः |
| ३९. विश्वावसुः | ६०. क्षयः |

॥ नक्षत्र-नामानि ॥

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघास्तथा॥१॥

पूर्वफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफल्गुनी ततः।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदननतरम्॥२॥

अनूराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
पूर्वाषाढोत्तराषाढा त्वभिजिह्वणस्ततः॥३॥

धनिष्ठा शतताराख्य पूर्वा भाद्रपदा ततः।
उत्तरा भाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च॥४॥

- | | |
|------------------|---------------------|
| १. अश्विनी | १५. स्वाती |
| २. अपभरणी | १६. विशाखा |
| ३. कृत्तिका | १७. अनूराधा |
| ४. रोहिणी | १८. ज्येष्ठा |
| ५. मृगशीर्षम् | १९. मूला |
| ६. आर्द्रा | २०. पूर्वाषाढा |
| ७. पुनर्वसुः | २१. उत्तराषाढा |
| ८. पुष्यः | २२. श्रवणम् |
| ९. आश्लेषा | २३. श्रविष्ठा |
| १०. मघा | २४. शतभिषक् |
| ११. पूर्वफल्गुनी | २५. पूर्वप्रोष्ठपदा |
| १२. उत्तरफल्गुनी | २६. उत्तरप्रोष्ठपदा |
| १३. हस्तः | २७. रेवती |
| १४. चित्रा | |

॥ योग-नामानि ॥

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।
सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

- | | |
|--------------|----------------|
| १. विष्कम्भः | १५. वज्रः |
| २. प्रीतिः | १६. सिद्धिः |
| ३. आयुष्मान् | १७. व्यतीपातः |
| ४. सौभाग्यम् | १८. वरीयान् |
| ५. शोभनः | १९. परिघः |
| ६. अतिगण्डः | २०. शिवः |
| ७. सुकर्म | २१. सिद्धः |
| ८. धृतिः | २२. साध्यः |
| ९. शूलः | २३. शुभः |
| १०. गण्डः | २४. शुभ्रः |
| ११. वृद्धिः | २५. ब्राह्मः |
| १२. ध्रुवः | २६. माहेन्द्रः |
| १३. व्याघातः | २७. वैधृतिः |
| १४. हर्षणः | |

॥ करण-नामानि ॥

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा।
गरश्च वणिजश्चापि विष्टिश्च शकुनिस्तथा।
चतुष्पाच्चापि नागश्च किंस्तुघ्न इति कीर्तितम्॥८२॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं नाम षण्णवतितमेऽध्याये

चराणि सप्त

१. बवम् २. बालवम् ३. कौलवम् ४. तैतिलम्
५. गरजा ६. वणिजा ७. भद्रा

स्थिराणि चत्वारि

१. शकुनिः २. चतुष्पात् ३. नागवान् ४. किंस्तुघ्नम्

॥ तिथीनां पूर्वोत्तरार्ध-करणानि ॥

| | तिथिः | पूर्वार्ध-करणम् | उत्तरार्ध-करणम् |
|-----|----------------|-----------------|-----------------|
| १. | शुक्ल-प्रथमा | किंस्तुघ्नम् | बवम् |
| २. | शुक्ल-द्वितीया | बालवम् | कौलवम् |
| ३. | शुक्ल-तृतीया | तैतिलम् | गरजा |
| ४. | शुक्ल-चतुर्थी | वणिजा | भद्रा |
| ५. | शुक्ल-पञ्चमी | बवम् | बालवम् |
| ६. | शुक्ल-षष्ठी | कौलवम् | तैतिलम् |
| ७. | शुक्ल-सप्तमी | गरजा | वणिजा |
| ८. | शुक्ल-अष्टमी | भद्रा | बवम् |
| ९. | शुक्ल-नवमी | बालवम् | कौलवम् |
| १०. | शुक्ल-दशमी | तैतिलम् | गरजा |
| ११. | शुक्ल-एकादशी | वणिजा | भद्रा |
| १२. | शुक्ल-द्वादशी | बवम् | बालवम् |
| १३. | शुक्ल-त्रयोदशी | कौलवम् | तैतिलम् |

| | तिथिः | पूर्वार्ध-करणम् | उत्तरार्ध-करणम् |
|-----|----------------|-----------------|-----------------|
| १४. | शुक्ल-चतुर्दशी | गरजा | वणिजा |
| १५. | पौर्णमासी | भद्रा | बवम् |
| १६. | कृष्ण-प्रथमा | बालवम् | कौलवम् |
| १७. | कृष्ण-द्वितीया | तैतिलम् | गरजा |
| १८. | कृष्ण-तृतीया | वणिजा | भद्रा |
| १९. | कृष्ण-चतुर्थी | बवम् | बालवम् |
| २०. | कृष्ण-पञ्चमी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २१. | कृष्ण-षष्ठी | गरजा | वणिजा |
| २२. | कृष्ण-सप्तमी | भद्रा | बवम् |
| २३. | कृष्ण-अष्टमी | बालवम् | कौलवम् |
| २४. | कृष्ण-नवमी | तैतिलम् | गरजा |
| २५. | कृष्ण-दशमी | वणिजा | भद्रा |
| २६. | कृष्ण-एकादशी | बवम् | बालवम् |
| २७. | कृष्ण-द्वादशी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २८. | कृष्ण-त्रयोदशी | गरजा | वणिजा |
| २९. | कृष्ण-चतुर्दशी | भद्रा | शकुनिः |
| ३०. | अमावास्या | चतुष्पात् | नागवान् |

